

۱۱	۲۴۸	۲۴۹	۲۵۰	۲۵۱	۲۵۲	۲۵۳	۲۵۴	۲۵۵	۲۵۶	۲۵۷	۲۵۸	۲۵۹	۲۶۰	۲۶۱	۲۶۲	۲۶۳	۲۶۴	۲۶۵	۲۶۶	۲۶۷	۲۶۸	۲۶۹	۲۷۰	۲۷۱	۲۷۲	۲۷۳	۲۷۴	۲۷۵	۲۷۶	۲۷۷	۲۷۸	۲۷۹	۲۸۰	۲۸۱	۲۸۲	۲۸۳	۲۸۴	۲۸۵	۲۸۶	۲۸۷	۲۸۸	۲۸۹	۲۹۰	۲۹۱	۲۹۲	۲۹۳	۲۹۴	۲۹۵	۲۹۶	۲۹۷	۲۹۸	۲۹۹	۳۰۰	۳۰۱	۳۰۲	۳۰۳	۳۰۴	۳۰۵	۳۰۶	۳۰۷	۳۰۸	۳۰۹	۳۱۰	۳۱۱	۳۱۲	۳۱۳	۳۱۴	۳۱۵	۳۱۶	۳۱۷	۳۱۸	۳۱۹	۳۲۰	۳۲۱	۳۲۲	۳۲۳	۳۲۴	۳۲۵	۳۲۶	۳۲۷	۳۲۸	۳۲۹	۳۳۰	۳۳۱	۳۳۲	۳۳۳	۳۳۴	۳۳۵	۳۳۶	۳۳۷	۳۳۸	۳۳۹	۳۴۰	۳۴۱	۳۴۲	۳۴۳	۳۴۴	۳۴۵	۳۴۶	۳۴۷	۳۴۸	۳۴۹	۳۵۰	۳۵۱	۳۵۲	۳۵۳	۳۵۴	۳۵۵	۳۵۶	۳۵۷	۳۵۸	۳۵۹	۳۶۰	۳۶۱	۳۶۲	۳۶۳	۳۶۴	۳۶۵	۳۶۶	۳۶۷	۳۶۸	۳۶۹	۳۷۰	۳۷۱	۳۷۲	۳۷۳	۳۷۴	۳۷۵	۳۷۶	۳۷۷	۳۷۸	۳۷۹	۳۸۰	۳۸۱	۳۸۲	۳۸۳	۳۸۴	۳۸۵	۳۸۶	۳۸۷	۳۸۸	۳۸۹	۳۹۰	۳۹۱	۳۹۲	۳۹۳	۳۹۴	۳۹۵	۳۹۶	۳۹۷	۳۹۸	۳۹۹	۴۰۰	۴۰۱	۴۰۲	۴۰۳	۴۰۴	۴۰۵	۴۰۶	۴۰۷	۴۰۸	۴۰۹	۴۱۰	۴۱۱	۴۱۲	۴۱۳	۴۱۴	۴۱۵	۴۱۶	۴۱۷	۴۱۸	۴۱۹	۴۲۰	۴۲۱	۴۲۲	۴۲۳	۴۲۴	۴۲۵	۴۲۶	۴۲۷	۴۲۸	۴۲۹	۴۳۰	۴۳۱	۴۳۲	۴۳۳	۴۳۴	۴۳۵	۴۳۶	۴۳۷	۴۳۸	۴۳۹	۴۴۰	۴۴۱	۴۴۲	۴۴۳	۴۴۴	۴۴۵	۴۴۶	۴۴۷	۴۴۸	۴۴۹	۴۵۰	۴۵۱	۴۵۲	۴۵۳	۴۵۴	۴۵۵	۴۵۶	۴۵۷	۴۵۸	۴۵۹	۴۶۰	۴۶۱	۴۶۲	۴۶۳	۴۶۴	۴۶۵	۴۶۶	۴۶۷	۴۶۸	۴۶۹	۴۷۰	۴۷۱	۴۷۲	۴۷۳	۴۷۴	۴۷۵	۴۷۶	۴۷۷	۴۷۸	۴۷۹	۴۸۰	۴۸۱	۴۸۲	۴۸۳	۴۸۴	۴۸۵	۴۸۶	۴۸۷	۴۸۸	۴۸۹	۴۹۰	۴۹۱	۴۹۲	۴۹۳	۴۹۴	۴۹۵	۴۹۶	۴۹۷	۴۹۸	۴۹۹	۵۰۰	۵۰۱	۵۰۲	۵۰۳	۵۰۴	۵۰۵	۵۰۶	۵۰۷	۵۰۸	۵۰۹	۵۱۰	۵۱۱	۵۱۲	۵۱۳	۵۱۴	۵۱۵	۵۱۶	۵۱۷	۵۱۸	۵۱۹	۵۲۰	۵۲۱	۵۲۲	۵۲۳	۵۲۴	۵۲۵	۵۲۶	۵۲۷	۵۲۸	۵۲۹	۵۳۰	۵۳۱	۵۳۲	۵۳۳	۵۳۴	۵۳۵	۵۳۶	۵۳۷	۵۳۸	۵۳۹	۵۴۰	۵۴۱	۵۴۲	۵۴۳	۵۴۴	۵۴۵	۵۴۶	۵۴۷	۵۴۸	۵۴۹	۵۵۰	۵۵۱	۵۵۲	۵۵۳	۵۵۴	۵۵۵	۵۵۶	۵۵۷	۵۵۸	۵۵۹	۵۶۰	۵۶۱	۵۶۲	۵۶۳	۵۶۴	۵۶۵	۵۶۶	۵۶۷	۵۶۸	۵۶۹	۵۷۰	۵۷۱	۵۷۲	۵۷۳	۵۷۴	۵۷۵	۵۷۶	۵۷۷	۵۷۸	۵۷۹	۵۸۰	۵۸۱	۵۸۲	۵۸۳	۵۸۴	۵۸۵	۵۸۶	۵۸۷	۵۸۸	۵۸۹	۵۹۰	۵۹۱	۵۹۲	۵۹۳	۵۹۴	۵۹۵	۵۹۶	۵۹۷	۵۹۸	۵۹۹	۶۰۰	۶۰۱	۶۰۲	۶۰۳	۶۰۴	۶۰۵	۶۰۶	۶۰۷	۶۰۸	۶۰۹	۶۱۰	۶۱۱	۶۱۲	۶۱۳	۶۱۴	۶۱۵	۶۱۶	۶۱۷	۶۱۸	۶۱۹	۶۲۰	۶۲۱	۶۲۲	۶۲۳	۶۲۴	۶۲۵	۶۲۶	۶۲۷	۶۲۸	۶۲۹	۶۳۰	۶۳۱	۶۳۲	۶۳۳	۶۳۴	۶۳۵	۶۳۶	۶۳۷	۶۳۸	۶۳۹	۶۴۰	۶۴۱	۶۴۲	۶۴۳	۶۴۴	۶۴۵	۶۴۶	۶۴۷	۶۴۸	۶۴۹	۶۵۰	۶۵۱	۶۵۲	۶۵۳	۶۵۴	۶۵۵	۶۵۶	۶۵۷	۶۵۸	۶۵۹	۶۶۰	۶۶۱	۶۶۲	۶۶۳	۶۶۴	۶۶۵	۶۶۶	۶۶۷	۶۶۸	۶۶۹	۶۷۰	۶۷۱	۶۷۲	۶۷۳	۶۷۴	۶۷۵	۶۷۶	۶۷۷	۶۷۸	۶۷۹	۶۸۰	۶۸۱	۶۸۲	۶۸۳	۶۸۴	۶۸۵	۶۸۶	۶۸۷	۶۸۸	۶۸۹	۶۹۰	۶۹۱	۶۹۲	۶۹۳	۶۹۴	۶۹۵	۶۹۶	۶۹۷	۶۹۸	۶۹۹	۷۰۰	۷۰۱	۷۰۲	۷۰۳	۷۰۴	۷۰۵	۷۰۶	۷۰۷	۷۰۸	۷۰۹	۷۱۰	۷۱۱	۷۱۲	۷۱۳	۷۱۴	۷۱۵	۷۱۶	۷۱۷	۷۱۸	۷۱۹	۷۲۰	۷۲۱	۷۲۲	۷۲۳	۷۲۴	۷۲۵	۷۲۶	۷۲۷	۷۲۸	۷۲۹	۷۳۰	۷۳۱	۷۳۲	۷۳۳	۷۳۴	۷۳۵	۷۳۶	۷۳۷	۷۳۸	۷۳۹	۷۴۰	۷۴۱	۷۴۲	۷۴۳	۷۴۴	۷۴۵	۷۴۶	۷۴۷	۷۴۸	۷۴۹	۷۵۰	۷۵۱	۷۵۲	۷۵۳	۷۵۴	۷۵۵	۷۵۶	۷۵۷	۷۵۸	۷۵۹	۷۶۰	۷۶۱	۷۶۲	۷۶۳	۷۶۴	۷۶۵	۷۶۶	۷۶۷	۷۶۸	۷۶۹	۷۷۰	۷۷۱	۷۷۲	۷۷۳	۷۷۴	۷۷۵	۷۷۶	۷۷۷	۷۷۸	۷۷۹	۷۸۰	۷۸۱	۷۸۲	۷۸۳	۷۸۴	۷۸۵	۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰	۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰	۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰
----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

۳۴۲	۱۸ رتو	۳۴۲	عبدالمکرم بن عبدالمطلب	۳۴۲	زینب کبریٰ کے گھر	۳۴۲	امام کی دروغی است
۳۴۲	۱۸ جوتی	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	سکندر لکھنوی	۳۴۲	ظلم کی انتہا
۳۴۲	۱۸ دعوات	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	شہداء کے گھر	۳۴۲	جہاں کا واقعہ
۳۴۲	۱۸ حلب	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	ایک آدمی کے شہادت	۳۴۲	امام کے زخمی اصحاب
۳۴۲	۱۸ قسری	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	تدفین	۳۴۲	جن شہداء کی مائیں کربلا میں موجود تھیں
۳۴۲	۱۸ موعہ المنہان	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	لاٹیں دہاؤں میں پھیل جاتیں	۳۴۲	اصحاب رسول
۳۴۲	۱۸ شیر	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	چھٹی فصل، کوفہ میں	۳۴۲	شہداء کربلا کی تعداد
۳۴۲	۱۸ کفر طالع	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	کوفہ میں اسیروں کا داغ	۳۴۲	جوانان شہید نہیں ہوئے
۳۴۲	۱۸ سپور	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	سب سے پہلے نیرہ چڑھایا جانے والا سر	۳۴۲	جو لوگ امام بنی کے بعد شہید ہوئے
۳۴۲	۱۸ حماة	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	بیک کا وہ اونٹ	۳۴۲	طہران مسلم
۳۴۲	۱۸ حصص	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	خبر غیبی	۳۴۲	دشمن کا نقصان
۳۴۲	۱۸ ہلبک	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	حضرت زینب کا خط	۳۴۲	وقت شہادت امام کا
۳۴۲	۱۸ انبار اور سرسبز	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	خطبہ کلمہ	۳۴۲	سر مقدس
۳۴۲	۱۸ دمشق	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	امام بنی العباسی	۳۴۲	سرور کی تقسیم
۳۴۲	۱۸ شامی	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	کوفہ کا دارالامارہ	۳۴۲	کربلا سے سفر
۳۴۲	۱۸ شام کے باشندوں کا انتقامی بیان	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	دربار ابن زیاد	۳۴۲	اسیروں کی تعداد
۳۴۲	۱۸ سبیل بن سعد الساعدی	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	امام بنی کے قتل کا حکم	۳۴۲	بنی ہاشم کے قیدی
۳۴۲	۱۸ امام بن العباس کے شمار	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	امام بنی کا سر مقدس	۳۴۲	بنی ہاشم کا اسیر عورتیں
۳۴۲	۱۸ ابو نعیم بن طلحہ	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	زندان کوفہ	۳۴۲	غیر بنی ہاشم کی اسیر عورتیں
۳۴۲	۱۸ دربار یزید	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	عبید اللہ کا خط یزید کے نام	۳۴۲	اسیروں کا قافلہ
۳۴۲	۱۸ سکینہ بنت الحنفیہ	۳۴۲	عبدالمطلب بن عبدالمطلب	۳۴۲	اسیروں کے داخل ہونے کے بعد کوفہ کے حالات	۳۴۲	زینب عقیقہ میں

۱۵	۱۴
۵۲۸ عین الوردہ	۴۸۹ اسلمہ
۵۲۹ سلیمان بن مرد کا خطبہ	۴۸۹ ام البنین
۵۳۰ حصین و شریک کی آمد	۴۹۱ اہلبیت کی فراوانی
۵۳۰ ادہم بن حنفیہ	۴۹۱ رباب زویہ امام موسیٰ
۵۳۱ سلیمان کا مارا جانا	۴۹۳ وستر عقیل کا سرشیر
۵۳۱ مسیب بن نجید	۴۹۳ حضرت سجاد کی اشک فغانی
۵۳۲ عبداللہ بن سعد	۴۹۵ امام سیدنا پیرا صاحب رسول کی شک فغانی
۵۳۲ رفاعہ بن شراہ	۴۹۵ عقیقہ کا قلع
۵۳۳ عبداللہ بن وال	۴۹۵ یزید اور ابن زیاد کا مکہ
۵۳۳ عبداللہ بن عوف بن اہر	۴۹۸ گیارہویں فصل، فضیلت زیار امام حسین
۵۳۳ عبداللہ بن عمر بن کانی	۴۹۹ زیارت منتخب ہے یا واجب
۵۳۵ کوفہ واپسی	۵۰۱ دوسرا حصہ، صحیفہ انتقام
۵۳۵ امداد	۵۰۳ پہلی فصل، شہید ہوا حسین کے بعد
۵۳۴ شام میں توہین کی خبر	۵۰۳ پیشانی
۵۳۶ دوسری فصل، قیام مختار	۵۰۴ قید خانہ سے خط
۵۳۶ مختار	۵۰۵ یزید کا خط
۵۳۸ جوانی	۵۰۶ قوانین
۵۳۹ خصوصیات	۵۰۷ مسیب بن نجید کی تقریر
۵۳۹ اہل نظر میں	۵۰۸ رفاعہ بن شداد کی تقریر
۵۴۱ مختار آغوش علی میں	۵۰۸ سلیمان بن مرد کی تقریر
۵۴۲ مدینہ بن خالد	۵۱۰ مدائن والوں کے نام
	۴۸۹ یزید شہاب پشیمان
	۴۸۹ روم کا سفیر یزید کے دربار میں
	۴۹۱ خطبہ زینب کبریٰ
	۴۹۱ امام بن ابی الدرداء کا خطبہ
	۴۹۳ خطبہ امام کا اثر
	۴۹۳ منہال بن عمرو
	۴۹۵ شامیوں کو یزید سے نفرت
	۴۹۵ عید کا خواب
	۴۹۵ شام میں فراوانی
	۴۹۸ چوتھے امام کی تین خواہش
	۴۹۸ نویں فصل، شام سے مدینہ تک
	۴۹۸ شام سے روانگی
	۴۹۸ ارمین
	۴۹۸ کرنا میں قیام
	۴۹۹ کر بلا سے روانگی
	۴۸۱ دسویں فصل، مدینہ میں
	۴۸۱ پیش مدینہ میں
	۴۸۳ کاروان کر بلا کا استقبال
	۴۸۹ صوفیان بن صحیفہ
	۴۸۹ محمد بن حنفیہ
	۴۸۸ مدینہ میں داخلہ

14

۵۴۳	ابو عثمان ہندی اور قید خانکر	۵۴۳	سید امام مختار گھر
۵۴۴	قیدہ خشم	۵۴۳	انقلاب ملک وقت
۵۴۴	مید میں اجنات	۵۴۲	مختار و میثم
۵۴۵	نعم مارا جانا	۵۴۵	مختار تو ابین کے بعد
۵۴۶	مختار کا محاصرہ	۵۴۷	مختار کا خط
۵۴۶	یزید بن اسلم کی تقریر	۵۴۸	قید سے رہائی
۵۴۷	راشد بن ایاس کا قتل	۵۴۹	عبداللہ بن مطیع
۵۴۷	حسان بن قانہ	۵۵۰	مختار کی گرفتاری کی سازش
۵۴۹	عروہ بن حجاج کا مشورہ	۵۵۱	عبدالرحمن بن شریح
۵۴۹	ابن مطیع کا خطبہ	۵۵۱	محمد بن حنفیہ سے ملاقات
۵۴۹	ابن مطیع کا محاصرہ	۵۵۲	محمد بن حنفیہ کی باتیں
۵۵۰	کوفہ میں داخلہ	۵۵۳	اہل عربین العاد پر تانے سے اجازت طلبی
۵۵۱	نوفل بن اسحاق	۵۵۳	کوفہ واپسی
۵۵۲	دار الامارہ کا محاصرہ	۵۵۳	عبدالرحمن بن شریح کی تائید
۵۵۲	شرفا کیلئے اسان	۵۵۵	ابراہیم بن ملک اشتر
۵۵۳	مختار کا خطبہ	۵۵۷	ابراہیم بن حبیب کے تے ہیں
۵۵۳	مختار کی بیعت	۵۵۸	خروج مختار
۵۵۵	بیعت الملک کی تہتیم	۵۵۹	ایاس بن مضارب
۵۵۶	شہر وں کیلئے گورزوں کی روانگی	۵۶۱	خروج کا حکم
۵۵۷	مروان بن حکم کی لوگت	۵۶۲	زح بن قیس کی فوج پر حملہ
۵۵۷	انقام کا آغاز	۵۶۲	سود بن عبدالرحمن

عبت هاشم الملک فلا خبر چاہ ولا وحی نزل۔

انما نحن نزلنا الذكر وانما له كفافطون

امید ہے کہ یہ کتاب، چونکہ ایک ممتاز عالم کی تالیف اور فاضل دا

محمد تقی انصاریان

بہت سے طاہر کو آپ نے ٹھکرا دیا اور اس کی حقیقت کو تسلیم نہ کیا تو بعد ازاں ابن زبیر نے بھی اس کی اور آپ سے پہلے مدینہ تک پہنچ گیا نیز نہ نامہ جو ان کے قتل کے لیے تاجیوں کو کہاس میں بہت زیادہ مرمول نے فائدہ کھو کر جو دم خدا کے منتفیہ کیا خلافت کھو گوارا کر لیا اور عبداللہ ابن زبیر جان بچنے والا رہا جس میں پناہ لی، شام کے نامہ دو مسلمانوں اور ان کے خلیفہ نے خانہ خرابہ لگا اور پتھر برسائے اور حکومت کے منتفیہ کیلئے اسلام و اسلامی امان کی صورت و قدس کو پامال کر دیا،

حضرت قربانیاں کو اسلام کو بچایا، بنیائے، مرواویں اور نبی عباس نے، ہوس پرستی، جاہ طلبی اور
 اسلام کو ٹھنڈا کیا، اور پھر یہاں سے کلاموں کو شریعت کے مطابق ظاہر کرنے کیلئے درباری علماء کا
 یہاں سے مال دنیا کے لالچ میں دین فلاح میں حکم کے متضاد کے مطابق تبدیل کر دیا۔ اور نام نہان ظالمین
 کو کھانا کے ذمہ ڈال دیا اور کہا: انسان کو محض جمود ہے جو کچھ تیرے خدا کرتا ہے، بعد ازاں خلاف سے
 کرتا ہے۔ اس میں غیظ کا کوئی قصور نہیں ہے۔ اسے تو خدا نے جمود پر دیا کیا ہے جو کچھ خدا کرتا ہے

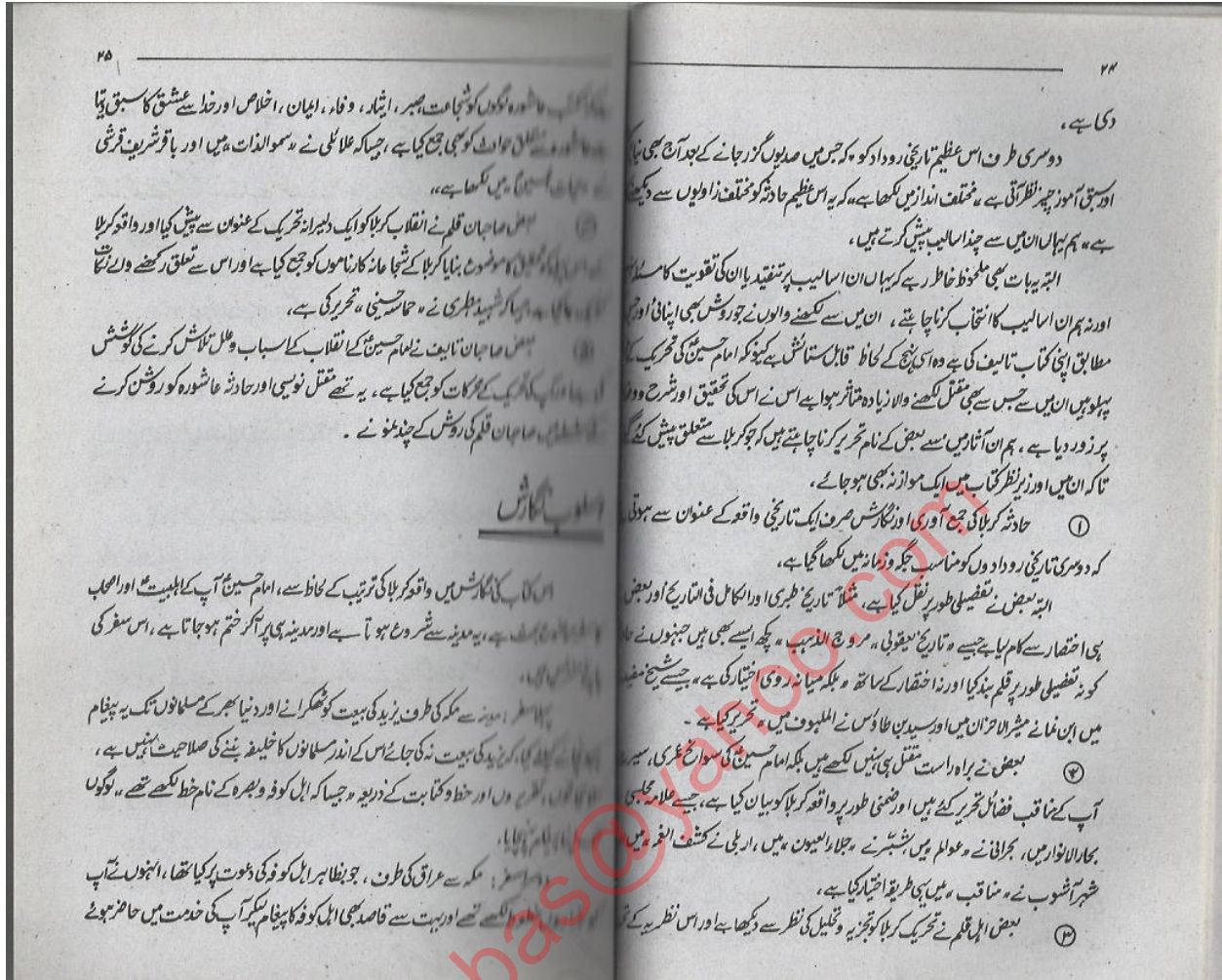
استاد امداد الدین عسکری نے اپنی کتاب "فتح الاسلام" (ج ۱، ص ۱۷۰) پر لکھا ہے: حق تو یہ ہے کہ اسلام
اسلامی نہیں ہے کہ جس میں ساری طور پر لوگوں کے حقوق کا خیال رکھا جاتا اور عرب و کج و موکد لکھتے دیکھا
کی حکومت میں صرف عرب اپنے حکام اور خدمت گزاروں کو اپنی مرضی دیتی جاتی تھی، ان کے احکام اور
کے بنیاد پر عالمی توصیات برپا ہوتی تھیں، اسلام سے انھیں کوئی دلچسپی نہیں تھی۔

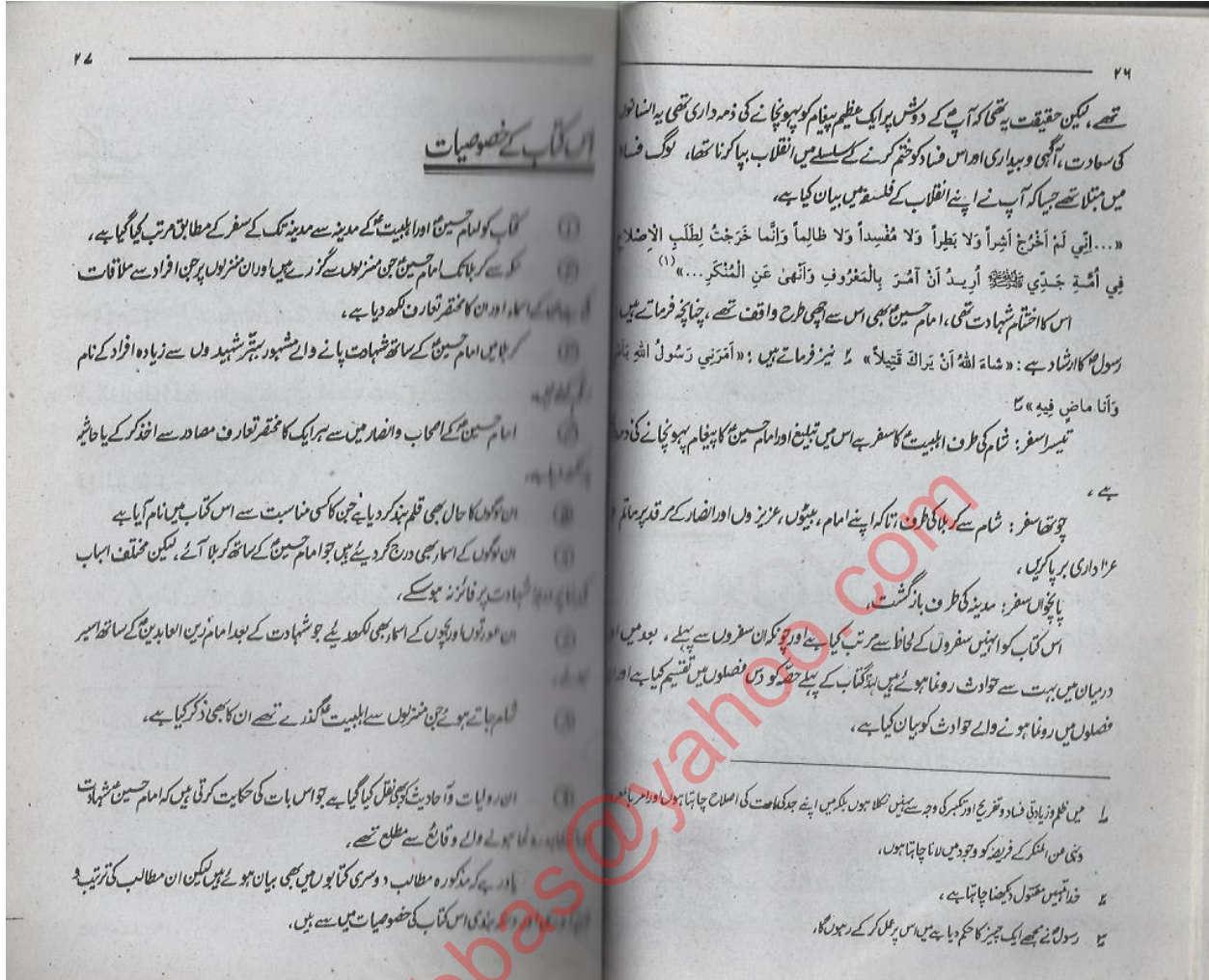
برسوں سے فتنائی کر رہا تھی مجھے مقتل حسین کے تو جبر کے شوروں سے سرواز کے چناؤ وہ تمنا اس
سجی، شکر خدا کہ مضمین کتاب پہ تمام راسل تک کہ اب طباطبائی کیلئے جاری ہے، میں نے اس لیے بیڑوں
کرنے کی پوری کوشش کی ہے کہ جو مضمین والوں کے نظریے کے خلاف نظر آئیں اس کے باوجود اگر کوئی چیز وہاں
خلاف نظر آئے تو ذرا، اس ضمن میں کچھ غبات فرمائیں، پائے والے اپنے حسین کے صدقہ میں اس ناچیز کو کوشش
مکمل و مہرجم اور شاعر اسلام تو حسین کے مزید خدمت کرنے کی توفیق نصرت فرما،

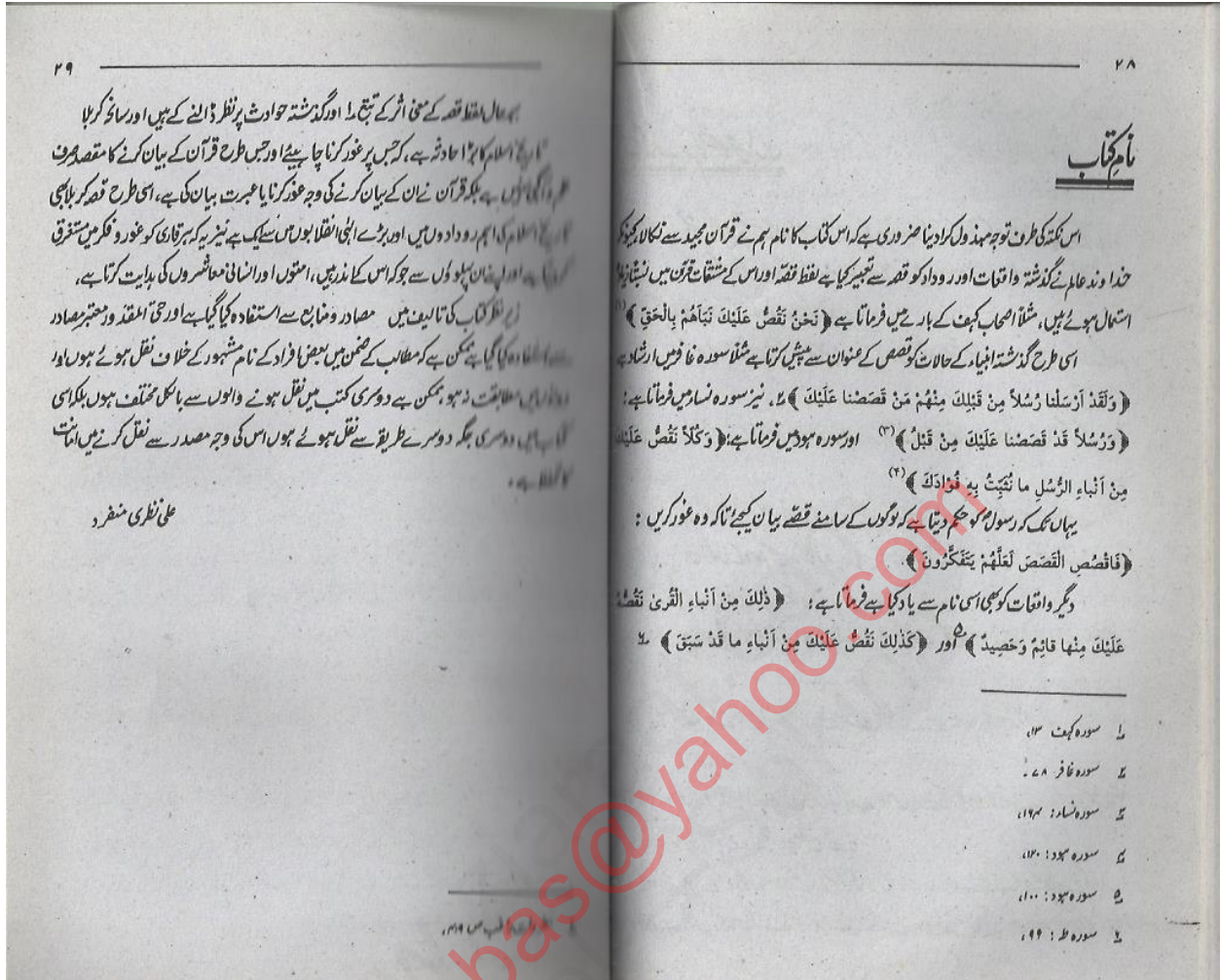
سار احمد

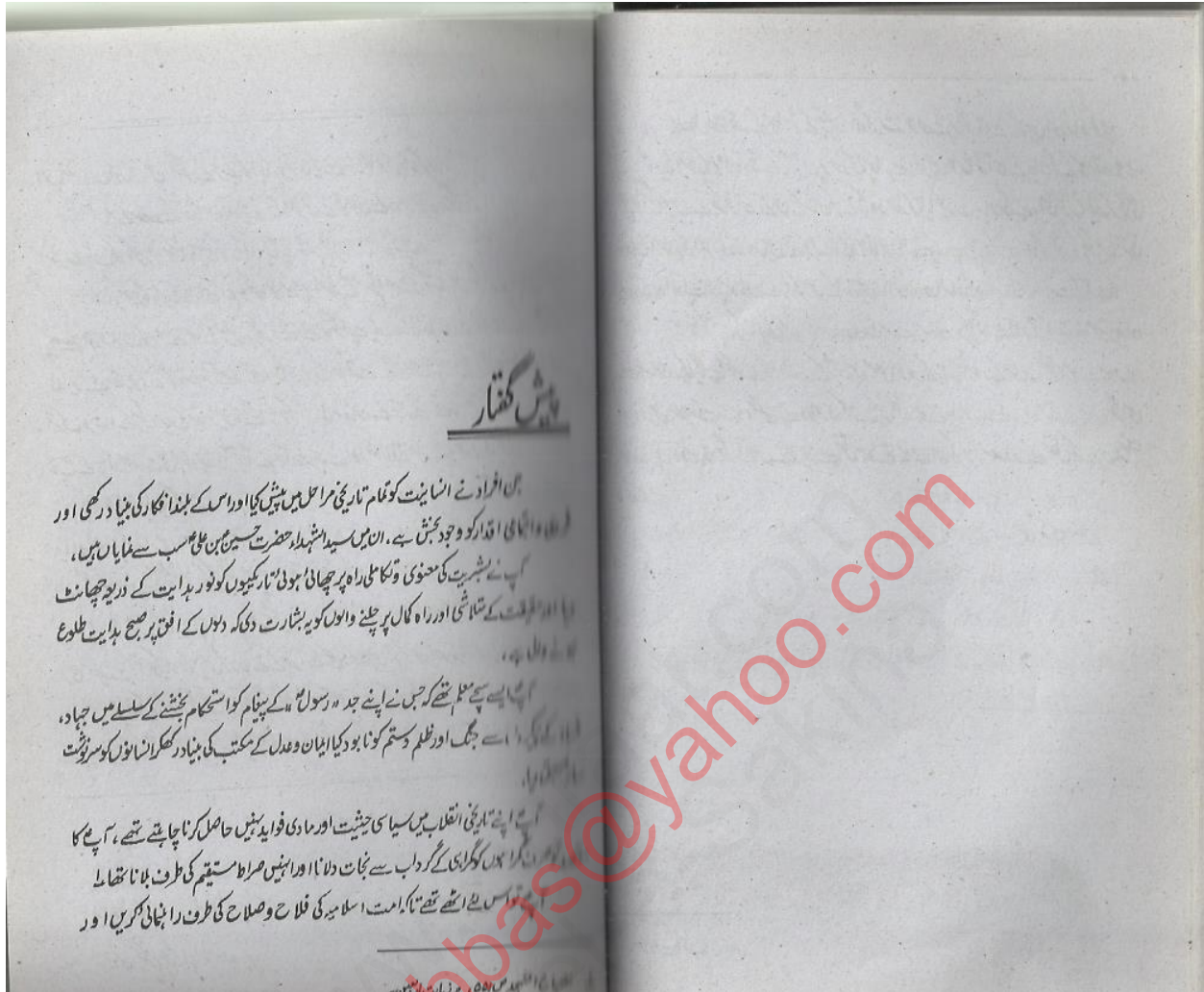
اور سال جو متعلق تحریک و اتحادِ عاشورہ کے سلسلے میں لکھے گئے ہیں ان میں امام حسینؑ کے
 وصال کا شمار و جزائے میں جو جنگ کے وقت یا خطبہ کے دوران آپؑ کی زبان پر جاری ہوتا
 ہے، صحابہؓ و انصارؓ کا شمار و جزائے میں بھی ان متعلق میں مرقوم ہیں جبکہ جنگوں اور
 وصال کے سلسلے میں ان کی طرف بہت کم ذکر ہی جاتی ہے۔ امام حسینؑ کے صحابہؓ اور ان کے متعلق
 ان کی زبان تک کہ ان کے میدان میں جانے اور شہادت پانے کی ترتیب اور وہ پہلے درج
 کے ان کے سربراہیں بیان فرمائے تھے، نیز اہل بیتؑ کے وہ خطبات اور تقاریر ثبت
 اور اس کی زمانہ میں کی تھیں،

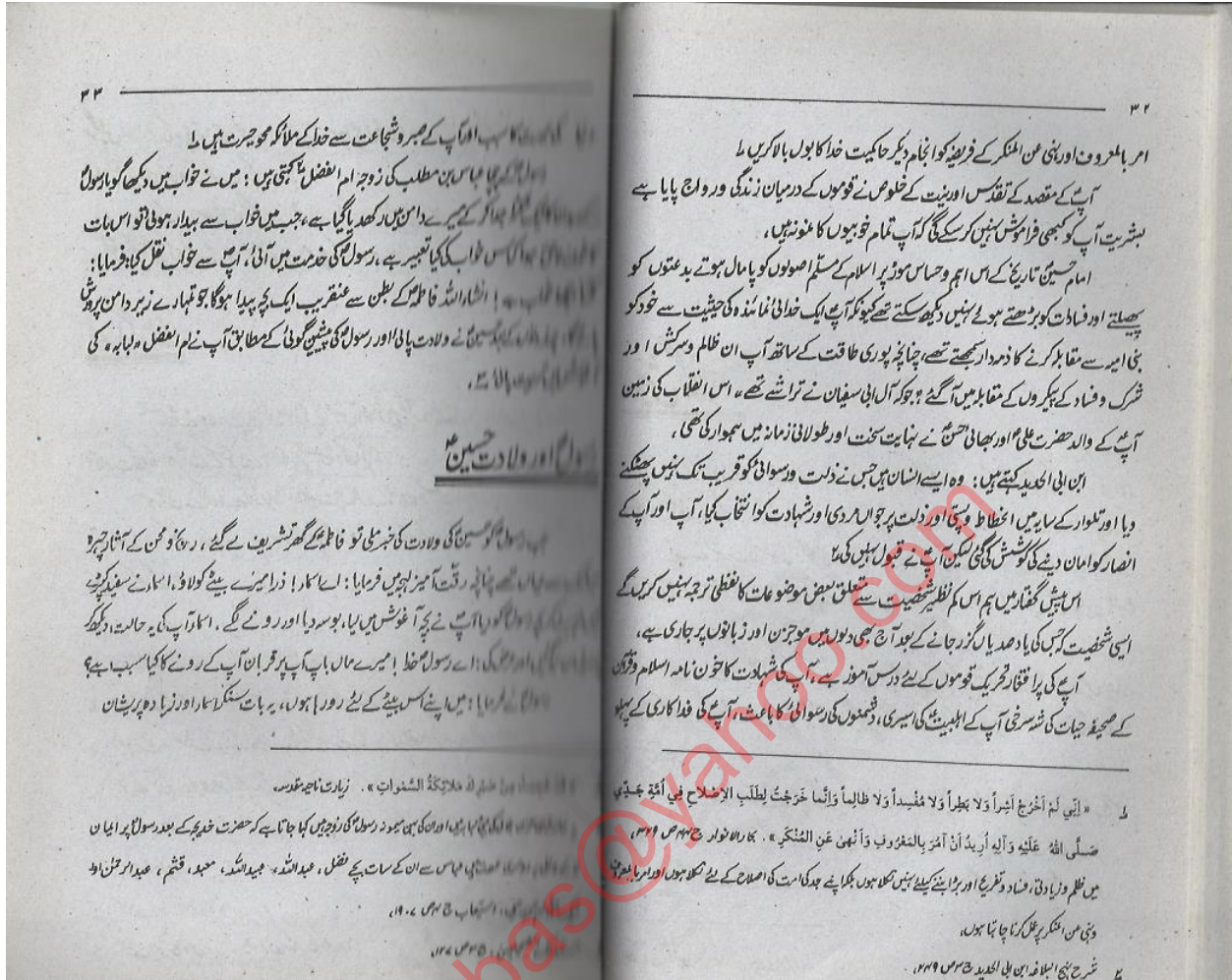
حکومت میں صرف واقفکار مین نظر آتی ہیں ان خصوصیات سے یہ بات بھی واضح
ہو کہ حادثہ عاشورہ کو نقل کرنے والوں اور لکھنے والوں نے بہت زیادہ اہمیت

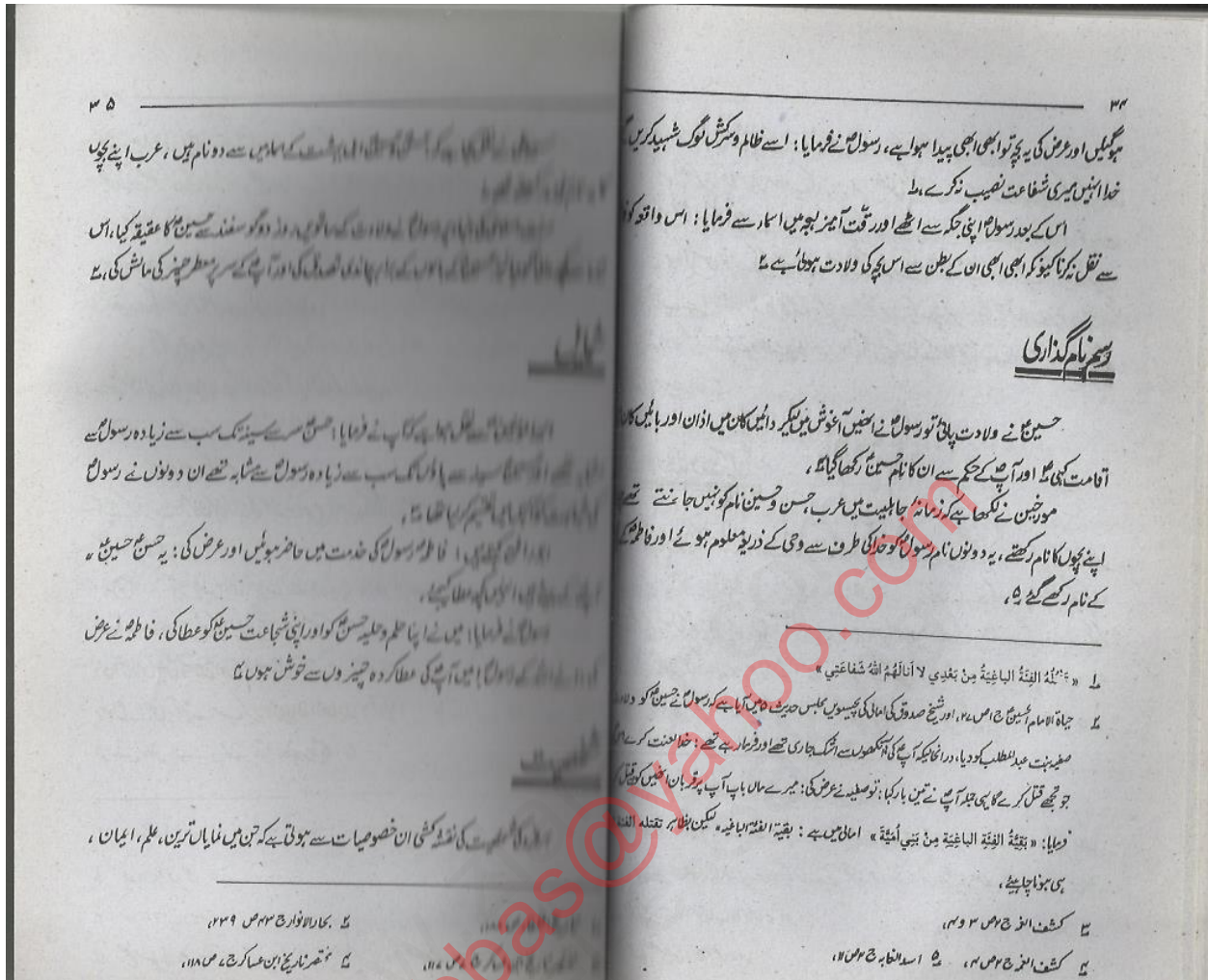


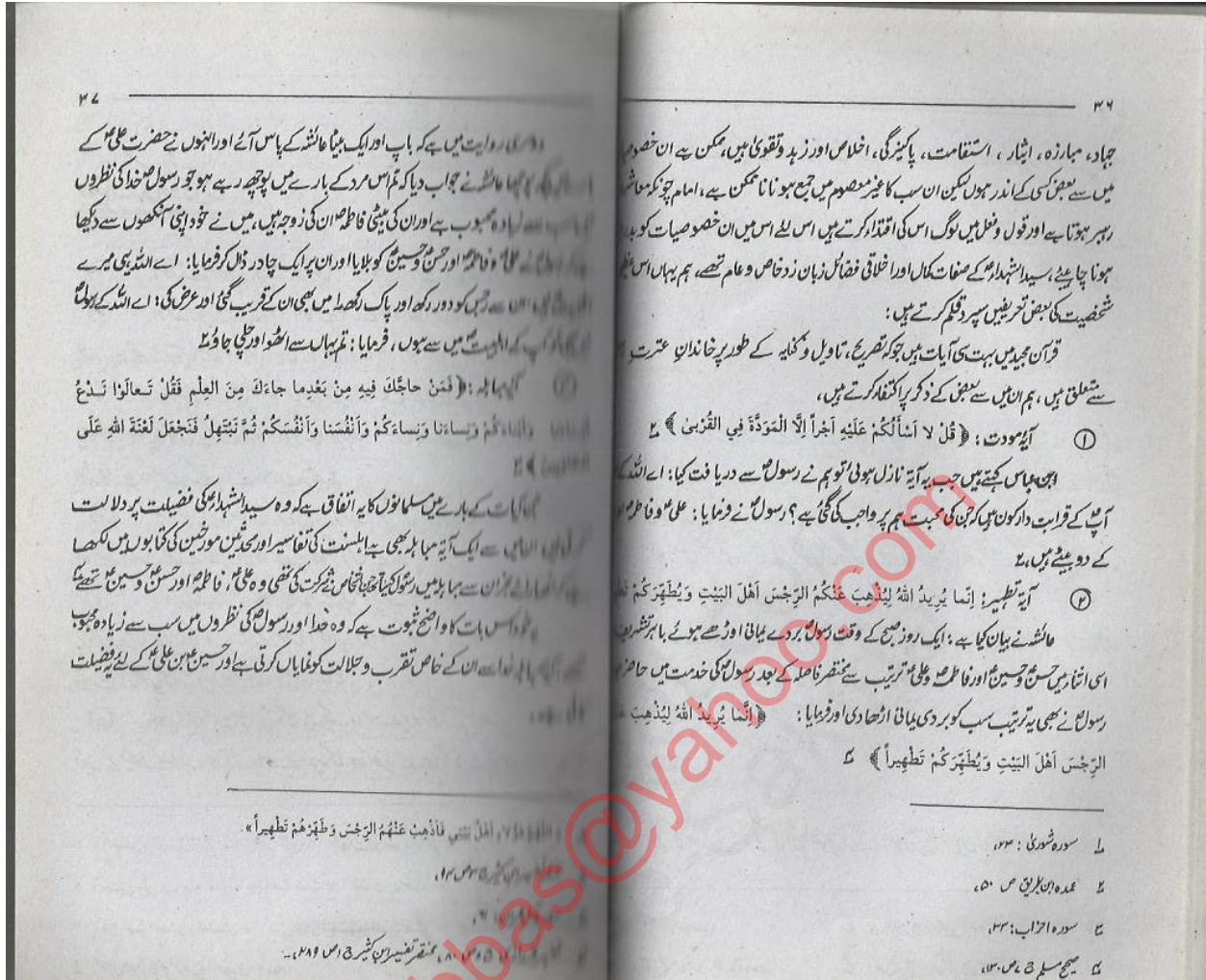












اس کا ہدف انیس ہاتھ سے اتارا اور فرمایا: اے ہوگو! یہ حسین بن علی ہیں ان کے ناما، نامی، ہمارا،
اور وہ بھی ہیں میں ہی بنی ہو اور ان کے بھائی مجتبیٰ میں جائیں گے جو حسین کو عطا ہوا ہے وہ انبیاء
میں سے ان کا سب سے مہاجر ہے مگر یوسف بن یعقوب کو ملے۔

(۱) رسولؐ نے منقول ہے کہ آپؐ نے فرمایا: حُسن و حسین جنت کے جوانوں کے سردار ہیں۔

(۲) دوسری روایت میں ہے کہ چنڈا شہاں رسولؐ کے ہمراہ جہان میں جا رہے تھے، اگلے اگلے رسولؐ پل رہے تھے راستے میں حسینؑ کو دیکھا، رسولؐ نے انھیں کہنا چاہا کہ حسینؑ! اہل بدر دھروڑنے لگے اس رسولؐ مکرار سے یہاں تک حسینؑ کو بخشش میں اٹھایا اور ایک ماٹھ لہدی کے پیچھے اور دیکھو دھڑی کے نیچے لگایا اور اپنے لمبوں سے حسینؑ کے لمبوں کا پوسیدہ اور فریاد: حسینؑ مجھ سے ہیں اور میں اس سے ہوں۔ اللہ جوا سے دوست رکھے تو اسے دوست رکھے گا۔

(۳) نیز رسولؐ نے منقول ہے کہ آپؐ نے فرمایا: جو شخص صلی و حسینؑ کو دوست رکھتا ہے وہ مجھے دوست رکھتا ہے اور جو ان کا دشمن ہے وہ میرا دشمن ہے۔

(۴) راوی کہتا ہے کہ میں رسولؐ کی خدمت میں شریاب بہاؤ تو دیکھا کہ حسینؑ ان کے دوش پر گویں میں نے عرض کی: اے اللہ کے رسولؐ! کیا آپؐ ان دونوں کو دوست رکھتے ہیں فرمایا: کیوں دوست نہ رکھوں کباغ دینا سے میرے دو بھول ہیں۔

(۵) دوسری روایت میں ہے کہ گویں میں ایک دوسرے پر برتری کے سلسلے میں اختلاف ہو گیا

مفتیہ کے فیصلہ کیلئے ایک ان کے درمیان سے مدعیہ گیا، حذیفہؓ نے ملاقات کی ان سے واقف ہو

٣. « مَنْ أَحَبَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ فَقَدْ أَحَبَّنِي وَمَنْ أَبْغَضَهُمَا فَقَدْ أَبْغَضَنِي ». طبقات ابن سعد ترجمه امام حسين

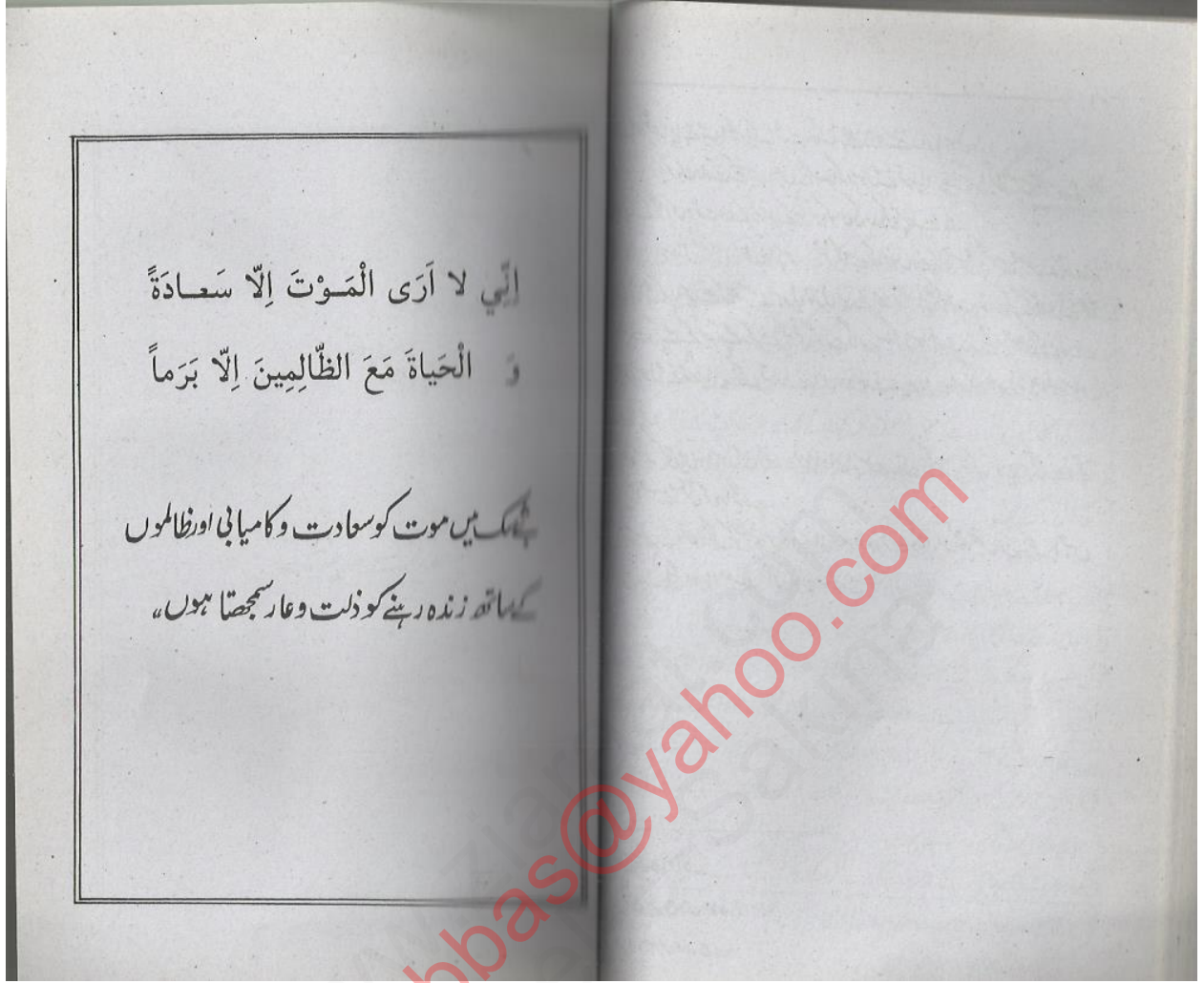
۷۵۸۱

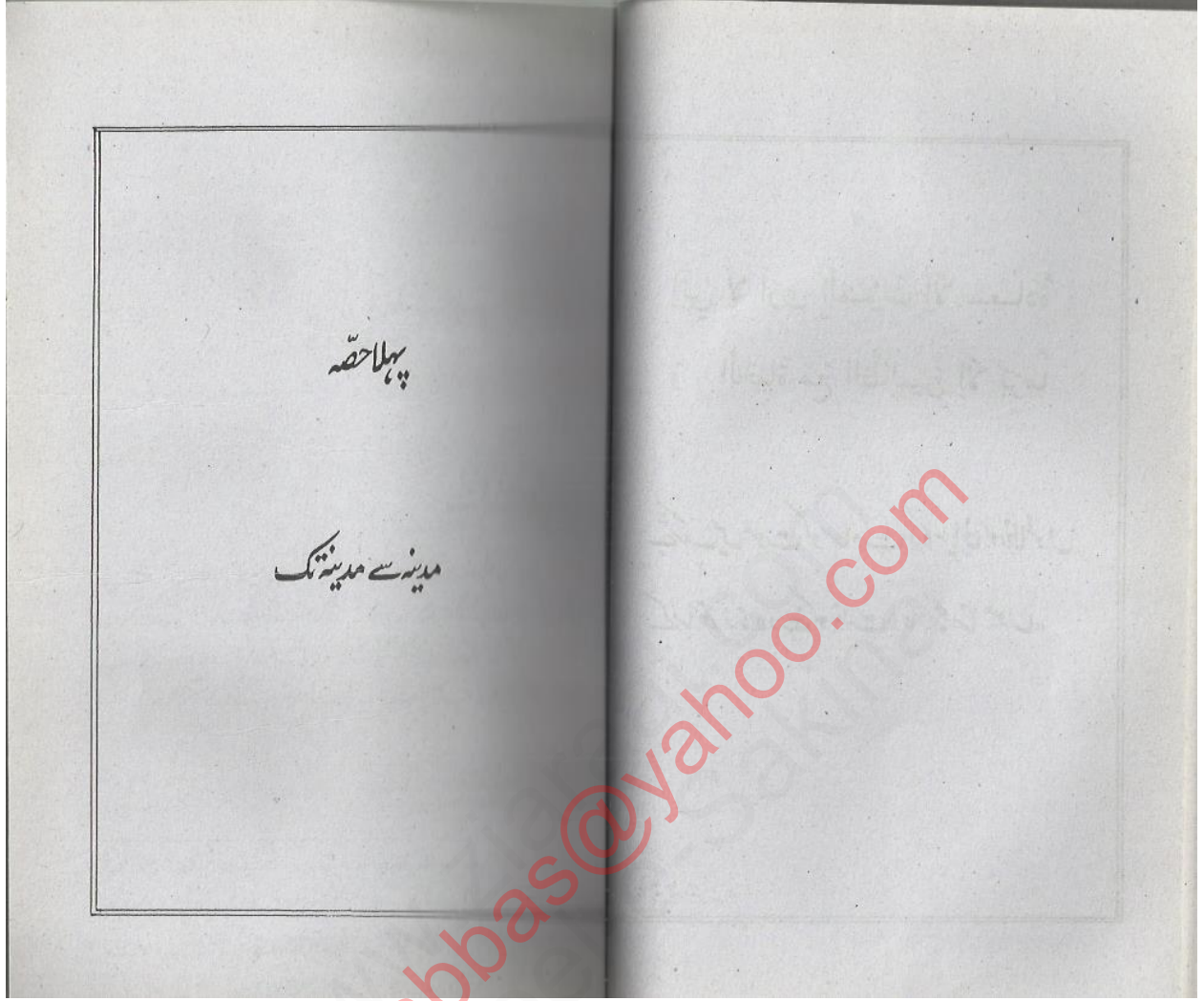
١٥٢

PAIC 2, 11/1/1934

۱۔ امامی شیخ صدوق مجلس ۱۹ حدیث ۳، البدایہ والنہایۃ ج ۸ ص ۲۱۶ پر مختصر اختلاف کے ساتھ امام

سے یہ روایت مرقوم ہے -





فصل اول

ابن کو فو کا خط

اسلام نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی وفات کے بعد کو فو کے شیعوں میں جدہ بن ہبیرہ بن ابی وہب خزرجی کے بیٹے
سلمان بن مرثد کے گھر میں جمع ہوئے اور امام حسن کو امام حسن کی وفات کی مناسبت سے تعزیت
کے لئے متنازعہ تھا۔ آپ کو گذشتگان کا تلخ و جانشین قرار دیا ہے اور ہم آپ کے غم سے
آپ کی مسرت ہماری خوشی ہے اور ہم آپ کے حکم کے منتظر ہیں،

ابن ابیہ کے بیٹے

اسلام نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے بھائی، امام ابی بن ابی طالب کے بیٹے تھے کہتے ہیں کہ جدہ زمانہ رسول صلی اللہ علیہ وسلم میں پیدا
ہوا اور امام صاحب رسول میں نہیں ہوتا ہے انہوں نے کو فو میں سکونت اختیار کر لی تھی، ابن عبد البر انہیں
ابن ابیہ کے بیٹے کہتے ہیں، ابن حجر نے تقریب میں انہیں شامانا ہے، چنگھیں میں اپنے ماموں سے
ابن ابیہ کے بیٹے تھے کہ ان سے دیکھ کر ان کے قوی ایمان کا اندازہ ہوتا ہے،

جمہ کے بیٹوں نے امام حسین علیہ السلام کو دوسرا خط ارسال اور اس میں لکھا کہ اہل کوفہ میں جن جن رکھتے ہیں، ان کی خواہش ہے کہ آپ کو فخر شریف لائیں، نیز لکھا: ہم نے آپ کے چاہنے والوں ملاقات کی ہے، ان کے درمیان ایسے لوگ ہیں جن کی باتوں پر آپ اعتبار و اطمینان ہے، وہ دشمن سے بڑے ہیں، ابوسفیان کے بیٹے سے بڑا ہیں، اسی خط میں امام حسینؑ سے یہ خواہش بھی کی ہے کہ خط کے ذریعہ ہمیں ارادہ سے مطلع کیجئے۔

امام کا خط اہل کوفہ کے نام

امام حسین علیہ السلام نے اہل کوفہ کے خط کے جواب میں لکھا: صلح کے سلسلے میں میرے بھائی اور غلاموں سے جہاد کرنے میں میری رائے دونوں ہی فلاح و نجات کی راہ ہیں، لیکن اس بات کو دشمن غیروں سے مخفی رکھنا، اور جب تک معاویہ زندہ ہے اس وقت تک کوئی قدم نہ اٹھانا، اگر وہ میری مرگیا تو میں اپنا نظریہ و ارادہ تانوں گا انشاء اللہ۔
عراق و حجاز سے کچھ شرفدار امام حسین علیہ السلام کے پاس آئے اور آپ کے اخلاقی فضائل بیان کرنے کے بعد اپنے یہاں آنے کی دعوت دے کر کہا:
ہم آپ کے دست و بازو ہیں اور ہم یقین ہے کہ معاویہ کے کرنے کے بعد کوئی آپ کا نالی جب امام حسین علیہ السلام کے پاس ان کی آمد و رفت کا سلسلہ بڑھ گیا تو عمر بن عثمان بن عبد مزین مروان بن حکم کے پاس گیا اور کہا: حسینؑ کے پاس لوگوں کی آمد و رفت کا سلسلہ بہت زیادہ بڑھ گیا کی قسم وہ اور ان کے انصار تمہارے لئے مشکیں کھڑکی کریں گے، مروان نے اس سلسلے میں معاویہ کو خط لکھا معاویہ نے اس کے جواب میں لکھا:

۱۔ ارشاد معید شیخ ۳۲/۲ و انساب الاشراف ۳/۱۵۶۔

جب تک کہ میں حکم لکھا ہے دشمنی کا اظہار نہیں کرتے اور میں کچھ نہیں کہتے اس وقت تک تم آپس کچھ

لکھا ہے ان پر نگاہ رکھنا۔

عمر بن عبدی کی شہادت

اس زمانہ میں معاویہ کے حکم سے اس کے کارندے شیعوں پر خصوصاً کوفہ کے شیعوں پر زیادہ سختی کرنے لگے۔ بعض نمایاں افراد کو بے بنیاد پتھر مار کر مارا، زیادہ انہوں نے جہر بن عدی اور ان کے بعض کارندوں کی قاتل تیار کر کے معاویہ کے پاس دمشق بھیج دیا اور معاویہ کے حکم سے انہیں دمشق و مرجع اہل بیت

عمر بن عبدی کی شہادت

جہاد کے لوگوں نے لوگوں کے دلوں پر بہت زیادہ اثر کیا پورے اسلامی معاشرے میں امویوں کے

۱۵۱/۳۔ جہر بن عدی بڑے صحابی تھے اور جنگ جین میں حضرت علیؑ کی طرف سے قبیلہ اور جنگ نہروان میں آپ کے لشکر کے سپروہ میں تھے۔ معاویہ نے انہیں معلوم مرجع عذرا میں لکھا کہ میں نے انہیں بے ایمان سے کہا کیا نہیں کی ہے یہ خبر دی ہے کہ جہر بن عدی صحابہ الدولت تھے؟ انہوں نے ارادہ کیا کہ وہ ان کے منظم اہل بیت صحابہ میں سے تھے،

۱۵۱/۳۔ جہر بن عدی نے شہادت پائی اور انہیں آپ کی قبر ہے، مجمل البلدان ۱۹/۱۶۱،

۱۵۱/۳۔ جہر بن عدی نے شہادت پائی اور انہیں آپ کی قبر ہے، مجمل البلدان ۱۹/۱۶۱،

کہا: تم نے جو اور اس کے ساتھیوں کو قتل کیا، صبر سے کیوں کام نہ لیا؟ تمہاری اطلاع کے لئے کہتی ہوں
نے رسول سے سنا ہے کہ آپ نے فرمایا:

مقام مرجعہ دار پر کچھ لوگ شہید کئے جائیں گے جن کے قتل سے آسمان کے فرشتے غضبناک ہوں گے
معاویہ نے اپنے اس جرم کی توجیہ کرتے ہوئے کہا: اس زمانہ میں میرے پاس کوئی عقلمند آدمی نہ
رہتا کہ جو مجھے اس فعل سے باز رکھتا۔

بہر حال معاویہ کے اس غلط اور اس کے پیروں میں اسلامی معاشرہ میں معاویہ کی حکومت سے سبزا
امام حسین علیہ السلام کے انقلاب و قیام کا ایک محرک قرار دیا جاسکتا ہے۔

سلاطین کے حادثہ میں ابن اشیر نے لکھا ہے: اس میں جبر بن عدی اور ان کے اصحاب
شہادت پائی۔

معاویہ نے حسین بن علی سے ملاقات کی اور کہا: اے ابا عبد اللہ! آپ جانتے ہیں کہ ہم
آپ کے والد کے شیعوں کو قتل کیا، انہیں سزا دی اور ان پر نماز پڑھ کر دفن کر دیا،

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا:
کہہ کے رب کی قسم اگر تم تمہارے چاہنے والوں کو قتل کریں گے تو نہ انہیں سزا دیں
گے نہ نماز پڑھیں گے اور نہ دفن کریں گے۔

شہادت عمرو بن اُمّیہ خضاعی

جبر بن عدی کی شہادت کے بعد معاویہ نے عمرو بن اُمّیہ خضاعیؓ کو کہ رسول کے صحابی علیؓ کے

تاریخ یعقوبی ج ۲ ص ۲۳۱، کمال ابن اشیر ج ۳ ص ۴۴، تاریخ یعقوبی ج ۲ ص ۲۳۱،

عمرو بن اُمّیہ خضاعیؓ کے نزدیک قبیلہ خزاعہ سے ہیں وہ حبشہ والے سال یا حجۃ الوداع میں رسولؐ کی خدمت میں آئے

اور ان کی مدد کے دوست، گوگر فکار نے کا منصوبہ بنایا اور معاویہ کے حکم سے انھیں موصل کے اطراف
میں لے کر آگیا، ان کا سفر قلم کر کے نیزہ پر چڑھایا اور ہر ایک کو دکھانے کے لئے شاہ راہ عام پر بچھا دیا اس
کا نام لکھنے کے لئے اور ان کی ہیشیرہ جو معاویہ کی قیدی تھیں، کی گود میں ڈال دیا: ان کی عزت مند اور وفادار
معاویہ کے پاس یہ پیغام بھیجا، تم بہت جیسے جرم کے مرتکب ہوئے ہو اور تم نے نیکو کار اور پاکیزہ انسان
کو قتل کیا۔

اس غلط صحابی کی شہادت سے بھی اموی حکومت کے خلاف عام لوگوں میں اور زیادہ نفرت کی لہر دوڑ گئی

معاویہ

معاویہ نے جو ناشائستہ افعال انجام دیئے ہیں ان میں سے ایک یہ تھا کہ اس نے زیاد بن ابیہ کو ہرگز سبک
نہ کیا، اس میں تھا۔ اپنا بھائی بنایا اور لوگوں میں اسے اپنا پدری بھائی قرار دیا، اس عمل سے معاویہ نے
اسلام کی مخالفت کی، ابن اشیر کہتے ہیں کہ اسلامی احکام کو مٹانے کے سلسلے میں معاویہ کا پہلا قدم مصف
الکحل والی ہے فرمایا تھا صاحب فہرست سے ملتی ہے۔

یہ لوگوں میں ہوئے، آپ سے حدیث سنیں اور بعد میں حضرت علیؓ کے شیعوں میں شعل ہونے، کو فوس کونٹ
اور ہر وہاں میں شریک ہوئے، حضرت علیؓ کی شہادت کے بعد علیؓ کے چاہنے والوں کے قاتل جبر
بن عدی کے قتل کے قتل کے بعد کو فوس سے موصول چلے گئے اور وہاں ایک غار میں رہنے لگے،

اس کا کہنا کہ ان کی گرفتاری کیلئے کسی کو بھیجا اس نے ستر قلم کر کے زیاد کے پاس بھیجا اس نے حکم دیا کہ شہر شہر بھر کر لوگوں
کو کہنا کہ ان کو قتل کر دو، اسلام میں یہ پہلا سر تھا جو شہر بہرے جایا گیا، الاستیعاب ج ۳ ص ۴۳، اردبی نے نقل کیا ہے کہ معاویہ
نے ان کو قتل کرنے کا حکم دیا اور انھیں بکھا گیا، جامع الرواة،

تاریخ یعقوبی ج ۲ ص ۲۳۱، کمال ابن اشیر ج ۳ ص ۴۴، تاریخ یعقوبی ج ۲ ص ۲۳۱،

عمرو بن اُمّیہ خضاعیؓ کے نزدیک قبیلہ خزاعہ سے ہیں وہ حبشہ والے سال یا حجۃ الوداع میں رسولؐ کی خدمت میں آئے

۵۲ میں معاویہ کے حکم سے لوگوں نے ولی عہد کے عنوان سے زید کی بیعت کی اور حکومت کو موروثی بنانے کا نظریہ معاویہ کے زمانہ میں سامنے آگیا۔ شہر طحطاہ میں سے کسی نے بھی نہیں کیا تھا،

جب عبدالرحمن بن ابی بکر کو شہر طحطاہ کی بیعت کر لی ہے تو انہوں نے حاکم مدینہ مروان بن حکم سے کہا: اس منصوبہ میں تم نے اور معاویہ نے امت محمدی کی فلاح و بہبود کو مد نظر نہیں رکھا بلکہ تمہارا مقصد روم کے بادشاہوں کی طرح حکومت کو موروثی بنانا ہے۔

خلافت کو موروثی بنانے کا نظریہ کو میں معاویہ کے حاکم مغیروہ بن شعبہ نے اپنی کرسی پر لے کر پیش کیا تھا کیونکہ اسے معاویہ منقول کرنا چاہتا تھا۔

اس سلسلے میں ان تشریحات ہیں:

۱۔ ابن اثیر نے ج ۳ ص ۵۲ اور بیہقی نے اپنی تاریخ ج ۲ ص ۲۲۸ پر زید کی بیعت لینے کا واقعہ حسن بن علی کے بعد کھاتے تاریخ کا ذکر کیا ہے۔

۲۔ یہ ابو بکر کے بیٹے ہیں، عائشہ اور ابی ہبہ ہیں، جنگ احزاب میں شہید ہوئے، جنگ جمل میں ان کے شہر کے ساتھ تھے، جب معاویہ نے لوگوں سے زید کی بیعت طلب کی تو انہوں نے کہا: خندق کی قسم میں اب اس معاویہ نے ان کے لئے ایک لاکھ درہم بھیج دیئے، انہوں نے ٹھکراتے ہوئے کہا: کیا اپنے ولی کو دنیا کے عوض فروخت کرنا چاہتے ہو؟

۳۔ ان کی طرف روانہ ہونے راستہ میں انتقال ہو گیا، الاستیعاب ج ۲ ص ۸۲۶،

۴۔ ان کا بیٹا اردنا لاہ محمد و کنگم تردیدوں ان جملہ حاکمات حکامات حرق قلم حرق، تاریخ ج ۳ ص ۵۰۶،

۵۔ مغیروہ بن شعبہ بن ابی عامر تہذیب ثقیف سے ہے، جنگ خندق والے سال اسلام قبول کیا، دراز قد اور تنہا جنگ یرک میں ایک کھکھو بیٹھا تھا اور ان کے بعد عثمان کی طرف سے کوہ کا حاکم ہوا جنگ یرک کے موقع پر ہوا تھا کہ کنگم کے بعد معاویہ نے اسے کوہ کا حاکم قرار دیا ۵۵ھ ہجری ۵۵ھ میں کوفہ میں، الاستیعاب ج ۲ ص ۸۲۶

۵۳ معاویہ کی طرف سے کوہ کا فرمانروا تھا معاویہ سے معزول کر کے سعد بن عاص کو معاویہ کا ارادہ معلوم ہو گیا اس نے سوچا: بہتری اس میں ہے کہ معاویہ کے پاس جاؤں اور کوہ کی فرمانروائی سے بے رغبتی کا اظہار کرتے ہوئے معاویہ کے پاس آ جاؤں کہ میرا استغنا منظور کریں تاکہ لوگ یہ سمجھیں کہ میں نے خود کو کوہ کی فرمانروائی سے کٹ کر معاویہ کے پاس آ گیا ہوں۔

۱۔ اگر میں ان حالات میں کوہ کی فرمانروائی نہ چھوڑتا تو کچھ بھی حاصل نہ ہو سکتی، اس کے بعد معاویہ کے پاس گیا اور اس سے کہا: رسول کے کٹر صحابہ دنیا سے چلے گئے ان کے بیٹے موجود ہیں دین و دنیا کے لئے، معاویہ نے وفیضیت کے لحاظ سے تم ان سب سے بہتر ہو کیونکہ میری بھینچ یہ بات نہیں آتی کہ

۲۔ معاویہ کو کوفہ سے تمہارے لئے بیعت کیوں نہیں لیتے؟

۳۔ کہا: کیا تمہاری نظروں میں یہ امر شرفی ہے؟

۴۔ کہا: بالکل،

۵۔ زید پر مغیروہ کی باتوں کا جوا دیا گیا تھا لہذا وہ اپنے باپ معاویہ کے پاس گیا اور مغیروہ کی باتوں کو نقل کر کے، معاویہ نے حکم دیا کہ مغیروہ کو حاضر کیا جائے، مغیروہ نے معاویہ کے سامنے اپنے نظریہ کو پیش کیا اور زید کا کہنا: تم جانتے ہو کہ قتل عثمان کے بعد امت اسلامی کے درمیان کتنے شدید اختلافات

۱۔ زید کا کہنا تھا کہ میں نے انہیں جانشین اور تمہارے بعد لوگوں کی پناہ گاہ ثابت ہوگا اس طرح معاویہ نے ان کی مدد باپ ہو جائے گا۔

۲۔ اس سلسلے میں کون لوگ میری مدد کریں گے؟

۳۔ میں ان کو فوسفے زید کی بیعت لینے کی ذمہ داری لیتا ہوں اور زیادہ ابی ابرہہ مصر

۴۔ معاویہ کے لئے بیعت کے گا اور ان دو شہروں کے لوگ کسی بھی شہر کے لوگ زید کی بیعت کی

۵۔ کوہ کی فرمانروائی پر برقرار رکھا اور زید کی بیعت لینے کی وجہ سے اسے معزول

نہیں کیا۔

مغیر اپنے دوستوں کے پاس لوٹ آیا، انہوں نے اس کی معذرت کے بارے میں معلوم کیا
نے کہا: میں نے معاویہ کو ایسی راہ بتا دی ہے کہ سالہا سال اموی حکومت کا جھنڈا ہر اتار رہا ہے
نے ایسا شگاف ڈال دیا ہے جو کسی بھی چیز سے پر نہیں ہو سکے گا۔

اس کے بعد مغیرہ کو واپس آیا اور اپنے ہمنواؤں کے سامنے بیعت یزید کا مسئلہ چھیڑا
نے اس کی بات مان لی پھر اس نے اپنے بیٹے موہبی بن مغیرہ کی سرکردگی میں دس ہ ایک قول کے مطابق
سے زیادہ افراد پر مشتمل ایک وفد شام بھیجا، انھیں تیس ہزار درہم بھی دیئے، وفد والوں نے
پاس جا کر یزید کی بیعت سے متعلق گفتگو کی اور کہا جتنی جلد ہو سکے اس کام کو انجام دیکئے، معاویہ
فی الحال اس کا کسی سے اظہار نہ کرنا لیکن اسی وقت پر تامل نہ کرنا، اس کے بعد معاویہ نے مغیرہ کے بیٹے
ان لوگوں کا دین تمہارے باپ کے لئے میں خرید رہا ہے؟ کیا تیس ہزار درہم ہیں اس پر معاویہ
یقیناً ان لوگوں کیلئے دین کی کوئی اہمیت نہیں تھی اس لئے معمولی قیمت پر فروخت کر دیا۔

معاویہ کا خط امام کے نام

معاویہ نے امام کے پاس خط لکھا اس کے بعض حصہ کا مضمون یہ ہے،
میرے پاس آپ کی فعالیت کی خبریں پہنچی ہیں اگر یہ خبریں سچ ہیں تو مجھے آپ
سے ایسی توقع نہیں تھی اور اگر غلط ہیں تو بجا ہے کیونکہ میں ایسی باتوں سے آپ کو
بری سمجھتا ہوں جو عہد آپ نے خدا سے کیا پہلے سے پورا کریں اور مجھے بھی ایسا کرنے
پر مجبور نہ کریں اگر آپ میری اور میری حکومت کی تائید نہیں کریں گے تو میں بھی آپ کے

تاریخ کال ج ۳ ص ۵۰۳ و ۵۰۴

معاویہ کی کوشش کروں گا اور اگر مجھ سے چال بازی سے پیش آئیں گے تو میں بھی ایسا
کارواں نکال دیتا ہوں اور امت اسلامی کو اختلاف و فتنہ سے بچا دیتا ہوں۔

معاویہ کے نام

امام نے معاویہ کو جو خط لکھا تھا اس کا بعض حصہ یہ ہے:
خدا کا خط ملا، لکھا ہے کہ تمہیں میرے بارے میں ایسی خبریں ملی ہیں جن کی
اور اس سے توقع نہیں تھی، میری طرف جن باتوں کی نسبت دی گئی ہے میں
ان سے بری ہوں، صرف خدا انہیں کی طرف آدمی کی ہدایت کرتا ہے،
اور اس وقت پہنچا نا ان میں چین لوگوں کا کام ہے جو امت اسلامی کے درمیان
الفاظ پہلانا چاہتے ہیں،

امام نے تم سے جنگ اور مخالفت کا حکم کھلا اعلان نہیں کیا ہے یہاں اپنے خدا سے ڈرتا
ہوں کہ تم نے گمراہی کی ہے، تم نے خدا کے صالح اور نازک راہ بندے جبرین عدی
اور ان کے ساتھیوں کو قتل کیا ہے حالانکہ تم نے یہ قسم کھائی تھی کہ وہ امان میں رہیں
میں، ابی مویسہ نے تمہیں نے غلاموں اور بدعتیوں سے جنگ کی اور امت اسلامیہ
کے ان لوگوں کا حکم دیا، براہیوں سے روکا اور اچھائی و نجات کی طرف بلایا اور اس
خط میں ان لوگوں کی کھڑکی کی موٹی مشکوں اور ان کی ملامت کو جان کے
دے کر دیا تھا،

خدا کے صالح بندے جس کا بدن عبادت کی وجہ سے لاغر اور چہرہ کا رنگ زرد

تاریخ کال ج ۳ ص ۵۰۳ و ۵۰۴

بیت لی جبکہ وہ نا تجربہ کار ہے، کھلم کھلا شراب پیتا ہے، کتوں سے کھینا اسکا
دبچسپ مشغلہ ہے میری نظروں میں تم نے ایسے ناشائستہ افعال انجام دے کر اپنے
دن اور دنیا کو برباد کر لیا ہے اور اپنی عولم کے حق میں ظلم کیا ہے اور اس بے وقوف
جاہل کی یا وہ گویوں پر کان دھرے اور اللہ کے حکم کو حقیر سمجھا ہے،

والسلام

بلا ذری لکھتے ہیں: کہ امام حسینؑ نے معاویہ کو بہت سخت خط لکھا اور اس خط میں زیادہ
اور جبران مدی کے بارے میں اس کے ناشائستہ کردار کی طرف اشارہ کیا نیز لکھا کہ جس دن سے تم
ہوئے ہو صالح لوگوں کو فریب دینے میں خوش ہو، مجھ سے بھی جو حیلہ کرنا چاہتے ہو کرو
میں وہ بن شعبہ اور ہمارے دشمنوں کی باتوں کو اپنا دستور العمل بناؤ خط کے آخر میں لکھا:
والسلام علی من اتبع الهدی

مکہ میں اجتماع

سیلم بن قیس کہتے ہیں کہ معاویہ کے انتقال سے ایک سال قبل حسین بن علیؑ، عبداللہ
عباس، اور عبداللہ بن جعفر کے ہمراہ حج کیلئے تشریف لائے، اس سفر میں امام حسینؑ نے بنی ہاشم

۱ ہمارے گزشتہ تحریر کی رو سے بے وقوف جاہل سے مراد معاویہ بن شعبہ ہے، حضرت علیؑ نے عار سے اس وقت
معاویہ کو فریب دینے سے انکار کر دیا عار فانیلم یا خذ من الدین الاما تکرہ من الدینا و علیؑ نے
یہ عمل الشہادت عاذا للستطائر ۲ بیچ ابلاغ کلمات حکمت، ۴۵،

۳ الامامہ و سیاست ۵، ص ۱۵۵،

۴ انساب الاشراف ۵، ص ۱۵۳،

اور موتوں اور اپنے چاہنے والوں کو حج کیا اور فرمایا کہ رسولؐ کے ان اصحاب کو بلا کے لاؤ جن
اور ان کا شہرہ ہے اس جلسہ میں جو کہ منی میں منعقد ہوا تھا ایک خیمہ میں سات سو سے زائد افراد
اس کے ان میں نامین کی اکثریت تھی مگر تقریباً دو سو رسولؐ کے صحابا بھی شریک ہوئے تھے
امام حسینؑ نے خدا کی حمد و ثناء کے بعد فیصلہ و مبلغ خطبہ شروع کیا،

اس سرکش انسان "معاویہ" نے ہمارے اور ہمارے شیعوں کے حق میں جو کچھ کیا
ہمارے آپ واقف ہیں لیکن یہاں میں آپ حضرات سے ایک سوال کرنا چاہتا
ہوں اگر صحیح ہے تو تصدیق کرنا اور اگر صحیح نہ ہو تو رد کرنا، میری تقریر سنو اور
لکھو اور حق سے واپسی پر قابل اعتماد لوگوں تک پہنچا دینا اور انہیں ہماری مدد
کرنے اور حق سے دفاع کرنے کی دعوت دینا کیونکہ مجھے احکام اسلامی کے مٹ
جانے کا خوف ہے، خدا اپنی غایت کو نور ہدایت کے ذریعہ کامل کر کے رہے
گا اگرچہ یہ کافروں کو ناگوار ہی کیوں نہ ہو،

اس کے بعد آپؑ نے اہلبیتؑ کی شان میں نازل ہونے والی بعض آیات پڑھیں اور اسی طرح
وہ حدیثیں نقل کیں جو کہ آپؑ کے والد، بھائی اور خود آپؑ کے اہلبیتؑ سے متعلق
ہیں، پھر امام حسینؑ نے اس خطبہ میں بیان کیں حاضرین نے ان سب کی تصدیق کی،

یوسف زایا:

میں ہمیں خلائی قسم دے کر کہتا ہوں کہ جو کچھ تم نے مجھ سے سنا اور جس کی تصدیق کی ہے
اسے مومن و مستند لوگوں سے بیان کرنا

۱ الامامہ و سیاست ۵، ص ۱۵۵،

۲ انساب الاشراف ۵، ص ۱۵۳،

۳ الامامہ و سیاست ۵، ص ۱۵۵،

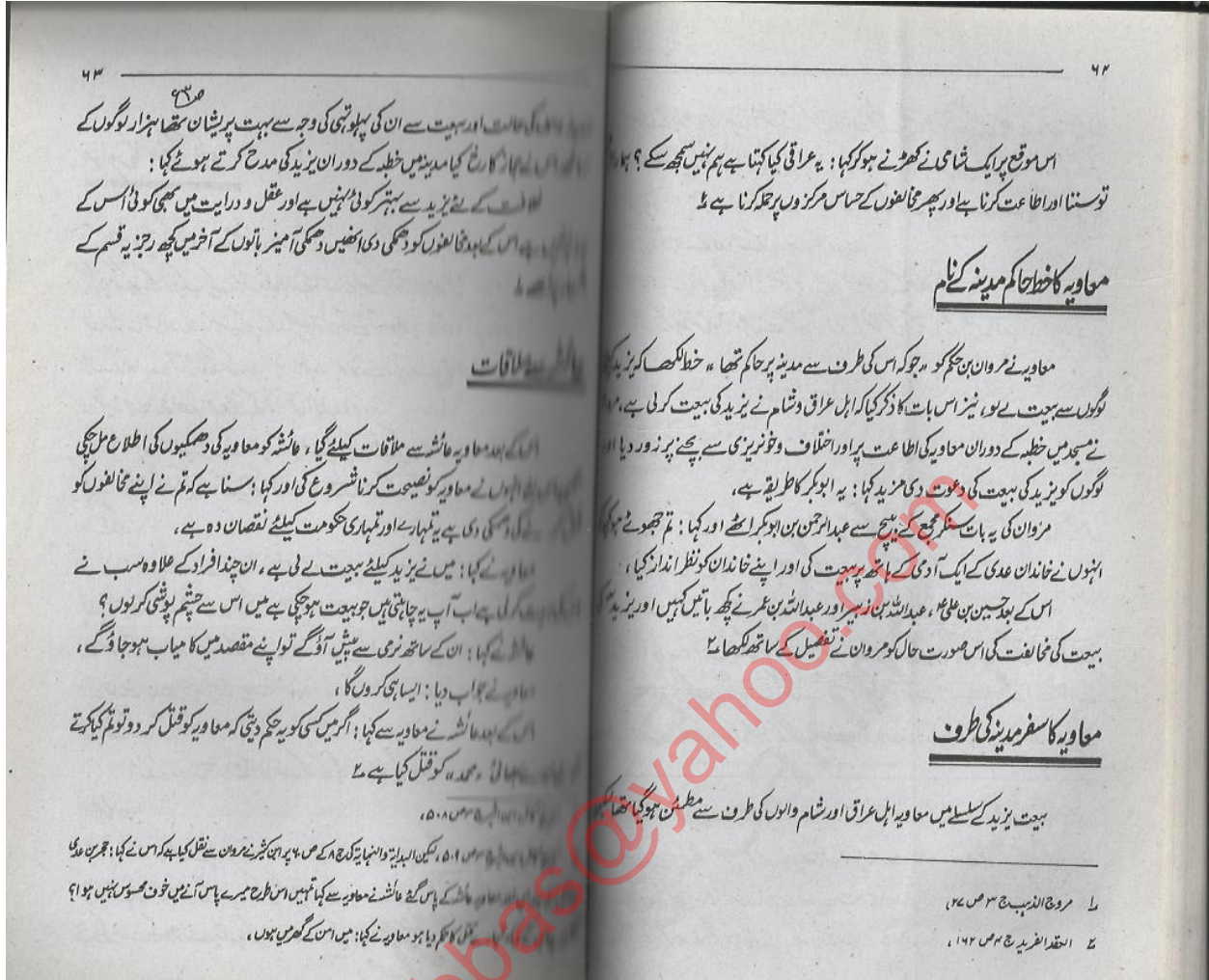
معاویہ نے عظمت اسلام اور حرمت خلافت کے سلسلے میں کچھ باتیں کہیں اور کہا: تم کہہ میرے کارندوں کی اطاعت کرنی چاہیے کہ نہ کہ میرے خدا کا فرمان ہے، اسی وقت بزرید کے علم و ادب و سیاست کے بارے میں بھی بہت کچھ کہا اور اس کی محبت کا مسئلہ بھی چلا اسی انشائیہ میں صُحاک اٹھا اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد معاویہ کو مخاطب کر کے کہا: اے امیر آپ کے بعد لوگوں کا کوئی امیر چاہیے اور ہمارا تجربہ ہے کہ جو منصور ایک اجتماع میں بنا جاتا ہے اس کے بت چاہیے اثرات و فواید ہیں اور اس سے اختلاف و خونریزی کا سد باب ہو جاتا ہے بزرید آپ کا بیٹا ہے وہ اخلاق و کردار، علم، دور اندیشی اور بردباری میں ہم جیسے امت کے برگزیدہ لوگوں پر فوقیت رکھتا ہے آپ ضرور دیکھ لیں کہ اپنے جانشین کے عنوان سے اس کا تعارف کر لیں تاکہ آپ کے بعد ہم اور ملت اسلام اس کے سایہ میں آرام و عزت کی زندگی بسر کر سکیں،

۱۔ محکمہ بن قیس و قلات رسولؐ سے قتل پیدا ہوا اور نہ کہ معاویہ کی طرف سے چار سال کوڑا گونہر ہوا اور معاویہ کی موت تک معاویہ کے ساتھ رہا معاویہ کی نماز جنازہ بھی اس نے پڑھائی بڑی دیکھ و لی بعد کی سے قبل بھی معاویہ کا معاویہ کے بعد نہ ہوا اور اس کے بیٹے معاویہ کے ساتھ رہا جب حکومت مروان کے انھوں نے پہلی گئی تو اس نے شام کے اکثر گونہروں کو مارا جن میں کچھ کچھ کھیت کر لی اور مروج رابطہ سے مروان کی فوج سے ٹڑنے ہوئے مارا گیا۔ استیعاب ص ۴۴۷

معاویہ نے جواب میں کہا: بیٹھ جاؤ کہ تم خطیبوں کے سردار ہو،
اس کے بعد شرکاء جلسہ میں سے بعض دیگر افراد نے ستائش آمیز باتیں کہیں اور نیز بدکاری بیعت پر

حُفّت نے کہا: اگر میں تمہاری بات کی تصدیق کرتا ہوں تو تمہارے خوف کی بنا پر اور
 انا ہوں تو خوفِ خدا کی خاطر اور پھر تم سے بہتر یہ دیکھو کہ کون جانتا ہے اگر تمہاری نظریں
 کی قابلیت والہدیت رکھتا ہے تو مشہور کی ضرورت نہیں ہے اور اگر تم سے خلافت
 کا سبب ہے تو اب اس کے لیے کہ ایک روز دنیا سے جا جائے اور پھر کافر دنیا پر کھانا پکے کر نہیں لے کر لوٹا جائے،

بلکہ راکھ و آذر وادھا گیا تا میں تھے انہوں نے سونے کا زنا دھڑک کیا کہ یہ لیکن مجھ کے زمرہ میں ہیں
 کہ سرور اور دل و خرد و علم میں مشہور رہے جبکہ عضن میں حضرت علیؑ کے ساتھ تھے جبکہ جنگ جمل میں کیا ساتھ
 معین بن زبیر کے زمانہ مذکور میں رہے پھر میں وفات پانا مصعب بن جناد میں نہ تھرت کہ کو کوفہ کے
 میں دفن ہوئے انکی اولاد اب ۱۲۶۲ھ مروج الدیوب ج ۱ ص ۱۷۰



۴۳
 اس موقع پر ایک شامی نے کھڑے ہو کر کہا: یہ عراقی کیا کہتا ہے ہم نہیں سمجھ سکتے؟ ہمارے
 دوستوں اور اطاعت کرنا ہے اور پھر مخالفوں کے حراس مرکزوں پر چل کرنا ہے۔

معاویہ کا خط انکم مدینہ کے نام

معاویہ نے مروان بن الحکم کو جو کہ اس کی طرف سے مدینہ پر حاکم تھا، خط لکھا کہ یزید کے
 لوگوں سے بیعت لے لو، نیز اس بات کا ذکر کیا کہ اہل عراق و شام نے یزید کی بیعت کر لی ہے،
 نے مسجد میں خطبہ کے دوران معاویہ کی اطاعت پر اور اختلاف و غوغائی سے بچنے پر زور دیا اور
 لوگوں کو یزید کی بیعت کی دعوت دی مزید کہا: یہ ابوبکر کا طریقہ ہے،
 مروان کی یہ بات سنا کر مجمع کے بیچ سے عبدالرحمن بن ابوبکر اٹھے اور کہا: تم جیسے نے کہا
 انہوں نے خاندان عدی کے ایک آدمی کے ہاتھ پر بیعت کی اور اپنے خاندان کو نظر انداز کیا،
 اس کے بعد حسین بن علیؑ، عبداللہ بن ابیہر اور عبداللہ بن عمر نے کچھ باتیں کہیں اور یزید
 بیعت کی مخالفت کی اس صورت حال کو مروان نے تفصیل کے ساتھ لکھا۔

معاویہ کا سفر مدینہ کی طرف

بیعت یزید کے سلسلے میں معاویہ اہل عراق اور شام والوں کی طرف سے مطمئن ہو گیا تھا کہ

۱۔ مروج الذهب ج ۳ ص ۷۷

۲۔ انقد الطریق ج ۱ ص ۱۶۲

۴۳
 اس کے بعد معاویہ عائشہ سے ملاقات کیلئے گیا، عائشہ کو معاویہ کی دھمکیوں کی اطلاع مل چکی
 تھی اور انہوں نے معاویہ کو نصیحت کرنا شروع کی اور کہا: سنا ہے کہ تم نے اپنے مخالفوں کو
 قتل کر دیا، وہی وہی ہے یہ تمہارے اور تمہاری حکومت کیلئے نقصان دہ ہے،
 معاویہ نے کہا: میں نے یزید کیلئے بیعت لے لی ہے، ان چند افراد کے علاوہ سب نے
 بیعت کر لی ہے اب آپ یہ چاہتی ہیں جو بیعت ہو چکی ہے میں اس سے چشم پوشی کر لوں؟
 عائشہ نے کہا: ان کے ساتھ نرمی سے پیش آؤ گے تو آپ نے مقصد میں کامیاب ہو جاؤ گے،
 معاویہ نے جواب دیا: ایسا ہی کروں گا،
 اس کے بعد عائشہ نے معاویہ سے کہا: اگر میں کسی کو یہ حکم دیتی کہ معاویہ کو قتل کر دو تو تم کیا کرتے
 تے؟ معاویہ نے جواب دیا: میں اس کے گھر میں ہوں،

۱۔ مروج الذهب ج ۳ ص ۷۷

۲۔ انقد الطریق ج ۱ ص ۱۶۲

وہ کہہ کر اٹھ کر گئے

اَللّٰہِی اَسْتَعِیْذُ فِی نَفْسِی اَخَذْتُ بِغَفْضِی وَتَرَكْتُ بِغَفْضِی ط

وہ کہتے ہیں کہ جب کہ روزِ ہفتا ہم شیشم قمار کے ساتھ کشتی پر سوار تھے تاکہ اچانک طوفان نہ اٹھ جائے۔ مگر طوفان کو دیکھا اور کچھ کشتی روک نہ سکی۔ لہذا وہ لوگ ڈوب گئے۔ کشتی بھر کے لوگ بچ گئے۔ یہ سچ ہے۔

۱۵۱۔ اہل تشیع کے کتب خانوں میں اس کتاب کی کچھ کاپیاں بھی موجود ہیں۔

خاص اسباب سے، بلکہ آپ کے حواریوں میں سے تھے آپ نے انہیں اپنی امتداد کے مطابق
 بنیاد میں سے، بغیر غلام تھے عظمت علی نے انہیں خرید کر کاڑا کیا تھا، مسلم بن قیصل کی شہادت کے
 اور امام کو گروہ خفا کے کہ فخر کیا تھا، قید خانہ میں شیخ نے مختار سے کہا کہ آپ خیر خلق ہیں
 بلکہ جو قتل کرے گا، ترجیح کریں کہ اساری ہو یا بیدار رہیں نواہ نے انہیں افسوس

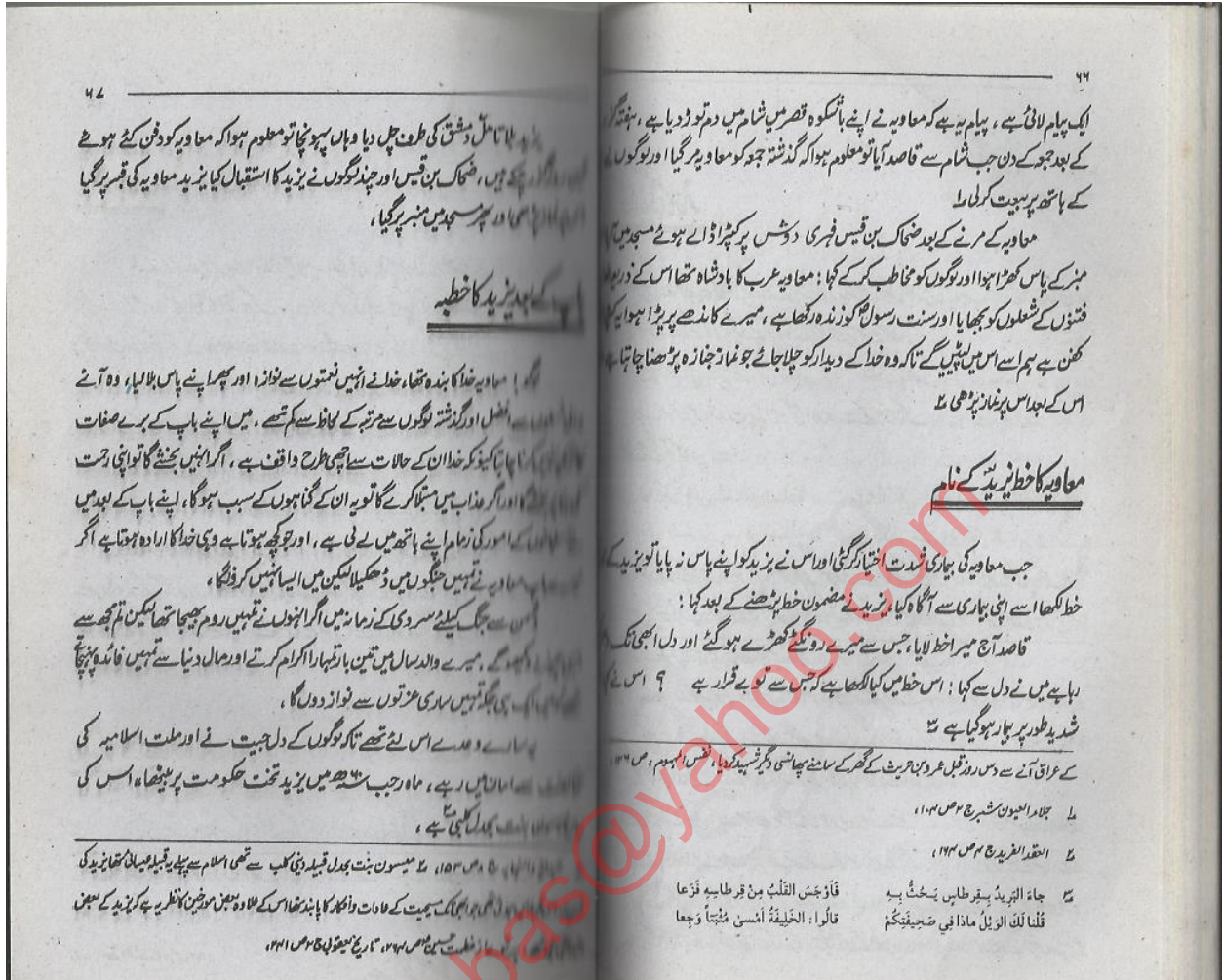
عبداللہ ابن زبیر نے معاویہ کے جواب میں کچھ باتیں کہیں جو اسے پسند نہیں آئیں۔ معاویہ نے کہا: "دوامی تلواریں ان کے پیچھے چھوڑے ہو جائیں اس کے بعد کہنا: زبان بلاؤ گے تو گردن کاٹ جائے گی،"

معاویہ کے ساتھ آنے والے افراد میں سے چاروں طرف بیٹھے تھے، معاویہ میں سے کچھ: حسینؑ، عبدالرحمن بن ابی بکرؓ، ابن مراد بن زبیرؓ نے بڑی کرسی پر بیٹھ کر انہیں کہے اور میں سربراہ آؤں۔ میں ان کی مرضی کے بغیر کوئی کام یا تکیہ کو نہیں پہنچ سکتا اگرچہ میں ان کے سامنے ان سے بڑھ کر بیٹھ چاہتا ہوں تو وہ ضروریات پر کان دھیں گے اور اطاعت کریں گے۔

اس کے بعد ان حضرات کو مخاطب کر کے کہا: یزید کی بیعت کر لو اور اس امر کے

سہرے کا دو!

نہام والوں نے کہا: اے معاویہ! اجازت دے کہ ہم ان گنہگار کے سرفروغ کریں۔ اسی وقت راضی ہوں گے جب یہ کھم کھلاتی ہو گی۔ یہی بیعت کریں گے معاویہ اسی طرح کہ یہی بیعت کی بیعت کرتا رہا ہو گا۔ اسنے شامیوں کی یہ بات نہی فرمائی، لوگ بیعت کرتے رہے۔



اسلامی حکام کے نام پر یہ کا خط

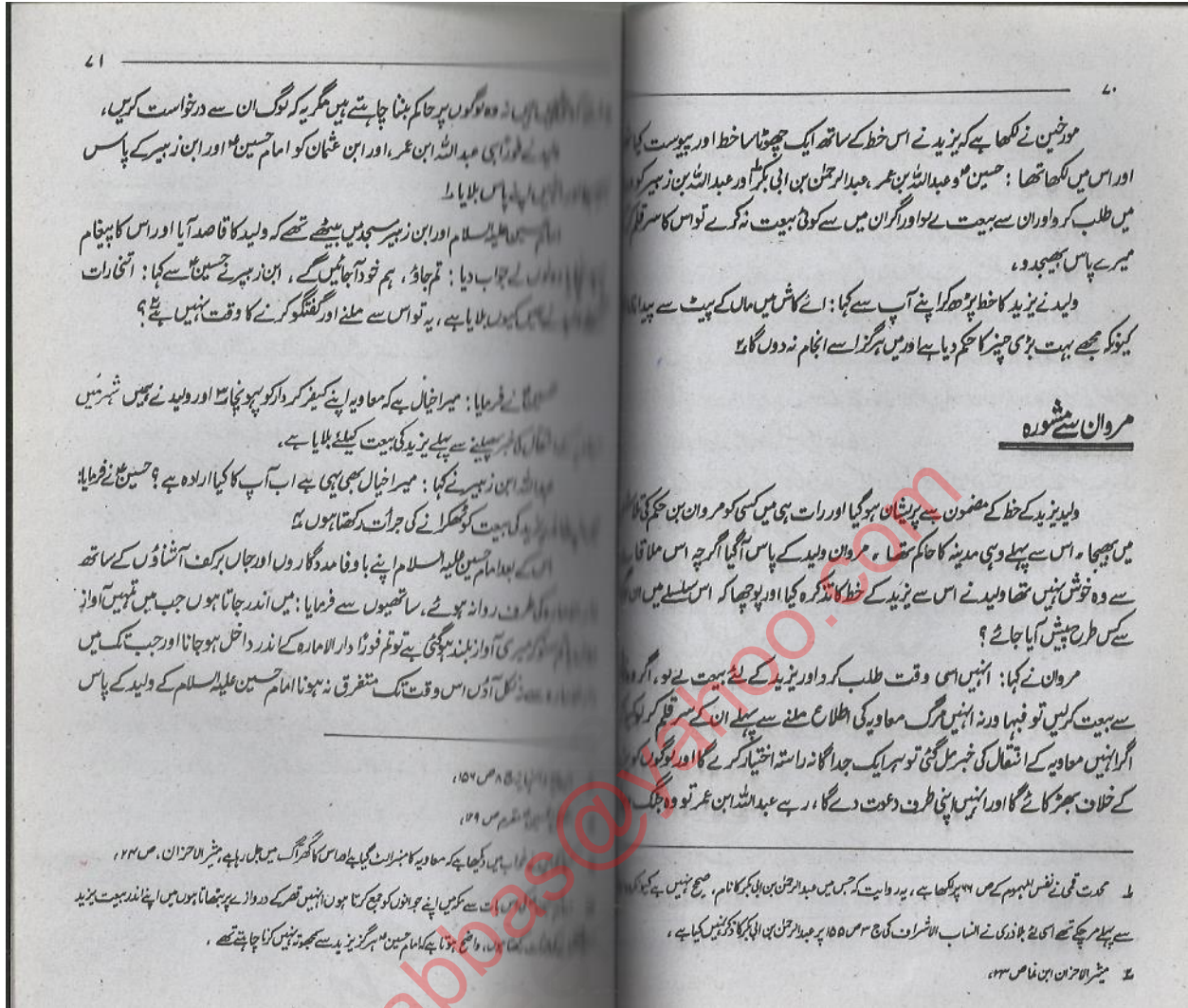
کتابخانه

6184

بسم الله الرحمن الرحيم

یزید کا خواب

٢٠ العقد الفرید ج ٤ ص ١٣٣،



ملاقات

تاسف کے ساتھ کہ استخراج پڑھا اور فرمایا: اگر امت کا امیر نیک
 ہو تو اسلام کا خدو خدو، افسوس ہے روان تیری حالت پر کہ تو تجھے نیک کی بہیت کا مشورہ
 دے گا کہ وہ فاسق آدمی نہ ہے کیوں ایسی فضول اور ناروا باتیں کہتا ہے؟

« عَلَى الْإِسْلَامِ السَّلَامُ إِذْ قَدْ بَلَّيْتَ الْأُمَّةَ بِرَأْعٍ وَمِنْهُ يَزِيدُ ،
وَأَنْ أَتَأْمُرُنِي بِتَبِيعَةِ يَزِيدٍ وَهُوَ رَجُلٌ فَاقِقٌ . »

ولید سے ملاقات

اس موقع پر امام حسین علیہ السلام کی آواز بلند ہوئی تو آپ کے شیس انصار نے بھی تلوار وادالامارہ میں داخل ہو گئے اور امام کو اپنے حلقہ میں لیکر قصر سے نکل آئے۔ بعض مویشیوں نے لکھا ہے کہ امام حسین علیہ السلام، مروان کی باتوں سے سخت برہم اور فرمایا: زرقار کے بیٹے تو میرے قتل کا حکم دیتے؟ ہم نبوت کے اہلیت ہیں اور یہ فاسق آدمی ہے جو حکم کھلا شراب پیتا ہے گئے گناہوں کے قتل کا حکم دیتا ہے مجھ جیسا اس سے نہیں کر سکتا اور یہ تو وقت بتائے گا کہ ہم میں سے کون خلافت اور لوگوں سے میریت لینے کے

۱۔ کامل ابن اثیر ج ۴ ص ۴۴۱

۵. ماکنت ابایع لیسزید،

ج مناقب ابن شہر آشوب ج ۲ ص ۸۸،

اسی شیخ صدوق مجلس ۳۲ حدیث ۱،

۳ مناقب ابن شهر آشوب ۸۸/۴

پاس کھڑے ہوئے اور اپنی والدہ کی فداکاریوں، شفقتوں اور عظمتوں کو یاد کیا اور آخری ہوئے والدہ سے رخصت ہوئے پھر اپنے بھائی امام حسین علیہ السلام کے مزار پر گئے قبر سے گئے اور غم و اندوہ کے ساتھ واپس گھر لوٹے۔

محمد بن حنفیہ کو وصیت

روایتی سے قبل امام حسین علیہ السلام نے وصیت کے عنوان سے ایک خط لکھا اس میں

... وَإِنِّي لَمْ أَخْرُجْ أَشْرًا وَلَا بَطْرًا وَلَا مُفْسِدًا وَلَا ظَالِمًا وَإِنَّمَا خَرَجْتُ فِي الْأَضْلَاحِ فِي أَهْلِ جَدِّي ﷺ أُرِيدُ أَنْ أَمُرَ بِالْمَعْرُوفِ وَأَنْهَى عَنِ الْمُنكَرِ وَأُسَبِّحَ بِسَبِّهِ جَدِّي وَأَبِي عَلِيٍّ بِنِ أَبِي طَالِبٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ، فَمَنْ قَبَّلَنِي بِقَبُولِ الْعِلْمِ قَالَهُ أَزَلِي بِالْحَقِّ وَمَنْ رَدَّ عَلَيَّ هَذَا أَصْبِرْ حَتَّى يَقْضِيَ اللَّهُ بَيْنِي وَبَيْنَ بِالْحَقِّ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ.

یہ وہ چیز ہے کہ جس کی امام حسین علیہ السلام نے اپنے بھائی محمد بن حنفیہ کو وصیت کی ہے جسے حسینؑ کو اپنی دہائی ہے کہ خدا ایک ہے اور اس کا کوئی شریک نہیں ہے اور محمد اس کے اور رسول نہیں خدا کی طرف سے حق لائے ہیں، جنت و جہنم حق ہیں، قیامت حق اور خدا نے متعال مردوں کو زندہ کرے گا،

امام بعد میں فتنہ و فساد پر پا کرنے یا اپنی شہرت کیلئے نہیں نکل رہا ہوں بلکہ میں تو اپنے کی امت کے امور کی اصلاح کیلئے نکل رہا ہوں، میں نے نیکیوں کا حکم دینے پر ایمان سے روکنے اور اپنے جد و والد علی بن ابی طالب

۱۔ حیات امام حسین علیہ السلام ص ۲۴۱

جنت کی پروا کرنے کا ارادہ کر لیا ہے اگر حق کی طرف دعوت کو کوئی قبول کرے گا تو خدا تعالیٰ اس کے لئے زیادہ سزاوار ہے اور اگر کسی نے اسے قبول نہ کیا تو میں جہنم کے گاہکوں میں سے ہوں اور اس جماعت کے درمیان فیصلہ کرے اور وہ بہترین فیصلہ کرنے والا ہے، بھائی یہ تمہارے لئے میری وصیت ہے توفیق صرف خدا کی مدد سے حاصل ہوتی ہے میں اسے توکل کرتا ہوں اور اسی کی طرف انابت کرتا ہوں، اس کے بعد خط ختم کر کے مہر لگائی اور اپنے بھائی محمد بن حنفیہ کو دیدیا۔

محمد بن حنفیہ کی پیشکش

محمد بن حنفیہ کو یہ اطلاع ملی کہ امام حسین علیہ السلام مدینہ کو خیر باد کہنے کا ارادہ کر چکے ہیں امام حسینؑ کے پاس آئے اور عرض کیا: بھائی! آپ میرے نزدیک سب سے زیادہ محبوب شخص ہیں، ایک کو بے دریغ شہرہ دیتا ہوں، آپ کی نوبت ہی دوسری ہے آپ کو اس سے زیادہ کچھ ہونا چاہیے، نزدیک کی بیعت سے پہلے تو ہی کیجئے اور جہاں تک ہو سکے شہروں میں سکونت سے زیادہ اہم کو ان کے پاس اپنے غماز سے بھیجئے اور انہیں اپنی طرف دعوت دیکھ کر وہ آپ کی بات کو قبول کریں اور آپ کی بیعت کر لیں تو اس عطیہ پر خدا کا شکر ادا کیجئے اور اگر وہ بیعت کے لئے

۱۔ حیات امام حسین علیہ السلام ص ۲۴۱

نہیں آئے تو ان کا عقب تھا اور ان کا نام نور تھا جو حنفیہ بن قیس کی بیٹی تھیں، حضرت علیؑ نے فرمایا: محمد اس بات کو کہہ کر کہ ان کو اطمینان ہو، ان مردوں میں سے محمد بن حنفیہ ہیں، لیکن محمد بن حنفیہ عراقی ہیں میں نے ان کے ہمراہ کسی عذر کی بنا پر ان کو اس سال وفات اور محل دفن کے بارے میں اختلاف ہے بعض کہتے ہیں کہ انہوں نے مدینہ میں انتقال کیا اور جبل

۱۔ حیات امام حسین علیہ السلام ص ۲۴۱

اسلام میں سید سلیمان نے ان کا شکریہ ادا کیا اور فرمایا: اے بھائی! خدا تمہیں جزا و ثمر عطا کرے
 اور مشورہ دیا، فی الحال میں مکر کی طرف جا رہا ہوں خود میری، میرے بھائیوں اور ان کے
 والوں کی پیروی رائے لیکن آپ مدینہ میں رہ کر ہمارے پاس ضروری خبریں پہنچاتے رہیں

گو کہ وہ چھپا پناہ

بعض افراد نے رعایت کی ہے کہ امام حسینؑ نے عراق کی طرف روانہ ہوتے وقت زہر سپرد کیا اور جو تکائب اور وصیتیں آپؑ پاس تھیں انہیں امانت کے طور پر ان کے سپرد کیا گیا نیز اہل ایمان پر علیہ السلامؑ کا بلا سے واپس آنے کا اہم مسئلہ وہ وصیتیں اور تکائبیں آپؑ کو ملتی ہیں

میں کی عورتوں کا گریہ

۱۱۔ ایشم کی عورتوں کو اس خبر سے بہت زیادہ قلق ہوا کہ امام حسین علیہ السلام مدینہ سے مکہ کی جانب روانہ ہو چکے ہیں۔ وہ سوچ رہی تھیں کہ اگر امام حسینؑ اس کے پاس تشریف لے گئے اور انہیں قتل کر دیے تو اس کی ذمہ داری کون اٹھائے گا؟

اہل بیتؑ کیا: اے ایک بازگوں کے محبوب خدا ہیں آپ کا فدیہ خرا دے،
 نہ کریں کسی اور کا نہ کریں کس کا دن ہمارے لئے ایسا ہی ہے جیسا رسولؐ کی وفات
 حضرت محمدؐ کی رحلت کے کچھ دنوں کے بعد فاطمہؑ علیؑ و حسنؑ و حسینؑ بھی داغ باندی دے گئے

تاریخ: ۳۲۹ ص ۱، کافی ۱، ص ۳۲۹

کسی دوسرے کا انتخاب کریں تو اس غلط انتخاب سے آپ کی عظمت و حیثیت پر کوئی اثر پڑے گا اگر آپ کسی شہر میں وارد ہوں اور وہاں کے لوگ آپ کی بیعت کے سلسلے میں تردد کا شکار ہوں، بعض آپ کی بیعت کریں اور کچھ مخالفت کریں اور نتیجہ میں فتنے کے شعلے بھڑک اٹھیں گے، لہذا ہر گز ان کا خون بہا جائے کہ کوئی بیعت سے ہٹا دینا چاہیں گے،

احمام حسین علیہ السلام نے فرمایا: بھائی تم ہی بتاؤ! میں کہاں جاؤں؟
محدث بن حنفیہ نے عرض کی: مکتہ شریف کے جائیں اور اگر کہیں کہیں شہرہ قادریہ کے لئے
ہے تو وہیں سکونت اختیار کر لیجئے اور اگر یہ محسوس کریں کہ مکہ بھی آپ کے لئے امن کی جگہ نہیں
ہو سکتا تو وہاں سے اٹھ کر مدینہ منورہ کی طرف نکل جائیے اور ایک جگہ سے دوسری جگہ سفر کرتے رہیئے یہاں
اپنے مقصد میں کامیاب ہو جائیں،

امام کا جواب

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا: بھائی! تم نے مجھے مشغولہ مشغوروں سے نوازا، دعا
آپ کے مشغورے قبول و پسند یہ قرار پائیں گے
بعض مخبرین نے لکھا ہے کہ امام حسین علیہ السلام نے جواب میں اپنے بھائی محمد بن حنفیہ سے
بھائی! اگر پوری دنیا میں مجھے کسی پناہ نہیں ملے گی تو بھی میں یہ عداوت نہیں کروں گا۔

محمد بن حنفیہ یہ سکرو نے لگے کیونکہ جانتے تھے کہ ان کے بھائی امام حسین علیہ السلام

۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۳۴،

فَقَالَ الْحُسَيْنُ عَلَيْهِ السَّلَامُ : « يَا أَخِي وَاللَّهِ لَوْ لَمْ يَكُنْ مُلْجَأٌ وَلَا مَأْوَى لِمَا بَانَتْ بَيْنَ مُعَاوِيَةَ »

۵) مرحوم علامہ بخاری کہتے ہیں: مدینہ سے مکہ کی طرف روانگی کے وقت امام احمد حسینؑ مکہ کے قتل ہوئے اور کہا: بیٹا عراق کی طرف سفر کر کے مجھے غزوہ نہ کرو، بے شک میں نے تمہارے جد رسولؐ سے کہا کہ تمہارا بیٹا عراق میں اس سرزمین پر قتل کیا جائے گا جسے کربلا کہتے ہیں۔

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا: نانی جان! خدا کی قسم میں اس کام کے نتیجہ سے بخیر واقع ہوں گا۔ وہ کہو جاری رکھنے کے علاوہ کوئی چارہ نہیں ہے، خدا کی قسم میں جانتا ہوں کہ مجھے کہاں اور کہاں قتل کیا جائے گا میں اس شخص کا نام بھی جانتا ہوں کہ جو مجھے شہید کرے گا اس جگہ سے بھی وقت تک اس کا کبھی دھن کیا جائے گا بلکہ میں یہ بھی جانتا ہوں کہ میرے المیہ اور شہیدوں میں سے کون کون سا شہید ہوگا اگر آپ کربلا کا یہ منظر دیکھنا چاہتی ہیں تو دیکھئے اس کے بعد امام حسینؑ نے اپنے ہاتھ سے کربلا کی طرف اشارہ کیا کہ امامؑ پر یہ قرار ہوگئی اور گریہ و زاری کے ساتھ کہا: خدا حافظ! روایت ہے کہ جب امام حسین علیہ السلام کربلا میں وارد ہوئے تو اس سرزمین کا نام معلوم کیا اور اس کو کربلا کہتے ہیں فرمایا: کرب و بلا ہے جب ہم اپنے والد کے ہمراہ فتنہ سازوں میں سے ایک راز ہے جن سے میں آگاہ ہوں اور یہ ایسا علم ہے جو مجھے عطا ہوا ہے۔

۶) بیہقی نے اپنی تاریخ میں نقل کیا ہے کہ رسولؐ نے حسینؑ سے فرمایا: بہشت میں لئے ایک درجہ ہے کہ جس پر شہید ہو کر ہی پہنچو گے، لہذا جب دشمن کی فوج امام حسینؑ سے کی تیاری کر رہی تھی آپ کو اس وقت یہ علم تھا کہ شہید ہوں گے اس لئے صبر سے کام لیا اور قرار دے تاب نہ ہوئے یہاں تک کہ درجہ اشہاد پر فائز ہوئے خدا آپ پر رحمت نازل کرے۔

۷) ابن الشہین علیہ السلام بأرض العراق في أرض يقال لها كربلاء۔

۸) امام حسینؑ نے معلوم کئے تو فرمایا: اس سرزمین پر آل محمدؑ میں سے ایک جاعت آئے گی کہ

۹) امام حسینؑ نے مدائن بن زبیر سے فرمایا: خدا کی قسم اگر میں کسی سوراخ میں بھی پہنچا ہوں

۱۰) اخبار الطول ص ۲۵۳

نیز لکھا ہے کہ امامؑ کی ایک بھوپھی نے کہا: میں نے ہاتھ کی آواز سنی ہے کہ کہتا ہے:
 وَأَنْ قَتِيلَ الطُّفْلُ مِنْ آلِ هَاشِمٍ أَذْلَ رِقَابًا مِنْ فَرْنِشٍ فَذَلَّتْ
 امام حسینؑ نے انہیں صبر کی تلقین کی اور فرمایا: یہ خدا کا حق فیصلہ ہے یہ ہو کر

شہادت سے آگے

① عبد اللہ بن عباس نقل کرتے ہیں: جس وقت امام حسین علیہ السلام عراق میں آپ سے ملاقات کے لئے گیا اور عرض کی: اے فرزند رسولؐ! میں آپ کو خدا کی قسم کہتا ہوں کہ عراق نہ جائیے اس کو کوثر تک کر دیجئے،

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا: اے عباسؑ کے بیٹے! کیا تم نہیں جانتے کہ سرزمین وفا و اصحاب کی جائے شہادت ہے میں نے عرض کی: یہ خبر آپ کو کہاں سے ملی ہے؟ فرمایا: ان رازوں میں سے ایک راز ہے جن سے میں آگاہ ہوں اور یہ ایسا علم ہے جو مجھے عطا ہوا ہے۔

② بیہقی نے اپنی تاریخ میں نقل کیا ہے کہ رسولؐ نے حسینؑ سے فرمایا: بہشت میں لئے ایک درجہ ہے کہ جس پر شہید ہو کر ہی پہنچو گے، لہذا جب دشمن کی فوج امام حسینؑ سے کی تیاری کر رہی تھی آپ کو اس وقت یہ علم تھا کہ شہید ہوں گے اس لئے صبر سے کام لیا اور قرار دے تاب نہ ہوئے یہاں تک کہ درجہ اشہاد پر فائز ہوئے خدا آپ پر رحمت نازل کرے۔

۱۱) آل ہاشم میں سے کربلا میں شہید ہونے والے نے قریش کے سرفرازوں کو ذلیل کر دیا اور وہ ذلیل ہو گئے،

۱۲) مقتل حسینؑ مقدمہ ص ۱۳۱،

۱۳) دلائل الاماتہ ص ۷۷،

۱۴) «إِنَّ لَكَ فِي الْجَنَّةِ دَرَجَةً لَا تَنَالُهَا إِلَّا بِالشَّهَادَةِ»۔

۱۵) مقتل حسینؑ ص ۱۴۰،

کہ جس طرح قوم یہود و نصاریٰ کے دن سرکشی و فرمانی پر اصرار کرتی تھی۔

(۶) روایت ہے کہ امام حسین علیہ السلام بار بار فرماتے تھے، خدا کی قسم مجھے یہ گروہ اس وقت تک نہیں چھوڑے گا جب تک میری کئی ہونی رگوں سے خون نہ بہ جائے گا اور جب کریں گے تو پھر خدا ان پر ایسے آدمی کو مسلط کرے گا جو انہیں ذلیل کرے گا۔

(۷) ابراہیم بن سید نے جو کہ زہیر بن قین کے ساتھیوں میں سے تھے، جب اثنار و امام حسین سے ملے تو، سنا کہ امام حسین نے زہیر سے فرمایا: اے زہیر میں اپنی جائے شہادت واقف ہوں اور اپنے سرائق کی طرف اشارہ کیا اور فرمایا: اسے زہیر بن قیس انعام پانے میں بڑید کے پاس شام لے جائے گا لیکن بڑید اسے کچھ نہ دے گا۔

فصل

مدینہ سے مکہ تک

امام حسین علیہ السلام کی مدینہ سے مکہ کی طرف

امام حسین علیہ السلام انوار کے دن ۲۸ رجب ۶۰ھ کو مدینہ سے مکہ کی طرف چلے اور تین شہان کو کہہ کر کہہ کر چلے گئے اور ۱۰ ابتدائے شعبان سے آخر ذی قعدہ تک ۱۰ مکہ معظمہ میں چار ماہ پانچ روز تک رہے۔ انھوں نے ذی الحجہ ترویج کے روز مکہ سے عراق کی سمت روانہ ہوئے اسی دن مسلم بن عقیل انھیں انکسار کا نعرہ بلند کیا تھا۔

امام حسین علیہ السلام نے مکہ اس وقت چھوڑا جب آپ کو یہ خبر ملی کہ یزید نے عمرو بن سعید کو مکہ کی طرف بھیجا ہے اور اسے امیر الحج مقرر کیا ہے نیز اسے تاکید ہے کہ جہاں آپ کو روکے وہاں پر درین قتل کر دے۔ دوسری طرف امام حسین کو یہ اطلاع مل چکی تھی کہ آپ کو

انھوں نے قتل کیا ہے کہ امام حسین ۳۰ رذی الحج بروز منگل مکہ سے عراق کی طرف روانہ ہوئے، اللہ وہم

۱۲۰ھ میں مکہ سے عراق کی سمت روانہ ہوئے، تاریخ

۱۔ تاریخ کامل ابن اثیر ج ۳ ص ۳۸

۲۔ تاریخ کامل ابن اثیر ج ۳ ص ۳۹

۳۔ دلائل الامارہ ص ۴۰

ملاقات

دورانِ امام حسین علیہ السلام سے ملاقات کی اور عرض کی: قربان جاؤ
اور ارادہ ہے؟

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا: فی الحال تو مکہ کا قصد ہے اور خدا کے خیر طلب کرتا ہوں،
عبداللہ بن مطیع نے کہا: قربان جاؤں میں بھی آپ کیلئے خدا سے خیر چاہتا ہوں لیکن ایسا نہ ہو کہ آپ
کو وہاں جانیں کیونکہ کوفہ وہی شہر ہے جہاں آپ کے والد کو قتل کیا گیا اور آپ کے بھائی کو دشمن کے
دھڑے میں ڈال دیا گیا تھا اور ان پر اٹھائی گئی زخم لگایا تھا کہ قریب تھا کہ شہید ہو جاتے خانہ خدا میں بیٹھ
آپ کے سر میں بڑے خاندان سے ہیں اور شہر و عظمت کے اعتبار سے مجاز میں کوئی بھی آپ کے برابر نہیں
ہو سکتا ہے یہی ہے تاکہ اطراف کے لوگ آپ کے پاس جمع ہو جائیں خدا کی قسم آپ کے بعد میں رنجیروں
کا ہونا چاہئے گا۔

قتل کرنے کے لئے پیدائے تیس ہزار آدمی بھیجے ہیں یہاں تک کہ بھی قابل توجہ ہے کہ امام
الہدیتؑ سے دیرینہ دشمنی تھی وہ حضرت عائشہؓ کی شان میں گستاخی کرتے تھے چنانچہ زین العابدینؑ
فرماتے ہیں: مکہ و مدینہ میں ہمیں آدمی بھیجے ہمارے طرفدار نہیں ہیں مگر ہر حال جب امام
یزید کی اس سازش کی اطلاع ملی تو خدا کی حرمت کے تحفظ کی خاطر طواف و سعی کے بعد
مفردہ سے بدلا اور مکہ مکرمہ کو چھوڑنے کا فیصلہ کیا،

محمد حنفیہ کے علاوہ بیٹے بھائی بھتیجے اور اکثر اہلبیت امام یحییٰ کے ہمراہ تھے
دورانِ امام حسین علیہ السلام مسلسل اس آیت کی تلاوت کر رہے تھے:

﴿فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ﴾
مکہ جانے کے لئے امام حسین علیہ السلام نے عام راہ کا انتخاب کیا تھا اور جب اہلبیت
تھا کہ اگر ابن زبیر کی طرح غیر معروف راہ اختیار کرتے تو دشمن کے تعاقب سے بچ جاتے
نہ فرمایا تھا: ہرگز نہیں! خدا کی قسم میں اسی راہ سے جاؤں گا تاکہ جو مشیت خدا
ہو جائے۔

۱۔ تنظیم الزہراء ص ۱۵۳،

۲۔ شرح نوح البلاذری ابن ابی الدبیق ص ۱۰۴،

۳۔ مشہور ہے کہ امام حسین علیہ السلام نے حج کو غرہ سے بلائیں بات، تحقیق طلب ہے کہ یہ کونسا امام حسینؑ کو یہ واقعہ
ہنس کر کہیں گے تو انھیں دی انچ کو احرام کیسے باندھا اور پھر اسے غرہ سے بدلا ۱۹ دن تو آپ نے ماہ شعبان ۶۰
اور حج کو غرہ حج کے مہینوں میں نہیں ہوا تھا اس لئے یہ غرہ حج کیلئے کافی نہیں ہے مگر حج کے مہینوں میں یہ ملاقات
باندھ کر غرہ کیسے کرنا پڑتا ہے،

۴۔ ارشاد شیخ مفید ص ۱۳۲،

۵۔ سورہ قصص ص ۲۱۱ ارشاد شیخ مفید ص ۳۵۲،

فصل

مکہ میں

مکہ میں داخلہ

امام حسین علیہ السلام تین شعبان شب جبکہ مکہ میں داخل ہوئے اور آپ کی ورن زبان یہ کہت تھی ﴿وَلَمَّا تَوَجَّهَ بِلِقَاءِ مَدْيَنَ قَالَ عَمَسَى زَيْتِي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ﴾
 امام حسین علیہ السلام مکہ اقامت گزین ہو گئے تو دیگر لوگوں کے ساتھ وہ لوگ بھی آپؑ
 کے ساتھ میں شریاب ہونے لگے جو عمرہ کے لئے مکہ میں مقیم تھے، عبداللہ ابن زبیر نے بھی جو اور
 آپؑ کی قیام کیا اور نماز و طواف میں مشغول ہو گیا وہ ہر روز یا دو دن میں ایک بار امام حسین علیہ السلام
 کے لئے آتا تھا بہت زیادہ مضطرب و پریشان رہتا تھا اسلئے جانتا تھا کہ جب تک امام
 حسین علیہ السلام مکہ میں موجود ہیں اس وقت تک اہل حجاز اس کے ہاتھوں پر بیعت نہیں کریں گے کیونکہ
 امام حسین علیہ السلام ایک خاص اجتماعی حیثیت کے مالک تھے زیادہ تر لوگ آپؑ کی اطاعت کرتے تھے
 ہمارے لئے تھے عبداللہ ابن زبیر کا مقصد لوگوں کو فریب دینا تھا ایمان والوں میں علیہ السلام

نے اس کے بارے میں فرمایا تھا کہ اس نے دنیا حاصل کرنے کے لئے دین کا جال بچھایا ہے۔ اس میں کاشک نہیں ہے کہ اموی حکومت سے جنگ کرنے میں عبداللہ بن زبیر کا مقصد رضاے خدا کا حصول نہ ہو بلکہ وہ زمام حکومت کو اپنے ہاتھ میں لینے اور قدرت پر سپونجے کی ٹکڑیوں کی زندگی گزار رہا تھا، عبداللہ نے اس حقیقت سے اس وقت پر وہ اٹھایا جب ان کی بیوی نے شوہر سے تاکید کے ساتھ کہا کہ عبداللہ بن زبیر کی بیعت کر لیں، عبداللہ بن عمر نے بیوی سے کہا: کیا تم نے وہ سواری نہیں دیکھی جس پر چڑھ کر موقع پر مہم اور مسوار تھا؟ مجھے یقین ہے کہ ابن زبیر صرف اس شان و شوکت حاصل کرنا چاہتا ہے اور اس سلسلے میں عبادت و طاعت خدا سے مدد لے رہا ہے۔

قبر خدیجی کی زیارت

مکہ میں قیام کے دوران امام حسین علیہ السلام اپنی نانی حضرت خدیجہ کی قبر کی زیارت کے لیے وہاں نماز ادا کی اور اپنے خدا سے مناجات کی۔

اہل بصرہ کے نام خط

امام حسین علیہ السلام نے مکہ سے بصرہ کے تمام سربراہان اور وہ افراد کے نام ایک ہی مضمون کے تحت جن لوگوں تک امام کے غلام سلیمان کے ذریعہ خط پہنچے وہ مالک بن مسعود، بکر بن احنف بن قیس، ۱۔ «یصلح حبالہ الذین لا یضبطوا الذین» ۲۔ حیات الامام علیہ السلام ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵۴، ۱۵۵۵، ۱۵۵۶، ۱۵۵۷، ۱۵۵۸، ۱۵۵۹، ۱۵۶۰، ۱۵۶۱، ۱۵۶۲، ۱۵۶۳، ۱۵۶۴، ۱۵۶۵، ۱۵۶۶، ۱۵۶۷، ۱۵۶۸، ۱۵۶۹، ۱۵۷۰، ۱۵۷۱، ۱۵۷۲، ۱۵۷۳، ۱۵۷۴، ۱۵۷۵، ۱۵۷۶، ۱۵۷۷، ۱۵۷۸، ۱۵۷۹، ۱۵۸۰، ۱۵۸۱، ۱۵۸۲، ۱۵۸۳، ۱۵۸۴، ۱۵۸۵، ۱۵۸۶، ۱۵۸۷، ۱۵۸۸، ۱۵۸۹، ۱۵۹۰، ۱۵۹۱، ۱۵۹۲، ۱۵۹۳، ۱۵۹۴، ۱۵۹۵، ۱۵۹۶، ۱۵۹۷، ۱۵۹۸، ۱۵۹۹، ۱۶۰۰، ۱۶۰۱، ۱۶۰۲، ۱۶۰۳، ۱۶۰۴، ۱۶۰۵، ۱۶۰۶، ۱۶۰۷، ۱۶۰۸، ۱۶۰۹، ۱۶۱۰، ۱۶۱۱، ۱۶۱۲، ۱۶۱۳، ۱۶۱۴، ۱۶۱۵، ۱۶۱۶، ۱۶۱۷، ۱۶۱۸، ۱۶۱۹، ۱۶۲۰، ۱۶

کی آمد سے پہلے وہاں پہنچ جائے،

لکھا ہے کہ ”حجۃ“ بنت منذر بن جارد، عبداللہ بن زیاد کی بیوی کا گمان یہ تھا کہ یہ منصوبہ عبداللہ بن زیاد کے اشارہ سے بنایا گیا اور سلیمان کو امام حسین علیہ السلام کا جھوٹا قاصد قرار دیکر عبداللہ کے پاس بھیج دیا تاکہ اس کی جملہ باری سے امان میں رہے،

احضار بن قیس نے جواب لکھا: صبر سے کام لو! خدا کا وعدہ حق ہے اور خود کو بے ایمان لوگوں کے ہاتھوں مذمت میں نہ ڈالو!

یزید بن مہدی کا ردِ دل

اس نے بنی تمیم بنی حنظلہ اور بنی سعد کے قبیلوں کو جمع کیا اور ان سے کہا: بنی تمیم و انو! تمہاری میں میری کیا قدر و منزلت ہے؟ انہوں نے کہا: آپ ہماری عظمت، کائنات میں اور شرافت و منزلت کے لحاظ سے ہم سب سے بلند ہیں،

یزید بن سہود نے کہا: میں نے تمہیں اپنے کام کے لئے رحمت دی ہے تاکہ اس کے بارے میں تم مشورہ کروں اور تم سے مدد لوں، انہوں نے کہا بتائیے کیا ہے تاکہ عمل کریں،

اس نے کہا: معاویہ دنیا سے چلا گیا، ظلم و گناہ کے دروازے ٹوٹ گئے اور ستم کے پیر وہ تزلزل پیدا ہو گیا ہے اس نے اپنے بیٹے یزید کے لئے بیعت لی تھی وہ یہ گمان کرتا تھا کہ اس نے خدا کے پایوں کو مضبوط و حکم بنادیا ہے جبکہ اس کی یہ کوشش رائیگاں اور اس سلسلے کے شروع اس کے مضرت ثابت ہوئے اور اس کے بعد اسکے بیٹے یزید نے جو کہ کھلا شراب پیتا ہے اور کبھی غلط کام نہیں کرتا ہے، یہ دعویٰ کیا ہے کہ وہ مسلمانوں کا خلیفہ ہے وہ خود کو مسلمانوں کا امیر خیال کرتا ہے جبکہ مسلمان

﴿فَاضْبِطْ اَنْ وَغَدَ اللهُ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الْاَلْبَيْنُ لَا يُؤْفِقُونَ﴾

راہی نہیں ہیں، وہ اتنا بوقوت آدمی ہے کہ حق کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتا، خدا کی قسم دین کے لئے اس سے جہاد کرنا مشرکین سے جہاد کرنے سے افضل ہے، اور یہ حسین بن علی رسول اللہ کے نواسہ اور شریف اور صاحب فضل و نظریں، کہ تعریف نہیں کی جاسکتی علم کا دریا ہیں خلافت کا استحقاق ان کا ہے کیونکہ ان کا ماضی روشن معتد بہ ہمارا ذات رسول سے رشتہ اور ان کی محبت و مہربانی کو ہماری جانتے ہیں، انہوں نے خط لکھا ہے اور تم پر حجت تمام کر دی ہے نور حق سے منہ نہ موڑو کہ میں تمہارا جگہ اور باطل کے گرداب میں پھنس جاؤ گے جنگ جمل میں تم نے صفوں میں قیس ملکی و چیتے اور اس کو دھوڑ دیا تھا اور باطل کو اختیار کر لیا تھا آج نواسہ رسول کی مدد و حمایت کر کے اپنے دامن میں اس کو دھوڑا لو! خدا کی قسم تم میں سے جو بھی ان کی مدد سے پہلوئی کرے گا اور ان کی نصرت کرے گا اس کی اولاد اور قبیلہ میں خدا ذلت و پستی کو میراث کے طور پر جاری کر دے گا اب میں اس کا پاس نہیں لیا ہے اور ان سے دفاع کرنے کے لئے مجاہدوں، واضح رہے کہ اگر ہم آج نہیں مارے گا تو اس کو خود مرنے میں گے، میدان جنگ سے فرار نہ کرو کہ موت تمہارے تعاقب میں ہے خدا تمہاری ہوش میں آ جاؤ صبح جواب دو!

بنی حنظلہ والوں نے کہا: اے ابو خالد ہم آپ کے کوشش کے تیر ہیں اور آپ کے قبیلہ کے سوار گئے ہیں اور اگر آپ ہماری طرف تیر چلا میں گے تو نشانہ پر لگے گا، اگر ہم میدان جنگ میں قدم رکھیں آپ کے قدم چومیں گے مشکوں اور دشواریوں میں ہم آپ کے ساتھ ہیں ہم تلواروں سے آپ کی گردن کاٹ دیں گے اور جب بھی آپ چاہیں گے ہم اپنے سینوں کو آپ کی سپر بنادیں گے،

بعد قبیلہ بنو عامر نے لب کشائی کی اور کہا: اے ابو خالد! ہم آپ کے بھائی اور صلیف ہیں آپ کے غیظ میں آجانے سے غضبناک ہو جاتے ہیں اگر آپ کو سچ کا ارادہ کر چکے ہیں تو تم توقف

کرو اور تمہیں سے مرا احضار بن قیس ہے کیونکہ احضار وہ اور نام صحوہ دھماک بھی ہیں اس نے جنگ

اور اس کی کس، انکس و انکس ج میں،

کرتے ہماری طرف سے آپ کو پورا اختیار ہے جب آپ چاہیں ہیں بلائیں،
پھر نبی مسودہ کے قبیلہ نے کہا: اے ابو خالد! آپ کی مخالفت کرنا اور آپ کے حکم کی اطاعت
نہ کرنا ہمارے نزدیک بہت بری اور غلط بات ہے، جنگ جمل کے دن حضرت عیسیٰ نے ہم کو جنگ
کرنے کا حکم دیا ہم نے اطاعت کی اور اس تیج میں ہم کامیاب رہے اور ہمارے قبیلہ میں عزت بڑھ
اس سلسلے میں یہیں شہرہ کرنے کی مہلت دیکھئے،
یزید بن مسودہ نے انہیں مخاطب کر کے کہا: اگر تم نے نبی امیر سے جنگ نہ کی حد اتم ہمارے
سے ضرور انتقام لے گا اور ہمیشہ تمہارے درمیان جنگ و خونریزی ہوتی رہے گی۔

یزید بن مسودہ کا خط امام حسین کے نام

یزید بن مسودہ نے امام حسین کے نام خط لکھا جس کا مضمون یہ تھا: آپ کا خط موصول
جس چیز کی مجھے دعوت دی، اس سے مطلع ہوا، میں آپ کی مدد کرنے میں اپنی کامیابی دیکھ
اور آپ کی اطاعت میں حق کی اطاعت ہے، خدا زمین کو ہرگز ایسے امام و رہبر سے خالی نہیں
ہے جو کہ لوگوں کو نیکیوں کا حکم دے اور راہ نجات کی طرف ان کی راہنمائی کرے، آپ خلق پر
اور روئے زمین پر اس کی امانت ہیں آپ شہر رسالت کی سربراہ شہنشاہ کی مانند ہیں ہمارے قبیلہ
کے ساتھ رہتے جو کہ آپ کی اطاعت اور حکم پر عمل کرنے اور آپ کی چوکھٹ پر جبر سائی کے لئے
قبیلہ بنی امیہ نے بھی آپ کی دعوت کا اثبات میں جواب دیا ہے میں نے آپ کے پیغام کے ذریعہ
لوگوں کے دلوں سے کہہ دیا کہ ورت کے غبار کو ہارش کے پانی کی مانند دھو دیا ہے، اور آپ کی ہر
دلوں سے تاریکی کو دور کر دیا ہے،

۱۔ نفس المہوم ص ۸۷،

جب امام حسین علیہ السلام کو ان کا خط ملا تو آپ نے ان کے حق میں دعا کی اور فرمایا:
خدا انہیں خوف و ہراس سے محفوظ رکھے اور خدا انہیں اس روز سرفراز و سیراب
کرے کہ جس دن پیاس کی شدت سے دہن سوکھ جائیں گے۔
یزید بن مسودہ تیار تھے کہ قافلہ کر بلا سے جا ملیں کہ آپ کے امام حسینؑ اور ان کے وفادار انصار کا
انتقام ملی جس سے ان کے اور ان کے قبیلہ والوں کے دل شعلہ غم سے جلنے لگے اور آخری عمر تک اسی
انتقام پر رہے اور اس سعادتِ آخر میں موقع کے ہاتھ سے نکل جانے پر کہ جس کے تیج میں درجہ
پرفاں ہوئے، ہمیشہ افسوس کرتے رہے۔

یزید بن مسودہ کا خط امام حسین کے نام

جب امام حسین علیہ السلام کا عالم اور تقدیر سارا پیغام بصر و پوچھا تو یزید بن مسودہ نے جو کہ بھرہ
اور وہ افراد میں سے تھے۔ امام حسین علیہ السلام کے خط کا اثبات میں جواب دیا اور معاملہ کو صحیح
کئے کے لئے مسودہ کی بیٹی ماریہ کے گھر گئے تاکہ یہ گھر شہنشاہ کیوں اور امام کے انصار اسی گھر میں
تھے۔

یزید بن مسودہ نے کہ جن کا تعلق قبیلہ عبد القیس سے تھا اور وہ شجاعت و ہریرائیوں کے باپ
ایک میں اپنے بیٹیوں اور چاہنے والوں کو مخاطب کر کے کہا: میں نے فیصلہ کر لیا ہے اور عنقریب

اللہ من الخوف وأعزّك وأرواك يؤم الغطش الأكبر، ۱۔ المہوم ص ۸۷، متعلق حسین مرقم ص ۱۴۱،

۲۔ کتابتہ بعد الامین، ۱۰۔ یزید بن مسودہ نقل ہوا ہے اور تاریخ کلاں ج ۳ ص ۳۲ پر یزید بن مسودہ لکھا ہے،

۳۔ علی نے رجال میں ان کے والد کا نام متقدیر یا سعید لکھا ہے کہتے ہیں کہ: ماریہ بنت متقدیر یا سعید الجندیہ شہزادہ امیہ قیس

۵۔ تاریخ کلاں ج ۳ ص ۲۱،

بصرہ سے مکہ روانہ ہو جاؤں گا اور امام حسینؑ سے ملحق ہو جاؤں گا اس پر ان کے بیٹوں میں سے ۱۱ اور عبد اللہؑ نے اس پر خطر سفر میں ان کے ساتھ چلنے اور اُن کی مدد کرنے کے سلسلے میں مکمل طور کا اظہار کیا، دوسرے مددگاروں کے کہا: ہم عبد اللہؑ ابن زیاد کی فوج سے ڈرتے ہیں وہ ان کے انصار کو قتل کرنے میں کوئی دریغ نہیں کرے گا اس پر انہوں نے اپنے اپنے جانے والوں سے کہہ کر انہیں اپنے ان دوسرا دُشمنوں کے ساتھ دشمن کے چابک سواروں سے کوئی خوف محسوس ہوں،

یزید بن نبط اپنے دونوں بیٹوں کے ساتھ بصرہ سے مکہ چلے گئے وہاں یہ معلوم ہوا کہ امام حسینؑ کے مضافات میں بطرح میں قیام پذیر ہیں لہذا وہ اِطرح کی طرف روانہ ہو گئے، وہاں پہنچے تو انہیں بتایا کہ امام حسینؑ تم سے ملنے کے لئے گئے ہیں، وہ امامؑ کی غفلت کے باوجود اس خاک سن گرفتار کر لیا گیا اور اپنی منزل پر امامؑ کی زیارت سے مشرف ہوئے چونکہ امام حسینؑ آنے تک انتظار کیا تھا اس لئے ان کے دل میں اور محبت بڑھ گئی اور زبان پر یہ آیت جاری کی ﴿بِضَلِّی اللّٰہُ وَبِزَحْمِیْہِ قَبِلْ ذٰلِکَ فَلَیَنْفَرُوْا﴾ (۱)

سلام کے بعد امام حسینؑ علیہ السلام کی خدمت میں بصرہ کے عالم حالات اور اپنے محکوم متفرد کو بیان کیا، آپ نے ان کے لئے دعائے خیر کی، یزید بن نبط اپنے دونوں دلاوریوں کے ساتھ امام حسینؑ کے ہمراہ کربلا کی طرف روانہ ہو گئے اور اپنے دونوں بیٹوں کے ساتھ امام حسینؑ کی میں درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

اہل کوفہ کے خطوط

بعض مؤرخین نے لکھا ہے کہ جب اہل کوفہ کو یہ معلوم ہوا کہ معاویہ مر گیا ہے اور امام حسینؑ

۱۔ یزید ۵۸، ۲۔ نفس المہموم ص ۹۲

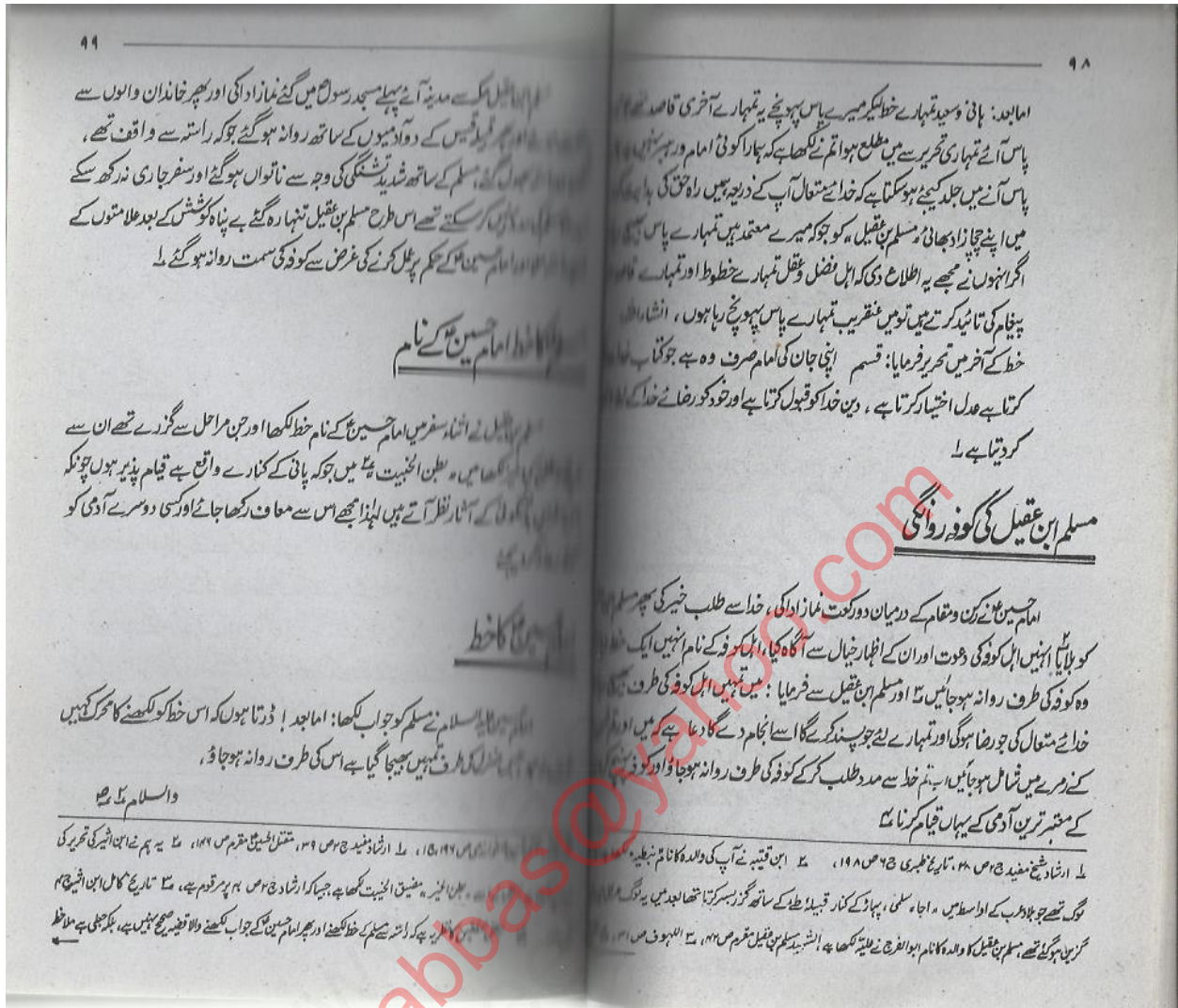
یہی بڑی کی اطاعت قبول نہ کی اور آپ کے وفادار شیعہ مسلمان بن ضرہ ذریعہ اہل کوفہ اور مدائکہ و مشورہ کے بعد اس بات پر اتفاق ہوا کہ امام حسینؑ کو خط بھیج کر کوہانے والے چنانچہ عبد اللہ بن مسعودؓ اور عبد اللہ بن قائلؓ کو اس بات پر مامور کیا گیا کہ وہ امام حسینؑ کو خط لکھ جائیں اور امام حسینؑ کی خدمت میں خطوط پہنچائیں، دس رمضان کو اہل کوفہ کے خط پہنچے اور خطوط امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر کئے، دور درجی نہیں گزرے تھے کہ امام حسینؑ نے اس میں ہر صید اویٹا اور عبد الرحمن بن عبد اللہ ارجیؓ کے ذریعہ دیگر خطوط امام حسینؑ کی خدمت میں پہنچائے، دس کے بعد ہانی بن ہانی، یحییٰ بن سعید بن عبد اللہ صفیؓ، اہل کوفہ کے لئے خط لکھ کر انہیں حاضر ہونے یہاں تک کہ کوفیوں کے بھیجے ہوئے خطوط کی تعداد بارہ ہزار تک پہنچ گئی اور باقیثیت گوئی امام حسینؑ کو خط لکھے اور کوفہ آنے کی دعوت دی مثلاً:

اے محمدؐ کوہ کے سربراہ! درود خیروں اور تحریک تواہن کے سربراہوں میں سے ایک تھے، میں اور وہ میں شہید ہوئے، اہل کربلا میں انہیں رسولؐ کے حمایتی تھا کیا ہے، ان کی شہادت مٹ رہی ہے واپس ہوتی ہے تیغِ قتال سے، اہل کربلا میں یہی تحریک تواہن کے رکھتے تھے، ابھرا میں ص ۱۴، ۱۵ عبد اللہ بن قائلؓ کو کوفہ کے شرفاء میں سے ایک تواہن کے رکھنے میں اور وہ میں کیا ان میں صرور کے ساتھ شہید ہوئے، نفس المہموم ص ۹۹۔

۱۔ امام حسینؑ کے حاضر میں سے ایک تھے، شہد کربلا میں یہی تواہن میں ان کی شہادت کا ماجرا کتاب میں مذکور، ۲۔ رمضان ۶۰ کو اہل کوفہ کے ۵۳ خطوط لکھ کر مکہ میں امام حسینؑ کی خدمت میں پہنچے یہ بھی شہد کربلا میں تھا، ۳۔ ہانی ابن ہانی یحییٰ بن سعیدؓ ہمدانی تھے تحریک تواہن کے سرگرم رکن تھے ابھرا میں ص ۱۴، ۴۔ کوئیوں نے پانچ ہزار امام حسینؑ کی خدمت میں ۱۲ ہزار خط لکھے، ۵۔ بعض کا مضمون یہ تھا کہ لوگ اموی حکومت سے ہزار میں اور اہل کوفہ نے بڑی کی بیعت نہیں کی ہے، ۶۔ اہل کربلا نے امام حسینؑ پر محبت تمام کر دی تھی،

« تَلْعَنُوهُ يَا إِمَامَ الْإِسْلَامِ »

۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۱۳۷



جب مسلم نے خطا پڑھا تو کہا: مجھے کوئی خوف و سراس نہیں ہے، اس کے بعد راہی کو فہم یہاں تک کے قبیلے کے چشمہ تک پہنچ گئے وہاں کچھ توقف کیا اور پھر وہاں سے روانہ ہوئے ایک دیکھا کہ ایک نیکاری نے ایک بہن کو تیر مارا اور بہن تیر کھاتے ہی مر گیا، مسلم نے کہا: انشاء اللہ دشمن کو ماریں گے۔

ابن ابی شیبہ شاکری کی تقریر

عائس بن ابی شیبہ جو کہ اس مجمع میں موجود تھے، اٹھے اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد کہا: اے کو فہم آپ حضرات کے بارے میں کچھ نہیں کہنا ہے، میں نہیں جانتا کہ تمہارے دل میں کیا ہے، میں آپ کو کرب دینا چاہتا ہوں لیکن میں کہہ رہا ہوں خدا کی قسم وہ میرے پیسر کی آواز ہے اور اسی کو تسلیم کیا اور وہ یہ کہ میں پوچھنے سے تیار ہوں جب بھی میری ضرورت پڑے گی میں دریغ نہیں کروں گا کہ آپ کی رکاب میں اس شیشے کے ساتھ جو کہ میرے ہاتھ پر دشمنوں سے جنگ کروں گا اس کے بعد صرف رضائے خدا اور اس کی جزا ہے،

اس کے بعد شیبہ ابن خطا ہر کھڑے ہوئے اور کہا: خدا تم پر رحم کرے تو تمہارے دل میں تھا خدا کے پیرائے میں زبان سے ادا کر دیا انہوں نے اپنی تقریر جاری رکھتے ہوئے کہا: خدا کی قسم، عائس کی مانند آپ کی مدد کیلئے تیار رہوں ان کے بعد سعید بن عبداللہ حنفی کھڑے ہوئے

بعض مورخین نے مسلم کی بیعت کرنے والوں کی تعداد اٹھارہ ہزار لکھی ہے، ارشاد مندرجہ ۲
بیعت کرنے والوں کی تعداد چوبیس ہزار تحریر کی ہے، نفس الہم ۱۵، اسی طرح بعض نے اٹھاس ہزار
تعداد لکھی ہے، حیات الامام حسین ص ۲۷، ایک دوسری حدیث میں آیا ہے کہ بیعت کرنے
والوں کی تعداد سے بھی زائد تھی، تواریخ سابق،
حالات شہداء کو بلا کے عنوان کے ذیل میں بیان ہوئے گئے،

بہر حال مسلم نصف رمضان المبارک کو مکہ سے روانہ ہوئے اور سوال کو کو فہم پہنچے۔
مختار بن عبید تغنی کے گھر قیام پذیر ہوئے۔

مختار کے گھر

مختار اپنے خاندان والوں میں سب سے زیادہ شریف، باہمت اور قوی ارادہ انسان
الہیت کے دشمنوں کی شدید مخالفت کرتے تھے، لوگ انہیں عقل مند اور صاحب الرائے سمجھتے، انہوں
دشمنوں سے جدا اور الہیت سے متصل ہو کر ایسے بلند اخلاقی اور انسانی کمالات حاصل کئے تھے کہ ان کے
ظاہر و باطن سے الہیت کی محبت و فطرت آشکار تھی۔
مختار کے گھر قیام کرنے کی وجہ یہ تھی کہ مختار شیعوں کے سربراہ اور وہ افراد میں شمار ہوتے تھے اور
مسلم کو بھی یقین تھا کہ وہ امام حسین کے خلیفہ اور ان کے وفادار ہیں اور پھر مختار و حاکم کو فہم نے
بشیر کے بہنوئی تھے، جب تک مسلم مختار کے گھر میں قیام پذیر رہتے اس وقت نہان بن بشیر مسلم کے
چھیرے کتے تھے، مسلم کے اس انتخاب سے آپ کی اجتماعی حالات سے آگہی واضح ہو جاتی ہے۔

فرمانیں حیات الامام حسین ص ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱

اور عباس وجیب جیسے کمات ادا کئے مٹا

مسلم کی بیعت

ان ولولہ نگیز تقریروں کا اثر یہ ہوا کہ شیعہ مسلم کی بیعت کرنے اور امام حسینؑ کی آواز
کھینے کے سلسلے میں ہمیشہ سے زیادہ سخت اور استوار ہو گئے اور درج ذیل سات شرائط پر مسلم
بیعت کا اعلان کیا:

- ① لوگوں کو کتاب خدا اور سنت رسولؐ کی طرف دعوت دیں گے،
- ② ظالموں سے جنگ کریں گے،
- ③ متضعفین سے دفاع اور محاشرہ کے محروم لوگوں کی دستگیری کریں گے
- ④ مال غنیمت مسلمانوں کے درمیان مساوی طور پر تقسیم کیا جائے گا،
- ⑤ حق، خدا تک پہنچا جائے گا،
- ⑥ اہل بیت کی مدد کی جائے گی،
- ⑦ صلح پسند افراد سے صلح اور زیادتی کرنے والوں سے جنگ کریں گے

مسلم کا خط

جب لوگوں کی اتنی بڑی تعداد نے مسلم کی بیعت کرنی اور مسلم بن عقیل کو اس اہل
کامیابی کا یقین ہو گیا تو آپؐ نے امام حسینؑ کے نام خط لکھا کہ: اہل کوفہ میں سے انصار و ہمراز
بیعت کرنی ہے، امام حسینؑ سے تقاضہ کیا کہ یہ لفظ ملتے ہی کوفہ کے لئے روانہ ہو جائیے کیونکہ
حیاء الاسلام میں حج ۲ ص ۳۴، بحار الانوار ج ۲۶ ص ۳۳۹، البدایہ والنہایہ ج ۸ ص ۳۳

اور امام حسینؑ سے سب زاریاں مٹا مسلم بن عقیل نے یہ خط لکھ کر جسکے ساتھ اہل کوفہ کا خط بھی تھا
امام حسینؑ کو پہنچا دیا اور عباس بن ابی شیبہ شاکو کی کے ذریعہ روانہ کیا مٹا

امام حسینؑ کی تقریر

امام حسینؑ نے حکم کو فرمان بن بشیر کو جب مسلم کی آمد اور ان کے ہاتھ پر لوگوں کے بیعت کرنے
کا حکم پہنچا اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد اہل کوفہ کو مخاطب کر کے کہا: خدا کے بندو! خدا
کا رسولؐ کا نذاری اور فتنہ پروری سے بچو کیونکہ اس سے لوگوں کا کشت و خون ہوتا ہے اور
یہ لوگوں پر باد غارت ہوتے ہیں میں اس سے نہیں بڑوں گا جو مجھ سے جنگ نہیں کرے گا اور
میں اس کی جان لینے کی فکر میں مبتلا کروں گا، صرف اتنا کہ میں بنا پوکسی گو تو قمار نہیں کروں گا
میں اس سے روکے اور اس عہد سے چشم پوشی کرو گے جو تم نے کیا ہے، اور یہ زیدؑ کی مخالفت
میں اس قسم میں اس وقت تک جنگ کروں گا جب تک میرے ہاتھ میں تلوار ہے خواہ میں
اس کی مدد کے لئے نہ اٹھے مجھے یقین ہے کہ تمہارے درمیان حق کو پہچاننے والوں کی تعداد

امام حسینؑ کی تقریر کے بعد نبی امیہ کا حلیف وہم بنان عبد اللہ بن سعید حضرمی اٹھ کھڑا ہوا
اور خط لکھا جو طریقہ کار آپؐ نے اختیار کیا ہے یہ آپؐ کو پہنچ نہ چھوڑے گا، اس فتنہ کا علاج
یہ ہے کہ دنیا ہے اے نعمان تمہاری رائے مکڑہ و ناتواں لوگوں کی سی ہے،

امام حسینؑ نے عبد اللہ بن سعید حضرمی کی باتوں سے غیظ میں آگیا اور کہا: اگر میں خدا کی اطاعت میں
میں اس کی جانوں تو یہ میرے لئے خدا کی نافرمانی کی حالت میں باعزت شمار ہونے سے بہتر ہے

عبداللہ ابن مسلم جو اموی حکومت کا ملک خوار خراسان سے پہلے اس نے بڑیکو خراگھا اور کما
احمد حسین کے غاصبوں مسلم بن عقیل کو امی اور ان کے ہاتھ پر اکثر لوگوں کے سمیت گرنے کی خبر دی
کا اظہار کرتے ہوئے لکھا : اگر کوہ پرانی حکومت بترار رکھنا چاہتے ہیں تو کسی عزم یا ہنرمند
بھیجیے مگر آپ کے فرمان کے مطابق عمل کرے اور آپ کے دشمنوں سے اس طرح غصے جس طرح
خود غصے نہان بن بشیر ایک بزدل و کابل ادا رہے یا پھر بڑی کوشش کا اظہار کر رہا ہے وہ
کے لائق نہیں ہے، اس کے بعد عبداللہ ابن مسلم اور حکومت کے تمام وظیفہ خوار افراد، جیسے
ولید، عرب، سعد بن ابی وقاص نے بڑیکو کی مضمون کے خط لکھے ۔

سرچون معاویہ کا غلام

جب یہ خطوط مزید کوٹھے کو اس نے اپنے باپ کے وفادار غلام مسرجون کو بلا کر اس کے کوفہ میں سونپ دیے، ان کے ہاتھ پر اہل کوفہ کی بیعت اور حنا بن بشیر کی تسلی کی کوٹھے نے گورنر کے انتخاب کے سلسلے میں اس کی رائے طلب کی، اگر اس وقت تمہارا باپ مر جاتا تو اس سلسلے میں تم اس کی بات پر عمل کرتے،

مزید نے کہا: بالکل،

سر جون جانتا تھا کہ مزید عبداللہ بن زیاد سے بظن ہے اس لیے اس نے مزید کوٹھے

۱۔ ارزا شیخ خلیفہ ص ۸۱، ۲۔ سرتوب بن منصور شام کے تھراکین سے تھا مادیہ نے اپنی حکومت سے اس سے ہٹ کر کہا تھا سرتوب کا باب غصہ شروع کرنے سے قبل ہر طرف سے ہیتا لگا کر خونی تھا اس کا بھی احوال حکومت میں ہوا وہ پہلے بے جا جو کچھ غریبوں کو خطبے سے نیچے دیا تھا کہ یہ سائن کو سرکاری مہروں پر نہ لکھا جائے مسلمان ہو جائیں، حاشیہ شمس الدین منقوس ص ۱۸۸،

لئے معاویہ کا وہ فرمان نکالا جو اس نے اس کے مرنے سے قبل لکھوا دیا تھا اور اس میں
 کاغذ کو زری عبید اللہ بن زیاد کے نام لکھی تھی، جیسا کہ نکال کر یزید کو دکھایا اور کہا:
 "ابن زیاد کے بارے میں یہ تھا معاویہ کا نظریہ اور اب چونکہ پورا کوثر بھرا کا شکر ہے لہذا
 کاغذ دونوں کاغذوں زری عبید اللہ بن زیاد کو بناد دو تاکہ وہ حکومت کے ان دونوں
 ناموں کو پہن دے،

یہی ہے جس نے جو بن کا مشن ہو کر لیا اور کوئی حکومت کا پروانہ عید اللہ بن زیاد «جو کہ
بہرہ کا حاکم تھا، کے نام کا پروانہ حکومت سے پیوستہ خط سلم بن عمرو باہلی ملے
عید اللہ بن زیاد کے پاس بھیج دیا

کا خط عبید اللہ بن زیاد کے نام

عبداللہ بن زیاد کے نام پر زید نے جو خط لکھا تھا اس کا مضمون یہ تھا، بعض لوگ ایسے ہیں
جو دنیا کی طرح خوشامشاق ہوتے ہیں اور دوسرے دن ان پر فریخ و لعنت ہوتی ہے بہت سی
چیزیں دل پسند بن جاتی ہیں مگر تم جس منصب و مقام پر ہو اس کے لئے شائستہ ہو عرب شاعر
ہیں کہ بہت بلند ہوئے اور بادلوں سے بھی اوپر پہنچ گئے مگر خدا قاتب کے علاوہ تمہارے
کون سا کوئی اور ملک نہیں ہے۔

۱۔ امام ربانی قتیبہ کا باپ ہے، قتیبہ سلم کا باپ ہے اور مسلم عبد اللہ کا باپ ہے کہ الامام و السیاسات اس کی شہید
۲۔ امام احمد بن محمد ص ۸۷، مآثر تاریخ کامل ابن اثیر ج ۳ ص ۵۶
۳۔ ابن ابی شیبہ ابن زیاد سے نزدیک بدلتی کو آشکار کر دیتا ہے،
۴۔ ہذا ماؤزت السحاب وقوفہ، فلک الامر مقبض الشمس مقعدہ،

لا اله الا الله محمد عبده

Lu

المجلد الحادي عشر، ص ۱۲۹، في مشير الاحزان ص ۳۰،

عبد اللہ بن زیاد کی تقریر

کوہ کی سمت عبید اللہ کی رونگی

١. مقتل الحسين بمقرعه من ١٣٢٨، في حيات الامام الحسين راجع ٢ من ١٣٥٥، ٣. كامل بن اثير ج ٢ ص ٢٣.

۴ شریک بن اعدا ہوا۔ المومنین کے خاص اصحاب میں سے تھے جنگ جمل و صفین میں ان کے ساتھ تھے، ان کے بعد ان کا زمانہ کی عزت و تکریم کا تھا شیعہ کیوں بڑے محنت سے صاحب مناقب نے انہیں بہولانہ کہا ہے کہ اگر ماری تو کر کے بے وقوف بن جائیں گے، ۸۸ انھار کے ساتھ، شریک کی اطاعت نہ تارت قدم بڑھ کر جنگ صفین

حکومت کا جاسوسوں و ملازموں سے برتاؤ

عبداللہ بن زیاد نے حکومت کے جاسوسوں اور بادشاہ تک قبیلوں کی رپورٹ پہنچانے اور سبکی کرنا شروع کر دی اور ان سے کہا کہ شہر میں داخل ہونے والے اجنبیوں، یزید کے حکومت کے خلاف کی خلافت کی تقابلیت میں شک کرنے والوں اور مخالفت و تفرقہ انگیزی کرنے والوں کے نام کی رپورٹ پیش کرو اور اگر کسی نے اس کے خلاف عمل کیا وقت پر ضروری رپورٹ نہ دی اور نیک کی نشاندہی نہ کی تو سب مال سے اس کا وظیفہ ہی بند نہیں ہوگا بلکہ اس کا خون و مال بھی مہمان جانے گا اور اسے اس کے گھر کے سامنے سہاخی دی جائے گی یا اسے زارہ میں جلا وطن کر دیا جائے

ہانی کے گھر

جب کوثر میں عبداللہ بن زیاد کی آمد ہو جائے مسیحی جاسوسوں سے اس کی گفتگو کی اطلاع مسلم ہانی کو ہوئی تو آپ غمناک گھر سے ہانی بن عروہ کے گھر منتقل ہو گئے ۳۱ اور امام حسینؑ کا تہا ۱۔ زارہ، جان بیکار جگہ، یہ جہاں مرتجع بن ثمراسی کو جلا وطن کیا گیا تھا، مرقع کربلا میں امام حسینؑ کے ساتھ تھے جب ان کے تہفتم ہو گئے تو انہوں نے تلوار سے جنگ کی ان کے تہفتم کے جو کربلا میں سعد کے لشکر میں تھے انہوں نے نہیں امان دی اور وہ ان کے گئے جب عین سعدی کو کوثر لایا اور مرقع کے بارے میں عبداللہ کو بتایا تو اس نے انہیں زارہ میں جلا وطن کر دیا، ۲۔ تاریخ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۲۴، ارشاد مفید ج ۵ ص ۴۵

۳۔ ہانی بن عروہ غزوہ نہج کے شہید تھے اور کوثر کے سربراہ و درہ افراد میں شمار ہوتے تھے بہت سے لوگوں کے رہبر تھے جب ان تھے تو ان کے ساتھ چار ہزار سوار اور آٹھ ہزار پیادہ اسی چلتے تھے جب وہ اپنے ہم بیان و حلیف قبیلہ کنندہ کو بلاتے تھے ہزار آدمی بوجاتے تھے ہانی ایڑلوٹوں کے خاص اصرار میں شام چوتے تھے جنگ میں ضعیف و کمزور ان میں حضرت علیؑ کے ساتھ تھے رسول کی تھی انصرفت کے بعد ان میں بھی شمار ہوتے تھے جبکہ انہیں عبداللہ بن زیاد نے ہیرا کی تو اس وقت کچھ غریبوں کی تھی، متعلیٰ بن عرقم ص ۱۱۰

۱۔ ملاقات کے لئے ہانی کے گھر آنے لگے اور ایک دوسرے سے اس بات کی تاکید کرتے کہ غریبوں کی بات کو پوشیدہ رکھیں ۱۔

۲۔ ایک جگہ سے دوسری جگہ منتقل ہونے کی وجہ سے کی قیام کا کوئی رکھنا تھا کیونکہ انہیں یہ خوف تھا کہ انہیں قتل کر دیا جائے گا ۳۔ جب مسلم بن عقیل ہانی بن عروہ کے گھر منتقل ہو گئے اور بیعت کرنے والوں کی تعداد کم ہو گئی تو آپ نے خروج و انقلاب کا ارادہ کیا لیکن ہانی نے کہا: اس کام میں عجلت سے کام نہ لیجئے ۴۔

امام حسینؑ ابن عروہ کی آمد

۱۔ امام حسینؑ کو یزید کے شریک ابن عروہ سے کوثر والے سفر میں ابن زیاد کے ساتھ تھے انشاءً سفر میں سے منع ہو گئے تھے ان کا خیال تھا کہ ابن زیاد انہیں راستہ میں تنہا نہیں چھوڑے گا اور اس طرح ابن زیاد نے انہیں میں تاخیر ہو جائیگی،

۲۔ جب شریک کوثر پہنچے اور وہاں کے حالات سے مطلع ہوئے تو ہانی بن عروہ کے گھر گئے اور وہیں قیام کیا ۳۔ امام حسینؑ کو اس بات کی ترغیب دلانے لگے کہ مسلم کے دستورات پر عمل کرنے میں کوتاہی نہ کی جائے ۴۔ امام حسینؑ کو اس بات کی ترغیب دلانے لگے کہ مسلم کے دستورات پر عمل کرنے میں کوتاہی نہ کی جائے ۵۔

امام حسینؑ کی عیادت کیلئے...

۱۔ ہانی بن عروہ بیمار ہو گئے تو عبداللہ بن زیاد آپ کی عیادت کے لئے آیا اس موقع پر غلام بن عبد ۲۔ ایک مقصد اموی حکومت کے گمشدہ کو راستہ سے ہٹا دیا اور اب خدا نے شعل نے ہمارے ۳۔ ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳

اسے "ابن زیاد کو" میرا بکرو خواہ اس سلسلہ میں میری موت ہی کیوں نہ ہو جائے
عبداللہ نے جو شریک کی حرکتوں سے حیرت زدہ تھا ہانی بن عروہ سے کہا: گویا تمہارا بچا زاد بھائی
ہانی نے کہا: شریک جس دن سے بیمار ہوئے ہیں اسی دن سے ایسے ہی بولنے رہتے ہیں نہیں سمجھتے

ابن زیاد ہانی کی عبادت کے لئے آیا اور صحیح و سالم واپس پہلایا، اس کے چند روز بعد ہی شریک بیمار
ہو کر ہو گئے وہ بھی ہانی ہی کے گھر قیام پذیر تھے، عبداللہ ابن زیاد اور حکومت کے دوسرے حکام ان کا
کرتے تھے لہذا عبداللہ نے شریک کے پاس آدی بھیج کر پہلایا کہ آج رات کو عبداللہ ابن زیاد
کے لئے آئے گا شریک نے سوچا کہ عبداللہ ابن زیاد کو موت کے گھاٹ اتارنے کا یہ بہترین موقع ہے
نئے مسلم ابن قریظ سے کہا: آج کی رات عبداللہ ابن زیاد میری عبادت کے لئے آئے گا جب وہ گھر میں
ہو کر میرے بستر کے پاس بیٹھ جائے تو آپ بے خبری میں اسے قتل کر کے، دارالامارہ پر قبضہ کر کے
رہیں اس سلسلہ میں کوئی بھی آپ کی مخالفت نہیں کرے گا اور طبیعت صحیح ہو جانے کے بعد میں
کا طرفدار بنادوں گا

اسے ابن زیاد کا عالم تازہ کیا کوئی سازش ہے اس نے عبداللہ کا ہاتھ دہرایا اور وہ جلدی سے
گھر گئے کہا: اے میرے! میں آپ کو کچھ دھتوریں کرنا چاہتا تھا، عبداللہ نے کہا: دوبارہ عبادت کیلئے

مہران نے گھر سے باہر نکلنے کے بعد عبداللہ سے کہا: آپ کے قتل کا منصوبہ تھا عبداللہ نے یقین
اور اس سے مزاج پری کرنے لگے،

شریک خطہ شکاری کر رہے تھے کہ مسلم ابن قریظ پر دہ سے باہر آئیں اور زیاد پر حملہ کر کے
ہلاک کر دیں، لیکن ان کے اشتقاق سے کوئی فائدہ نہ ہوا شریک غصہ میں تھے انہوں نے سر سے اپنا کلا
زمین پر رکھ دیا پھر اسے سر پر رکھ لیا کئی بار ایسا ہی کیا پھر بھی سلم نہ آئے تو انہوں نے سلم کو ٹھہرا کر مارنے کے

ابن زیاد نے گھر سے چلایا اور سلم پر دہ سے باہر آئے تو شریک اشتعال کی حالت میں پوچھا کہ:

خیرا شلمی و خیرا امن یحییہا	ما ظننہ من یسلمی لا تخیوہا
ولو تلتفت وکانت منیہا	ما شویۃ غفیرۃ أسفن علی ظمأ
فلنلت تأمن یوماً من ذواہیہا	وان تلتفت من سلمی شرافتہ

لئے موقع فراہم کر دیا ہے، تمہارا اپنے پیروں سے چکر قربان گاہ میں آگیا ہے ہم اس کا قصہ پاک کر کے زیاد
پر کاری ضرب لگانا چاہتے ہیں،

ہانی اخلاقی اصول کے پابند تھے انہوں نے کہا: مجھے یہ پسند نہیں ہے کہ وہ میرے گھر میں قتل ہو جائے
ہے، ابن زیاد ہانی کی عبادت کے لئے آیا اور صحیح و سالم واپس پہلایا، اس کے چند روز بعد ہی شریک بیمار
ہو کر ہو گئے وہ بھی ہانی ہی کے گھر قیام پذیر تھے، عبداللہ ابن زیاد اور حکومت کے دوسرے حکام ان کا
کرتے تھے لہذا عبداللہ نے شریک کے پاس آدی بھیج کر پہلایا کہ آج رات کو عبداللہ ابن زیاد
کے لئے آئے گا شریک نے سوچا کہ عبداللہ ابن زیاد کو موت کے گھاٹ اتارنے کا یہ بہترین موقع ہے
نئے مسلم ابن قریظ سے کہا: آج کی رات عبداللہ ابن زیاد میری عبادت کے لئے آئے گا جب وہ گھر میں
ہو کر میرے بستر کے پاس بیٹھ جائے تو آپ بے خبری میں اسے قتل کر کے، دارالامارہ پر قبضہ کر کے
رہیں اس سلسلہ میں کوئی بھی آپ کی مخالفت نہیں کرے گا اور طبیعت صحیح ہو جانے کے بعد میں
کا طرفدار بنادوں گا

شریک اور عبداللہ کے قتل کا منصوبہ

ابھی شریک سلم ابن قریظ کو گرفتار کر رہے تھے کہ دق اباب ہوا، معلوم ہوا کہ دروازہ پر
مسلم گھر کے کسی کونے میں چھپ گئے، عبداللہ اور اس کا غلام مہران گھر کے اندر آئے شریک کے پاس
اور ان سے مزاج پری کرنے لگے،

شریک خطہ شکاری کر رہے تھے کہ مسلم ابن قریظ پر دہ سے باہر آئیں اور زیاد پر حملہ کر کے
ہلاک کر دیں، لیکن ان کے اشتقاق سے کوئی فائدہ نہ ہوا شریک غصہ میں تھے انہوں نے سر سے اپنا کلا
زمین پر رکھ دیا پھر اسے سر پر رکھ لیا کئی بار ایسا ہی کیا پھر بھی سلم نہ آئے تو انہوں نے سلم کو ٹھہرا کر مارنے کے

تاریخ کاں بن اثیر ص ۲۶

عبداللہ کو کیوں قتل نہ کیا؟ مسلم نے فرمایا: دو چیزوں نے مجھے قتل سے باز رکھا اول یہ کہ ہانی کی نہ تھی کہ عبداللہ ابن زیاد ان کے گھر میں قتل ہو، دوسرے وہ حدیث جو لوگوں نے رسول سے امان ہجر و حیل سے باز رکھتا ہے اور میں حیل باز نہیں ہوتا۔

شریک نے کہا: خدا کی قسم اگر آپ سے قتل کر دیتے تو ایک فاسق و کافر اور بدکار آدمی بعض موثرین نے قتل کیا ہے کہ جب عبداللہ ابن زیاد ہانی اور عروہ کے گھر سے چلا گیا تو مسلم سے ملو لئے ہوئے باہر نکلے تو شریک نے پوچھا کہ: عبداللہ ابن زیاد کو قتل کرنے سے آپ باز رکھا؟

مسلم نے کہا: جب میں پردہ سے باہر آیا تو اسی وقت ایک عورت "شاید وہی کنیہ ہاتھ میں پانی کا جام تھا" قریب آئی اور کہا: میں آپ کو خدا کی قسم دیتی ہوں کہ عبداللہ ابن گھر میں قتل نہ کیجئے یہ بکر رونے لگی میں بھی توار رکھ بیٹھ گیا،

ہانی نے کہا: اس سے خدا مجھے اس نے مجھے بھی قتل کیا اور خود کو بھی جو میں نہیں چاہتا تھا آگیا۔

شریک ابن عور کا انتقال

بعض موثرین نے لکھا ہے کہ اس واقعہ کے تین روز بعد شریک ابن عور کا انتقال ہو گیا اور اس نے اپنے جنازہ کی نماز پڑھائی۔ لیکن جب اسے یہ معلوم ہوا کہ شریک مسلم کو اس کے قتل کرنے کی ترغیب تو کہا خدا کی قسم اب میں کسی عراقی کے جنازہ کی نماز نہیں پڑھاؤں گا اگر وہاں میرے باپ زیاد ان الامان قیود الفلک فلا ینکح موتی، نزع کامل ہے کہ موتی کو غریب نہیں جتا، یہ منقول خطیبی ص ۱۱

۳۲۳ عید الفطر کا باپ زیاد ابن ابیہ توبہ میں تھا جو کہ کوفہ سے نزدیک ایک جنگ میں قتل ہوئے تھے کہ کسی جنگ خان کا قید خانہ تھا، مزاحم الاطلاح ص ۳۲۳

دن پہلے تو میں تیر کھدوا کر اس کا جنازہ نکال لیتا۔

یہ لکھا ہے کہ: جب عبداللہ ابن زیاد دار الامارہ میں واپس پہنچا تو مالک بن ربیع ثقفی نے اس کا جنازہ جو کہ عبداللہ ابن یقطر کے ہاتھ سے لیا تھا، اس خط میں امام حسین کے لئے لکھا تھا اہل کوفہ اسے آپ کی بیعت کرنی ہے لہذا خط ملتے ہی آپ آئے میں جلد کیئے، کیونکہ لوگ یزید سے اور صرف آپ کو چاہتے ہیں۔ عبداللہ نے عبداللہ بن یقطر کو قتل کرنے کا حکم دے دیا۔

عبداللہ ابن زیاد کا جاسوس

عبداللہ کو یہ معلوم نہیں تھا کہ مسلم کہاں چھپے ہوئے ہیں اس نے مقتول کو بلایا اور اسے تین ہزار درہم کی صلہ میں سے تعلقات پر بڑھاؤ اور یہ کہ میں شامی ہوں، ذوالکلیج کا عظیم ہوں خدا نے مجھے اہلیت عاقل و دلت سے نوازا ہے، نیز کہتا: سنا ہے کہ کوئی آدمی امام حسین کی طرف سے اس شہر میں آیا ہے

مقتول دار الامارہ سے باہر چلا گیا اور کوفہ کی جامع مسجد میں پہنچا کہ مسلم بن عسوی اسدی نے اسے قتل کیا جب وہ نماز سے فارغ ہوئے تو مقتول نے ان سے وہی باتیں کہیں جو سیکھ کر آیا تھا مسلم بن عسوی نے اسے دھائے خیر کی اور اسے مسلم بن عقیل کے پاس لے گئے،

مقتول نے وہ درہم مسلم بن عقیل کے سپرد کر دیئے اور آپ کے ہاتھ پر بیعت کرنی، مسلم بن عقیل نے اسے اہل اسلام کی کفایت کے سپرد کر دیئے، ابوالمہدی علقمہ دلمیر اور باجیث شہر میں سے تھے مسلم نے انہیں لے کر اور اسلحہ خریدنے پر مامور کر رکھا تھا، اب مقتول روز اس جگہ آئے جانے لگا جہاں مسلم چھپے ہوئے کوئی روکنے والا نہیں تھا وہ دن بھر وہاں کے حالت نظر رکھتا اور شام کو ان زیاد سے بیان کرتا تھا۔

۳۲۳ عید الفطر کا باپ زیاد ابن ابیہ توبہ میں تھا جو کہ کوفہ سے نزدیک ایک جنگ میں قتل ہوئے تھے کہ کسی جنگ خان کا قید خانہ تھا، مزاحم الاطلاح ص ۳۲۳

ہانی ابن عمرو کے خلاف سازش

جب عبید اللہ کو یہ معلوم ہوا کہ مسلم بن قتیل ہانی ابن عمرو کے گھر میں چھپے ہوئے ہیں تو اس نے ہانی کو گرفتار کرنے کا منصوبہ بنایا کیونکہ ہانی کا گھر شیعوں کے جمع ہونے کا مرکز اور سفیر حسینی کی قیام گاہ تھا۔ وہ کابرد بنا کہ عبید اللہ بن زیاد کے پاس جانے سے بچتے تھے، ابن زیاد نے محمد بن اشعث بنی اسد اور اسد بن خبار کے روایت کے مطابق عمرو بن جراح زبیدی کو « دربار میں بلایا اور ان سے پوچھا کہ ہانی دربار میں کیوں نہیں آؤں گے؟ کہا کہ وہ بیمار ہیں، عبید اللہ نے کہا: کہ مجھے معلوم ہوا ہے کہ وہ محبت یاب ہو گئے ہیں لیکن انہیں نہیں نکلتے تم جاؤ اور انہیں مطمئن کر کے دربار میں لاؤ گے۔

ہانی کی گرفتاری

یہ لوگ ہانی سے ملاقات کیلئے ان کے گھر گئے وہ شام کے وقت اپنے گھر کے سامنے بیٹھے تھے۔ ہانی نے کہا: آپ امیر سے ملاقات کیلئے کیوں نہیں جاتے، وہ ہمیشہ آپ کو یاد کرتے ہیں بہم

۱۔ حیات الامام محمد بن جراح ص ۲۰۲، اس کا باپ اشعث بنی اسد تھا اس کی شادی ابو بکر کی بیٹی سلمہ سے ہوئی امیر ہمدانی علی نے اس پر لعنت کی ہے، ابن ابی اثیر کہتے ہیں: حضرت علی کی حکومت میں ردھا ہونے والے ہر فتنی کی جزا شام ص ۱۸۷ سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا: اشعث بن قیس علی کے قتل میں شریک تھا اور اس کی بیٹی نے امام حسن کو ذبح کر دیا اور امام حسن کے قتل میں شریک تھا، اکتی ولا نقاب ص ۲۸۳، علی ابن جراح زبیدی قبیلہ زبیدیہ کا رئیس تھا اس کی بڑی عزت تھی اور جنگوں میں اس کا نام آتا تھا جن لوگوں نے مسلم بن حنفیہ کو خط لکھے تھے ان میں سے ایک یہ بھی تھا اور یہ بھی کی لوگھٹ رکنے والے پانچ سپاہیوں میں سے ایک تھا ابی بن عدہ ہانی کے دو چور تھے ہانی کی ملائی، متعلقین قرعہ ص ۵۵۵ ان کا

معلوم ہو جانے کو وہ بیمار ہیں تو میں ان کی عیادت کے لئے جاؤں گا ہانی نے کہا: بیماری مجھے ہلت

۱۔ ابن ابی اثیر: عبید اللہ کو یہ اطلاع ملی ہے کہ آپ ہر روز شام کے وقت اپنے گھر کے سامنے بیٹھے ملاقات میں تاخیر سے وہ غضبناک ہوں گے، بیماری گزارش ہے کہ آپ اپنی سولی پر سولے کے ساتھ امیر سے ملاقات کیلئے چلے، اب ہانی کے پاس کوئی چارہ نہ تھا لہذا لباس پہنا اور اپنی رومالوں سے روئے اور ان کے ساتھ دار الامارہ کی طرف روانہ ہوئے، دار الامارہ پہنچے تو انہیں یہ شخص روایت کے مطابق عمرو بن جراح زبیدی کو « دربار میں بلایا اور ان سے پوچھا کہ ہانی دربار میں کیوں نہیں آؤں گے؟ کہا کہ وہ بیمار ہیں، عبید اللہ نے کہا: کہ مجھے معلوم ہوا ہے کہ وہ محبت یاب ہو گئے ہیں لیکن انہیں نہیں نکلتے تم جاؤ اور انہیں مطمئن کر کے دربار میں لاؤ گے۔

عذیرک من خلیل من مراد (۳۲)

۱۔ ابن ابی اثیر: عبید اللہ نے کہا: یہ تم نے اپنے گھر میں پیدا اور سالوں کے خلاف ہوئی ہے؟ مسلم بن قتیل کو اپنے گھر میں جگہ دیا ہے اور پڑاؤ اس کے گھروں میں ان کیلئے ساز و سامان فراہم کر رکھا ہے اور یہ سمجھنے ہو کہ یہ چیزیں میری تیر زمین لگا ہوں اور حکومت

۱۔ ابن ابی اثیر: ابن ابی اثیر کی تردید کی اور کہا: مسلم میرے گھر میں نہیں ہیں، ہانی اور عبید اللہ کی ملاقات کی اور بحث میں تبدیل ہو گئی تو حکومت کے جاسوس متعلق کو بلا لایا،

۱۔ ابن ابی اثیر: ہانی اور وہ مجھے قتل کرنا چاہتے تھے تاہم تمہارا دوست پیاس سے تم ظلمی کا کیا بہانہ ہے۔

مقتل آیا تو عبید اللہ نے ہانی سے کہا: اسے پہچانتے ہو؟ ہانی نے جب مقتل کو دیکھا تو
 دھچکا لگا اور کہا: ہاں! پہچانتا ہوں اسی وقت ہانی کو اپنے دوستوں سے سرزد ہونے والی غلطی کا
 ہوا اور وہ یہ سمجھ گئے کہ مقتل نے عبید اللہ کے لئے جاسوسی کی ہے، تھوڑی دیر خاموش رہنے کے
 نے ہن زیاد سے کہا: میری بات کا یقین کرو خدا کی قسم میں جھوٹ نہیں بول رہا ہوں میں نے انہیں
 میں نہیں بلایا ہے اور نہ مجھے یہ معلوم ہے کہ وہ کس ذمہ داری کے تحت آئے ہیں وہ میرے پاس آئے اور
 میں سکونت اختیار کرنے کے لئے کہا مجھے بھی یہاں کو اپنے گھر سے واپس کرنے میں شرم محسوس ہوئی
 لیکن آپ کو رانی کا ہار نہا کر بتایا گیا ہے اگر آپ چاہیں تو میں آپ سے عہد کرتا ہوں کہ میں گھر کا
 گھر سے نکال دوں گا جہاں چاہیں چلے جائیں۔

عبید اللہ نے کہا: خدا کی قسم میں نہیں اس وقت تک واپس نہ جانے دوں گا جب تک کہ
 پاس حاضر نہیں کرو گے، ہانی نے کہا: خدا کی قسم میں ہرگز ایسا نہیں کروں گا تم یہ چاہتے ہو کہ میں
 تمہارے پرکردوں گا لکن ان کے قتل کا فرمان جاری کر دو، عبید اللہ اپنی باپ پر اڑا ہوا تھا،
 یہی جواب دہزار ہے تھلا۔
 بعض مؤرخین نے لکھا ہے کہ ہانی نے عبید اللہ سے کہا: اگر مسلم میرے بچے میں بھی ہو
 کی قسم میں تمہارے توالے نہ کرتا۔ بعض نے لکھا ہے کہ ہانی نے عبید اللہ کے جواب میں سختی سے کہا: تم
 اور خاندان کے ساتھ شرم چلے جاؤ کیونکہ جو اس شہر میں آیا ہے وہ تم سے اوپر ہے کہیں زیادہ کم
 لائق ہے تم۔

ہانی اور مسلم بن عمرو ہابی

جب ہانی اور عبید اللہ کے درمیان بحث طویل ہو گئی تو مسلم بن عمرو ہابی جو کہ اس وقت
 ۱۔ ارشاد عبید اللہ رحمہ اللہ، بخیر ان جوان ص ۱۵۰، مروج الذهب ج ۱ ص ۷۰۔

خدم کے ساتھ شام چلے جاؤ تمہارے لئے امان ہے جو ہر چاہو چلے جاؤ، مہران، عبید اللہ کے یہ قسمی ذلت کی بات ہے کہ شخص ہانی، آپ کی حکومت میں آپ کو امان دے رہا ہے، عبید اللہ نے جلا کر کہا اسے کہو، مہران نے ہانی کے گیسو پر لئے اور عبید اللہ نے چہرہ پر اتنی چھری ماری کہ ناک ٹوٹ گئی بس لہو بہاں ہو گیا اور گوشت داڑھی پر لٹک شدت سے بن زیاد کی چھری ٹوٹ گئی ہانی نے اپنا دفاع کرنے کے لئے تلوار کے قبضہ پر ہاتھ باہر کھینچ لی لیکن عبید اللہ نے کہا: کیا تم حروری مہجو کہ نیرید کی حکومت کے خلاف ہو اور تلوار کھینچ رہے ہو اس کاہر سے تم نے اپنا خون حلال کر لیا اور اپنا قتل مباح قرار دے کے بعد ہانی کو دارالامارہ ہی میں قید کرنے کا حکم دیدیا،

اسامہ بن خاریج کو عبید اللہ کی اس حرکت پر بہت غصہ آیا اس نے اپنی جگہ سے اٹھ کر لشکر انہیں رہا کر دے، ہم سے کہا تھا کہ انہیں تمہارے پاس لائیں اور تم ان کی جان کی فکر نہ کرو ان کو قتل کرنا چاہتے ہو، عبید اللہ نے اپنے کارندوں کو حکم دیا کہ اس کی بھی خبر لو، محمد بن اسلم کے ساتھ جوں میں سے ایک تھا، اس نے حالات کو دیکھ کر ہمیں میر کی رائے سے اتفاق کرنا چاہا،

نفع میں ہو یا ضرر میں نہ

قبیلہ مذبح کی شورش

جب عروہ بن جراح نے یہ افواہ سنی کہ عبید اللہ بن زیاد ثنائی کو قتل کر دیا ہے، لوگوں کے ساتھ دارالامارہ پہنچا، دارالامارہ کا محاصرہ کر لیا اور ملہ آواز سے کہا: میں حروار، تھرومد کے ساتھ ایک گاؤں کا نام ہے جو کوڑے نزدیک واقع ہے، امطارح میں خوارج کو پہلا اجتماع یہیں ہوا تھا، جمعہ ۱۳ ص ۳۳، ۳۴، تاریخ کاملین شریح ۱۶،

۱۲۰

۱۲۱

ابھی عبید اللہ منبر سے نیچے نہیں اترا تھا کہ بعض لوگوں نے شور مچایا کہ مسلم بن عقیل آگئے۔
عقیل آگئے! عبید اللہ جان کے خوف سے فوراً مسجد سے بھاگ گیا اور دارالامارہ میں پہنچ کر سانس
خارجوں کو کچھ دیا کہ قصر کے دروازے بند کر دو، عبید اللہ بن حازم کہتے ہیں: میں مسلم بن عقیل کی طرف
عبید اللہ کے قصر اور بانی بن مروہ کے حالات کی کھوج لگانے پر مامور تھا، سب سے پہلے میں نے
بن عقیل کو اس بات کی خبر دی تھی کہ قبیلہ مرادی بعض عورتیں یہ فریاد کر رہی ہیں یا عبرتہا یا شکلاہ
میں مسلم بن عقیل کی خدمت میں حاضر ہوا اور بتایا کہ ہائی کو گرفتار کر لیا گیا ہے انہوں نے فرما
اطراف کے گھروں میں جو ہارے مددگار سکونت پذیر ہیں انہیں بلاؤ چنانچہ اس نعرہ دیا منصور اسی
ساتھ چار ہزار مددگار مسلم کے پاس جمع ہو گئے،

مسلم کا قیام اور دارالامارہ کا محاصرہ

مسلم بن عقیل نے عبید اللہ سے مقابلہ کرنے کیلئے عبدالرحمن بن عوف کی مدد کو قبیلہ ربیعہ کے
اور مسلم بن عوف کو قبیلہ مذحج و اسد کے پیادہ سپاہیوں کا گاندھڑا کر رکھا اور ابو ثامر صاندی کے سپرد
وہدیان کی سپہ سالاری کی اور اہل مدینہ کو منظم و آمادہ کرنے کی ذمہ داری عباس بن جعدہ جدی کو سونپ
خود اپنے انصار کے ساتھ دارالامارہ کی طرف روانہ ہوئے اسے محاصرہ میں لے لیا
عبید اللہ بن حازم جو کہ واقعہ کا عینی شاہد ہے، وہ قسم کھاتے کہ تنہا ہی ہیرو
وہما زار جمع ہو چکے لگا، عبید اللہ نے جان کے خوف سے دارالامارہ میں پناہ لی اور حکم دیا: دشمن
کوئی دروازہ کھل نہ جائے۔

۱۔ اس نعرہ سے فوجیوں کو جنگ اور دشمن پر غلبہ پانے کے لئے لگایا جا رہا تھا اس میں دشمن کی نابودی اور اپنی کامیابی کا
۲۔ متعلق اٹھارہویں ص ۱۰۰

الیائے عبید اللہ کا منصوبہ

جب حضرت مسلم اور ان کے انصار نے دارالامارہ کا محاصرہ کیا تھا اس وقت عبید اللہ
بن عقیل فوجی اور بیس افراد کو ذکے شرفا میں سے تھے جو قصر کی چھت سے اس جم غفیر کو دیکھ
کا محاصرہ کرنے والے عبید اللہ اور اس کے ساتھیوں پر رنگ باری کر رہے تھے، ابن زیاد اور اس
کے محافظوں نے اسے گرفتار کر لیا۔ محاصرہ توڑنے کیلئے ابن زیاد نے سوچا کہ نفسیاتی جنگ چھیڑ دی جائے
اس نے چند باجیت افراد سے کہا: تم لوگوں کے پاس جاؤ اور ان سے گفتگو کرو اور اس کام
کو فراموش نہ کرو کہ وہ مسلم بن عقیل کا ساتھ چھوڑ دیں اس کام پر کثیر بن شہاب حارثی، قعقاع بن اشور
بن ابی تمیمہ، حارث بن ابی اسیر اور شریک بن ابی اسیر صہبانی مقرر تھا،

ان لوگوں نے جناب مسلم کے قریبی افراد سے رابطہ قائم کیا اور خیر خواہ کے طور پر انہیں مسلم کی مدد
کے لیے کہا انہوں نے خیر خواہ کی صورت میں ان سے جھوٹ بولا اور کہا کہ نیک شکر شام سے آ رہا ہے
اور دیکھنا سے پہلے دے گا، اپنی جان و مال کو خطرہ میں نہ ڈالو، ان جھوٹ بولنے والوں نے انہیں
دلا لیا کہ عبید اللہ نے یہ قسم کھائی ہے کہ اگر رات تک تم لوگوں نے محاصرہ نہ توڑا اور اپنے اپنے
لوگوں کو اس ننگے توہینت اعمال سے غمناک اور تہوارے بچوں کا وظیفہ بند کر دے گا اور تم میں سے کئی ہزار
لوگوں کی جگہ بے گناہوں اور غائب لوگوں کی بجائے حاضرین کو ایسی عبرتناک سزا دے گا کہ کو فوس
کس نہیں بچے گا کہ جو اپنے کئے کی سزا پائے۔

امارہ توڑنے والا عبید اللہ کا منصوبہ کامیاب ہو گیا اور اہل کو فوج کو عبید اللہ کی سزائے محفوظ
تھے، ان منافقوں کی باتوں میں آگئے اور مسلم بن عقیل کا ساتھ چھوڑ دیا اور اپنے دلیں پریشاں

۱۔ حاشیہ الامارہ، بیروت، ج ۱ ص ۱۰۰

کیا کہ جس خطرہ میں مول لینا چاہیے، ابھی سویرا ہے، اپنے گھروں کو لوٹ چلیں جو خدا کو منظور ہو۔
عبداللہ نے اس فوجی انقلاب اور خدائی تحریک کو چلنے کی دوسری چال چلی اور اہل کو ذمہ
سرکردہ افراد اس کے ساتھ دارالامارہ میں وقت گزاری کہہ رہے تھے انہیں حکم دیا کہ لوگوں کو فریب
اور مسلم سے جدا کرنے کیلئے، تمام امان کے پرچم ہاتھ میں لے لو اور ان سادہ لوح افراد کو امان دو جو عید
سے دسے ہوئے تھے باقی لوگوں کو اپنی حفاظت کیلئے دارالامارہ ہی میں روک لیا۔
کثیر بن شہاب "جو کہ حکومت کا خاص پیچھا تھا یہ شام تک مسلم کے مددگاروں سے
رہا آخر کار لوگوں کو مبارزہ سے روکنے میں اور انہیں مسلم بن عقیل سے علیحدہ کرنے میں کامیاب ہو گیا
اس عظیم عوامی انقلاب کو چلنے کیلئے عبداللہ کی نیرنگیوں نے اتنا اثر کیا کہ مابین
آئی یا بھائی آیا اور اس کا دامن بڑھ کر کہنے لگا گل بڑیک فوج شام سے کو فریب دے رہی ہے وہ ان
پر غضب ڈھائے گی، چلو گھر لوٹ جاؤ، چنانچہ جو جس کو پہچانا تھا وہ جمع میں سے اسے پکارتے جا
اپنے خیال میں اسے یہی خطرہ سے نجات دلانا تھا اس طرح رات ہونے سے پہلے ہی سارا مجمع ہوا
اور مسلم بن عقیل تنہا رہ گئے۔

آخر کار عبداللہ اہل کو ف کے ان پاس سرکردہ لوگوں کے ساتھ جو کہ جان کے خوف سے
میں پناہ لئے ہوئے تھے، کامیاب ہو گیا اور چند گھنٹوں میں ان چار ہزار لوگوں کو واپس گھروں کو لے
نے مسلم بن عقیل کی قیادت میں یہی حکومت کے خلاف شورش کی تھی اس ہم غفیر میں سے صرف
آدی باقی ہے، احنف بن قیس نے اہل کو ف کے بارے میں کہا ہے، کو ف والو! تمہاری مثال اس
کی ہے جسے روزِ نیا شوہر چاہیے۔

۱۔ الفتوح ۵ ص ۸۷، ۲۔ باقی رہنے والوں میں محمد بن اشعث، عتقاہ ذہبی، شریٹ بن ربیع، حماد بن ابی
ابوشن تھے، ۳۔ بحار الانوار ج ۴ ص ۹۳،

۴۔ بحار الانوار ج ۴ ص ۹۵، ۵۔ متفقین بحیثیت مسلم ص ۱۵۲،

اہل کی گرفتاری

جب کثیر بن شہاب لوگوں کو فریب دے چکا تو عبداللہ نے اسے حکم دیا کہ جہاں بھی نہیں کوئی
دارالامارہ نظر آئے اسے گرفتار کر کے قیدیں ڈال دو اس نے بھی اس ذمہ داری کو اچھی طرح پورا کیا۔
مؤثر بن لکھتے ہیں: کو ف میں رہنے والے امیر المؤمنین کے جن چاہنے والوں نے تمام میں کو ف لکھے
عبداللہ نے ان سب کو گرفتار کر کے قیدیں ڈال دیا، قید کئے جانے والوں میں سلمان بن صخر خثعمی، ہریرہم
ابو اسیر، ابن صفوان، یحییٰ بن عوف، صعد بن صوحان عبدی بھی شامل تھے، یہ بزرگوار یہ
اہل ہو جانے کے بعد بھی قید ہی میں تھے بعد میں لوگوں کی تحریک سے آزاد ہوئے اور خون جبین کا انتقام
لے لیا۔

اسلم بے چارگی

رات ہو گئی تو اس ہم غفیر میں سے مسلم بن عقیل کے ساتھ صرف تیس وفادار بچے تھے بقیہ فریب کھا کر
لوگوں کو لوٹ گئے تھے یا گرفتار کر لئے گئے تھے، مسلم نے غارِ مغربہ ادا کی اور حکم کدہ۔ جہاں آپ قیام
کے کل طرف روانہ ہوئے ابھی حکم کدہ تک نہیں پہنچے تھے کہ تیس آدمی اور آپ کے ساتھ چھوڑ کر چلے
اور اس آدمی آپ کے ساتھ باقی بچے اور جب اس حکم تک پہنچے تو آپ کے ساتھ کوئی فوجی نہیں تھا
اسلم کو چوں میں پھر رہے تھے کچھ میں نہیں آتا تھا کہ کس کے درپے دستک ڈالیں۔

اس رات کی تاریکی میں ایک آدمی کا آواز نے مسلم کی توجہ کو اپنی طرف متوجہ کر لیا وہ کہہ رہا تھا: مولا
ابو! امان! اقصیٰ ہے، کہاں تشریف لے جا رہے ہیں؟ یہ سعید بن احنف تھے، مسلم نے کہا: میں

۱۔ بحار الانوار ج ۴ ص ۹۵، ۲۔ متفقین بحیثیت مسلم ص ۱۵۲، ۳۔ مناقب الطاہرین ص ۱۵۲،

اس وقت کے بعد کہا: جہاں مسلم چھپے ہوئے ہیں اس جگہ کا پتہ بناؤ اور انہیں ہمارے حوالے کرو، جب
 انہوں نے اس کی کوئی زیادہ رائے نہ رکھی ہوئی دواست ان کی پیشانی پر دے ماری تیس سے وہ زخمی ہوئے
 اپنا دماغ کوٹنے کیلئے ان کیلئے تلواریں کے قبضہ پر ہاتھ مارا تو دربار میں موجود مسلمانوں کو اس کے
 ہاتھ میں ہونے اور ان زیادہ اور ان کیلئے تلواریں کے درمیان آگئے اسی اثنا میں ابن زیاد کے جاسوس مدخل نے
 اس کو گرا دیا، جواب میں محمد نے بھی اپنی تلوار سے اس پر وار کیا اور اس کا قہقہہ پاک کر دیا ان زیاد نے جب
 اس کو اس تو اس نے اپنے غلاموں سے کہا کہ سب محمد بن کثیر پر حملہ کر دو، محمد جب خود کو متحکم کے لئے
 تھک رہا تھا اس وقت ان کا پاؤں کی چیر سے سمجھا زمین پر گرے اور ابن زیاد کے غلاموں نے انہیں
 اس کے بعد ان کے جوان و دیر بیٹے پر حملہ کیا اور اسے شہید کر دیا اس سانحہ کی خبر جب مسلم بن عقیل
 کو پہنچی تو اس نے کثیر کا گھر چھوڑ دیا۔

گھر کے گھر

ابن کثیر کے گھر سے نکل کر مسلم دوسری پناہ کا تلاش کرنے لگے کہ جہاں ابن زیاد کے جاسوس کی
 کوئی گھنٹیوں میں پریشان چہرہ نہ تھے یہاں تک کہ طوع کے دروازے پر پہنچے،
 وہ ایک کثیر تھی جسے اشعث نے آزاد کیا تھا، سعید حضرمی نے اس سے نکاح کر لیا تھا اس
 ایک لڑکا تھا جسے ہلا کہتے تھے، طوع اپنے دروازے پر کھڑی اس کا انتظار کر رہی تھی،
 طوع کو سلام کیا اور پانی طلب کیا، طوع مسلم کیلئے پانی لائی، مسلم نے پانی کی طرف طوع
 کی طرف سے کھڑے اندر چلی گئی لیکن جب لوٹ کر آئی تو دیکھا کہ مسلم ابھی تک وہیں موجود ہیں،
 طوع نے کہا: کیا آپ نے پانی نہیں پیا؟ کہا ہاں، طوع نے کہا تو اٹھو اور اپنے گھر جاؤ مسلم نے

ابن کثیر کے گھر سے نکل کر مسلم دوسری پناہ کا تلاش کرنے لگے کہ جہاں ابن زیاد کے جاسوس کی

اس واقعہ کی جگہ جاننا چاہتا ہوں تاکہ وہاں اپنی بیعت کرنے والوں میں سے کچھ لوگوں کو جمع کر کے
 کروں،

سعید بن اسف کو حالات بدل جانے کی خبر تھی لہذا انہوں نے افسوس کے ساتھ کہا: ہرگز ایسا
 ہو سکے گا کیونکہ شہر کے دروازے بند کر دیئے گئے ہیں شہر کے اطراف میں جاسوس مقرر کئے گئے ہیں تاکہ
 آپ کو گرفتار کریں اور معاملہ ختم کر دیا جائے، آئیے میرے ساتھ محمد بن کثیر کے گھر چلیے یہاں کی
 وہ یقیناً آپ کو پناہ دیں گے،

مسلم ان کے ساتھ روانہ ہوئے ان کثیر کے گھر پہنچے محمد بن کثیر نے جب امام حسین کے
 اپنے گھر کو کھاتو مسلم کے پاؤں چومے اور اس خدائی عطا پر سکرا دیا کیا اور اپنے گھر میں ایسی جگہ چھڑا کر
 لوگوں کی نظر نہیں پہنچی تھی،

محمد بن کثیر کی گرفتاری

عبید اللہ کے جاسوس ساری طرح مسلم کا تعاقب کر رہے تھے انہوں نے ابن زیاد کو
 کی خبر دی ابن زیاد نے اپنے بیٹے خالد کو حکم دیا کہ وہ رات میں ایک گروہ کے ساتھ محمد بن کثیر کے گھر
 کرے اور مسلم کو محمد بن کثیر، دونوں کو گرفتار کر کے دارالامارہ میں حاضر کرے، لیکن جب خالد نے
 کے گھر کی تلاشی لی اور مسلم ابن عقیل کو گھر میں نہ پایا تو وہ محمد بن کثیر اور ان کے بیٹے کو اس کے دروازے
 جب سلیمان ابن مرد دھامی، ابی عبیدہ ثقفی اور وقار بن عازب کو محمد بن کثیر اور ان کے
 گرفتار ہونے کی خبر ملی تو انہوں نے آپس میں طے کیا کہ کچھ فوج فراہم کر کے ابن زیاد پر حملہ کیا جائے
 کثیر اور ان کے بیٹے کو ابن زیاد کے چنگل سے نجات دلانی چاہئے اور اس کے بعد کو فوجی سربراہ کہہ کر
 متصل ہو جائیں،

صبح ہوئی تو ابن زیاد نے حکم دیا کہ محمد بن کثیر اور اس کے بیٹے کو حاضر کیا جائے، محمد بن کثیر

کوئی جواب نہ دیا، طوع نے پھر اپنی پہلی بات دوہرائی لیکن اس بار بھی مسلم نے کوئی جواب نہ دیا تب
طوع نے کہا: آپ اپنے گھر کو لوٹیں، میں جانتے ہوں کہ اس دفعہ بھی خاموش رہے اس پر طوع کو غصہ آگیا

اٹھنے اور اپنے گھر جانے پر صبح نہیں ہے کہ ابھی مردیرے دروازے پر بیٹھے مجھے یہ بات پسند نہیں
مسلم اپنی جگہ سے اٹھ کر طوع سے کہا: اللہ کی قسم! میں مسافروں اس شہر میں یہ گھر نہیں
نیک کام کے اس کا اجرت لینا چاہتی ہوں جو ہر سال میری خدمت کا صلہ دے سکوں طوع نے کہا:
بندے میں کیا کر سکتی ہوں؟

مسلم نے کہا: میں مسلم بن قریب ہوں اگر کوئی مجھ سے دفاع دے وہ فانی کی ہے طوع نے کہا
مسلم بن قریب تیرا؟ جی ہاں! طوع اب نہیں گھر کے اندر گئی، بستر لگایا اور کھانا تیار کیا، طوع کا لڑکا
نے دیکھا کہ آج اس کی ماں بہت اہتمام سے کام کر رہی ہے اور کچھ بھر کے لئے آرام نہیں بیٹھی

جاتی ہیں کبھی ادھر جاتی ہیں اس نے اپنی ماں سے پوچھا: قصہ کیا ہے،
شروع میں طوع نے حقیقت چھپائی لیکن جب ماں نے بیٹے کا زیادہ اصرار دیکھا تو اسے
دیا اور کہا کہ اس کی کوئی خبر نہ ہو بلال نے قسم کھائی کہ میں کسی سے ذکر نہیں کروں گا

جامع مسجد میں ابن زیاد کی تقریر

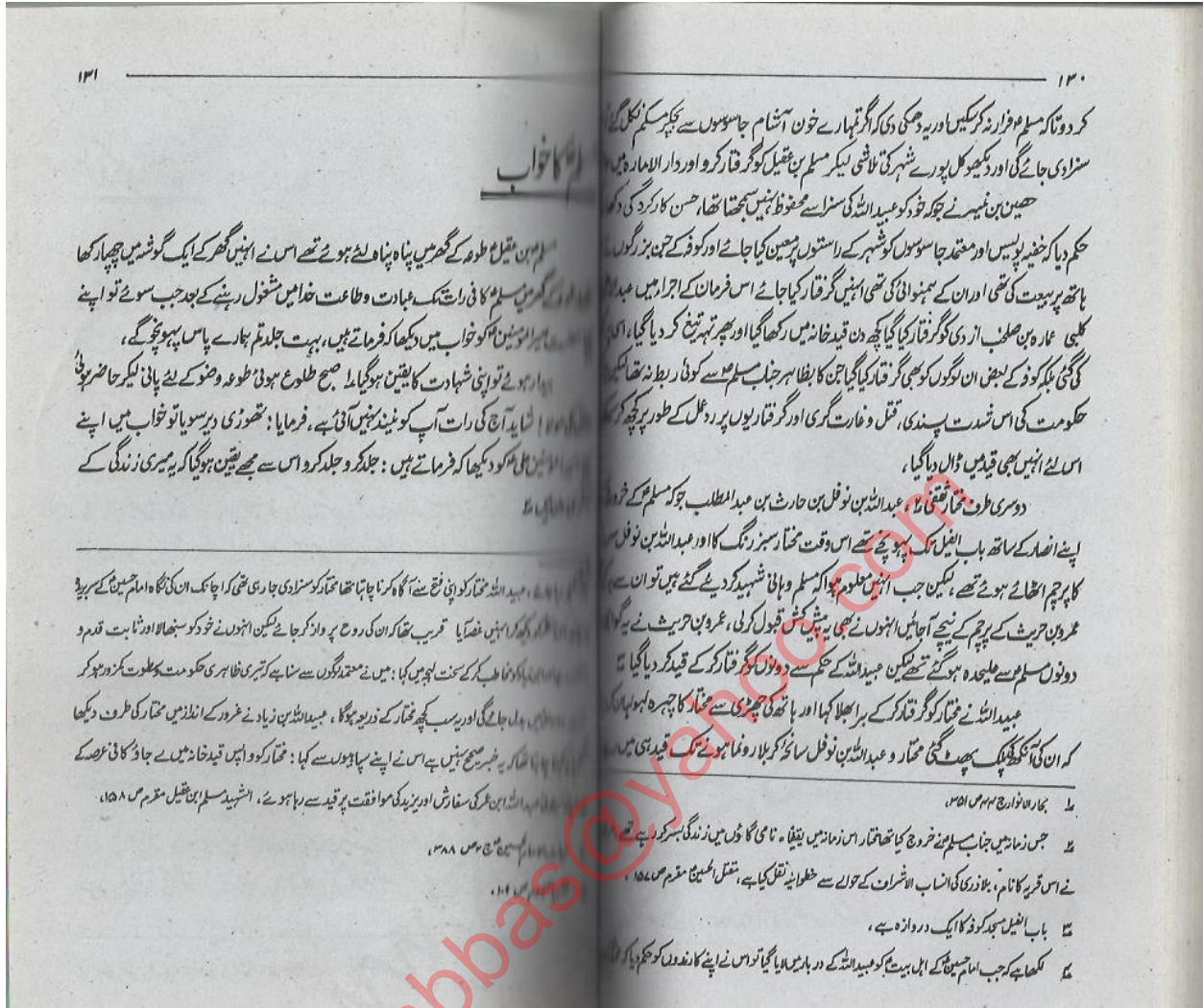
اگرچہ مسلم کے چاہنے والوں کو متفرق ہوئے اور کنارہ کشی کے لئے ہوئے تھوڑی دیر گزری تھی
تصور حادثہ تقریر کی مدت میں رونما ہو گیا تھا لیکن عید اللہ کو اس کا تین نہیں تھا ابھی تک اس کا

رہا تھا اس نے حکومت کے کارندوں، صنیر فروش بزرگ اور کوئے دین فروش لوگوں کو حکم دیا
ایسا نہ ہو کہ تم رات کی تاریکی میں مسلم کے ساتھیوں کے جاں بچیں جاؤ! جب انہیں تلاش ہوا کہ

مسلم سے دار الامارہ میں آیا اور حصین بن نیر کو حکم دیا کہ اپنے تمام ساتھیوں سے شہر کی ناکرہ

۱۵۲

۱۵۳



طوع کا پیمانہ

جب طوع کے بیٹے کو معلوم ہوا کہ گھر میں مسلم بن عقیل قیام پذیر ہیں تو اس نے انعام کرنے کی غرض سے محمد بن اشعث کے بیٹے عبدالرحمن سے یہ بات بتادی حالانکہ اس نے اپنی یہ راز فاش نہ کرنے کی قسم کھائی تھی لیکن شیطانی وسوسہ نے اپنا کام کیا، عبدالرحمن دارالامار اور اپنے باپ محمد بن اشعث سے واقف ہو گیا اس نے یہ خبر عبداللہ کو سنائی، اس نے محمد بن کو حکم دیا کہ مسلم کو گرفتار کر کے دارالامار میں حاضر کرو، تمہارا حکم میں محمد بن اشعث نے عبداللہ سلمیٰ اور حکومت کے سرسپاہیوں کے ساتھ طوع کے گھر کا محاصرہ کر لیا، گھوڑے کی ٹاپوں اور حملہ آوروں کے شور و غل سے جناب مسلم چونکے اُپٹ پٹہ کیا قیام گاہ سے باہر نکلے تاکہ جو گھر کے اندر محصور تھے وہیں آئیں تاکہ ان کی مسلم نے سوچا کہ باہر نکلنا کی طرف بڑھو کہ جس سے فرار ممکن نہیں ہے۔ بعض موزنین نے کھلبے کر جب اپنا راز دیکھی ہوئی فوج طوع کے گھر کے پیچھے پہنچی تو خوف کے مارے گھر سے باہر نکل آئے کہ فوج گھر کو آگ نہ لگا دے۔

شجاعتِ مسلم

منقول ہے کہ عبداللہ بن زیاد کی فوج محمد بن اشعث کی سرکردگی میں طوع کے گھر میں داخل ہوئی اور فوج کو گھر سے باہر نکال دیا، فوج دوبارہ گھر میں گھس گئی پھر جناب مسلم نے باہر نکلنا

۱۔ اعلام النوری طبری ص ۲۲۵، ۲۔ مناقب اہل بیتین ص ۱۵۸، ۳۔ نفس المہموم ص ۱۰۹

کہ گھر بن حمران حری نے جناب مسلم کے دین پر تلوار سے ضربت لگائی جس سے آپ کا اچر کا ہونٹ کٹ گیا اور اسے ہلکے دو دانت ٹوٹ کر گر پڑے جناب مسلم نے بھی گھر بن حمران پر حملہ کر کے اس کے سر اور شانوں کاٹ دیے،

جب محمد بن اشعث کے سپاہیوں کو یہ محسوس ہوا کہ اس طرح مسلم کا مقابلہ نہیں کیا جاسکے گا تو وہ ہتھیار چھوڑ گئے اور وہاں سے علم پر چھڑا اور آگ برسانے لگے، مسلم یہ صورت حال دیکھ کر تلوار ہاتھ میں لے کر گھر سے کوہچمیں نکل آئے اور جنگ کرنے لگے، فوج سے جنگ کرتے وقت مسلم کی زبان پر یہ اشعار

هٰوَ الْقَوْتُ فَاصْنَعْ وَيْلَكَ مَا أَنْتَ صَانِعٌ قَائِلٌ بِكَأْسِ الْقَوْتِ لَا شَكَّ جَارِعٌ
لِصَبْرٍ لَا يَمْنَعُ اللَّهُ جَلَّ جَلَالُهُ فَخُذْكُمْ قَضَاءِ اللَّهِ فِي الْخَلْقِ ذَائِعٍ^(۱)

ایک قول کی بنا پر ۴۱ اور دوسرے قول کی بنا پر آپ نے دشمن کے ۲ سپاہی تر بیچ کئے اور انہیں قتل کر کے فرمایا: تم مجھ پر اس طرح سنگ باری کر رہے ہو جس طرح کافروں پر کی جاتی ہے حالانکہ میں اللہ کے اہلبیت سے ہوں کیا تمہیں آل رسول کا پاس و لحاظ نہیں ہے اور تم نے رسول کے اس حق سے انکس بند کر لی ہیں جو تمہاری گدن پر ہے۔

محمد بن اشعث نے جواب میں کہا: خواہ مخواہ کیوں جان سے ہاتھ دھونا چاہتے ہو میری پناہ میں آ جاؤ، مسلم نے غیظ میں فرمایا: جب تک میرے بازوؤں میں دم ہے اور میرے بدن میں جان ہے اس وقت میں خود کو تمہارے سپرد نہیں کروں گا یہ کہہ کر اشعث بن قیس پر حملہ کر دیا وہ بھاگ نکلا، مسلم پر پیاس کا طہ تھا کہ دینشت مسلم پر ایک نیزہ لگا گھوڑے سے زمین پر گر پڑے فوج نے گرفتار کر لیا،

کھا ہے کہ محمد بن اشعث نے عبداللہ بن زیاد سے کہا: اے میرے چچے آپ نے سرد میدان، دلیر

۱۔ تاریخ الامم اثر ج ۱ ص ۱۵۸، ۲۔ موت سائے کھڑی ہے جو کچھ کرنا ہے کر گزر رہے تھے موت کا جام پینا ہے لیکن خدا کے سامنے میرے کام کو کیونکہ کائنات میں خدا کا حکم جاری ہے۔

طاقتور جنگجو اور تیز دھار تلوار کے مقابلہ میں بھیجا ہے نہ رکھا ہے کہ جب محمد بن اشعث نے مسلم سے کہا کہ میں آپ کو امان دیتا ہوں تو مسلم نے جواب دیا مجھے تمہاری امان کی ضرورت نہیں ہے اور یہ رجز پڑھا

أَفْسَنْتَ لَا أَفْعَلَ إِلَّا خَرَا وَإِنْ رَأَيْتَ التَّوْتُ شَيْئًا نَحَرَا
أَخْرَهُ أَنْ أُخْدَعَ أَوْ أُغْرَا كُلُّ أُخْرَى يَوْمًا يَلْقَى شَرَا
أَخْضِرْ بَنُوكُمْ وَلَا أَخْضِرْ شَرَا ضَرْبٌ غَلَامٌ قَطُّ لَمْ يَبْرَا^(۱)

مسلم بن عقیل کی شجاعت و دلادری کے بارے میں لکھا ہے کہ طاقتور اور شجاع آدمی تھے دشمن کے آدمیوں کو ہاتھ پکڑ کر چھت پر پھینک دیتے تھے جنگ میں عبداللہ بن جعفر کے ہمراہ امام حسن و امام حسین کی رکاب میں امیر المؤمنین علی کی فوج کے دایں پرے میں شیرازن تھے یا

مسلم بن عقیل کی گرفتاری

مسلم بن عقیل کی گرفتاری کے بارے میں مختلف اقوال ہیں،

① ابن اثیر کوئی لکھتے ہیں: جب مسلم نے پے درپے حملے کر کے تھوڑا آرام لینے کے لئے حلد رکھ دیا تھا اس وقت ایک کوئی نے پشت پر ایک نیزہ مارا جس سے آپ زمین پر گر پڑے اور گرفتار کر لئے گئے،

② شیخ مفید لکھتے ہیں: جب مسلم بن عقیل نے یہ محسوس کیا کہ اب حملہ جاری رکھنے کی طاقت نہیں ہے تو آپ آرام کی غرض سے دیوار سے ٹیک لگا کر کھڑے ہو گئے، محمد بن اشعث نے کہا: میں آپ کو امان

دے گا میں نے آواز اور سر ہلکائی کے ساتھ مرتے کی قسم کھائی ہے اگرچہ میں موت کو پسند نہیں کرتا مجھے دھوکہ دیا جائے یہ مجھے پسند نہیں ہے
شخص کو ایک روز شہر کو دیکھا ہے میں میں تین گروں کا اور مجھے آنے والی بلا سے کوئی خوف نہیں ہے میں وہ شیرازن ہوں جو میدان سے تین بجائے، مناقب ابن شہر آشوب ج ۳ ص ۱۶۳، لا سفینا بحار ج ۱ ص ۵۵۲

دیتا ہوں، مسلم نے پوچھا: کیا میں امان میں ہوں؟ اس نے کہا ہاں آپ امان میں ہیں، لیکن عبداللہ بن عباس سلمی نے مسلم کو امان نہ دی تو مسلم نے کہا: اگر تم مجھے امان نہیں دو گے تو میں ہاتھ پر ہاتھ رکھ کر اس شخصوں کا خود کو تمہارے سپرد نہیں کروں گا، اس کے بعد انہیں سوار کیا تلوار چھین لی اپنے حاصرہ میں لایا، مسلم نے جب یہ صورتحال دیکھی تو مایوس ہو کر کہا: یہ دعا بازی اور دھوکہ دہی کی ابتدا ہے،

③ ابو مخنف لکھتے ہیں: مسلم پر فتح پانے کے لئے دشمنوں نے گڑھا کھودا تھا اور اسے جس دھانگ چھپا دیا تھا جب مسلم نے ان پر حملہ شروع کیا تو وہ پیچھے ہٹے، مسلم اسے گڑھے میں گر پڑے نتیجوں میں گرفتار کر لئے گئے یا

مسلم نے اسید ہو گئے تو ان کی آنکھوں سے ننگ جاری ہو گئے اور جن لوگوں نے آپ کو امان دی تھی اس سے کہا: یہ دعا بازی، دھوکہ دہی اور پیمان شکنی کی ابتداء ہے، محمد بن اشعث نے کہا: آپ خوف زدہ نہ ہوں، حضرت مسلم نے کہا: تمہاری امان کیا ہے؟ پھر انا للہ وانا الیہ راجعون کہہ کر آپ رونے لگے، عبداللہ بن عباس سلمی نے کہا: جو شخص انشاؤ کا کام انجام دیتا ہے اسے حوادث سے گھبرا کر رونا

نہیں چاہیئے، مسلم نے جواب دیا: خدا کی قسم میں اپنے ابو نہیں رو رہا ہوں مجھے اپنے مارے جانے کی پروا نہیں ہے اگرچہ مجھے یہ پسند نہیں ہے کہ میں تیریں زبرداری کو پورا کرنے ہوئے مارا جاؤں جو کہ میرے سپرد کی گئی ہے میں تو امام حسن اور ان کے ساتھیوں پر رو رہا ہوں کہ وہ تمہارے خطوط پر افتاد کر کے کوئی طرف رواز ہو گئے اس کے بعد محمد بن اشعث کی طرف رخ کر کے کہا: میں سمجھتا ہوں کہ تم مجھے امان دینے اور مجھے بچا لینے سے عاجز ہو چکا تم سے کسی بچی کی امید کی جا سکتی ہے؟ کیا تم میری طرف سے امام حسن کے پاس قاصد بھیج کر یہ خبر پہنچا سکتے ہو کہ میں دشمنوں کے زعم میں گرفتار ہوں، شاید رات ہونے تک مجھے قتل کر دیا جائے یقیناً یہ تک مجھے قتل کریں گے، امام حسن تک قاصد میرا پیغام پہنچا دے گا کہ: میرے ماں باپ آپ پر دار ہو جائیں آپ واپس لوٹ جائیں، اپنے اہلیت سے کبھی اپنے ہمراہے جائیں تاکہ آپ اہل کو نو کے

قریب سے کیے رہیں، ان لوگوں نے آپ کے والد کے مددگاروں کو قتل کر دیا، جبکہ علی ان سے موت یا شہادت کے درمیان سے جدائی کی آرزو رکھتے تھے، کو فیوں نے اپنا ہتھوڑا دیباہ اوہ آپ کے قتل کے دہرے ہیں، محمد بن اشعث نے جناب سلم سے وعدہ کیا وہ اس کلمہ کو انجام دے گا اور ابن زیاد سے ان کا امان حاصل کرے گا۔

مسلم بن عمرو باہلی

جب محمد بن اشعث مسلم بن عقیل کے ساتھ دارالامارہ میں عید اللہ کے پاس پہنچا اور اس کے کہا کہ میں نے ابن امیہ دہی ہے تو عید اللہ جو کہ اخلاقی اقدار کا پابند نہیں تھا نہ کہا: نہیں امان دینے کا اختیار نہیں تھا، ہم نے تمہیں مسلم کو امان دینے کے لئے نہیں بھیجا تھا بلکہ یہ کہ تھا کہ مسلم کو حاضر کرو! محمد بن اشعث کے پاس سکوت کے علاوہ کوئی چارہ نہ تھا،

مسلم دارالامارہ میں بیٹھے تھے، شدید پیاس لگ رہی تھی چلنے پھرنے کی طاقت نہ تھی آپ کی نظر پانی کے کوزے پر پڑی، پانی مانگا لیکن مسلم بن عمرو باہلی جو کہ بدھیتی میں عید اللہ سے کم نہ تھا اس نے کہا: خدا کی قسم میں اس ٹھنڈے پانی سے ایک قطرہ بھی نصیب نہ ہوگا اب تم دوزخ کے کھولتے ہو پانی سے یہ لب ہو گئے،

مسلم نے معلوم کیا کہ کون ہو؟ اس نے کہا: میں وہی ہوں جس نے اس وقت حق کو چھپانا تھا جب تم اس سے دست بردار ہوئے تھے، میں اپنے امام کا خیر خواہ ہوں جبکہ تم نے ان کے بارے میں انہیں نہیں کیا ہے میں ان کی اطاعت کرتا ہوں جبکہ تم نے ان کے خلاف خروج کیا ہے میں مسلم بن عمرو باہلی ہوں مسلم بن عقیل نے جواب دیا تیری ماں تیرے غم میں بیٹھے بالہ کے بیٹے تو کتنا کھنڈ اور سنگدل ہے وہ جس ہے جہنم کا کھنڈ ہوا پانی پینے اور ہمیشہ جہنم میں رہنے کے تم مستحق ہو سہ آی انشاء میں عمرو بن حریصؓ

دارالامارہ، تاریخ کامل ابن ابی نعیم، ۳۳ و ۳۴، ۵۹، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴

مسلم اسے ایک طرف لے گئے عید اللہ دونوں کو دیکھ رہا تھا مسلم بن قیس نے عرض کیا: اس شہر میں میرے دوسرا سات سو درہم قرض ہے میری شہادت کے بعد میری ذرہ کو فروخت قرض ادا کر دینا اور جب مجھے شہید کر دیا جائے تو لاش کو حکومت کے کارندوں سے لیکر سپرد خاک کر شخص کو امام حسین کے پاس بھیج کر انہیں کوڑا آنے سے منع کر دینا کیونکہ میں نے انہیں خط کے ذریعہ اطلاع تھی کہ اہل کوڑا آپ کے ساتھ ہیں اسی لئے وہ کوڑا لے کر روانہ ہو چکے ہیں۔

عروہ بن سعد نے ابن زیاد سے کہا: اے امیر آپ جانتے ہیں مسلم نے مجھ سے کیا کہا ہے؟ بعد مسلم کی پوری وصیت عبداللہ کے سامنے نقل کی اور ان کا راز فاش کر دیا، عبداللہ نے کہا: اس خیانت نہیں کرتا لیکن کبھی خیانت نہ کر کو امین سمجھ لیا جاتا ہے۔ ہم اس چیز کے مخالف نہیں ہیں جس کا قتل کے بعد انجام دلانا پسند کرتے ہیں ان کے جنازے کے بارے میں بھی ان کی وصیت کے مطابق عمل کرو۔

اس کا مسند کو گروہ ہمارے خلاف کچھ نہیں کریں گے تو ہم بھی ان کے خلاف کوئی اقدام نہیں کریں گے۔ اس کے بعد سکیر بن حمران سے کہا کہ مسلم کو دارالامارہ کی چھت پر لے جا کر سترن سے جدا کر تمہارا دل بھی ٹھنڈا ہو جائے۔ اس سے قبل مسلم نے اسے زخمی کر دیا تھا۔ اسی اثناء میں مسلم کی نظر زمین پر پڑی تو اسے غائب کر کے کہا: اسے اشدت کے بیٹے اگر تو نے مجھے امان نہ دی ہوتی تو میں ہرگز تسلیم

اٹھو اور گوارہ کے ذریعہ مجھ سے دفاع کرو! محمد بن اشدت نے مسلم کی بات کو انسانی کر دیا۔

جناح مسلم تبیح و تکمیل اور استغفار میں مشغول ہو گئے اور فرمایا خدا یا: ہمارے اور اس جگہ درمیان فیصلہ فرما جس سے ہم سے جھوٹ بولا نہیں فریب دیا اور ہمیں تنہا چھوڑ دیا اور ہمیں قتل کیا۔ بعد دو رکعت نماز پچھلائے اور مدینہ کی طرف رخ کر کے امام حسین پر درود و سلام بھیجا۔

۱۔ «لَا يَخُونُ الْأَمِينُ وَلَكِنْ يُوْتَقَنُ الْخَائِنُ»۔ ہمارا اللہ ہم سے نہیں خیانت کرتا مگر ہم سے۔
۲۔ «اللَّهُمَّ احْكُم بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمٍ كَذَبُواَنَا وَعَدُواَنَا وَخَدَّوْنَا وَفَقَلُّوْنَا»۔ اے اللہ! ہمیں ان کے درمیان فیصلہ فرما جو ہم سے جھوٹ بولا، وعدہ کیا، خدایا اور ہمیں قتل کیا۔
۳۔ الشہید مسلم بن قیس مقدم ص ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵،

شہادت ہانی

مسلم ابن عقیل کی شہادت کے بعد محمد بن اشعث ہانی کی سفارش کے لئے عبید اللہ بن جراح اور کہا: آپ جانتے ہیں کہ شہید کو فیس ہانی کی جانشینیت ہے، ہانی اور ان کا خاندان عروبن جراح انہیں آپ کے پاس لائے ہیں، میں آپ کو خدائی قسم دیتا ہوں کہ انہیں معاف کی دشمنی میں اپنے لئے بہت گراں سمجھتا ہوں،

عبید اللہ نے وعدہ کیا کہ میں انہیں قتل نہیں کروں گا مگر دیکھتے ہی دیکھتے اس کا ارادہ کر ہانی کو قید سے باہر لاکر بازاری طرف لے جا کر قتل کر دو، جب ہانی کے ہاتھ باندھ کر جا رہے تھے جہاں بھیڑ بکریاں فروخت کی جاتی تھیں اس وقت ہانی نے با آواز بلند کہا: کیا یہ کیا یہ قیدی میری مدد نہیں کرے گا۔

ہانی نے حیدر دیکھا کہ کوئی ان کی مدد کرنے والا نہیں ہے تو انہوں نے اپنے ہاتھ کوئی عصا، چھری، یا بادی نہیں ہے کہ جس سے یہ مرد اپنا دفاع کر سکے، گجراؤں نے انہیں بندوں میں انہیں بکڑ دیا، کسی نے کہا: گردن آگے بڑھاؤ، ہانی نے جواب دیا: ایسے موقع کام نہیں لوں گا اور اپنے قتل میں تمہاری مدد نہیں کروں گا اس کے بعد رشیدہ عبید اللہ کے ایک ضربت لگائی جس سے ہانی پچ گئے، ہانی: بارگشت خدای کی طرف ہے اے اللہ! رضوان کی طرف آ رہا ہوں مگر رشیدہ نے دوسرا حملہ کر کے ہانی کو شہید کر دیا۔

عبید اللہ بن زہیر اسدی نے ہانی اور سلمہ کے بارے میں یہ اشاعت کی ہے، بعض ادا کو فرزدق کی طرف منسوب کرتے ہیں،

یا نتیجہ القتل ۳۵۸

یا الی اللہ العما والہم ائی رحمتک ورضوانک، یا ارشاد منہد ۳۵۸

إلی ہانی فی الشوقی وآہن عقیل
وآخر یغوی من لمار، قتیل ۵

یاد کا خط

یاد کا خط: کاتب عروبن نافع کو حکم دیا کہ مسلم و ہانی کے قہار اور جو کچھ بولے اسے لکھو، عروبن نافع نے یہ خط لکھا: عبید اللہ نے خط دیکھا تو اسے پسند نہ آیا کہنے لگا: اس تفصیل کی کیا ضرورت ہے؟ دست نامش ہے اس خد کے لئے جس نے میرا دشمن بن کر حق لیا اور انہیں دشمن سے میرا دشمن کی خدمت میں عرض ہے کہ مسلم بن عقیل ہانی بن عروہ کے گھر میں پناہ گزین ہو چکا ہے اور جاسوسوں کے ذریعہ دونوں کو گھر سے نکال کر تہ تیغ کر دیا ہے اور اپنے وفاداروں کو اس کی مدد سے اس کے ذریعہ ان کے سر آپ کی خدمت میں بھیج رہا ہوں مسلم کے بارے میں اس وقت اس وقتوں سے کہہ سکتے ہیں یہ دونوں سچے اور متقی ہیں، والسلام

یاد کا خط: کاتب عروبن نافع کو حکم دیا کہ مسلم و ہانی کے قہار اور جو کچھ بولے اسے لکھو، عروبن نافع نے یہ خط لکھا: عبید اللہ نے خط دیکھا تو اسے پسند نہ آیا کہنے لگا: اس تفصیل کی کیا ضرورت ہے؟ دست نامش ہے اس خد کے لئے جس نے میرا دشمن بن کر حق لیا اور انہیں دشمن سے میرا دشمن کی خدمت میں عرض ہے کہ مسلم بن عقیل ہانی بن عروہ کے گھر میں پناہ گزین ہو چکا ہے اور جاسوسوں کے ذریعہ دونوں کو گھر سے نکال کر تہ تیغ کر دیا ہے اور اپنے وفاداروں کو اس کی مدد سے اس کے ذریعہ ان کے سر آپ کی خدمت میں بھیج رہا ہوں مسلم کے بارے میں اس وقت اس وقتوں سے کہہ سکتے ہیں یہ دونوں سچے اور متقی ہیں، والسلام

یاد کا خط: اما بعد! تم ایسے ہی ہو جیسا میں چاہتا تھا تمہارا وہی طریقہ کار ہے جو

یاد کا خط: اما بعد! تم ایسے ہی ہو جیسا میں چاہتا تھا تمہارا وہی طریقہ کار ہے جو

یاد کا خط: اما بعد! تم ایسے ہی ہو جیسا میں چاہتا تھا تمہارا وہی طریقہ کار ہے جو

یاد کا خط: اما بعد! تم ایسے ہی ہو جیسا میں چاہتا تھا تمہارا وہی طریقہ کار ہے جو

دور اندیش لوگوں کا ہوتا ہے تمہاری پرورش شہر دل اور بہادر لوگوں کی سی ہے تم نے مجھے
تمہارے متعلق میرا جو نظریہ تھا وہ صحیح ثابت ہوا میں نے تمہارے قاصدوں سے دوبارہ
کہے اور انہیں ایسا ہی بافضل و دیار پایا جیسا کہ تم نے لکھا تھا،
مجھے خبر ملی ہے کہ میں عراق کی طرف بڑھ رہے ہیں ان کے راستے میں گہرائی
اور جس کی طرف سے تمہیں سونپن ہوا ہے قید خانہ میں ڈال دیا قتل کرو مجھے کو فکے

خاندانِ مسلم کا مختصر تعارف

جنابِ مسلم بن عبد اللہ کی شادی امیر المومنین کی صاحبِ زادی ثناء بنتِ رقیہ سے
ایک کا نام عبد اللہ اور دوسرے کا نام عیسیٰ تھا، ایک بیٹا کنیر سے تھا جس کا نام
تھی حمیدہ یہ امیر المومنین کی صاحبِ زادی ام کلثوم صغریٰ کے بطن سے تھیں اور چونکہ
کہ وہ ایک وقت وہ دونوں سے نکاح کر کے لہذا مسلم بن عیسیٰ کے انتقال کے بعد دوسرے
جنابِ مسلم کی صاحبِ زادی حمیدہ کی شادی ان کے چچا زاد بھائی عبد اللہ بن
سے ہوئی یہ محدث و فقیہ تھے، شیخ طوسی نے انہیں امام صادق کے رجال میں شمار کیا ہے
دیباچہ اور اپنی کتاب جامع میں ان سے حدیث نقل کی ہیں ان کے ذریعہ احمد بن حنبل، ابی
ماجر، ترمذی نے احتجاج کیا ہے، مسلم بن عیسیٰ وفات پائی، حمیدہ سے ایک بیٹا
ان کے پانچ بچے ہیں،
حضرت مسلم کے پانچ بچے تھے جیسے ہیں، عبد اللہ، محمد، کر بلا، میسر، شہید
شہادت پائی ان کے بارے میں ہم اس مذہب بیان کر کے لیکن پانچویں بیٹے کے متعلق

۱۔ ارشاد شیخ مفید ص ۱۱۵، ۲۔ المعارف ص ۸۸

۳۔ مناقب اہل بیت ص ۹۴، ۴۔ اشہد مسلم بن فضال مقدم ص ۱۸۶

اسلام میں خطبہ

کہہ رہا ہے کہ وقتِ اسلام میں علیہ السلام کھڑے ہوئے اور یہ خطبہ دیا:

الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت
الحمد لله ما شاء الله ولا قوة الا بالله وصلى الله على رسوله، خطب السوت

ساری باتیں اللہ سے مخصوص ہیں، وہی ہوتا ہے جو وہ چاہتا ہے طاقت صرف خدا کی ہے
اللہ اپنے رسول پر رحمت نازل فرما،

موت اولاد آدم کے لئے ایسی ہے جیسے موتی کے لئے گولہ بند بھلے میں اپنے بزرگوں سے ملاقات
کی ایسی ہی آرزو رکھتا ہوں جیسا یعقوب کو یوسف کے دیار کی آرزو تھی میری قتل گاہ اور دفن
گاہ مقب ہو چکا ہے مجھے وہاں پہنچنا ہے گویا میں دیکھ رہا ہوں کہ سرزمینِ کربلا پر میانان کے
دولت میرے جوڑ و بند کو ایک دوسرے سے جدا کر رہے ہیں اور اپنا پیٹ بھر رہے ہیں اور
لوگوں کو دیر سے فراخ بویں کر رکھا ہم اہلبیت رسولِ راضی برضاے خدا ہیں،

اسلام میں عیسے گفتگو کے بارے میں ہم پہلے بیان کر چکے ہیں،

١٠٠٠ كامل الزيارات ص ٤٢، من البدايه والنهايه ٨/ ١٤٩، من كامل الزيارات ص ٤٢،

امام حسینؑ کو خوار کی رو سے ایک بات کہنا چاہتا ہوں، اگر آپ مجھے سچا خیر خواہ سمجھتے ہیں تو جو
 آپ کے ساتھ بھی ایسا ہی نہ ہو، کہیں وہ آپ کے ساتھ بھی ہو فانی نہ کریں اگر آپ مکہ میں رہیں تو
 کے عزیز ترین افراد میں سے ہیں وہاں رہیں،
 امام حسینؑ نے فرمایا: بھائی! مجھے خوف ہے کہ کہیں یزید بن معاویہ مجھے اچانک تم
 اور میری وجہ سے فائدہ کی بے حرقی ہو جائے، محمد بن حنفیہ نے کہا: اگر مکہ میں ٹھہرنے میں خوف
 یا ایسی جگہ کا انتخاب کیجئے کہ جہاں آپ کوئی غالب نہ آ سکے، امام حسینؑ علیہ السلام نے فرمایا: آپ
 پر غور کروں گا،

محکمہ وقت امام حسینؑ نے کوچ کا ارادہ کیا جب محمد بن حنفیہ کو خبر ہوئی تو وہ پھر آ
 پکڑ کر کہنے لگے، بھائی! آپ نے مجھ سے وعدہ کیا تھا کہ میری بات کے بارے میں غور کریں گے
 جلد مکہ سے جارہے ہیں؟ امام حسینؑ نے فرمایا: آپ کے چلے جانے کے بعد میں نے خواب میں
 پاس ہیں اور فرما رہے ہیں، حسینؑ نکلے نہ سکیں خدا تمہیں مقول کیجنا چاہتا ہے،
 محمد بن حنفیہ نے: انا للہ وانا الیہ راجعون پڑھا تو ان غور توں کو کیوں ساتھ لے جا رہے
 ان حالات میں انہیں اپنے ساتھ کیوں لے جا رہے ہیں؟ امام حسینؑ نے جواب دیا: خدا کی قسم
 اسیر کیسے اس کے بعد محمد بن حنفیہ نے بھائی کو وادع کیا اور امام حسینؑ رواد ہو گئے۔

امام حسینؑ اور عربین عبدالرحمن

امام حسینؑ نے جب مکہ سے کو فوجی سمت روانہ ہوئے کا قصہ کیا تو اس وقت
 بن حارث بن عیشام مکہ میں تھا وہ بھی امام حسینؑ علیہ السلام کے پاس آیا اور کہا: میں ایک

15.

عبد اللہ بن عباس

ان عمر

۱۵۶۵۲۵۳۴

۵۵۸

[illegible]

ابن عباسؓ کو آپ کی بیعت کریں گے کیونکہ ہم نبیؐ اور اس کے باپ و معاویہؓ
کا اہل بیت ہیں۔

ابن عباسؓ اور عبداللہ ابن زبیرؓ

ابن عباسؓ نے مکہ سے عراق کی سمت روانہ ہوئے تو عبداللہ ابن عباسؓ نے ابن زبیرؓ کے ثناء پر

خَلَا لَكَ الْجَوُّ قَيْصَرِي وَأَصْفَرِي
هَذَا الْحَسَنُ سَائِرُ قَائِمِي (۱)

ابن عباسؓ نے کہا: جس کے بیٹے! خدایا! قسم تم خلافت کو صرف اپنے خاندان میں
رکھو اور کسی کو اس لائق نہیں سمجھنا اور خود کو سب سے زیادہ خلافت و حکومت کا اہل سمجھتے
ہو! یہ بات وہ کہے جسے شک ہو تو یقین ہے تم اپنی گواہی دینا کہ تم نے خود کو کیسے خلافت
پہنچائی ہے! اپنی شرافت کی بنا پر، ابن عباسؓ نے کہا: کس چیز کے ذریعہ تمیں شرافت ملی ہے؟ اگر
خلافت ہے تو وہ ہماری وجہ سے! ہم تجھ سے بلند و افضل ہیں کیونکہ تو نے ہم سے شرافت پیا

ابن عباسؓ کہتے ہوئے ان کی آواز بلند ہو گئی تو عبداللہ ابن زبیرؓ کے غلام نے ابن عباسؓ سے کہا:
ابن عباسؓ کے بیٹے! ہمیں حاف کرو، خدایا! قسم آپ اشیٰ حضرات ہیں انہیں چاہتے ہیں تو ہم بھی
چاہتے ہیں، عبداللہ ابن زبیرؓ نے غلام کے منہ پر ایک طمانچہ مارا اور کہا: جب تک میں موجود
ہوں اس کا تم نہیں بول سکتے۔

ابن عباسؓ نے زمین پر گھونٹیں مرقا کی سمت چلے گئے۔

جابر ابن عبداللہ انصاریؓ

آپ بھی امام حسینؑ کے پاس آئے اور درخواست کہ مکہ سے نہ جائیں لیکن امام حسینؑ نے
دیا جو دوسرے افراد کو دے چکے تھے۔

عبداللہ ابن زبیرؓ کے بارے میں پہلے بیان کر چکے ہیں کہ اس نے امام حسینؑ سے درخواست
کی کہ وہ بھی قیام پذیر رہیں گے کہ وہ آپ کے ہاتھ پر بیعت کرے کہ اس کی پریچہاں دیگر افراد بھی امام حسینؑ
کے اس سے اس کا مقصد یہ تھا کہ لوگوں کی نظروں میں متہم نہ قرار پائے اور اس کی اس پیشکش کو
محل کیا جائے۔

یہ بھی منقول ہے کہ جب عبداللہ ابن زبیرؓ کو یہ خبر ملی کہ امام حسینؑ عازم کوفہ ہیں،
قیام اس کے لئے بہت ناگوار تھا چونکہ امام حسینؑ کی موجودگی میں لوگ اس کے فرمان کی اطاعت
تھے لہذا اس کی دلی تمنا یہ تھی کہ آپ مکہ چھوڑ کر چلے جائیں، وہ امام حسینؑ کی خدمت میں پہنچا اور
سے؟ بنی امیہ نے جو خدا کے عاص بندوں پر تم ڈھاکے رکھیں اگر ان کے انتقام میں ان سے جنگ
مجھے خوف یہ ہے کہ ہمیں عذاب خدا نازل نہ ہو جائے۔

امام حسینؑ نے فرمایا: میں کوؤ کا قصد کرتا ہوں، عبداللہ ابن زبیرؓ نے کہا: خدا آپ
کو اسے اور میرے پاس بھی ایسے ہی انصار و مددگار ہوتے جیسے آپ کے انصار و مددگار
میں بھی کوؤ چلنا، امام حسینؑ نے اس اقدام سے ابن زبیرؓ کی طور پر بیعت خوش تھا لیکن اتنا
ظاہر رہا کہ کوؤ کو محفوظ رکھنے کی وجہ سے امام حسینؑ سے عرض کرتا ہے اگر آپ یہیں قیام کریں، ہمیں اور
۱۔ تاریخ اسلام، ج ۵، ص ۴۴۳۔

اس کی کیفیت ابو خنیس والدہ انصاریتؓ ابو بکرؓ کے دوسرے مل چڑھا ہوا حضرت علیؑ فرمایا
شمار ہوتے تھے یہاں تک ان کا بیٹا عبداللہؓ بڑا ہو گیا مگر یہیں معاویہؓ نے اپنے بڑے بھائی کے بعد حجاز و مدین عراق اور شام
کے ہاتھ پر بیعت کر لی، جاری و دل کو انصاف جاری نہ کر سکتے تھے وہاں تک کہ ان کے زمانہ میں قتل ہوا، لا تنجابہؓ۔

ام کا جواب

۲۰۰۰

۱۔ شرح پنج اہل بلاغ ابن ابی الحدید ج ۲، ص ۱۳۴،

۱۱۱
۱۱۲
۱۱۳
۱۱۴
۱۱۵
۱۱۶
۱۱۷
۱۱۸
۱۱۹
۱۲۰
۱۲۱
۱۲۲
۱۲۳
۱۲۴
۱۲۵
۱۲۶
۱۲۷
۱۲۸
۱۲۹
۱۳۰
۱۳۱
۱۳۲
۱۳۳
۱۳۴
۱۳۵
۱۳۶
۱۳۷
۱۳۸
۱۳۹
۱۴۰
۱۴۱
۱۴۲
۱۴۳
۱۴۴
۱۴۵
۱۴۶
۱۴۷
۱۴۸
۱۴۹
۱۵۰
۱۵۱
۱۵۲
۱۵۳
۱۵۴
۱۵۵
۱۵۶
۱۵۷
۱۵۸
۱۵۹
۱۶۰
۱۶۱
۱۶۲
۱۶۳
۱۶۴
۱۶۵
۱۶۶
۱۶۷
۱۶۸
۱۶۹
۱۷۰
۱۷۱
۱۷۲
۱۷۳
۱۷۴
۱۷۵
۱۷۶
۱۷۷
۱۷۸
۱۷۹
۱۸۰
۱۸۱
۱۸۲
۱۸۳
۱۸۴
۱۸۵
۱۸۶
۱۸۷
۱۸۸
۱۸۹
۱۹۰
۱۹۱
۱۹۲
۱۹۳
۱۹۴
۱۹۵
۱۹۶
۱۹۷
۱۹۸
۱۹۹
۲۰۰
۲۰۱
۲۰۲
۲۰۳
۲۰۴
۲۰۵
۲۰۶
۲۰۷
۲۰۸
۲۰۹
۲۱۰
۲۱۱
۲۱۲
۲۱۳
۲۱۴
۲۱۵
۲۱۶
۲۱۷
۲۱۸
۲۱۹
۲۲۰
۲۲۱
۲۲۲
۲۲۳
۲۲۴
۲۲۵
۲۲۶
۲۲۷
۲۲۸
۲۲۹
۲۳۰
۲۳۱
۲۳۲
۲۳۳
۲۳۴
۲۳۵
۲۳۶
۲۳۷
۲۳۸
۲۳۹
۲۴۰
۲۴۱
۲۴۲
۲۴۳
۲۴۴
۲۴۵
۲۴۶
۲۴۷
۲۴۸
۲۴۹
۲۵۰
۲۵۱
۲۵۲
۲۵۳
۲۵۴
۲۵۵
۲۵۶
۲۵۷
۲۵۸
۲۵۹
۲۶۰
۲۶۱
۲۶۲
۲۶۳
۲۶۴
۲۶۵
۲۶۶
۲۶۷
۲۶۸
۲۶۹
۲۷۰
۲۷۱
۲۷۲
۲۷۳
۲۷۴
۲۷۵
۲۷۶
۲۷۷
۲۷۸
۲۷۹
۲۸۰
۲۸۱
۲۸۲
۲۸۳
۲۸۴
۲۸۵
۲۸۶
۲۸۷
۲۸۸
۲۸۹
۲۹۰
۲۹۱
۲۹۲
۲۹۳
۲۹۴
۲۹۵
۲۹۶
۲۹۷
۲۹۸
۲۹۹
۳۰۰
۳۰۱
۳۰۲
۳۰۳
۳۰۴
۳۰۵
۳۰۶
۳۰۷
۳۰۸
۳۰۹
۳۱۰
۳۱۱
۳۱۲
۳۱۳
۳۱۴
۳۱۵
۳۱۶
۳۱۷
۳۱۸
۳۱۹
۳۲۰
۳۲۱
۳۲۲
۳۲۳
۳۲۴
۳۲۵
۳۲۶
۳۲۷
۳۲۸
۳۲۹
۳۳۰
۳۳۱
۳۳۲
۳۳۳
۳۳۴
۳۳۵
۳۳۶
۳۳۷
۳۳۸
۳۳۹
۳۴۰
۳۴۱
۳۴۲
۳۴۳
۳۴۴
۳۴۵
۳۴۶
۳۴۷
۳۴۸
۳۴۹
۳۵۰
۳۵۱
۳۵۲
۳۵۳
۳۵۴
۳۵۵
۳۵۶
۳۵۷
۳۵۸
۳۵۹
۳۶۰
۳۶۱
۳۶۲
۳۶۳
۳۶۴
۳۶۵
۳۶۶
۳۶۷
۳۶۸
۳۶۹
۳۷۰
۳۷۱
۳۷۲
۳۷۳
۳۷۴
۳۷۵
۳۷۶
۳۷۷
۳۷۸
۳۷۹
۳۸۰
۳۸۱
۳۸۲
۳۸۳
۳۸۴
۳۸۵
۳۸۶
۳۸۷
۳۸۸
۳۸۹
۳۹۰
۳۹۱
۳۹۲
۳۹۳
۳۹۴
۳۹۵
۳۹۶
۳۹۷
۳۹۸
۳۹۹
۴۰۰
۴۰۱
۴۰۲
۴۰۳
۴۰۴
۴۰۵
۴۰۶
۴۰۷
۴۰۸
۴۰۹
۴۱۰
۴۱۱
۴۱۲
۴۱۳
۴۱۴
۴۱۵
۴۱۶
۴۱۷
۴۱۸
۴۱۹
۴۲۰
۴۲۱
۴۲۲
۴۲۳
۴۲۴
۴۲۵
۴۲۶
۴۲۷
۴۲۸
۴۲۹
۴۳۰
۴۳۱
۴۳۲
۴۳۳
۴۳۴
۴۳۵
۴۳۶
۴۳۷
۴۳۸
۴۳۹
۴۴۰
۴۴۱
۴۴۲
۴۴۳
۴۴۴
۴۴۵
۴۴۶
۴۴۷
۴۴۸
۴۴۹
۴۵۰
۴۵۱
۴۵۲
۴۵۳
۴۵۴
۴۵۵
۴۵۶
۴۵۷
۴۵۸
۴۵۹
۴۶۰
۴۶۱
۴۶۲
۴۶۳
۴۶۴
۴۶۵
۴۶۶
۴۶۷
۴۶۸
۴۶۹
۴۷۰
۴۷۱
۴۷۲
۴۷۳
۴۷۴
۴۷۵
۴۷۶
۴۷۷
۴۷۸
۴۷۹
۴۸۰
۴۸۱
۴۸۲
۴۸۳
۴۸۴
۴۸۵
۴۸۶
۴۸۷
۴۸۸
۴۸۹
۴۹۰
۴۹۱
۴۹۲
۴۹۳
۴۹۴
۴۹۵
۴۹۶
۴۹۷
۴۹۸
۴۹۹
۵۰۰
۵۰۱
۵۰۲
۵۰۳
۵۰۴
۵۰۵
۵۰۶
۵۰۷
۵۰۸
۵۰۹
۵۱۰
۵۱۱
۵۱۲
۵۱۳
۵۱۴
۵۱۵
۵۱۶
۵۱۷
۵۱۸
۵۱۹
۵۲۰
۵۲۱
۵۲۲
۵۲۳
۵۲۴
۵۲۵
۵۲۶
۵۲۷
۵۲۸
۵۲۹
۵۳۰
۵۳۱
۵۳۲
۵۳۳
۵۳۴
۵۳۵
۵۳۶
۵۳۷
۵۳۸
۵۳۹
۵۴۰
۵۴۱
۵۴۲
۵۴۳
۵۴۴
۵۴۵
۵۴۶
۵۴۷
۵۴۸
۵۴۹
۵۵۰
۵۵۱
۵۵۲
۵۵۳
۵۵۴
۵۵۵
۵۵۶
۵۵۷
۵۵۸
۵۵۹
۵۶۰
۵۶۱
۵۶۲
۵۶۳
۵۶۴
۵۶۵
۵۶۶
۵۶۷
۵۶۸
۵۶۹
۵۷۰
۵۷۱
۵۷۲
۵۷۳
۵۷۴
۵۷۵
۵۷۶
۵۷۷
۵۷۸
۵۷۹
۵۸۰
۵۸۱
۵۸۲
۵۸۳
۵۸۴
۵۸۵
۵۸۶
۵۸۷
۵۸۸
۵۸۹
۵۹۰
۵۹۱
۵۹۲
۵۹۳
۵۹۴
۵۹۵
۵۹۶
۵۹۷
۵۹۸
۵۹۹
۶۰۰
۶۰۱
۶۰۲
۶۰۳
۶۰۴
۶۰۵
۶۰۶
۶۰۷
۶۰۸
۶۰۹
۶۱۰
۶۱۱
۶۱۲
۶۱۳
۶۱۴
۶۱۵
۶۱۶
۶۱۷
۶۱۸
۶۱۹
۶۲۰
۶۲۱
۶۲۲

اوزاعی

عبداللہ ابن جعفر کا خط

جب مدینہ والا کوہ پر معلوم ہوا کہ امام حسینؑ کے مکر سے عراق جانے کا عزم کر چکا ہے تو بنو جعفر نے آپ کو خط تحریر کیا: میں آپ کو خطا کی قسم دیتا ہوں کہ اگر سے نہ جائے تو آپ نے اس سے تشویش ہے، دہنا ہوں کہ آپ اور آپ کے اہلبیتؑ کو تین دن کا جائے اگر آپ کو خوف کہ کافر کا ہو جائے گا، آپ پھر لمومینؑ معاشرہ امت اس کے لئے چراغاں عداوت ہیں، عراق جانے کے لئے کام نہ لیجئے میں بڑا دروغی امید کے سر پر آوردہ افراد سے آپ کی جان، اہلبیتؑ اور

عبدالرحمن بن عوف بن عمرو، علاءشام جس سے ایک کتبہ سفیان ثور کے ان سے روایت کیا ہے انہوں نے
احفص بن قیس سے روایت کیا ہے، صفحہ صحران سے معاویہ کے زمانہ میں اور احفص بن قیس سے صفحہ صحران
بنایہ ممکن ہے کہ واری الامام حسینؑ کے زمانہ میں یہی اور ان کی خدمت میں پہنچے ہوں کیوں اٹھن وقتقاہم
میں مرقوم ہے اس وقت سارے کلاکو ۶۰ سال گزر چکے تھے، مٹا دلائل الامام ص ۵۵، ان کی کنیت

امام کا جواب

امام حسین علیہ السلام نے عروین سعید کا جواب اس طرح رقم کیا:

اگر یہ خطا لکھنے سے تمہارا ارادہ مجھ پر احسان کرنا ہے تو خدا تمہیں دینا و آخرت میں جزا دے گا۔ لیکن جو شخص لوگوں کو خدا کی طرف بلاتا ہے اور اس کا عمل بھی نیک و پسندیدہ ہو اور وہ خود کو اسلامی میں سے سمجھتا ہو تو اس کی مخالفت کیوں کی جائے خدا کی امان بہترین امان ہے اور وہ شخص امان نہیں لایا ہے کہ جو دنیا میں اس سے نہیں ڈرتا ہے خدا نے متعال سے میری دعا ہے کہ دنیا میں نہیں پایا اور مرحمت کرے تاکہ آخرت میں اس کی امان کا باعث ہو۔

پانچویں فصل

مکہ سے کربلا تک

ابو مرثد بن سعید بن العاص کو یہ خبر دی گئی کہ امام حسینؑ مکہ سے عراق کی طرف روانہ ہو چکے ہیں۔ ان کو ان کا قاتل قتب کر کے گرفتار کیا جائے حکومت کے سپاہی گھنٹوں تعاقب میں ادھر ادھر گھومنے لگے۔ امام حسینؑ کو نہ پناہ کے اور واپس کر لوٹ آئے۔

ابو مرثد یہاں سے کہتے ہیں: جب امام حسینؑ مکہ سے نکلے تو عروین سعید بن العاص نے اپنے بھائی، امام حسینؑ کی سرگردی میں ایک دستہ بھیجا تاکہ وہ امام حسینؑ کو عراق نہ جانے دیں اور واپس مکہ کے آئیں لیکن امام حسینؑ واپس مکہ آنے سے پہلے ہی کی اس دستہ کی امام حسینؑ کے ساتھیوں سے جنگ ہوئی امامؑ اور آپ کے ساتھیوں نے امیرانہ مقابلہ کیا اور کوہ کی سمت اپنا سفر جاری رکھا، اس دستہ نے کہا: کیا خدا کا تعویٰ اختیار کیا ہے کہ اس دستہ سے طبعاً ہو کر اس کے درمیان نفرت اندازی کرو گے؟

امام حسینؑ نے جواب میں یہ آیت پڑھی ﴿لِي غَنِيٍّ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُوا﴾

۱۔ تاریخ ابن مسکری ۱۳۲ ص ۷۰
۲۔ میرا علی میرے لئے اور تمہارا عمل تمہارے لئے ہے تمہیں کوئی تاہم تم اس سے بری ہو اور
۳۔ تاریخ ابن مسکری ۱۳۲ ص ۷۰، لائن ۲۱، بحار الانوار ۱۳۶ ص ۱۳۶

ولید بن عقبہ کا خط

جب حکم مدینہ ولید بن عقبہ کو یہ خبر ملی کہ امام حسینؑ سے عراق کی سمت روانہ ہو گئے ہیں تو مدینہ ولید بن عقبہ نے ان کو اس مضمون کا خط لکھا:

اما بعد احسینؑ عراق کی طرف روانہ ہو چکے ہیں یہ فاطمہ بنت رسولؐ کے بیٹے ہیں، اس لئے ہوشیار رہنا تمہاری طرف سے انہیں کوئی تکلیف نہ پہنچ جائے اگر ایسا کرو گے تو تمہیں اور تمہارے خاندان کو اتنا نقصان پہنچے گا کہ جس کی تلافی کبھی چہرے نہیں ہو سکے گی اور رہتی دنیا تک کوئی فراموشی نہیں کرے گا عید الیہ بن زیاد نے ولید کے خط کو اہمیت نہ دی۔

راستوں کی ناکہ بندی

عید الیہ بن زیاد کو اطلاع ملی کہ امام حسینؑ کو فوج آ رہی ہے اس نے پہلے حصین بن اسامہؓ کو جیشہ، مالک کو فوج کے ایک دستہ کا سپہ سالار بنا کر روانہ کیا اس نے قادیسیہ میں پڑاؤ ڈالا اور وہاں مقام تک اور قطیفانہ سے لعلو تک فوج بھردی اور حکم دیا کہ واقعہ سے شام تک کسی ناکہ بندی نہ کر دی جائے، اس علاقہ سے بھگنے یا اس میں داخل ہونے کی اجازت نہیں دیتے تھے، امام حسینؑ نے دیکھا کہ قادیسیہ سے اس ناکہ بندی کے بارے میں معلوم کیا تو انہوں نے بتایا: خدا کی قسم ہم نہیں توڑ سکتے ہمیں اس کام کی طاقت نہیں ہے امام نے اپنا سفر جاری رکھا۔

۱۔ شیعہ الاحزاب ص ۹۰

۲۔ لعلو کو فوج بھرنے کے درمیان کسی پہاڑ کی منڈل کا نام ہے۔ مراحداصلاح ص ۳۰۵

۳۔ انساب شریف ج ۳ ص ۱۰۰۔ واقعہ مکہ سے عراق کے راستے میں واقع ایک جگہ کا نام ہے۔

۴۔ ارشاد شیخ مفید ج ۳ ص ۷۵

امام حسینؑ نے علی بن زید سے اور انہوں نے علی بن الحسینؑ سے نقل کیا ہے کہ آپ نے فرمایا: وہاں سے روانہ ہونے کے بعد کسی مندرجہ پر قیام نہیں کیا جب ہم وہاں سے روانہ ہوئے تو میرے والد نے کہا کہ اس لئے جانے کا واقعہ ہمارا ہے تھے ایک روز کھینچنے کے خدا کے نزدیک دنیا اتنی ہی پرست ہے کہ اس کی ایک بدکار محنت کو بھی بن کر کیا کاسر ہدیہ میں دیا۔

امام حسینؑ کا خط زید کے نام

امام حسینؑ نے زید کو یہ خبر ملی کہ امام حسینؑ کو فوج کی سمت کوچ کر گئے ہیں تو اس نے زید بن معاویہؓ کو خط لکھا اس خط کا خط پڑھ کر یہ شعر پڑھا،

لَا لِسُورِ الْقَبْرِ الْعَذْوُ قَبْلَهُ يَزُودُ عَذْوُ أَوْ يَلُوحَنَّكَ كَالْبَحْرِ

۱۔ اس نے عید الیہ بن زیاد کو ایک خط لکھا جس کا مضمون یہ ہے:

امام حسینؑ کے کہیں کو فوج کیلئے روانہ ہو چکے ہیں تیرا عہد و شہر حسینؑ کے مسئلہ سے جدا ہوا ہے تم ان کے سامنے کھڑے ہو اس سلسلے میں تم یا غلام بن جاؤ گے یا آزادی حاصل کرو گے۔

۵۔ احزاب ص ۳۰۵

۶۔ اس میں جاؤ گے اور اس کی قبر کی زیارت نہیں کرو گے تو وہ خود تمہارے پاس آجائے گا یا دشمن ہیں

۷۔ احزاب ص ۳۰۵

۸۔ احزاب ص ۳۰۵

امام حسین علیہ السلام شہید ہوئے تو وہاں ایک قافلہ دیکھا جو مین سے آیا تھا، قافلہ والوں
 نے اس کے اٹانے کے لئے اونٹ کرایہ پر لئے اور ان سے فرمایا: جو ہمارے ساتھ آنا چاہتا ہے اسے
 اس کے پاس لے آئے اور اچھی باتیں بھی بتائیں گے جو راستہ ہی میں ہم سے جدا ہونا چاہے گا پھر اسے انکار کر دیا
 اس نے راستہ طے کیا جو گھا، چٹا پور ایک جماعت امام کے کمرہ کو پہنچی اور بعض جدا ہو کر اپنی راہ

مکہ سے کربلا تک کی منزلیں

امام حسین علیہ السلام نے مکہ سے کربلا تک میں اور بعض کے قول کے مطابق اس سے
 طے کیا ہے، ان منازل پر قافلہ جو ملاقاتیں کی ہیں، ذیل میں ہم ان منازل کا ذکر کرتے ہیں۔

① ابطح

ابطح، مکہ اور مین کے درمیان واقع ہے درحقیقت یہ بھی علاقہ ہے جہاں سے مین کا
 کی ابتدا مین کا علاقہ اور انتہا مقبرہ معلیٰ ہے، یہ چون نام کا ایک قبرستان ہے، یہاں امام
 بن شیطہ گھری سے کہ جس کا تذکرہ پہلے گذر چکا ہے، ملاقات کی۔

امام حسین کے حدود سے ابھر مین کے راستوں میں واقع ہے جو کہ اہل مکہ میں سے احقر ہاندھتے ہیں، ملاحظہ فرمائیے
 ۹۸، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰،

۱۶۲

امام حسین علیہ السلام نے فرمایا: تمہاری بات صحیح ہے، سب امور خدائی کے اختیار میں ہیں۔ اس کی نئی شان ہے اگر خدا کا فیصلہ ہماری مراد کے مطابق ہوگا تو ہم اس کی نعمت پر شکر ادا کریں گے۔ قصائے ہمارے اور ہماری آرزوؤں کے درمیان جدائی ڈال دے گی تو بھی ہم اس سے شکر ادا کریں گے۔ جو شخص خلوص کے ساتھ عمل انجام دیتا ہے اور اس کے عمل سرسبز ہوتے ہیں وہ خدا کے نزدیک فراموش نہیں کیا جاتا ہے۔

۲) وادی عقیق

۱۱ ہجری ۶۰ کے دن امام حسین وادی عقیق میں پہنچے، اسی منزل پر عبداللہ بن ابی اسلمہ کے بیٹے عون اور محمد اپنے والد کا خط لیکر امام حسین کی خدمت میں حاضر ہوئے، خط میں اس کی گنجی تھی کہ آپ کو فوج نہ جانے کا ارادہ ملتوی کر دیجئے مگر واپس مکہ تشریف لے آئیں اس خط کو عبداللہ بن جعفر عربی سعیدہ حاکم مکہ کے پاس گئے اور امام حسین کیلئے امان حاصل کی اور یہ امان خط کے ساتھ عرب بن سعید کے بھائی کے بدست امام حسین کے پاس رواد کیا، خود عبداللہ بھی آئے ہیں آپ سے ملاقات کی اور آپ کے سامنے امان نام پڑھا۔

امام حسین نے مکہ واپس لوٹنے سے انکار کر دیا اور فرمایا: میں نے رسول کو خواب میں دیکھا ہے مجھے حکم دیا ہے کہ میں اپنے سفر کو جاری رکھوں اور میں اس کام کو ضرور انجام دوں گا جس کا مجھے رسول دیا ہے، امام حسین نے عرب بن سعید کے خط کا جواب لکھا، عبداللہ بن جعفر، یحییٰ بن سعید کے ساتھ گئے جبکہ عبداللہ کے دو بیٹے امام بن مکہ کے پاس ہی رہے انہوں نے اپنے بیٹوں سے تاکید کی تھی کہ ہر جگہ امام حسین کی خدمت کو مدد دے اور واپس چلے گئے۔

تاریخ الخلفاء ج ۱ ص ۱۲۱ تاریخ الامم ج ۱ ص ۱۲۱، الصحاح ج ۱ ص ۱۲۱، حقیق کا اطلاق مختلف ہے لیکن اس وادی عقیق سے مراد وہاں امام حسین نے قیام کیا تھا، وہ منزل ہے جسے وادی مبارک کہتے ہیں مکہ سے نزدیک ہے اس کا ذکر ہے جو کہ اہل عراق کا مقصد ہے، صحیح البدیع ج ۱ ص ۱۲۱، البصائر ج ۱ ص ۱۲۱، الامام حسین و اصحابہ ص ۱۲۱،

التعرق

۱۱ ہجری ۶۰ کے دن امام حسین وادی عقیق میں پہنچے اور شہر بن غالب جو کہ قبیلہ اسد سے تھا اس کی اور اہل کوفہ کے حالات معلوم کئے اس نے جواب دیا: ان کے دل آپ کے ساتھ اور لواریں بنی امیہ کے ساتھ ہیں۔

امام حسین نے فرمایا: تم سچ کہتے ہو یہ ریشی نے راوی سے یہ حدیث نقل کی ہے: میں حج بنجایا میں سے جدا ہو گیا اور تنہا اپنا سفر جاری رکھا، اتنا راہ میں مجھے کچھ خیر نظر آئے، میں ان کی طاعت دیکھ کر ہنسی بکھری: یہ کس کے خیر ہیں، انہوں نے بتایا حسین کے مرنے کا: علی و فاطمہ زہرا کے بیٹے کے؟ کہا ہاں، میں نے کہا آپ کا۔

امام حسین کے تاج میں ہے یہاں ذراعت و کعبہ ہولہ ہے رسول یہاں سے صرف ایک سیر کے فاصلے پر ہیں ص ۱۲۱، البصائر ج ۱ ص ۱۲۱، الامام حسین و اصحابہ ص ۱۲۱،

خیمہ کون سا ہے، اہل قافلہ نے اشارہ سے بتایا، اور آپ کے خیمہ کی طرف روانہ ہو گیا میں نے کہا حسینؑ اور خیر سے ٹیک لگائے بیٹھے ہیں لوگو کوئی نوشت پڑھ رہے ہیں یا میں نے سلام کیا آپ نے عرض کی، فرزند رسول! میرے ماں باپ آپ پر قربان اس خشک سرزمین پر اتارنے کا بارگاہ فرمایا: میں بنی امیہ کے خوف سے یہاں اترا ہوں اور یہ اہل کوفہ کے خط میں لکھیں ہیں کہ ہم ہیں وہی مجھے قتل کریں گے اور اس جرم کے مرتکب ہو جانے کے بعد وہ خدا کے عذاب سے ہر حرام و برا فعل انجام دیں گے اس وقت خدا ایک شخص کو ان کی طرف بھیجے گا جو انہیں تہنیت اور اس حد تک کچل دے گا کہ وہ قوم لوط سے بھی زیادہ ذلیل ہو جائیں گے۔

② حاجر بن بطن الرمیہؓ

۱۵ رزی انجو بروز منگل، امام حسینؑ حاجر بن بطن الرمیہؓ سے اس منزل سے امام مہر صیداویؒ نے بعض نے کہا ہے کہ اپنے رضاعی بھائی عبداللہ بن عقیلؒ کو ان کے پاس بھیجا آپ نے اس کو قتل کیا شہادت کی خبر نہیں ملی تھی، جو خط آپ نے اہل کوفہ کو تحریر کیا اس کا مضمون یہ تھا: بسم اللہ الرحمن الرحیم یہ خط حسین بن علیؑ کی طرف سے مومنین اور مسلمین کے نام ہے۔

خدا نے واجد کی حمد کے بعد واضح ہو کہ میرے پاس مسلم بن عقیل کا خط ہے جو

۱۔ رقم لکھ سے ملا تو ہم سب ہے، ۲۔ البلیہ والہ تاریخ ۸ ص ۱۸۳، بحار الانوار ۴۴ ص ۳۶۸،

۳۔ بطن الرمیہ وہ منزل ہے جہاں کوفہ اور مدینہ کے لوگ ایک ساتھ پہنچتے ہیں اور وہاں سے مدینہ کی طرف روانہ ہوا، ۴۔ ص ۴۳ ج ۲، الامام حسینؑ و اصحابہ ص ۱۶۱،

ہم ہمارے اہل حل و عقد اور با حقیقت لوگوں نے ہماری مدد کرنے اور ہمارا حق دلوانے کا وعدہ کیا ہے بارگاہ خلا میں دعا ہے کہ ہمارے اوپر احسان کرے اور ہمیں اجر عظیم دے، ۸ رزی انجو بروز منگل، ترویج کے دن، مکہ سے روانہ ہو چکا ہوں، میرا قاصد پہنچے ہی اہل انصافیت تیز کر دینا اور ضروری چیزیں فراہم کرنا انشاء اللہ میں جلد ہی پہنچ جاؤں گا والسلام علیکم ورحمۃ اللہ

صیداوی کا ماجرا

امام حسینؑ نے خط قیس بن مہر صیداویؒ ایسے دیر کے سپرد کیا تھا انہوں نے نام لیا اور لکھا، ابن زیاد کے مقرر کردہ، ان لوگوں نے جو عراق میں داخل ہونے والوں سے نکلنے والے تھے انہیں تفتیش کے لئے روکا، قیس نے اس لئے خط چاک کر دیا تاکہ اس کے مضمون

۱۔ مکس، پولیس والے قیس بن مہر صیداویؒ کے پرزوں کو عید اللہ بنا زیادہ کے پاس لے گئے،

۲۔ انہوں نے ان سے پوچھا تم کون ہو؟

۳۔ جواب دیا: میں امیر المومنین حسین بن علیؑ کے شیعوں میں سے ہوں، عبداللہ نے کہا:

۴۔ اہل ہمارے پاس تھا تم نے سے کیوں چاک کیا؟

۵۔ جواب دیا: تاکہ تم اس کے مضمون سے آگاہ نہ ہو سکو،

۶۔ انہوں نے کہا: خط کس نے بھیجا تھا اور کس کے پاس لے جا رہے تھے؟

۷۔ ۸ ص ۱۸۱، ۸۔ قیس بن مہر بن خالد شریف، دبیر اور اہل بیتؑ کے غرض شیعوں میں سے ایک تھے، بعض

۹۔ ان لوگوں نے کہ امام حسینؑ نے قیس بن مہر کو کس جگہ سے کوفہ کے لئے روانہ کیا تھا زاد تواریخ میں یہ ملتا ہے کہ:

۱۰۔ ہرگز کوفہ بھیجا تھا لیکن بحار الانوار ۴۴ ص ۳۸۱، کی عبارت سے ایسا محسوس ہوتا ہے کہ امام حسینؑ نے کوفہ

۱۱۔ لکھا تھا،

عبداللہؑ نے یہ سوچ کر کہ وہ موت سے ڈر گئے قیس کی بات مان لی اور حکم دیا کہ شہر والے مسجد میں جمع ہو جائیں، تاکہ امام حسینؑ کے قاصد کی زبان بنی امیہ کی مدح میں، قیس منبر پر گئے خدا، اور محمدؐ و علیؑ اور ان کی اولاد پر درود و سلام بھیجنے کے بعد عبداللہؑ اس کے باپ اور محمدؐ ہر چھوٹے بڑے چھکنڈوں پر لعنت بھیج کر باخبر بن گئے: گو کہ امام حسین بن علیؑ علیہ السلام سب سے بالا ہیں وہ فاطمہ بنت رسولؐ کے بیٹے ہیں، انہوں نے مجھے قاصد بنا کر تہاری طرف بھیجا ہے میں ایک منزل سے ان سے جدا ہو کر تہارے پاس آیا ہوں تاکہ ان کا پیغام تم تک پہنچا دوں ان کی کہو!

ابن زیاد کے جو مامور افراد یہ ماجرا دیکھ رہے تھے انہوں نے عبداللہؑ کو صدمہ و تحال سے اس نے مکمل طور پر اپنا منصوبہ ناکام ہوا دیکھا تو وہ غصہ میں آپ سے باہر ہو گیا اور چلا گیا کی چھت پر لے جا کر نیچے گرا دو، اس کے سپاہیوں نے ایسا ہی کیا اور انہیں شہید کر کے ان کی امام حسین علیہ السلام کو جب قیس کی شہادت کی خبر ملی تو بہت محزون ہوئے اور فرمایا: اے اللہ ہمارے اور ہمارے شیعوں کے لئے اپنے نزدیک اعلیٰ مقام قرار دے ہیں اور کو اپنے جوار رحمت میں جگہ رحمت فرما، بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے مل

قیس نے کہا: امام حسینؑ نے کوفہ والوں میں سے ایک جماعت کے نام لکھا تھا میں ان کے جاننا، عبداللہؑ غصہ میں آپ سے باہر ہو گیا اور چلا آیا: خدا کی قسم میں تمہیں اس وقت تک گاجب تک کہ تم ان لوگوں کے نام نہیں بتاؤ گے جن کے نام حسینؑ نے خط لکھا تھا یا منبر پر جا کر حسینؑ اور ان کے بھائی پر سب و شتم کرو، تمہاری رہائی کا بس یہی ایک راستہ ہے ورنہ تیرے شیخ کو قیس نے جواب دیا: میں اس جماعت کو نہیں پہچانتا ہاں میں تمہاری دوسری بات ہوں،

عبداللہؑ نے یہ سوچ کر کہ وہ موت سے ڈر گئے قیس کی بات مان لی اور حکم دیا کہ شہر والے مسجد میں جمع ہو جائیں، تاکہ امام حسینؑ کے قاصد کی زبان بنی امیہ کی مدح میں، قیس منبر پر گئے خدا، اور محمدؐ و علیؑ اور ان کی اولاد پر درود و سلام بھیجنے کے بعد عبداللہؑ اس کے باپ اور محمدؐ ہر چھوٹے بڑے چھکنڈوں پر لعنت بھیج کر باخبر بن گئے: گو کہ امام حسین بن علیؑ علیہ السلام سب سے بالا ہیں وہ فاطمہ بنت رسولؐ کے بیٹے ہیں، انہوں نے مجھے قاصد بنا کر تہاری طرف بھیجا ہے میں ایک منزل سے ان سے جدا ہو کر تہارے پاس آیا ہوں تاکہ ان کا پیغام تم تک پہنچا دوں ان کی کہو!

ابن زیاد کے جو مامور افراد یہ ماجرا دیکھ رہے تھے انہوں نے عبداللہؑ کو صدمہ و تحال سے اس نے مکمل طور پر اپنا منصوبہ ناکام ہوا دیکھا تو وہ غصہ میں آپ سے باہر ہو گیا اور چلا گیا کی چھت پر لے جا کر نیچے گرا دو، اس کے سپاہیوں نے ایسا ہی کیا اور انہیں شہید کر کے ان کی امام حسین علیہ السلام کو جب قیس کی شہادت کی خبر ملی تو بہت محزون ہوئے اور فرمایا: اے اللہ ہمارے اور ہمارے شیعوں کے لئے اپنے نزدیک اعلیٰ مقام قرار دے ہیں اور کو اپنے جوار رحمت میں جگہ رحمت فرما، بے شک تو ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے مل

14A

وہ کہتا تھا: رحمک اللہ! خدائے مہربان! میں نے اپنے آپ کو تو اس قسم کی خدمت میں مصروف کر دیا ہے کہ میں اس کی طرف سے اس کی خدمت میں نہ جا سکوں۔

164

۱۰ الامام حسینؑ و اصحابہ ج اص ۳۴ . بعض نے اس شخص کو کبیر بن شعبہ بیان کیا ہے ، الامام حسینؑ و اصحابہ

بعض مورخین نے لکھا ہے کہ جب امام حسینؑ کو مسلم بن عقیل کی شہادت کی خبر ملی تو جو لوگ منصب و مقام کی طمع میں آپ کے ساتھ آگئے تھے وہ آپ سے جدا ہو گئے صرف اہلبیت آپ کے ساتھ رہ گئے۔

بعض نے یہ تحریر کیا ہے کہ امام حسینؑ نے مسلم بن عقیل کی شہادت کی خبر سنا کر فرمایا: خدا کر وہ خدا کی رحمت بہشت اور رضوان کی طرف سدھارے انہوں نے بہترین طریقہ سے اپنا فریضہ جاری و جاری باقی ہے۔

تعلیق کی منزل پر ایک شخص امام حسینؑ کی خدمت میں پہنچا اور آیا: ﴿یوم نذلکم بامامہم﴾۔ اس کے سلسلے میں سوال کیا امام حسینؑ نے فرمایا: یعنی وہ امام جو سیدھے راستے کی ہدایت کرتا ہے اور لوگ بھی اس دعوت کو قبول کرتے ہیں اور جو پیشوا لوگوں کو گمراہی بلاتا ہے اور لوگ بھی اس کی دعوت قبول کرتے ہیں پہلا گروہ جنت میں اور دوسرا جہنم میں جاتا ہے فرماتا ہے: ﴿فَرِیقٌ فِی الْبُشْرَىٰ وَفَرِیقٌ فِی السَّعِیرِ﴾۔ ﴿مشورۃ﴾

اسی جگہ ایک کوئی امام حسینؑ کے پاس آیا: آپ نے اس سے فرمایا: خدا کی قسم اگر وہ ملاقات ہوتی تو میں اپنے گھر میں جبریلؑ کے آکر دکھاتا، اے کوئی سب نے ہم سے علم خدا ندان کے علم سے سیراب ہوئے ہیں کیا وہ جانتے ہیں اور ہم نہیں جانتے یہ ناممکن ہے۔

تعلیق والوں میں سے بعض نام کے ایک شخص نے بیان کیا ہے کہ امام حسینؑ نے تعلیق میں گزرے تھے اس وقت میں کن تھا میرے بھائی نے امام حسینؑ سے عرض کیا اے فرزند رسول! بھائی لاؤ اور کچھ ہم سے ۱۲، ۱۳، ۱۴، ۱۵، ۱۶، ۱۷، ۱۸، ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵، ۲۶، ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳

نصرانی مسلمان ہو گیا

③ زبانه

۱۸۳۲ء

۱۔ الامام حسینؑ واصحابہ من ہمدان، ۲۔ الامام حسینؑ واصحابہ من ہمدان،

یہ میں کچھ ترمیم کے ساتھ، ابصار العین ص ۵۲

عقبات

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

۱۵) القاع

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

امام حسینؑ نے فرمایا کہ وہ ہے،

اس شخص نے امام حسینؑ سے کہا: میں آپ کو خدائی قسم دیکر کہتا ہوں کہ آپ وہ ہیں جو آپ کو تلواروں اور نیزوں کا مقابلہ کرنا پڑے گا جن لوگوں نے آپ کے پاس خط و قلم وہ اس جنگ کا تاوان اپنے دوستوں اور آپ کے لئے ابتدائی امور کو انجام دیں تو آپ ان کے کہ یہ ارادہ پسندیدہ ہے اس کے علاوہ کوئی اور اس کے پاس جانا میرے نقطہ نظر سے صحیح نہیں ہے۔ امام حسینؑ نے فرمایا: خدا کے بندے جو بات تم نے بیان کی ہے وہ مجھ پر پوشیدہ بات صحیح ہے لیکن خدا نے جو مقدر کر دیا ہے اسے کوئی نہیں بدل سکتا ہے۔

عقبات

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

۱۷۸ / ذی الحجۃ، جمعات کا دن تھا کہ امام حسینؑ منزل انعام پر پہنچے، طبری نے نقل کیا ہے کہ ان کے کسی عزیز کا نام عربی لوگوں نے یہ ہے۔ امام حسینؑ سے سوال کیا کہ وہ ہے؟

۱۸۰ کے بعد منزل واقعہ پر پہنچے تھے لیکن چونکہ منزل شراف پر زیادہ سہولتیں فراہم تھیں خصوصاً
تھی لہذا امام حسینؑ نے منزل واقعہ پر جسے واقعہ اثنین بھی کہتے ہیں، توقف نہ کیا بلکہ منزل شراف
ابوحنیفہ نے عبداللہ بن سلیم اور ایک آدمی نے قبیلہ بنی اسد سے نقل کیا ہے کہ: امام حسینؑ

پراترے اور کھڑے وقت چائوں کو حکم دیا کہ یہاں سے زیادہ پانی بھرو پتا پھر اس منزل سے روانہ ہو

صبح سے غروب آفتاب تک چلتے ہی رہے تا اس کے بعد مثنیہ تک جو کہ حجاز کی آخری منزل

قادسیہ تک جو کہ عراق کی ابتدائی منزل ہے سفر جاری رکھا تا

عبداللہ بن زیاد کو جب یہ خبر ملی کہ امام حسینؑ کو فوج کی طرف آ رہے ہیں تو اس نے

مردوں کو پوس کا افسر تھام قادسیہ بھیجا اس نے قادسیہ سے کچھ فاصلہ سے اور دھنخانہ و
طلع تک اور واقعہ سے شام و عصر کے راستوں پر پولیس لگا دی تاکہ راستوں پر سخت نظر رکھ کر

کئے جانے والے سے باخبر ہو سکیں،

امام حسینؑ عراق کی سمت بڑھ رہے تھے کہ راستہ میں عرب کے ایک گروہ سے ملاقات

سے حالات معلوم کئے انہوں نے کہا: ہم دشمن ہیں داخل ہو سکتے ہیں اور نہ نکل سکتے ہیں،

امام حسینؑ اسی راستے پر گامزن رہے کہتے ہیں کہ حصین بن نمیر کو چار ہزار فوج کے ساتھ

میں تیشات کیا گیا تھا انہیں میں حرمین بزرگ راجی بھی تھے جو خود بھی ہزار سپاہیوں کے سپہ سالار

دوسری روایت میں آیا ہے کہ حرمین بزرگ راجی ایک ہزار سواروں کے ساتھ الگ کو

عہد الامام حسینؑ کو اصحاب ۱۸۱

منزل شراف سے بعد والی منزل قرعہ تک صرف سات میل کا فاصلہ ہے تو پھر امام حسینؑ کے اس حکم کی یاد

زیادہ سے زیادہ پانی بھرو، بعد میں رونا ہونے والے واقعات سے بخوبی واضح ہوتا ہے کہ امام حسینؑ نے

سواروں کو سیراب کرنے کی غرض سے پانی بھرنے کا حکم دیا، تا اس منزل سے شراف تک سات فرسخ کا فاصلہ

ہے قادسیہ کے کوہک شفق کی کہ راستے سے چندہ فرسخ کا فاصلہ ہے،

۱۸۱ طرف نے ان دونوں اسدی آدمیوں سے روایت کی ہے کہ راستے کے درمیان ٹلر کے وقت
امام حسینؑ کی کبیر کی آواز بلند کی امام حسینؑ نے بھی کبیر کی اور فرمایا: تم نے کیوں کبیر کی ہے؟
امام حسینؑ نے کہا: مجھے خرے کے درخت نظر آ رہے ہیں،

امام حسینؑ اسدی کے ان آدمیوں نے کہا: یہاں خرے کے درخت نہیں ہیں،

امام حسینؑ ان سے فرمایا: تمہیں کیا نظر آ رہا ہے انہوں نے کہا:

دشمن کے لشکر کا قراول دستہ ہے اور یہ ان کے گھوڑوں کی کھوٹیاں ہیں،

امام حسینؑ نے فرمایا: میں بھی یہی دیکھ رہا ہوں، اس کے بعد فرمایا:

یہاں کوئی پناہ گاہ ہے کہ ہم وہاں چلے جائیں ہم پناہ گاہ پہنچیں اور دشمن سامنے نہ آ کر ہم ایک ہی طرف

نکل سکیں،

امام حسینؑ نے عرض کیا جی ہاں بائیں طرف ایک منزل ہے جسے دو حصہ کہتے ہیں چنانچہ امام حسینؑ

بائیں طرف دو حصہ کی طرف روانہ ہو گئے، دشمن کی فوج بھی اسی منزل کی طرف بڑھ رہی تھی لیکن

امام حسینؑ کے ساتھی ان سے پہلے اس منزل پر پہنچ گئے،

دو حصہ

۱۸۱ ہی فجر بروز اتوار امام حسینؑ اس منزل پر پہنچے اور یہاں خیمہ بپا کرنے کا حکم دیا ٹلر کے وقت

امام حسینؑ کے ساتھ حرمین بزرگ راجی بھی اس منزل پر پہنچ گئے اور امام حسینؑ کے سامنے پڑاؤ ڈالا تا

امام حسینؑ نے اپنے اصحاب سے فرمایا: انہیں دوران کے گھوڑوں کو بھی پانی پلاؤ آپ کے اصحاب نے حکم

امام حسینؑ کے لشکر کو مع ان کے گھوڑوں کے سیراب کیا تا،

امام حسینؑ کے یہاں منزل بڑھ رہی تھی، عبداللہ بن نمیر و اس ۱۸۱ اسکا وجہ بھی کہ امام حسینؑ سے قبل منزل شراف میں

امام حسینؑ کا حکم دیا تھا

علی بن ملکان کہتے ہیں: میں بھی حرمین پرید ریاحی کے ساتھ تھا دیر سے ان کے پاس پہنچا تھا۔ حسینؑ نے مجھے اور میرے گھوڑے کو پیاس سے نڈھال دیکھا تو فرمایا: «ایک اراو تیرے راویں ہمارے میں مشک کو کپتے ہیں میں آپ کی بات کو نہ سمجھ سکا، آپ نے دوبارہ فرمایا: اونٹ کو بٹھا ڈال میں کو زمین پر بٹھا دیا جس پر پانی کی مشکیں لڑی ہوئی تھیں، امام حسینؑ نے فرمایا: نوپائی پیو، لیکن پیاس کی شدت سے میرے ہاتھ سے مشک کا دانہ گرا اور میں پانی نہ پی سکا، آپ نے فرمایا: مشک کا دانہ صبح اور سہیٹ کر کڑو لیکن مجھ سے یہ بھی امام حسینؑ میرے پاس آئے اور مشک کا دانہ جمع کیا یہاں تک کہ میں اور میرے گھوڑا سیراب ہو، ظہر کا وقت ہو گیا امام حسینؑ نے حجاج بن مسروق صحفی سے فرمایا: اذان دو! انہوں نے غازی قائم کرنے کے لیے کبک بھرا تین زبیر تن کئے اور دوش پر ردائے ہونے خیمہ سے برآمد ہوئے خدا کی حمد و ثناء کے کہ فرمایا:

اے گو! میں خدا کے سامنے معذور ہوں میں خود اپنی رائے سے تمہارے پاس نہیں بلکہ تم نے مجھے خط لکھا بلایا ہے تمہارے قاصد میرے پاس آئے اور مجھ سے یہ دروازے میں تمہارے پاس آؤں تم نے کہا کہ چار کوئی امام نہیں ہے ہو سکتا ہے خدا آپ کے اعلان کردے اب اگر تم اپنے جہد و جان بچاؤ ہو تو میں تمہارے شہر چلتا ہوں اور سے واپس لوٹ جاتا ہوں،

روایت سے امام حسینؑ کی مراد وہ اونٹ تھا جس پر پانی کی مشک لڑی ہوئی تھی، جہازی اونٹ کو شکر کہتے ہیں اور امام حسینؑ کو زبیر کہتے ہیں اس نے وہ مانگ کر دے دیکھا، میرا خازنی نے کچھ اٹھا لیا اس نے غازی کے ساتھ جہاز سے ان سے معلوم کیا کہ کون سیو؟ انہوں نے کہا: ہم سب سیراب ہوئے دوست ہیں، آپ نے فرمایا: تمہارا سپرہا رکھو؟ انہوں نے کہا: فرمایا: حرم سے پہنچو اور کے لئے آئے ہیں یا جنگ کے لئے اس نے کہا: ہم آپ کا رشتہ دیکھنے کے لئے آئے ہیں امام حسینؑ نے فرمایا: لا حول ولا قوۃ الا باللہ متل بہترین خوارزمی ج میں ہے، یہ امام کے صحابہ تھے کہ جہاں شہادت پائی ہم آئندہ ان کے حالات بیان کریں گے،

۱۸۲

علی بن ملکان کہتے ہیں: میں بھی حرمین پرید ریاحی کے ساتھ تھا دیر سے ان کے پاس پہنچا تھا۔ حسینؑ نے مجھے اور میرے گھوڑے کو پیاس سے نڈھال دیکھا تو فرمایا: «ایک اراو تیرے راویں ہمارے میں مشک کو کپتے ہیں میں آپ کی بات کو نہ سمجھ سکا، آپ نے دوبارہ فرمایا: اونٹ کو بٹھا ڈال میں کو زمین پر بٹھا دیا جس پر پانی کی مشکیں لڑی ہوئی تھیں، امام حسینؑ نے فرمایا: نوپائی پیو، لیکن پیاس کی شدت سے میرے ہاتھ سے مشک کا دانہ گرا اور میں پانی نہ پی سکا، آپ نے فرمایا: مشک کا دانہ صبح اور سہیٹ کر کڑو لیکن مجھ سے یہ بھی امام حسینؑ میرے پاس آئے اور مشک کا دانہ جمع کیا یہاں تک کہ میں اور میرے گھوڑا سیراب ہو، ظہر کا وقت ہو گیا امام حسینؑ نے حجاج بن مسروق صحفی سے فرمایا: اذان دو! انہوں نے غازی قائم کرنے کے لیے کبک بھرا تین زبیر تن کئے اور دوش پر ردائے ہونے خیمہ سے برآمد ہوئے خدا کی حمد و ثناء کے کہ فرمایا:

اے گو! میں خدا کے سامنے معذور ہوں میں خود اپنی رائے سے تمہارے پاس نہیں بلکہ تم نے مجھے خط لکھا بلایا ہے تمہارے قاصد میرے پاس آئے اور مجھ سے یہ دروازے میں تمہارے پاس آؤں تم نے کہا کہ چار کوئی امام نہیں ہے ہو سکتا ہے خدا آپ کے اعلان کردے اب اگر تم اپنے جہد و جان بچاؤ ہو تو میں تمہارے شہر چلتا ہوں اور سے واپس لوٹ جاتا ہوں،

روایت سے امام حسینؑ کی مراد وہ اونٹ تھا جس پر پانی کی مشک لڑی ہوئی تھی، جہازی اونٹ کو شکر کہتے ہیں اور امام حسینؑ کو زبیر کہتے ہیں اس نے وہ مانگ کر دے دیکھا، میرا خازنی نے کچھ اٹھا لیا اس نے غازی کے ساتھ جہاز سے ان سے معلوم کیا کہ کون سیو؟ انہوں نے کہا: ہم سب سیراب ہوئے دوست ہیں، آپ نے فرمایا: تمہارا سپرہا رکھو؟ انہوں نے کہا: فرمایا: حرم سے پہنچو اور کے لئے آئے ہیں یا جنگ کے لئے اس نے کہا: ہم آپ کا رشتہ دیکھنے کے لئے آئے ہیں امام حسینؑ نے فرمایا: لا حول ولا قوۃ الا باللہ متل بہترین خوارزمی ج میں ہے، یہ امام کے صحابہ تھے کہ جہاں شہادت پائی ہم آئندہ ان کے حالات بیان کریں گے،

۱۸۲

علی بن ملکان کہتے ہیں: میں بھی حرمین پرید ریاحی کے ساتھ تھا دیر سے ان کے پاس پہنچا تھا۔ حسینؑ نے مجھے اور میرے گھوڑے کو پیاس سے نڈھال دیکھا تو فرمایا: «ایک اراو تیرے راویں ہمارے میں مشک کو کپتے ہیں میں آپ کی بات کو نہ سمجھ سکا، آپ نے دوبارہ فرمایا: اونٹ کو بٹھا ڈال میں کو زمین پر بٹھا دیا جس پر پانی کی مشکیں لڑی ہوئی تھیں، امام حسینؑ نے فرمایا: نوپائی پیو، لیکن پیاس کی شدت سے میرے ہاتھ سے مشک کا دانہ گرا اور میں پانی نہ پی سکا، آپ نے فرمایا: مشک کا دانہ صبح اور سہیٹ کر کڑو لیکن مجھ سے یہ بھی امام حسینؑ میرے پاس آئے اور مشک کا دانہ جمع کیا یہاں تک کہ میں اور میرے گھوڑا سیراب ہو، ظہر کا وقت ہو گیا امام حسینؑ نے حجاج بن مسروق صحفی سے فرمایا: اذان دو! انہوں نے غازی قائم کرنے کے لیے کبک بھرا تین زبیر تن کئے اور دوش پر ردائے ہونے خیمہ سے برآمد ہوئے خدا کی حمد و ثناء کے کہ فرمایا:

اے گو! میں خدا کے سامنے معذور ہوں میں خود اپنی رائے سے تمہارے پاس نہیں بلکہ تم نے مجھے خط لکھا بلایا ہے تمہارے قاصد میرے پاس آئے اور مجھ سے یہ دروازے میں تمہارے پاس آؤں تم نے کہا کہ چار کوئی امام نہیں ہے ہو سکتا ہے خدا آپ کے اعلان کردے اب اگر تم اپنے جہد و جان بچاؤ ہو تو میں تمہارے شہر چلتا ہوں اور سے واپس لوٹ جاتا ہوں،

کی قسم میں آپ کی ماں کا نام استعمال کر کے ساتھ ہی دے سکتا ہوں۔

امام حسینؑ نے پھر فرمایا: کیا چاہتے ہو، حرنے کہا: میں آپ کو عیدالضحیٰ میں زیادہ سے زیادہ چاہتا ہوں، آپ نے فرمایا: خدا کی قسم میں تمہارے ساتھ نہیں جاؤں گا حرنے کہا: خدا کی قسم آپ سے کہیں نہیں جانے دیں گے، امام حسینؑ نے بھی تین مرتبہ یہی بات کہی اور حرنے بھی تین مرتبہ یہی جملہ دہرایا حرنے کہا: مجھے آپ سے جنگ کرنے کا حکم نہیں دیا گیا لیکن یہ حکم دیا گیا ہے کہ میں آپ سے جدا نہ ہوں جب تک کہ آپ کو کو فونے جاؤں اب اگر آپ کو فونے نہیں جانا چاہتے تو میں آپ کیجئے کہ کو فونے جانا ہوا اور مدینہ تک میں عیدالضحیٰ میں زیادہ کو خط لکھ سکوں اور اگر آپ چاہیں تو میں آپ سے جنگ کر کے صلح و سلامتی کے ساتھ تم ہو جانے میرے نزدیک یا اس سے تبصرہ کریں آپ سے امام حسینؑ غریب و فادیم کی باتیں جانب دلی راہ پر گامزن تھے جبکہ غریب و فادیم میل تھا حرمی آپ کے ساتھ ساتھ چل رہے تھے۔

عزیز بن ابی العیاض کہتے ہیں: امام حسینؑ دو قسم پر کھڑے ہوئے خلائی حمد و ثناء اور دوسرے بھیجنے کے بعد فرمایا:

اِنَّهُ قَدْ نَزَلَ مِنَ الْاَمْرِ مَا قَدْ تَرَوْنَ وَاِنَّ الدُّنْيَا قَدْ تَغَيَّرَتْ وَتَسْتَحْكِرُ
مَغْرُوقُهَا وَاسْتَحْمَرَتْ جَدًّا فَلَمْ يَبْقَ مِنْهَا اِلَّا صِبَاةٌ كَصِبَاةِ الْاِنَامِ
عَيْنُهَا كَالْمَرْعَى الْوَيْلِ، اَلَا تَرَوْنَ اَنَّ الْحَقَّ لَا يُغْلِبُ بِهِ وَاَنَّ الْبَاطِلَ لَا
عَنْهُ، لِيَرْغَبَ الْمُؤْمِنُ فِي لِقَاءِ اللَّهِ مُجَقًّا فَلْيَبِ لَا اَرَى الْمَوْتَ اِلَّا
الْحَيَاةَ مَعَ الظَّالِمِينَ اِلَّا بَرَمًا^(۳)

۱۔ حرمین زید امام حسینؑ کے چاہ میں بے ادبی کر سکتے تھے اور امانت کر سکتے تھے لیکن انہوں نے اب کا اس دھم دھماکا
منسوب نہ نہیں امانت سے باز رکھا شاید کسی پاس داربک وجہ سے انہیں دایت و بخت ملے، متعلق حسین خاوری ص ۳۳
۲۔ تاریخ طبری ص ۱۰۷، ۳۔ تاریخ طبری ص ۵۳، ۴۔

کہہ میں آیا وہ تم اپنی آنکھوں سے دیکھ رہے ہو دنیا بدل چکی ہے، نیکی سے پشت پھیر لی
کہانی اچھائی باقی نہیں بچی مگر اس کی تلچھٹ جیسا کہ طرف میں تھوڑا سا پانی باقی چھا ہے جسے
پھینک دیا جاتا ہے، زندگی ناگوار چراگاہ کی مانند نیست ہے کیا تم نہیں دیکھتے کہ لوگ حق
پر لڑیں کرتے اور باطل سے پرہیز نہیں کرتے میں ایسے میں محو کو خول سے ملاقات کا مشتاق ہونا
کیا پیٹے میں موت کو سعادت اور ظالموں کے ساتھ زندہ رہنے کو ننگ و عار سمجھتا ہوں،
اسی طرح خطبہ کے بعد زہیر بن قین کھڑے ہوئے اور انھار کی طرف رخ کر کے کہا: تم کچھ بیان کر گئے
کہ میں شوق طور پر سب نے کہا: آپ ہی بیان کیجئے،

اس نے خدا کی حمد و ثناء کے بعد امام حسینؑ سے عرض کیا: ہم نے آپ کا فیض و بزرگوار سنا:
اور رسول اللہؐ کی قسم اگر ہم اس دنیا میں بیشتر زندہ رہ سکتے اور دنیا و مافیہا ہمارے اختیار میں ہوتا
کہ اگر آپ میں رہ کر شمشیر زنی والی راہ کو اختیار کرتے۔

عزیز بن ابی العیاض کہتے ہیں: امام حسینؑ کے ساتھ ساتھ چل رہے تھے جہاں بھی موقع ملتا حرمین
کا لے لے اپنی جان کی حفاظت کیجئے مجھے یقین ہے اگر آپ جنگ کریں گے تو قتل ہو جائیں گے
آپ نے فرمایا: تم مجھے موت سے ڈرتے ہو؟ اگر وہ مجھے قتل کر دیں گے تو کیا تم موت سے بچ
سکتے ہو؟ وہ بات کہتا ہوں جو کہ قبیلہ اوس کے ایک آدمی نے رسول اللہؐ کی مدد کرنے وقت
احوال سے ہی تھی،

اِذَا مَا نَوَىٰ حَقًّا وَجَاهَدَ مُسْلِمًا
وَمَا بِالْمَوْتِ عَارٌ عَلَى الْفَتَى
وَأَنَّ الرِّجَالَ الصَّالِحِينَ يَنْقِيهِ
وَفَارَقَ مَسْئُورًا وَخَالَفَ مُجْرِمًا
كَفَىٰ بِكَ ذَلَالًا أَنْ تَعِيشَ وَتُرْعَمَا^(۴)
لَا عِشْتَ لَمْ أَنْدَمْ وَإِنْ مِتَّ لَمْ أَلَمْ

۱۔ تاریخ طبری ص ۹۷، ۲۔ میں جانتا ہوں اور موت جوان کے لئے ننگ و عار نہیں ہے لیکن جب اس کی نیت حق ہو اور ظالم
اور اس کی مدد کرے اور حرمین میں تو لوگوں کا غم مٹائے میں نہ نا بکھڑا ہو کہ وجہ سے شاد ہوئے ہیں پھر اگر میں زندہ رہا تو
۳۔ تاریخ طبری ص ۱۰۷، ۴۔ تاریخ طبری ص ۵۳، ۵۔

جب حزنِ امام حسینؑ کی زبان سے یہ اشعار سنے تو آپ سے فاصلہ اختیار کیا اور اپنے امام حسینؑ کے راستے سے الگ راستہ اختیار کیا۔

بیضہ

اس منزل پر امام حسینؑ نے حزنِ یزید کے راضیوں کو مخاطب کیا اور خدا کی حمد و ثناء کی

أَيُّهَا النَّاسُ! إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: مَنْ رَأَى سُلْطَانًا جَائِرًا مُسْتَجِلًا لِعَهْدِهِ عَهْدَهُ مُخَالِفًا لِسُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ يَفْعَلُ فِي عِبَادِ اللَّهِ بِالْأَثَمِ وَالْعَدْوِ عَلَيْهِ يَفْعَلُ وَلَا قَوْلَ، كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُدْخِلَهُ مَدْخَلَهُ، أَلَا وَإِنْ لَمْ يَمُوتُوا طَاعَةَ الشَّيْطَانِ وَتَرَكُوا طَاعَةَ الرَّحْمَنِ وَأَطْفَرُوا الْفَسَادَ وَفَعَلُوا وَأَسْتَأْذَنُوا بِالْفِيءِ وَأَحَلُّوا حَرَامَ اللَّهِ وَحَزَمُوا حِلَالَهُ وَأَنَا أَحَقُّ بِمُسْأَلَتِكُمْ كُتَيْبُكُمْ وَقَدِمْتُ عَلَى رَسُولِكُمْ بِنَفْسِكُمْ أَنْتُمْ لَا تَسْلِمُونِي وَلَا فَإِنْ أَتَيْتُمْ عَلَى بَنِيكُمْ تُصِيبُوا وَتُشَدِّكُمْ، فَإِنَّا الْحُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ وَابْنَتِ رَسُولِ اللَّهِ تَقْسِي مَعَ أَنْفُسِكُمْ وَأَهْلِي مَعَ أَهْلِيكُمْ وَلَكُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ تَقْلَعُوا وَتَقْضَتْمْ عَهْدَكُمْ وَخَلَعْتُمْ بِنَفْسِي مِنْ أَغْنَاؤِكُمْ فَلَعَمْرِي مَا لَكُمْ لَقَدْ فَعَلْتُمْوهَا بِأَبِي وَأَخِي وَابْنِ عَمِّي مُسْلِمًا، قَالَتُوهُ مِنْ أَهْلِهِمْ أَخْطَأْتُمْ وَتَصِيبُكُمْ ضَيَعْتُمْ وَمَنْ نَكُتْ فَإِنَّمَا يَنْكُتْ عَلَى نَفْسِهِ عَنْكُمْ وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

لوگو! رسولؐ نے فرمایا ہے کہ جو شخص ظالم بادشاہ کو خدا کی حلال کردہ چیزوں اور چیزوں کو حلال قرار دیتے خدا کے عہد کو توڑتے، سنت رسولؐ کی مخالفت کرتے

ہندوں پر ظلم روا رکھتے ہوئے دیکھے اور قول و فعل سے اس کی مخالفت نہ کرے تو اس کا جھگڑا نہیں ہے، بنی امید نے شیطان کے حکم کے تحت خدا کی اطاعت سے روگردانی کر لی ہے فساد پسلا رہے ہیں خدا کی حدود کا کوئی پاس و لحاظ نہیں کرتے بیت المال کو خود سے مخصوص کر لیا ہے خدا کے حلال کو حرام اور حرام کو حلال سمجھ لیا ہے انہیں ان بدکاریوں سے روکنے کا میں خود کو ملحق سمجھتا ہوں۔

تم نے میرے پاس قاصد اور خط بھیجے اور کہہ لیا کہ ہم نے آپ کی بیعت کر لی اور ہم اس انقلاب میں آپ کو تنہا نہیں چھوڑیں گے اب اگر تم اپنے عہد و پیمان پر ثابت وقائم ہو، کوئی بیعت راستہ ہے، تو میں علیؑ کو قاصد کا تخت جگر حسینؑ تمہارے اور میرا خدا ن خان تمہارے خاندان کے ساتھ ہے میں تمہاری پیروی کو قبول کرتا ہوں اگر تم کو اس کی کیا باتیں ہے اور اپنے عہد پر ثابت وقائم نہیں ہو اور اپنے لئے ہوئے عہد کو توڑ رہے ہو، میری بیعت سے چھ رہے ہو تو میرا خدا جان کی یرتم سے بیعت نہیں ہے کیونکہ تم نے میرے والد، میرے بھائی اور میرے چچا زاد بھائی مسلمؑ سے بھی یہی سلوک کیا ہے، چوتھارے فریب میں آئے وہ نا تجربہ کار ہے تم نے اپنے نسب سے پشت پھیر لی اور اپنے فائدہ سے دست کش ہو گئے جو شخص پیمان کی کرتا ہے اسے پیمان کنوں ہی کا نقصان اٹھانا پڑتا ہے خدا نے شعل عنقریب مجھے تم سے بے نیاز کر دے گا والسلام علیکم ورحمہ اللہ وبرکاتہ۔

لوگو! رسولؐ نے فرمایا: اے ابوہریرہؓ! بنی امید نے میری بے حرمتی کی میں نے صبر کیا میرا مال ہلپ

ہم نے صبر کیا میرا مال ہلپ

یہ تاریخ کامل ابن اثیر ج ۸ ص ۸۸، بیضہ و اشعار و عذیب کے درمیان پشیر ہے، مراد ص ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳

اسلام امام بن علیؑ کی انکھوں میں آنکھ جھرا گئے اور آپ نے یہ آیت پڑھی ﴿ قَبِلْنَاهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَمُوتَ ۖ وَمَا يَنْتَقِظُ ۚ وَمَا يَدَّبُّوْا ۚ تَتَذَكَّرُ ۙ ﴾ اور فرمایا: اے اللہ! جنت کو کھرا اور ہمارے اسلام کو خرا کر دے، انہیں اس جہنم میں اپنی رقت کے سایہ میں جگمگہر حست فرما لا

يَا نَاقِي لَا تَذْعُرِي مِن زُجْرِي
 بِسُخْرٍ فِثْيَانٍ وَخَسْبٍ سَفَرِ
 الشَّادَةِ الْبَيْضِ الْوَجْهِ الرَّهْرِ
 الْعَارِيَنِ بِالسُّيُوفِ الْبَثْرِ
 الْمَاجِدِ الْجَدِّ رَحِيبِ الصُّدْرِ
 عَزَّاهُ اللَّهُ بِقَاءِ الدَّهْرِ

بِمَا مَالِكُ النَّفْعِ مَعَا وَالضَّرِّ
 عَلَى الطَّغَاةِ مِنْ بَقَايَا الْكُفْرِ
 أَيْدِ حُسْنِنَا سَيِّدِي بِالنَّصْرِ
 عَلَى اللَّعِينَيْنِ سَبِيلِي صَخْرٍ
 وَابْنِ زِيَادٍ عُمْرُ بْنُ الْغُهْرِ

افریس رسول کا خاندان، مخروم بہاوت والا ہے وہ نورانی چہرہ والے اور درخشان پیشانی والے سرد درمیں دگنوم گولی نیرو

میرا یہاں تک کہ تو با فضیلت جوان مرد کے پاس اترے عظیم فرائض کی بزرگ خدا ہمیں بہترین جزا عطا کرے گا جب تک

اللہ نفع و سلامت رکھے اے اللہ نفع و خیر سے اختیار میں ہے میرے ساتھ امام حسینؑ کو مگر ہوں اور کفر کے پسماندہ لوگوں پر

②١ عذیب الصحنات

امامؑ میں سے ان سے فرمایا: مجھے کوہ کے حالات بتاؤ، جیسے کہ کوہ کے شرفاء کوہ کو
دی گئی ہے اور ان کا طبع کوہ کے پروردگار کی بارگاہ کے دل میں ایمان کے لئے نرم ہو جائیں، چنانچہ
کے شمس میں دیکھو وہ آپ کے ساتھ ہیں لیکن کل آپ کے مقابل میں وہ عمارت کی طرح کھڑے ہیں۔

اس کے بعد امام حسینؑ نے اپنے قاصد قیسؓ بن مسہر صیداؤ کی کے ہاں یہ سوال کیا کہ انہوں
صیداؤ کو حسینؑ بن میرے مگر قرا کر کہ ابن زیاد کے پاس بھیج دیا تھا اس نے قیسؓ
آپ کے والد کو نمبر سے پہچان کیا کہ قیسؓ بن میرے آپ کا پڑا ہوا آپ کے والد پر درود بھیجا اور ابن زیاد

ط عذیب ایک وادی ہے جو بنی تمیم کے طرف منسوب ہے یہ قادسیہ سے چھ کلومیٹر کے فاصلہ پر ہے، مراد الاطلاق ج ۲ ص ۱۱۵

۲۰ الامام حسینؑ و اصحابہ میں ۱۸۵ء

<http://fb.com/ranajabirabbas>

فرمایا: خدا تمہیں ایسی ہی جزائے خیر عطا کرے جیسا کہ ایک باپ اپنے بیٹے کو جو اپنے خیر

بہن کو بھی تو امام حسینؑ گھوڑے سے اتارے اور غار صبح ادا کر کے جلدی سے سوار ہو گئے اور امام حسینؑ
 کو کوئی دوا نہ ہوئے، چرچا ہوتے تھے کہ آپ کو کوئی طرف لے جائے لیکن امام حسینؑ نے شدید طور پر مخالفت
 کی کہ حاجت کے وقت مینو کی سرزمین پر پہنچنے کا نیک دور ایک صلح سوار دکھائی دیا وہ کوئی
 حساب گھوڑے سے لگے گئے اس نے قریب تک حرا و ان کے ساتھیوں کو سلام کیا امام حسینؑ
 کو آپ کی طرف ملتفت نہ ہوا اس کے بعد اس نے حکو ایک خط دیا جو کہ عید اللہ بن زیاد نے لکھا تھا
 تھا: جب میرا خط تمہیں ملے اور میرا قاصد تمہارے پاس پہنچے تو حسینؑ کے سارے راستے
 پر ایسی ہی جگہ تھیں جہاں پانی اور غذا نہ ہو میں نے قاصد سے کہدیا ہے کہ وہ تم سے
 کہے کہ میرے پاس یہ خبر لائے کہ تم نے میرے فرمان کی اطاعت کی ہے، والسلام

امام حسینؑ نے جابر بن عبد اللہ بن سحمان سے نقل کیا ہے کہ جب ہم نینوا پہنچے تو قبیلہ کنذہ کا ایک آدمی
 آیا کہنا کہ میں تمہارا چاہتا ہوں کہ تم میری عید لائے بن زیاد کا خط لایا اس خط لانے والے کو ابواشعثہ کنذی
 کہنا کہ یہ کوئی جانا چاہتا تھا ہے، کہا: تم ملک بن سیر تو نہیں ہو، اس نے کہا: ہاں وہ تو دہی

ابواشعثہ نے کہا: تیری ماں تیرے غم میں بیٹھے کیا لایا ہے؟ اس نے کہا: کیا لایا ہوں اپنے امام
 کو اور اپنی بیعت کا پاس کیا ہے، ابواشعثہ نے کہا: تم اپنے پروردگار کا عصیان کیا ہے
 وہاں اس خبر میں کہ ہے تو تمہاری ہلاکت کا باعث ہے تم نے ذلت و ذورن کو خرید لیا ہے

۱۹۶

۱۹۷

۱۹۸

بھاری مدد کرو گے؟ میں نے عرض کیا: میں بال بچوں دار میں لوگوں کا بہت سا مال ہے
 میں نہیں جانتا کہ نتیجہ کیا ہو گا اور مجھے یہ بھی پسند نہیں ہے کہ لوگوں کی امانتیں برباد ہوں،
 بھائی نے بھی یہی جواب دیا،

امام حسینؑ نے فرمایا: تم یہاں سے چلے جاؤ کیونکہ جو بھی ہماری فریاد سنے گا یا کسی
 ہماری آواز پر لبیک کہے گا اور مدد نہیں کرے گا خدا سے منہ کے لبا، ہمیں ڈال دے گا۔

۴۴) مینو آیا

عقربن سحمان کہتے ہیں: رات کے آخری حصہ میں امام حسینؑ نے حکم دیا کہ قصر بنی مقاتل
 کو کوچ کرو جب ہم وہاں سے روانہ ہوئے اور گھنے بھر کا سفر طے کر لیا تھا امام حسینؑ نے مسواری
 تھوڑی دیر بعد انا اللہ وانا الیہ راجعون والحمد للہ رب العالمین کہتے ہوئے میدان ہوئے اور
 اسی جگہ کی نکل رانی،

علی بن حسینؑ نے والد کو مخاطب کر کے عرض کی: بابا جان! میں آپ پر قربان جاؤں
 حمد کی اور آپ پر مسترجاع پڑھی اس کی کیا وجہ ہے آپ نے فرمایا: مینا! اشد سفر میں مجھے نینوا کی
 خواب دیکھا کہ ایک آدمی گھوڑے پر سوار ہے اور کہہ رہا ہے یہ لوگ موت کی طرف بڑھ رہے ہیں
 طرف بڑھ رہی ہے میں سمجھ گیا کہ یہ ہیں ہماری موت کی خبر لے رہا ہے،

علی ابن حسینؑ نے کہا: بابا جان! خدا آپ سے ہر قسم کی مصیبت کو دور کرے گا
 امام حسینؑ نے فرمایا: قسم اس ذات کی کہ جس کی طرف سب کو لوٹ کے جانا ہے ہم قیام میں علی بن
 اگر ہم حق پر ہیں تو موت کی پروا نہیں ہے،

۱۹۹

۲۰۰

۲۰۱

۲۰۲

تہارا امام بیت برا امام ہے خدائے عزوجل کا ارشاد ہے ﴿وَجَعَلْنَاهُمْ أَيْمَةً يَذْعُونَ إِلَىٰ

وَيْسُومِ الْبَيْتِ لَا يَنْصُرُونَ﴾ تہارا امام انہیں میں سے ہے را

حرام تم میں کی خدمت میں شریف ہوا اور آپ کو وہ خط سنایا آپ نے فرمایا: یہ

یا حاضر یہ یا شفیق میں اترے دو،

ترنے کہا: یہ ممکن نہیں ہے کیونکہ عہد اللہ نے اس خط میں لکھا ہے کہ اس نے میری نگرانی کے لئے

میں لکھے ہیں، زمین کے کہا: فرزند رسول اس کے بعد حالات اور زیادہ سخت ہو جائیں گے لہذا ان کو

اس وقت جنگ کرنا آسان ہے قسم اپنی جان کی بے ادبی اتنی فوج آجائے گی کہ جس سے جنگ کی ہر

ہے،

امام حسین نے فرمایا: میں اس گروہ سے جنگ میں پہل نہیں کروں گا یہ

زیر زمین میں قریب میں فرات کے نزدیک ایک قریہ ہے وہاں مورچے لینے کے

ہے اور اس کے عین طرف فرات ہے،

امام حسین نے فرمایا: اس قریہ کا کیا نام ہے؟ عرض کیا: اسے عفر کہتے ہیں، امام نے فرمایا

سے خدا کی پناہ چاہتا ہوں کہ اس کے بعد آپ نے حکو مخاطب کر کے فرمایا: ہمیں کچھ آگے بڑھنا چاہیے

ترا اور ہمارے بیوں کے ساتھ کچھ راستے کیا ہوں تک سرزمین کو بلا پر پہنچے ۵

۱۔ حدودہ قصص ۱۱، نفس المہوم ص ۴۴، ۲۔ تہذیب ایک قریہ ہے جو کربلا کے قریب کی طرف منسوب ہے

کا ایک کواں ہے، منتقل حسین قمر ص ۱۶، ۳۔ معنی ہے کہا ہے کہ نشیہ کربلا کے نزدیک ایک مشہور شہر کا نام ہے جسے

کہتے ہیں، جلا المیون شہر ج ۲ ص ۵۹، ۴۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۸۰،

۵۔ عفر بال کے ایک علاقہ کو کہتے ہیں یہ کربلا سے نزدیک ہے روایت ہے کہ جب امام حسین کو بلا پہنچے اور

کا محاصرہ کر دیا تو آپ نے اپنے اصحاب سے معلوم کیا اس قریہ کا کیا نام ہے اس نے جواب دیا اسے عفر کہتے ہیں

کی پناہ چاہتا ہوں کہ اس نے معلوم کیا اس سرزمین کو کیا کہتے ہیں جہاں اس وقت ہم ہیں کہ کربلا امام نے فرمایا

ابوہان ج ۴ ص ۴۴، ۵۔ منتقل حسین قمر ص ۱۱،

پانچویں فصل

کربلا میں داخلہ

دوم بروز جمعرات ۱۲ محرم کو امام حسین سرزمین کو بلا پر پہنچے ابو اسحاق سفرائی کے مقتل

میں امام حسین اپنے انصار کے ساتھ سفر کرتے ہوئے ایک شہر تک پہنچے یہاں ایک جماعت عظیم

تھی اس شہر کا نام معلوم کیا: جواب دیا اسے شط فرات کہتے ہیں، آپ نے فرمایا اس کا دوسرا بھی

نام کیا ہے؟ اسے کربلا بھی کہتے ہیں،

اس کو آپ نے گریہ کیا اور فرمایا: خدا کی قسم یہ زمین کرب و بلا ہے پھر فرمایا: اس زمین کی ایک منہی

ہے وہ ایک نیکو شخص کی اور کچھ خاک اپنی جیب سے نکالی اور فرمایا یہ خاک میرے نانا کسلے جبریل

نے لے کر لائی تھی اور فرمایا تھا کہ یہ خاک تربت حسین کی ہے اس کے بعد خاک چھینک دی اور فرمایا:

یہاں ہے،

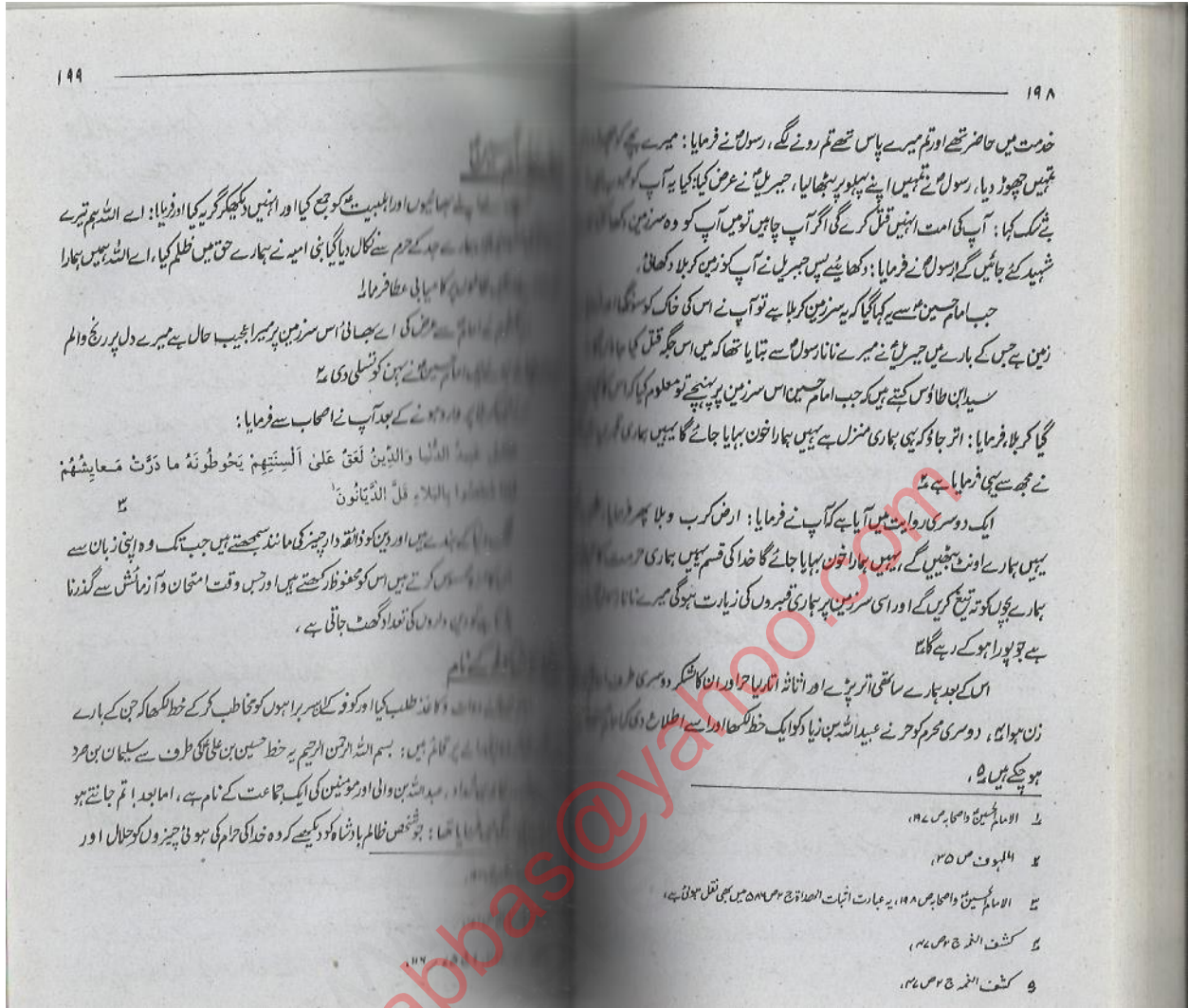
۱۔ حواہن جوہر کی تذکرہ میں لکھا ہے کہ امام حسین نے فرمایا: اس زمین کا کیا نام ہے لوگوں نے بتایا:

اس کو آپ نے گریہ کیا اور فرمایا: کرب و بلا، پھر فرمایا: مجھے ام سلمہ نے بتایا ہے کہ جبریل رسول کی

خاک لے کر لائی تھی اور فرمایا تھا کہ یہ خاک تربت حسین کی ہے اس کے بعد خاک چھینک دی اور فرمایا:

یہاں ہے، ۲۔ حواہن جوہر ج ۲ ص ۵۹، ۳۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۸۰،

۴۔ حواہن جوہر ج ۲ ص ۵۹، ۵۔ منتقل حسین قمر ص ۱۱،



خود میں حاضر تھے اور تم میرے پاس تھے تم رونے لگے، رسول نے فرمایا: میرے بچے کو
تمہیں چھوڑ دیا، رسول نے تمہیں اپنے پہلو پر بٹھا لیا، جبریل نے عرض کیا: کیا یہ آپ کو
بے شک کہا: آپ کی امت انہیں قتل کرے گی اگر آپ چاہیں تو میں آپ کو وہ سرزمین دکھا
نہیں دے جائیں گے رسول نے فرمایا: دکھائیے پس جبریل نے آپ کو زمین کو بلا دکھائی۔

جب امام حسین سے یہ کہا گیا کہ یہ سرزمین کو بلا ہے تو آپ نے اس کی خاک کو سونگھا اور
زمین پر جس کے بارے میں جبریل نے میرے نانا رسول سے بتایا تھا کہ میں اس کو قتل کیا جاؤں گا
سید ابن طاووس کہتے ہیں کہ جب امام حسین اس سرزمین پر پہنچے تو معلوم کیا کہ اس

گیا کو بلا فرمایا: اتر جاؤ کہ یہی ہماری منزل ہے یہیں ہمارا خون بہایا جائے گا یہیں ہماری

نے مجھ سے یہی فرمایا ہے۔
ایک دوسری روایت میں آیا ہے کہ آپ نے فرمایا: ارض کرب و بلا پھر فرمایا
یہیں ہمارے وطن تھیں گے، یہیں ہمارا خون بہایا جائے گا خدا کی قسم یہیں ہماری قبریں ہوں گی
ہمارے بچے کو تیغ کریں گے اور اسی سرزمین پر ہماری قبروں کی زیارت ہوگی میرے نانا رسول

ہے جو پورا ہو کے رہے گا۔
اس کے بعد ہمارے ساتھی اتر پڑے اور انانہ انکار کیا اور ان کا شکر دوسری طرف
زن ہوا، دوسری محرم کو حرم نے عبداللہ بن زکاء کو ایک خط لکھا اور اسے اطلاع دی کہ ان کا
ہو چکے ہیں۔

۱۔ الامام حسین و اصحابہ ۱۹۷ء

۲۔ المہجۃ ص ۲۵

۳۔ الامام حسین و اصحابہ ۱۹۸ء یہ عبارت انبات الحدائق ص ۵۸۹ میں بھی نقل ہوئی ہے۔

۴۔ کشف الغرہ ص ۸۷

۵۔ کشف الغرہ ص ۸۷

خود میں حاضر تھے اور تم میرے پاس تھے تم رونے لگے، رسول نے فرمایا: میرے بچے کو
تمہیں چھوڑ دیا، رسول نے تمہیں اپنے پہلو پر بٹھا لیا، جبریل نے عرض کیا: کیا یہ آپ کو
بے شک کہا: آپ کی امت انہیں قتل کرے گی اگر آپ چاہیں تو میں آپ کو وہ سرزمین دکھا
نہیں دے جائیں گے رسول نے فرمایا: دکھائیے پس جبریل نے آپ کو زمین کو بلا دکھائی۔

جب امام حسین سے یہ کہا گیا کہ یہ سرزمین کو بلا ہے تو آپ نے اس کی خاک کو سونگھا اور
زمین پر جس کے بارے میں جبریل نے میرے نانا رسول سے بتایا تھا کہ میں اس کو قتل کیا جاؤں گا
سید ابن طاووس کہتے ہیں کہ جب امام حسین اس سرزمین پر پہنچے تو معلوم کیا کہ اس

گیا کو بلا فرمایا: اتر جاؤ کہ یہی ہماری منزل ہے یہیں ہمارا خون بہایا جائے گا یہیں ہماری

نے مجھ سے یہی فرمایا ہے۔

ایک دوسری روایت میں آیا ہے کہ آپ نے فرمایا: ارض کرب و بلا پھر فرمایا
یہیں ہمارے وطن تھیں گے، یہیں ہمارا خون بہایا جائے گا خدا کی قسم یہیں ہماری قبریں ہوں گی
ہمارے بچے کو تیغ کریں گے اور اسی سرزمین پر ہماری قبروں کی زیارت ہوگی میرے نانا رسول

ہے جو پورا ہو کے رہے گا۔

اس کے بعد ہمارے ساتھی اتر پڑے اور انانہ انکار کیا اور ان کا شکر دوسری طرف
زن ہوا، دوسری محرم کو حرم نے عبداللہ بن زکاء کو ایک خط لکھا اور اسے اطلاع دی کہ ان کا
ہو چکے ہیں۔

۱۔ الامام حسین و اصحابہ ۱۹۷ء

۲۔ المہجۃ ص ۲۵

۳۔ الامام حسین و اصحابہ ۱۹۸ء یہ عبارت انبات الحدائق ص ۵۸۹ میں بھی نقل ہوئی ہے۔

۴۔ کشف الغرہ ص ۸۷

۵۔ کشف الغرہ ص ۸۷

آپ نے خدائی حمد و ثناء کی اور محمد و آل محمد پر درود بھیجا اور وہی خطبہ جو ہم منزلہ دوسرے میں نقل ہو چکا

مکہ مکرمہ کے مکانات کے بعد پھر مکہ کے ہوئے اور کہا: اے فرزند رسول! ہم نے آپ کا بیان سنا اگر دنیا ہمیشہ
میں باور میں ہوئے تو بھی ہم آپ کے ساتھ انقلاب برپا کرنا اور آپ پر جان قربان کرنے کو اس
خطبہ کا نتیجہ قرار دیتے،

اس کے بعد پھر مکہ کے ہوئے اور کہا: یا ابن رسول اللہ! خدائے کرپ کے وسیلہ سے ہم پر احسان کیا کہ ہم
اس کی ہادیں اور ہار ایدان آپ کے مقصد کے حصول میں نکلے گا تو اسے ہوا و قیامت کے روز آپ کے

پڑا ہوا ہے

ان میں ہاں اپنی جگہ سے بلند ہوئے اور کہا: فرزند رسول! آپ جانتے ہیں کہ آپ کے جد رسول خدا
کے دلوں میں آپ کی ذہنی عظمت کے چنانچہ خواہش کے باوجود سب نے ان کا فرمان قبول نہیں کیا کیونکہ
انہوں نے منافق بھی موجود تھے جو مدد کرنے کا وعدہ کرتے تھے لیکن دل میں بے وفائی کی نیت رکھتے
تھے۔ اللہ شہد ہے زیادہ شیریں اور پس پشت زہر سے زیادہ تلخ تھے، خدائے انہیں اپنے جوار رحمت
والہ کی ان کے ساتھ بھی ایسا ہی ہوا ایک جماعت ان کی مدد کیلئے اٹھی اور ناکین و فاسطین اور

ان کے بعد پھر مکہ کے ہوئے اور کہا: فرزند رسول! آپ جانتے ہیں کہ آپ کے جد رسول خدا
کے دلوں میں آپ کی ذہنی عظمت کے چنانچہ خواہش کے باوجود سب نے ان کا فرمان قبول نہیں کیا کیونکہ
انہوں نے منافق بھی موجود تھے جو مدد کرنے کا وعدہ کرتے تھے لیکن دل میں بے وفائی کی نیت رکھتے
تھے۔ اللہ شہد ہے زیادہ شیریں اور پس پشت زہر سے زیادہ تلخ تھے، خدائے انہیں اپنے جوار رحمت
والہ کی ان کے ساتھ بھی ایسا ہی ہوا ایک جماعت ان کی مدد کیلئے اٹھی اور ناکین و فاسطین اور

ان کے بعد پھر مکہ کے ہوئے اور کہا: فرزند رسول! آپ جانتے ہیں کہ آپ کے جد رسول خدا
کے دلوں میں آپ کی ذہنی عظمت کے چنانچہ خواہش کے باوجود سب نے ان کا فرمان قبول نہیں کیا کیونکہ
انہوں نے منافق بھی موجود تھے جو مدد کرنے کا وعدہ کرتے تھے لیکن دل میں بے وفائی کی نیت رکھتے
تھے۔ اللہ شہد ہے زیادہ شیریں اور پس پشت زہر سے زیادہ تلخ تھے، خدائے انہیں اپنے جوار رحمت
والہ کی ان کے ساتھ بھی ایسا ہی ہوا ایک جماعت ان کی مدد کیلئے اٹھی اور ناکین و فاسطین اور

حلال کی ہوئی چیزوں کو حرام کر رہا ہے، عہد تو دوسرے کی مخالفت کر رہا ہے اور خدا کے بندوں پر ظلم کر رہا ہے
اپنے قول و فعل سے اس پر اعتراض نہ کرتے تو سزاوار ہے کہ خدا اس کے لئے وہی عذاب مقرر کرے جو اس
کے لئے مقرر کیا ہے، تم جانتے ہو اور بنی امیہ کو چکاتے ہو کہ وہ شیطان کی پیروی کر کے خدائی اطاعت
نہیں، فساد برپا کر رہے ہیں خدا کے حدود کو پامال کر رہے ہیں انہوں نے خدائی حلال کی ہوئی چیزوں کو حرام
کی ہوئی چیزوں کو حلال بھی کیا ہے،

تمہارے خطبہ موصول ہوئے تمہارے قاصد میرے پاس پہنچے اور انہوں نے کہا کہ تم نے میری
بہادر میدان جنگ میں ہرگز نہیں جیتے تمہارا نہیں چھوڑو گے، مجھے ہرگز نہیں کے لئے نہیں کرو گے اب اگر تم
بیعت پر ثابت قدم ہو کر اپنی سیدھا سادہ ہے، تو میں تمہارے اور میرا خاندان تمہارے خاندان کے ساتھ
میں تمہارا رہبر و امام ہوں اور اگر تم نے اپنا عہد توڑ دیا ہے اور میری بیعت سے نکل گئے ہو تو قسم
مجھے اس پر تعجب نہیں ہے کیونکہ تم نے جو سلوک میرے والد، بھائی اور میرے چچا زاد بھائی مسلم کے ساتھ
میں اس سے واقف ہوں جو شخص تمہارے فریب میں آئے وہ تا تجربہ کار ہے تم اپنی قسمت سے روکنا
میرے ساتھ ہونے کی بنا پر اپنا فائدہ منانا چاہتا ہے، بیان کن کہ اس کا اختیار وہ جگہ جگہ ہوگا مگر قریب خدا
ہے نیاز کر دے گا، والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ،

امام نے خط بند کیا مہر لگائی اور قریب ہی سہرہ صیوانی کے پہنچا دیا کہ وہ کو فوے جلنے سے
کے شہید ہونے کی خبر ملنی تو گر گیا اور فرمایا: اے اللہ ہمارے اور ہمارے شیعوں کے لئے اپنے پاس اعلیٰ جگہ قرار
ان کے ساتھ اپنی جوار رحمت میں ماکن کر پے شک تو ہر چیز پر قادر ہے۔

انصار امام کا اظہار خیال

ماہ پہلے بیان کر چکے ہیں کہ قسطنطنیہ کے حکام نے ان کے لئے ایک مسجد بنوانے سے انکار کیا ہے کہ قسطنطنیہ
بند نہیں ہے کہ مذکورہ منزل سے جدا اللہ بن علی کو حکمران قسطنطنیہ کے ہرگز کو فروغ دیا گیا ہو، نہ بدلتے ہمسایوں، نہ ملکہ
دوسرے میں باقی ایسی کہتے ہیں کہ کہیں وہاں، فعل ہونے کے بعد دیا تھا

تو خشک ہے ورنہ دے کی حکومت سے ہاتھ اٹھاؤ عربین سعد نے جب عبداللہ کا یہ موقف دیکھا تو
ضرور جاؤں گا

تین محرم

امام حسین علیہ السلام سے ایک روز چوبی تین محرم کو عربین سعد چار ہزار سپاہیوں کے ساتھ
پہنچا۔ بعض لوگوں نے لکھا ہے کہ بوزیرہ یعنی عربین سعد کا قبیلہ اس کے پاس آئے اور اس سے کہا
خدا کی قسم دیتے ہیں کہ ایسا نہ کیجئے اور امام مرتے سے جنگ کیلئے نہ جائیے کیونکہ اس سے ہمارے اور بنی
دیمان دشمنی پیدا ہو جائے گی۔

عربین سعد اپنا زیادہ کے پاس گیا اور استغفری دید یا سکین عبداللہ بن زیاد نے اس کا استقبال
ہنس کی جس سے وہ مجبور ہو گیا۔ بعض مورخین نے لکھا ہے کہ عربین سعد کے دو بیٹے تھے ان میں سے
باپ کو امام حسین سے جنگ کرنے کی ترغیب و تشویق کر رہا تھا لیکن دوسرا اس سلسلے میں اس کا منہ نہ
تھا آخر کار شخص بھی باپ کے ساتھ کر بلا گیا۔

زمین کر بلا کی خریداری

تیسری محرم کے دو قافلیان ہوئے ہیں ان میں سے ایک یہ ہے کہ امام حسین نے مینا اور
سے کر بلا کی زمین کہ جہاں آپ کا مقبرہ ہے ساتھ ہزار درہم میں خریدی اور ان سے فرمایا: جو لوگ میری قبر
کو آئیں تم ان کی راہنمائی کرنا اور ان کو تین روز تک یہاں رکھنا۔

۱۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۹۴

۲۔ اثنائے شیعہ ج ۲ ص ۸۴

۳۔ طبقات ابن سعد ج ۱ ص ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳

قرہ چلا امام حسینؑ نے اپنے اصحاب سے فرمایا: کیا تم لوگ اس شخص کو پہچانتے ہو،
مظاہر نے عرض کیا: ہاں یہ یحییٰ ہے میں اسے نیک دلائے سمجھتا تھا یہ تو میں سوچ بھی نہیں سکتا تھا
آئے گا، قرہ بن قیسؑ آیا امام حسینؑ کو سلام کیا اور اپنا پیغام پہنچایا امام حسینؑ نے فرمایا: تمہارے شہر
مجھے خط لکھ کر بلا رہے اور اگر میرا نام تمہیں لگاوار ہے تو میں واپس چلا جاؤں، قرہ حب واپس جانے لگا
جبیب بن مظاہر نے اس سے کہا: اے قرہ! ولے ہو تم پر کیوں غلاموں کی طرف واپس جا رہے ہو،
مدد کرو کہ جن کے جد کے وسیلے سے تم راہ راست پر آئے ہو،

قرہ بن قیسؑ نے کہا: پہلے اس پیغام کا جواب عرض کر دوں پھر اس مسئلے پر
وہ واپس عرض کر کے پاس چلا گیا اور اسے صورت حال بتائی، عرض کر کے کہ امید ہے کہ خدا میرے
پیدا کرے گا کہ جس سے مجھے حسینؑ سے جنگ نہیں کرنی پڑے گی۔

عمر بن سعد کا خط

حسان بن خالد کہتا ہے کہ میں عید الاشدہ کے پاس تھا اسے عمر بن سعد کا خط ملا اس میں لکھا تھا
میں اپنی فوج کے ساتھ حسینؑ کے مقابل جا کر اترتا ہوں کہ پاس ایک قاصد بھیجا اور اس سرزمین پر ان کا
معلوم کرنا چاہی، انہوں نے جواب دیا کہ کوہ والوں نے مجھے خط لکھے اپنے غماندہ میرے پاس بھیجے اور
اگر تم میرے آئے سے ناخوش ہو تو میں واپس چلا جاؤں گا،
عید الاشدہ نے جب عمر بن سعد کا خط پڑھا تو کہا:

الآن وَقَدْ غَلَبَتْ مَخَالِبُنَا بِهِ

يَزُجُو النِّجَاحَ وَلَا تَحْصِي

۱۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۱۰۱۰

۲۔ جبکہ وہ ہمارے جنگل میں پھنس گئے ہیں نجات کی امید کرتے ہیں لیکن حالات سے مطمئن نہیں ہے،

۳۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۱۰۱۰

عمر بن سعد کو کھاتہ ہمارا خط ملا مضمون سے آگاہ ہوا حسینؑ سے کہہ کر وہ خود اور ان کے ساتھی
انہوں نے بیعت کر لی تو پھر میں اپنا نظریہ لکھوں گا،

عمر بن سعد کو یہ خط ملا تو کہا: میرے خیال میں عید الاشدہ بن زیاد صلح و عافیت نہیں چاہتا تھا،
اس لئے ابن زیاد کے خط سے امام حسینؑ کو مطلع نہیں کیا کہ جو جانتا تھا کہ اگر آپ ہرگز بڑی مدینہ

عید الاشدہ بن زیاد عرض کر کے کہ ایک بہت بڑا لشکر اور بھیجنے کی فکر میں تھا بعض
کا کہہ کر اہل کوہ امام حسینؑ سے جنگ کرنے کو پسند نہیں کرتے تھے چنانچہ جسے آپ سے جنگ
کا ہوا تھا اسے وہ واپس لوٹ آتا تھا، عید الاشدہ بن زیاد نے سوید بن عبدالرحمن کو حکم دیا کہ جنگ سے
وہ کی فوج کو روکے اور روگردانی کرنے والوں کو اس کے پاس حاضر کرے اس نے ایک شامی کو
اپنے ہمراہ لے کر کوہ آیا تھا، کہہ کر عید الاشدہ بن زیاد کے سامنے پیش کیا اس نے اس کی گردن
پر ہاتھ رکھ کر اس کے لئے عبرت ہو جانے لکھا ہے کہ وہ شامی میراث لینے کو آیا تھا

۱۔

عید الاشدہ کو وہی کوہ سے خلیفہ کی طرف روانہ ہوا کسی کو حسین بن تیمم جو کہ اس وقت قادسیہ میں تھا
اور اسے اس بار بار فوج کے ساتھ جو اس کے ساتھ تھے خلیفہ آگیا اس کے بعد عید الاشدہ نے کثیر بن
الاحد بن اشعث، قوقح بن سوید اور اسامہ بن نادر کو طلب کیا اور کہا: کوہ میں گشت کرو

۲۔ بحار انوار ج ۳ ص ۳۸۵، ۳ اخبار الطول ص ۲۵۳

۳۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۱۰۱۰

اور لوگوں کو بید کی اور میری فرمانبرداری کا حکم دوا نہیں نافرمانی اور فتنہ سے ڈراؤ انہیں بچھاؤ اور ان چار اذاتوں کے مطابق عمل کیا ان میں سے تین نیکیوں میں عبد اللہ کے پاس لوٹ آئے اور تین میں سے ایک ہی میں رہ گیا اور گئی کو چوں میں گھم گھم کو گونگوشگر گاہ میں جانے کی تشریفی دلاتا رہا اور امام حسین سے ڈراتا رہا۔

عبد اللہ بن زیاد نے اپنے اپنے وطن سعد کے درمیان ایک دستہ سواروں کا متفر کیا تاکہ ضرورت کے وقت مدد کی سکے، خلیفہ میں اس کے قیام کے زمانے میں عمار بن ابی سلمہ نے اس کے وجود سے خبر لیا کہ ارادہ کیا لیکن کامیاب نہ ہو سکا لہذا وہ کربلا چلا گیا اور امام حسین کی نصرت میں درجہ شہادت پر فائز ہوا۔

۴ محرم

۴ محرم کو عبد اللہ بن زیاد نے لوگوں کو مسجد کوفہ میں جمع کیا اور منبر پر جا کر کہا: لوگو! سفیان کو نو آؤ دمایا، تم نے انہیں بسا ہی پایا جیسا چاہتے تھے، تم جانتے ہی ہو کہ بڑا بد نیک ہے۔ پھر احسان کرتا ہے، اس کی عطا کیا ہے اس کے والد بھی ایسے ہی تھے اس نے مجھے حکم دیا ہے کہ تمہیں عطا سے نوازوں، کچھ میرے پاس بھیجا ہے تاکہ تمہارے درمیان تقسیم کروں اور اس کے جنگ کیلئے روانہ کروں کان کھول کر سنو! اور اطاعت کرو،

اس کے بعد منبر سے اتر آیا اور شہداء و انوں کیلئے بھی عطا یا مقرر کئے اور شہداء میں سے دیکھ کر لوگ مہزور ہو کر جانے کیلئے آمادہ ہو جائیں وہ خود اور اس کے ساتھی خلیفہ کی طرف روانہ ہوئے حصین بن نیر ہمارا بھائی، اور شمر بن ذی الجوشن کو کربلا کی طرف،

جنگ میں وہ طعن بن سعد کی مدد کریں گے،

۱۔ انساب الاشراف ج ۱ ص ۱۵۸، ۲۔ انساب الاشراف ج ۱ ص ۱۸۰، ۳۔ خیابانی رحمہ اللہ، ۴۔ ابن زیاد کا کوثر میں ہنر پر جانے اور لوگوں کو امام حسین سے جنگ کرنے پر ابھارنے کا واقعہ چوتھی موضع کے دفائن میں لکھا ہے، ۵۔ اس سے پہلے بتلایا کہ امام حسین سے جنگ میں نہ آیا بھی شریک تھے، ۵۔ اخبار الطوال ص ۱۵۵۔

۴ محرم پر ذوالقار عبد اللہ نے شیش بن ریحی کی تلاش میں ایک آدمی بھیجا کہ وہ دارالامارہ میں شیش بن ریحی اسلئے مریض ہیں لگتا تھا تاکہ فتنہ کو کربلا میں اسے صاف رکھا جائے لیکن عبد اللہ بن زیاد نے اس پر ختم بھیجا کہ تم ان لوگوں میں سے نہ ہو جانا جن کے بارے میں خداوند عالم قرآن مجید میں فرمایا ہے: "وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَإِنَّهُ يَكُونُ عَذَابًا لِّهٖ شَدِيدًا"۔ جب وہ سنو اسے ان کی ملاقات ہوئی ہے تو کہتے ہیں ہم ایمان لے آئے ہیں اور جب اپنے گھر پہنچے تو کہتے ہیں کہ تمہارے ہی ساتھ ہیں، مؤمنین سے تو ہم مذاق کرتے ہیں۔ اگر ہمارے فرمان کے سامنے سر جھکا تے اور ہماری اطاعت کرتے ہو تو ہمارے پاس کوئی عطا ہے، اگر نہیں تو رات کے وقت عبد اللہ بن زیاد کے پاس آیا تاکہ وہ اس کے چہرہ سے نہ جان سکے، اللہ نے اسے خوش آمدید کہا اور اپنے پاس بٹھایا اور کہا: تمہیں کربلا جانا چاہیئے، شہداء انہی نے کہا: ٹھیک ہے، عبد اللہ نے ہزار سپاہیوں کے ساتھ اس سے کربلا بھیجا۔

۵۔

۱۔ انساب الاشراف ج ۱ ص ۱۵۸، ۲۔ انساب الاشراف ج ۱ ص ۱۸۰، ۳۔ خیابانی رحمہ اللہ، ۴۔ ابن زیاد کا کوثر میں ہنر پر جانے اور لوگوں کو امام حسین سے جنگ کرنے پر ابھارنے کا واقعہ چوتھی موضع کے دفائن میں لکھا ہے، ۵۔ اس سے پہلے بتلایا کہ امام حسین سے جنگ میں نہ آیا بھی شریک تھے، ۵۔ اخبار الطوال ص ۱۵۵۔

۱۸۔

۱۹۔

کی کیفیت

پانچواں محمد بن حنفیہ کے نام

اسلامی کا خط محمد بن علی اور دیگر بنی ہاشم کے نام ہے اما بعد: گویا دنیا کا وجود ہی نہیں تھا

المؤلف

[illegible]

شکرِ عمرین سود کی تعداد

م

۶ مرحوم کو عید الفصح زیادہ سے عربوں کو ایک خط لکھا کہ میں نے سورج و باد
کا ایک ایک نام پر کر جانے کے کو ذوال سے منسوب کر تھے، یہ عقل منقول مقدم ۱۹۰
کے طفیل ہمارے امام احمد عسے روایت کی کہ کرب پ نے فرمایا: جیسا میں نے اپنے بھائی حضرت کے
گئے حسن نے وجہ معلوم کی تین دنوں میں کرب پ نے ان صاحب کی وجہ سے رو بہا ہوں، جس نے فرمایا
لیکن اب وہ صاحب کرب کی صحبت کے دن میرا کو ملا تھا، یہ اسے سے ملتا رہا کہ سورج کا سمتی اور اس کا ہونا
قتل، اب مرحوم کے حرقی اور اسی میں کرب کی گے اور اس میں اس کے اس وقت خلیفہ عباس پر لعنت کر کے گا
ہر ضرر یا ان کا کہ محمد علی کرب کی گے کہ کرب کی گے، الملوہت ہیں ۱۰

ابن سعد بن ابی سرحہ بن حنیف بن غنم بن زید بن اسد بن ہاشم بن عبد مناف، حبیب بن مظاہر امام حسین کی خدمت میں حاضر ہوئے
 اور کہا: کیا آپ نے کہا: لا حول ولا قوۃ الا باللہ

۲۱۴

پس ایسے مددگار ہیں جن میں سے ہر ایک ہزار کچھ افراد سے بہتر ہے وہ انہیں ہرگز تنہا نہیں چھوڑے گا
 انہیں دشمن کے قاتل نہیں کرے گا، عربین سعد نے بہت بڑے لشکر کے ساتھ ان کا محاصرہ کر رکھا ہے جو کچھ
 قوم قبیلہ کے ہوا اس نے میری کسی کے راستے کی طرف تمہاری راہنمائی کر رہا ہوں آج میری بات مان لو اور
 کے لئے چلو دینا و آخرت میں تم سرفراز ہو جاؤ گے، میں قسم کھا کر کہتا ہوں کہ اگر غم میں سے ایک آدمی
 یہاں بنت رسول کے پیشے کے ساتھ مارا جائے پھر سے کام لے اور خطائے نواب پانے کی امید رکھے
 بہشت میں رسول کے ساتھ ہوگا۔

اس وقت نبی اسد سے عبد اللہ بن بشیر اٹھا اور کہا: سب سے پہلے اس دعوت کو
 ہوں پھر اس نے یہ بڑبڑا دیا:
 قَدْ عَلِمَ الْقَوْمُ إِذْ تَوَافَكُوا وَأَخْبَتَ الْفُزَّانُ إِذْ تَنَافَكُوا
 أَنِّي شَجَاعٌ بَسَطَ مُقَاتِلُ كَأَنِّي لَيْتُ عَرِيْنٌ بِاسِلُ

اس کے بعد قبیلہ کے نوادری اور کھڑے ہوئے اور امام حسین کی مدد کیلئے روانہ ہوئے لیکن
 میں ایک شخص نے یہ واقعہ عربین سعد سے بتا دیا اس نے اڑن کی سرکردگی میں ان کی طرف چار سو فوجی
 کے سپاہیوں نے رات کی تاریکی میں فرات کے کنارے اس کا راستہ بند کر دیا جبکہ امام حسین سے زیادہ
 بنی اسد والے ابن سعد کے فوجیوں سے اچھے گئے، حبیب بن مظاہر نے اڑن سے کہا
 تو اس مظہر کو کیوں اپنی گردن پر لٹاتا ہے، تیری جگہ کوئی اور لے لیگا جب بنی اسد کے قبیلہ نے کہا
 مظلوم نہیں کیا جاسکتا تو وہ شرب کی تارکی میں پراگندہ ہو گئے اور اپنے قبیلہ سے جاملے اور انہیں

را جب یہ جنگ جگے کیلئے تیار ہوتے ہیں اور بوجہ دشمنی سے گھبراتے ہیں تو اس وقت یہ مجھے دیکھتے اور یہاں
 شرب کی مانند دیر اور ہمارے ہوں۔

۱۳۸۶ھ، ۱۴۸۶ھ، ۱۵۸۶ھ، ۱۶۸۶ھ، ۱۷۸۶ھ، ۱۸۸۶ھ، ۱۹۸۶ھ، ۲۰۸۶ھ، ۲۱۸۶ھ، ۲۲۸۶ھ، ۲۳۸۶ھ، ۲۴۸۶ھ، ۲۵۸۶ھ، ۲۶۸۶ھ، ۲۷۸۶ھ، ۲۸۸۶ھ، ۲۹۸۶ھ، ۳۰۸۶ھ، ۳۱۸۶ھ، ۳۲۸۶ھ، ۳۳۸۶ھ، ۳۴۸۶ھ، ۳۵۸۶ھ، ۳۶۸۶ھ، ۳۷۸۶ھ، ۳۸۸۶ھ، ۳۹۸۶ھ، ۴۰۸۶ھ، ۴۱۸۶ھ، ۴۲۸۶ھ، ۴۳۸۶ھ، ۴۴۸۶ھ، ۴۵۸۶ھ، ۴۶۸۶ھ، ۴۷۸۶ھ، ۴۸۸۶ھ، ۴۹۸۶ھ، ۵۰۸۶ھ، ۵۱۸۶ھ، ۵۲۸۶ھ، ۵۳۸۶ھ، ۵۴۸۶ھ، ۵۵۸۶ھ، ۵۶۸۶ھ، ۵۷۸۶ھ، ۵۸۸۶ھ، ۵۹۸۶ھ، ۶۰۸۶ھ، ۶۱۸۶ھ، ۶۲۸۶ھ، ۶۳۸۶ھ، ۶۴۸۶ھ، ۶۵۸۶ھ، ۶۶۸۶ھ، ۶۷۸۶ھ، ۶۸۸۶ھ، ۶۹۸۶ھ، ۷۰۸۶ھ، ۷۱۸۶ھ، ۷۲۸۶ھ، ۷۳۸۶ھ، ۷۴۸۶ھ، ۷۵۸۶ھ، ۷۶۸۶ھ، ۷۷۸۶ھ، ۷۸۸۶ھ، ۷۹۸۶ھ، ۸۰۸۶ھ، ۸۱۸۶ھ، ۸۲۸۶ھ، ۸۳۸۶ھ، ۸۴۸۶ھ، ۸۵۸۶ھ، ۸۶۸۶ھ، ۸۷۸۶ھ، ۸۸۸۶ھ، ۸۹۸۶ھ، ۹۰۸۶ھ، ۹۱۸۶ھ، ۹۲۸۶ھ، ۹۳۸۶ھ، ۹۴۸۶ھ، ۹۵۸۶ھ، ۹۶۸۶ھ، ۹۷۸۶ھ، ۹۸۸۶ھ، ۹۹۸۶ھ، ۱۰۰۸۶ھ، ۱۰۱۸۶ھ، ۱۰۲۸۶ھ، ۱۰۳۸۶ھ، ۱۰۴۸۶ھ، ۱۰۵۸۶ھ، ۱۰۶۸۶ھ، ۱۰۷۸۶ھ، ۱۰۸۸۶ھ، ۱۰۹۸۶ھ، ۱۱۰۸۶ھ، ۱۱۱۸۶ھ، ۱۱۲۸۶ھ، ۱۱۳۸۶ھ، ۱۱۴۸۶ھ، ۱۱۵۸۶ھ، ۱۱۶۸۶ھ، ۱۱۷۸۶ھ، ۱۱۸۸۶ھ، ۱۱۹۸۶ھ، ۱۲۰۸۶ھ، ۱۲۱۸۶ھ، ۱۲۲۸۶ھ، ۱۲۳۸۶ھ، ۱۲۴۸۶ھ، ۱۲۵۸۶ھ، ۱۲۶۸۶ھ، ۱۲۷۸۶ھ، ۱۲۸۸۶ھ، ۱۲۹۸۶ھ، ۱۳۰۸۶ھ، ۱۳۱۸۶ھ، ۱۳۲۸۶ھ، ۱۳۳۸۶ھ، ۱۳۴۸۶ھ، ۱۳۵۸۶ھ، ۱۳۶۸۶ھ، ۱۳۷۸۶ھ، ۱۳۸۸۶ھ، ۱۳۹۸۶ھ، ۱۴۰۸۶ھ، ۱۴۱۸۶ھ، ۱۴۲۸۶ھ، ۱۴۳۸۶ھ، ۱۴۴۸۶ھ، ۱۴۵۸۶ھ، ۱۴۶۸۶ھ، ۱۴۷۸۶ھ، ۱۴۸۸۶ھ، ۱۴۹۸۶ھ، ۱۵۰۸۶ھ، ۱۵۱۸۶ھ، ۱۵۲۸۶ھ، ۱۵۳۸۶ھ، ۱۵۴۸۶ھ، ۱۵۵۸۶ھ، ۱۵۶۸۶ھ، ۱۵۷۸۶ھ، ۱۵۸۸۶ھ، ۱۵۹۸۶ھ، ۱۶۰۸۶ھ، ۱۶۱۸۶ھ، ۱۶۲۸۶ھ، ۱۶۳۸۶ھ، ۱۶۴۸۶ھ، ۱۶۵۸۶ھ، ۱۶۶۸۶ھ، ۱۶۷۸۶ھ، ۱۶۸۸۶ھ، ۱۶۹۸۶ھ، ۱۷۰۸۶ھ، ۱۷۱۸۶ھ، ۱۷۲۸۶ھ، ۱۷۳۸۶ھ، ۱۷۴۸۶ھ، ۱۷۵۸۶ھ، ۱۷۶۸۶ھ، ۱۷۷۸۶ھ، ۱۷۸۸۶ھ، ۱۷۹۸۶ھ، ۱۸۰۸۶ھ، ۱۸۱۸۶ھ، ۱۸۲۸۶ھ، ۱۸۳۸۶ھ، ۱۸۴۸۶ھ، ۱۸۵۸۶ھ، ۱۸۶۸۶ھ، ۱۸۷۸۶ھ، ۱۸۸۸۶ھ، ۱۸۹۸۶ھ، ۱۹۰۸۶ھ، ۱۹۱۸۶ھ، ۱۹۲۸۶ھ، ۱۹۳۸۶ھ، ۱۹۴۸۶ھ، ۱۹۵۸۶ھ، ۱۹۶۸۶ھ، ۱۹۷۸۶ھ، ۱۹۸۸۶ھ، ۱۹۹۸۶ھ، ۲۰۰۸۶ھ، ۲۰۱۸۶ھ، ۲۰۲۸۶ھ، ۲۰۳۸۶ھ، ۲۰۴۸۶ھ، ۲۰۵۸۶ھ، ۲۰۶۸۶ھ، ۲۰۷۸۶ھ، ۲۰۸۸۶ھ، ۲۰۹۸۶ھ، ۲۱۰۸۶ھ، ۲۱۱۸۶ھ، ۲۱۲۸۶ھ، ۲۱۳۸۶ھ، ۲۱۴۸۶ھ، ۲۱۵۸۶ھ، ۲۱۶۸۶ھ، ۲۱۷۸۶ھ، ۲۱۸۸۶ھ، ۲۱۹۸۶ھ، ۲۲۰۸۶ھ، ۲۲۱۸۶ھ، ۲۲۲۸۶ھ، ۲۲۳۸۶ھ، ۲۲۴۸۶ھ، ۲۲۵۸۶ھ، ۲۲۶۸۶ھ، ۲۲۷۸۶ھ، ۲۲۸۸۶ھ، ۲۲۹۸۶ھ، ۲۳۰۸۶ھ، ۲۳۱۸۶ھ، ۲۳۲۸۶ھ، ۲۳۳۸۶ھ، ۲۳۴۸۶ھ، ۲۳۵۸۶ھ، ۲۳۶۸۶ھ، ۲۳۷۸۶ھ، ۲۳۸۸۶ھ، ۲۳۹۸۶ھ، ۲۴۰۸۶ھ، ۲۴۱۸۶ھ، ۲۴۲۸۶ھ، ۲۴۳۸۶ھ، ۲۴۴۸۶ھ، ۲۴۵۸۶ھ، ۲۴۶۸۶ھ، ۲۴۷۸۶ھ، ۲۴۸۸۶ھ، ۲۴۹۸۶ھ، ۲۵۰۸۶ھ، ۲۵۱۸۶ھ، ۲۵۲۸۶ھ، ۲۵۳۸۶ھ، ۲۵۴۸۶ھ، ۲۵۵۸۶ھ، ۲۵۶۸۶ھ، ۲۵۷۸۶ھ، ۲۵۸۸۶ھ، ۲۵۹۸۶ھ، ۲۶۰۸۶ھ، ۲۶۱۸۶ھ، ۲۶۲۸۶ھ، ۲۶۳۸۶ھ، ۲۶۴۸۶ھ، ۲۶۵۸۶ھ، ۲۶۶۸۶ھ، ۲۶۷۸۶ھ، ۲۶۸۸۶ھ، ۲۶۹۸۶ھ، ۲۷۰۸۶ھ، ۲۷۱۸۶ھ، ۲۷۲۸۶ھ، ۲۷۳۸۶ھ، ۲۷۴۸۶ھ، ۲۷۵۸۶ھ، ۲۷۶۸۶ھ، ۲۷۷۸۶ھ، ۲۷۸۸۶ھ، ۲۷۹۸۶ھ، ۲۸۰۸۶ھ، ۲۸۱۸۶ھ، ۲۸۲۸۶ھ، ۲۸۳۸۶ھ، ۲۸۴۸۶ھ، ۲۸۵۸۶ھ، ۲۸۶۸۶ھ، ۲۸۷۸۶ھ، ۲۸۸۸۶ھ، ۲۸۹۸۶ھ، ۲۹۰۸۶ھ، ۲۹۱۸۶ھ، ۲۹۲۸۶ھ، ۲۹۳۸۶ھ، ۲۹۴۸۶ھ، ۲۹۵۸۶ھ، ۲۹۶۸۶ھ، ۲۹۷۸۶ھ، ۲۹۸۸۶ھ، ۲۹۹۸۶ھ، ۳۰۰۸۶ھ، ۳۰۱۸۶ھ، ۳۰۲۸۶ھ، ۳۰۳۸۶ھ، ۳۰۴۸۶ھ، ۳۰۵۸۶ھ، ۳۰۶۸۶ھ، ۳۰۷۸۶ھ، ۳۰۸۸۶ھ، ۳۰۹۸۶ھ، ۳۱۰۸۶ھ، ۳۱۱۸۶ھ، ۳۱۲۸۶ھ، ۳۱۳۸۶ھ، ۳۱۴۸۶ھ، ۳۱۵۸۶ھ، ۳۱۶۸۶ھ، ۳۱۷۸۶ھ، ۳۱۸۸۶ھ، ۳۱۹۸۶ھ، ۳۲۰۸۶ھ، ۳۲۱۸۶ھ، ۳۲۲۸۶ھ، ۳۲۳۸۶ھ، ۳۲۴۸۶ھ، ۳۲۵۸۶ھ، ۳۲۶۸۶ھ، ۳۲۷۸۶ھ، ۳۲۸۸۶ھ، ۳۲۹۸۶ھ، ۳۳۰۸۶ھ، ۳۳۱۸۶ھ، ۳۳۲۸۶ھ، ۳۳۳۸۶ھ، ۳۳۴۸۶ھ، ۳۳۵۸۶ھ، ۳۳۶۸۶ھ، ۳۳۷۸۶ھ، ۳۳۸۸۶ھ، ۳۳۹۸۶ھ، ۳۴۰۸۶ھ، ۳۴۱۸۶ھ، ۳۴۲۸۶ھ، ۳۴۳۸۶ھ، ۳۴۴۸۶ھ، ۳۴۵۸۶ھ، ۳۴۶۸۶ھ، ۳۴۷۸۶ھ، ۳۴۸۸۶ھ، ۳۴۹۸۶ھ، ۳۵۰۸۶ھ، ۳۵۱۸۶ھ، ۳۵۲۸۶ھ، ۳۵۳۸۶ھ، ۳۵۴۸۶ھ، ۳۵۵۸۶ھ، ۳۵۶۸۶ھ، ۳۵۷۸۶ھ، ۳۵۸۸۶ھ، ۳۵۹۸۶ھ، ۳۶۰۸۶ھ، ۳۶۱۸۶ھ، ۳۶۲۸۶ھ، ۳۶۳۸۶ھ، ۳۶۴۸۶ھ، ۳۶۵۸۶ھ، ۳۶۶۸۶ھ، ۳۶۷۸۶ھ، ۳۶۸۸۶ھ، ۳۶۹۸۶ھ، ۳۷۰۸۶ھ، ۳۷۱۸۶ھ، ۳۷۲۸۶ھ، ۳۷۳۸۶ھ، ۳۷۴۸۶ھ، ۳۷۵۸۶ھ، ۳۷۶۸۶ھ، ۳۷۷۸۶ھ، ۳۷۸۸۶ھ، ۳۷۹۸۶ھ، ۳۸۰۸۶ھ، ۳۸۱۸۶ھ، ۳۸۲۸۶ھ، ۳۸۳۸۶ھ، ۳۸۴۸۶ھ، ۳۸۵۸۶ھ، ۳۸۶۸۶ھ، ۳۸۷۸۶ھ، ۳۸۸۸۶ھ، ۳۸۹۸۶ھ، ۳۹۰۸۶ھ، ۳۹۱۸۶ھ، ۳۹۲۸۶ھ، ۳۹۳۸۶ھ، ۳۹۴۸۶ھ، ۳۹۵۸۶ھ، ۳۹۶۸۶ھ، ۳۹۷۸۶ھ، ۳۹۸۸۶ھ، ۳۹۹۸۶ھ، ۴۰۰۸۶ھ، ۴۰۱۸۶ھ، ۴۰۲۸۶ھ، ۴۰۳۸۶ھ، ۴۰۴۸۶ھ، ۴۰۵۸۶ھ، ۴۰۶۸۶ھ، ۴۰۷۸۶ھ، ۴۰۸۸۶ھ، ۴۰۹۸۶ھ، ۴۱۰۸۶ھ، ۴۱۱۸۶ھ، ۴۱۲۸۶ھ، ۴۱۳۸۶ھ، ۴۱۴۸۶ھ، ۴۱۵۸۶ھ، ۴۱۶۸۶ھ، ۴۱۷۸۶ھ، ۴۱۸۸۶ھ، ۴۱۹۸۶ھ، ۴۲۰۸۶ھ، ۴۲۱۸۶ھ، ۴۲۲۸۶ھ، ۴۲۳۸۶ھ، ۴۲۴۸۶ھ، ۴۲۵۸۶ھ، ۴۲۶۸۶ھ، ۴۲۷۸۶ھ، ۴۲۸۸۶ھ، ۴۲۹۸۶ھ، ۴۳۰۸۶ھ، ۴۳۱۸۶ھ، ۴۳۲۸۶ھ، ۴۳۳۸۶ھ، ۴۳۴۸۶ھ، ۴۳۵۸۶ھ، ۴۳۶۸۶ھ، ۴۳۷۸۶ھ، ۴۳۸۸۶ھ، ۴۳۹۸۶ھ، ۴۴۰۸۶ھ، ۴۴۱۸۶ھ، ۴۴۲۸۶ھ، ۴۴۳۸۶ھ، ۴۴۴۸۶ھ، ۴۴۵۸۶ھ، ۴۴۶۸۶ھ، ۴۴۷۸۶ھ، ۴۴۸۸۶ھ، ۴۴۹۸۶ھ، ۴۵۰۸۶ھ، ۴۵۱۸۶ھ، ۴۵۲۸۶ھ، ۴۵۳۸۶ھ، ۴۵۴۸۶ھ، ۴۵۵۸۶ھ، ۴۵۶۸۶ھ، ۴۵۷۸۶ھ، ۴۵۸۸۶ھ، ۴۵۹۸۶ھ، ۴۶۰۸۶ھ، ۴۶۱۸۶ھ، ۴۶۲۸۶ھ، ۴۶۳۸۶ھ، ۴۶۴۸۶ھ، ۴۶۵۸۶ھ، ۴۶۶۸۶ھ، ۴۶۷۸۶ھ، ۴۶۸۸۶ھ، ۴۶۹۸۶ھ، ۴۷۰۸۶ھ، ۴۷۱۸۶ھ، ۴۷۲۸۶ھ، ۴۷۳۸۶ھ، ۴۷۴۸۶ھ، ۴۷۵۸۶ھ، ۴۷۶۸۶ھ، ۴۷۷۸۶ھ، ۴۷۸۸۶ھ، ۴۷۹۸۶ھ، ۴۸۰۸۶ھ، ۴۸۱۸۶ھ، ۴۸۲۸۶ھ، ۴۸۳۸۶ھ، ۴۸۴۸۶ھ، ۴۸۵۸۶ھ، ۴۸۶۸۶ھ، ۴۸۷۸۶ھ، ۴۸۸۸۶ھ، ۴۸۹۸۶ھ، ۴۹۰۸۶ھ، ۴۹۱۸۶ھ، ۴۹۲۸۶ھ، ۴۹۳۸۶ھ، ۴۹۴۸۶ھ، ۴۹۵۸۶ھ، ۴۹۶۸۶ھ، ۴۹۷۸۶ھ، ۴۹۸۸۶ھ، ۴۹۹۸۶ھ، ۵۰۰۸۶ھ، ۵۰۱۸۶ھ، ۵۰۲۸۶ھ، ۵۰۳۸۶ھ، ۵۰۴۸۶ھ، ۵۰۵۸۶ھ، ۵۰۶۸۶ھ، ۵۰۷۸۶ھ، ۵۰۸۸۶ھ، ۵۰۹۸۶ھ، ۵۱۰۸۶ھ، ۵۱۱۸۶ھ، ۵۱۲۸۶ھ، ۵۱۳۸۶ھ، ۵۱۴۸۶ھ، ۵۱۵۸۶ھ، ۵۱۶۸۶ھ، ۵۱۷۸۶ھ، ۵۱۸۸۶ھ، ۵۱۹۸۶ھ، ۵۲۰۸۶ھ، ۵۲۱۸۶ھ، ۵۲۲۸۶ھ، ۵۲۳۸۶ھ، ۵۲۴۸۶ھ، ۵۲۵۸۶ھ، ۵۲۶۸۶ھ، ۵۲۷۸۶ھ، ۵۲۸۸۶ھ، ۵۲۹۸۶ھ، ۵۳۰۸۶ھ، ۵۳۱۸۶ھ، ۵۳۲۸۶ھ، ۵۳۳۸۶ھ، ۵۳۴۸۶ھ، ۵۳۵۸۶ھ، ۵۳۶۸۶ھ، ۵۳۷۸۶ھ، ۵۳۸۸۶ھ، ۵۳۹۸۶ھ، ۵۴۰۸۶ھ، ۵۴۱۸۶ھ، ۵۴۲۸۶ھ، ۵۴۳۸۶ھ، ۵۴۴۸۶ھ، ۵۴۵۸۶ھ، ۵۴۶۸۶ھ، ۵۴۷۸۶ھ، ۵۴۸۸۶ھ، ۵۴۹۸۶ھ، ۵۵۰۸۶ھ، ۵۵۱۸۶ھ، ۵۵۲۸۶ھ، ۵۵۳۸۶ھ، ۵۵۴۸۶ھ، ۵۵۵۸۶ھ، ۵۵۶۸۶ھ، ۵۵۷۸۶ھ، ۵۵۸۸۶ھ، ۵۵۹۸۶ھ، ۵۶۰۸۶ھ، ۵۶۱۸۶ھ، ۵۶۲۸۶ھ، ۵۶۳۸۶ھ، ۵۶۴۸۶ھ، ۵۶۵۸۶ھ، ۵۶۶۸۶ھ، ۵۶۷۸۶ھ، ۵۶۸۸۶ھ، ۵۶۹۸۶ھ، ۵۷۰۸۶ھ، ۵۷۱۸۶ھ، ۵۷۲۸۶ھ، ۵۷۳۸۶ھ، ۵۷۴۸۶ھ، ۵۷۵۸۶ھ، ۵۷۶۸۶ھ، ۵۷۷۸۶ھ، ۵۷۸۸۶ھ، ۵۷۹۸۶ھ، ۵۸۰۸۶ھ، ۵۸۱۸۶ھ، ۵۸۲۸۶ھ، ۵۸۳۸۶ھ، ۵۸۴۸۶ھ، ۵۸۵۸۶ھ، ۵۸۶۸۶ھ، ۵۸۷۸۶ھ، ۵۸۸۸۶ھ، ۵۸۹۸۶ھ، ۵۹۰۸۶ھ، ۵۹۱۸۶ھ، ۵۹۲۸۶ھ، ۵۹۳۸۶ھ، ۵۹۴۸۶ھ، ۵۹۵۸۶ھ، ۵۹۶۸۶ھ، ۵۹۷۸۶ھ، ۵۹۸۸۶ھ، ۵۹۹۸۶ھ، ۶۰۰۸۶ھ، ۶۰۱۸۶ھ، ۶۰۲۸۶ھ، ۶۰۳۸۶ھ، ۶۰۴۸۶ھ، ۶۰۵۸۶ھ، ۶۰۶۸۶ھ، ۶۰۷۸۶ھ، ۶۰۸۸۶ھ، ۶۰۹۸۶ھ، ۶۱۰۸۶ھ، ۶۱۱۸۶ھ، ۶۱۲۸۶ھ، ۶۱۳۸۶ھ، ۶۱۴۸۶ھ، ۶۱۵۸۶ھ، ۶۱۶۸۶ھ، ۶۱۷۸۶ھ، ۶۱۸۸۶ھ، ۶۱۹۸۶ھ، ۶۲۰۸۶ھ، ۶۲۱۸۶ھ، ۶۲۲۸۶ھ، ۶۲۳۸۶ھ، ۶۲۴۸۶ھ، ۶۲۵۸۶ھ، ۶۲۶۸۶ھ، ۶۲۷۸۶ھ، ۶۲۸۸۶ھ، ۶۲۹۸۶ھ، ۶۳۰۸۶ھ، ۶۳۱۸۶ھ، ۶۳۲۸۶ھ، ۶۳۳۸۶ھ، ۶۳۴۸۶ھ، ۶۳۵۸۶ھ، ۶۳۶۸۶ھ، ۶۳۷۸۶ھ، ۶۳۸۸۶ھ، ۶۳۹۸۶ھ، ۶۴۰۸۶ھ، ۶۴۱۸۶ھ، ۶۴۲۸۶ھ، ۶۴۳۸۶ھ، ۶۴۴۸۶ھ، ۶۴۵۸۶ھ، ۶۴۶۸۶ھ، ۶۴۷۸۶ھ، ۶۴۸۸۶ھ، ۶۴۹۸۶ھ، ۶۵۰۸۶ھ، ۶۵۱۸۶ھ، ۶۵۲۸۶ھ، ۶۵۳۸۶ھ، ۶۵۴۸۶ھ، ۶۵۵۸۶ھ، ۶۵۶۸۶ھ، ۶۵۷۸۶ھ، ۶۵۸۸۶ھ، ۶۵۹۸۶ھ، ۶۶۰۸۶ھ، ۶۶۱۸۶ھ، ۶۶۲۸۶ھ، ۶۶۳۸۶ھ، ۶۶۴۸۶ھ، ۶۶۵۸۶ھ، ۶۶۶۸۶ھ، ۶۶۷۸۶ھ، ۶۶۸۸۶ھ، ۶۶۹۸۶ھ، ۶۷۰۸۶ھ، ۶۷۱۸۶ھ، ۶۷۲۸۶ھ، ۶۷۳۸۶ھ، ۶۷۴۸۶ھ، ۶۷۵۸۶ھ، ۶۷۶۸۶ھ، ۶۷۷۸۶ھ، ۶۷۸۸۶ھ، ۶۷۹۸۶ھ، ۶۸۰۸۶ھ، ۶۸۱۸۶ھ، ۶۸۲۸۶ھ، ۶۸۳۸۶ھ، ۶۸۴۸۶ھ، ۶۸۵۸۶ھ، ۶۸۶۸۶ھ، ۶۸۷۸۶ھ، ۶۸۸۸۶ھ، ۶۸۹۸۶ھ، ۶۹۰۸۶ھ، ۶۹۱۸۶ھ، ۶۹۲۸۶ھ، ۶۹۳۸۶ھ، ۶۹۴۸۶ھ، ۶۹۵۸۶ھ، ۶۹۶۸۶ھ، ۶۹۷۸۶ھ، ۶۹۸۸۶ھ، ۶۹۹۸۶ھ، ۷۰۰۸۶ھ، ۷۰۱۸۶ھ، ۷۰۲۸۶ھ، ۷۰۳۸۶ھ، ۷۰۴۸۶ھ، ۷۰۵۸۶ھ، ۷۰۶۸۶ھ، ۷۰۷۸۶ھ، ۷۰۸۸۶ھ، ۷۰۹۸۶ھ، ۷۱۰۸۶ھ، ۷۱۱۸۶ھ، ۷۱۲۸۶ھ، ۷۱۳۸۶ھ، ۷۱۴۸۶ھ، ۷۱۵۸۶ھ، ۷۱۶۸۶ھ، ۷۱۷۸۶ھ، ۷۱۸۸۶ھ، ۷۱۹۸۶ھ، ۷۲۰۸۶ھ، ۷۲۱۸۶ھ، ۷۲۲۸۶ھ، ۷۲۳۸۶ھ، ۷۲۴۸۶ھ، ۷۲۵۸۶ھ، ۷۲۶۸۶ھ، ۷۲۷۸۶ھ، ۷۲۸۸۶ھ، ۷۲۹۸۶ھ، ۷۳۰۸۶ھ، ۷۳۱۸۶ھ، ۷۳۲۸۶ھ، ۷۳۳۸۶ھ، ۷۳۴۸۶ھ، ۷۳۵۸۶ھ، ۷۳۶۸۶ھ، ۷۳۷۸۶ھ، ۷۳۸۸۶ھ، ۷۳۹۸۶ھ، ۷۴۰۸۶ھ، ۷۴۱۸۶ھ، ۷۴۲۸۶ھ، ۷۴۳۸۶ھ، ۷۴۴۸۶ھ، ۷۴۵۸۶ھ، ۷۴۶۸۶ھ، ۷۴۷۸۶ھ، ۷۴۸۸۶ھ، ۷۴۹۸۶ھ، ۷۵۰۸۶ھ، ۷۵۱۸۶ھ، ۷۵۲۸۶ھ، ۷۵۳۸۶ھ، ۷۵۴۸۶ھ، ۷۵۵۸۶ھ، ۷۵۶۸۶ھ، ۷۵۷۸۶ھ، ۷۵۸۸۶ھ، ۷۵۹۸۶ھ، ۷۶۰۸۶ھ، ۷۶۱۸۶ھ، ۷۶۲۸۶ھ، ۷۶۳۸۶ھ، ۷۶۴۸۶ھ، ۷۶۵۸۶ھ، ۷۶۶۸۶ھ، ۷۶۷۸۶ھ، ۷۶۸۸۶ھ، ۷۶۹۸۶ھ، ۷۷۰۸۶ھ، ۷۷۱۸۶ھ، ۷۷۲۸۶ھ، ۷۷۳۸۶ھ، ۷۷۴۸۶ھ، ۷۷۵۸۶ھ، ۷۷۶۸۶ھ، ۷۷۷۸۶ھ، ۷۷۸۸۶ھ، ۷۷۹۸۶ھ، ۷۸۰۸۶ھ، ۷۸۱۸۶ھ، ۷۸۲۸۶ھ، ۷۸۳۸۶ھ، ۷۸۴۸۶ھ، ۷۸۵۸۶ھ، ۷۸۶۸۶ھ، ۷۸۷۸۶ھ، ۷۸۸۸۶ھ، ۷۸۹۸۶ھ، ۷۹۰۸۶ھ، ۷۹۱۸۶ھ، ۷۹۲۸۶ھ، ۷۹۳۸۶ھ، ۷۹۴۸۶ھ، ۷۹۵۸۶ھ، ۷۹۶۸۶ھ، ۷۹۷۸۶ھ، ۷۹۸۸۶ھ، ۷۹۹۸۶ھ، ۸۰۰۸۶ھ، ۸۰۱۸۶ھ، ۸۰۲۸۶ھ، ۸۰۳۸۶ھ، ۸۰۴۸۶ھ، ۸۰۵۸۶ھ، ۸۰۶۸۶ھ، ۸۰۷۸۶ھ، ۸۰۸۸۶ھ، ۸۰۹۸۶ھ، ۸۱۰۸۶ھ، ۸۱۱۸۶ھ، ۸۱۲۸۶ھ، ۸۱۳۸۶ھ، ۸۱۴۸۶ھ، ۸۱۵۸۶ھ، ۸۱۶۸۶ھ، ۸۱۷۸۶ھ، ۸۱۸۸۶ھ، ۸۱۹۸۶ھ، ۸۲۰۸۶ھ، ۸۲۱۸۶ھ، ۸۲۲۸۶ھ، ۸۲۳۸۶ھ، ۸۲۴۸۶ھ، ۸۲۵۸۶ھ، ۸۲۶۸۶ھ، ۸۲۷۸۶ھ، ۸۲۸۸۶ھ، ۸۲۹۸۶ھ، ۸۳۰۸۶ھ، ۸۳۱۸۶ھ، ۸۳۲۸۶ھ، ۸۳۳۸۶ھ، ۸۳۴۸۶ھ، ۸۳۵۸۶ھ، ۸۳۶۸۶ھ، ۸۳۷۸۶ھ، ۸۳۸۸۶ھ، ۸۳۹۸۶ھ، ۸۴۰۸۶ھ، ۸۴۱۸۶ھ، ۸۴۲۸۶ھ، ۸۴۳۸۶ھ، ۸۴۴۸۶ھ، ۸۴۵۸۶ھ، ۸۴۶۸۶ھ، ۸۴۷۸۶ھ، ۸۴۸۸۶ھ، ۸۴۹۸۶ھ، ۸۵۰۸۶ھ، ۸۵۱۸۶ھ، ۸۵۲۸۶ھ، ۸۵۳۸۶ھ، ۸۵۴۸۶ھ، ۸۵۵۸۶ھ، ۸۵۶۸۶ھ، ۸۵۷۸۶ھ، ۸۵۸۸۶ھ، ۸۵۹۸۶ھ، ۸۶۰۸۶ھ، ۸۶۱۸۶ھ، ۸۶۲۸۶ھ، ۸۶۳۸۶ھ، ۸۶۴۸۶ھ، ۸۶۵۸۶ھ، ۸۶۶۸۶ھ، ۸۶۷۸۶ھ، ۸۶۸۸۶ھ، ۸۶۹۸۶ھ، ۸۷۰۸۶ھ، ۸۷۱۸۶ھ، ۸۷۲۸۶ھ، ۸۷۳۸۶ھ، ۸۷۴۸۶ھ، ۸۷۵۸۶ھ، ۸۷۶۸۶ھ، ۸۷۷۸۶ھ، ۸۷۸۸۶ھ، ۸۷۹۸۶ھ، ۸۸۰۸۶ھ، ۸۸۱۸۶ھ، ۸۸۲۸۶ھ، ۸۸۳۸۶ھ، ۸۸۴۸۶ھ، ۸۸۵۸۶ھ، ۸۸۶۸۶ھ، ۸۸۷۸۶ھ، ۸۸۸۸۶ھ، ۸۸۹۸۶ھ، ۸۹۰۸۶ھ، ۸۹۱۸۶ھ، ۸۹۲۸۶ھ، ۸۹۳۸۶ھ، ۸۹۴۸۶ھ، ۸۹۵۸۶ھ، ۸۹۶۸۶ھ، ۸۹۷۸۶ھ، ۸۹۸۸

اس معجزہ اور حیرت انگیز واقعہ کو جاسوسوں نے حیدر اللہ سے بتایا اس نے عربیہ مسجد کے قاصد بھجوا کر مجھے خبر ملی ہے حسین کنواں کھودتے ہیں اور پانی پیتے ہیں چنانچہ تم میرا خط ملتے ہی پہلے کوشش کرو کہ ان تک پانی نہ پہنچ سکے حسین اور ان کے اصحاب کو چاروں طرف سے گھیر لو اور انہیں ایسا ہی سلوک کرو جیسا کہ عثمان کے ساتھ کیا گیا تھا، حکم کے مطابق عربیہ مسجد کے امام حسین اور آپ کے اصحاب پر پہلے سے زیادہ سختی کرنا تاکہ انہیں کہیں سے پانی میسر نہ ہو سکے۔

یزید بن حسین ہمدانی اور عربیہ مسجد کی ملاقات

جب یاس کا برا داشت کرنا مخصوصا بچوں کے لئے اسکان سے باہر ہو گیا تو امام حسین کی سیدہ زینب بن جحش ہمدانی جو کہ زید و جبارت میں مشہور تھے امام حسین کی خدمت میں حاضر ہوئے اور مجھے اجازت دیجئے کہ عربیہ مسجد کے یاس جاؤں اور اس سے پانی کے بارے میں جانچ لوں کہ اس کا ارادہ بدل جائے، امام حسین نے فرمایا: تمہیں اختیار ہے، چنانچہ وہ سلام کے بغیر عربیہ مسجد کے خیمہ میں پہنچ گئے کہا: اے ہمدانی! تم مجھے سلام کیوں نہیں کیا؟ کیا میں مسلمان نہیں ہوں؟ کیا میں خدا اور اس کے رسول پر ایمان رکھتا ہوں؟ کہیں پوچھنا ہوں؟ ہمدانی نے کہا: اگر تم تو کو مسلمان سمجھتے ہو تو پھر عزت رسول پر کیوں خودی کی قتل کا ارادہ کیوں کیا ہے اور اس فرات کا پانی ان پر کیوں بند کیا ہے جس سے صحرا کے جانور اور پانی پینے کی اجازت نہیں ہے تو وہ پیاسے جائیں ان تمام ہاتوں کے باوجود تم یہ گمان کرتے ہو کہ خدا اور اس کے رسول کو پتہ چلتا ہے؟

۱۔ منتقلی امین مخولری ص ۲۱۵، ج ۱

پانی لانا

اس وقت خیموں میں ہر لحاظ پر سختی جاری تھی امام حسین نے اپنے بھائی عباس بن علی بن ابی طالب سے کہا کہ میں پیادہ سپاہیوں کے ساتھ پانی لانے کیلئے روانہ کیا، اس جماعت کے ساتھ میں شکریں ادا کرتا ہوں، وہ سخت فرات کے کنارے پہنچ گئے، نافع بن ہلال مخصوص پرچم لئے آگے آگے چل رہے تھے کہ انہوں نے پوچھا: کون ہو تم؟ انہوں نے اپنا تعارف کرایا، انہوں نے کہا: بھائی خوش آمدید یہاں آپ کیوں آئے ہیں، میں اسلئے آیا ہوں تاکہ اس پانی سے پیاسہ بجھاؤں جس سے تمہیں محروم کر رکھا ہے، انہوں نے کہا: بیو، تمہیں گواہ ہے، انہوں نے ہلال نے کہا: خدا کی قسم میں اس وقت تک پانی نہیں پی سکتا جب تک حسین اور ان کے

عروبن حاج کی فوج نے نافع بن مال کے ساتھیوں کو دیکھ لیا، عروبن حاج نے کہا: وہ نہیں پی سکتے اسی کیلئے یہاں پہلا پہرہ لگا یا گیا ہے، عروبن حاج کی فوج جب زیادہ نزدیک عباس بن علی سے پہنچا تو اس شخص سے فرمایا: ہتھکڑیاں بھریو، پیادہ لوگوں نے ایسا ہی کیا جب اس کے پاس پہنچوں نے پانی بھرنے سے روکنے کی کوشش کی تو عباس بن علی اور نافع بن مال نے اس اور انھیں جنگ میں بٹھالیا، سواروں نے عروبن حاج کی فوج کا راستہ بند کر دیا تاکہ پیادہ اس علاقے سے دور چلے جائیں اور غیور ملک پہنچا دیں۔

عروبن حاج کے فوجیوں نے سواروں پر حملہ کر کے انہیں کچھ پیچھے ہٹا دیا یہاں تک کہ ان کے نیزہ سے اسے حاج کا ایک سپاہی شدید زخمی ہو گیا اور زیادہ خون بہہ جانے کے سبب اسے اصحاب امینہ کی خدمت میں واپس آگئے۔

امام حسین اور عروبن حاج کی ملاقات

امام حسین نے اپنے انصار میں سے عروبن فطرانہ اور کئی دیگر بنی ساعدہ کے پاس روانہ کیا۔ رات کے وقت دونوں فوجوں کے درمیان مجھ سے ملاقات کیلئے آجاکو عروبن ساعدہ نے قبول کیا۔ امام حسین علیہ السلام اپنے پیسے اصحاب کے ساتھ اور عروبن ساعدہ اپنے پیسے فوجیوں کے ساتھ و مدد امام حسین بنائے۔ اصحاب میں سے عباس بن علی اور علی اکبر کے علاوہ سب کو امام حسین نے بھی اپنے بیٹے اور غلام کو اپنے پاس رکھا اور باقی کو واپس بھیج دیا۔ پہلے امام حسین فرمایا: اے سعد کے بیٹے! کیا تم مجھ سے قتال کرو گے؟ اور اس خدا سے نہیں تو فوج بڑی ہے۔ اس کے جواباً ہے: میں جس کا بیٹا ہوں اسے تم اچھی طرح جانتے ہو کیا تم اس گروہ کو جھوڑ کر مارنا چاہتے ہو؟ اس نے نہیں خدا کا تقرب حاصل ہوگا۔

۱۔ متاع الطالین ص ۱۱، ۲۔ نفس المہوم ص ۲۱۹

۱۔ متاع الطالین ص ۱۱، ۲۔ سیدہ امجاد ص ۲۰، ۳۔ مکرر

امام حسین کے نام ابن سعد کا خط

امام حسین کے بھائی ابن سعد اپنی خیمہ کاہن میں واپس چلا گیا اور عبداللہ بن زیاد کو ایک خط میں لکھا خدا

فنی کی لگ کو خاموش کرے اور لوگوں میں اتحاد پیدا کر دے، جسے کہتے ہیں یا میں اسی جگہ واقع ہے جہاں سے آیا ہوں یا اسلامی ممالک کی کسی سرحد پر چلے جاؤں اور ایک سلمان کے مانند زندگی چلے جاؤں وہاں بڑید جو چاہے فیصلہ کرے، اسی میں امت کی بھلائی ہے۔

افترار و بہتان

عقیدہ بن سمان کہتے ہیں میں مدینہ سے مکہ تک اور مکہ سے عراق تک امام حسین کا مکہ، درمیان راہ، عراق میں اور فوج سے مقابلہ کے وقت آپ سے شہادت تک ہیں موجود ہوا آپ نے جو بات کہی وہ میں نے سنی خدا کی قسم جو کچھ لوگ کہتے ہیں اور گمان کرتے ہیں کہ آپ میں بڑید کی بیعت کر لیتا ہوں یا مجھے اسلامی سرحدوں میں سے کسی سرحد پر بھیج دے آپ نے کہا کہی ہاں یہ فرمایا: مجھے چھوڑ دو میں اس وسیع و عریض زمین پر لوگوں کی رائے معلوم کر سکوں گا بعض لوگوں نے لکھا ہے کہ ابن سعد نے کسی عیدائے کے پاس بھیجا اور کہلوا یا کہ اگر کوئی تم سے یہ چیزیں طلب کرے تو تم قبول نہ کرو تو اس پر غلظت کرو گے۔

جواب عبد اللہ

عبد اللہ نے اپنے مددگاروں کو یہ خط پڑھلایا اور کہا: ابن سعد اپنے خاندان و اہل میں لگا ہوا ہے،

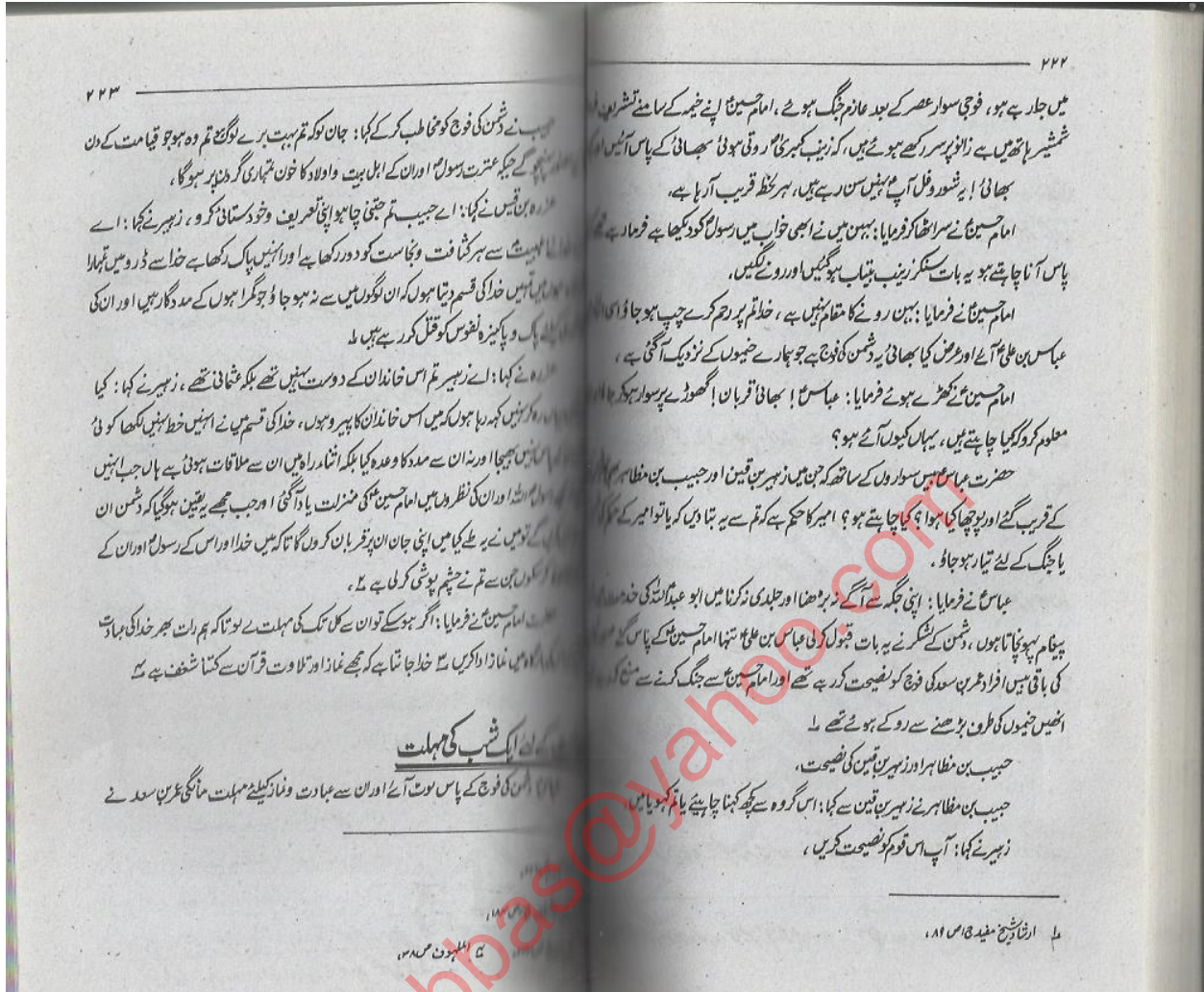
۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۵ ص ۸۷

۲۔ عقیدہ بن سمان امام بن کثیر و جہاب کا غلام تھا مشہور کے دن ابن سعد کی فوج انہیں پکڑ کر ابن سعد کے اٹھیں آزاد کر دیا چنانچہ حضور کے کچھ حواری انہیں سے منقول ہیں،

۳۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۸۳

نومحرم

۱۸۹۳ء میں مولانا نے کراچی، قلعہ حسن، قلعہ قزوین، ۱۹۲۵ء، کراچی، شریعہ ص ۵۶، کتاب الاشراف ص ۱۳۳،



میں جبار ہے ہو، فوجی سوار عصر کے بعد عازم جنگ ہوئے، امام حسینؑ اپنے خیمہ کے سامنے تشریف لے
 شمشیر ہاتھ میں ہے زانو پر سر رکھے ہوئے ہیں، کہ زینب کبریٰؑ روتی ہوئی بھائی کے پاس آئیں اور
 بھائی! یہ شور و فل آپ نہیں سن رہے ہیں، ہر کھڑے قریب آ رہا ہے۔

امام حسینؑ نے سر اٹھا کر فرمایا: بہن میں نے ابھی خواب میں رسولؐ کو دیکھا ہے فرما رہے ہیں
 پاس آنا چاہتے ہو یہ بات سنکر زینبؑ تباہ ہو گئیں اور رونے لگیں۔

امام حسینؑ نے فرمایا: بہن رونے کا مقام نہیں ہے، خلو تم پر رحم کرے چپ ہو جاؤ اور
 عباسؑ بن علیؑ آئے اور عرض کیا بھائی یہ دشمن کی فوج ہے جو ہمارے خیموں کے نزدیک آگئی ہے،
 امام حسینؑ نے کھڑے ہوئے فرمایا: عباسؑ! بھائی قربان! گھوڑے پر سوار ہو کر جاؤ
 معلوم کرو لگیا چاہتے ہیں، یہاں کیوں آئے ہو؟

حضرت عباسؑ بن علیؑ نے فرمایا: امام حسینؑ نے فرمایا: اور جیب بن مظاہرؑ
 کے قریب گئے اور پوچھا کیا ہوا؟ کیا چاہتے ہو؟ امیر کا حکم ہے کہ تم سے یہ تباہی کرے یا تو امیر کے حکم
 یا جنگ کے لئے تیار ہو جاؤ۔

عباسؑ نے فرمایا: اپنی جگہ سے آگے نہ بڑھنا اور جلدی نہ کرنا میں ابو عبد اللہؑ کی خدمت میں
 پہنچاں پہنچاں ہوں، دشمن کے لشکر نے یہ بات قبول کر لی عباسؑ بن علیؑ تنہا امام حسینؑ کے پاس گئے
 کی باقی میں افراد عربین سوار فوج کو نصیحت کر رہے تھے اور امام حسینؑ سے جنگ کرنے سے منع کر رہے
 انہیں خیموں کی طرف بڑھنے سے روکے ہوئے تھے۔

جیب بن مظاہرؑ اور زہیر بن قینؑ کی نصیحت،
 جیب بن مظاہرؑ نے زہیر بن قینؑ سے کہا: اس گروہ سے کچھ کہنا چاہتے یا تم کہہ دیا میں
 زہیر نے کہا: آپ اس قوم کو نصیحت کریں،

سار کا جواب

اسی طرح ان لوگوں کی کہیں گے؟ یہی کہیں گے کہ ہم نے اپنے بڑے سالار اور اپنے چا زاد
 مال کو دشمنوں کے غریب بچھو دیا ان کی طرف سے دشمن پر تیرہ نہیں چلائے اور دشمن
 کیلئے نہیں خدا کی قسم ہم ایسا ہرگز نہیں کریں گے بلکہ اپنی جان مال اور اہل و عیال
 آپ کی طرف سے جنگ کریں گے اور جہاں آپ جائیں گے آپ کے ساتھ جلیں گے

شب عاشورا امام کا خطبہ

عرب کے وقت امام حسینؑ اپنے اصحاب و اہل کو کربلا کا مامور بنا کر بھی بابا کی خدمت میں حاضر ہوا تاکہ آپ کا خطہ سنوں اگرچہ میں بیمار تھا باہانے اپنے
اُتْبٰی عَلٰی اللّٰہِ اَحْسَنَ الثَّناءِ وَ اَحْمَدُہُ عَلٰی الشَّرَاءِ وَ الضَّرَامِ
عَلٰی اَنْ اَكُوْمُنَا بِالْبُوءِ وَ جَعَلْتَ لَنَا اَسْمَاعُہُ وَ اَنْصَارُہُ وَ اَلْمَدَدَ
وَ قَفَّہُنَا فِی الدِّینِ فَاجْعَلْنَا لَكَ مِنَ الشَّاكِرِیْنَ . اَمَّا بَعْدُ مَا لَی
اَوْفٰی وَ لَا خَیْرَ اِنْ اَصْحَابِیْ وَ لَا اَنْتَ یَبْتَ اَبُو وَ لَا اَوْفَلْ
اللّٰہُ جَمِیْعًا عَنِّیْ خَیْرًا . اَلَا وَاِنِّیْ لَاظُنُّ بِیْ یَوْمُنَا مِنْ مَّوَلَا
اَزَنْتُ لَکُمْ جَمِیْعًا فَانْظُرُوْا فِیْ حِلِّیْ لَیْسَ عَلَیْکُمْ مِیْنِیْ
غَیْبِکُمْ فَاتَّجِدُوْہُ جَمَلًا وَلِیَاخُذْ کُلُّ رَجُلٍ مِنْکُمْ بِیَدِیْ
فَحَزَمَ اللّٰہُ جَمِیْعًا ثُمَّ تَفَرَّقُوْا فِی الْبِلَادِ فِی سَوَادِکُمْ وَ
فَاِنَّ الْقَوْمَ یَطْلُبُوْنِیْ وَلَوْ اَسَابُوْنِیْ لَہُوَا عَنْ طَلَبِ غَیْرِیْ

ہم نے ان کی بات سن کر فرمایا: خدا تمہاری مغفرت کرے میں نے تم سے اپنی بیعت اٹھا لی ہے
 اور اس کے لیے جو ان کے دل میں تھا وہ اب تمہاری طرف سے ہے۔ تمہاری طرف سے ہے۔ تمہاری طرف سے ہے۔
 تمہاری طرف سے ہے۔ تمہاری طرف سے ہے۔ تمہاری طرف سے ہے۔ تمہاری طرف سے ہے۔

فرمایا: تو یہ لباس اپنے اس بیٹے کو دید جو تمہارے ساتھ ہے تاکہ وہ انہیں خرچ
کے چھوڑنے کی کوشش کرے، لکھا ہے کہ امام ربیع نے اسے پانچ ایسے لباس دیے
تاکہ ایک قیمت ہزار دینار تھا۔

دانشپرس

انہوں نے امام حسین سے عرض کی: کیا فہرست شہداء میں میرا بھی نام ہے؟
انہوں نے شفقت کے ساتھ فرمایا: جیسا تہدی نظریں موت کہی ہے؟ عرض کیا جیسا! شہدست زیارہ

۱۰۱: چاقو قربان! تم بھی شہید ہو گے، پھر خدای سانس کیو فرما یا، میرا بیٹا صفحہ بھی شہید ہو گا
میں کی چاکا دشمن کا لشکر خیر میں پر حملہ کر کے شیر خوار کو شہید کرے گا،

فرمایا: چچا تیرے خدا، اصغر اس وقت شہید ہوگا جب پانی یاد دودھ نہ ملنے کی
 حالت میں اس کو پھر تک پانی طلب کروں گا اس وقت ظالم تیرے اسے شہید کریں گے،
 ابراہیم فرماتے ہیں: یہ بات مفکر قاسم زار زار روئے اس کے ساتھ ہم سب بھی رونے لگے جس
 پر ابو بکرؓ:

یہاں پنجم نے ترجمہ میں تصرف کیا ہے، مترجم،

قف ہے آپ کے بعد زندہ رہنے پر،

اس کے بعد علم بنی ہو جا اٹھے اور کہا: اب تمہارا چھوٹے کے بعد خدا کے سامنے کیا خدا کی قسم میں اس نیزہ سے ان کے سینے چٹائی کروں گا اور اس وقت تک اپنی تلوار تار ہوگا، ہاتھ میں تلوار کو قبضہ ہے اور اگر میرے پاس ہتھیار بھی نہیں ہوگا تو میں ان پر تیرھوں کی بات کرنا میں آپ کو تیس چھوڑوں گا یہاں تک کہ خدا خود شہید ہو جائے کہ میں نے آپ کے بارے میں میں ان کی حرمت کی حفاظت کی ہے خدا کی قسم اگر مجھے یہ معلوم ہو جائے کہ میں مارا جاؤں اور زندہ کیا جاؤں اور اس کے بعد میرے چلے جائیں۔ اور پھر زندہ کیا جاؤں اور اس کے بعد میرے کیا جائے اور میرے ساتھ ستر مرتبہ یہی سلوک کیا جائے تو میں آپ کا ساتھ نہیں چھوڑوں گا یہاں تک کہ قربان کر دوں اور میں اس کیسوں نہ کروں ایک مرتبہ قتل ہو کر بدی سرفرازی حاصل ہو جائے گا پھر زہر میں تین گھنٹے ہوئے اور کہا: خدای قسم مجھے یہ بات پسند ہے کہ میں آپ کے بعد پھر زندہ کیا جاؤں پھر قتل کیا جاؤں اور سزاوارا یہاں ہی ہو یہاں تک کہ خدا آپ کو اور آپ کو قتل ہونے سے بچائے،

زہیر کے نبوا صحاب میں سے ایک جماعت اٹھی اور اس نے بھی زبان پر ایسے ہی شہادے جاری کئے امام حسین نے ان کے حق میں دعائے خیر کی اور اپنے خیمہ میں لوٹ آئے ۔

محمد بن اسثیر

شب عاشور محمد بن بشیر حضرمی کو خبر ملی کہ رے کی سرحد پر قہار ابنیا گزرا گیا

[illegible]

امام زین العابدینؑ فرماتے ہیں: غیب عاشقوں میں اپنے والد کے پاس پہنچا ہوا تھا میری پھوپھی زینبؓ
 والدہ صاحبہ میری تیار واری کر رہی تھیں ناگہاں میرے والد کھڑے ہوئے اور دوسرے خیمہ میں
 گئے وہاں ابو ذر غفاریؓ کا غلام ہرجیرؓ ہ آپ کی خدمت میں حاضر تھا اور ان کی تلوار پر سان
 والہ اشعار پڑھ رہے تھے

يَا دَهْرُ أَفْ لَكَ مِنْ خَلِيلٍ كَمْ لَكَ بِالْإِشْرَاقِ وَالْأَحْيَالِ
 مِنْ صَاحِبٍ وَطَالِبٍ قَتِيلٍ وَالْدَهْرُ لَا يَفْتَعُ بِالتَّيْدِيلِ
 وَأَنَا الْأَمْرُ إِلَى الْخَلِيلِ وَكُلُّ حَيٍّ سَائِلٌ شَيْبِلِي ۝

والدہ نے یہی اشعار دو تین بار دہرائے میں آپ کا منہ صدمہ کھ گیا جس سے مجھے رونا آ گیا لیکن میں نے
 اور نادمہوش رہا یہ سمجھ گیا کہ لانا نازل ہو چکی ہے لیکن جب میری پھوپھی زینبؓ نے یہ اشعار
 سنا دیے تو تابو نہ رکھ سکیں، چنانچہ انھیں چلیں، چارو زمین پر گھسٹی جاتی تھی والد کے پاس پہنچیں اور کہا
 کہ میری زندگی کا خاتمہ ہو گیا ہوتا، اے دنیا سے اٹھ جانے والوں کے چاشنیں اور سپاندگان کی پناہ
 میں ہوں نا ظہیر میرے والد ظہیر اور میرے بھائی حسن میرے ساتھ نہیں ہیں،

میں نے بہن کی طرف دیکھا اور فرمایا: بہن میرے دامن ہاتھ سے نہ چھوڑو آپ کی آنکھوں میں
 ہونے لگے تھکے کہ آپ نے فرمایا اگر پرندہ کو اس کے حال پر چھوڑ دیتے تو وہ اکلیم کر لیتا،
 میں نے عرض کیا: کیا آپ کو ظلم و ستم کے ساتھ قتل کریں گے اس سے مرادل پاش پاش ہو گیا یہ کہہ کر
 اٹھ کر میان چاک کیا اور بے ہوش ہو کر گر پڑیں،

امام حسینؑ اٹھے انہیں ہوش میں لائے اور فرمایا: بہن! اللہ کا غصہ اختیار کرو، میرے دامن ہاتھ سے
 نہ اٹھان لو کہ تمام اہل ذہن کو موت آئے گی اور آسمان والے بھی نہیں رہیں گے، ہر چہ زفا ہو جائے گی،

اس کا نام سبب الاشرف میں "حی" دکر کیا ہے، ہم نماز دے تھے کیا ہے،

میرے اوپر کوکتا برا دوست ہے صبح و شام کہنے سننے کی تجھے آرزو رہتی ہے زمانہ کسی کی جگہ دوسرے کو قبول
 اور والد کے ہاتھ میں ہے، ہر زندہ دوست کی طرف بڑھ رہا ہے،

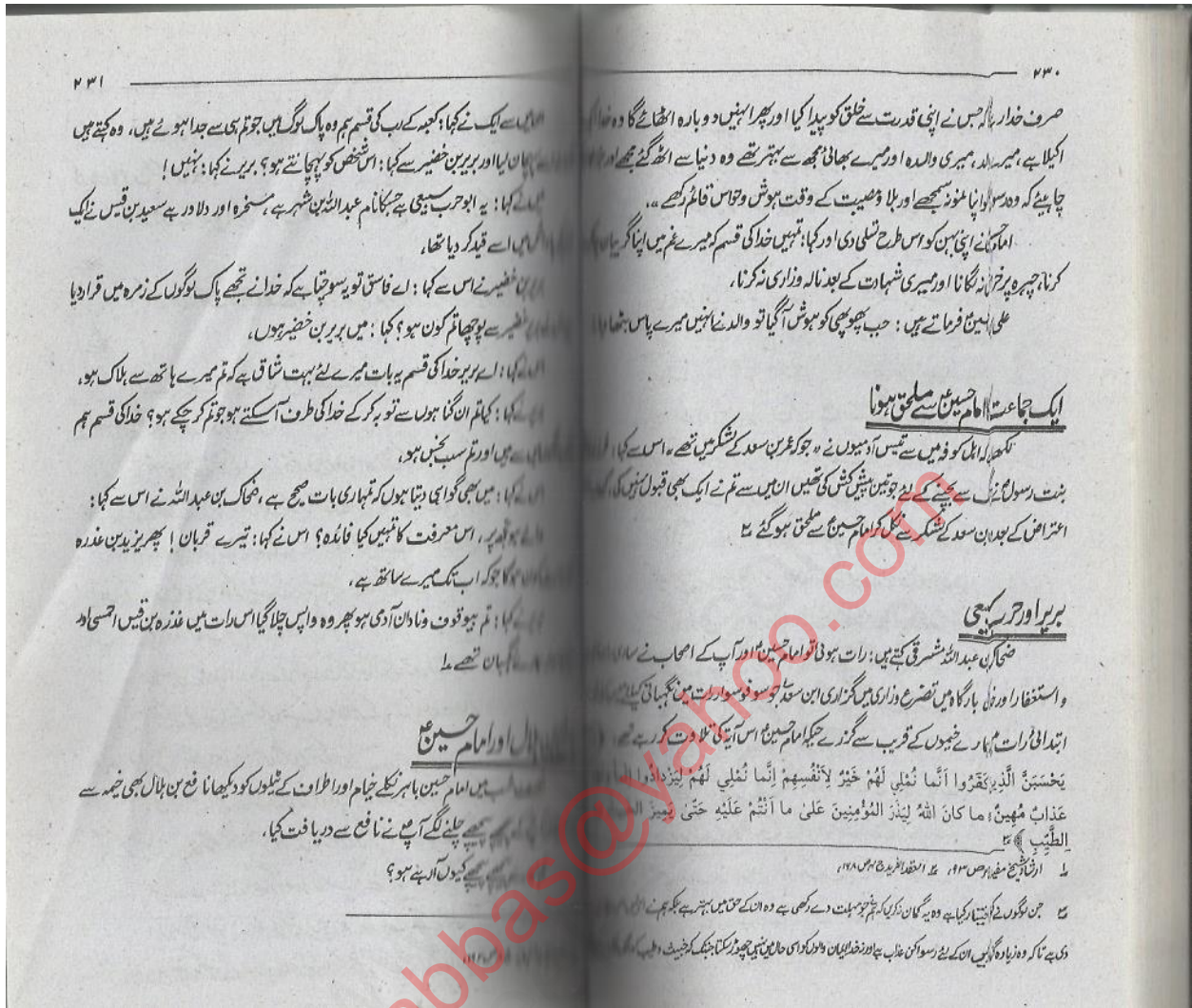
شہادت تک

امام زین العابدینؑ علیہ السلام سے منقول ہے کہ آپ نے فرمایا: جب میرے والد نے اصحاب
 میں سے تم سے اپنی بیعت اٹھالی ہے، تم آزا ہو، اور اصحاب و انصار نے شہادت پانے کا
 اور فداکاری پر زور دیا تو آپ نے ان کے حق میں دعائے خیر کی اور فرمایا: اپنے سر بلند کرو اور اپنی اپنی
 دیکھ لو، امام حسینؑ کے اصحاب نے سراٹھا کر جنت میں اپنی اپنی جگہ دیکھی آپ نے ہر ایک کے لئے
 کیا کہ آپ کے کسی مجھے کے ہوا صاحب بنی خرافہ دنیا دوسرے رونے سے نیروں اور تلواروں کے استعمال
 جنت میں جلد از جلد اپنی اپنی جگہ پہنچ جائیں گے

خندق

اصحاب بنی نے شرب عاشقوں کے چاروں طرف خندق کھودی تھی امام حسینؑ نے فرمایا
 پر جو زکر اور کرم یا میں انھیں خندق میں ڈال کر گنگا دو تارک دشمن خیلوں تک نہ پہنچ سکے ایک
 چھوڑ دیا گیا تھا جہاں امام کے انصار قیامت تھے یہ مدبر امام حسینؑ کیلئے بہت مفید تھی
 امام حسینؑ خیلوں سے باہر تشریف لائے اصحاب نے فرمایا کہ خیلوں کا ایک دوسرے
 نصب کیا جائے اور ایک خیمہ کی رسی دوسرے خیمہ کی رسی سے باندھ دی جائے، دشمن کو اپنے ساتھ
 اور پشت پر خیمہ قرار دینی اصحاب بنی کی تین سمتوں میں خیمہ ہوں اور وہ صرف سامنے کی
 متناظر کریں اس کے بعد امام حسینؑ اور آپ کے انصار اپنی جگہ واپس آگئے اور تمام رات نماز
 تضرع و زاری میں بسر کی اور چشم زدن کیلئے بھی کوٹا نہ سوجایا

ط خراج ج میں
 فَوَءُ إِذَا تُدْوَإُ لِيَذْفَعُ مُلْحِقَةً وَالْخَيْلُ بَيْنَ مَذْعَبِينَ وَخُكْرُوسِ
 كَلِمَاتٍ الْقُلُوبُ عَلَى الدُّرُوعِ كَأَنَّمَا يَنْهَاقُونَ عَلَى ذُهَابِ الْأَنْفُسِ
 يا اهدأ عينين واصحابي ۲۵، يا انساب الاشراف ج ۱ ص ۱۸۷



صوفی نے کہا: کوہ کے سب کی قسم ہم وہ پاک لوگ ہیں جو تم ہی سے جدا ہوئے ہیں، وہ کہتے ہیں
کہ ان کا نام بربرین خضر سے کہا: اس شخص کو پہچانتے ہو؟ بربرین کہا: نہیں!
اس نے کہا: یہ ابو حرب بھی ہے جہاں نام عبداللہ بن شہر ہے، مسخرہ اور دلاور ہے سید بن قیس نے ایک
سے کہا: اسے قید کر دیا تھا،

ابو حرب نے اس سے کہا: اے فاسق تو یہ سوچتا ہے کہ خدانے تجھے پاک لوگوں کے زمرہ میں قرار دیا
تو اسے پوچھا تم کون ہو؟ کہا: میں بربرین خضر ہوں،

اس نے کہا: اے بربر خدا کی قسم یہ بات میرے لئے بہت شاق ہے کہ تم میرے ہاتھ سے ہلاک ہو،
اس نے کہا: کاتم ان گناہوں سے تو ہرگز خدا کی طرف آسکتے ہو جو تم کو چکے ہو؟ خدا کی قسم ہم
میں اور تم سب سب ہیں،

اس نے کہا: میں بھی کوئی دینا ہوں کہ تمہاری بات صحیح ہے، نکاح بن عبداللہ نے اس سے کہا:
اے بربر، اس معرفت کا تمہیں کیا فائدہ؟ اس نے کہا: تیرے قربان! پھر یزید بن عذرہ
نے کہا: تم جو قوت و فدا دیا آدی ہو پھر وہ واپس چلا گیا اس رات میں عذرہ بن قیس اس کا
نام لیا تھا،

ابو امام حسین

ابو امام حسین باہر نکلے خیام اور اطراف کے ٹیلوں کو دیکھنا فتح بن ہلال بھی نجد سے
آئے تھے چلے گئے آپ نے نافع سے دریافت کیا،

کیوں آئے ہو؟

صرف خدا پر ایمان جس نے اپنی قدرت سے خلق کو پیدا کیا اور پھر انہیں دوبارہ اٹھائے گا وہ خدا کا
اکبر ہے، میرا والد، میری والدہ اور میرے بھائی مجھ سے بہتر تھے وہ دنیا سے اٹھ گئے تھے اور
چاہیے کہ وہ سر اٹھانا منو مجھے اور بلا وصیت کے وقت ہوش و توازن قائم رکھے،

امام نے اپنی بہن کو اس طرح تسلی دی اور کہا: تمہیں خدا کی قسم کہ میرے غم میں اپنا گریہ
کرنا، چہرہ پر غم نہ لگانا اور میری شہادت کے بعد مال و زاری نہ کرنا،
علی ابن ابی طالب سے ہیں: جب چھوٹی کو ہوش آگیا تو والد نے انہیں میرے پاس بٹھا دیا

ایک جامعہ امام بن عباس سے ملتی ہوئی

نکاح لڑا اہل کو فہم سے تیس آدمیوں نے جو عمر بن سعد کے لشکر میں تھے، اس سے کہا: رسول
بنت رسول اللہ سے چھپنے کے لئے جو تین پیش کش کی تھیں ان میں سے تم نے ایک بھی قبول نہیں کیا،
اعتراض کے بعد بن سعد کے لشکر سے نکل کر امام حسین سے ملتی ہو گئے تہا

بربر اور کربلا

ضحاک بن عبداللہ شمری کہتے ہیں: رات ہوئی تو امام حسین اور آپ کے اصحاب نے ساری رات
و استغفار اور نال بارگاہ میں تضرع و زاری میں گزار دی بن سعد جو سوار رات میں کربلا پہنچا
ابتدائی رات ہمارے خیوں کے قریب سے گزرے جبکہ امام حسین اس کی تلاوت کر رہے تھے،

يُحْسِنُونَ الَّذِي تَقْرَأُوا اَلَمْ نُنْعَلِي لَهُمْ خَيْرًا يَخْتَفِسُوهُمْ اِنَّمَا نُنْعَلِي لَهُمْ لِيُزَادُوا الْعَذَابَ
عَذَابُ مُهَيِّنٍ مَا كَانَ اللَّهُ لِيُنْذِرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَيَّ مَا اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْغَيْبُ
الظُّلُمُ ﴿٢٢﴾

۱۔ اور ان کے منہ پر ص ۱۲۳، ۲۲۔ انظر الفرق ۱۲۳ ص ۱۲۸

تہا جن لوگوں نے کہتے ہیں کہ یہ وہ گناہ ہیں جو ہر گناہ سے بڑھ کر ہیں وہ ان کے منہ پر ہے کہ جن
کی ہے ناک و دہریہ کو ایسی ان کے رسوا کن عذاب ہے اور خدا کی جان میں ہے جو نیکان جنگ کربلا

نافع نے عرض کیا: یا بن رسول اللہ! میں نے دیکھا کہ آپ دشمن کے لشکر کی طرف ہاتھ کی جان کا خوف محسوس ہوا،

امام حسین نے فرمایا: میں اطراف کا معاملہ کر لوں تاکہ یہ اندازہ ہو جائے کہ دشمن

ہے،

نافع کہتے ہیں: آپ واپس ہوئے اور میرا ہاتھ پکڑ کر فرمایا: خدا کی قسم یہ ایسا

رہے گا،

اس کے بعد مجھ سے فرمایا: ان دو پہاڑوں کے درمیان پورا ستھم دیکھ رہے ہو؟ میں اس سے نکل جاؤ اور خود کو بچاؤ،

نافع بن مالان نے خود کو امام کے قدموں پر گرا دیا اور عرض کیا اگر میں ایسا کروں تو میری جان

ماتم میں روئے خدا نے مجھ پر احسان کیا ہے کہ میں آپ کے سایہ میں شہادت پاؤں گا،

اس کے بعد امام حسینؑ نے سنا کہ زینبؑ کے حبیہ میں داخل ہوئے زمانہ کہتے ہیں کہ میں نے

انتظار کر رہا تھا میں نے سنا کہ زینبؑ نے امام حسینؑ سے کہا: کیا آپ نے اپنے مددگاروں کو

آپ جانتے ہیں کہ ہر ایک آپ کو تنہا نہیں چھوڑیں گے،

امام حسینؑ نے فرمایا: وہ ایسے ہی شہادت کے شقائق ہیں جس طرح پتھروں کے پست

نافع کہتے ہیں: یہ بات سکس حبیہ بن مظاہر کے پاس گئی ان سے مارتا بیان کیا،

میں امام کے حکم کا منتظر نہ ہوتا تو ابھی دشمن پر حملہ کر دیتا،

نافع کہتے ہیں: میں نے ان سے کہا: ابھی آپ اپنی زمین پر سب کے پاس ہیں کیا یہ

کر کے انہیں اپنی جان نزاری کا یقین دلائیں تاکہ غولوں کو سکون مل جائے،

حبیب نے امام کے انصار کو صدا دی سب آگئے اور اہل بیت کے خیموں کے پاس

اے رسول زادو! یہ ہماری شمشیریں ہیں ہم نے یہ قسم کھائی ہے کہ تمہارے دشمنوں

انہیں غلاف میں نہیں کھیں گے اور اپنے ان نیزوں کو دشمنوں کے سینوں میں اٹا دیں گے،

امام نے کہا: اے پاک سرشت جوان مردو، رسولؐ کی بیٹیوں اور امیر المؤمنینؑ کے بیٹوں کی

سفر کا مصائب زار زار رونے لگے ما

وقت امام حسینؑ کو ملکی سی نیند آگئی آنکھ کھلی تو فرمایا: میرے مددگارو! جانتے ہو میں نے

امام نے کہا: فرزند رسولؐ خدا کیا دیکھا ہے؟ فرمایا میں نے خواب میں چند کتوں کو دیکھا ہے

ان کے رخ کی کرنا چاہتے ہیں ان کے درمیان ایک اور کتا کو دیکھا جو دوسرے کتوں سے وحشی اور

کڑی تھا کہ وہ کوٹا ابرص لادی ہے جو مجھے قتل کرے گا، اس خواب کے بعد میں نے اپنے جدِ

سید کو دیکھا وہ بھی ان کے ساتھ تھے آنحضرتؐ نے مجھ سے فرمایا: بیٹا! شہید آل محمدؑ ہوا ہل سلاں

وہ ایک فرشتہ ہے جو آسمان سے نیچے آگیا ہے تاکہ تمہارا خون ہزرگ کی شیشی میں محفوظ کرے،

امام اس بات کا غماز ہے کہ اجل قریب اور اس دنیا کے فانی سے سفر کا وقت قریب ہے

امام حسینؑ نے اپنے اصحاب کے ساتھ ادا کی اور آسمان کی طرف ہاتھ بلند کر کے فرمایا:

اللّٰهُمَّ اِنِّیْ فِیْ كُلِّ کُذْبٍ وَرَجَائِیْ فِیْ کُلِّ شِدْقَةٍ، وَ اَنْتَ لِیْ فِیْ کُلِّ اَمْرٍ نَزَلٌ

وَعْدٌ، کَمْ مِنْهُمْ یَضَعُ فِیْهِ الْغَوَاذِ وَ تَقُولُ فِیْهِ الْحِجَلَةَ وَ یَخْذِلُ فِیْهِ

الْاَمْرَ وَ یَنْشِیْطُ فِیْهِ الْعَدُوَّ اَنْزَلْتُمْ بِکَ وَ شَکَوْتُمْ اِلَیْکَ رَغْبَةً مِّنْیَ الْبَلَاءِ عَمَّنْ

الْمَرْجُئَةِ وَ کَشَفْتُمْ فَاَنْتَ وَلِیُّ کُلِّ نِعْمَةٍ، وَ صَاحِبُ کُلِّ حَسَنَةٍ وَ مُنْتَهٰی کُلِّ

اَمْرٍ

ما نقل علی بن محمد بن مسلم ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴

لے اللہ! مشکوں میں تو بھی میرا سہارا ہے سختیوں میں تو بھی میری امید ہے کچھ نہ ہو رہا ہے اس میں تو میرے ملجا و ماویا ہے پالنے والے کئے علم ہیں جن سے دل ٹوٹ گیا چارہ سازی کا بار نہ رہا دوستوں کی کوئی عزت نہیں ہے دشمنوں کے طعنے ہیں میں تو کرتا ہوں کہ تجھ سے امید رکھنے سے دوسروں سے بے نیازی ہے، پس بند دروازہ دے اور امید کی کرن دکھا دے کہ تو بھی ہر نعمت کا مالک ہے و تمام خوبیاں تجھ سے اور تو بھی آرزوں کا مرکز ہے،

اس کے بعد امام حسین علیہ السلام اٹھے خطبہ پڑھا اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد اصحاب سے فرمایا مجھے اور قیس شہادت کا حکم دیا ہے لہذا تم صبر اختیار کرو۔

انصار کی تعداد

عاشور کے دن انصاری ۳۳ سوار اور چالیس پیادہ تھے، محمد بن ابی طالب سے منقول ہے ۸۲ تھے، سید بن طاووس نے امام محمد باقر سے نقل کیا ہے کہ امام حسین کے انصار ۵۳۵ تھے، ۴۵ سوار تھے۔

زہیر بن قین کو فوج کے میزبان حبیب بن مظاہر کو مسند پر بٹھارکھا اور علم اپنے بھائی عباس کے گویا پشت پر ڈار دیا اور فرمایا کہ جو خندق کھودی گئی پہلے سے نکلا اور لوگوں سے بھر کر گنگ نکادو۔

سے قتل نہ کر سکے۔

۱۔ ثبات الوصیہ ص ۷۶، مختصر تاریخ ابن عساکر ص ۱۶۶، اور ثبات الوصیہ ج ۲ ص ۵۸۳ میں اسی مقام پر کیا ہے، ۲۔ بحار انوار ج ۵ ص ۳۱،

۳۔ ارشاد شیخ مفید ج ۱ ص ۹۵، ممکن ہے کہ یہاں مدینہ مراد ہو کیونکہ یہ بعید معلوم ہوتا ہے کہ اہل مدینہ نے حبیب کی ہولناکیوں کو کچھ نہ سمجھی مدینہ کے لوگوں میں سے کئے ہوں اور وہ لاکھ لاکھ لوگوں کو فوج بھیجا اور مختلف گجوں کے لوگ آئے۔

اسد

قیس بن سعد نے بھی عبداللہ بن زہیر زیدی کو مدینہ والوں کی تحفہ سی فوج کا امیر مقرر کیا اور قیس بن شمس کے قہیلہ والوں کا سپہ سالار بنایا، مذحجی و اسدی فوجوں کو عبداللہ بن ابی سیرہ جعفی کی سرکردگی میں لایا اور مدینہ والوں کی فرمانداری حر بن یزید ریاحی کے سپرد کی، مذکورہ تمام گروہوں نے حسینؑ کی پیروی کیا اور یزیدؑ کی توجہ کر کے امام حسین علیہ السلام کی طرف آگئے اور درجہ شہادت پر فائز ہوئے،

مدینہ کی اس تقسیم بہ جیسے تھی جذبہ کار فرما تھا، کے بعد عین سعد نے عمرو بن جہاد زہیدی کو لشکر کا امیر مقرر کیا اور یزیدؑ کو مسند پر مقرر کیا اور عروہ بن قیس کو سواروں کا اور شعیب بن ریحی کو پیادہ

کا امیر بنایا اور پرچم اپنے غلام درید کو دیا۔

اسی سبب فوج حیدر کی طرف بڑھی اور غلام حیدر کا ہمارا کرنا یکنیم خیم کے چاروں طرف وہ اس کے حکم سے کھودی اور اپنے ہی کے فرمان سے اس میں آگ روشن کی گئی تھی،

اس وقت شمر علیہ السلام نے کہا: اے حسینؑ قیامت آنے سے پہلے ہی آتش جہنم کا انتظام کر لیا؟ امام حسینؑ نے فرمایا: یہ کون ہے؟ شمرؑ نے جواب دیا: اے حسینؑ قیامت آنے سے پہلے ہی آتش جہنم کا انتظام کر لیا؟ امام حسینؑ نے جواب دیا: اے بکری چرانے والی عورت کے بیٹے تو عذاب جہنم اور آگ میں جلنے کے لائق ہے امام حسینؑ نے چاکا کہ تیرے شر کا قصہ تمام کر دیں سکینا امام حسینؑ نے انہیں اس سے باز رکھا، عرض کیا:

یہ لوگ اس فاسق اور مستحکروں کے سرفراز کا کام تمام کروں، بہترین موقع ہے،

امام حسینؑ نے فرمایا: ایسا نہ کرو مجھے پسند نہیں ہے کہ اس گروہ سے میں جنگ میں پہل کر دوں۔

۱۔ بحار انوار ج ۵ ص ۳۱،

۲۔ بحار انوار ج ۵ ص ۳۱،

خطبہ امام حسین

امام حسین علیہ السلام نے اپنا گھوڑا طلب کیا، سوار ہوئے اور بلند آواز میں ندا کی جس سے اکثر لوگوں نے سنا:

أَيُّهَا النَّاسُ أَسْمَعُوا قَوْلِي وَلَا تَجْعَلُوا حَتَّى أَعْظِمَكُمْ بِمَا هُوَ حَقٌّ
وَحَتَّى أَعْتَذَرَ إِلَيْكُمْ مِنْ مَقْدَمِي عَلَيْكُمْ، فَإِنْ قِيلْتُمْ غَذَرِي وَغَضَرِي
وَأَعْطَيْتُمُونِي النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ تُخْشِمُ بِذَلِكَ أَسْعَدُ وَلَمْ يَكُنْ لِي
وَلَنْ لَمْ تَقْبَلُوا مِنِّي الْعُذْرَ وَلَمْ تُعْطُوا النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
وَشُرَكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيَّكُمْ غَضَّةٌ ثُمَّ أَفْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُظْهِرُوا
وَلَيْفِي اللَّهُ الَّذِي نَزَلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١﴾

گو! میری بات سنا! جنگ کرنے میں اس وقت تک عجلت نہ کرو جب تک کہ
کی نصیحت نہ کروں، جس کا لوگوں کا میرے ہار و فرس ہے میں تمہارے سامنے حقیقت
اگر انصاف سے کام لو گے تو خوش بہت ہو جاؤ گے اور اگر غول نہیں کرو گے اور حق و انصاف
کشی کرو گے اور پناہ دہ گلی جاؤ گے اور ہم جسے چاہیں گے خدا میرا آقا و مولا ہے کہ جس
اور نیکو کاروں کے اختیار میں دیدیا۔

ابن حزم امام حسین کا یہ خطبہ منکر روئے گئے آہ و فغاں کی آواز بلند ہوئی تو آپ نے فرمایا
خیمہ میں جا کر اہل حرم کو تسلی دو، نیز فرمایا: قسم! اپنی جان کی اس کے برابر اور زیادہ روئیں گے،
اہلبیت کا ناروشوون بند ہو گیا تو آپ خدا کی حمد و ثناء بجالائے اور نہایت فصیح
خدا کے رسول فرشتوں اور انبیاء پروردہ بھیجا اور اپنا خطبہ جاری رکھتے ہوئے فرمایا:

۱۔ سورہ یونس ۶۱، ۲۔ سورہ اعراف ۱۶۶

أَيُّهَا النَّاسُ أَسْمَعُوا قَوْلِي وَلَا تَجْعَلُوا حَتَّى أَعْظِمَكُمْ بِمَا هُوَ حَقٌّ
وَحَتَّى أَعْتَذَرَ إِلَيْكُمْ مِنْ مَقْدَمِي عَلَيْكُمْ، فَإِنْ قِيلْتُمْ غَذَرِي وَغَضَرِي
وَأَعْطَيْتُمُونِي النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ تُخْشِمُ بِذَلِكَ أَسْعَدُ وَلَمْ يَكُنْ لِي
وَلَنْ لَمْ تَقْبَلُوا مِنِّي الْعُذْرَ وَلَمْ تُعْطُوا النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
وَشُرَكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيَّكُمْ غَضَّةٌ ثُمَّ أَفْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُظْهِرُوا
وَلَيْفِي اللَّهُ الَّذِي نَزَلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١﴾

گو! میری بات سنا! جنگ کرنے میں اس وقت تک عجلت نہ کرو جب تک کہ
کی نصیحت نہ کروں، جس کا لوگوں کا میرے ہار و فرس ہے میں تمہارے سامنے حقیقت
اگر انصاف سے کام لو گے تو خوش بہت ہو جاؤ گے اور اگر غول نہیں کرو گے اور حق و انصاف
کشی کرو گے اور پناہ دہ گلی جاؤ گے اور ہم جسے چاہیں گے خدا میرا آقا و مولا ہے کہ جس
اور نیکو کاروں کے اختیار میں دیدیا۔

ابن حزم امام حسین کا یہ خطبہ منکر روئے گئے آہ و فغاں کی آواز بلند ہوئی تو آپ نے فرمایا
خیمہ میں جا کر اہل حرم کو تسلی دو، نیز فرمایا: قسم! اپنی جان کی اس کے برابر اور زیادہ روئیں گے،
اہلبیت کا ناروشوون بند ہو گیا تو آپ خدا کی حمد و ثناء بجالائے اور نہایت فصیح
خدا کے رسول فرشتوں اور انبیاء پروردہ بھیجا اور اپنا خطبہ جاری رکھتے ہوئے فرمایا:

أَيُّهَا النَّاسُ أَسْمَعُوا قَوْلِي وَلَا تَجْعَلُوا حَتَّى أَعْظِمَكُمْ بِمَا هُوَ حَقٌّ
وَحَتَّى أَعْتَذَرَ إِلَيْكُمْ مِنْ مَقْدَمِي عَلَيْكُمْ، فَإِنْ قِيلْتُمْ غَذَرِي وَغَضَرِي
وَأَعْطَيْتُمُونِي النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ تُخْشِمُ بِذَلِكَ أَسْعَدُ وَلَمْ يَكُنْ لِي
وَلَنْ لَمْ تَقْبَلُوا مِنِّي الْعُذْرَ وَلَمْ تُعْطُوا النِّصْفَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
وَشُرَكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيَّكُمْ غَضَّةٌ ثُمَّ أَفْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُظْهِرُوا
وَلَيْفِي اللَّهُ الَّذِي نَزَلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١﴾

گو! میری بات سنا! جنگ کرنے میں اس وقت تک عجلت نہ کرو جب تک کہ
کی نصیحت نہ کروں، جس کا لوگوں کا میرے ہار و فرس ہے میں تمہارے سامنے حقیقت
اگر انصاف سے کام لو گے تو خوش بہت ہو جاؤ گے اور اگر غول نہیں کرو گے اور حق و انصاف
کشی کرو گے اور پناہ دہ گلی جاؤ گے اور ہم جسے چاہیں گے خدا میرا آقا و مولا ہے کہ جس
اور نیکو کاروں کے اختیار میں دیدیا۔

کرتے ہیں، جابر بن عبد اللہ انھاری، ابو سعید خدری، سہیل بن سعد ساعدی، زید بن ابراہیم بن مالک سے پوچھ لو، وہ تو ہیں بتائیں گے کہ رسول اللہ سے کیا سنا ہے اس سے میری بات ہو جائے گی، آیا یہ گواہیاں ہیں میرا خون بہانے سے باز نہیں رکھتی ہیں۔

شعر سے گفتگو

اس موقع پر عمر بن ذی یحیٰ نے کہا: اگر حقیقت یہی ہے تو آپ نے بیان کیا ہے تو میں نے اس کے ساتھ خدا کی عبادت نہیں کی،

حبیب بن مظاہر نے کہا: خدا کی قسم میں جانتا ہوں کہ تو درود و شکر کی حالت میں خدا کا ہے میں گواہی دیتا ہوں کہ تو سچ کہتا ہے ورنہ یہ نہیں سمجھتا کہ امام کیا فرماتے ہیں، خدا نے تیرے دل پر لگا دی ہے،

امام حسنؑ نے فرمایا: کیا اس میں شک ہے کہ میں فاطمہ بنت رسول کا بیٹا ہوں، خدا کی قسم اگر میں ایک میرے دو ہانت رسول کا بیٹا نہیں ہوں ہے ورنہ یہ تو تم پر کیا میں نے تم میں سے کسی کو ملنے سے اس کا خون ہمارا مانگ رہے ہو؟

ان کے پاس اس کا کافی جواب نہیں تھا، سب خاموش تھے، اس کے بعد امام حسنؑ نے فرمایا: اے شریعت بن رجبی! اے جابر بن ابی جراح! قیس بن اشعث، اے یزید بن حارثہ! کیا تم نے مجھے خط لکھا کہ میوے پک چکے، زمین سرسبز ہے اگر آپ انہیں تو مسلمانوں کے لیے لکھ کر آپ کی خدمت میں حاضر ہے، قیس بن اشعث نے کہا: ہم نہیں جانتے کہ آپ کیا کہہ رہے ہیں لیکن اگر آپ اپنے چچا کے

تسلیم ہیں تو آپ کے حق میں بہتری بہتر ہے،

امام حسنؑ نے فرمایا: خدا کی قسم میں ذیل و پست کی طرح تمہاری بیعت نہیں کروں گا، مگر خدا کے فضل سے فزونیوں کروں گا اس کے بعد فرمایا خدا کے بندو! میں اپنے اور تمہارے خاندان کے

۱۔ حیات الامام حسینؑ ج ۳ ص ۱۸، ۲۔ ارشاد شیخ مفید ج ۳ ص ۱۹۷

تیمم بن حصین

امام حسنؑ نے اپنی تربیت اپنے گھوڑے پر سوار ہو کر عمر بن سعد کے لشکر سے نکلا اور امام کے فضول کے پاس پہنچا اور اسے کہا: اے حسین! اور اے اصحاب حسین! دنیا ہی میں اس آگ کا مزہ کچھتا مہارک ہو جو کہ تم نے

خدا کی قسم میں نے دریافت کیا کہ کون ہے؟ گھوڑے بتایا یہ ابن ابی جریہ ہے،

امام حسنؑ نے فرمایا: اے اللہ! اسے دنیا ہی میں آگ کا مزہ کچھادے، ابھی امام حسنؑ کی دعا سن کر اس کے گھوڑے نے اسے آگ میں گرادیا،

امام حسنؑ نے فرمایا: یہ کون ہے؟ بتایا گیا! تیمم بن حصین ہے،

امام حسنؑ نے فرمایا: یہ اور اس کا باپ جہنی ہے، اے اللہ! اسے شدید شہید کی حالت میں موت دے،

امام حسنؑ نے فرمایا: یہ اور اس کا باپ جہنی ہے، اے اللہ! اسے شدید شہید کی حالت میں موت دے،

امام حسنؑ نے فرمایا: یہ اور اس کا باپ جہنی ہے، اے اللہ! اسے شدید شہید کی حالت میں موت دے،

۱۔ حیات الامام حسینؑ ج ۳ ص ۱۸، ۲۔ ارشاد شیخ مفید ج ۳ ص ۱۹۷

کہا: ہندو باد کے پاس بے جاؤں اور انعام پاؤں لیکن جب میں نے دیکھا کہ ان توحہ کو ان کی بدعادتوں
کی وجہ سے یہ بات اگلی خدا کے نزدیک اس خاندان کی عظمت ہے، لہذا میں عربین سعد کے
ساتھ اور اس لوٹ گیا اور اپنے دل میں کہا: اس خاندان کی جو چیزیں میں نے مشاہدہ کی ہیں ان کی وجہ
سب سے زیادہ اہم ہیں کہ وہ گناہ

ابن کا خطبہ

ابن کا خطبہ: میں نے اپنے ہاتھوں سے دیکھا کہ اس کے پاس گئے، گھوڑے پر سوار تھے، جنگی لباس پہنے ہوئے تھے، دشمن کے لشکر کو
دیکھا کہ انہوں نے خدا کے عذاب سے ڈر کر ایک مکان کا دوسرے مکان پر یہ حق ہے کہ وہ اپنے بھائی
اور جب تک ہمارے درمیان جنگ نہیں ہوتی اس وقت تک بھائی بھائی میرا اور ہم سب کا ایک
جنگ کی نوبت کے لئے تو تم ایک امت اور ہم دوسری امت ہو جاؤ گے، خدا نے رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر فرار یا تاکہ آزمائے میں ہیں اس خاندان کی مدد کرنے اور بڑے و عید اللہ بن زید کا
دست دیتا ہوں کیونکہ تم نے ان کی حکومت میں بدکرداری اور فاریوں کو قتل کرنے اور دار پر
دیکھا کہ انہیں دیکھا ہے اس کا واضح ثبوت قرآن عری اور ان کے ساتھیوں کا قتل ہے،

میں نے زہیر کو برا بھلا کہا: اور عید اللہ کی تعریف کرتے ہوئے اس کے لئے دعا کی اور کہا:
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے اصحاب کو قتل کے بعد میں جاؤں گے یا انہیں عید اللہ کے پاس لے جاؤں

کہا: خدا کے بند و ابن زیاد کی بد نسبت خزانہ ظلم محبت و نصرت کا زیادہ مستحق ہے
میں کہہ سکتے ہوں کہ ان کے نواسے اپنے ہاتھ نہ لیں نہ کرو، انہیں چھوڑ دو جو بڑے بد چاہے گا ان کے
میں اپنی جان کی بڑی قدر سے حسین کے قتل کے بعد بھی راضی ہو جائے گا،

ابن کا خطبہ: میں نے اپنے ہاتھوں سے دیکھا کہ اس کا تھنم کیا ہاں اہل بیت کی وجہ سے وہ گھر میں محدود ہو گیا تھا منتقل
۱۳۱ھ میں شریعت ۱۳۱ھ میں

حسین ہیں؟ امام حسین کے اصحاب نے جواب دیا: امام حسین میں کیا چاہتے ہو اس نے کہا: اسے
بشارت دیتا ہوں،

امام حسین نے فرمایا: تو جھوٹا ہے میں خدا کی بارگاہ میں مغفرت، شیعہ اور مطاع جاؤں گا
نے کہا: میں ابن توحہ ہوں،

امام حسین نے بنے دست مبارک اسے بلند کر کے آپ کی ٹہلی کی سفیدی نمایاں ہو گئی
اسے جہنم کی آگ میں جلادے،

اسے غصہ آگیا، اچانک اس کا گھوڑا ابھا گا، ابن توحہ زمین پر گرا اور پیچھے گھوڑے کا
گیا اور اس کا بدن اتنی دھڑکن زمین پر گھسٹا کہ اس کے بدن کا کچھ حصہ جدا ہو گیا اور کچھ گھوڑے
ابھا ہوا رو گیا آخر کار ایک پیچھے سے گزرا کہ اس کا بدن آگ کی خندق میں گر پڑا اور آگ کا
دعا مستجاب ہوئے ہی امام حسین عید اللہ کی جلائے اور ہاتھوں کو بلند کر کے
ہم تیرے غریب بندوں میں سے ہیں تیرے رسول کے اہلبیت میں اور ان کی دریت میں ظالم
نے لے کر شیعہ تو سننے والا اور سب سے زیادہ اپنی مخلوق سے نزدیک ہے،

محمد بن اشعث نے کہا: تمہارا بے اور رسول کے درمیان کیا قربت ہے؟

امام حسین نے فرمایا: اے اللہ محمد بن اشعث کہتا ہے کہ میرے اور تیرے رسول
نہیں ہے، پروردگار آج اسے ذلیل و رسوا کر دے تاکہ میں اس کی حالت اپنی آنکھ سے دیکھ
امام حسین کی یہ دعا بھی مستجاب ہوئی، محمد بن اشعث رفع حاجت کے لئے

نے ذبح مارا اور وہ جس لباس کے ساتھ ہلاک ہوا

مسروق کی تنبیہ

مسروق بن وائل حضری کہتا ہے میں ابن سعد کے لشکر میں شیخ ہشیم تھا تاکہ
ارشا شیخ سفید ۱۳۱ھ، خوارزمی نے حکم حشمی سے نقل کیا ہے کہ محمد بن اشعث اسی دن ہلاک ہوا،

ایک ناماد میں شمر نے زہیر کی طرف تیر چلایا اور کہا خاموش : خدا تمہاری زبان بند کر
رکے پنچا یا ہے ۔

زہیر نے شمر کے جواب میں کہا : اے بدو کے بچے میں نے تجھ سے کچھ کہا ، تو صرف کہہ
بہیں سمجھا کہ تیس کتاب خدا کی دوائیں بھی یاد ہو گئی ، تجھے روز قیامت رسوائی اور خدا کے
کی بشارت ہو ،

شمر نے کہا : گھٹنے پھر بعد خدا تمہیں اور تمہارے تمام قتل کرے گا ،

زہیر نے کہا : تو مجھے موت سے ڈراتا ہے ؟ خدا کی قسم میں ان کے ساتھ شہادت پا
میں تمہارے ساتھ حیات ابدی سے بہتر ہے اس کے بعد زہیر نے دوسرے لوگوں کو مخاطب کیا اور
کہہ بدو تم اس بد نصبت آدمی کے فریب میں نہ آؤ خدا کی قسم اس گروہ کو رسول کی شقاوت اور
جوان کے بیٹوں اور اہل بیت کا خون بہائے گا اور ان کے انصار کو قتل کرے گا ۔

اس کے بعد تمام مہاجرین کا صحابہ میں سے ایک نے آواز بلند کی : اے زہیر وہیں آ جا
فرماتے ہیں : قسم اپنی جان کی قسم میں ان فرعون کی طرح نصیحت کی تم نے اس نصیحت سے
کی ہے اپنا فریضہ بھی انجام دیا اور انہیں صراط مستقیم کی دعوت بھی دی ہے تاکہ اس کا کوئی غلام
خبطہ بربر

ابو جہم میں ان کے بارے میں تم نے کیا فیصلہ کیا ہے ؟
ابو جہم نے جواب دیا : ہم انہیں عبید اللہ بن زیاد کے قاتل کہیں گے تاکہ وہ ان کے بارے میں فیصلہ کرے
کہ انہیں کیا نہیں یہ قبول نہیں ہے کہ وہ جہاں سے آئے ہیں وہیں واپس چلے جائیں ؟

ابو جہم نے جواب دیا : ہاں ہر قاتل کو قتل کرنا ہے اپنے خطا اور عہد کو فراموش کر دیا ہے ؟ خدا نہیں سمجھے تم رسول
اللہ کے ہاتھ پر قتل ہوئے کا بعد کرتے ہو اور جب وہ تمہارے پاس آئے ہیں تو انہیں عبید اللہ کے
اور ان پر فرات کا پانی بند کرتے ہو حضرت رسول کا تم نے کیا پاس دیا کیا ہے نہیں کیا ہو گیا ہے
اور ان میں سراب نہ کرے کہ تم بہت بڑے لوگ ہو ،

ابو جہم نے کہا : بھاری سمجھ میں نہیں آتا کہ تم کیا کہہ رہے ہو ،

ابو جہم نے کہا : میں خدا کا شکر ادا کرتا ہوں کہ اس نے تمہارے بارے میں میری بصیرت میں اضافہ کر دیا ہے
اور ان کا اس گروہ کے اعمال سے میرا دل ہول اے اللہ ان کے دیمان اپنا خوف و ہراس پھیلادے
اور ان میں پنچیں تو ان پر قہر نازل فرمائے

بربر خیر نے فوج کو فوسے گھٹکھو کر کے لئے امام حسین سے اجازت طلب کی کہ
مرحمت کی وہ فوج کو فوسے پاس گئے اور کہا :

اے لوگو ! خدا نے رسول کو سچوتہ کیا انہوں نے لوگوں کو تو حیدر اور کیا پرستی کیا
بھی تھے اور نذیر بھی وہ جنت کی بشارت دیتے اور جہنم سے ڈراتے تھے آپ انسانوں کی راہ

ابو جہم نے امر باری سورت کو اجازت فرما دیا ہے اور تم رسول کے بیٹے ، بیٹوں کو بھائی سمجھنا پڑے جبکہ

ابو جہم نے کہا : میں نے تمہیں بتایا ہے

کامل بن ابی ہریرہ ، ۳۳ ، ۵ نفس المہوم ص ۱۴۳

ہمچہ

جب عرب سودا مام حسین سے جنگ کے لئے اپنی فوج کو تیار کر چکا پرچم گاڑ دینے اور فوج کا
میسرہ منظم کر چکا تو قلب لشکر کے سپاہیوں سے کہا: ثابت قدم رہو اور میرا کو چاروں طرف سے گھیر
اسی وقت مام حسین نے فوج کو فوج کے سامنے کھڑے ہوئے اور فرمایا: خاموش ہو جاؤ کہیں
زہرے آپ نے ان سے فرمایا:

وَيَلَكُمْ مَا عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْصِتُوا إِلَيَّ فَتَسْمَعُوا قَوْلِي وَأَنَا أَدْعُوَكُمْ إِلَى
الرَّحَادِ فَمَنْ أَطَاعَنِي كَانَ مِنَ الْمُرْتَدِينَ وَمَنْ عَصَانِي كَانَ مِنَ
وَكُلُّكُمْ عَاصٍ لِأَمْرِي غَيْرُ مُسْتَعِيمٍ قَوْلِي فَقَدْ مُلِيتَ بِطُغْيَانِكُمْ مِنَ الْعَرَامِ
عَلَى قُلُوبِكُمْ، وَيَلَكُمْ أَلَا تَسْمَعُونَ؟

خدا تہیں سمجھے اگر تم میری بات سن لو گے تو تمہارا کیا بولا جائے گا میں تمہیں ہر امر مستقیم کی طرف
جو میری اطاعت کرے گا وہ ہدایت پا جائے گا اور جو میری نافرمانی کرے گا وہ ہلاک ہو جائے گا
میرے فرمان سے سرکش کرے ہو اور میری باتوں پر کان نہیں دہرتے کیونکہ تمہارے پیٹ میں
مجھ سے ہوئے ہیں اور تمہارے دلوں پر بدگنجی و شقاوت کی ہر گج چکا ہے ورنہ ہوتم پر کیا
ہیں ہو گے اور میری بات نہیں سونگے؟

اس پر عرب سرد کے راہنہوں نے آپس میں ایک دوسرے پر ملامت کی اور کہنے لگے ان

امام حسین کا دوسرا خطبہ

جب دشمن کی فوج خاموش ہو گئی تو امام حسین نے فرمایا:

تَبَّأَ لَكُمْ أَيُّهَا الْجَمَاعَةُ وَتَزَحَّأُ، أَيْحِينَ اسْتَضَرَّخْتُمُونَا وَالْهَيْبَةَ
مُوجِبِينَ سَلَّيْنَا عَلَيْنَا سَيْفًا كَانَ فِي أَيْمَانِنَا وَخَشَشْتُمْ عَلَيْنَا نَارَ

عَدُونَا وَعَدُوَّكُمْ، فَأَصْبَحْتُمْ إِلَيَّ لَقَاءَ عَلَى أَوْلِيَانِكُمْ وَيَدَا لِأَعْدَائِكُمْ بِغَيْرِ عَدَلٍ
الْقِسْوَ فِيكُمْ وَلَا لِأَمَلٍ أَصْبَحَ لَكُمْ فِيهِمْ وَعَنْ غَيْرِ حَدَثٍ كَانَ مِنَّا وَلَا رَأْيٍ تَقِيلُ
عَنَّا، قَهْلًا - لَكُمْ الْوَيْلَاتُ - تَرَكْتُمُونَا وَالسَّيْفُ مُشِيمٌ وَالْجَائِشُ طَائِفٌ وَالرَّأْيُ
لَمْ يُسْتَخَصَفْ، وَلَكِنْ اسْتَشْرَعْتُمْ إِلَيْهَا كَتَاظِيرِ الدَّيْنِ وَتَدَاعَيْتُمْ لَهَا كَتَدَاعِي
الْفَرَّاشِ، فَسُخِّقُوا وَبُعْدُوا لَطَوَاعِيهِ الْأَمَّةِ وَشَذَّادِ الْأَخْزَابِ وَتَبَذُّوْهُ الْكِتَابِ وَتَفَقُّوْهُ
الشَّيْطَانِ وَمُخَوِّفِي الْكَلَامِ وَمُطْفِئِي السُّنَنِ وَمُحْلِقِي الْعَهْدَةِ بِالسَّيْفِ،
الْمُسْتَهْزِئِينَ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ، وَاللَّهُ إِنَّهُ لَخَذَلُ فِيكُمْ مَغْرُوفٌ، قَدْ
وَسَّجَتْ عَلَيْهِ عُرُوفُكُمْ وَتَوَارَتْ عَلَيْهِ أَصُولُكُمْ فَكُنْتُمْ أَخْبَثَ قَوْمَةٍ، شَجَا
لِلطَّائِفِ وَآكِلَةٌ لِلْغَايِبِ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى التَّائِبِينَ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ الْأَيْمَانَ بَعْدَ
تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلُوا اللَّهَ عَلَيْهِمْ كَفِيلًا، أَلَا وَإِنَّ الدَّيْعِي ابْنَ الدَّيْعِي قَدْ رَكَزَ مِنَّا
بَيْنَ اثْنَتَيْنِ بَيْنَ الْمَلَّةِ - السَّيْلَةِ - وَالذِّلَّةِ وَهَيْبَتِهَا مِنَّا الدَّيْنَةُ - الذِّلَّةُ - يَأْبَى
ذَلِكَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَحُجُورٌ طَابَتْ وَأَتَوْفَ حَيْمَةٌ وَتَفُوسٌ أَبِئْتَهُ أَنْ
تُؤَيِّزَ طَاعَةَ الْبَيْتِ عَلَى مَصَارِعِ الْكِرَامِ وَإِنِّي زَاحِفٌ إِلَيْهِمْ بِهَذِهِ الْأَسْرَةِ عَلَى
كَلْبِ الْعَدُوِّ - قَلْبِ الْعَدُوِّ - وَكَثْرَةِ الْعَدُوِّ وَخَذْلَةِ النَّاصِرِ^(۱)
نَمْ أَنشَأُ يَقُولُ:

فَإِنْ نَهَزِمَ فَهَزَامُونَ قَدَمًا وَإِنْ نُهَزِمَ فَغَيْرُ هَزَامِينَا
وَمَا إِنْ طَبْنَا جُنْدًا وَلَكِنْ مَنَانَانَا وَدَوْلَةُ آخِرِينَا

اَلَا تُمْ لَا تَلْبِثُوْنَ بَعْدَهَا اِلَّا كَزَيْتٍ مَا يُرْكَبُ الْفَرَسُ حَتَّى تَذُوْرَ بِكُمْ الرُّوحَى،
عَهْدُ عَهْدَةٍ اِلَيَّ اَبِي عَن جَدِّي فَاجْعِلُوْهُ اَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كَيْدُوْنِي جَمِيْعًا
لَا تُنْظَرُوْنَ اِلَيَّ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ اِلَّا هُوَ اَخَذَ
بِئْسَ بَيْتُهَا اِنْ رَبِّيْ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ^(۲)، اَللّٰهُمَّ اَخْبِسْ عَنْهُمْ قَطْرَ السَّمَاءِ

(۱) اس خطبہ میں امام حسین نے اپنی فوج کو مخاطب کیا ہے، عقل و عین و مغازی کی قیادت میں، سورہ ہود ۵۶،

ملاقات نہیں کرنا چاہتا تھا لیکن بدل بخداستہ امام کے پاس آیا آپ نے فرمایا تم مجھے قتل کرو کہ عید اڑنے نہ پڑا تمہیں رہے اور گرگان کی حکومت بخش دے گا؟ خدا کی قسم تمہاری یہ آرزو

اگر وہ خدا نہیں ہلاکت و مصیبت میں مبتلا کرے تو نے ہمیں فریاد و عجز ہی سے تمہاری فریاد کو نہیں اور ہم جلدی سے تمہاری فریاد کی لئے آگے تو تم ویں لو اور ہمارے بی تو ہم نے تمہارے ہاتھیں دیدی تھی اور تم نے وہی آگ ہمارے لئے بھڑکانی جو ہم نے اپنے دشمنوں کے لئے روشن کی تھی اپنے دوستوں سے جنگا اور اپنے دشمنوں کی نصرت کے لئے ہوا اگرچہ نہ وہ تمہارے دریاں اٹھا کر تے ہیں اور تم ان سے کسی بھلائی کی توقع رکھتے اس صورت میں کہ ہم سے ایسی کوئی ضرر صادر نہیں ہوئی کہ جس کی بادشاہ میں ہم سے لڑی اور ہم پر حملہ کیا جائے، خدا نہیں سمجھے، ہمیں اس وقت کیوں پریشان کیا جب تلواریں غلام اور دلوں کو کھنڈا محکموں کی مانند قتل کی طرف اڑنے پر والوں کی طرح ایک دو جان کی فکر میں پر لگنے کیلئے کی اولاد و مگر وہوں کے پھانسی لگان، کتاب خدا سے منہ خدا کی آیات میں تحریف کرنے والو، سنت رسول کو فراموش کرنے والو، انبیاء کی اولاد اوصیائے کی عزت کو تنبیغ کرنے والو، مجبوراً انہیں کو صاحبانِ نسب سے ملحق کرنے والو کو آزاد پرہیز کرنے والو اور قرآن کو پارہ پارہ کرنے والو کفار کا دھندہ راجینے والو خدا نہیں خدا کی قسم بیوقوفان اور بیانیہ کی تمہاری عادت ہے تمہارا خیر مسکو و بیوقوفان سے آئینہ کے مطابق تمہاری پرورش ہوئی ہے، تم بدریں میوہ اپنے باغبان کے لئے لگے گی بڑی اور غاصبوں کے لئے خوش تر شاخ خدا لعنت کرے ان پیاں لگوں پر جنہیں نے حکم شدہ

پوری نہ ہوگی یہ ایک عہد ہے جو تم چاہو کرو کہ میرے بعد تم نہ دنیا میں خوش رہو گے اور نہ آخرت میں دیکھ رہا ہوں کہ وہیں تمہارا سر نیزہ پر نصب ہے اور بچے اس کا نشانہ دیکھ کر تپھر مار رہے ہیں۔
عرب سودے سے غصہ میں منہ پھیر لیا اور اپنی فوج سے کہا: کس چیز کا انتظار ہے؟ ان پر سب کا حلقہ دوکر ان کی حیثیت ایک لقمہ سے زیادہ نہیں ہے۔

امام حسین کا ایک اور خطبہ

اس کے بعد امام حسینؑ فوج کے سامنے آئے دیکھا کہ سب کی طرح جوش و خروش میں ہے۔ اس طرف دیکھا کہ کوئی شرفار کے درمیان کھڑا ہے فرمایا:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَ الدُّنْيَا فَجَعَلَهَا دَارَ فَنَاءٍ وَزَوَالٍ، مُتَصَرِّقَةً بِأَهْلِهَا حَالًا، فَالْمَغْرُورُ مِنْ غَوْرَتِهِ وَالشَّقِيُّ مِنَ شَقَاتِهِ، فَلَا تَغُرَّنَّكُمْ هَذِهِ الدُّنْيَا تَطْعَمُ رِجَاءَ مَنْ رَكَنَ إِلَيْهَا وَتُخَيِّبُ طَمَعَ مَنْ طَمَعَ فِيهَا، وَأَرَاكُمْ لَمْ عَلَى أَمْرِ قَدْ أَشْخَطْتُمْ اللَّهَ فِيهِ عَلَيْكُمْ وَأَعْرَضْتُمْ بَوَاجِهِ الْكَرِيمِ عَنْكُمْ وَبَغَمْتُمْ وَجَنَّبْتُمْ رَحْمَتَهُ، فَبَغِمَ الرَّبُّ رَبَّنَا وَبَشَسَ الْعَقِيدُ أَنْتُمْ، أَفَرَأَيْتُمْ وَأَعْتَنْتُمْ بِالرَّسُولِ مُحَمَّدٍ ﷺ ثُمَّ أَنْتُمْ وَخَطَمْتُمْ إِلَيَّ ذُرِّيَّتِي وَعِشْرَتِي قَتَلْتُمْ، لَقَدْ اسْتَحْوَذَ عَلَيْكُمْ الشَّيْطَانُ فَأَنْسَاكُمْ ذِكْرَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، قَتَلْتُمْ ثُرَيْدُونَ، إِنَّا اللَّهُ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، هُوَلَاءِ قَوْمٌ كَفَرُوا بِنِعْمِ الْإِسْلَامِ وَالْطَّالِعِينَ.

وہ دستاویز کرتا ہوں اس خدا کی جس نے دنیا کو پیدا کیا اور اسے فنا و زوال کا مرکز قرار دیا اور دنیا کو کثافت و گوناگوں حالات میں رکھا، جو دنیا کے قریب میں آگیا وہ بڑا قوی ہے، جو دنیا کو دیکھ رہا ہے وہ بد نصیب ہے، دیکھو! دنیا کے قریب میں نہ آجانا کیونکہ دنیا نے ہر اس شخص کی امید کو لٹا دیا جو اس کی طرف مائل ہوا اور اس شخص کی امید کو یا اس فدا امید میں بدل دیا جس نے اس سے لڑا یا اس دیکھ رہا ہوں کہ یہاں جس کام کی انجام دہی کے لئے جمع ہوئے ہو اس سے تم نے خدا کو غیظ کیا ہے اس نے تمہاری طرف سے نظر لطف چھائی اپنا عقاب تم پر نازل کر دیا ہے اور اپنی رحمت سے اس کو دور کر دیا ہے کتنا اچھا پروردگار ہے ہمارا خدا اور تم کہتے رہے بندے ہو کہ اس کی اطاعت کا اقرار کیا اسے رسول پر ایمان لائے لیکن ان کی ذریت پر ظلم کیا اور اب ان کے قتل کا ارادہ کئے ہوئے ہو، اس طرح ان پر غائب آگیا ہے تم خدا کو بھول گئے ہو خاک پھرتے ہو اور تمہاری امیدوں پر، اس وقت عربین حدیث کو وہ کہتے تھے کہ ان کی طرف رخ کر کے کہا: خدا تمہیں بخشے ان سے گفتگو کرو خدا کی

اپنا نشانہ ہے کہ اگر وہ ہجرت کر گئے تو بھی تمہاری تقریر سے عاجز نہیں ہوں گے، اس کے بعد شمر آگے بڑھا اور کہا: اے حسین! یہ تم کو کہا رہے ہو میں سمجھا لینے لگا کہ تم کہیں، اس کے بعد حسینؑ نے فرمایا: میں یہ کہہ رہا ہوں کہ خدا سے ڈرو! میرے قتل سے ہاتھ اٹھاؤ کیونکہ مجھے قتل کی سزا موت جاز نہیں ہے میں تمہارے رسولؐ کی بیٹی کا بیٹا ہوں میری نانی خدیجہؓ تمہارے رسولؐ کی بیٹی کے بیٹے ہیں تم نے بھی رسولؐ کی یہ حدیث سنی ہو کہ حسنؑ و حسینؑ جنت کے چوڑوں کے سردار ہیں۔

اس کے بعد شمر نے سے اترے اور عقید بن سحان کو حکم دیا کہ اسے باہر دروازی وقت فوج جنگ کیلئے

۱۔ تاریخ میں یہ نہیں ہے کہ امام حسینؑ بارہویں آئے اور فوج کو فوج سے حکام ہوئے ہم نے یہاں آپؑ کے بارہویں کی بات واضح نہیں ہے کہ یہ ایک ہی خطبہ ہے اور مؤرخین نے اس کے ترکہ کو دیے ہیں یا آپؑ نے متعدد بار خطبے دیے ہیں کی تعداد بعض نے تین سے بھی زیادہ بتائی ہے، وسیلہ الدلائل ص ۱۸۷

حسینؑ اور آپؐ کے صحابہ کی طرف بڑھی۔

حزبن بزدل رہا جنی جب لوگوں کو جگ کرنے پر آمادہ دیکھا تو عربین سعد کے پاس گئے اور کہا: سے جنگ کرو گے؟

اس نے کہا بالکل اندکی قسم اسی جنگ کہ جس میں سر اور بازو اڑتے ہوئے نظر آئیں گے۔
حزنے کہا: حسینؑ نے جو بیان کیا ہے وہ تمہارے لئے کافی نہیں ہے، عربین سعد نے کہا: اگر
اختیار ہو تو میں قبول کرتا لیکن تمہارا امیر عبید اللہ قبول نہیں کرے گا۔

حزنے کے ساتھ ان کے قبیلہ کا ایک آدمی قرہ بن قیس تھا، حزبن بزدل نے اس سے کہا: اے قرہ
گھوڑے کو پانی پلایا ہے؟ کہا: نہیں، قرہ کہتے ہیں میں نے یہ محسوس کیا کہ وہ جنگ سے بچ رہے ہیں۔
اپنا ارادہ بتا دیتے تو میں بھی ان کا اتباع کرتا،

پس قرہ امیرؑ اسے شام بخنی سے نزدیک ہونے لگا ایک شخصؑ نے ان سے کہا: یہ میں تمہارا
دیکھ رہا ہوں؟

حزنے کہا: خدا کی قسم میں خود کو جنت و بہشت کے درمیان دیکھ رہا ہوں خدا کی قسم میں
اختیار کروں گا خواہ یہ میرا بدن کھوٹے کڑے کر کے آگ ہی میں جلا دیں، اس کے بعد اپنے گھوڑے کو
امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر بنا ہوئے عرض کیا: اے فرزند رسولؐ خدا میں آپؐ پر قربان
کو تکلیف دی اور اس جگہ اترنے پر مجبور کیا مجھے یہ یقین نہیں تھا کہ یہ مرد وہ آپؐ کے ساتھ ایسا
اور آپؐ کی بات قبول نہیں کرے گا اگر مجھے یہ معلوم ہو جاتا کہ یہ لوگ آپؐ کے ساتھ ایسا سلوک کریں گے
ایسا نہ کہ اس میں خدا کی بارگاہ میں تو بہتر تاہوں کیا میری توبہ قبول ہو جائے گی؟

۱۔ خوارزمی نقل کرتے ہیں کہ جب یہ آواز بلند کی: اے مومن! نبیؐ کو جو یقیناً اللہ تعالیٰ نے تم میں سے
امامؑ میں مقرر کیا اسے خوارزمی نے اس طرح نقل کیا: اور اسی حال میں سعد کے پاس گئے، متعلقہ
۲۔ اس شخص کا نام ہاجر بن اوس ہے، حزبن بزدل کے چچا ان کا ترک غلام بھی تھا، متعلقہ حسینؑ خوارزمی نے

امامؑ نے فرمایا: خدا تمہاری توبہ قبول کرے گا، اترو،
میں آپؐ کے لئے سوار ہوں تو یہ پیادہ ہونے سے بہتر ہے اس گھوڑے پر سوار رہو
خدا تمہارے گناہوں کا آخر کا نیچے آؤں گا۔

امامؑ نے فرمایا: خدا تمہاری مغفرت کرے جو تمہارا ارادہ ہے اسے انجام دو، اس کے بعد حزنہ کو فوج کو فوج
میں لے کر لے اور کہا: کو فوج والو! تمہاری مثال تمہارے غم میں رو میں تم نے خدا کے اس صالح و نیک بندہ
اور وعدہ کیا کہ ہم آپؐ کی راویں جان قربان کریں گے اور لبانی پر نکولیں گے چھپنے ہوئے ہو اور ہر طرف
پناہ مانگ رہے اور ان سے دست کش نہیں ہوتے کہ وہ اس وسیع و عریض زمین پر کہیں اور چلے جائیں، اس پر کہنا
کہ میں ان پر اور ان کے اہلیت پر پانی بند کر دیا ہے جبکہ اسی پانی کو یہود و نصاریٰ پی پیتے ہیں یہاں تک
کہ ان کو موت ملے ہیں اور یہ جگہ کہ یہاں سے جہاں بلب ہیں، رسولؐ کی عسرت کے بارے میں تم نے ان کی
اس لحاظ رکھ کر کیا تنگی کے روز خدا تمہیں سیراب نہ کرے،

اس وقت ایک مرد نے چرتیروں سے حملہ کر دیا وہ امام حسینؑ کے پاس اور ان کے مقابل کھڑے

حسینؑ نے امام حسینؑ سے عرض کیا: جب عبید اللہؑ نے مجھے آپؐ کی طرف روانہ کیا اور میں قصر سے
آپؐ کی آواز سنی کہ کوئی کہہ رہا ہے اے حشر اور مہر کہ نیکی کی طرف جا رہے ہو، میں نے پیچھے مڑ کر دیکھا
میں نے اپنے دل میں کہا: یہ کیسی بشارت ہے جس میں میں سے جنگ کے لئے جا رہا ہوں، میرا یہ خیال
میں کی ہیر و کدوں کا،

حسینؑ نے فرمایا: نیک راستہ کی طرف تمہاری ہدایت ہوئی ہے۔

۱۔ دوسری روایت میں اس طرح بیان ہوا ہے کہ حزنہ نے اپنے والد کو فوج میں دیکھا کہ جسے کہہ رہے ہیں
۲۔ ہاجر بن اوس کا بیان ہے کہ حزنہ نے اپنے والد کو فوج میں دیکھا کہ جسے کہہ رہے ہیں

حملہ کا حکم

عربوں نے فوج کو فہ سے کہا: نادانو! تم جانتے ہو کس سے جنگ کر رہے ہو؟ یہ کہانہ شجاع ہیں، ان سے جنگ کر رہے ہو جنہوں نے فوج کو موت کے لئے آمادہ کر لیا ہے تم میرا سے کوئی تمہارے لئے نہ جائے ان کی تعداد کم ہے، یہ تھوڑے ہی زمانہ کے مہمان ہیں خدا کی قسم یہ اسی وقت قتل تم ان پر سنگ باری کرو گے،

عربوں نے کہا: تم سچ کہتے ہو تمہاری رائی سچ ہے کی کوئی سچ کر فوج کو فہ سے یہ کہانہ میں کوئی تنہا نہ جائے گا۔

اس وقت امام حسینؑ نے پیش مبارک کیا کہ فرمایا: خدا قلم پور اس وقت انہوں نے اس کے لئے بیٹا فہس کر لیا اور امت مسیح پر اس وقت غضبناک ہوا جب انہوں نے اس سے ایک فرار دیا اور اس قدم کے بارے میں خدا کے غضب کی انتہا ہے کہ یہ لوگ کی بجائے بیٹے کو قتل کرنے پر متفق اور ایک زبان ہو گئے ہیں خدا کی قسم یہ جو مجھ سے چاہتے ہیں ان تک کہ میں خون میں آلودہ ہو کر پروردگار کی ملاقات کو جاؤں گا۔

اصحاب حسینؑ کی شہادت

عربوں نے امام حسینؑ کے اصحاب کے قریب آیا اور ذہبیہ کو آواز دے کر کہا: امام حسینؑ اس کے بعد عربوں نے شہادت کی طرف پھیلنے لگے، امام حسینؑ نے فرمایا: میں نے جان چاہتے ہو تو ان سے جنگ کے لئے جاؤ اور اگر چاہتے ہو تو ان کے جد تہاری شہادت کر لیا وہ ان کے لئے نصرت کرو اور ان کی طرف سے جاؤ کرو، وسیلہ الدارین ص ۱۲۷،

۱۔ انشاء اللہ مفید ص ۱۲۳،

۲۔ المہدوف ص ۱۰۸، ۳۔ بعض نے عربوں سے اس غلام کا نام دہریدہ لکھا ہے، نقل حسینؑ نورانی ص ۱۰۸،

۴۔ طرفین پر چکا ہے، پھر کیا تھا ہر ایک نے اصحاب حسینؑ پر تیر برس کا شروع کر دیئے نتیجہ میں کوئی بھی ایسا نہ بچا جو زخمی نہ ہوا ہو اور اس حمل میں امام حسینؑ کے چاس اصحاب شہید ہو گئے، امام حسینؑ نے فرمایا: یہ تیر اس جماعت نے مارے ہیں! اٹھو اور موت کی طرف بڑھو کہ اس سے تمہاری نفرت کرے گا۔

۵۔ اصحاب میں سے ایک جماعت کچھ دیر تک جنگ کرتی رہی وہ بھی درجہ شہادت پر فائز ہو گئے۔

شہید ہونے والے

۱۔ امام حسینؑ کے والد اصحاب حسینؑ کی تعداد ان شہر آشوب نے چالیس بیان کی ہے اور ان میں سے ایک نام لکھتے ہیں ان میں سے دو حسینؑ کے موالی اور دو امیر المؤمنینؑ کے موالی تھے یہ لیکن ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ مقتدر صلی اللہ علیہ وسلم ان کے اسماء سادی کی کتاب "ابصار العین" سے نقل کرتے ہیں کہ میں ایسے بھی تھے کہ ان کے بارے میں مؤرخین نے لکھا ہے کہ وہ پہلے حمل میں شہید نہیں ہوئے تھے بلکہ ان میں بیان کرتے ہیں،

۲۔ امام حسینؑ کے چوبیسوں میں سے تھے جو ماریہ کا گھر میں اکٹھے ہوتے تھے یہ یزید بن شیبہ کے ساتھ تھے، امام حسینؑ سے ملتی ہو گئے، ۵،

۳۔ امام حسینؑ کے صحابی، تابعی اور کو فہ کے رہنے والے تھے جب انہیں یہ معلوم ہوا کہ امام حسینؑ کو فہ میں امام حسینؑ کی خدمت میں پہنچے جب دونوں فوجوں کے درمیان گھٹکوں کا سلسلہ چل رہا تھا

۴۔ امام حسینؑ کے چوبیسوں میں سے تھے جو ماریہ کا گھر میں اکٹھے ہوتے تھے، امام حسینؑ سے ملتی ہو گئے، ۵،

۵۔ امام حسینؑ کے چوبیسوں میں سے تھے جو ماریہ کا گھر میں اکٹھے ہوتے تھے، امام حسینؑ سے ملتی ہو گئے، ۵،

اور جنگ نہیں چھڑی تھی۔

(۳) بشر بن عمر

”ہمیں میں سے تھے جنگوں میں ان کے بیٹوں کی دلاوری مشہور ہے یہ بھی اس وقت دونوں فوجوں کے درمیان جنگ نہیں چھڑی تھی۔“

(۴) جابر بن حجاج

جابر امام حسین کے دیر اصحاب میں سے تھے آپ نے روز عاشورہ فجر سے قبل

(۵) حباب بن عاصم

کو ذمہ کو نہ تھی شیعہ تھے مسلم بن عقیل کے ہاتھ پر بیعت کی انتشار سفسی ہوئے۔

(۶) جبلة بن علی

کو ذمہ شجاع افراد میں سے ایک تھے شروع ہی سے مسلم کے ساتھ رہے چہ امام

(۷) جنادة بن کعب

مکہ میں سے امام حسین کے ساتھ تھے وہ اپنے اہل و عیال کے ساتھ امام حسین کے گھر

(۸) جذب بن حمیر کنزی

پر باحیثیت مشہور شیعہ اور امیر المؤمنین کے صحابی تھے اور شہداء میں امام حسین

حس سے ملاقات ہونے سے پہلے پہنچا کر کہا آئے سیرت نگاروں نے لکھا ہے کہ وہ شہید ہوئے بعض نے لکھا ہے کہ وہ اپنے والد کے ساتھ ابتداء جنگ میں شہید نہیں ہے۔

۱۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳، ۲۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳، ۳۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳

۴۔ وسیلہ اللہ میں لکھا ہے کہ انہوں نے میدان میں اگر جنگ کی اور شہادت پائی ص ۱۱۴

۵۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳، ۶۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳

امام حسین

اور ان کا تعلق بنی تمیم سے تھا چنانچہ انہیں کے ساتھ امام حسین سے جنگ کرنے کے لئے آئے امام حسین کی شرائط قبول نہ کی تو وہ دیکر افراد کی مانند فوج کو ذمہ الگ ہو گئے امام حسین کے پاس پہنچ گئے۔

امام حسین

والد بہان حضرت حمزہ بن عبد المطلب کے غلام تھے، دیر سوار تھے اور ان کے بیٹے حارث اور امام حسین کے طرفدار رہے اور کہا پہنچ کر درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

امام حسین

جنگوں میں شہرت پائی تھی، عربین سود کی فوج کے ساتھ کربلا آئے تھے لیکن چونکہ ان کی بیعت مانی تھی اس لئے امام حسین سے متصل ہو گئے تھے۔

امام حسین

اور یہ وہی ہیں جو بصرہ میں سے کربلا میں امام حسین کے پاس آپ کے خط کا جواب ملائے تھے یہ خط امام حسین کے پاس پہنچا، حجاج بن بدر امام حسین کے ساتھ ہے یہاں تک عاشورہ کے دن فجر کے وقت ان کی شہادت بعد از ظہر ہمارے ذیل میں لکھی ہے۔

امام حسین

امام حسین ان امیر المؤمنین کے اصحاب میں سے ہیں، تناس کو ذمہ امیر المؤمنین کی افواج امام حسین کی شرائط قبول

امام حسین کی فوج سے تقریباً تیس فوجی شہدائے عاشورہ امام حسین سے ملحق ہو گئے تھے،

۱۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱۳

ذکر شروع ہونے سے قبل امام حسینؑ اور آپ کے اصحاب سے ملحق ہوئے پہلے حرم میں رخصی ہوئے
 اس کے بعد کہ ابن سعد کے پاس گئے عمر بن سعد انہیں قتل کرنا چاہتا تھا لیکن فوج کو دیکھ کر
 انہوں نے ابن سعد سے آزاد کرادیا، رخصی تھے ہی چھ ماہ کے بعد شہادت پائی زیارت ناحیہ
 السلام علی الجویع الماسورہ سوار ابن ابی حنیہ الغضبی، ۱۔

ابن عبد اللہ

تھے سیف اور مالک کے بیٹوں کے ساتھ امام حسینؑ سے ملحق ہوئے تھے اور روز عاشورہ جل

۲۔

ابن ابی

جب فوج کو کو امام حسینؑ سے جنگ کے لئے تیار ہوئی تو اس وقت
 حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے تھے، ان میں سے ایک یہ بھی تھے ہشتاق کو
 حملے میں شہید ہوئے اور درج شہادت پر حاضر ہونے سے پہلے انہیں ایک اور فیض
 ناز میں سب سے پہلے ان پر سلام منقول ہے ۳۔

۱۴) سالم

یہ عام کے غلام تھے بصرہ میں بود و باش تھی اور عام اس شہر کے شیعہوں میں
 شیعہ اپنے بیٹوں اور دیگر لوگوں کے ساتھ مکہ میں امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے
 بھی ان کے ساتھ امام حسینؑ سے ملحق ہوئے اور ان کے ہمراہ کر بلا ہوئے ۴۔

۱۵) سالم بن عمرو

۱۵) سالم بن عمرو،
 یہ شیعہ تھے کوفہ کے رہنے والے تھے اور جب طرفین کے درمیان گفتگو چلا
 اور اصحاب حسینؑ سے ملحق ہوئے ۵۔

۱۔ ابصار المؤمنین ص ۱۰۳، ۲۔ ابصار المؤمنین ص ۱۰۹،

۳۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱،

۲۵۶
 ذکر تو وہ لڑتے کے وقت امام حسینؑ سے ملے ۱۔

۱۴) زاہر بن عمرو

شجاع، تجربہ کار اور شہور بہادر تھے، اہلبیت کے شہرت یافتہ شیعہوں میں
 دوست تھے جب زیاد بن ابی عمرو بن عثمان کی تلاش شروع کی تو زاہر ان کے ہمراہ تھے اور
 ساتھ تھے جب معاویہ عرو کے قتل میں تھا اس وقت اسے زاہر کی بھی تلاش تھی
 معاویہ کے ہاتھ سے شہید اور زاہر روپوش ہو گئے مدینہ میں مناسک حج بجالانے کے بعد
 کی اور آپ کے ساتھ کر بلا ہوئے ۲۔

۱۵) زبیر بن سلیم

جب فوج کو کو امام حسینؑ سے جنگ کے لئے تیار ہوئی تو اس وقت
 حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے تھے، ان میں سے ایک یہ بھی تھے ہشتاق کو
 حملے میں شہید ہوئے اور درج شہادت پر حاضر ہونے سے پہلے انہیں ایک اور فیض
 ناز میں سب سے پہلے ان پر سلام منقول ہے ۳۔

۱۶) سالم

یہ عام کے غلام تھے بصرہ میں بود و باش تھی اور عام اس شہر کے شیعہوں میں
 شیعہ اپنے بیٹوں اور دیگر لوگوں کے ساتھ مکہ میں امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے
 بھی ان کے ساتھ امام حسینؑ سے ملحق ہوئے اور ان کے ہمراہ کر بلا ہوئے ۴۔

۱۷) سالم بن عمرو

۱۷) سالم بن عمرو،
 یہ شیعہ تھے کوفہ کے رہنے والے تھے اور جب طرفین کے درمیان گفتگو چلا
 اور اصحاب حسینؑ سے ملحق ہوئے ۵۔

۱۔ ابصار المؤمنین ص ۱۰۳، ۲۔ ابصار المؤمنین ص ۱۰۹،

۳۔ ابصار المؤمنین ص ۱۱،

-YDA

۴۳۳) عبد اللہ بن یزید

(۲۳) عبید اللہ بن نزید

عبدالرحمن بن عبدالرب

(۲۶) عبد الرحمن بن مسعود

(۲۷) عمر بن ضبیہؓ

الإبصار بعين ص ١٠١، ط ١

۵۔ بعض صاحبان قلم نے بھی

عبداللطیف الازدی

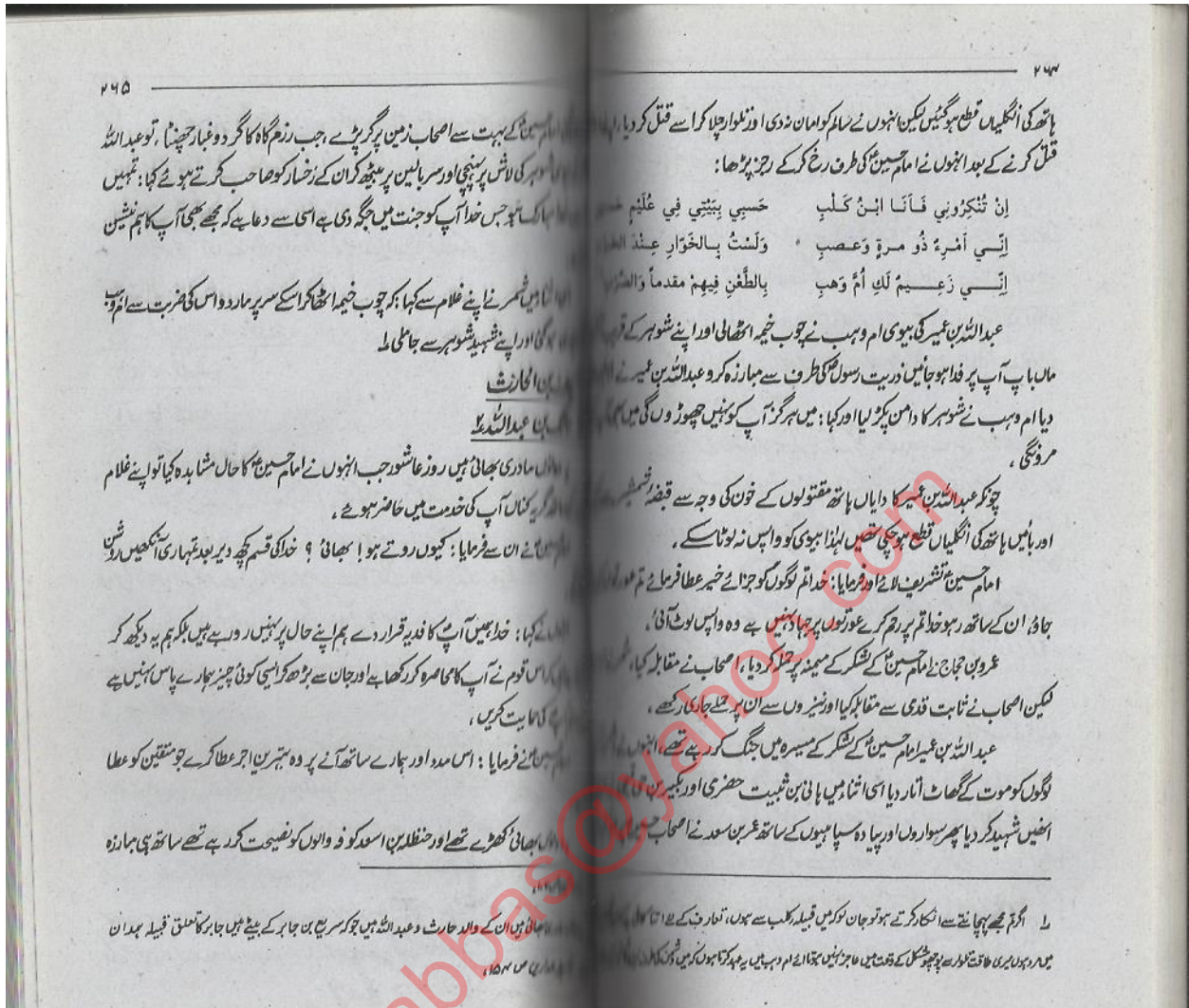
بسم الله الرحمن الرحيم

یہ جنگ صغین میں

ابن زهير الثقفي

یہاں میر میران میں گئے سالم ویدار نے جو کہ میدان میں کھڑے تھے ان کے نسب کے بارے
 میں ان کا تعارف کیا، ان دونوں نے کہا: تم تمہیں پہچانتے، پھر انہوں نے زہیرا حبیب
 علیہا السلام سے کچھ اگے کھڑا تھا، عبداللہ بن عمر نے کہا: تجھے لوگوں سے جنگ کئے
 میں نے متاثر ہوں آگے گا وہ یقیناً تجھے بہتر ہوگا یہ کہہ کر اس پر حملہ کیا اور اسے قتل کر دیا
 اس وقت سالم نے ان پر حملہ کیا، اصحاب حسین رضی اللہ عنہم نے کہا کہ سالم سے بچو!
 یہودی سالم نے نواہ سے وار کیا جسے عبداللہ بن عمر نے اسے تھکے روکا نتیجہ میں بائیں

ان کی کینٹ ابو وہب تھی قبیلہ بنی علیم سے تھے زوجہ لم وہب بنت عبد تھی، وسیلہ الدارین ص ۱۷۸،



یہاں تک کہ انہیں قطع ہو گئیں لیکن انہوں نے سزا کو امان نہ دی اور نکلوا چلا کر اسے قتل کر دیا۔
قتل کرنے کے بعد انہوں نے امام حسینؑ کی طرف رخ کر کے رجز پڑھا:

إِن تَنْجُوْنِي فَأَنَا ابْنُ كَلْبٍ حَسْبِي بَيْتِي فِي غَلَمٍ
إِنِّي أَنُورُهُ ذُو مِرَّةٍ وَعَصَبٍ وَلَنْتُ بِالْخَوَارِ عِندَ الْعَدُوِّ
إِنِّي زَعِيمٌ لِّكَ أُمُّ وَهَبٍ بِالطُّغْنِ فِيهِمْ مَقْدَمًا وَالْعُشْرُ

عبداللہ بن عیسٰی کی بیوی ام وہب نے جو بخت خیر اٹھالی اور اپنے شوہر کے قتل
ماب باپ آپ پر فلا ہو جائیں اور بیت رسولؐ کی طرف سے مبارزہ کرو عبداللہ بن عیسٰی نے
دیا ام وہب نے شوہر کا دامن پکڑ لیا اور کہا: میں ہرگز آپ کو نہیں چھوڑوں گی میں
مرونگی،

چونکہ عبداللہ بن عیسٰی کا دایاں ہاتھ مقتولوں کے خون کی وجہ سے قفسہ نشین
اور بائیں ہاتھ کی انگلیاں قطع ہو چکی تھیں لہذا بیوی کو واپس نہ لوٹا سکے۔

امام حسینؑ تشریف لائے اور فرمایا: خدانم لوگوں کو جزائے خیر عطا فرمائے تم
جاؤ، ان کے ساتھ رہو خلا تم پر تم کے عورتوں پر چاہا نہیں ہے وہ واپس لوٹ آئی،

عروبن حجاج نے امام حسینؑ کے لشکر کے میخ پر چل کر دیا، اصحاب نے مقابلہ کیا،
لیکن اصحاب نے ثابت قدمی سے مقابلہ کیا اور فیروں سے ان پر تلے جا رہے تھے،

عبداللہ بن عیسٰی نے امام حسینؑ کے لشکر کے میخ میں جنگ کر رہے تھے، انہوں نے
لوگوں کو موت کے گھاٹ اتار دیا اسی اثنا میں باقی بن ثبیت حضرت علیؑ اور بکیر بن

انہیں شہید کر دیا پھر سواروں اور پیادہ سپاہیوں کے ساتھ عرب بن سعد نے اصحاب
کو گم کر دیا۔

اگر تم مجھے پہچانتے ہو تو جان کر میں قبیلہ کلب سے ہوں، تمہارے لئے اس کا
میر ہوں میری طاقت اور سے چھوٹا کے وقت میں عاجز نہیں ہوا ام وہب میں یہ دیکھتا ہوں کہ میں

یہاں تک کہ انہیں قطع ہو گئیں لیکن انہوں نے سزا کو امان نہ دی اور نکلوا چلا کر اسے قتل کر دیا۔
قتل کرنے کے بعد انہوں نے امام حسینؑ کی طرف رخ کر کے رجز پڑھا:

إِن تَنْجُوْنِي فَأَنَا ابْنُ كَلْبٍ حَسْبِي بَيْتِي فِي غَلَمٍ
إِنِّي أَنُورُهُ ذُو مِرَّةٍ وَعَصَبٍ وَلَنْتُ بِالْخَوَارِ عِندَ الْعَدُوِّ
إِنِّي زَعِيمٌ لِّكَ أُمُّ وَهَبٍ بِالطُّغْنِ فِيهِمْ مَقْدَمًا وَالْعُشْرُ

عبداللہ بن عیسٰی کی بیوی ام وہب نے جو بخت خیر اٹھالی اور اپنے شوہر کے قتل
ماب باپ آپ پر فلا ہو جائیں اور بیت رسولؐ کی طرف سے مبارزہ کرو عبداللہ بن عیسٰی نے
دیا ام وہب نے شوہر کا دامن پکڑ لیا اور کہا: میں ہرگز آپ کو نہیں چھوڑوں گی میں
مرونگی،

چونکہ عبداللہ بن عیسٰی کا دایاں ہاتھ مقتولوں کے خون کی وجہ سے قفسہ نشین
اور بائیں ہاتھ کی انگلیاں قطع ہو چکی تھیں لہذا بیوی کو واپس نہ لوٹا سکے۔

امام حسینؑ تشریف لائے اور فرمایا: خدانم لوگوں کو جزائے خیر عطا فرمائے تم
جاؤ، ان کے ساتھ رہو خلا تم پر تم کے عورتوں پر چاہا نہیں ہے وہ واپس لوٹ آئی،

عروبن حجاج نے امام حسینؑ کے لشکر کے میخ پر چل کر دیا، اصحاب نے مقابلہ کیا،
لیکن اصحاب نے ثابت قدمی سے مقابلہ کیا اور فیروں سے ان پر تلے جا رہے تھے،

عبداللہ بن عیسٰی نے امام حسینؑ کے لشکر کے میخ میں جنگ کر رہے تھے، انہوں نے
لوگوں کو موت کے گھاٹ اتار دیا اسی اثنا میں باقی بن ثبیت حضرت علیؑ اور بکیر بن

انہیں شہید کر دیا پھر سواروں اور پیادہ سپاہیوں کے ساتھ عرب بن سعد نے اصحاب
کو گم کر دیا۔

اگر تم مجھے پہچانتے ہو تو جان کر میں قبیلہ کلب سے ہوں، تمہارے لئے اس کا
میر ہوں میری طاقت اور سے چھوٹا کے وقت میں عاجز نہیں ہوا ام وہب میں یہ دیکھتا ہوں کہ میں

یہاں تک کہ انہیں قطع ہو گئیں لیکن انہوں نے سزا کو امان نہ دی اور نکلوا چلا کر اسے قتل کر دیا۔
قتل کرنے کے بعد انہوں نے امام حسینؑ کی طرف رخ کر کے رجز پڑھا:

إِن تَنْجُوْنِي فَأَنَا ابْنُ كَلْبٍ حَسْبِي بَيْتِي فِي غَلَمٍ
إِنِّي أَنُورُهُ ذُو مِرَّةٍ وَعَصَبٍ وَلَنْتُ بِالْخَوَارِ عِندَ الْعَدُوِّ
إِنِّي زَعِيمٌ لِّكَ أُمُّ وَهَبٍ بِالطُّغْنِ فِيهِمْ مَقْدَمًا وَالْعُشْرُ

الکتاب الغفر

خدا کو کیا پایا!

وہاں سے ہو،

تیار ہو؟

۲۵ محرم ۱۰۶۷

شہادت پائی ۷

⑤ سعد غلام عمرو، ۳۳

④ مجمع بن عبد اللہ

ان چاروں نے ایک ساتھ اہل کوفہ پر حملہ کیا جب دشمن کی فوج کے درمیان میں

۱۔ ابصارِ اعین ص ۷۸۔

[illegible]

۱۰۸ اشعار میں سے درج ذیل شہر ہو گئی :
 ولم تر عنی شاعرم فذلما نصم، ولا قبایسم لعلنا
 اشد راءا باسیون لدی الوغا، الاکلی من عجب الهمام

عروہ بشارت آئیں بائیں سکڑ زمین پر گرے اور جاندیدی خدا ان پر رحمت نازل کر لیکن ان کے بھائی علی نے جو عمر بن سعد کے ساتھ کر بلا آیا تھا، دیکھا کہ اس کا بھائی مارا کوڑوں کی فوج سے باہر نکلا اور آواز دی: اے حسین! آپ نے میرے بھائی کو قریب دیکر قتل کیا، امام حسین نے فرمایا: میں نے اسے فریب نہیں دیا بلکہ خدا نے اس کی ہدایت کی اور تم گمراہ اس نے کہا: اگر میں آپ کو قتل نہ کروں تو خدا مجھے قتل کرے، یا آپ کے ہاتھ سے مارا اس کے بعد اس نے آپ پر حملہ کر دیا،

نافع بن ہلال نے نیزہ مار کر اسے زمین پر گرادیا اس کے دوستوں نے بدھ کر اسے میدان سے اس کے زخموں کی مرہم پہنچی وہ صبح ہو گیا۔

۱۰ سعد بن حارث

۱۱ ابوالخوف بن حارث

یہ دونوں عمر بن سعد کے ساتھ کر بلا پہنچے تھے اور جب روز عاشورہ امام حسین نے "لا الہ الا اللہ" کی آواز بلند کی اور اس آواز کو سنا سنا بچوں اور عورتوں میں ناروشیوں کی آواز بلند ہوئی تو یہ دونوں دیکھنے کی تاب نہ لاسکے اور تلوار کھینچ کر فوج کو فوج پر تلے اور عمر بن سعد کے دم میں دم دیا امام نے فرمایا: میں حجاز میں تھے اپنے حال سے دوں گا اس پر بھی اس نے بے رشتگی کا اظہار کیا،

۲۶۲ م

۱۲ ابصار امین ص ۹۲

۱۳ سعد بن حارث بن سلمہ رضی اللہ عنہ اور ان کے بھائی ابوالخوف واند کلین "خارج" میں موجود تھے اور ان کے حسین سے جنگ کرنے کو بلا آئے تھے، روز عاشورہ کے بعد جب اصحاب حسین شہید ہو گئے اور آپ کے ساتھ صرف شہر فر و حضری رہ گئے اور انہوں نے اہل رسول کے بچوں کے رونے کی آواز سنی تو کہا: لا حول ولا قیہ فیہ ان کے بیٹے حسین مجس اور بنی روقیہ ان کے جد کا شفا عت کی امید ہے ہم ان سے کہے جنگ کر سکتے ہیں لہذا وہ ملحق ہو گئے، وسیلہ الدارین ص ۱۴۹

۱۴ امام حسین کے درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

۱۵ ان لوگوں نے لکھا ہے کہ یہ دونوں بھائی امام حسین سے کچھ پہلے اور دیگر اصحاب کے بعد شہید ہوئے

۱۶ نافع بن ہلال

۱۷ حضرت امیر المؤمنین کے صحابی، شریف، شجاع، قاری قرآن اور حدیث نویس تھے جنگ جمل، کربلا میں حضرت علی کی رکاب میں جنگ کی، ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ جب امام حسین عراق آئے تو ان کے ساتھیوں کے ساتھ درمیان راہ امام حسین سے ملے ہوئے تھے،

۱۸ نافع بن ہلال نے قتل ہو گیا اور اس کا انتقام لینے کے لئے اس کا بھائی میدان میں آیا تو نافع بن ہلال نے اس کے زخمی کر دیا اس کے ساتھیوں نے اسے بچانے کے لئے نافع بن ہلال پر حملہ کر دیا نافع ان سے

۱۹ امام حسین کے درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

۲۰ دینی علی بن حسین بن علی بن ابی طالب نے قرآن مجید میں "لا الہ الا اللہ" کی آواز بلند کی اور اس آواز کو سنا سنا بچوں اور عورتوں میں ناروشیوں کی آواز بلند ہوئی تو یہ دونوں دیکھنے کی تاب نہ لاسکے اور تلوار کھینچ کر فوج کو فوج پر تلے اور عمر بن سعد کے دم میں دم دیا امام نے فرمایا: میں حجاز میں تھے اپنے حال سے دوں گا اس پر بھی اس نے بے رشتگی کا اظہار کیا،

۲۱ نافع بن ہلال نے قتل ہو گیا اور اس کا انتقام لینے کے لئے اس کا بھائی میدان میں آیا تو نافع بن ہلال نے اس کے زخمی کر دیا اس کے ساتھیوں نے اسے بچانے کے لئے نافع بن ہلال پر حملہ کر دیا نافع ان سے

۲۲ امام حسین کے درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

۲۳ ابصار امین ص ۹۲

۲۴ امام حسین کے درجہ شہادت پر فائز ہوئے۔

<http://fb.com/ranajabirabbas>

ان تَشَاءُوا عَنِّي فَلَاقِي دُو لَبَدٍ مِّن قَرْعِ قَوْمٍ مِّن ذُرِّي نَبِيٍّ
فَعَن بَعَانِي حَائِزٌ عَنِ الرَّشَدِ وَكَافِرٌ بِدِينِ جَبَّارٍ صَدَدٍ

جس لوگوں نے کہا کہ میں آپ کی جگہ کا منظر اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے وہ کہتے ہیں کہ میدان جنگ
گیا تو انہوں نے دیکھا کہ مسلم بن عوف بن زید پر گروڑے ہیں، زندگی کے آخری لمحات تھے کہ امام حسین
بائیں پر سنبھلے اور فرمایا: خاتمہ پر رحمت نازل کرے اسے مسلم بن عوف اس کے بعد اس آیت کی
(فَيَنْهَنُ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَيَسْتَنْظِرُ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا)

جیسب بن مظاہر قریب آئے اور کہا: آپ کا شہید ہوا میرے لئے شاق ہے

کی بشارت دیتا ہوں،

مسلم بن عوف نے غیث آواز میں کہا: خدا آپ کو نیک بشارت دے،

جیسب بن مظاہر نے ان سے کہا: اگر میں بھی تھوڑی دیر آپ سے ملتی نہ ہوتا تو
مجھے اپنا وصی قرار دینا اور میں آپ کی وصیوں پر عمل کرتا،

مسلم بن عوف نے کہا: میں آپ کو ان امام حسینؑ کے بارے میں وصیت کرتا
جان نذا کوئی، جیسب نے کہا: رب کہہ دیجئے کہ میں ایسا ہی کروں گا اس کے جو مسلم بن عوف کی وصیت
رحمت حق کے حواشی خواہم ہوں، مسلم بن عوف کی موت پر ان کی کینے نے فریاد کی یا سیدہ یا
عزیز یا سدا کی فوج نے شور مچایا کہ ہم نے مسلم بن عوف کو قتل کر دیا، شہید بن رہی ان کی

میت اس نے کہا: تمہاری ماں نہیں روئے تم نے اپنے ہاتھوں خود کو مارا ڈالا اور اپنی ذلت
فراہم کر لئے اس وقت خوشی نہ مناؤ کہ تم نے مسلم بن عوف جیسے آدمی کو قتل کیا ہے
خدا کی قسم میں نے مسلمانوں کی بڑی عزت دیکھی ہے میں نے آذر بائجان کے

ما اگر تم مجھے جانا چاہتے ہو تو جان کو میں دلا دوں میں ہی اس کے قبیلہ کی برگزیدہ شاخ سے ہوا تھا
دورا و سادات سے دور ہو جائے گا اور بے نیاز خلائے جہار کے دن سے بھر جائے گا،

یہ سورہ احزاب ۳۳،

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ وَمَوْلَايَ الضَّعِيفُ أَضْرِبْ فِي أَغْرَاضِكُمُ بِالضَّعِيفِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ وَمَوْلَايَ الضَّعِيفُ أَضْرِبْ فِي أَغْرَاضِكُمُ بِالضَّعِيفِ

ایہا نبیؐ اور میرے مولاؑ! میں کمزوروں سے جنگ کر رہا ہوں میں نے چنانچہ جب ان میں سے کوئی
کمزور ہوتا تھا تو دوسرا اسے دشمن کے گھروں سے نکالتا تھا، یہ دونوں گھنہ بھرا سی طرح
کمزورین قتال میں حریفین کا گھونٹا رہتی ہوگی لیکن وہ اسی طرح جنگ کرتے رہے اور
کمزورین سفیان نے "جیسے آپ سے دیر نہ دینی تھی" حصین بن نیر کی فتنہ انگیزی سے
ہلک کر دیا لیکن حریفانہ سے موتمہ نہ دیا اور تلوار سے اس کے دھڑکے کر دینے پھر ایوب
کمزور کے کو ایک تیر مار کر گرا دیا مجبوراً حگھوڑے سے پیدل ہو گئے اور پیدل لڑتے ہوئے

یہ سورہ احزاب ۳۳،

یَا أَيُّهَا النَّبِيُّ وَمَوْلَايَ الضَّعِيفُ أَضْرِبْ فِي أَغْرَاضِكُمُ بِالضَّعِيفِ
یہ سورہ احزاب ۳۳،

یہ سورہ احزاب ۳۳،
یہ سورہ احزاب ۳۳،
یہ سورہ احزاب ۳۳،
یہ سورہ احزاب ۳۳،

چاہیں اشتیاق کو فی انار کیا اس وقت ابن سعد کی پیاوہ فوج کے سپہ سالار نے ہر پر حملہ کر کے انہیں امام حسینؑ کی طرف دوڑے اور انہیں خیمہ میں اٹھالائے اور ان کے سر اپنے پیچھے کرچہ سے کھینچ کر مار دیا اور فرمایا: تم آزاد ہو جس کا تمہاری ماں نے تمہارا نام رکھا ہے تم دنیا و آخرت میں آزاد ہو امام حسینؑ کے اصحاب میں سے کچھ نے حرکت میں یہ اشارہ کیے:

بعض لوگوں نے ان اشعار کی نسبت علی بن حسینؑ کی طرف دی ہے یہ اور بعض کہنے کے

فَلْيَعْمُ الْخُرُؤُا بَنِي رِيَّاحٍ صَبُورٌ عِنْدَ مُشْتَبَاهِ الزَّمَانِ
وَيَعْمُ الْخُرُؤُا إِذْ فَادَى حُسَيْنًا وَجَادَ بِنَفْسِهِ عِنْدَ الصَّبَابِ

خود امام حسینؑ نے کہے تھے کہ

(۱۶) حبيب بن مظاهر
رسول کے اصحاب میں سے تھے کوفہ میں بود و باش تھی حضرت علیؑ کے چاہنے والے
میں آپ کے ساتھ رہے اور شیرازی کی آپ کے علوم کے حامل تھے، جو لوگ مشتاقانہ
کے لئے دوڑے ان میں سے ایک ہیں۔

حبيب بن مظاهر اور سلم بن عوف کوفہ میں امام حسینؑ کیلئے ہجرت لیتے تھے اور
زیادہ کوفہ آیا اور اہل کوفہ نے انہیں تنہا چھوڑ دیا تو حبيب بن مظاهر اور سلم بن عوف کے
انہیں چھپایا تاکہ انہیں کوئی صدمہ نہ پہنچے جب امام حسینؑ کو بلا پہنچے تو یہ دونوں امام
روانہ ہوئے راتوں کو راستہ طے کر کے کلمہ حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے۔

۱۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۲۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۳۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۴۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۵۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۶۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۷۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۸۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۹۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۱۰۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۱۱۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۱۲۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۱۳۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۱۴۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۱۵۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۱۶۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۱۷۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۱۸۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۱۹۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۲۰۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۲۱۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۲۲۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۲۳۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۲۴۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۲۵۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۲۶۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۲۷۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۲۸۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۲۹۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۳۰۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۳۱۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۳۲۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۳۳۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۳۴۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۳۵۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۳۶۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۳۷۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۳۸۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۳۹۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۴۰۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۴۱۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۴۲۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۴۳۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۴۴۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۴۵۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۴۶۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۴۷۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۴۸۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۴۹۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۵۰۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۵۱۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۵۲۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۵۳۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۵۴۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۵۵۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۵۶۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۵۷۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۵۸۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۵۹۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۶۰۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۶۱۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۶۲۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۶۳۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۶۴۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۶۵۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۶۶۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۶۷۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۶۸۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۶۹۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۷۰۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۷۱۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۷۲۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۷۳۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۷۴۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۷۵۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۷۶۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۷۷۔ نفس المہجوم ص ۲۲

۷۸۔ حیات الامم حسینؑ ص ۳۱
۷۹۔ بہترین اذاد تھے وہ جو کہ قبیلہ بنی ریاح سے ہے جب ان پر نیرنگ لگے تو ثابت قدم رہے
۸۰۔ نے خود کلمہ حسینؑ پڑھ کر ان کی مدد کی۔ سچے کے وقت جان دی۔
۸۱۔ مقتل حسینؑ خوارزمی ج ۲ ص ۱۰
۸۲۔ مقتل حسینؑ مرقوم ص ۳۵
۸۳۔ بعض نے انہیں مظاهر کے بجائے مظہر لکھا ہے۔
۸۴۔ نفس المہجوم ص ۲۲

PLA

۱۔ واکوہ کے ایک ہندو تھی جس کا سر گھوڑے کی گردن میں جھکا ہوا اور کوڑھ پانچوں کی مانند بن کر بڑا کپڑا پہن رکھا تھا۔ جب اس کو اس وقت ناما پتہ پڑا تو اس نے اپنے باپ کا سر کوڑھ کیا اور تھی کے پیچھے چلے گئے تھے۔ یہ تھی نے پوچھا: تم میرے پیچھے کیوں چلے گئے ہو؟

۲۔ باپ کا سر میرے پیچھے ہونے کی وجہ سے اس نے کہا: اس سے میرا راض ہو چکا ہے میں انعام حاصل کرتا چاہتا ہوں تاہم اس شخص بدترین غلام میں سے تھا کہ گا اور دے ہو اس سے الگ ہو گئے، میں نے اس کو قتل کر دیا، اب اس کا سر میرے پیچھے ہے۔

۳۔ اپنے باپ کے قاتل کو جب کرودہ نے خود میں سوار تھا نظر کر کے وقت قتل کر دیا، اب اس کا سر میرے پیچھے ہے۔

۴۔ نفس المرحوم ص ۶۲، یہ تاریخ طبری اور بعض دوسری کتابوں میں ابوالثار محمد بن اسحاق کے ہاں ملتا ہے۔

ان کا نام عربین عبداللہ بن کعب ہے، تابعین میں سے ہیں، دلاور شیعہ نامور رہا ہوئے ہیں، حضرت امیر المؤمنینؑ کے یار تھے، جنگوں میں آپ کے ساتھ شریک رہے اور بعد امام حسن کے اصحاب میں شامل ہوئے اور کوفہ میں سکونت پذیر رہے،

جب معاویہ اپنے کبر کو پہنچا تو انہوں نے امام حسینؑ کو خط لکھا اور آپ کو کوفہ کی دعوت دی، مسلم بن عقیلؓ کے ان سپہ سالاروں میں سے ایک تھے۔ انہوں نے عبداللہ بن زیاد کے سپاہیوں میں کام کر لیا تھا۔ جب لوگوں نے مسلم بن عقیلؓ کے ساتھ بیوفائی کی تو ابو ثناء صاندی خفیہ طور پر گزرنے لگے، ابن زیاد کے کارندے شب و روز ان کی تلاش میں رہتے تھے، نافع بن ہلال کے پاس راہ میں امام حسینؑ سے ملے اور روز عاشورہ جب امام حسینؑ نماز پڑھ چکے تو آپ سے عرض کیا کہ عبداللہ میں چاہتا ہوں کہ اب اپنے دوستوں کے پاس پہنچ جاؤں اور مجھے یہ پسند نہیں کہ میں آپ کو مقتول دیکھوں۔

آپ نے انہیں اجازت مرحمت کی اور فرمایا: ہم بھی کچھ دیر بعد تم سے ملنے ہو جائیں گے۔ ان کا بدن بھی زخموں سے تھرپھر رہا تھا، اسی اثنا میں ان کے پاس قیس بن عبداللہ صاندی نے جس کو ان سے دیر پہلے دشمنی تھی۔ انھیں شہید کر دیا، ابو ثناء صاندی کے بعد شہید ہوئے،

(۱۹) سلمان بن مضر

زہیر بن قین کے چچا زاد بھائی تھے، انھیں کے ہمراہ حج آئے تھے جب درمیان راہ میں سے ملے ہوئے تویر بھی آپ سے متصل ہو گئے کہلا ساتھ آئے اور روز عاشورہ نماز فجر کی ادائیگی کے بعد پہلے شہید ہوئے،

ابو ثناء صاندی کے بڑے، آج آپ اپنے جدی اکہم سے اور اسی طرح منہجی سے علی رضی اللہ عنہ اور جابر رضی اللہ عنہ دیر سے ملنے ہوئے تویر بھی آپ سے متصل ہو گئے کہلا ساتھ آئے اور روز عاشورہ نماز فجر کی ادائیگی کے بعد پہلے شہید ہوئے،

ابو ثناء صاندی کے بڑے، آج آپ اپنے جدی اکہم سے اور اسی طرح منہجی سے علی رضی اللہ عنہ اور جابر رضی اللہ عنہ دیر سے ملنے ہوئے تویر بھی آپ سے متصل ہو گئے کہلا ساتھ آئے اور روز عاشورہ نماز فجر کی ادائیگی کے بعد پہلے شہید ہوئے،

ابو ثناء صاندی کے بڑے، آج آپ اپنے جدی اکہم سے اور اسی طرح منہجی سے علی رضی اللہ عنہ اور جابر رضی اللہ عنہ دیر سے ملنے ہوئے تویر بھی آپ سے متصل ہو گئے کہلا ساتھ آئے اور روز عاشورہ نماز فجر کی ادائیگی کے بعد پہلے شہید ہوئے،

وَقِي يَجِينِي نَضْلُ سَيْفٍ مَصْقَلٍ
عَنِ الْحُسَيْنِ الْمَاجِدِ الْمُفْضَلِ

ابن رسول الله خير مُرْسَلٍ
ابن جگسگار دشمنوں کے دانت کھٹے کر دیئے ان میں سے بہت سے لوگوں کو قتل کر کے

یہ کیا ہے

یہ امیر المؤمنین علیؑ کا صحابہ اور شیعوں میں سے تھے کوفہ میں سکونت تھی، مگر کا قصد کیا تو حجاج بن مسروق جعفری کوفہ سے مکہ آئے اور امام حسینؑ سے ملاقات کے لئے غار کے اوقات میں اذان دیتے تھے اور روز عاشور جب جنگ کے شعلہ بھڑکے تو حجاج جعفری امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے، جنگ کے لئے اجازت طلب کیا کافی دیر تک قائل کیا اور پھر واپس امام حسینؑ کے پاس گئے وہ خون میں شرابور و رجز پڑھ رہے تھے

أَلَيْدَمُ أَلْفَى جَذْلَكَ النَّبِيَّ
ثُمَّ أَبَاكَ ذَا الدَّيْ عِلَا

ذَلِكَ الَّذِي نَعْرِفُهُ الْوَصِيَّةَ

امام حسینؑ نے فرمایا: میں بھی تم سے ملحق ہوں گا اور تم سے ملاقات کروں گا، میدان کی طرف چلے گئے اور مبارزہ کرتے ہوئے شہید ہو گئے

یہ امیر المؤمنین علیؑ کے ان اصحاب میں سے تھے جو جنگ میں

تھے یہ مکہ میں حجاج بن مسروق کے ساتھ امام حسینؑ سے ملحق ہوئے روز عاشور امام حسینؑ کے پاس گئے، جنگ کے لئے اجازت حاصل کی میدان میں گئے اور رجز پڑھا:

مذکورہ الفاظ ص ۳۸۵

آج میں آپ کے جد بنی اکرمؑ کا دیدار کروں گا پھر آپ کے والد حضرت علیؑ کا

کو ہم دیکھیں رسولؐ جانتے ہیں، مقتل حسینؑ معزم ص ۲۵۵

یہ ابصار حسین ص ۱۹۹

اسعد نے عرض کیا: آپ نے سچ فرمایا قربان جاؤں کیا آپ اجازت دیتے ہیں کہ میں اپنے

والد کا دیدار کروں گا وہ سب سے پہلے میرے والد ہیں ص ۱۹۹

یہ ابصار حسین ص ۱۹۹

یہ ابصار حسین ص ۱۹۹

ابن عبد الله

4A2

<http://fb.com/ranajabirabbas>

سے نکلائے اور عاشور تک امام حسین کے ساتھ رہے جنگ چھڑی تو مبارزہ میں مشغول ہوئے
انہیں بلایا اور پوچھا کیا تم امام حسین کی مدد کرنے اور شہید ہونے کے لئے تیار ہو انہوں نے کہا
پینے کے لئے تیار ہوں اور پیروں کی مانند جنگ کرتے ہوئے شہادت پائی۔

۲۶ جون بن ابی مالکؓ

یہ ابوذر غفاری کے غلام تھے، امام حسین کی خدمت میں حاضر ہوئے جنگ کرنے
کی، امام حسین نے فرمایا: تمہیں ہماری طرف سے اجازت ہے لیکن تم تو ہمارے پاس عافیت کے لئے
کو مشقت میں نہ ڈالو۔

اس نے کہا: میں آرام میں رہوں اور آپ حضرات کو فائدہ میں چھوڑ دوں، ہر چند کہ

بو اچھی نہیں ہے اور حسب بلند و بالا نہیں ہے لیکن جب آپ ایسے امام نے میری خوشبو کو
میرے بدن کو پاک اور میرے چہرے کو رنگ لگا کر دیا ہے اور مجھے بہشت کی بشارت
کی قسم میں اس وقت آپ سے جہانہ ہوں گا جب تک کہ میرا کلا خون آپ کے شریف
نہ ہو جائے گا، اس کے بعد جڑ توڑی شہادت کی۔

كَيْفَ تَرَى الْفَجَارَ ضَرْبَ الْأَشْوَدِ بِالشَّرَفِ الْقَاطِعِ
أَذْبَ عَنْهُمْ بِالسَّانِ وَالْيَدِ أَوْجُو بِهِ الْجَنَّةَ يَوْمَ السَّوَدِ

۱۔ ابصار امین ص ۷۶۔

ابوعلی نے اپنی کتاب رجال میں نقل کیا ہے کہ وہ ابی نور سے تھے حضرت عثمانؓ
جب ابوذر کو عثمان کے حکم سے ربدہ جلادین کیا گیا تو وہ بھی ابوذر کے ساتھ ربدہ گئے اور جب
تو وہ مدینہ لوٹ آئے اور حضرت سید کے ساتھ، پھر امام حسینؓ کے ہمارا رہے اور پھر امام حسینؓ کے
اور وہ اس سے کہ آئے، وسیلہ الدارین ص ۱۵، یہ غار یوگ! مشرق اور آگے وہ
جاکے دیکھتے ہیں؟ میں ہاتھ اور زبان سے اہل رسول کا دفاع کرتا ہوں امید ہے کہ یہ قیامت مجھے
۲۔ میں دواور دواوریزوں پر مگر تاجوں اور اس مہربانیت میں داخل ہونے کیلئے کمر بستہ ہوں،
میں صاحب مناقب نے ان کا ذکر کلاوا کے شہداء میں کیا ہے، امیر میں بیان ہوا ہے کہ عبد الرحمن بن العکرم
دن میں انھیں دیکھتے تھے، وسیلہ الدارین ص ۱۴، لیکن شیعہ اعتقاد میں انھیں امامین میں شمار کیا ہے،
۳۔ یہ برکتی رازی سے نقل ہو چکی ہے یہی ہے وہیں ہاتھ توڑ چکے ہیں خود کو بھروسہ جاتا ہے،

اولین جناده

کہا: میری مائے حکم دیا کہ میں میدان میں جاؤں، امام حسین نے اس کی یہ بات سنکر اسے
وہ میدان میں گئے اور شہید ہو گئے دشمنوں نے اس کو ستر فرکر کے امام حسین کی طرف پھینک
دیا اس کا رخایا اسے خون و نمک سے صاف کیا اور اسے فوج کو دکھانے کے لئے اس شخص کے سر پر دریا
کا پانی ڈھال دیا اس کے بعد خیمہ میں لوٹ آئی خیمہ کی چوب "بقعرے شمشیر"

(1450)

۱۵۳۵ء میں **وسیلہ الدلائل** میں، بعض اہل حق و عدل کا بیان ہے کہ جب وہ میلان
 آجوبی حُسن و نغمہ الامیر
 غلبی و خاشطہ و الیداء
 وَلَھَلْ تَقْدَرُوْنَ لَہٗ کُمْ نَظِیْرُ
 میں برسرِ تار دینے والے اور ڈولنے والے رول کا کہنے کا باعث سرسبز مٹی و فاطمہؑ کا مہر ہے کہ
 اس کا پتہ **پاکستان** میں **۱۹۶۳ء**

موت ہو، خلیفہ کو سلا سیدہ ہوں، فاطمہ کی اولاد سے دفاع کی خاطر ضرب لگا رہی ہوں،

۶۸۵

(۶۹) انس بن حارث

روز عاشورا ہاتھوں نے امام حسین علیہ السلام سے مدد حاصل کی اپنا عامر مگر سے
سے اپنی بیہود کو اوپر کر کے باندھا، امام حسین ان کی یہ کیفیت دیکھ کر رو دیے اور
یا شیخؑ

انہوں نے پیرا سال کے باوجود اٹھارہ کو فیول کو تہ تیغ کیا اور پھر خود بھی شہید ہو گئے۔

(۳۰) عبد اللہ بن عروہ

③٦ عبد الرحمن بن عروہ

ان دونوں بھائیوں کے جد امیر المؤمنین علیؑ کے محابا تھے، دونوں کو بلاشبہ امام
عاشورہ امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے سلام کیا اور عرض کیا ہم آپ کے ساتھ
سے دفاع کرنا چاہتے ہیں،

امام حسینؑ نے فرمایا: شاہ با شہوت نہیں یہ دونوں امام حسینؑ کے نزدیک
 کرتے رہے یہاں تک خود بھی شہید ہو گئے کہ زیارت ناحیہ میں آیا ہے:

١٠ بخار النوارج ٥٥ ص ٣٠، في اسد الغابة ج ١ ص ٣٣٩،

سید مقتل الحسینؑ مرقوم ص ۲۵۲،

ۛ ابصار العین ص ۛۛ،

ضَرْبُ قَتَى يَحْمِي عَنِ الْكِرَامِ
سُبْحَانَهُ مِنْ مَلِكٍ عَلَامِ

۲۴۰

ہاں جواب کلی

ماتم سے اس وقت تک راضی نہیں ہوں گی جب تک تم حسین عکس کے سامنے اور ان کے

۱۱۵۔ ملک خضر غلام پر ضرب لگا دیا ہے جو کہ ایک جوان ہے شریف

شجاع، فتادی، قزاقان، ترک تھے، چناؤدہ بن حارث کے ساتھ امام حسینؑ کی خدمت میں آیا خیال ہے کہ یہ وہی شخص ہے جس کے بارے میں اہل مقاتل نے یہ لکھا ہے کہ وہ ان کے مقابل میں یاد رکھئے ہوئے، تلوار سے جنگ کی اور جرح تو ان کی، زمین پر گرے تو امام حسینؑ نے ان کے سر بائیں آگے اور ان کی گردن کے نیچے ہاتھ دیا، انھیں بڑی سہولت سے کون ہے کہ فرزند رسولؐ نے اپنا چہرہ میرے چہرے پر رکھا ہے اس کے بعد ملا، اعلیٰ میں

(۴۶) رافع بن عبداللہ

۲۵) نیریدین شیط

۴۶) بکر بن حنی

یہ عرب بن سعد اور فوج کو ذکے ساتھ امام حسینؑ سے جنگ کرنے آئے تھے۔
 کے شیعہ ہو کر اٹھ کر وہ امام حسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو یہ فوج کو ذکے
 کے سامنے شہادت پائی۔

۱۸۵ ابصار العین ص ۸۵،

ب. ابعاد العین ص ۱۰۸

۱۱۳۰ نفس المجهوم ص ۲۸۸، ۱۱۳۱ البصار العين ص ۱۱۳

مال نے کہا بیٹا! بیوی کی باتوں کی پروا نہ کرو، امام حسین کی طرف سے جنگ کرونگا۔ وہ انہیں ان کے جد کی شفاعت نصیب ہو، وہب نے جنگ کی یہاں تک کہ ہاتھ کلم ہو گئے۔ لکڑی اٹھالی اور ان کی طرف روانہ ہوئیں اور ان سے کہا: میرے مال باپ آپ پر فدا ہو۔ رسول سے دفاع کیجئے،

وہب انھیں واپس لوٹنا چاہتے تھے لیکن وہ واپس نہ ہوئے امام حسین نے فرمایا: خدا تمہیں اہلبیت کی طرف سے جزائے خیر عطا فرمائے، وہ نہیں واپس چلی گئی وہب نے ان کی اور شہادت پائی۔

(۲۱) حبشی بن قیس بن سلم

ان کے دادا رسول کا صحابہ میں سے تھے، قبیلہ بنی نضیر سے ان کے والد نے کہا: کو درک کیا تھا یہ اس وقت کہ بلا میں پہنچے جب کہ جنگ کا فیصلہ نہیں ہوا تھا اور شہادت ہوئے،

(۲۲) زیاد بن عریب

ان کا حلق قبیلہ بھلان سے ہے، کنیت ابی عمرہ ہے، عابد و پجہ گزار تھے، ان کے اصحاب میں سے تھے خود نے بھی رسول کو درک کیا تھا، شہادت تھے، پرہیزگاری اور عبادت کا مہر کا بی کہتا ہے: میں کہلا میں موجود تھا میں نے ایک آدمی کو زبردست آزمائش دیکھا وہ جب بھی فوج کو فوراً حلق کرتے تھے انھیں پرانگندہ کر دیتے تھے پھر وہ امام حسین کے میں حاضر ہوئے اور عرض کیا:

ایشر بدیت الرشید یا ابن احمدا

فی جزء العز ووس تعلقو صفا

۱۔ میسر الاحزاب ص ۱۷۲

۲۔ انصار الامین ص ۷۹

۳۔ تمہیں بشارت ہو کر ترقی کی راہ کی ہدایت پائی اے احمد کے فرزند اور جنت میں اعلیٰ رتبہ ملے گا،

معلوم کیا کہ کون ہے؟ بتایا یہ ابو عمرہ خطلی ہے، پھر ان کے سامنے عامر بن منشل آیا

وہب کو شہید کر کے تن سے سر جدا کر دیا۔

وہب بن صلاب

وہب کو کر بلا کے درمیان راستہ میں جہنم کی منازل میں سے ایک منزل پر امام حسین کی خدمت میں لے کر آیا اور پھر ان سے جدا نہ ہوئے یہاں تک کہ کہلا میں شہید ہوئے۔

وہب بن عمر

وہب کے شہداء میں سے ایک تھے، حجاج بن بدر کے ساتھ بصرہ سے مکر آئے اور امام حسین کے اصحاب کے ساتھ اور ویر عاصور آپ کے سامنے جام شہادت نوش کیا زیارت ناحیہ میں آیا ہے: السلام

۱۔ انصار الامین ص ۷۹

ابن بن مقل

وہب اور وہب دتھے سخت جنگ کرنے کے بعد شہادت پائی۔

زید بن قرق

ان کے آل رسول سے دفاع کیا دشمن سے جنگ کی اور دشمن کی فوج کے چھیا سٹ پہاٹیوں کو

ابن بن عبد اللہ السیرنی

شہادت کا عظیم درجہ حاصل کرنے کی خاطر میدان میں آئے اور امام حسین کے دیگر انصار کی مدد

کے شہید ہوئے وقت جنگ انکار جزیر تھا:

۱۔ ابن عساکر ص ۱۵۰

۲۔ ابن عساکر ص ۱۵۰

۳۔ ابن عساکر ص ۱۵۰

۴۔ ابن عساکر ص ۱۵۰

۵۔ ابن عساکر ص ۱۵۰

امام حسینؑ کو اس کی فوج امام حسینؑ اور آپ کے اصحاب کا ساتھ
تو اس نے اپنی فوج کو حکم دیا کہ دائیں بائیں جانب سے ضیوں کو غارت کرنا شروع کر دے گا کہ
اصحاب کا محاصرہ کر سکے، اس جنگی ٹانگہ کا مقنا بل کرنے کے لئے آپ کے اصحاب تین تین آوازیں
میں تقسیم ہو گئے اور دشمن کے چوسپا ہی خیمے ہٹانے میں مشغول تھے ان پر تیرہ گولہ دار سے حملہ کیا
گھوڑے ہلاک کر دیئے، اس کے بعد عمر بن سعد نے ضیوں میں آگ لگانے کا حکم دیا۔

امام حسینؑ نے فرمایا: جلالہ واپنا ہی راستہ بند کر رہے ہیں چنانچہ امام حسینؑ
کی سختی وہ پوری ہوئی۔

امام حسینؑ

امام حسینؑ سے خطا اثنار راہ میں امام حسینؑ سے ملحق ہوا، جب آپ کے انصار شہید ہو چکے
اور آپ کے ساتھ ہونے والے لوگوں کا آپ کی خدمت میں حاضر ہوا اور کہا: میں آپ کے ساتھ تھا چاہتا تھا کہ
آپ کے اصحاب وفادار دربر شہادت پر فائز نہ ہوں میں آپ سے دفاع کروں لیکن اب
میں آپ سے ہٹ کر رہو گئے آپ تنہا رہ گئے ہیں آپ سے دفاع کرنے کی میں اپنے اندر طاقت نہیں
دیکھ دیتے کہ جس راستے سے آیا ہوں اسی سے لوٹ جاؤں۔

امام حسینؑ نے اسے اجازت دیدی اور اس نے ثابت قدم رہنے پر فرار کو ترجیح دی راستہ میں
ان کے ہاتھوں نے اس کا راستہ روکا اور پہچان کر چھوڑ دیا اور وہ کہلا سے نکل گیا۔

۱۔ تاریخ ابن اثیر ج ۸ ص ۸۰

۲۔ تاریخ کمال ابن اثیر ج ۸ ص ۸۰

۳۔ تاریخ ابن اثیر ج ۸ ص ۸۰

۴۔ تاریخ ابن اثیر ج ۸ ص ۸۰

اصحاب میں کی جنگ

عمر بن سعد نے جب یہ محسوس کیا کہ اس کی فوج امام حسینؑ اور آپ کے اصحاب کا ساتھ
تو اس نے اپنی فوج کو حکم دیا کہ دائیں بائیں جانب سے ضیوں کو غارت کرنا شروع کر دے گا کہ
اصحاب کا محاصرہ کر سکے، اس جنگی ٹانگہ کا مقنا بل کرنے کے لئے آپ کے اصحاب تین تین آوازیں
میں تقسیم ہو گئے اور دشمن کے چوسپا ہی خیمے ہٹانے میں مشغول تھے ان پر تیرہ گولہ دار سے حملہ کیا
گھوڑے ہلاک کر دیئے، اس کے بعد عمر بن سعد نے ضیوں میں آگ لگانے کا حکم دیا۔

امام حسینؑ نے فرمایا: جلالہ واپنا ہی راستہ بند کر رہے ہیں چنانچہ امام حسینؑ
کی سختی وہ پوری ہوئی۔

خیام پر حملہ

عمر بن سعد کے حکم کے مطابق شمر کے زیر فرمان فوج خیمے جلائے گئے، شمر امام حسینؑ
نزدیک پہنچ گیا اور نیزہ سے خیمہ کی طرف اشارہ کر کے چلایا: آگ لاؤ تاکہ اس خیمہ کو اس
سمیت جلا دوں۔

اہل حرم فریاد کناں خیمے سے باہر نکل گئے، امام حسینؑ نے شمر کو مخاطب کر کے کہا
کہ بیٹے خدا تجھے جہنم میں جلائے تو آگ مانگ رہا ہے تاکہ میرا خیمہ میرے باپ کی سمیت جلا دے۔

۱۔ اس سے یہ بات کچھ ایسی ہے کہ شہادت امام حسینؑ سے قبل بھی بعض نبیوں میں آگ لگائی تھی۔

۲۔ تاریخ کمال ابن اثیر ج ۸ ص ۸۰

۳۔ خیام حسینؑ کو جلائے کہندہ سے مستعد اور اس کے نتائج ذہن میں کر دینے کے لئے یہی گویا شمر نے

ان لوگوں سے کیا تھا جنہوں نے حضرت فاطمہؑ کا گھر جلا یا تھا،

امام حسینؑ کے اصحاب کی شجاعت و شرافت کا اعتراف

اس شخص سے کہا گیا جو فوج کو ذی وجود تھا: ولے ہو تجھ پر تو نے فرزند رسولؐ کو
کیا ہے؟ اس نے کہا: تہا لہ نہ ٹوٹ جائے! اگر تم کر بلا میں موجود ہوتے اور جو کچھ ہم
دیکھتے تو تم بھی ایسا کرتے، وہ قبضہ شمشیر پر ہاتھ رکھتے اور شیروں کی مانند ہمارے
اور خود موت پر جا پڑتے تھے، امان قبول نہیں کرتے تھے، دنیا کے مال و منال کی طرف
رکھتے تھے ان کے اور موت کے درمیان کوئی بھی فاصلہ قائم نہیں کر سکتا تھا اگر تم ان
کرتے تو وہ ہم سب کو قتل کر دیتے ہمارے لئے ان سے جنگ ناگزیر تھی۔

ابن عمارؓ اپنے والد سے نقل کرتا ہے: میں نے امام صادقؑ سے عرض کیا مجھے
اصحاب اور فدائاری و جان نثاری پر سبقت کرنے سے آگاہ کیجئے،
امام صادقؑ علیہ السلام نے فرمایا: ان کی آنکھوں کے سامنے سے پردے اٹھائے گئے
میں اپنی منزلیں دیکھ رہے تھے، اس لئے شہادت کی طرف بڑھ رہے تھے تاکہ جنت میں اپنی
پہنچ جا سکیں۔

اصحاب حسینؑ کے حالات کو اس عرب شاعر نے کس خوبصورتی سے بیان کیا ہے
جادوا بانفسہم فی حب سیدہم
والبخود بالنفس اقصی
المسابقون الی الکرام والعلی
لولا صوارمہم ووقع نبالہم
لَمْ تَسْمَعْ الْمَآذَانَ صَوْتَ

۱۔ شرح بیہا ابی الدیج ۳۶۳ ص ۲۶۳ ۲۔ علی الشریح ج ۱ ص ۲۶۳
۳۔ وہ اپنے امام کی محبت میں جان سے لڑ گئے جان نثاری کی خاوت کے اعلیٰ درجہ پر فالزیں مندوبوں کے حصول میں
یہی کی آپ کو یہ سب بڑے بڑے لوگوں کی تلواریں اور نیزے نہ ہوتے تو آج آذان کی آواز سنائی نہ دیتی۔

۱۔ علی اکبر مرقوم ص ۱۲ ۲۔ ابصار امین ص ۳۱ ۳۔ نفس المہوم ص ۳۷
۴۔ تاریخ کامل ابن خلدون ص ۲۶۳ ۵۔ تاریخ کامل ابن خلدون ص ۲۶۳

اور ان کے امیر و سکوان سے راجھی نہ کر انہوں نے ہمیں دعوت دی کہ ہماری مدد کریں گے اور

اوپر تلوار پہنچ رہے ہیں اور ہمارے قتل میں کوئی مضائقہ نہیں سمجھتے ہیں،

اسکے بعد امام حسینؑ نے عربین سعد کو مخاطب کر کے کہا: خدا تیری نسل کو قطع کرے
کسی کام میں برکت نہ دے اور میرے بعد تجھ پر ایسے شخص کو مسلح کرے جو تیرے بستر
جدا کر دے اور تیرے دم کے سلسلے کو قطع کرے کہ تو نے میری رسول سے قربت کا لحاظ نہیں کیا
سے اس آیت کی تلاوت کی:

﴿إِنَّ اللَّهَ أَصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِصْرَةَ عَلَى الْعَالَمِينَ﴾

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿۱۷﴾

اس وقت علی اکبرؑ نے غلاموں کو فوج پر حملہ کیا یا اور یہ رجز پڑھا:

أَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ بْنِ عَلِيٍّ نَسْعُتُ وَتَسِيتُ اللَّهُ لَارِ
أَطْعَمْتُكُمْ بِالسُّبْحِ حَتَّى يَنْتَفِي أَخْضَرْتُكُمْ بِالسَّيْفِ أَمْسِي
حُزْبُ غِلَامٍ هَاشِمِيٍّ عَلَوِيٍّ وَاللَّهِ لَا يَخْذِلُكُمْ فِيمَا أَلَمْتُمْ

متحد دہار دشمن کی فوج پر حملہ کئے بہت سے کوفیوں کو قتل کیا یہاں تک کہ دشمن
کی کثرت دیکھ کر عقد میں آپ سے باہر ہو گیا،

روایت ہے کہ علی اکبرؑ نے تشنہ لب ہونے کے باوجود ایک موبیہ دشمن کو قتل کیا
سے زخم کھاکر والد کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا: بابا! پیاس مجھے مارے ڈال

۱۔ سورہ آل عمران آیت ۳۳ ۳۴

میں علی حسین بن علیؑ کا بیٹا ہوں، خدا کی قسم سب سے زیادہ رسولؐ سے نزدیک ہم ہیں۔

نگاہ تار پھل گاہاں تک کہ وہ خم ہو جائے اپنے والد سے دفاع کروں گا اور رسولؐ سے تمہیں ضرب لگاؤں

ہاشمی کی ثایان شان ہے، خدا کی قسم ان زیادہم پر حکومت نہیں کر سکتا،

تا منافق میں کیا ہے کہ ستر آدمیوں کو قتل کئے،

اسلام میں رو دیئے اور فرمایا: واغوثاہ! بیٹے تھوڑی دیر اور جنگ کرو کہ عنقریب
وہاں کی زیارت کرو گے وہ تمہیں سیراب کریں گے اس کے بعد کبھی شنگی محسوس نہیں کرو گے
اسلام میں نے لکھا ہے کہ امام حسینؑ نے ان سے فرمایا: بیٹا اپنی زبان میرے منہ میں دے دو
اسلامی دی اور فرمایا کہ اسے منہ میں رکھ لو اور دشمنوں کی طرف لوٹ جاؤ امید ہے کہ دن ختم ہونے
پہلے اہلسیراب سیراب کریں گے کہ اس کے بعد کبھی شنگی محسوس نہیں کرو گے سہی علی اکبرؑ میدان میں
آئے اور رجز پڑھا:

الْحَزْبُ قَدْ بَانَتْ لَهَا الْحَقَائِقُ وَظَهَرَتْ مِنْ بَغْدَا حَصَادِقُ

وَاللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ لَا تُفَارِقُ وَجُودَكُمْ أَوْ تُفَعِّدَ التَّوَارِقُ ﴿۱﴾

اس طرح جنگ کر رہے ہیں اور یہاں تک دو سو دشمنوں کو ہلاک کر دیا یا عربین سچے لشکر میں

ایک ہونے کی جرأت نہیں تھی، لیکن مرہ بن سفید عہدی نے کہا: اگر یہ جوان میرے پاس سے

گئے اس کے باپ کو اس کے غم میں نہ رلا یا تو سارے عرب کے گناہوں کا بار میری گردن پر ہے

اسلامی علی اکبرؑ پر حملہ کیا تو آپؑ اس شنگی کے قریب سے گزرے تو اس نے نیزہ مار کر آپؑ کو

گرا دیا اور دوسرے غلطوں نے آپ کا بدن پارہ پارہ کر دیا یا

اس موقع میں نے نقل کیا ہے کہ مرہ بن سفید نے پہلے آپؑ کی پشت پر نیزہ مارا اور پھر فرقہ پر

ہلائی جس سے ستر گناہ ہو گیا آپؑ نے گھوڑے کی گردن میں بائیں ڈال دیں لیکن چونکہ گھوڑے

ڈالیں پھر گیا تھا وہ آپؑ کو دشمنوں کے درمیان لے گیا ہر طرف سے دشمن آپؑ پر ٹوٹ پڑے

۱۔ ص ۳۸

اس کے بعد جوہر کو شکار کرتے رہے اور دوسرے کا صبح ہونا جنگ کے بعد معلوم ہوتا ہے عرض کے رب کی قسم میں نہیں نہیں

۱۔ نفس المہموم ص ۳۸،

۲۵۰

<http://fb.com/ranajabirabbas>

امام محمد بن جعفر بن ابی طالب

امام محمد بن جعفر بن ابی طالب کے ساتھ رہتے تھے۔ کبھی ان سے جدا نہیں ہوتے تھے امام حسینؑ نے ان کو جگر عیدائش بن جعفر اور زینب کبریٰ سے تھیں شادی کر دی تھی،

امام ابی یوسف کے ساتھ کر بلا آئے اور عون بن عبد اللہ بن جعفر کے بعد میدان میں گئے بہت سے دشمنوں نے ان کو لٹکا دیا کہ انہوں نے اٹھی سوار اور بارہ پیا دہ سپاہیوں کو قتل کیا خود بھی زخموں سے جو رہا ہوا ہماروں طرف سے ان پر حملہ کر کے شہید کر دیا۔

امام کے بیٹے

امام حسین

امام والدہ کا نام سلمہ ہے، قاسم نوجوان تھے، شاید جو طوطی تک نہیں پہنچے تھے جب میدان میں امام حسینؑ سے اجازت لینے گئے تو آپؑ نہیں سینے لگایا اور دونوں اتار دئے کہ ہوش نہ رہا امام حسینؑ سے جنگ کی اجازت طلب کی آپؑ نے اجازت نہ دی لیکن قاسمؑ نے کسی طرح اجازت حاصل کی اور میدان میں آئے، رخصا پر اسوہ رہے تھے اور یہ درجہ پڑھ رہے تھے:

إِنَّا لَنُكْرُوْنِي قَاتَا أَبْنِ الْحَسَنِ
بَسِطِ النَّهْيِ الْمُصْطَلَقِ الْمُؤْتَقِنِ
هَذَا حُسَيْنٌ كَالْأَسِيرِ الْمُزْتَقِنِ
بَيْنَ أَنْاسٍ لَا يَشْقُوا صَوْبَ الْمُؤْنِ
یہ قاسمؑ تین تین میں چاند کی مانند تھے بچپن ہی میں شدید جنگ کر کے ۳۵ دشمنوں کو قتل

۱۳۱ برس میں ملک قاسم کا والدہ کا نام فروہ شہور ہے، اگرچہ بچے نہیں جانتے تو جان کر میں

إِنَّا لَنُكْرُوْنِي قَاتَا أَبْنِ جَعْفَرٍ
بَسِطِ النَّهْيِ الْمُصْطَلَقِ الْمُؤْتَقِنِ
اور دشمن کے تین سوار اور اٹھارہ پیا دہ سپاہیوں کو چیر تیغ کیا، عبد اللہ بن قطن
اور تلوار سے شہید کر دیا۔

محمد بن عبد اللہ بن جعفر

نوحہ بنت حفصہ کے بیٹے ہیں، بعض نے کہا ہے کہ وہ اپنے بھائی عون سے پہلے میدان میں
رج: پڑھا:

أَشْكُو إِلَى اللَّهِ مِنَ الْعَدُوَانِ
فَعَالَ قَوْمٍ فِي الرُّدَى عَسَا
قَدْ بَدَلُوا مَعَالِمَ الْقُرْآنِ
وَمُحْكَمَ التَّنْزِيلِ وَالْقِسْمِ

اور اس گروہ کے دس آدمیوں کو قتل کیا پھر دشمن ان پر حملہ آور ہوئے مختصر یہ کہ امام
نے انہیں شہید کر دیا۔

عبد اللہ بن عبد اللہ بن جعفر

یہ بھی نوحہ بنت حفصہ کے بیٹے تھے امام حسینؑ کی مدد کیلئے آئے اور شہادت
کہتے ہیں کہ انہیں بشیر بن تویر قاضی نے شہید کیا تھا۔

۱۳۱ اگرچہ بچے نہیں پہچانتے تو جان کر میں جبر طیار کا بیٹا ہوں جو کہ شہید صدقہ پیش میں ہیں، سبزوئی
میں پورا ذکر ہے قیامت کے دن اتنا شرف کافی ہے،

۱۳۱ اھرار میں ۳۹

۱۳۱ میں اس گروہ کی نظم دیا دئی کی خدائے شکایت کروں گا جو کہ پیش میں انہوں نے قرآن کے بارے میں
اور قرآن کے حکمت میں رد و بدل کی ہے، وسیع الدین میں ۲۴۶

۱۳۱ البصار میں ۴۸، ۵۰ مناقب ابن شہر آشوب ج ۳ ص ۱۰۰

تَنُوحُ عَلَيْهِمْ فِي الْبَرَارِي وَخُوشَهَا
سَيُوفُ الْأَعَادِي فِي الْبَرَارِي تَنُوشَهَا
مَحَابِسُهَا تُزْبُ الْقَلَاةُ نَعُوشَهَا^(۱)

أَوَّلُونَ قَتْلَ أَوْطَانِهِمْ وَدِيَارِهِمْ
وَلَا تَنْبُكِي الْعُيُونُ لِمَغْشَرِ
لُؤْلُؤِ لِسَارِي نُوْرَهَا فَتَغْفِرَتْ

عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحُسَيْنِ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْحُسَيْنِ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

ابن ابی اسحق قاسم کے حقیقی بھائی تھے یعنی ایک باپ اور ایک بیا ماں سے تھے، امام محمد باقرؑ

کما، حید بن سلم کہتا ہے: میں کوئی فوج کے درمیان میں کھڑا اس جوان کو دیکھ رہا تھا،

پہنے تھا کا چاک ایک ایک نعلین کا تسمہ ڈھٹ گیا مجھے یاد ہے کہ اسکے بائیں پیر کی نعلین تھی،

مجھ سے کہا: کہ میں اس پر حملہ کروں گا۔

میں نے کہا: سبحان اللہ! تمہارا کیا ارادہ ہے؟ خدا کی قسم اگر وہ مجھے قتل بھی کرے

درازی کشی کروں گا جس گروہ نے اسے گھیر رکھا ہے وہی کافی ہے، اس نے کہا: میں اس پر حملہ کروں گا

اس نے قاسم پر حملہ کر کے سر پر ایک ضربت لگائی جس سے وہ منہ کے بل زمین پر گر پڑا

یا عاۓ! امام حسینؑ مہجوں کی صفوں کو چیرتے ہوئے قاسم کے سر پر اپنے پیچھے اور قاسم کے قاتل

ہاتھ پر واروں کا جس سے اس کا ہاتھ پھینک دیا گیا اس نے کہا: میری مدد کرو فوج کو مار دیا

دوڑی دونوں کے درمیان شدید جنگ ہوئے لگی جس سے قاسم کی لاش گھوڑوں کی سواروں

میدان کا فضا گرد و غبار سے پر ہو گئی جب گرد و غبار گئی تو میں نے امام حسینؑ کو دیکھا کہ قاسم

ہیں اور قاسم اڑ باں گڑ رہے ہیں،

انعام مبین نے فرمایا: یہ بات تمہارے چچا کے لئے تکلیف دہ ہے کہ تم انہیں

وہ کچھ نہ کر سکیں اور اگر کچھ کر سکیں تو اس کا تہیں کوئی فائدہ نہ ہو اس قوم کے شامل حال

جس نے تہیں قتل کیا ہے۔

اس کے بعد امام حسینؑ قاسم کی لاش کو میدان سے لیکر چلے حید بن سلم کہتا ہے: میں

کے پاؤں زمین پر خط دیتے جا رہے تھے، میں نے اپنے دل میں سوچا کہ یہ لاش کہاں لے جاؤں

دیکھا کہ آپؑ نے قاسم کی لاش اپنے پیچھے علی اکبرؑ اور دیگر شہیدوں کی لاش کے برابر میں

کفایتِ مطالب میں بیان ہوا ہے کہ جب حضرت قاسمؑ گھوڑے سے زمین پر گرے

حسینؑ قاسم کی لاش لائے تو اس وقت ماں کھڑی ہوئی یہ منظر دیکھ رہی تھی اور امام حسینؑ

مدرسہ عالیہ

أَخْمِي حُسَيْنًا ذِي الدُّدَى الْمَفْضَالِ
حَسْبِي بِعَمِّي جَعْفَرٍ وَالْخَالِ
ابْنُ عَلِيٍّ الْخَيْرُ ذُو النُّوَالِ
أَبِي جَعْفَرٍ ذُو الْمَعَالِي

مطالعہ شہان ہوں میرے شیخ " والد " پاک کردار والے علی ہیں جو کہ بہر غائب و حاضر کے درمیان ہدایت کرنے والے ہیں۔

حضرت علیؑ سے روایت کی گئی ہے کہ آپؑ نے فرمایا: میں نے اس بچہ کا نام اپنے بھائی عثمانؓ پر رکھا۔

میں نیکش اور صاحب کرم علی کا بیٹا ہوں، جو کہ رسول کے وصی، بلند مرتبہ اور والہاں میرے لئے
والہاں میں فضل و کرم والے حسینا کا حمایت کرتا ہوں، مناقب میں شہر شہب ج ۱ ص ۱۰۷،

10/10

③ حسن بن الحسن

امیر المومنین علیؑ کے لئے

① عبد اللہ بن علی

انہی والدہ عالم انیس ہیں، حضرت علی کی شہادت کے وقت ان کی عمر
 امام حسین کے اصحاب اور اہلبیت میں سے کسی بچہ کو شہید ہو چکے تو حضرت عباس
 جیسائیوں کو جو کہ ایک سال سے تھے، بلایا اور کہا: میدان میں جاؤ،
 سب سے پہلے عبداللہ بن علی جو کہ عثمان و جعفر سے بڑے تھے اٹھئے، ابو

کہا: سبھائی میدان میں جاؤ تاکہ میں تمہیں راہ خدا میں تشبیہ دکھا دوں چنانچہ وہ میدان میں
تلاوار کے جوہر دکھائے جنگ کی، ہانی بن شیت نے آپ کے سر پر تلاوار سے ضربت

عثمان بن علی (۲)

عبداللہ بن علی کے بعد یہ میدان میں آئے ۔ اس وقت ان کی عمر اسی سال تھی ۔

في الملبوف ص ٥٥،

۱۰ حیات الامام حسینؑ ۱۱ مروج السوس ۱۲۵۶، ۱۳ البصائر لعینین ص ۱۳۳، ۱۴ صاحب البحار ص ۱۳۳، ۱۵

۴) ابو بکر بن علیؓ

موجودین نے ان کا نام نہیں رکھا ہے بلکہ ابو بکر ان کی کنیت ہے ان کی والدہ علیؓ کی خالہ ہیں وہ بھی سیدان میں آئے رجز پڑھا جنگ کی اور قبیلہ عبدالن کے ایک شخص کے ہاتھ سے

۵) محمد بن علیؓ

یہ محمد اصغر ہیں، حضرت علیؓ کے ایک اور بیٹے کا نام محمد تھا جو ان سے بڑے تھے محمد اصغر کہتے ہیں ان کی والدہ لم ولدیں انھیں قبیلہ ابان کے ایک شخص نے شہید کیا۔ بعض کی والدہ اسماء بنت عیس ہیں۔

۶) عباس الاصغرؓ

قاسم بن ابی نجاسی سے منقول ہے کہ اس نے کہا: جب شہیدوں کے سر کو لو ایک سو کو روک دیا اس نے اپنے گھوڑے کی گردن میں ایک جوان کا سر لٹکا رکھا ہے اس نہیں بھیگی تھیں اور چہرہ چودہویں کے چاند کی مانند چمک رہا تھا، جب گھوڑا پیچھے سر زمین سے ٹکراتا تھا، میں نے اس شخص سے پوچھا: یہ کس مظلوم کا سر ہے جو تو نے گردن میں لٹکا رکھا ہے،

اس نے کہا: عباس بن علیؓ کا سر ہے

میں نے کہا تم کون ہو؟

اس نے کہا: حمزہ بن کابل اسدی،

قاسم کہتے ہیں: چند روز کے بعد میں نے حمزہ کو دیکھا تو اس کا منہ کالا ہو چکا تھا

۱۔ ابصار الحین ص ۲۵، ۲۔ مناقب الطاہرین ص ۸۵، ۳۔ تاریخ طبری ج ۶ ص ۸۹

بعض لوگوں نے یہ اقبال دیا ہے کہ کربلا میں حضرت علیؓ کے دو بیٹے عباس نام کے شہید ہوئے ہیں اگر

عاشورہ شہید ہوئے ان کی والدہ صبیحہ ثمالیہ دوسرے عباس کہیں، آپ نے اپنے دوستوں کو لوگ

مقام عباسؓ کو کوادلی میں دیکھا ہے یہ اور مظلوم ایک مد سے تھے جن کا نام صبا تھا یہ بھی منقول

۷) ابی علیؓ

آپ نے مکہ میں ولادت پائی آپ کی والدہ ام البنین فاطمہ بنت خزام ہیں، حضرت علیؓ نے آپ کے اخبار و انساب کے عالم و ماہر عقل سے کہا: میرے لئے ایسی عورت تلاش کیجئے جس سے عقل، اہل، عقل نے فاطمہ بنت خزام کا نام بتایا اور کہا: میری نظریں ان کے آہار سے زیادہ عرب میں نہیں ہیں، حضرت علیؓ نے ان سے نکاح کر لیا، ام البنین سے پہلے بیٹے عباس پیدا ہوئے عورت ہونے کی وجہ سے قریبی ہاشم کہتے تھے آپ کی کنیت ابو الفضلؓ ہے، حضرت عباسؓ کے بیٹے بیٹے عبداللہ، عثمان اور جعفر پیدا ہوئے، حضرت عباسؓ نے چودہ سال اپنے والد امیر المومنینؓ کی زندگی اپنے دو بھائیوں کے ساتھ گزاری، شہادت کے وقت آپ کی عمر چونتیس سال تھی،

تفسیر تھے، گھوڑے پر سوار ہوتے تو پاؤں زمین تک پہنچ جاتے تھے، امام صادقؓ نے منقول ہے کہ آپ نے فرمایا: ہمارے چچا عباسؓ بن علیؓ صاحب بصیرت اور راسخ

امام حسینؓ کی رکاب میں جہاد کرتے ہوئے شہادت پائی۔

مسل ہے کہ ایک روز علی بن حسینؓ نے حضرت عباسؓ کے بیٹے عبید اللہ کو دیکھا اور رونے لگے

رسولؐ پر جنگ احد کے دن سے زیادہ سخت کوئی دن نہیں گزرا اس دن حضرت حمزہ بن عبد

مہدیؓ نے، اس کے بعد رسولؐ کیلئے وہ دن سخت تھا جب جنگ موتہ میں جعفر بن ابی طالب

اور کوئی دن حسینؓ کے دن، عاشورہؓ جیسا نہیں ہے، آپ کو ان تیس ہزار سپاہیوں نے

خود اس امت سے سمجھتے تھے، اور قتل حسینؓ کے ذریعہ خدا کا تقرب چاہتے تھے حسینؓ

لیکن ان پر کوئی اثر نہ ہوا اور درناک طریقہ سے آپ کو شہید کر دیا،

۱۔ ابن شہید ہوئے، عباسؓ مرقوم ص ۵۲، وسیلہ الدین ص ۲۴۴،

۲۔ ص ۲۸۱،

۳۔ ص ۲۵،

یہ رجز پڑھتے ہوئے ان سے جنگ کرنے لگے،

حَتَّىٰ أَوَارَىٰ فِي الْمَصَالِيَةِ لُقَا
إِنِّي أَنَا الْعَبَّاسُ أَغْدُو بِالسِّقَا
وَلَا أَخَافُ الشَّرَّ يَوْمَ الْمُلْتَقَىٰ^(۱)

ان لوگوں نے آپ کا دایاں ہاتھ قطع کر دیا تو آپ نے مشک ہائیں دوش پر رکھی اور
فرمایا: اور یہ رجز پڑھا:

وَاللَّهِ إِنْ قَطَعْتُمْ يَمِينِي
لَئِنْ أَحَابَمِي أَبَدًا عَنْ دِينِي
وَلَنْ إِسَامٍ صَادِقٍ الْيَقِينِ
نَجَلِ الثَّيْبِ الطَّاهِرِ الْأَمِينِ^(۲)

اللہ! آپ کا بائیں ہاتھ بھی قلم کر دیا، نیز منقول ہے کہ حکم بن طفیل نے جو کہ فرمے کہ
میں نے آپ کا ہاتھ تلوار مار کر آپ کا بائیں ہاتھ قلم کر دیا آپ نے علم کو سینے سے لگا کر یہ

وَاللَّهِ لَا تَخْشِي مِنَ الْكُفَّارِ
وَأَتَشِيرِي بِرَحْمَةِ الْجَبَّارِ
وَاللَّهِ السَّيِّدِ الشَّخَّارِ
قَدْ قَطَعُوا بِسُفْهِيمِ يَسَارِي
فَأَصْلَبَهُمْ يَا رَبِّ حَرْ النَّارِ^(۳)

اللہ! میں نہیں ڈرتا کفار کے وقت سورماؤں کو تیرے کھڑا ہونا میں نے اپنے نفس کو فرزندوں کو
کہہ دیا کہ میں تمہارے وقت مجھے موت سے ہراس نہیں ہمارا، سنا قبائلیں شہر آشوب ۱۱۸
میں میرا دایاں ہاتھ قلم کر دیا لیکن میرے اپنے دین سے دفاع کرتا رہوں گا اور اپنے صادق الہیان امام سے
میں ہر ایک دامن رسول کے فرزند ہیں،

ان دنوں سے مدور اور برگزیدہ رسول کی ہمنشی پر رحمت خدا کی بشارت قبول کر انہوں
نے یہی قلم کر دیا اے اللہ! اعلیٰ جنم واسلہ کہ،

اس کے بعد امام زین العابدین نے فرمایا: خلا میرے چچا عباس پر رحم کرے انہوں نے
حسین پر قرآن کو کیا اور اتنا لٹکا کہ دونوں ہاتھ قلم ہو گئے خدائے آپ کو جعفر طیار کے مانند دو ہاتھوں
سے فرشتوں کے ساتھ جنت میں پروا کرتے ہیں، نیز فرمایا: خدائے شعل کے نزدیک عباس کے
کو قیامت کے دن سارے شہدار اس پر ضبط کریں گے۔

بعض مؤرخین نے لکھا ہے کہ جب عباس نے امام حسین کی بے کسی کو دیکھا تو خود
عرصہ کیا، مولا مجھے اجازت ہے کہ میدان میں جاؤں؟

یہ سنکر امام حسین بہت روئے اور فرمایا: بھائی! تم میرے لشکر کے علم دار ہو، ہمارے
دل بھر گیا اور زندگی سے سیر ہو گیا ہوں، میں ان منافقوں سے انتقام لینا چاہتا ہوں، امام
ان بچوں کے لئے پانی کی کھیل کرو،

عباس میدان میں آئے اور فوج کو خود کو نصیحت کی خدا کے عذاب سے
اثر نہیں ہوا، واپس آئے اور بھائی سے ماجر بیان کیا، اس وقت بچوں کی عطش
مشک و نیزہ اٹھا ہاتھ گھوڑے پر سوار ہوئے فزات کا رخ کیا فزات پر دشمن کی چادر پڑا اور
فوج آپ پر تیروں سے حمل کیا، عباس نے انھیں پرانہ کر دیا اور ان میں سے ایک کو مارا
اور دھڑ سے داخل ہو گئے پانی پینا چاہتے تھے کہ سیتا، ابھرتے اور بچوں کی پیاس با دہانی
اور بھولے یہ اشارہ پڑے

يَا نَفْسُ مِنْ بَعْدِ الْحُسَيْنِ هُوَنِي
هَذَا الْحُسَيْنُ شَارِبُ الْمَنُونِ
وَتَشْرِبِينَ بَارِدَ الْمَنُونِ
وَتَسْقَيْنَ بَارِدَ الْمَنُونِ

مشک کو پانی سے مبرا دوش پر رکھا جبکہ طرف چلے لشکر کو فونے دیا
اے نفس! حسین کے بعد زندگی بیکار ہے ان کے بعد دلالت کا سامنا کرنا پڑے گا، حسین علیہ السلام
نے مناسب نہیں ہے۔

اور تو میں کہ اہم بپا ہو گیا، امام حسین نے بھی گریہ کیا اور فرمایا: واضیعنا بعدک و
اس کے بعد یہ اشعار پڑھے:

يا لَوْز عَيْنِي يا شَقِيقِي
أَبِي نَصَحْتَ أَخَاكَ حَتَّى
أَسْرَأُ مُبِيرًا كُنْتُ عَوْنِي
لَا تَطِيبُ لَنَا حَيَاةُ
شُكْرَانِي وَصَبْرِي

مقتل الحسين مرقوم ص ۲۶۰

[illegible]

حسین عباس کے سر پہنے آئے اور یہ حال دیکھ کر فرمایا: اے انکسرتلوی میری کرنٹ لگئی اور نندہ کی ساری راہیں بند ہو گئیں اور جب آنکھ میں تیرے کھالے عباس کو فرات کے کنارے دیکھا تو ان کے پاس پہنچ گئے اور زار و قطار روتے رہے۔
کی روح پرواز کر گئی یہ پھر لاش کو خنجر کی طرف سے چلے گا

بعض نے یہ بھی لکھا ہے چونکہ عباس کا بدن پارہ پارہ تھا اسلئے حسین نے قتل کا
تک نہ لاکے یہ

اس وقت امام حسینؑ نے دشمنوں پر حرکت کیا واپس بائیں ان پر تھل جلائی، فریادیں اٹھنے لگیں آپؑ نے فرمایا: کہاں جھکا کر دے ہو، ہر تم نے میرے بھائی کو قتل کر دیا؟ یہوتم نے میرا بازو توڑ دیا! پھر اپنی بائیں ٹانگہ واپس لوٹ آئے،

اصحابِ حسینؑ میں عباسؑ آخری شہید تھے آپ کے بعد آل ابوطالب رہا ہوئے جن کے پاس اسلام نہیں تھا۔

۱۔ مجار الا نوارج ۴۵ ص ۴۲، بعض کتابوں میں لکھا ہے کہ حسین نے عباس کا سر زانو پر رکھا اور اس کی

۱۔ ایک کہہ کہ روح پروردگار حسینؑ کو فرادیکر و انشاء و اعلان و وسیلہ اللہ میں ص ۲۷۲، ۲۷۳
۲۔ الاموال الساجد، ص ۲۷۲، ۵ قاسم بن اصبغ کہتا ہے: میں نے کہا کہ قسطلہ کے ایک آدمی کو
جب کہ اس کا سپرد ہو گیا تھا، میں نے اس کا چہرہ دیکھا کہ وہ بڑا عظمیٰ کی اس کی کہا: میں نے کہا کہ میں ایک قوی آدمی
کہ دریا میں جہاں کاشان تھا، اس نے اسے ہر گز کہاجی میں سوتا ہوا تو وہ میرے پاس آ گیا اور میں نے اس کی
میری خبر سے میرے خاندان والے کہتے ہیں: قاسم بن اصبغ کہتے ہیں: یہ شہر جو پھیل گئی اس کے

۸) محمد بن عباس بن علی

ابن شہر آشوب نے امام حسین کے ساتھ شہید ہونے والے بنی ہاشم کے بیان میں لکھا ہے: محمد بن عباس بن علی بن ابی طالب بھی شہید ہوئے ہیں۔

آخری گھڑیاں و شیر خوار بچے

امام حسینؑ فرماتے ہیں: اور زینب سے فرمایا:

میرے سب سے چھوٹے بچے کو لاؤ، زینب نے بچے حسینؑ کو دیا، امام حسینؑ نے فرمایا: یہ بچہ میرا ہے کہ جب امام حسینؑ نے یہ محسوس کیا کہ فوج کو فز آپ کا خون بہانے پر مجبور کر دیا، کھولا، سر پر رکھا اور فرمایا: اے لوگو! میرے اور تمہارے درمیان کا میرے جد رسول اللہؐ ہیں تم کس چیز سے میرا خون حلال سمجھ رہے ہو؟ اسی اثنا میں رونے کی آواز سنی، بچہ کو ہاتھوں پر لے کر آئے اور فرمایا: پر دم نہیں کھاتے تو اس شیر خوار بچے پر دم کرو اسی اثنا میں فوج کو فوج سے ایک معصوم بچے کو قتل کر دیا یہ حالت دیکھ کر امام حسینؑ رونے لگے اور فرمایا: اے اللہ! قوم کے درمیان انصاف کرنا کہ انہوں نے دعوت دیکر ہیں بلایا، چاری مدد کا وعدہ کیا اور تلواریں کھینچ لی ہیں، بعض نے ذکر کیا ہے کہ آسمان سے ندا آئی کہ حسینؑ! بچے کو ہمیں دیدار دے۔

پلانے کا انتظام ہے۔

۱۔ مناقب ابن شہر آشوب ج ۱ ص ۱۲۱

۲۔ تذکرۃ الخواص ص ۱۲۳

امام حسینؑ کے بعد امام حسینؑ نے خیمہ کے نزدیک تلوار سے چھوٹی سی قبر کھودی اور اسی قبر میں مدفون کر دیا۔ منقول ہے کہ بچے کی غماز جنازہ پڑھی اور بچے کو خون آلود صورت میں

آخری گھڑیاں

امام حسینؑ کی شہیدوں کی تعداد کے بارے میں مؤرخین کے درمیان اختلاف ہے، بعض اقوال کی طرف اشارہ کرتے ہیں،

۱۔ تعداد امام جعفر صادقؑ سے نقل ہوئی ہے، حدیث میں آیا ہے کہ آپ نے فرمایا: میں نے اپنے بچے کا خدامت طلبہ کرے گا، جو اولاد فاطمہؑ میں سے شہید ہوئے ہیں جیسی مصیبت امام حسینؑ پر پڑی ہے ایسی کسی پر نہیں پڑی ان کے ساتھ عسکری خود ان کے اہلیت میں سے شہید ہوئے ہیں، انہوں نے راہ خدا میں صبر کیا اور فلولوں کے ساتھ جان دیدی،

۲۔ منقول ہے کہ امام حسینؑ کے ہر ایک مسترہ آدمی وہ شہید ہوئے ہیں جو کہ فاطمہ بنت اسدؑ کی اولاد تھے،

۳۔ نامیہ میں اہلیت میں سے ۷۰ شہیدوں کا ذکر ہوا ہے، شیخ مفید نے بھی یہی تعداد بیان کی ہے،

۴۔ اراد یہ قول حسن بصریؒ سے نقل ہوا ہے وہ کہتے ہیں: حسین بن علیؑ کے ساتھ سولہ افراد اسے افرا شہید ہوئے جن کی مثال روئے زمین پر نہیں ملتی،

۵۔ تعداد معینہ بن نوفل نے ان کے مرثیہ کے ایک شعر میں بیان کی ہے،

۱۔ نفس المہجوم ص ۱۲۵، نقل حسینؑ مقم ص ۱۲۱

۞ سَعِدَ قَدْ رَمَانِي عَسُوهُ
 ۞ اِيَسِي كَانَ يَسِي قَبْلُ ذَا
 ۞ اَلْخَسِيرُ مِنْ سَعْدِ النَّبِيِّ
 ۞ اَللّٰهُ مِنْ الْخَلْقِ اِيَسِي
 ۞ قَدْ خَلُصْتُ مِنْ ذَعْبِ
 ۞ اَلْمُجْدُ كَجَدِّي فِي الْوَرَى
 ۞ اِيَلَمْ اَلْزُهْرَاءُ اِيَسِي
 ۞ اَلزُّوَّةُ الدَّيْنِ عَلَيَّ الْمُرْتَضَى
 ۞ اِيَسِي يَوْمَ اُخِذَ وَقْعُهُ
 ۞ بِالْاُخْرَابِ وَالْفَتْحِ مَعَا
 ۞ سَيَلَّ اَللّٰهُ مَاذَا صَنَعْتُ
 ۞ اَلزُّوَّةُ الْبَرِّ النَّبِيِّ الْمُضْطَلَّى
 ۞ سَبَّحَ اَللّٰهُ غَلَامًا يَافِعَا
 ۞ اِلَى الْاَوْثَانِ لَمْ يَسْبُحْ لَهَا

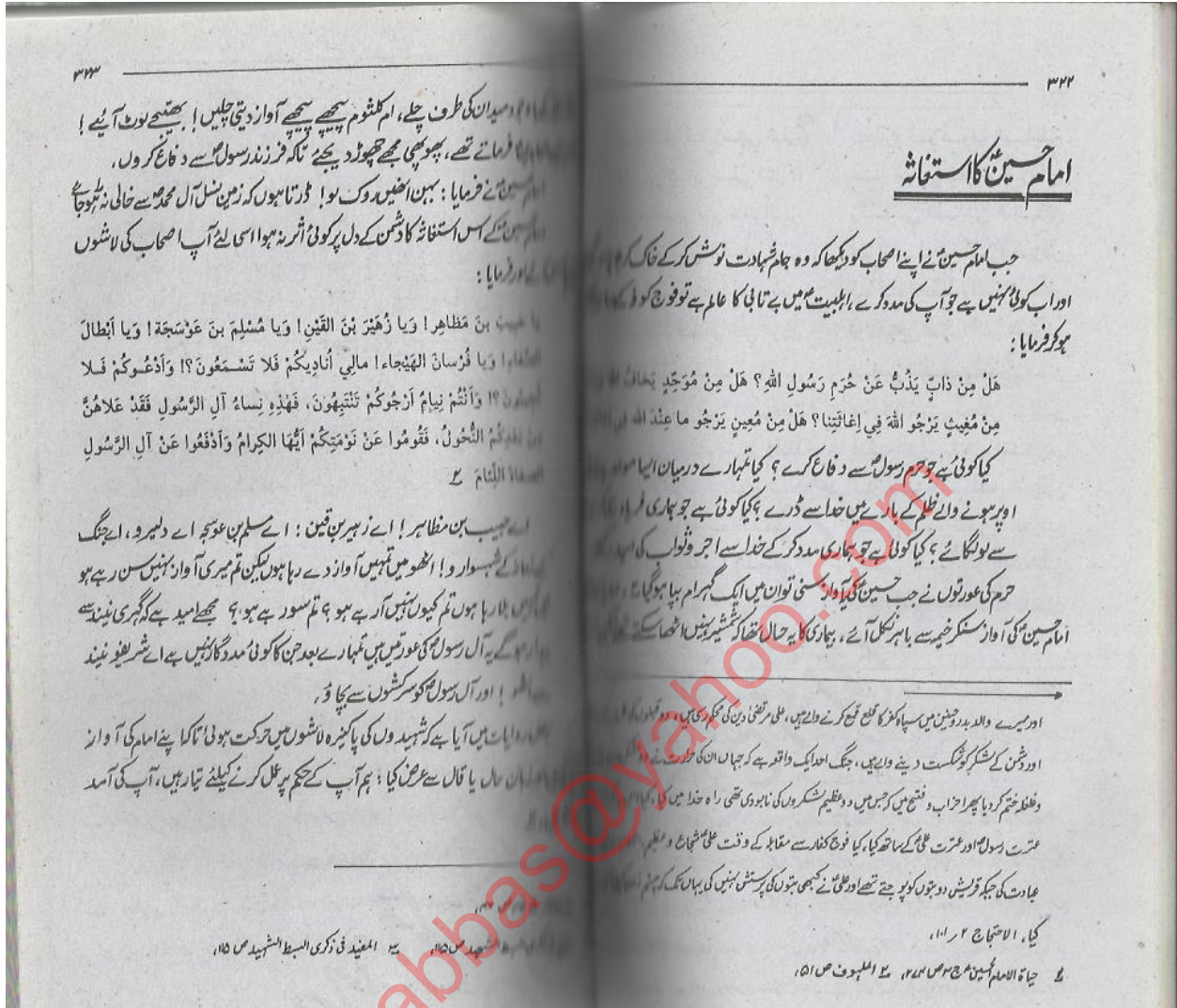
اے ہیں اور خدا کے ثواب سے مدد و معاون ہیں، پہلے علیؑ کو شہید کیا پھر ان کے بیٹے کو، پھر نجیب الطائیفین
یہ ان لوگوں کے کینہ کا نتیجہ تھا پھر ان لوگوں نے کہا: اب سب میں پھر حکم کریں گے، وائے ہویت گمراہ پر
لوگوں کو کبھی کبھی اور پھر مجھے قتل کرنے کا ایک دوسرے سے سازش کرنے لگے
اس لیے میں نے خدا سے جزوے کا فکری اور دلی عہدہ لیا کہ حکم سے عربیوں سے مدد نہ پشاور فوج کے ساتھ میرے اخیر
میں اس کے سوا میری کوئی خطا نہیں تھی کہ میں دوسرا لوگوں کے غور پر فکر نہ کرتا تھا، رسول اللہؐ کو علیؑ بہترین خلق
والدین دونوں فرمائش تھیں، خدا کے نگہ بندہ علیؑ میرے والدین اور ان کے بعد میری والدہ ہیں، میں
لوگوں کا بیٹا ہوں اس لیے جا چاہی ہوں جو سونے سے حاصل کی گئی ہے اسے سونے سے وجود میں آیا ہوں دنیا میں کسی
مال ماندا ہے، میرے والد کا مال اندازہ کا کام ہے، پس میری بہترین بیوی، میری والدہ خاتون سراہ

- (۳) ۱۹ / افراد،
(۵) ۲۱ / افراد،
(۶) ۲۲ / افراد،
(۷) ۲۴ افراد غافل بہت اسد کی اطلاع ہے،
(۸) ۷۸ افراد یہ تعداد کتاب سید ابومحمد حسین نے بیان کی ہے، شاید یہ
شہد کی ہے،
(۹) ۳۴ افراد یہ عبداللہ بن سنان کی حدیث میں آئی ہے،
(۱۰) ۱۳۳ افراد یہ تعداد مسعودی نے مروج الذهب میں بیان کی ہے،
(۱۱) ۱۴۳ افراد یہ تعداد خوارزمی نے بیان کی ہے۔

امام حسینؑ کے اشعار

جب امام حسینؑ اپنے شیر نوار بچے کو دفن کر چکے تو کھڑے ہو کر یہ اشعار

كَفَرُوا الْقَوْمَ وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُبِينٌ
قَالُوا قَدْ جَاءَنَا بَشِيرٌ وَأَوْتَانَا
حَقًّا مِنْهُمْ وَقَالُوا اهْبُتُوا
يَا الْقَوْمُ مِنْ آدَمَ رِذْوَالِ
ثُمَّ صَارُوا تَوَاصُوتًا كُفُوهً
لَمْ يَخَافُوا اللَّهَ فِي سَفْكِ دِمَائِهِمْ



أَيُّ أَبْنِ عَلِيٍّ الطُّهْرُ مِنْ آلِ هَاشِمٍ
وَجَدِّي رَسُولُ اللَّهِ أَكْرَمُ مَنْ مَشَى
وَفَاطِمَةُ أُمِّي مِنْ شَلَالَةِ أَخَذَ
وَفِينَا الْهُدَى وَالْوَحْيَ بِالطُّهْرِ
نَقُولُ بِهَذَا فِي الْأَسْمَاءِ
يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُنْ
وَمُبْتَغَى النَّاسِ أَكْرَمُ شَيْعَةٍ

كَفَانِي بِهَذَا مَسْخَرًا
وَنَحْنُ سِرَاجُ اللَّهِ فِي الْمَلَأِ
وَعَبِّي يُدْعَى ذَا الْجَنَاحِ
وَفِينَا الْهُدَى وَالْوَحْيَ بِالطُّهْرِ
نَقُولُ بِهَذَا فِي الْأَسْمَاءِ
يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُنْ
وَمُبْتَغَى النَّاسِ أَكْرَمُ شَيْعَةٍ

پھر مبارک طلب کیا چنانچہ جو بھی آپ سے مقابلہ کیلئے آتا تھا اس کو تہ تیغ کر دیا
تک کہ دشمن کے بہت سپاہیوں کو جہنم واصل کیا، فوج کے میسرہ پر حاکم کیا اور فرمایا:

أَلَمْ تَكُنْ أَوَّلِي مِنْ دُخُولِ الْعَارِ

پھر میسرہ پر حاکم ہوئے اور فرمایا:

أَنَا الْخَمْسِينَ بَنِي عَلِيٍّ

أَخَوِي عِبَالَتِ أَبِي

أَلَيْسَتْ أَنْ لَا أَتُفِي
أَفْضَى عَلَى دِينِ النَّبِيِّ (۱) (۲)

۱۔ میں خاندانِ ہاشم سے پاک و طہری کا بنی ہوں، میرے لئے اتنا فخر کافی ہے، میرے جو رسولِ خدا میں

میں سب سے افضل ہیں ان کے درمیان ہم خدا کی روشنی میں میری والدہ فاطمہ زہرا کی نسبت رسول ہیں، میرے چچا

(پورے ملکہ، ہمارے درمیان محمد کی کتاب خدا نازل ہوئی، ہمارے درمیان ہدایت و وحی کا جو بنی ہو گیا ہے

ہم خدا کا بننا دیا ہے ہم کلمہ عالم درخشاں پر بیان کرتے ہیں ہم جس کے مالک ہیں اپنے دوستوں کو رسول کے بنائے

اس کا کوئی انکار نہیں کر سکتا، ہمارے شیعوں پر ہمارے دین اور قیامت کے دن ہمارے دشمن خسارے میں رہیں

۲۔ اجماع، ۱۳، ۱۴، ۱۵، ۱۶، ۱۷، ۱۸، ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵، ۲۶، ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱

امام حسینؑ نے فرمایا: اگر پرندہ قطار کو چھوڑ دیتا تو آکر کم کر لیتا۔ آپؑ کی یا بائیں سکر حرم میں ناز و نشیمن کی آوازیں بلند ہونے لگیں، امام حسینؑ نے فرمایا: وہی آواز ہے جس سے جنگ کر رہے ہو؟ یہ عربوں کو تہہ دہانے والی علی بن ابی طالبؑ کے فرزند ہیں۔ ان پر چاروں طرف سے حملہ کر رہے ہیں سکر ایک سو اور چار ہزار تیرہ اندازوں نے آپؑ پر حملہ کیا۔

امام حسینؑ نے انھیں اسلحہ اور عروہ بن جراح زہیدی، جو کہ چار ہزار کی فوج کے ساتھ فرات کا گھاٹ پر حملہ کیا اور فرات میں گھوڑا ڈال دیا، جب گھوڑے نے پانی پینے کے لئے سر جھکایا تو بھی پیا سا رہا، میں بھی پیا سا ہوں، خدا کی قسم جب تک تو پانی نہیں پئے گا میں تم کو مار دوں گا، امام حسینؑ کی بات سن کر گھوڑے نے سراٹھایا اور پانی نہیں پیا، گویا آپؑ کی بات سن کر فرمایا: پانی میں بھی پیو نہ گا اس کے بعد آپؑ نے ایک چلو پانی لیا،

امام حسینؑ سے کہا: خدا کی قسم پانی نہ پی سکو گے، ایک شخص نے کہا: کیا آپؑ فرات میں نہ پیا کرتے تھے؟ امام حسینؑ نے فرمایا: ہاں، خدا کی قسم اس سے آپ کو ایک گھونٹ بھی میسر نہ ہوگا۔

امام حسینؑ نے فرمایا: اے اللہ یہ پیا سا مرے، کھانا ہے: اس واقعہ کے بعد وہ چلا تا تھا کہ لوگ سے پانی دیتے اور وہ بے فائدہ ہوتا یہاں تک منہ سے نکل پڑتا کہیں پھر پانی پانی نہ پائے گا پانی ہی حال میں مر گیا۔

امام حسینؑ کو ایسی وقت ایک سوار نے کہا: اے ابو عبد اللہ! آپؑ پانی پینا چاہتے ہیں جبکہ میں نے بار بار پتے دیے، یہ سکر امام فرات سے نکل آئے اور دشمنوں پر تلے گئے تھے گاہ تک

ہذا ابن قنار العرب،

نفس اہموم من ۴۴۳

بجاء الفوارج ۲۴۷

امام حسینؑ نے فرمایا: اگر پرندہ قطار کو چھوڑ دیتا تو آکر کم کر لیتا۔ آپؑ کی یا بائیں سکر حرم میں ناز و نشیمن کی آوازیں بلند ہونے لگیں، امام حسینؑ نے فرمایا: وہی آواز ہے جس سے جنگ کر رہے ہو؟ یہ عربوں کو تہہ دہانے والی علی بن ابی طالبؑ کے فرزند ہیں۔ ان پر چاروں طرف سے حملہ کر رہے ہیں سکر ایک سو اور چار ہزار تیرہ اندازوں نے آپؑ پر حملہ کیا۔

سَبَطُولٌ بَغْدِي يَا سَكِينَتَهُ فَاغْلِي مَنكُ الْبِكَاءُ إِذَا الْجَسَامُ لَا تُخْرِقِي قَلْبِي بِذَمِّكَ حَسْرَةً مَادَامَ مَنِّي الرُّوحُ فِي مَدَامٍ قَالَتْ أَوَّلَى بِأَلَدِي تَأْتِيَنِي يَا خَيْرَةَ النَّشَوَانِ

امام محمد باقر علیہ السلام سے منقول ہے کہ جب امام حسینؑ کی شہادت کا وقت فرمایا تو فاطمہؑ نے فاطمہؑ کو بلایا اور انھیں ایک پٹا مولا خط دیا اور زبانی کچھ وصیتیں کیں، بعد میں فاطمہؑ نے خط علی بن حسینؑ کو دیا اور ان سے ہم تک پہنچا ہے۔

امام حسینؑ کی جنگ

اس کے بعد امام حسینؑ شمشیر برہنہ لئے ہوئے دشمن کے سامنے کھڑے ہوئے اور

یہ شمشیر اس زمانہ ہوتی ہے کہ جہاں کوئی شخص کوئی کام انجام دینے پر مجبور ہو جبکہ اس سے قتل ہو جائے اس کی شہادت کے بعد نہیں بہت زیادہ رونا پڑے گا اگرچہ حسرت سے بہت زیادہ رونا پڑے گا اور جب شہید ہو جاؤں تو میرے سوگرمیں بیٹھنا،

نفس اہموم من ۴۴۳

بجاء الفوارج ۲۴۷

پہنچے دیکھا کہ خیسے دشمن کی دست برد سے معذور ہیں، را

آخری خطبہ

امام حسینؑ اپنے آخری خطبہ میں سب سے پہلے بیان سے دشمنوں کو دنیا کے فسادات سے پرہیز کرنے سے ڈرایا، مومنین کی عبارتوں سے ایسا معلوم ہوتا ہے اس و ہوا کی شہادت کے درمیان بہت کم فاصلہ ہے، خطبہ یہ ہے:

عِبَادَ اللَّهِ اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مِنَ الدُّنْيَا عَلَى حَذَرٍ فَإِنَّ الدُّنْيَا لَا تَبْقَى وَتَقِي عَلَيْهَا أَخَذَ لَكَاتِ الْأَنْبِيَاءِ أَحَقُّ بِالتَّقَاةِ وَأَذْنَى بِالسَّخَاةِ وَالْقَضَاءِ، غَيْرَ أَنَّ اللَّهَ تَعَالَى خَلَقَ الدُّنْيَا لِلْبَلَاءِ وَخَلَقَ أَهْلَهَا لِلْفَنَاءِ وَتَعَيَّنَ مَضْجِلُهَا وَسُورُهَا مُكْفَهَرٌ وَالتَّنْزِيلُ بُلْغَةٌ وَالذَّارُ فَلَعْلَةٌ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى وَأَتَقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَقْلِحُونَ^(۳)

خدا کے بندو! خدا سے ڈرو، دنیا سے دامن چاک کرکھو اگر دنیا کی کسک اگر کوئی دنیا میں ہمیشہ باقی رہتا تو خدا نیکی کی بقا اور خدا کی رضا اور اس کی رضا کے زیادہ مقدار تھے، لیکن خدا نے دنیا کو امتحان و آزمائش اور اہل دنیا کو آزمائش ہے، یہاں پر بھی چہر پرانی ہو جاتی ہے اور اس کی نعمتیں ختم ہو جاتی ہیں اور دنیا میں بدل جاتی ہیں، دنیا رہنے کی جگہ نہیں ہے بلکہ توشہ و زاد راہ واپس کرنے کی

۱۔ مناقب ابن شہر آشوب ج ۳ ص ۵۸، مرحوم شہر آشوب کہتے ہیں: اسی غفلت شان امامت کے لئے، اگر امامت نہ ہو، تو بھی ان کی زندگی کا انکار نہیں کیا جاسکتا، ترجمہ نفس المہموم ص ۲۳۹
۲۔ نفس المہموم ص ۳۵۵

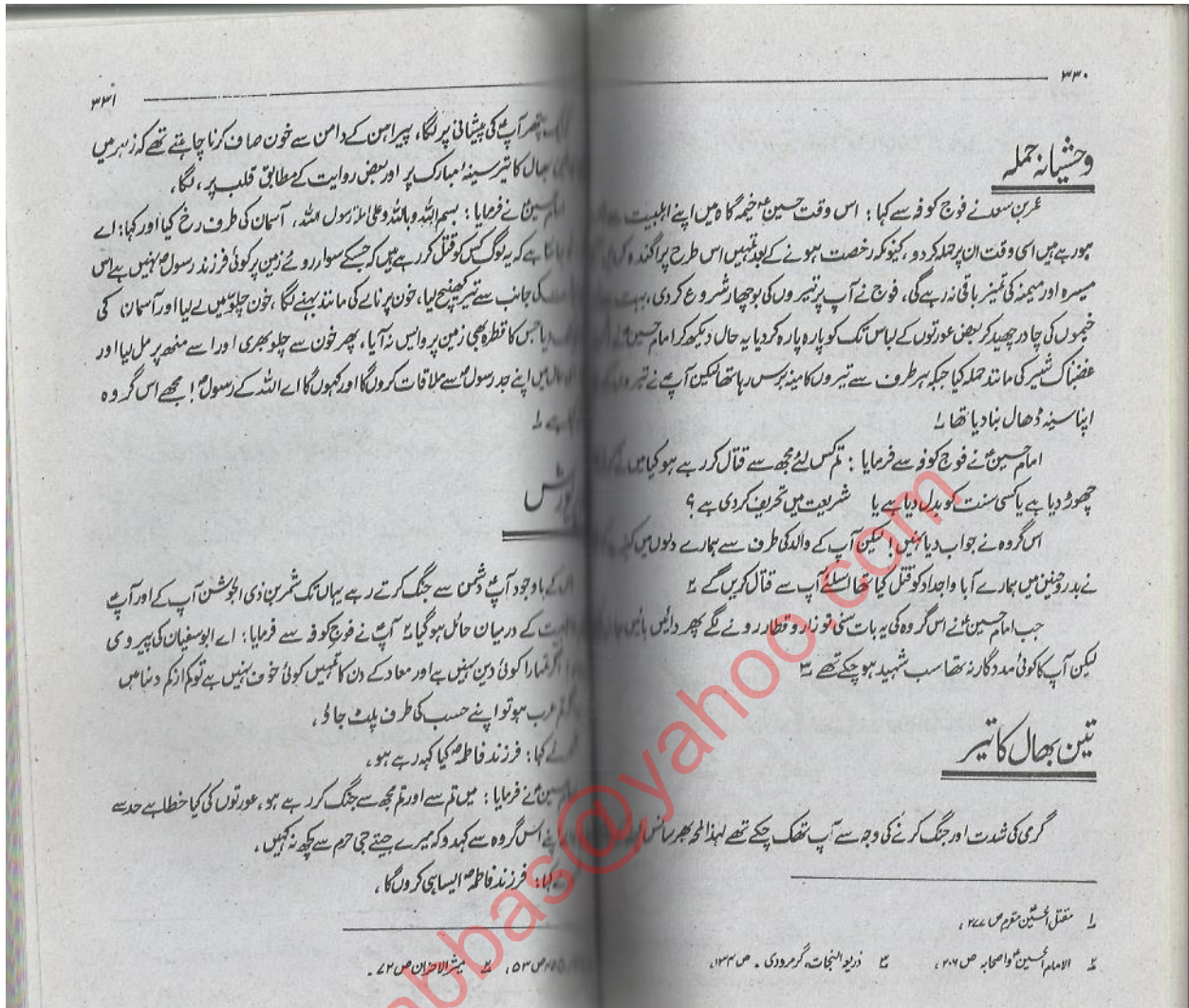
امام کو اور بہترین زاد راہ تقویٰ ہے، خدا کا تقویٰ اختیار کرو تاکہ کامیاب ہو جاؤ،

خلاصہ

امام حسینؑ دوبارہ خیمہ میں آئے، اپنے اہلبیت سے رخصت ہوئے اور انہیں صبر و استقامت کی تلقین کی، خدا کے اجر و ثواب کا وعدہ کیا اور فرمایا: اپنا لباس پہن کر بلاؤں کا مقابلہ کرنے کے لئے اور ظالموں کو برداشت کرنے کے لئے آمادہ ہو جاؤ، جان لو کہ خدا تمہارا حافظ و نگہبان ہے اور تمہاری نجات دلائے گا اور تمہاری عاقبت بخیر ہوگی اور تمہارے دشمنوں کو بلاؤں میں گمراہ کر دے گا اور تم جو حق و مصیبت اٹھاؤ گے اس کے عوض ہمیں نعمتوں اور عطیہوں سے نوازے گا۔
اس کے بعد فرمایا: میرے لئے ایسا لباس لاؤ جس کی کوئی طرح ذکر کے میں اسے لباس نہ کر سکے تاکہ اسے کوئی نہ اتارے چنانچہ آپ کے لئے چھوٹا لباس لایا گیا، آپ نے فرمایا: یہ لباس ذلیل لوگوں کا ہے، پھر پرانا لباس لیا، اسے پارہ پارہ کر کے پہن لیا تاکہ اسے ہمارا طلب کیا اور اس میں چاک لگا کر پہن لیا،
اس زمانہ کی طرف جانا چاہتے تھے اس وقت اپنی بیٹی کی طرف متوجہ ہوئے جو عورتوں کے گشت میں بیٹھی ہیں کہ رہی تھی، اس کے قریب گئے، تسلی دی، زبان حال سے یہ کہا:

يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ خَوَاضِ الْكَوْفَرِ
وَأَسْتَشْجِرِي الصَّبْرَ الْجَمِيلَ وَبَادِرِي
دَاوِي الْوَرِيدِ مُبْضَعًا فَتَصْبِرِي^(۴)

۱۔ مناقب ابن شہر آشوب ج ۳ ص ۵۸، مرحوم شہر آشوب کہتے ہیں: اسی غفلت شان امامت کے لئے، اگر امامت نہ ہو، تو بھی ان کی زندگی کا انکار نہیں کیا جاسکتا، ترجمہ نفس المہموم ص ۲۳۹
۲۔ نفس المہموم ص ۳۵۵



وختیانہ حملہ

عربوں نے فوج کو فہ سے کہا: اس وقت حسینؑ خیمہ کا وہیں اپنے اہلی بیت ہو رہے ہیں اسی وقت ان پر حملہ کر دو، کیونکہ رخصت ہونے کے بعد نہیں اس طرح پر گندہ کر دیا میسر و اور میسر کی غیر باقی نہ رہے گی، فوج نے آپؑ پر تیرہ رو کی بوچھاڑ شروع کر دی، بہت جوں کی چادر چھید کر بعض عورتوں کے لباس تک کو پارہ پارہ کر دیا یہ حال دیکھ کر امام حسینؑ عفتناک شہر کی مانند حملہ کیا جبکہ ہر طرف سے تیروں کا میز برس رہا تھا لیکن آپؑ نے تیروں کا اپنا سینہ ڈھال بنا دیا تھا۔

امام حسینؑ نے فوج کو فہ سے فرمایا: تم کس لئے مجھ سے قتال کر رہے ہو کیا میں چھوڑ دیا ہے یا کسی سنت کو بدل دیا ہے یا شریعت میں تخریب کر دی ہے؟

اس گروہ نے جواب دیا نہیں! لیکن آپؑ کے والد کی طرف سے ہمارے دلوں میں کینہ نے بد روئین میں ہمارے آبا و اجداد کو قتل کیا تھا اسلئے آپؑ سے قتال کریں گے۔ جب امام حسینؑ نے اس گروہ کی یہ بات سنی تو زار و قطار رونے لگے پھر دائیں بائیں مایوس ہوئے لیکن آپؑ کو کوئی مددگار نہ تھا سب شہید ہو چکے تھے۔

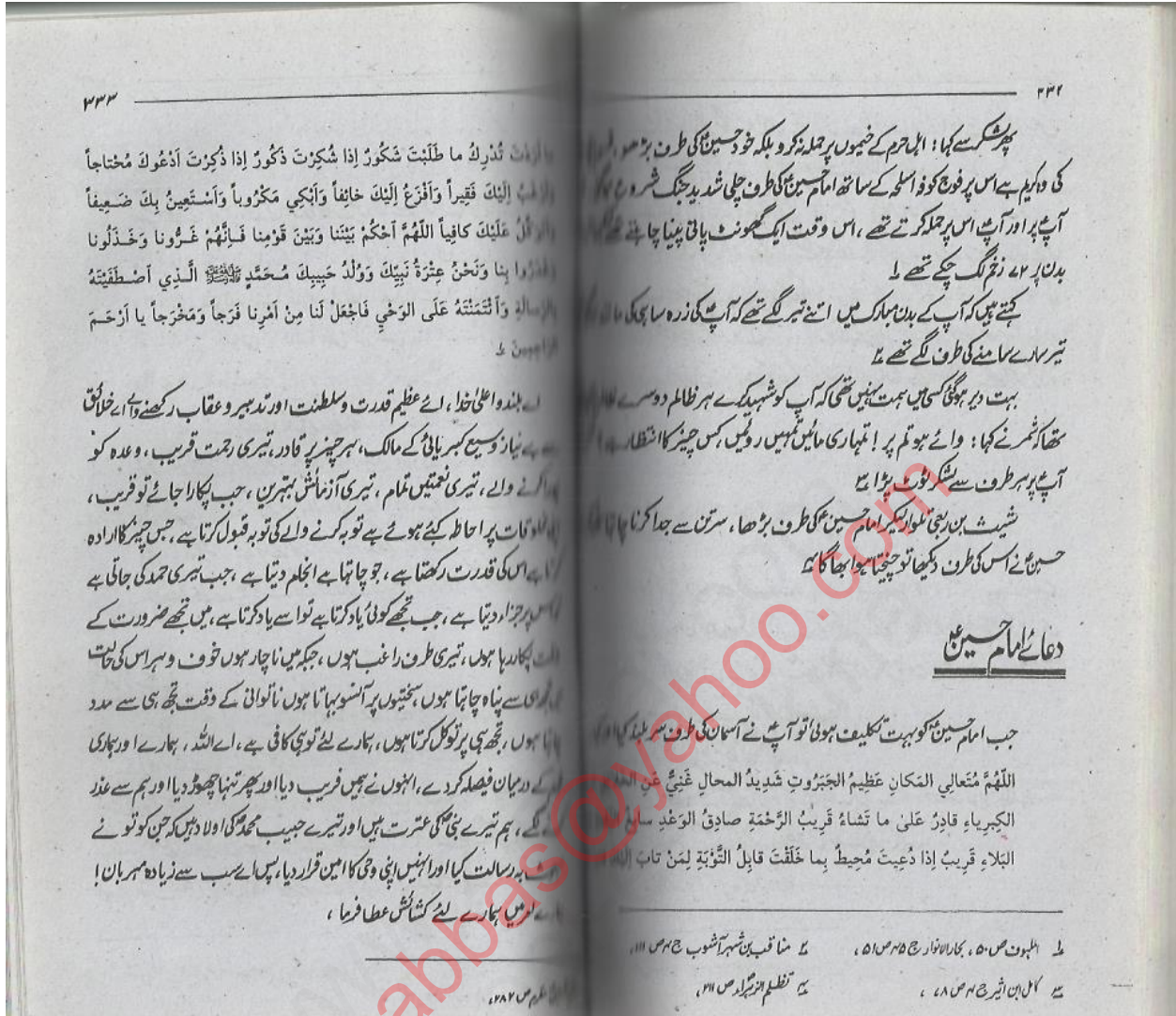
تین بھال کا تیر

گرمی کی شدت اور جنگ کرنے کی وجہ سے آپؑ تھک چکے تھے لہذا انھیں بھر مانس لے کر گری کی شدت اور جنگ کرنے کی وجہ سے آپؑ تھک چکے تھے لہذا انھیں بھر مانس لے کر

۱۔ مقتل حسینؑ ص ۷۷

۲۔ الامام حسینؑ واصحابہ ص ۶۶، ذریعہ النجات، گرمودی، ص ۱۳۳

۳۔ میزان الحکام ص ۵۳، میزان الحکام ص ۷۲



مناجات

امام حسینؑ نے اپنی حیات کے آخری لمحات میں خلا سے اس طرح مناجات کی کہ

صَبْرًا عَلَى قَضَائِكَ يَا رَبِّ، لَا إِلَهَ سِوَالِكَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِينَ مَا لِي
وَلَا مَعْنُوذٌ غَيْرُكَ، صَبْرًا عَلَى جَلْمِكَ يَا غِيَاثَ مَنْ لَا غِيَاثَ لَهُ يَا
لَهُ يَا مُخْبِي التَّوْتِنِ يَا قَائِمًا عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ، الْحُكْمُ لِلَّهِ
وَأَنْتَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ^(۱)

۱

اے رب! تیری قضا پر صابر ہوں، تیرے سوا کوئی معبود نہیں ہے، اور خدا کی فریاد کو پہنچنے والے، تیرے سوا میرا کوئی پروردگار نہیں ہے اور تیرے حکم پر مجبور کروں گا اے ایسے فریاد رس جس کا تیرے سوا کوئی خدا ہے، اے پوشیدہ رہنے والے اور مردوں کو زندہ کرنے والے اے اپنی مخلوق کے خدا کو دیکھنے والے، تو میرے اور اس قوم کے درمیان فیصلہ کر دے کہ تو بہتر حکم کرے گا

شہادت

جب زحون کی کثرت اور شگنی کی شدت سے امام حسینؑ ناتواں اور نڈھال شمر نے اپنی فوج سے کہا: اب کس چیز کے منتظر ہو؟ حسینؑ بہت زیادہ زخمی ہیں، شہید کرو و تمہاری ماں تمہارے غم میں روئے ان پر چاروں طرف سے حملہ کرو! اسکے بعد ہر طرف سے امامؑ پر حملے ہوئے لگے، جھین بین تیم نے آپؑ کے بازو اور ابویوب غنوی نے آپؑ کا حلقوم تیرے سے چھید دیا، زرع بن شریک نے امامؑ کے بازو

۱۔ مقتل حسینؑ مقدمہ ص ۲۸۳

خاندان نے آپؑ کے سینہ اقدس پر نیزہ مارا، صالح بن وہب نے ایک نیزہ آپؑ کے جس سے زمین پر گر پڑے پھر بیٹھ گئے اور طعن سے تیر نکالا، اس وقت امامؑ کے نزدیک آگیا۔

تذکرہ

امام حسینؑ کی خیمہ سے باہر نکلیں اور فریاد کی: وا اخواہ! واسیداہ! واولہا بیتناہ! اے کاش پہاڑ ریزہ ہو کر پرگندہ ہو جاتے! اے بدترین سعد کو محاط کر کے کہا: وائے ہوتو پر ابو عبد اللہ کو شہید کر رہے ہیں وہ اس نے کوئی جواب نہ دیا، زینبؑ نے کہا: وائے ہوتو پر، کیا تم میں کوئی مسلمان اس کی کوئی حجاب نہ ملا؟ اس کوں نے نقل کیا ہے کہ یہ سکر عین سعد رونے لگا لیکن زینبؑ کی طرف سے منہ پھیر لیا

تذکرہ

امام حسینؑ کا بیان ہے: ہم عربین سعد کے اصحاب کے درمیان کھڑے تھے ناگہان دیکھا کہ کوئی لشکر میرا مبارک ہوشم نے حسینؑ کو قتل کر دیا، میں دو صفوں کے بیچ سے نکلا اور امامؑ کے جان دینے کو دیکھنے لگا، خدا کی قسم زیادہ نورانی اور نیک مقتول خون میں آمودہ نہیں دیکھا ہے، ان کے چہرہ کے نور اور حسن کی

۱۔ المہجوت ص ۵۱، کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۴۸۔

۲۔ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۴۸۔

۳۔ المہجوت ج ۲ ص ۱۱۴

وہ میرے ذہن سے ان کے قتل کی فکر جو ہو گئی، اور جب پانی کا گھونٹ طلب کیا تو
آدھی کو کھینچے ہوئے سنا، نہیں ہرگز پانی نہیں ملے گا، یہاں تک کہ جہنم میں پہنچے گا
پیوگے، امام کا جواب سنا کہ آپ نے فرمایا: میں اپنے جد کے پاس جا رہا ہوں اور وہ
ساتھ رہوں گا اور گوارہ پانی پہونگا اور جو کچھ تم نے میرے ساتھ کیا ہے اس کی شکایت نہ کرو
پوری فوج غصہ میں آپ سے ایسے باہر ہو گئی گویا خدا نے ان کے دل میں رحم پیدا ہی نہیں کیا
خدا کی قسم اب یہی کام میں تمہارا شریک نہیں ہوں گا۔

آخری لمحے

کچھ دیر گزر جانے کے بعد تو شخص بھی قتل کے ارادہ سے آپ کے پاس آتا وہی
آپ کو قتل کرنے سے بچتا تھا پھر شہر میں آدھی مالک بن نیر کندی آیا اور تلوار سے
خون کی گھاٹ اور سر سے خون جاری ہو گیا آپ نے اس شہر سے فرمایا: اس ہاتھ سے کوئی
گا اور پانی پی سکے گا، خدا تجھے ظالموں کے ساتھ محسوس کرے گا، اس کے بعد اس شخص کی زندگی
میں ہونے لگا اور اس کے ہاتھ ایسے ہو گئے جیسے تل آدھی کے ہوتے ہیں۔
جب آپ گھوڑے سے زمین پر آئے تو دائیں کروٹ لیٹا چاہا لیکن زخموں کی وجہ سے
سکے پھر بائیں کروٹ لیٹا چاہا لیکن لیسٹ کے ریت اکٹھا کر کے اس پر سر رکھ کر لیٹ گیا
حیرت میں تھی کہ ان کی کیا حالت ہے؟ بعض کہتے تھے مر چکے ہیں، بعض کہتے تھے
کی طاقت نہیں ہے۔

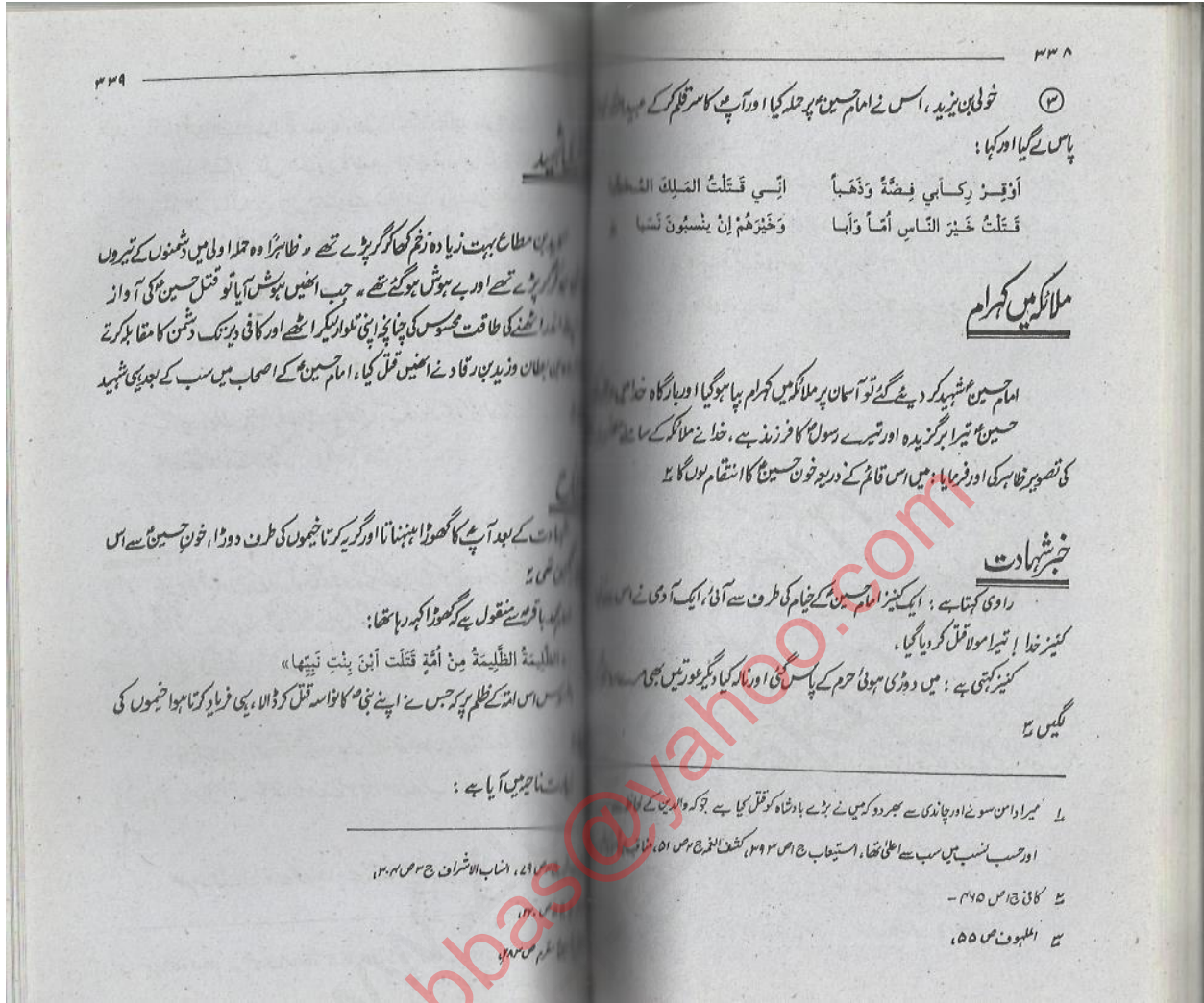
۱۔ فضل المہموم ص ۳۶۶

۲۔ انساب الاشراف ج ۳ ص ۳۰۸

۳۔ المفیدی ذکری السبط الشہید ص ۳۳۱

۴۔ الاستیعاب ج ۱ ص ۳۹۵، انصار العین ص ۳۴

۵۔ کونین اشتر ج ۲ ص ۱۰۰، انساب الاشراف ج ۳ ص ۳۳۱



فلما رأين الساء جوادك مخزياً وتظنون سرجك عليهما ملوياً بزلاً
ناشيرات الشهور على الخدود لاطحات الوجوه سافرات وبالقول

وتغذ العزى مذلللات والى مضطربك مبادرات، والشعر جالس على
ومولع شيفه على نحره قابض على شيتيك بنيه ذابح لك وشهد

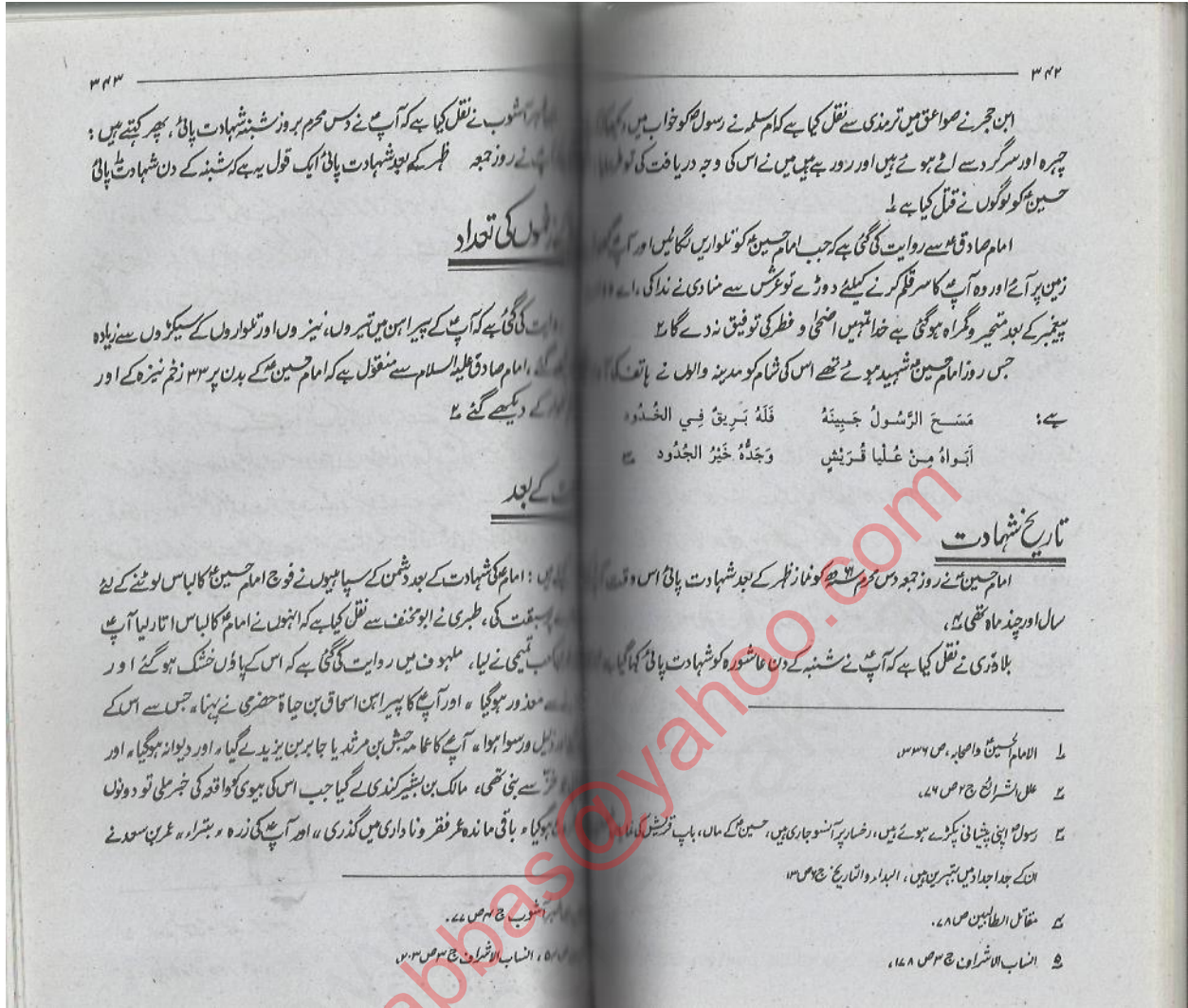
جب حرم کی عورتوں نے آپ کے گھوڑے کو بغیر سوار کس حالت میں دیکھا کہ زمین
اور بال کے بال خون سے تر ہیں، تو وہ سر بریز اور پتی ہوئی خیمے سے باہر نکل آئے
آواز سے ناروشیوں کرتی ہوئیں متصل کی طرف چلیں، — اس وقت
کے سینے مبارک پر سوار تھا، ایک ہاتھ میں آپ کی وارڈھی کے بال پکڑے ہوئے
ہاتھ سے تلوار کے درپوش سر جھرا کر رہا تھا۔

انقلاب

آپ کی شہادت کے بعد فوج کو فتنے تکبر کی آگ لگ گئی! زمین کو شدید زلزلہ آیا، شہر
تاریکی چھا گئی لوگ زلزلوں اور بجلی کی کڑک میں گھر گئے، آسمان سے خون کی بارش ہوئی
ہاتھ نے ندا کی قسم! امام بن امام، برادر امام اور اولاد امام حسینؑ بن علیؑ
ہیں۔

راوی کہتا ہے: اس وقت گرد و غبار کے ساتھ آسمان پر ایسا سرخ طوفان
ہاتھ کو ہاتھ دکھائی نہیں دیتا تھا انہوں نے سوچا کہ ان پر عذاب نازل ہو گیا، یہ طوفان

رہا۔
امام صادقؑ نے زرارہ سے فرمایا: اے زرارہ حسینؑ کے غم میں چالیس روز تک



امٹھانی

امٹھانی اور جب مختار نے اسے قتل کیا تو وہ زہ اس کے قاتل ابی عمرہ کو دیدی، آپ کے
ملک بن غیر نے امٹھانی اور بنی لی، وہ پاگل ہو گیا، آپ کے توفیق قیس بن اشعث
بنایا تھا، خوارزمی نے قتل کیا ہے کہ وہ جہلم کے مرض میں مبتلا ہوا، اس کے خاندان
تھے اسے گھور پر ڈال دیا تھا، وہیں سیر کر وار کو پہنچانے سے پہلے ہی کہتے اور سو اس کا
لگے تھے، آپ کے نطفین قبیلہ بنی اوہس سے ایک شخص نے لے لی اور شیر قبیلہ بنی
نے امٹھانی، اس کے بوجیب بن بدیل کے ہاتھ لگی، ملہوف میں نقل ہوا ہے کہ وہ
تواری تھی کہ وہ نبوت و امامت کے ذخائر میں سے ایک ہے،

ابن شہر آشوب کہتے ہیں: آپ کی کان اور اس سے متعلق چیزیں، دہلی
حضری، جریر بن مسعود اور طلحہ بن اسود اوسے امٹھانی، اور آپ کی انگوٹھی
کردی، یہ وہ انگوٹھی نہیں ہے جو نبوت کے ذخیرہ میں سے ہے کیونکہ اس سے امام
صدوق نے محمد بن مسلم سے نقل کیا ہے، حضرت علی بن حسین کی انگوٹھی پہنا دی تھی
محمد بن مسلم کہتے ہیں: میں نے امام صادق علیہ السلام سے امام حسین کی انگوٹھی
کیا کہ آپ کے بوس کے ہاتھ میں پہنچی؟ اور عرض کیا کہ گویا آپ کی انگوٹھی دشمن نے
فرمایا: لوگ جو کہتے ہیں وہ حقیقت نہیں ہے، حسین نے اپنے بیٹے علی بن
کی اہر اپنی انگوٹھی ان کی انگوٹھی پہنائی اور امران کے پہرہ دیکھا
ابن زائد کہتے ہیں: فوج کو فتنے دوسرے شہدار کے لباس میں لوث

امٹھانی،
ابن شہر آشوب کہتے ہیں: میں نے امام صادق علیہ السلام سے امام حسین کی انگوٹھی
کیا کہ آپ کے بوس کے ہاتھ میں پہنچی؟ اور عرض کیا کہ گویا آپ کی انگوٹھی دشمن نے
فرمایا: لوگ جو کہتے ہیں وہ حقیقت نہیں ہے، حسین نے اپنے بیٹے علی بن
کی اہر اپنی انگوٹھی ان کی انگوٹھی پہنائی اور امران کے پہرہ دیکھا
ابن زائد کہتے ہیں: فوج کو فتنے دوسرے شہدار کے لباس میں لوث

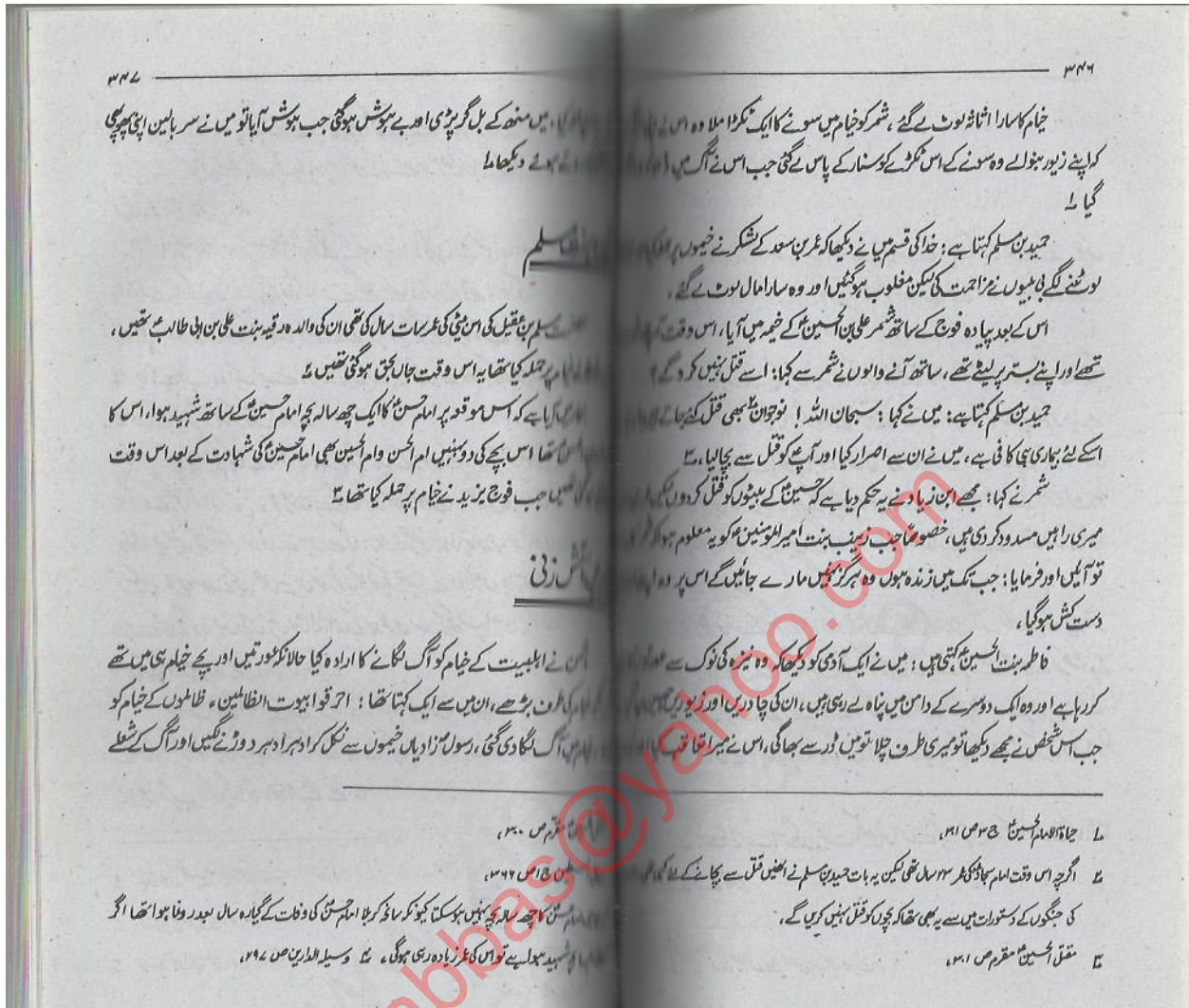
ابن شہر آشوب کہتے ہیں: میں نے امام صادق علیہ السلام سے امام حسین کی انگوٹھی
کیا کہ آپ کے بوس کے ہاتھ میں پہنچی؟ اور عرض کیا کہ گویا آپ کی انگوٹھی دشمن نے
فرمایا: لوگ جو کہتے ہیں وہ حقیقت نہیں ہے، حسین نے اپنے بیٹے علی بن
کی اہر اپنی انگوٹھی ان کی انگوٹھی پہنائی اور امران کے پہرہ دیکھا
ابن زائد کہتے ہیں: فوج کو فتنے دوسرے شہدار کے لباس میں لوث

ابن شہر آشوب کہتے ہیں: میں نے امام صادق علیہ السلام سے امام حسین کی انگوٹھی
کیا کہ آپ کے بوس کے ہاتھ میں پہنچی؟ اور عرض کیا کہ گویا آپ کی انگوٹھی دشمن نے
فرمایا: لوگ جو کہتے ہیں وہ حقیقت نہیں ہے، حسین نے اپنے بیٹے علی بن
کی اہر اپنی انگوٹھی ان کی انگوٹھی پہنائی اور امران کے پہرہ دیکھا
ابن زائد کہتے ہیں: فوج کو فتنے دوسرے شہدار کے لباس میں لوث

علاء الدین حسین و اصحابہ ص ۱۳۳

بخارا انوار ۵۸۹/۹

۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸، ۱۳۷۹، ۱۳۸۰، ۱۳۸۱، ۱۳۸۲، ۱۳۸۳، ۱۳۸۴، ۱۳۸۵، ۱۳۸۶، ۱۳۸۷، ۱۳۸۸، ۱۳۸۹، ۱۳۹۰، ۱۳۹۱، ۱۳۹۲، ۱۳۹۳، ۱۳۹۴، ۱۳۹۵، ۱۳۹۶، ۱۳۹۷، ۱۳۹۸، ۱۳۹۹، ۱۴۰۰، ۱۴۰۱، ۱۴۰۲، ۱۴۰۳، ۱۴۰۴، ۱۴۰۵، ۱۴۰۶، ۱۴۰۷، ۱۴۰۸، ۱۴۰۹، ۱۴۱۰، ۱۴۱۱، ۱۴۱۲، ۱۴۱۳، ۱۴۱۴، ۱۴۱۵، ۱۴۱۶، ۱۴۱۷، ۱۴۱۸، ۱۴۱۹، ۱۴۲۰، ۱۴۲۱، ۱۴۲۲، ۱۴۲۳، ۱۴۲۴، ۱۴۲۵، ۱۴۲۶، ۱۴۲۷، ۱۴۲۸، ۱۴۲۹، ۱۴۳۰، ۱۴۳۱، ۱۴۳۲، ۱۴۳۳، ۱۴۳۴، ۱۴۳۵، ۱۴۳۶، ۱۴۳۷، ۱۴۳۸، ۱۴۳۹، ۱۴۴۰، ۱۴۴۱، ۱۴۴۲، ۱۴۴۳، ۱۴۴۴، ۱۴۴۵، ۱۴۴۶، ۱۴۴۷، ۱۴۴۸، ۱۴۴۹، ۱۴۵۰، ۱۴۵۱، ۱۴۵۲، ۱۴۵۳، ۱۴۵۴، ۱۴۵۵، ۱۴۵۶، ۱۴۵۷، ۱۴۵۸، ۱۴۵۹، ۱۴۶۰، ۱۴۶۱، ۱۴۶۲، ۱۴۶۳، ۱۴۶۴، ۱۴۶۵، ۱۴۶۶، ۱۴۶۷، ۱۴۶۸، ۱۴۶۹، ۱۴۷۰، ۱۴۷۱، ۱۴۷۲، ۱۴۷۳، ۱۴۷۴، ۱۴۷۵، ۱۴۷۶، ۱۴۷۷، ۱۴۷۸، ۱۴۷۹، ۱۴۸۰، ۱۴۸۱، ۱۴۸۲، ۱۴۸۳، ۱۴۸۴، ۱۴۸۵، ۱۴۸۶، ۱۴۸۷، ۱۴۸۸، ۱۴۸۹، ۱۴۹۰، ۱۴۹۱، ۱۴۹۲، ۱۴۹۳، ۱۴۹۴، ۱۴۹۵، ۱۴۹۶، ۱۴۹۷، ۱۴۹۸، ۱۴۹۹، ۱۵۰۰، ۱۵۰۱، ۱۵۰۲، ۱۵۰۳، ۱۵۰۴، ۱۵۰۵، ۱۵۰۶، ۱۵۰۷، ۱۵۰۸، ۱۵۰۹، ۱۵۱۰، ۱۵۱۱، ۱۵۱۲، ۱۵۱۳، ۱۵۱۴، ۱۵۱۵، ۱۵۱۶، ۱۵۱۷، ۱۵۱۸، ۱۵۱۹، ۱۵۲۰، ۱۵۲۱، ۱۵۲۲، ۱۵۲۳، ۱۵۲۴، ۱۵۲۵، ۱۵۲۶، ۱۵۲۷، ۱۵۲۸، ۱۵۲۹، ۱۵۳۰، ۱۵۳۱، ۱۵۳۲، ۱۵۳۳، ۱۵۳۴، ۱۵۳۵، ۱۵۳۶، ۱۵۳۷، ۱۵۳۸، ۱۵۳۹، ۱۵۴۰، ۱۵۴۱، ۱۵۴۲، ۱۵۴۳، ۱۵۴۴، ۱۵۴۵، ۱۵۴۶، ۱۵۴۷، ۱۵۴۸، ۱۵۴۹، ۱۵۵۰، ۱۵۵۱، ۱۵۵۲، ۱۵۵۳، ۱۵۵۴، ۱۵۵۵، ۱۵۵۶، ۱۵۵۷، ۱۵۵۸، ۱۵۵۹، ۱۵۶۰، ۱۵۶۱، ۱۵۶۲، ۱۵۶۳، ۱۵۶۴، ۱۵۶۵، ۱۵۶۶، ۱۵۶۷، ۱۵۶۸، ۱۵۶۹، ۱۵۷۰، ۱۵۷۱، ۱۵۷۲، ۱۵۷۳، ۱۵۷۴، ۱۵۷۵، ۱۵۷۶، ۱۵۷۷، ۱۵۷۸، ۱۵۷۹، ۱۵۸۰، ۱۵۸۱، ۱۵۸۲، ۱۵۸۳، ۱۵۸۴، ۱۵۸۵، ۱۵۸۶، ۱۵۸۷، ۱۵۸۸، ۱۵۸۹، ۱۵۹۰، ۱۵۹۱، ۱۵۹۲، ۱۵۹۳، ۱۵۹۴، ۱۵۹۵، ۱۵۹۶، ۱۵۹۷، ۱۵۹۸، ۱۵۹۹، ۱۶۰۰، ۱۶۰۱، ۱۶۰۲، ۱۶۰۳، ۱۶۰۴، ۱۶۰۵، ۱۶۰۶، ۱۶۰۷، ۱۶۰۸، ۱۶۰۹، ۱۶۱۰، ۱۶۱۱، ۱۶۱۲، ۱۶۱۳، ۱۶۱۴، ۱۶۱۵، ۱۶۱۶، ۱۶۱۷، ۱۶۱۸، ۱۶۱۹، ۱۶۲۰، ۱۶۲۱، ۱۶۲۲، ۱۶۲۳، ۱۶۲۴، ۱۶۲۵، ۱۶۲۶، ۱۶۲۷، ۱۶۲۸، ۱۶۲۹، ۱۶۳۰، ۱۶۳۱، ۱۶۳۲، ۱۶۳۳، ۱۶۳۴، ۱۶۳۵، ۱۶۳۶، ۱۶۳۷، ۱۶۳۸، ۱۶۳۹، ۱۶۴۰، ۱۶۴۱، ۱۶۴۲، ۱۶۴۳، ۱۶۴۴، ۱۶۴۵، ۱۶۴۶، ۱۶۴۷، ۱۶۴۸، ۱۶۴۹، ۱۶۵۰، ۱۶۵۱، ۱۶۵۲، ۱۶۵۳، ۱۶۵۴، ۱۶۵۵، ۱۶۵۶، ۱۶۵۷، ۱۶۵۸، ۱۶۵۹، ۱۶۶۰، ۱۶۶۱، ۱۶۶۲، ۱۶۶۳، ۱۶۶۴، ۱۶۶۵، ۱۶۶۶، ۱۶۶۷، ۱۶۶۸، ۱۶۶۹، ۱۶۷۰، ۱۶۷۱، ۱۶۷۲، ۱۶۷۳، ۱۶۷۴، ۱۶۷۵، ۱۶۷۶، ۱۶۷۷، ۱۶۷۸، ۱۶۷۹، ۱۶۸۰، ۱۶۸۱، ۱۶۸۲، ۱۶۸۳، ۱۶۸۴، ۱۶۸۵، ۱۶۸۶، ۱۶۸۷، ۱۶۸۸، ۱۶۸۹، ۱۶۹۰، ۱۶۹۱، ۱۶۹۲، ۱۶۹۳، ۱۶۹۴، ۱۶۹۵، ۱۶۹۶، ۱۶۹۷، ۱۶۹۸، ۱۶۹۹، ۱۷۰۰، ۱۷۰۱، ۱۷۰۲، ۱۷۰۳، ۱۷۰۴، ۱۷۰۵، ۱۷۰۶، ۱۷۰۷، ۱۷۰۸، ۱۷۰۹، ۱۷۱۰، ۱۷۱۱، ۱۷۱۲، ۱۷۱۳، ۱۷۱۴، ۱۷۱۵، ۱۷۱۶، ۱۷۱۷، ۱۷۱۸، ۱۷۱۹، ۱۷۲۰، ۱۷۲۱، ۱۷۲۲، ۱۷۲۳، ۱۷۲۴، ۱۷۲۵، ۱۷۲۶، ۱۷۲۷، ۱۷۲۸، ۱۷۲۹، ۱۷۳۰، ۱۷۳۱، ۱۷۳۲، ۱۷۳۳، ۱۷۳۴، ۱۷۳۵، ۱۷۳۶، ۱۷۳۷، ۱۷۳۸، ۱۷۳۹، ۱۷



درخواست

سنان بن انس عرب بن سعد کے خیمہ کے دروازہ پر کھڑے ہو کر بلند آواز میں یہ شعر پڑھے:

أَذْبُرُ رِكَابِي فِطْنَةً وَذَهَابًا أَنَا قَتَلْتُ الْمَلِكَ الْمُخَجَّبَا
قَتَلْتُ خَيْرَ النَّاسِ أَمَّا وَأَبَا وَخَيْرَهُمْ إِذْ يَنْسُبُونَ نَسَبَا
وَخَيْرَهُمْ فِي قَوْمِهِمْ مَرْكَبَا

وہ اپنے سونے کہا: میری نظم میں تم دیوانے ہو، قتل سے تمہارا واسطہ ہی نہیں ہے اس کے

خیمہ کے اندر ملاؤ، جب وہ خیمہ کے اندر آگیا تو اسے کئی چھڑی

اچھڑی گئیں، ایسی بات کرتا ہے؟ خدائی قسم اگر ابن زیاد میری زبان سے یہ سن لے گا تو گردن

استہوا

اس وقت عرب بن سعد نے ابن زیاد کے حکم کی تعمیل کرتے ہوئے اپنے اصحاب کے درمیان کھڑے

ہو کر ان کی طرف اشارہ کیا کہ تم میں سے کون ہے جو حسین کی لاش پر گھوڑا دوڑائے اور ان کی لاش

پر شمر کے بڑھاپے اور بدن مطہر پر گھوڑا دوڑا دے اس کے ساتھ اس جرم کے رنگ

سنان بن انس نے کہا: میری نظم میں تم دیوانے ہو، قتل سے تمہارا واسطہ ہی نہیں ہے اس کے

خیمہ کے اندر ملاؤ، جب وہ خیمہ کے اندر آگیا تو اسے کئی چھڑی

اچھڑی گئیں، ایسی بات کرتا ہے؟ خدائی قسم اگر ابن زیاد میری زبان سے یہ سن لے گا تو گردن

ان کے پیچھے پیچھے اڑے چلے جاتے تھے، بعض بچے آگ سے بچنے اور غلاموں سے اسان میں سے

پھو پھو کے دامن میں چسپے تھے، کچھ بیابان میں نکل گئے تھے اور بعض بن سحر کے دروازے

پر گھس گئے، امام حسین کی شہادت کے بعد اپنی زندگی میں جب بھی عاشورہ کے دن

واقعات یاد کر لیتے تھے تو جین مار کر رونے لگتے تھے اور فرماتے تھے: خدائی قسم

پھو پھو اور بہنوں کو دیکھتا ہوں تو میرے گلے میں گریہ لگو گریہ ہو جاتا ہے میری آنکھوں

پھر جاتا ہے جب وہ ایک خیمہ سے دوسرے میں پناہ لیتی تھیں اور فوج کو فوج کا مشافہی کہ

غلاموں کے خیام کو جلا کر خاک کر دیا۔

حمید بن مسلم کہتا ہے: عرب بن سعد امام حسین کے خیموں کے پاس آیا تو عورتیں اس کے

ہو کر رونے لگیں تو اس نے اپنے فوجیوں سے کہا: کوئی ان خیموں میں داخل نہیں ہو سکتا اور اس

سجاوہ کچھ نہیں ہر سکتا، عورتوں نے اس سے کہا: ہماری چھٹی ہوئی چادریں ٹوٹا دی جائیں

کر سکیں، عرب بن سعد نے کہا: جس نے ان عورتوں کا جو کچھ چھینا ہے وہ انہیں واپس ٹوٹا دے

انہیں کسی کی کوئی چیز واپس نہیں ٹوٹا، اس کے بعد عرب بن سعد نے کچھ سپاہیوں کو ان کی

میں سے کر دیا اور پھر اپنے خیمہ میں واپس چلا گیا۔

صاحب معالی اسطین نے نقل کیا ہے کہ شام عزیز ماہ میں دو بچے جانا جت ہو گئے اور

نے بچوں کو جمع کیا تو انہیں نہ پایا، تلاش کرتے ہوئے دیکھا کہ دونوں ایک دوسرے کی گردن میں

پلٹے ہیں قریب جا کر دیکھا تو دونوں رچکے تھے۔

۱۔ حیات امام حسین ج ۳ ص ۲۵۸

۲۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۱۵۳

۳۔ وسیلہ الدارين ص ۱۶۹

ہوئے جن کے نام یہ ہیں:

- ① اسحاق بن حویہ
- ② اخنس بن شذاد
- ③ حکیم بن طفیل
- ④ عرب بن صبیح
- ⑤ رجاء بن منقذ
- ⑥ واحد بن ناعم
- ⑦ ہانی بن ثابت
- ⑧ صالح بن دہب
- ⑨ اسید بن مالک

ان غلاموں نے گھوڑا دوڑا کر آپ کی کوشش کو پامال کیا سیدہ مہارک کو پاش پاش کر دیا۔
ابن زیاد کے سامنے حاضر ہوئے اور اس سے انعام طلب کیا، ابن زیاد نے پوچھا تم کون ہو؟
اسید بن مالک نے کہا:

نَحْنُ رَضَيْنَا الصَّدْرَ بَعْدَ الظَّهْرِ بِحَلِّ يَسْعُوْبٍ شَدِيدٍ
اسکے بعد عبداللہ کے حکم سے انہیں حقیر سا انعام دیا گیا۔ منقول ہے کہ انہوں نے
سیدہ اور شہادت کو پامال کیا تھا۔

جمال کا واقعہ

جب امام حسین شہید ہو چکے تو اونٹوں کا ساربان آیا اور جب اس نے آپ کے تن کو ہر طرف سے
آپ کا کرنا دیکھا تو آپ نے انہیں اتار کر نہ پڑیا، جمال نے آپ کا ہاتھ قلم کر دیا اور پھر
نے انہیں ہاتھ سے پکڑ لیا، جمال نے آپ کا پایاں ہاتھ قطع کر دیا۔

۱۔ ہم نے پشت میں گویا ہڈیوں کے جھوکے کی طرح ہڈیوں سے آپ کے سینے کو پاش پاش کیا۔

۲۔ اظہار ص ۵۶

۳۔ الامام حسین و اصحابہ ص ۷۴ ۴۔ انباء العداۃ ج ۱ ص ۸۸

زخمی اصحاب

امام حسین کے جوانفرد زخمی ہو جانے کی وجہ سے میدان میں گر پڑے تھے اور عربی سواروں کی فوج سے
کے وہ درج ذیل ہیں۔

سوار بن حیرہ جاری انہیں زخمی ہو جانے کے بعد میدان جنگ سے باہر اٹھالائے تھے انہوں نے
سوار بن حیرہ انہیں زخموں کے سبب وفات پائی

۱۔ عرب بن عبداللہ یہ بھی زخموں کی وجہ سے میدان جنگ میں گر پڑے تھے انہیں بھی وہاں سے
کے وہ درج ذیل ہیں۔

۲۔ حسن بن اسحق آپ امام حسین کے بیٹے ہیں، اپنے چچا امام حسین کی طرف سے فوج کو فوج سے
کے وہ درج ذیل ہیں۔ جب عربی سواروں نے فوجی سر قلم کرنے کے لئے آئے تو دیکھا کہ زندہ ہیں
۳۔ امام بنوکران کی والدہ کے رشتہ داروں میں سے تھا اس نے قتل ہونے سے بچا لیا اور انہیں اپنے
کے وہ درج ذیل ہیں۔

امام کی مائیں کربلا میں موجود تھیں

۱۔ ان کے قتل کیا ہے کہ کربلا میں ۹ افراد ایسے شہید ہوئے جن کی مائیں بھی کربلا میں موجود

۲۔ علی اصغر، ان کی والدہ رباب ہیں

۳۔ امام حسین ج ۳ ص ۱۳۳

ان کا مرد و رادی کو فزین سلم پنا قیام کے ساتھ اسی سال کی میں شہید ہوئے،
 عبداللہ بن قحیر، امام حسین کے چھ سہن تھے یہ بھی امام حسین سے قبل کو فزین شہید ہوئے۔

ان کا تعداد

یہ تعداد بلاذری نے نقل کی ہے وہ لکھتے ہیں: اصحاب و انصار میں سے جو لوگ امام حسینؑ
 کے ساتھ وہ بہتر تھے تا شیخ مفید نے بھی یہی تعداد بیان کی ہے وہ کہتے ہیں: عاشور کے
 دن اصحاب کے ساتھ قتال کیلئے تیار ہوئے اس وقت آپ کے ساتھ تین سو سوار اور
 اور یہی تعداد ابن اثیر نے اپنی تاریخ میں بیان کی ہے اور یہی تعداد محمد بن جریر طبری
 نے بھی نقل کی ہے، یہی قول مشہور ہے،

یہ تعداد مسعودی نے نقل کی ہے، وہ کہتے ہیں: عاشور کے روز کربلا میں شہید ہونے

یہ بعض لوگوں نے روایت کی ہے اس دن جو لوگ شہید ہوئے ان کی تعداد ۶۱ تھی
 اور ان میں سے اصحاب و انصار شامل ہوں کراہیت دینی ہائیم کے شہداء کو شامل کرنے سے وہی
 کے لئے والے قول میں بیان ہوئی،

یہ تعداد سید ابن طاووس نے نقل کی ہے وہ کہتے ہیں: روایت کی گئی ہے کہ امام حسینؑ
 کے ساتھ ۵۱ افراد ہو جائیں گے، یہ تعداد دینی ہائیم کے شہداء کے

۱۔ انساب الاشراف ج ۳ ص ۱۵۵، ۲۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۱۵۵،

۳۔ دلائل الامارہ ص ۱۱، ۴۔ مروج الذهب ج ۳ ص ۶۱،

۵۔ انساب الاشراف ج ۳ ص ۱۵۶، ۶۔ العلوفہ ص ۶۰۔

عون بن عبداللہ بن جعفر ان کی والدہ زینب کبریٰ ہیں،

فاسم بن الحسن ان کی والدہ رملہ ہیں،

عبداللہ بن الحسن ان کی والدہ شلیل علی کی بیٹی ہیں،

عبداللہ بن سلم ان کی والدہ رقیہ بنت علی ہیں،

محمد بن ابی سعید بن قلیل،

عرو بن جنادہ دشمنوں سے جنگ کرنے کا حکم انھیں ان کی والدہ نے دیا تھا

عبداللہ بن علی، انھیں بھی جیسا کہ سید بن طاووس نے تحریر کیا ہے۔ ان کی والدہ

ترغیب کی تھی،

علی اکبرؑ، ان کی والدہ علیہا ہیں آپ خیمہ میں کھڑی دعا کر رہی تھیں،

آیا ہے کہ آپ نے اپنے بیٹے کو شہید ہونے دیکھا ہے، نہ

نیفخہ انتقال میں ان کو ہے کہ بیٹے کی والدہ کے ساتھ کربلا آئے تھے۔

اصحاب رسولؐ

ساتھ کربلا میں رسولؐ کے پانچ اصحاب بھی شہید ہوئے ہیں،

۱۔ انس بن اخربث کا بی بی تمام مویشین نے تحریر کیا ہے کہ وہ کربلا میں شہید ہوئے۔

۲۔ جیب بن مظاہر، ابن جریر نے بیان کیا ہے،

۳۔ مسلم بن عوجہ اسدی، محمد بن سعد نے طبقات میں ذکر کیا ہے۔

۱۔ ابصار المؤمنین ص ۱۳۰،

۲۔ نیفخہ انتقال ج ۳ ص ۲۶۴،

یہ بنی حنین امیروں کے زمرے میں امام حسینؑ کی اولاد میں سے یہ تین افراد بھی امیر تھے۔
 امام بن عبد اللہ بن عبد اللہ بن جعفر طیار کے ایک اور فرزند تھے،

محمد بن قلیل بن

محمد بن سمان، یہ جناب رباب کے غلام تھے، دشمن کے سپاہی انھیں پکڑ کر عمر بن سعد
 کے پاس لے گئے عمر بن سعد نے پوچھا کون ہو؟ انھیں سمان نے کہا: میں مملوک و غلام ہوں،
 اسے آزاد کر دیا گیا۔

واقف بن تمام مامری یہ بھی امام حسینؑ کے ساتھ تھے ان کے پاس جتنے تیر تھے وہ سب
 انھیں پرستعمال کر ڈالے پھر ان کے قبیلہ کے بچے لوگوں نے اگر انہیں امان دیدی اور وہ ان کے
 ساتھ چلے گئے جب عبد اللہ نے یہ واقعہ سنا تو اس نے انہیں زارہ میں جلا وطن کر دیا
 مسلم بن رباح، یہ امام حسینؑ کے ساتھ رہا اور آپؑ کی خدمت کرتا تھا جب امام حسینؑ
 شہید کر دیے گئے تو اسے رہائی مل گئی کہلا کے بعض وقائع اسی نے بیان کئے ہیں۔
 عکاب بن عبد اللہ، ہم پہلے بھی بیان کر چکے ہیں کہ چونکہ کہلا میں قتل ہونے سے بچ گئے
 انہیں سے ایک شخص اک بن عبد اللہ ہے اس کا واقعہ تفصیل کے ساتھ بیان ہو چکا ہے،

امام حسینؑ کے بعد شہید ہوئے

عبد بن ابی مطاع یہ ہوش ہو گئے تھے جب ہوش آیا تو امام حسینؑ کی شہادت کی خبر

۱۔ کتاب الامم و النبیین ج ۳ ص ۳۵۳۔

۲۔ کتاب الامم و النبیین ج ۳ ص ۳۵۳۔

۳۔ کتاب الامم و النبیین ج ۳ ص ۳۵۳۔

ساتھ اس تعداد کے مطابق ہو جاتی ہے جو مسعودی نے نقل کی ہے،

۵۔ ۸۲ تھی، یہ تعداد مرحوم مجلسی نے محمد بن ابی طالب سے نقل کی ہے۔

۶۔ ۷۵ تھی، امام باقرؑ سے منقول ہے کہ کہلا میں شہید ہونے والے ۴۵ سوار اور

تھے۔

جوان شہید بن ہوئے

امام حسینؑ کے بعض انصار ایسے بھی ہیں جو ان غلاموں کے ہاتھ سے بچ سکے تھے۔

معصومین کے خون کے پیاسے تھے۔

۱۔ امام زین العابدینؑ آپؑ کہلا میں بیارہ تھے، شراب کو قتل کرنا چاہتا تھا، زین العابدینؑ

ہونے سے بچا لیا۔

۲۔ امام محمد باقرؑ واقعہ کہلا کے وقت آپؑ بچے تھے آپؑ کی عمر ڈھائی سال سے زیادہ

۳۔ حسن بن اسحاق، ان کا واقعہ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ زخمی ہو گئے تھے، کوفہ میں

صحبت یاب ہوئے،

۴۔ عمر بن اسحاق،

۱۔ بحار و تاریخ ج ۵ ص ۳۵۳۔

۲۔ نفس المہجوم ص ۳۵۳، کتاب شفاء الصدور میں شہید کہلا کے تعداد کے سلسلے میں کچھ اور توابع بھی نقل ہوئے۔

۳۔ کتاب مشکوٰۃ ج ۵ ص ۳۵۳ ملاحظہ فرمائیں،

۴۔ المنتظم ابن جوزی ج ۵ ص ۳۵۳۔

۵۔ مقتل الحسینؑ مترجم ص ۳۵۳ کہیں تو لکھتے ہیں کہ امام محمد باقرؑ نے ۷۵ سال کی ولادت پائی تھی اور کہیں آپؑ ۷۵ سال

آپ کے بچوں کی فریاد سنی، انہوں نے پھر جنگ کی اوشہادت سے ہٹنا شروع کیا۔
 (۳۵) سعد بن احرث اور ان کے بھائی ابو احنوف دشمن کی فوج میں تھے جب آپ کے بچے اور انہوں نے آپ کے بچوں کی آہ و زاری سنی تو توہم کی اور فوج کو فروٹ کر خود بھی شہید ہو گئے۔
 (۳۶) محمد بن ابی سعید بن عقیل جب امام حسینؑ گھوڑے سے زمین پر آئے اور وہ آواز بلند ہوئی وہ غم سے دروازہ پر آئے اور قیظ یا ہانی نے انھیں شہید کر دیا۔

طفان سلم

جب امام حسینؑ شہید ہو چکے تو آپ کی شہزادہ سے دو بچے اس کے ساتھ لے گئے اس نے زندان کے دروازہ کو بلایا اور کہا: ان دونوں کو قید میں ڈال دو اور اچھا کھانا اور ٹھنڈا پانی نہ دینا اور جہاں تک بچے کے ان پر سختی کرنا، یہ دونوں دن کو روزہ رکھتے تھے اور رات کو انھیں جو کی روٹی اور ایک کوزہ کا طرح ایک سال گذر گیا، ان میں سے ایک نے دوسرے سے کہا: بھائی عرصہ ہو گیا کہ میں غریب باد اور صحت خراب ہو رہی ہے آج رات کو جب دروازہ آئے گا ہم اپنا تئاری کر لیں اور آجائے اور ہمیں آزاد کر دے، رات کو زندان کا پورے دار و دروٹی اور پانی لیکر آیا، چھوٹے بھائی نے اس کا آپ محمد سے واقف ہیں؟

ان سے کہیں نہیں واقف ہوں گا کہ وہ میرے رسول ہیں،
 حضرت ابی طالب کو بھی پہچانتے ہو؟
 جعفر کو کیوں نہیں پہچانوں گا وہ رسول کے چچا زاد بھائی ہیں،
 ہر آپ کے رسول کے خاندان سے ہیں اور مسلم بن عقیل کے بیٹے ہیں ایک سال سے قید میں ہیں اور قید میں ہر پر سختی کرتے ہو،
 ان کے بوزے دار کو بہت افسوس ہوا اور بچوں پر جو سختی تھی اس کی تلاقی کیلئے ان کے پاس آکر کہنے لگا: اے عزت رسولؐ میں تمہارے پرتربان، زندان کا دروازہ کھلا ہوا ہے جو چاہو آ جاؤ اور اس میں دو جو کی روٹی اور ایک کوزہ پانی دیا اور، فرار کرنے کی راہ بتاتے ہوئے کہا: رات میں آ جاؤ، ان میں بعضی رہنا تاکہ خدا تمہاری نجات کے سبب فراہم کرے،
 وہ بچے قید سے باہر گئے ایک بوزہ صورت کے دروازہ پر پہنچے اور اس سے کہا: ہم دو بچے ہیں آج کی شب ہمیں بطور مہمان ٹھہرا لیجئے صبح ہوتے ہی چلے جائیں گے،
 اسی صورت نے کہا: میرے پیارو! تم کون ہو، ہر بچوں سے زیادہ محترم ہو،
 ان نے کہا: ہم رسولؐ کے خاندان سے ہیں، عبد اللہ بن زیاد کے قید خانہ سے بھاگے ہیں،
 اسی صورت نے کہا: میرے پیارو! میرا داماد ایک بدکار آدمی ہے جو واقعہ کر ملا میں اپنا زبانی اس سے مذاقی ہوں کہ تمہیں یہاں قتل نہ کر دے،
 ان نے کہا: ہم صرف آج کی رات آپ کے پاس رہیں گے، صبح چلے جائیں گے،
 ان کے لئے کھانا لائی دونوں نے کھانا کھایا اور سو گئے نصف رات گذری تھی کہ اس کے دروازہ کھٹکھٹایا،
 صورت نے پوچھا کون؟
 ان نے کہا: تیرا داماد،
 صورت نے کہا: اتنا دیر سے کہوں آئے ہو؟

۱۲۹ ابصار زمین ص ۱۲۹

جیسا کہ اس صیادت سے ظاہر ہے یہ دونوں بچے امام حسینؑ کے ساتھ تھے، لیکن خود بخود نے روئے زمین پر دونوں بچے اپنے والدین کے ہمراہ کوئے تھے، انہیں عبد اللہ بن زیاد نے گزندہ کر کے قید کر دیا تھا۔

ہاں نے کہا: اپنی امان پر خدا و رسول کو گواہ قرار دیتے ہو؟
اس نے کہا: ہاں،

ہاں نے کہا: ہم تیرے رسول کی عترت میں عبید اللہ کے قید خانہ سے نکلے ہیں،
اس نے خوش ہو کر کہا: موت سے بھاگے تھے اور موت کے منہ میں آگئے، لشکر ہے اس خدا
میں سے ہاتھوں نہیں اسیب کرایا، پھر دونوں بیویوں کو مضبوط باندھ دیا تاکہ فرار نہ کر سکیں،
صبح سویرے اس نے اپنے کالے غلام، فلیح، کو آواز دی اور کہا: ان دونوں کے سر قلم کر کے
اس کے آگے لے آ تاکہ انہیں میں عبید اللہ بن زیاد کے پاس لے جاؤں اور اس سے انعام پاؤں،
غلام نے تلوار اٹھائی اور انہیں آگے آگے لے چلا تاکہ انہیں خرات کے کنارے شہید کرے جب
ان کے سر اٹھائے تو ان میں سے ایک نے کہا: اے غلام تو رسول مکہ کے موذن بلال سے مشابہ ہے!
اس نے کہا: مجھے تمہاری گردن مارنے کا حکم دیا گیا ہے تم کون ہو؟

ہاں نے کہا: ہم رسول کے خاندان سے ہیں، جان کے خوف سے قید خانہ سے نکلے تھے، اس
میں ہمارے طور پر اپنے گھر میں ٹھہرا تھا اور اب اس کا داماد ہمیں قتل کرنا چاہتا ہے،
اس کا غلام نے ان کے ہاتھ پاؤں کو بوسہ دیا اور کہا: اے عترت رسول تمہیں قربان، اس کے
لوہار چمک دی اور زلات میں کود کر فرار ہو گیا اور اپنے آقا کو جواب دیا کہ میں تمہارے فرمان کی اسی
طاعت کروں گا جب تک فرمان خدا کے تحت رہوں گے اور جب خدا کے حکم کی نافرمانی کرو گے تو میں

اس شخص نے اس واقعہ کے بعد اپنے بیٹے کو بلایا اور کہا: میں تمہاری آسائش و آرام کے اسباب
اور طریقہ سے فراہم کرتا ہوں اور تمہاری دنیا آباکروں کا خزانہ ان دونوں کے سر قلم کر کے میرے
ہاتھوں میں عبید اللہ بن زیاد کے پاس لے جاؤں اور انعام پاؤں، اس کے بیٹے نے تلوار اٹھائی
اور ان کی طرف چلا، ان میں سے ایک نے کہا: اے جوان میں ڈرتا ہوں کہ تو عذاب

دلادنے کہا: والے ہو تجھ پر جلدی دروازہ کھول کر نکھن سے مر رہا ہوں،

عورت نے پوچھا: کیا کوئی حادثہ پیش آیا ہے؟

اس نے کہا عبید اللہ کے قید سے دو بچے فرار ہو گئے ہیں اور میرے یہ اعلان کیا ہے کہ وہ
میں سے کسی ایک کا سر لائے گا سے ہزار درہم انعام دیا جائے گا اور دونوں کے سر لانے والے کو دو درہم
دیئے جائیں گے، میں نے انہیں کافی تلاش کیا مگر افسوس کہ کامیاب نہیں ہو سکا،
عورت نے کہا: خدا کے رسول سے شرم کر کہ روز قیامت تیرے دشمن ہوں گے،

اس نے کہا: کیا کفایتی ہو؟ دنیا حاصل کرنا چاہیے،

عورت نے کہا: جس دنیا سے آخرت حاصل نہ ہوتی ہو اس کا کیا فائدہ،

اس نے کہا: تم ان کی طرف لڑی کر رہی ہو، گناہ ہے کہ تمہیں ان کی خبر ہے، نہیں ابیر کے
لے جاؤں گا،

عورت نے کہا: امیہ بنی سہم عورت سے جو کہ میرا باپ کے ایک گوشہ میں زندگی گزارتا
لے گا؟

اس نے کہا: دروازہ کھولو تاکہ رات بھر آرام کے صبح ان کی تلاش میں نکھوں،

عورت نے اس کے لئے دروازہ کھول دیا، وہ گھر میں داخل ہوا اٹھا اٹھا کر سو گیا آدمی
ان دونوں بچوں کی آواز اس کے کان میں پہنچی، اپنی جگہ سے اٹھا اور اندھیرے میں انہیں ڈھونڈا

جب نزدیک پہنچا تو بچوں نے پوچھا تم کون ہو؟ اس نے کہا: گھر کا مالک: تم کون ہو؟

پھر وہ بھائی جو پہلے بیدار ہو گیا تھا اس نے اپنے بڑے بھائی کو جگایا اور کہا: میں
تھے وہی ہیں ڈھونڈ رہا ہے، اس کے بعد اس سے کہا: اگر تم سچ بتاؤ تو کیا میں امان دے

اس نے کہا: ہاں،

بچوں نے کہا: ایسی امان جس کو خدا اور اس کا رسول مستحکم سمجھتے ہیں،

اس نے کہا: ہاں،

اس نے کہا: تم کون ہو؟
چوں نے کہا: ہم تیرے رسول محمد کی عترت ہیں، تیرا باپ بھی قتل کرنا چاہتا تھا۔
اس آگاہی کے بعد بڑے کے انہیں بوسہ دیا اور کالے غلام کی طرح تلوار دوڑھکا۔

خود فرات میں کود گیا،
باپ نے چلا کر کہا: تو نے بھی نافرمانی کی؟ اس نے کہا: خدا کا فرمان تیرے فرمان سے زیادہ ہے۔

اس شخص نے کہا: میرے سوا انہیں کوئی قتل نہیں کر سکتا یہ کہہ کر تلوار اٹھائی چوں کو مارا۔
گمارے لے گیا، تیغ کھینچی چوں نے جب اس کی برہنہ تلوار دیکھی تو رونے لگے اور کہا:
اے شخص! میں بازار میں لے جا کر بیچ دے اور روز قیامت رسول کو اپنا دشمن نہ بنا۔

اس نے کہا: تمہارے سراپن زیادہ کے پاس لے جاؤں گا اور انعام پاؤں گا،
چوں نے کہا: رسول سے جو باتی قرابت ہے تو اس سے چشم پوشی کر رہا ہے،

اس نے کہا: تمہارا رسول سے رشتہ نہیں ہے،
چوں نے کہا: ہمیں میرا اللہ کے پاس لے چلے تاکہ وہ خود ہمارے بارے میں فیصلہ کرے۔

اس نے کہا: میں تمہارا خون بہاؤں اس کا تقرب حاصل کرنا چاہتا ہوں،
چوں نے کہا: ہمارے بچنے پر رحم کر،

اس نے کہا: خدا نے ہمارے دل میں رحم پیدا نہیں کیا ہے،
چوں نے کہا: ہمیں چند رکعت نماز پڑھ لینے دے،

اس نے کہا: اس کا کوئی فائدہ نہ ہوگا، پڑھو،
چوں نے چار رکعت نماز پڑھی، آسمان کی طرف دیکھا اور فریاد کی یا حی یا قیوم

ہمارے اور اس شخص کے درمیان حق کے ساتھ حکم کر دے۔
۱۔ منتخب نے قتل کیا جب اس شخص نے نہ دو رکعتیں قتل کرنا چاہا تو اس کی بیوی نے اور کہا: میں دو رکعتیں پڑھی سے دو رکعتیں پڑھی

۲۔ وہ خدا سے طلب کرتا تو اس میں اللہ کے انعام کے عوض کی برابر ملتا کہ اس نے کچھ نہ سنا، یا اس کا جہنم میں۔

۳۔ اس نے کہا: آسمان کی طرف ہاتھ اٹھا کر کہا تھا: یا حی یا قیوم یا حکم الٰہی کین، ہمارے

کے درمیان حق کے ساتھ حکم فرما،
۴۔ اس نے کہا: خدا نے تیرے اور ان کے درمیان حق کے ساتھ حکم کر دیا،

۵۔ اس نے کہا: حاضرین کو مخاطب کر کے کہا: کون ہے جو اس نابکار کا قصہ تمام کرے،
۶۔ اس نے کہا: اس نے اپنے جگے اٹھا اور کہا: میں ۱۔

۷۔ اس نے کہا: میری ایک رشتہ دار بڑھیا نے انہیں اپنے یہاں مہمان ٹھہرایا تھا،
۸۔ اس نے کہا: تو نے اس طرح ہمالیوں کی میزبانی کی ہے؟

۹۔ اس نے کہا: میں اس سے پوچھا: قتل ہونے سے پہلے انہوں نے تجھ سے کچھ کہا تھا؟
۱۰۔ اس شخص نے سارا واقعہ سنایا

۱۱۔ اس نے کہا: میرے پاس انہیں زندہ کیوں نہیں لایا، تاکہ میں تجھے چار ہزار درہم انعام دیتا
۱۲۔ اس نے کہا: میری سمجھ میں اس کے علاوہ اور کوئی بات نہ آئی کہ ان کے خون کے ذریعہ آپ کا تقرب

عید اللہ نے کہا: اس شخص کو اسی جگہ بے جا قتل کرو جہاں اس نے ان چوں کو قتل کیا۔ اس کے خون کا ان کے خون سے غلو طنہ ہو جائے اور اس کا سر میرے پاس لانا، اس شامی نے حکم کی تعمیل کی اور ابن زیاد کے حکم کے مطابق اسے فرات کے کنارے کی سزا دی اور سر ابن زیاد کے پاس لے گیا، لکھا ہے کہ اس کا سر نیزہ پر چڑھ کر رکھی کو چوں میں پھرایا گیا اور چوں نے اس کی اور کہا: یہ عترت رسول کا قاتل ہے۔

دشمن کا نقصان

دشمن نے بہت نقصان اٹھایا تھا، امام حسینؑ کے انصار نے کم ہونے کے پرکندہ کر دیا اور اس پر اسی کا ہی ضرب لگائی کہ بعض ہوشیار نے لکھا ہے کہ کوئی نہ تھا جس سے نالہ و شیون کی آواز نہ آ رہی ہو، بعض متقابل میں لکھا ہے کہ عرب سوار فوجی ہلاک ہوئے تھے۔

البتہ امام حسینؑ اور آپ کے بیٹوں، بھائی، بھتیجیوں، دیگر عزیزوں اور اصحاب

و فداکاری کے لحاظ سے اس تعداد میں مبالغہ محسوس نہیں ہوتا، مثلاً صرف امام حسینؑ

کو قتل کیا تھا۔

بہ نقل مصیبت مقدم ۲۵۹

۳۶۲

۱۔ منتخب میں اس شخص کا نام نامہ اور بعض نے متقابل لکھا ہے اور اسے دو ستر اہلبیت بتایا ہے، امامی شیخ صدوق مجلس ۱۹ حدیث ۲، ۲۔ حیات الامم حسینؑ ج ۳ ص ۳۵، ۳۔ مناقب ابن شہر آشوب ج ۳ ص ۷۸۔

سرمقدس

عمر بن سعد نے آپ کے سرمقدس کو عاشورہ کے روز خونی بن برید صبحی اور صبحی کے ذریعہ عبید اللہ بن زیاد کے پاس بھیج دیا تھا۔ خونی بن برید سرمقدس لیکر کوفہ آیا اور قتل کیا چونکہ محل کا دروازہ بند تھا اس لئے اپنے گھر آگیا اور سر کو ایک طشت کے نیچے رکھا۔

ہشام کہتا ہے: میرے باپ نے مجھ سے دو نوار بنت ملک - خلیفہ بنوی، کہا۔

کیا ہے اس نے کہا: میں نے رات کو دیکھا کہ خونی کو چیر لایا ہے اور اسے طشت کے نیچے چھپا دیا۔

نے پوچھا یہ کیا ہے؟

اس نے کہا تمہارے لئے ایک چیز لایا ہوں کہ اب تمہیں کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے۔

پہ۔

نوار نے کہا: میں نے اس سے کہا: واسے ہو تجھ پر! لوگ اپنے گھر سونا پاتا ہے۔

تو دختر رسول کے بیٹے کا سر لایا ہے، خدا کی قسم میں اس گھر میں تمہارے ساتھ زندگی نہیں گزارے گا۔

یہ کہہ کر میں بستر سے اٹھی، صحن میں گئی، خدا کی قسم میں آسمان سے طشت تک ایک نوک کا سر لائے گا۔

ایک سفید پرندہ دیکھا جو صبح تک اس سر کے گرد گھومتا رہا۔ صبح ہوئی تو خونی سر کو اس کے پاس لے گیا۔

۱۔ المہوف ص ۶۰۔

۲۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۳۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۴۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۱۔ المہوف ص ۶۰۔

۲۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۳۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۴۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

۵۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۴۵، بعض مؤرخین نے لکھا ہے بشر بن ملک امام حسین کا سر میدانہ میں لے گیا اور اس کے ماتھے سر کو کھڑکھا تھا: اولا کانی نقتہ و ذہبا، نقد قتلت ملک العنبا، ترجمہ: اے خدا! اگر میں نے اس کو بچا دیا تو اس نے میری شان بابرہ میں لے جاتا اور کھڑکھا دیتا۔ یہ سب کچھ مذکور ہے اور کہا: اگر مجھ کو اس کی خبر ہو تو میں اس کی کھڑکھا دیتا۔

امام زین العابدینؑ کی خدمت میں

عبد اللہ بن عمرؓ کی بیوی کی خدمت میں تھی، اپنے بیٹے علیؑ کے ساتھ کربلا آئی، منہج درجہ شہادت کا نواز ہوئے،
عبد اللہ بن عمرؓ کی بیوی کی زوجہ، اپنے شوہر کے بھرا کربلا آئی، شوہر کا ولایت سے دفاع کرنے کی ترغیب دلائی رہی، عبد اللہ انہیں واپس لوٹانا چاہتے تھے، لیکن اس نے قبول نہ کیا، امام حسینؑ نے خیم میں واپس بھیج دیا،
علیؑ کا رباب بن عبد اللہ بن اریقظ، کی والدہ، قارب اپنی والدہ، جو کہ امام حسینؑ کی زوجہ رباب کی خادمہ تھی، کے ساتھ مکہ اور وہاں سے کربلا آئے، حملہ اولیٰ میں شہید ہوئے،
عبد اللہ بن مسعودؓ فرجی اپنے شوہر جناد بن کعب اور اپنے بیٹے عمرو بن جناد کے ساتھ کربلا آئے، شوہر و فرزند دونوں شہید ہوئے،
اسلم بن عوفؓ اسدی کی بیوی جو کہ مسلم بن عوفؓ کی شہادت کے بعد میں کرتی تھی، یا بن عوفؓ کا سپاہی، بعض نے انہیں ام غطف اور زوجہ مسلم بن عوفؓ کا بھائی کہا ہے،
انہوں نے روایات میں ملتا ہے کہ کربلا میں یہ بھی موجود تھیں۔

رباب بنت ادریس، زوجہ امام حسینؑ

رقیبہ بنت اوسینؑ

رقیبہ زوجہ مسلم بن عقیلؑ

دختر مسلم بن عقیلؑ

نوحہ، جو کہ ام الشفر کے نام سے مشہور ہیں، عقیل کی زوجہ اور جعفرؓ کی بیوی تھیں، اپنے بیٹے کے ساتھ کربلا آئی تھیں۔

ام کلثوم صفی، عبد اللہ بن جعفر اور زینبؓ کی بیوی میں اپنے شوہر کے ساتھ کربلا آئی تھیں، ان کے شوہر کربلا میں شہید ہوئے۔

رملہ حضرت فاطمہؓ بن حسنؓ کی والدہ ہیں۔

شہر بانو یہ امام زین العابدینؑ کی والدہ نہیں ہیں بلکہ ایک اور شخصہ ہیں امام حسینؑ کے ہاتھوں پر کربلا بن شہادت کے تیرے سے شہید ہوئے۔

لیلیٰ بنت مسعود بن خالدؓ، عبد اللہ صفری کی والدہ ہیں یہ بھی کربلا میں علیؑ کی بیوی والدہ نہیں ہیں بلکہ امیر المؤمنینؑ کی زوجہ ہیں۔

فاطمہ بنت حسنؓ امام محمد باقرؑ کی والدہ ہیں، امام زین العابدینؑ کے ام اور اسیروں کے قافلہ کے ساتھ تمام گئیں۔

۱۔ نفس المہجوم ص ۵۶

۲۔ ریاحین الشریعہ ج ۲ ص ۵۵

۳۔ نتیجہ العقول ج ۲ ص ۱۸

۴۔ ۳۰۱

۵۔ نتیجہ العقول ج ۲ ص ۱۸

۶۔ ریاحین الشریعہ ج ۳ ص ۳۱۷

۷۔ ۳۶۷

۸۔ البصار لعین ص ۱۵۰

۹۔ ۳۶۵

۱۰۔ ریاحین الشریعہ ج ۳ ص ۳۱۹

۱۱۔ ۳۶۵

۱۲۔ ریاحین الشریعہ ج ۳ ص ۳۱۸

میں کبھی نہیں بھول سکتا۔

جو اپنے بھائی حسینؑ کی لاش پر لپٹ لائی تھیں، خدا کی قسم زینبؓ کی قبر پر لپٹ کر دشمن کو بھی رونے پر مجبور کر دیا تھا۔

زینبؓ کی قبر کے سخن

① زینبؓ نے اپنے بھائی کی لاش کو اپنے دونوں ہاتھوں پر اٹھا کر آسمان کی طرف کہا: «إِلٰهِي تَقَبَّلْ مِنَّا هَذَا الْقَرْنَانِ»۔

اے اللہ! ہمارے یہ قربانی قبول فرما۔

② یا مُحَمَّدُ! صَلِّ عَلَیْكَ مَلَائِكَةُ السَّمَاءِ! هَذَا الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ بِالْعَرَامِ، قُلُوبُ الْمُقَطَّعِ الْأَعْضَاءِ، وَنَائِثُكَ سَبَابًا وَذُرِّيَّتُكَ مُقْتَلَةً، تَسْفَى عَلَيْهَا الْعَالَمُ صَدَقَ وَصْدَقَ

اے اللہ کے رسول! زمین و آسمان کے فرشتے آپ پر درود بھیجتے ہیں جن کے اعضاء کو کوٹے کوٹے کر دیا گیا ہے، سرتن سے جدا کر دیا گیا ہے، چھین کا بدن مجھ میں پڑا ہے جس پر ہوا خاک ڈال رہی ہے، جس سے ہر دلوں میں

۱۔ نظم از ہرا ص ۵۵، ریاض الاحزان ص ۱۰۶،

۲۔ نفس المہر ص ۳۸۶،

۳۔ کال ابن اثیر ص ۸۱، الملہون ص ۵۶،

۴۔ متفق علیہ مقدم ص ۷۳، ۵۔ کال ابن اثیر ص ۸۱،

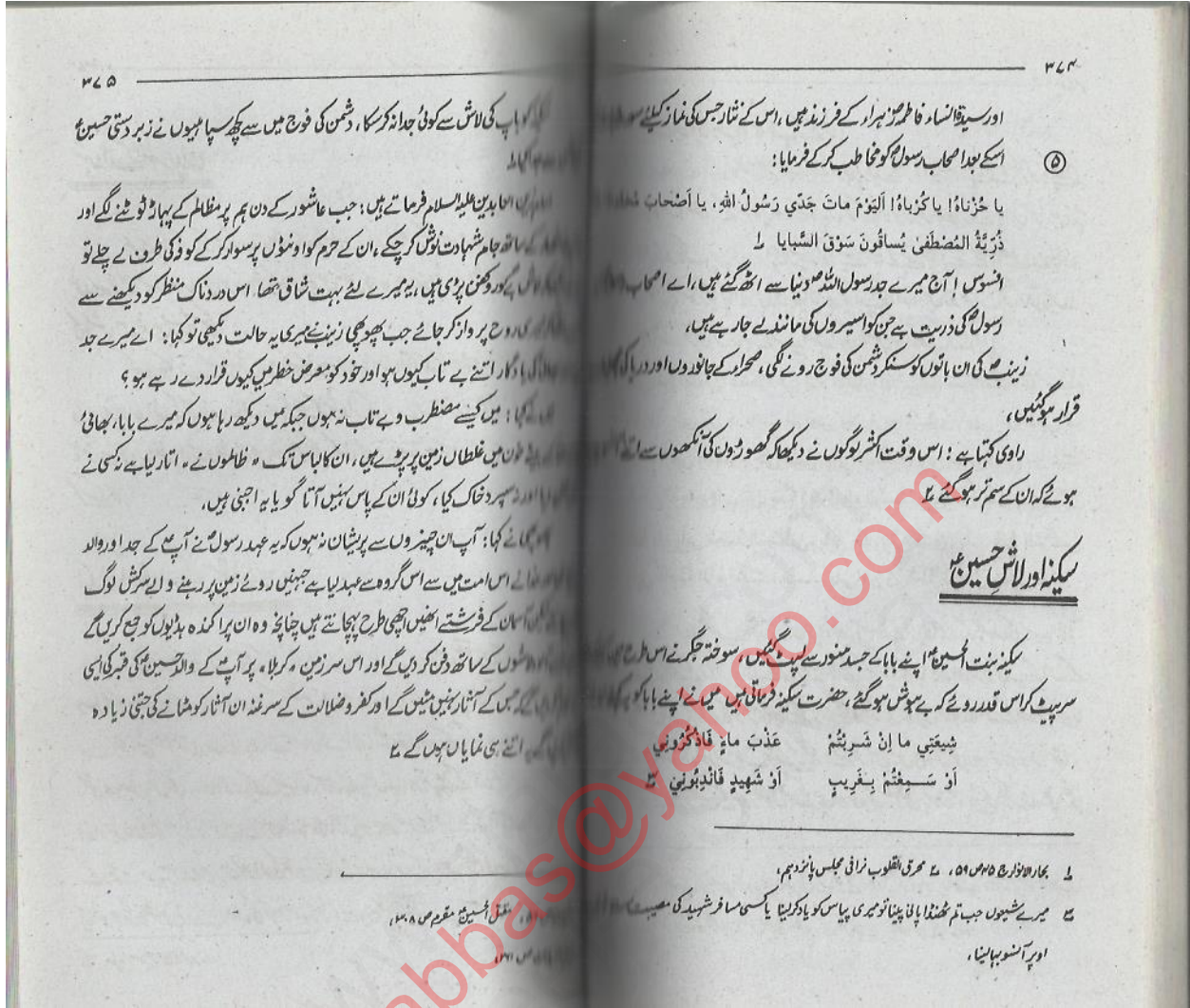
اس کے بعد اپنی والدہ کو مخاطب کر کے کہا:

اے اما: اے دختر خیر البشر! صحرارہ پر ایک نظر ڈالئے اور اپنے بھائی کو دیکھئے کہ ان کا سر دشمنوں کے نیزہ پر اور ان کا بدن خاک و خون میں غلطاں ہے، اس صحرا میں آپ کا فرزند خاک پر پڑا ہے، اپنی بیٹیوں کو دیکھئے ان کے خیمے جلادینے گئے، انھیں بے جا وہ اونٹوں پر سوار کیا گیا اور قیدی بنایا گیا ہے ہم آپ کی اولاد ہیں جو غربت میں گرفتار ہیں۔ پھر انک فغانی کرتے ہوئے سیدہ اشہدہ کی لاش کو مخاطب کر کے کہا:

يَا بِي مَنْ أَضْحَى عَشْرَةً فِي يَوْمِ الْاِثْنَيْنِ نَهَبَا، يَا بِي مَنْ فَنَسَطَطُهُ مَقَطْعُ الْعُرَى، يَا بِي مَنْ لَا غَائِبَ قَيْدَتَجِي وَلَا جَرِيمَ قَيْدَاوِي، يَا بِي مَنْ نَفْسِي لَهْ الدَّاءِ، يَا بِي الْمَهْمُومُ حَتَّى قَضَى، يَا بِي الْعَطْشَانُ حَتَّى مَضَى، يَا بِي مَنْ شَيْبَتُهُ الْوَلُولُ بِالْزَمَاءِ، يَا بِي مَنْ جَدُّهُ رَسُولُ إِلَهِ السَّمَاءِ، يَا بِي مَنْ هُوَ يَسْبُطُ نَسَبِي الْهُدَى، يَا بِي مُحَبَّدُ الْمُصْطَفَى، يَا بِي خَوِيجَةُ الْكُثْرَى، يَا بِي عَلِيُّ الْفُرُتْسَى يَا بِي فَاطِمَةُ الزَّهْرَاءِ سَيِّدَةُ النِّسَاءِ، يَا بِي مَنْ رُدَّتْ لَهُ الشَّمْسُ وَصَلَّى

اے خدا جس کا لشکر دو شہنشاہوں کے دن پر بادشاہ، اس کے قربان جس کے خیموں کی رسیاں کاٹ دی گئیں، اس کے صدقہ جو زنگ ہے کہ اس کے گوشے کی امید کی جاسکے اور نہ زخمی ہے کہ اس کے صحت یاب ہونے کی توقع کی جاسکے، اس کے خدا کہ جس پر میں قربان اس کے صدقہ جو بنیادِ عالم کی کستہ دل اور تشنہ لب شہید کی گئی، اس کے قربان جس کی وارثی سے خون رواں تھا، اس کے صدقہ جس کے ہر رسول اللہؐ میں اہ وہ محمد مصطفیٰؐ رسول، خدیجہ الکبریٰ، علیؑ رضی

۱۔ کال ابن اثیر ص ۸۱، الملہون ص ۵۶، ۲۔ کال ابن اثیر ص ۸۱، الملہون ص ۵۶، ۳۔ کال ابن اثیر ص ۸۱، الملہون ص ۵۶، ۴۔ کال ابن اثیر ص ۸۱، الملہون ص ۵۶،



إِلَّا الْمَكَارِمَ فِي أَمْنٍ مِنَ الْفِتْرِ ۝
اور یہاں جنت کے جواروں کے سردار کی لاش کی ایسی دسوز حالت تھی کہ اسے دیکھ کر
لاش ہو جاتا تھا اس مطہر بدن کے اس پاس نورانی برس رہا تھا اور اس سے عطر

۱

ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ روز عاشورہ امام حسینؑ نے ایک خیر نصیب کیا اور فرمایا: اہلبیت
میں سے جو بھی شہید ہو جائے اس کی لاش کو اس خیمہ میں منتقل کیا جائے فقط قربی ہاشم حضرت
کی لاش اس خیمہ میں نہیں آسکی،
لکھا ہے کہ جب بھی شہیدوں کی لاش لایا جاتا تھا تو امام حسینؑ فرماتے تھے
والے انبیاء اور انبیاء کی آل کی مانند ہیں، اور کہہ کر ان کے بارے میں حضرت علیؑ نے فرمایا
آخرت میں یہ عظیم المرتبت شہداء ہیں اور ابھی تک کوئی بھی ان پر سبقت نہیں کر سکا ہے اور
کرے گا،

۱

لَا رِاحَ تَحْتَهُنَّ جَسَدَكَ الطَّاهِرَ، فَإِنَّ الدُّنْيَا بِغَدَاكَ مُظْلِمَةٌ وَالْآخِرَةُ
بِوَدَّكَ مُنِيرَةٌ، أَمَّا اللَّيْلُ فَمُسْتَهْزِئٌ وَالْحُزْنُ فَسَرْمَدٌ، أَوْ يَخْتَارُ اللَّهُ لِأَهْلِ بَيْتِكَ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ يَا مُقِيمُ وَعَلَيْكَ بَيْتِي السَّلَامُ يَا بَنِي رَسُولِ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ
وَرِثَاؤُهُ

لاش نصیب ہے وہ زمین جس نے آپؑ کی لاش کو اپنی آغوش میں لیا ہے دنیا آپ کے جود
کا ایک اور آخرت آپ کے نور سے روشن ہے، رہی میری بات تو وہ راتوں کو نیند نہیں
آتی اور ظم والہم کا سلسلہ ختم ہوئے والا نہیں ہے، یہاں تک کہ خدا آپ کے اہلبیت کو

۱

۱

شہداء کے مطہر بدن

ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ روز عاشورہ امام حسینؑ نے ایک خیر نصیب کیا اور فرمایا: اہلبیت
میں سے جو بھی شہید ہو جائے اس کی لاش کو اس خیمہ میں منتقل کیا جائے فقط قربی ہاشم حضرت
کی لاش اس خیمہ میں نہیں آسکی،
لکھا ہے کہ جب بھی شہیدوں کی لاش لایا جاتا تھا تو امام حسینؑ فرماتے تھے
والے انبیاء اور انبیاء کی آل کی مانند ہیں، اور کہہ کر ان کے بارے میں حضرت علیؑ نے فرمایا
آخرت میں یہ عظیم المرتبت شہداء ہیں اور ابھی تک کوئی بھی ان پر سبقت نہیں کر سکا ہے اور
کرے گا،

ایک آدمی کے مشاہدات

بنی اسد میں سے ایک آدمی کہتا ہے کہ بلا سے قافلہ جانے کے بعد میں قتل میں آیا، عجیب
رسولؐ کے اہلبیت اور ان کے انصار کی لاشیں خون میں ڈوبی ہوئی زمین پر پڑی تھیں، دن
بہت دلخیز منظر تھا، ان کے بدن سے آسمان تک نور طبع تھا، ان کے پایہ زہد بدن سے
تھی وہ مطہر پاش تھی، اسی وقت ایک شیر امام حسینؑ کے پاس آیا اور آپؑ کے خون میں گھونٹ کر
انہما میں مارا کہ اس سے قبل میں نے نہیں سنا تھا، جس چیز سے میری حیرت کی انتہا نہ رہی
کے وقت جب میں نے میدان کارزار کی طرف نگاہ کی تو ہر لاش کے پاس شمع کی مانند ایک
آبادہ ان کی لاشوں پر رونے والوں کی آواز سنائی دے رہی تھی ۱

۱

بھی آپ سے ملنے کر دے اور آپ کی پناہ میں جگہ رحمت فرمائے رسول آپ
اور اللہ کی رحمت و برکتیں ہوں،
اسکے بعد قبر پر پر لکھا « هَذَا قَبْرُ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ الْأَمِيرِ

عَظَمَاتُنَا غَرِيبًا »

پھر حضرت علی اکبر کی لاش کو آپ کے پانچویں دفن کیا اور اس کے بعد امام کے
باقی اہلبیت کے شہیدوں کو امام حسین کی قبر کے پاس ایک جگہ دفن کیا گیا، بنی اسد امام

امام حسین کی قبر پر لکھا گیا

کے ساتھ قبر بنی ہاشم کو دفن کرنے کیلئے علقہ کی طرف چلے اور آپ کی لاش کو اسی جگہ دفن کیا
ہوئے تھے، امام زین العابدین نے بہت گریہ کیا اور فرمایا:

عَلَى الدُّنْيَا بِنَفْسِكَ الْغَفَا يَا قَمَرُ بَنِي هَاشِمٍ وَعَلَيْكَ مِثْقَلُ السَّلَامِ
مُحْتَسِبٌ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

اے قمر بنی ہاشم آپ کے بعد دنیا پر خاک، آپ پر میرا سلام اور خدا کی رحمت و برکتیں
ہوں گا

۱۔ بظاہر ان کی تعداد اٹھارہ تھی، جس میں امام حسین کے بیٹے، بھائی اور چچا زاد بھائی بھی شامل تھے جو باطنی
ارشاد شیخ مفید ج ۱ ص ۱۶۶

۲۔ حیات امام حسین ج ۱ ص ۱۶۳، بعض مورخین نے دفن امام حسین کی نسبت دوسروں کی طرف دی ہے، امام
نے امام کو دفن کیا، زبیر کے قلم نے یا کچھ یہودیوں نے دفن کیا، یہ احتمالات باطل ہیں کیونکہ امام کے دفن کی ذمہ داری
ہوئی ہے اس مسئلے میں کافی اور گہرا پڑھنا ہے روایات موجود ہیں، امام محمد یا قس سے روایات ملتی ہیں کہ امام حسین
نے اپنے والد کی نماز جنازہ پڑھ کر دفن کیا، حجاز، مدینہ، شہر ج ۱ ص ۱۶۶، اور یہ بات امام رضا کے بیان کی ہے کہ امام حسین

جب علی بن عروہ نے آپ سے عرض کیا: ہر نے آپ کے آباء سے سنا ہے کہ امام کا امام ہی انجام دے گا، امام رضا
ہیں امام تھے یا نہیں؟ علی بن عروہ نے کہا: امام تھے، امام رضا نے فرمایا: انہیں کس نے دفن کیا ہے؟ امام رضا
حضرت علی بن حسین، امام رضا نے فرمایا: علی بن حسین اس وقت کہاں تھے؟ وہ مہدی

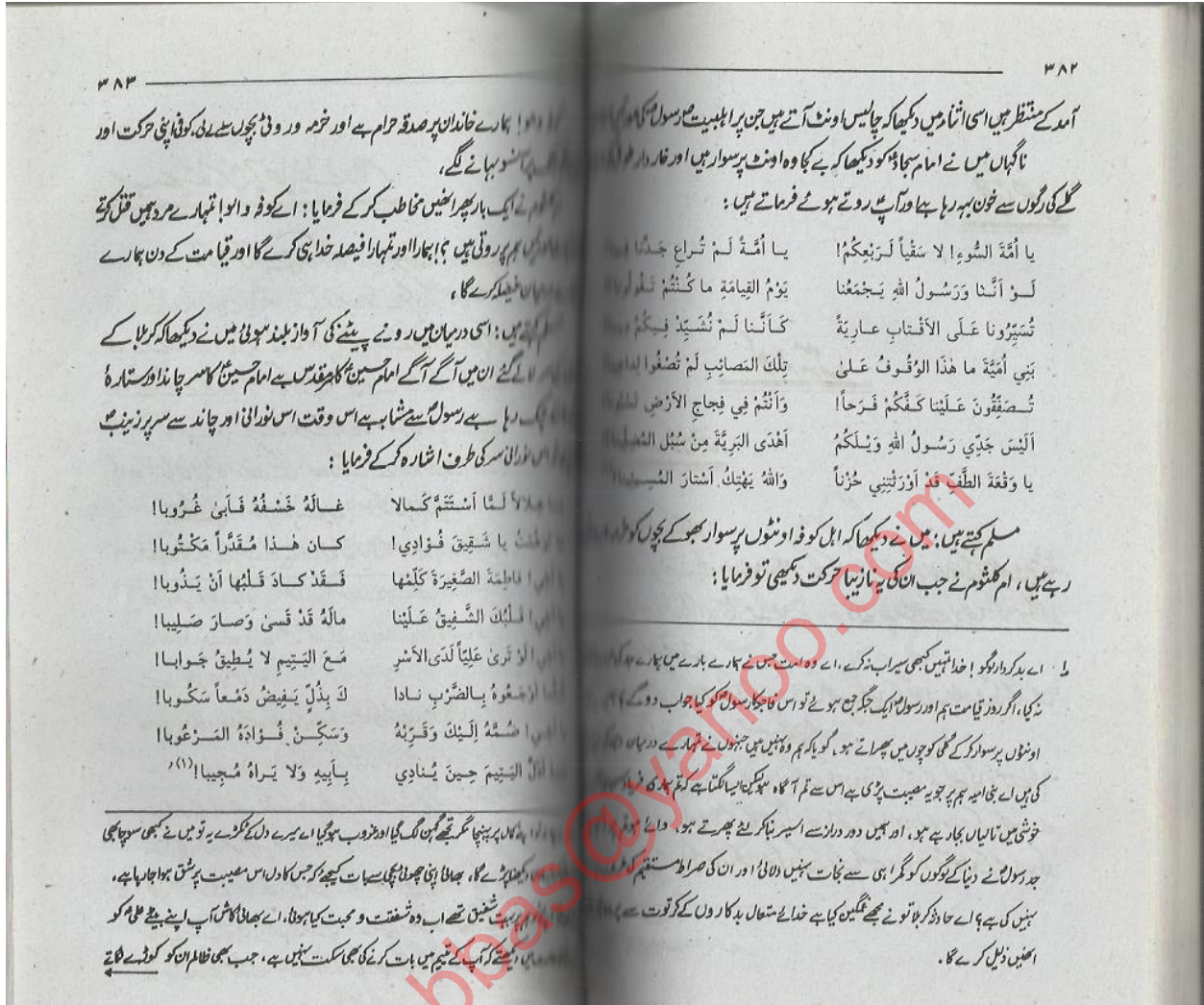
چھٹی فصل

کوفہ میں

اسیروں کا داخلہ

اسلام تھا اس کہتے ہیں :
یہ اللہ بن زیاد نے مجھے دارالامارہ کی مرمت کیلئے بلایا، میں دارالامارہ کی چوناکاری میں مشغول
تھا کہ سور و غل کی آواز سنی، میں نے اپنے ساتھ ولے خدمتکار سے پوچھا : کیا ہوا کہ کوفہ
کا دارالامارہ کو فتح رہا ہے ،
اس نے کہا : ابھی لوگ اس خارجی کا سر لائے ہیں جس نے یزید کے خلاف بغاوت کی تھی، میں نے
دارالامارہ کی مرمت کیا تو اس نے کہا : حسین بن علیؑ،
میں کچھ دیر تک متحیر رہا اور جیسے ہی وہ خدمتکار کسی کام کیلئے گیا تو میں نے ثروت
دارالامارہ کو چھوڑ دیا، چونکہ اس کی چھوڑ کو منہ ہاتھ دھویا اور دارالامارہ کے پیچھے سے
اسیروں کو پہنچ گیا وہاں کھڑا ہو کر دیکھا کہ لوگ اسیروں اور مقتولوں کے سروں کی

لہجہ میں جہاں کوڑا ڈالا جاتا ہے،



ادوات

۷۰ عیون حق رسول اکہ کے ماحولی تھے، صلح حدیبیہ کے بعد رسول اکہ کی خدمت میں آئے اور رسول اکہ سے صاحب کیتاب کہتے ہیں: انہوں نے شام میں گنونت افینڈ کی پھر کوفہ منتقل ہو گئے جیسو کہ ان نے اسے حدیث نقل کی ہے، حضرت علی کے شیو تھے، بلکہ حنیفہ نے اختصار میں لکھا ہے کہ

یہ ہے جبریل جس کی جھولہ منبائی کرتے تھے اور میکائیل واسرافیل اور
حدیث گذارتے، اور صلحائیں ان کے آواز کے ہوتے ہیں، یہ وہ ہیں جن کے
عرش خدا کا نپ اٹھا وائے ہوتے پر لوگوں سے یہ تباہ کر میں محمد صلی اللہ علیہ
حسن مذکور، ائمہ ہدیٰ، آسمان کے ملائکہ اور نبیاد اور وصیاء کافان
راوی کہتا ہے: میں نے اس عورت کا نام پوچھا تو بتایا میں زینب بنت علیؓ
اور یہ قیدی سب رسولؐ و علیؓ کی بیٹیاں ہیں۔

خبر غیبی

حضرت زینب کبریٰؓ میں جب ابن ملجم کی ضرب سے بابا کا سر شگافہ ہو گیا
کے چہرہ اقدس پر شہادت کے آثار دیکھے تو عرض کی! بابا! ام المین نے مجھے
سنائی ہے میں آپؐ کی زبان سے سنا چاہتی ہوں، میرے بابا نے فرمایا: یا بیۃ المین
ام المین، حدیث و بیچ ہے جو ام المین نے نہیں سنائی ہے، گویا میں تمہیں رسولؐ کے
عورتوں کے ساتھ اسی شہر میں لوگوں کے ہاتھوں اسیر دیکھ رہا ہوں اور تم خوف زدہ ہو اس
کرنا، قسم اس ذات کی جس نے داد شگافہ کی اور جنہیں کو پیدا کیا اس دن روئے زمین پر
شیعوں سے زیادہ خدائے نزدیک کوئی محبوب نہ ہوگا

حضرت زینب کا خطبہ

جس وقت حسینیؑ فاطمہؑ والوں کی حالت دیکھ کر کوئی عورتیں گریہ و زاری کرے
۱۔ المدح الساکبہ ج ۵ ص ۴۷، ۲۔ بحارہ خارج ج ۵ ص ۱۵۶

آگاہ سے قیامت تک تمہاری کمر بستی رہے گی وہ بہت بڑا گناہ ہے،
 آگاہ اس ناو کو کہے اور تمہارے پرچم ہمیشہ سرنگوں رہیں، تمہاری کوشش نے صرف نامہائیکہ
 آگاہ کیا اور تمہارے ہاتھ کٹ گئے، تمہارے مال میں خسارہ ہوا، اپنی جان کے عوض خدا کی
 آگاہ کی خریدی اور تمہاری شرمندگی یقینی ہو گئی کیا تم جانتے ہو کہ تم نے رسول کی اولاد میں سے
 آگاہ کو لیا کیا ہے اور تم نے کون سا پیمانہ توڑا ہے اور ابلیس کو بے پردہ کیا ہے، اس کی کجک
 آگاہ کی پناہ اور کس کس کا خون بہایا ہے؟

آگاہ بہت برا کام کیا ہے نزدیک ہے کہ اس سے آسمان گر پڑے اور زمین جنس جائے اور
 آگاہ ریزہ ریزہ ہو جائیں کتنی بڑی مصیبت! جان سوز، طاقت فرسا اور ایسی پریشانی
 آگاہ کی ہوئی کہ جن سے مغربیں اور اتنی بڑی ہے کہ پہاڑ ریزہ ریزہ ہو جائیں،
 آگاہ مصیبت پر آسمان سے خون برسے تو کیا تمہیں تعجب ہو گا آخرت کے عذاب
 آگاہ زیادہ تمہیں کوئی چیز رسوا کرنے والی نہیں ہے،

آگاہ اموی حکومت کے سرغناؤں کی کسی طرف سے مدد نہیں ہوگی،
 آگاہ مہلت سے تمہیں مغربوں میں ہونا چاہیے کہ خدا کسی کام میں مہلت کرنے سے منہ نہ ہے
 آگاہ لکھ لکھ تو ان کو پامال کرنے سے ڈرو کہ وہ انتقام لینے والا ہے، اور تمہیں تمہیں دیکھ رہا

آگاہ یہ اشعار پڑھے:

مَاذَا صَنَعْتُمْ وَأَنْتُمْ آخِرُ الْأُمَمِ
 مِنْهُمْ أَسَارَى وَمِنْهُمْ ضَرْجُوا بِدَمِ
 أَنْ تَخْلُقُونِي بِسُوءٍ فِي ذَوِي رَجَبِ
 مِثْلُ الْعَذَابِ الَّذِي أَوْدَى عَلَى إِرَمِ^(۱)

آگاہ یہ پڑھیں گے یہ تمہیں بے لہیت اور اولاد کے ساتھ کیا گیا ہے ان میں سے بعض سیر اور بعض خون ہیں

السَّمَاءِ أَفَعَجِبْتُمْ أَنْ تُنْطِيزَ السَّمَاءُ ذَمًّا، وَلْعَذَابُ الْآخِرِ لَا يَنْصُرُونَ، فَلَا يَسْتَفْتِكُمْ الْمَهْلُ، فَإِنَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لَا يَخْذُلُ الْبَدَا
 عَلَيْهِ قُوَّةُ النَّارِ، كَلَّا إِنَّ رَبَّنَا لَنَهْمٌ بِالْبُرْصَادِ.

آگاہ والو! اے مکار و خیانت کار لوگو! اے بے غیرت لوگو! خدا کے کہ تمہارے
 آگاہوں کا سیلاب نہر کے اور تمہارے ناؤں کا سلسلہ ختم نہ ہو تمہاری مثال
 سی ہے جس نے پناہ مارا سموت کات کرکڑے نکڑے کر ڈالا ہو نہ تمہارے مہل
 قدر و قیمت ہے اور نہ تمہاری قسم کا کوئی اعتبار ہے،

تمہارے پاس جو بیٹا باتوں اور ضرور و دشمن کے علاوہ اور کیا ہے، تمہاری
 کی سی ہے جن کا کلام چالوسی اور سخن چینی ہے، یا گھوڑے پر لگی ہوئی گھاس کا
 چاندنی کی طرح ہو جس سے قبروں کو سجایا جائے، تمہارا ظاہر پر فریب و
 باطن مفقود و ناپسند ہے اپنی آخرت کے لئے تم نے کتابرا توڑا، فراموش کیا ہے
 برا تو شرم بوجھا ہے، جس سے خدا کو غضبناک کیا ہے اور اس کے بیشیہ عذاب کو
 میرے بھائی سین کیلئے رو رہے ہو، روؤ کہ تم اس لائق ہو، مہنہ کو روؤ
 دامن پر ذلت کی گرد بٹھ چکی ہے، یہ بدنامی کا داغ تمہارے دامن پر ہمیشہ رہے گا
 نہ چھڑا سکو گے،

اور اس دھچکے کو تم کیسے چھڑا سکتے ہو کہ تم نے جنت کے جواؤں کے سردار اور
 کو قتل کیا ہے، اس شخص کو قتل کیا ہے جو جنگ میں تمہاری پناہ کا تھا اور تم
 تمہارے ارادہ و کون کا باعث تھا تمہارا سپرد خون اور خون سے بشتے نہیں
 سختیوں اور مشکلوں میں وہی تمہاری امید تھی اور جنگ و جدال کے زمانہ
 پناہ ڈھونڈتے تھے،

آگاہ ہو جاؤ تم نے آخرت کے لئے جو چیز پہلے سے بھیج دی ہے وہ بہت

۱۰۰ ہا؟ قَتَلْتُمْ خَيْرَ رِجَالٍ بَعْدَ النَّبِيِّ وَتُرْعَبُ الرُّحْمَةُ مِنْ قُلُوبِكُمْ إِلَّا إِنَّ
اللَّهَ هُمُ الْغَالِبُونَ وَجَزَبَ الشَّيْطَانُ هُمُ الْخَاسِرُونَ۔

۱۰۰ ہا؟ تم نے اچھے سے منحور ہو جاؤ تم نے صلیب کو مہلان جنگ اور دشمن کے ہاتھ
کے ہاتھ سے روڑا اور انھیں قتل کر دیا۔ اسی پر کفار کی ان کا مال و اسباب بھی لوٹ لیا گیا
اور ان میں میراث میں ملا ہے پر دشمن قتل کو تم نے اسیر کیا اور آزاد و اذیت پہنچائی
اور ان کو لوٹ کر لے گیا تم جانتے ہو کہ تم نے خود کو کس شکل میں مبتلا کیا ہے اور کتنے بڑے
کارنامے اپنے دوش پر اٹھا لیے اور کتنا مقدس خون بہایا ہے اور کس شریف عورتوں
کے ساتھ کیا ہے کن ترکہ کیوں کے سروں سے چادر چھینی ہے اور کتنا مال لوٹا ہے،
اور ان کے بد جو بہترین مرد تھے انھیں تم نے تزیین کر دیا گو یا تمہارے دل سے محبت و رحم
نہیں گیا، جان نوکر اللہ والے "حزب اللہ" کامیاب اور شیطان کے پیٹھوہ حزب
الشیطان، گھانا اٹھانے والے ہیں، اس کے بعد یہ اشعار پڑھے:

فَاللَّهُ أَهْلِي ضَبْرًا قَوْلِي لَا يُمَيِّكُمُ سَخِرُونَ نَارًا حَرُّهَا يَسْخَرُونَ
فَقَتَلْتُمْ نِسَاءً حَرَّمَ اللَّهُ سَفَكَهَا وَحَرَّمَ الْقُرْآنُ ثُمَّ مُحْشَدُ
لَا تَسْتَوُوا بِالنَّارِ إِنَّكُمْ عَدَا لَفِي سَفَرٍ خَفًا بَقِينَا تَخْلُدُوا
وَاللَّهِ لَا يَكْفِي فِي خِيَاتِي عَلَى أَخِي عَلَى خَيْرٍ مِّنْ بَعْدِ النَّبِيِّ سَيُولَدُ
بَعْدَكُمْ غَرِيزٌ مُّسْتَهْلٍ مُّكْفَكِبٍ عَلَى الْخَيْرِ مِثِّي دَائِمًا لَيْسَ يَخْشَدُ^(۱)

۱۰۰ ہا میں جیسے تم نے میرے بھائی کو بے چارگی کی حالت میں قتل کیا ہے مغریب اس کی جزا تمہیں پہنچے گی
اور تم لوگ کی صورت میں دی جائے گی، تم نے اس پاک خون کو زمین پر بہا دیا ہے جس کی حرمت کا فائل
اللہ نے کر دیا اور اللہ کا رسول صیاب میں تمہیں آتش جہنم کی بشارت دیتی تھی کہ تم ضرور جہنم کے شعلوں
کی عذاب میں مبتلا ہو گے میں زندہ بھرا پنے بھائی پر روتی رہوں گی کہ رسول کے بعد وہ صیاب
۱۰۰ ہا میں روؤں گا اور میرے آنسوؤں کا منہ ہرستا ہی رہے گا،

راوی کہتا ہے کہ زینب کے اس خطبہ کے بعد میں نے اہل کو کو دیکھا کہ وہ چپا لیا
ہیں میں نے اپنے پاس کھڑے ضعیف العمر آدمی کو اس طرح روئے دیکھا کہ آنسوؤں سے اس کا
تھی اور آسمان کی طرف ہاتھ اٹھا کر کہہ رہا تھا: میرے مال باپ آپ پر قربان، آپ
بوڑھے آپ کے یہاں کی عورتیں بہترین عورتیں آپ کے بچے بہترین بچے آپ کا خاندان
آپ فضل و کرم میں بہت زیادہ ہیں، اس کے بعد یہ اشعار پڑھے،

كُفُّوا لَكُمْ خَيْرَ الْكُفُولِ وَتَسْلُكُمُ إِذَا عَدَّ نَسْلًا يَبُورُ وَلَا يَلِدُ
امام زین العابدین علیہ السلام زینب کی طرف ملتفت ہوئے اور فرمایا: یہودیوں
جو رہ گئے ہیں انھیں چلے جانے والوں سے عبرت حاصل کرنی چاہیئے خدا کا شکر کہ آپ عالم
رونے سے چلے جانے والے واپس نہیں آجائیں گے،

خطبہ ام کلثوم

اسی دن ام کلثوم بنت امیر المومنین علیؑ نے رونے ہوئے یہ خطبہ دیا،

يَا أَهْلَ الْكُوفَةِ! سَوَاءٌ لَّكُمْ، مَا لَكُمْ خَذَلْتُمْ خُسَيْنًا وَقَتَلْتُمُوهُ وَاللَّهِ
وَوَرِثْتُمُوهُ، وَسَيَبِيْنُ نِسَاءَهُ وَتَكْبِتُمُوهُ؟ قَتَبْنَا لَكُمْ وَشَقْنَا
وَيَلَكُمْ أَتَذَرُونَ آيَّ دَوَاهٍ دَهَنَكُمْ؟ وَأَيُّ وَزِيرٍ عَلَى ظُهُورِكُمْ خَذَلُوا
سَفَكْتُمُوهَا؟ وَأَيُّ كَرِيْمَةٍ أَهْتَضَمْتُمُوهَا؟ وَأَيُّ صَبِيَّةٍ سَلَبْتُمُوهَا
عاطش ہیں، تو آخری امت ہو تو اس وقت کیا جواب دو گے، میں تمہارا غیر زندہ تھا میری زندگی
خاندان کے حق میں جھاکو، ڈرنا میں کہ تم پر ایسا عذاب نہ نازل ہو جائے کہ جیسا قوم ام
کر دیا تھا،

۱۰ آپ کے بوڑھے بہترین بوڑھے آپ کی کائنات وہ ہے کہ جس کے لئے ذلت و گھانا نہیں

امام زین العابدینؑ

راوی کہتا ہے کہ اس دن سے زیادہ کسی عورت، مرد و تے ہوئے نہیں دیکھا گیا۔

اسی اثناء میں امام زین العابدینؑ اٹھے لوگوں کو خاموش ہو جانے کا اشارہ کیا، لوگوں کی تھی وہیں کھڑی، مجمع پر سناٹا چھ گیا، امام زین العابدینؑ نے اپنا تاریخی خطبہ شروع کیا، رسول پر درود و سلام بھیجنے کے بعد فرمایا:

أَيُّهَا النَّاسُ! مَنْ عَرَفَنِي فَقَدْ عَرَفَنِي، وَمَنْ لَمْ يَعْرِفْنِي فَاعْرِفُونِي
الْحُسَيْنِيُّ الْمَذْبُوحُ بِشَطْرِ الْفَرَاتِ مِنْ غَيْرِ ذَخْلٍ وَلَا تَرَاتٍ، أَلَا أَلَا
خَرِيئُهُ وَشَلِيبُ نَعِيمُهُ وَأَنْتَهَبُ مَالَهُ وَشَبِي عِيَالَهُ، أَنَا أَبْنُ مَنْ لَوْلَا
بِذَلِكَ فَخْرًا.

أَيُّهَا النَّاسُ! نَاشِدُكُمْ بِاللَّهِ خَلِّ تَعْلَمُونَ أَنَّكُمْ كَتَبْتُمْ إِلَى رَسُولِي
وَأَعْطَيْتُمُوهُ مِنْ أَنْفُسِكُمْ الْعَهْدَ وَالْمِيثَاقَ وَالنِّعَةَ ثُمَّ قَاتَلْتُمُوهُ
فَقَتَلْتُمْ لَكُمْ مَا قَدْ نَفَسْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَنَسَوْتُمْ لِرَأْيِكُمْ، يَا أَيُّهَا
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَكُمْ: قَتَلْتُمْ عَرَفَنِي وَأَنْتَهَكْتُمْ خَزَائِنِي
أُمِّي.

لوگو! جو مجھے جانتا ہے وہ جانتا ہے کہ میں کون ہوں لیکن جو مجھے نہیں جانتا
کہ میں علیؑ ہوں اس میں کیا شبہ ہے فرات کے کنارے "شعلہ لب" کے کنارے
بیٹا ہوں کہ جس کے حرم کی جنگ حرمت کی گئی، جس کا مال لوٹ لیا گیا جس کے
قدری بنایا گیا میں اس کا بیٹا ہوں جسے بے چارگی کی حالت میں شہید کیا گیا
کافی ہے۔

۱۔ المہجۃ ص ۷۵

کہ! میں نہیں خود کی قسم دے کر پوچھتا ہوں کیا تم میں یاد دہیکر تم نے میرے والد کو خطا لکھے
اور ہم انہیں دھوکا دیا، تم میں یاد دہیکر ان سے وفاداری کا عہد کیا ان کے "اور ان کے نمائندہ
کے" ہاتھ پر بیعت کی لیکن "وقت پر" انہیں تنہا چھوڑ دیا "اسی پر اکتفا نہ کی" بلکہ ان
سے جنگ کے لئے اٹھ کھڑے ہوئے۔

خدا تم میں موت دے! تم نے کتنا برا تو خدا اپنے لئے بھیجا ہے اور تمہاری رائے کتنی بری! اور
اسند تھی تم اس تک کہ سے رسولؐ کا دیدار کرو گے جب وہ تم سے کہیں گے کہ تم نے میرے
اہلیت کو قتل کیا میرے حرم کی حرمت کو پامال کیا گویا تم میرے ساتھ نہیں ہو،
امام زین العابدینؑ کے یہ سن سسک سارا مجمع رونے لگا اور ایک دوسرے سے کہنے لگے تباہ ہو گئے

امام زین العابدینؑ نے خطبہ جاری کر دیتے ہوئے فرمایا:
خدا اگر تم اسے اس پر جو میری نصیحتوں پر کان دھرے، قبول کرے، اور خدا و رسولؐ
اور ان کے اہلیت کے بارے میں میری وصیت کو دل میں محفوظ کرے میں نیکی کے
ساتھ رسولؐ کا ذکر کرتا ہوں اور ان کے کردار کو اپناتا ہوں۔

خدا تم میں نے آواز بلند کی،
اسے فرزند رسولؐ! ہم آپ کے "حکم کے" فرمانبردار ہیں، آپ کے عہد کو مقیم سمجھتے ہیں
اور ہمارے دل آپ ہی کی طرف لگے ہوئے ہیں، دل میں آپ ہی کی محبت ہے،
خدا آپ پر رحم کرے: آپ حکم دیجیے کہ جو آپ کے آڑے آئے اس سے جنگ کریں اور
جو آپ کا فرمان تسلیم کرے اس سے صلہ کریں اور بڑی حکومت سے اتار کر، قید کر لیں
جنہوں نے آپ کے خاندان والوں پر ظلم کیا، ان سے ہیزاری اختیار کرتے ہوئے ان سے آپ
کے اصحاب و فریت کے خون کا انتقام لیں

امام زین العابدینؑ نے فرمایا:

يَا أَيُّهَا الْقَدَرَةُ التَّكَرُّةُ اجْنَلِي بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ شَهَوَاتِ أَنْفُسِكُمْ، أَتَرِيدُونَ

دارالامارہ

عبداللہ بن زیاد نے خلیفہ کی چھاؤنی سے دارالامارہ میں واپس آنے کے بعد امام حسین کے سراپا کو
 رکھ کر کہا کہ انا کہاں دارالامارہ کے درو دیوار سے خون ایلنے لگا، اور دارالامارہ کے بعض حصہ
 کی اور اس کے شعلے ابن زیاد کی طرف بڑھے، عید اللہ بے اختیار اپنی جگہ سے اٹھ کر بھاگا
 اور کمرے میں پناہ لی، اسی اثناء میں سرسین ہم گویا چلا، عید اللہ اور ان گھوڑوں نے سنا جو
 دروازے میں موجود تھے، فرمایا: فرار کر کے کہاں جائے گا اگر دنیا میں آگ سے بچ جائے گا تو آخرت
 میں کدو کا اس کے بعد آگ بجھ گئی، اور امام حسینؑ کا سر بھی خاموش ہو گیا دیکھنے والوں کے
 دل کڑوا کر دیکھ کر غیب خوف و ہراس بیٹھ گیا۔

ابن زیاد

ابن زیاد نے امام حسینؑ کی اہلیت کو ابن زیاد کے دربار میں لایا گیا، ان کے ساتھ امام حسینؑ کی بیوی
 اور اس کے بچے بھی تھے، ابن زیاد نے ان کو دیکھا تو بہت خوش ہوا اور ان کو اپنے دربار میں رکھ لیا،
 ابن زیاد نے ان کو دیکھا تو بہت خوش ہوا اور ان کو اپنے دربار میں رکھ لیا،

ابن زیاد نے پوچھا یہ کون ہے جو عورتوں کے ساتھ وہاں بیٹھی ہے،

ابن زیاد نے ان کو دیکھا تو بہت خوش ہوا اور ان کو اپنے دربار میں رکھ لیا،

ابن زیاد نے ان کو دیکھا تو بہت خوش ہوا اور ان کو اپنے دربار میں رکھ لیا،

ابن زیاد نے ان کو دیکھا تو بہت خوش ہوا اور ان کو اپنے دربار میں رکھ لیا،

أَنْ تَأْتُوا إِلَيَّ كَمَا أَتَيْتُمْ إِلَى آبَائِي مِنْ قَبْلُ، كَلَّا وَرَبِّ الرَّسَائِلِ
 ، فَإِنَّ الْجَزْعَ لَمَّا يَنْدَمِلُ، قُبِلَ أَبِي بِالْأَنْسِ وَأَهْلُ بَيْتِهِ مَعَهُ، فَلَا
 رَشُولَ إِلَّا اللَّهُ ﷻ وَكُلُّ أَبِي وَبَنِي أَبِي وَجَدِي شَقَّ لَهَا رَمِي
 خَنَاجِرِي وَخَلْقِي، وَغَضَبُهُ تَجْرِي فِي فَرَاشِ صَدْرِي، وَفِي
 تَكُونُوا لَنَا وَلَا عَلَيْنَا.

دور ہو جاؤ! اے دھوکہ باز اور بیوقوف! تمہارے اور تمہارے نفوس کی
 درمیان پردہ حائل کر دیا گیا ہے، کیا تم میرے ساتھ بھی وہی سلوک کرنا
 بزرگوں کے ساتھ کر چکے ہو اطمینان رکھو! میں تمہاری باتوں میں آنے والا ہوں
 ہرگز نہیں ہوگا،

مثنیٰ کی طرف جانے والے اونٹوں کے خدا کی قسم آج تک میرے دل
 بھرا ہے جو میرے والد، بھائیوں، اور اصحاب کے قتل عام سے لگا ہوا
 کی رحلت ہی کے داغ کو نہیں جھٹا سکتا تھا کہ میرے والد، بھائیوں اور
 میری دائمی اور سر کے پال سید کر دیئے ابھی اس طرح کی تلخی اپنے حلق میں
 یہ جاگداز غم میرے سینہ میں رہ گئے ہیں، اب تم سے میں یہ چاہتا ہوں کہ تم
 کرو اور نہ ہم سے جنگ کرو،

اسکے بعد امام زین العابدینؑ نے ان اشعار پر اپنا خطبہ تمام کیا:

لَا غَرْوَ إِنْ قُبِلَ الْحُسَيْنُ وَشَيْخُهُ قَدْ كَانَ خَيْرًا مِنْ
 فَلَا تَنْزَحُوا يَا أَهْلَ كَوْفَةِ بِالَّذِي أُصِيبَ حُسَيْنٌ كَالَّذِي
 قَتِيلَ بِسَطْرِ النَّهْرِ نَفْسِي فِدَاءَهُ جَزَاءُ الَّذِي أَرَادَ لَنَا

یہ تعجب کی بات نہیں ہے کہ حسینؑ شہید کر دیئے گئے ان کے والد علیؑ جو کہ حسینؑ سے بہتر تھے، وہ بھی
 والو! خوشی نہ مناؤ! حسینؑ پر جو یہ مصیبت پڑی ہے یہ بہت بڑی مصیبت ہے فرات کے کنارے

فزیب نے کوئی جواب نہ دیا، دو تین بار اس نے یہی سوال دہرایا، تو ایک بار اس نے فرمایا: «هَذِهِ زَيْنَبُ بِنْتُ فَاطِمَةَ بِنْتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ»

یہ زینب بنت فاطمہ بنت رسول ہیں۔

ابن زیاد نے زینب کو مخاطب کر کے کہا: حمد و ستائش ہے اس خدا کے لئے جس نے تم کو قتل کیا، اور تمہارے جھوٹ کو آشکار کر دیا۔

جناب زینب نے فرمایا: حمد و ستائش ہے اس خدا کے لئے جس نے ہمیں اپنے لئے دروغ عزت بخشی، کٹیختوں سے ہمیں پاک رکھا، ذیل تو فاسق ہوتا ہے اور نابکار جھوٹ بولتا ہے ہمیں نہیں بلکہ غیر ایسا ہے۔

ابن زیاد نے کہا: دکھا خدا نے تمہارے اور تمہارے بھائی کے ساتھ کیا کیا؟ زینب نے فرمایا: خدا کی طرف سے میں نے بہتری دیکھا، یہ ایک ہمارا

خدا نے شہادت لکھ دی تھی چنانچہ وہ بڑی قلم گاہ میں جا کر حوکارم ہو گئے ہیں، تمہارے ان کے اور تمہارے درمیان فیصلہ کرے گا اور مجھ سے خون کا قصاص لے گا، اس روز مجھ کا گھر کامیاب کون ہے؟ ابن مرجانہ تیری ملتان سے لوگ میں بیٹھے۔

یہ پہلے سکر عبد اللہ بن زیاد کو غصہ آگیا اور اس نے جناب زینب کو قتل کر دیا۔ عروبن حریت نے اس سے کہا: یہ عورت ہیں اور عورت کی بات کا لوگ برا نہیں مانتے۔ ابن زیاد نے کہا: خدا نے میرے دل کو، حسین اور تمہارے خاندان کے قتل کر دیا۔

یہ سکر جلد زینب سے جین مار کر رونے لگیں اور کہا: قسم اپنی جان کی، تو نے میرے سر کی شاخ کو قطع کر دیا اور میری جڑ کاٹ دی ہے، اگر تیرے دل کا آرام اسی میں تھا تو مجھ کو

۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۱۱۵،

۲۔ اہل بیت ص ۶۷،

ابن زیاد نے کہا: یہ عورت موزون اور ہم آہنگ بات کہتی ہے، اس کا باپ بھی ایسا ہی تھا اور

ابن زیاد نے فرمایا: عورت کو مسجع کوئی سے کیا کلم؟ جو کچھ میری زبان پر جاری ہوا وہ میرے لئے تھا، تو اس شخص پر تعجب تھا یہ کہ جس کو اللہ کے قتل میں آرام ملتا ہے اور یہ جانتا ہے کہ روز جزا

۱۔ قتل کا حکم

اسی وقت عید اللہ بن زیاد نے طلحہ بن علی کی طرف دیکھا اور کہا: یہ کون ہے؟ بتایا گیا: علی

ابن زیاد نے کہا: خدا نے طلحہ بن علی کو قتل نہیں کیا، طلحہ بن علی نے فرمایا: میرے ایک بھائی تھے ان کا نام بھی علی بن حسین تھا انھیں لوگوں

عید اللہ بن زیاد نے کہا: بلکہ اسے خدا نے قتل کیا ہے، طلحہ بن علی نے فرمایا: واللہ تیوفی انھیں حین موتھا والقیلم تحت فی منامھا موت

ابن زیاد نے فرمایا: میرے جواب میں جسارت کے ساتھ بات کر رہے ہو اسکی

۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۲ ص ۱۱۵،

۲۔ اہل بیت ص ۶۷،

جب زینب نے یہ صورت حال دیکھی تو امام جعفر سے پوچھ گئی اور فرمایا: زیادہ کا خون بہا چکا ہے وہاں کافی ہے، خدا کی قسم میں اس سے جدا نہیں ہوں گی اور تو انہیں اس ارادہ کر چکا ہے تو ان کے ساتھ مجھے قتل کر دے۔

ابن زیاد نے کربلا میں زینب اور علی بن حسین کی طرف دیکھا اور کہا: کتنی تعجب! خدا کی قسم یہ عورت اپنے بھتیجے کے ساتھ قتل ہو جائے کو پسند کرتی ہے، میں سمجھتا ہوں کہ میں مر جائے گا۔

علی بن حسین نے اپنی چھوٹی زینب کو مخاطب کر کے فرمایا: بھوپچی مجھے چھوڑ کر جاتا ہوں، پھر ابن زیاد کی طرف رخ کر کے فرمایا:

«أَبَا الْقَتْلِ تَهْدِيَنِي يَا بَنِي زَيْدٍ؟ أَمَّا عَلِيٌّ أَنَا الْقَتْلُ لَنَا عَادَةٌ وَكُنَّا نَقْتُلُ مَا تَوَجَّهَتْ سَوْتٌ سَعَى كَلْبًا، كَيْفَ تُوَيْدِيَنِي جَانِبًا كَيْفَ تُوَيْدِيَنِي جَانِبًا؟»

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

ابن زیاد نے اپنے کانڈوں کو حکم دیا کہ امام زین العابدین اور ان کے اہلبیت کو قتل کر دے۔

امام حسین کا سر مقدس

موتورین نے لکھا ہے کہ ابن زیاد ہاتھ کی چھتری امام حسین کی آنکھوں تک اور ان کے گارہاتھا اور کہہ رہا تھا، کتنے اچھے دانت ہیں،

۱۔ ارشاد شیخ مفید ج ۱ ص ۱۱۶

۲۔ المصنف ج ۲ ص ۶۸

زندگانی کو

عبداللہ نے حکم دیا کہ اہلبیت کو قید خانہ میں واپس لے جاؤ اور قتل حسین کی خبر
کے ذریعہ ہر جگہ پھیل جائے۔
طبری نے نقل کیا ہے کہ جب امام حسین کی شہادت کے بعد سیروں کا قافلہ کوثر میں
نے حکم دیا کہ انہیں قید کر دیا جائے، اہلبیت قید خانہ ہی میں تھے کہ ایک روز قید خانہ میں
پتھر گرا جس سے ایک خط بندھا ہوا تھا، اس میں لکھا تھا، ایک تیز رفتار قاصد شام یزد
پہنچے اور آپ لوگوں کی خبر اس نے یزد تک پہنچائی ہے، قاصد فلاں دن کوثر سے نکلا
میں شام پہنچا اور اتنی مدت اسے واپس میں لگے گی فلاں دن کوثر پہنچے گا، اگر آپ
کی آواز سنیں تو سچ لے کر آپ حضرات کے قتل کا حکم لایا ہے اور اگر گمیر کی آواز نہیں تو
وسلامتی ہے انشاء اللہ۔

ابھی اس قاصد کے پہنچنے میں دو باتیں روز باقی تھیں کہ پھر قید خانہ میں ایک پتھر گرا
سر مونڈنے والا ایک لڑکھو بھی بندھا ہوا تھا، خط میں لکھا تھا کہ اگر کوئی وصیت کرنا
کر دے فلاں دن قاصد پہنچے گا،
وہ دن بھی آگیا لیکن گمیر کی آواز نہیں سنی گئی، یزید نے لکھا تھا کہ سیروں کو دشمنی

عبداللہ کا خط یزید کے نام

عبداللہ بن زید نے یزید کو خط لکھا اور اسے امام حسینؑ اور اہلبیت کی شہادت
۱۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۲۳۸، ۲۔ المہوف ص ۱۷۸

۱۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۲۳۸، ۲۔ المہوف ص ۱۷۸

ابن کثیر نے فرمایا کہ اس کے پیروں کی مدد کی اور کذاب بن کذاب کو قتل کیا۔
عبداللہ بن عقیف ازدی اپنی جگہ سے اٹھے اور کہا: مرجانہ کے بیٹے کذاب و ابن کذاب تو اور
کذاب ہیں اور میرے باپ کو منصب دیا ہے، اے دشمن خدا! تو انبیاء کی اولاد کو قتل کرتا ہے
اور اے نبی سے تقریر کرتا ہے۔

اس کو سکر ابن زیاد و غصہ کے مارے آپے سے باہر ہو گیا پوچھا یہ کون تھا؟
عبداللہ بن عقیف نے کہا: اے دشمن خدا میں ہوں تو اس پاکیزہ خاندان کو قتل کرتا ہے جس سے
دور رکھا ہے اور یہ کان کرتا ہے کہ تو مسلمان ہے؟ واعوذناہا امہاجرین وانصاہا
اس سرکش سے انتقام لیں جس پر رسول نے اپنی زبان سے نفرین کی ہے،

ابن زیاد کا غصہ اور زیاد بھڑک اٹھا، گردن کی رگیں پھول گئیں، کہنے لگا اسے میرے
اس پوتے کے لئے ہر طرف سے سپاہیوں نے ان پر حملہ کیا تو قبیلہ ازد، کے بزرگ،
کا راز دہانی اٹھ کھڑے ہوئے اور انھیں عبید اللہ کے سپاہیوں سے چارایا اور سجدہ کو فو سے

انہوں نے اپنے سپاہیوں کو حکم دیا کہ اس ازدی اندھے کو مکہ کے خدائے اس کا دل بھی اس کی آنکھوں
پر دبا دے۔ میرے پاس لاؤ،

ابن ازد، کو اس کی خبر ملی تو وہ ایک جگہ جیتے ہوئے ان کے ساتھ قابل میں بھی آگئے،
انہوں نے کیلئے متحد ہو گئے،

ابن زیاد کو صور حال کی خبر ملی تو اس نے قابل معزز کو بلایا اور انھیں محمد بن اشعث کی مدد
کا کہا، آخری سانس تک جگمگے،

ابن ازد، نے طوفان کے درمیان شدید جنگ ہوئی کچھ لوگ مارے گئے آخر کار عبید اللہ بن
عبداللہ بن عقیف کا دروازہ توڑ دیا، اور ان کے گھر میں داخل ہو گئے،

عبداللہ بن عقیف کی بیٹی نے باپ کو ان کے قتل سے آگاہ کیا، عبداللہ بن عقیف نے بیٹی سے

خدا کی قسم میں منظر دیکھ کر کانپ اٹھا اور چلایا: اے فرزند رسول! اے
کہف و رقیم سے زیادہ تعجب خیز ہے ما

عبداللہ بن عقیف ازدیؑ

عبید اللہ نے اس خوف سے کہ کہیں کوئی شورش و انقلاب پیدا نہ ہو جائے کہ وہ
جمع ہونے کا اعلان کرایا، منبر پر جا کر خدائی حمد و ثناء کی اور کہا: شکریہ اس خدا کا جس

علا ارشاد شیخ مفید ج ۱ ص ۱۱۱، جسے شک امام حسینؑ کا انکار کتنا ایسا روشن و واضح ہو رہا ہے۔

اپنی طرف متوجہ کرتا ہے اور خدایت یہ ہے اور اسی ملک میں نے یمنیں دکھا کر گئے اسے بیان کیا ہوا ہے

صفحہ ۵۵ پر آیا ہے کہ کوئی صوفی رقم غلامہ سے لے کر اس وقت سی بھی یاد کے ساتھ

نے بھی ہی تھی تو اس کا ذکر کیوں نہیں کیا؟ اگر بھی حیرت سے ملاوت اثر کی آواز سننے تو اسی وقت کو فوس

منظر کو دشمنان ابلیسیت بھی دیکھ کر تھوڑے دگروں ہو جاتے، میں نے فاضل حضرت میں سے اہل نظر سے تباہ

تباہ کر کے منظر جزا فرماتے ہی دیکھا تھا شکار میں حیرت کم کہتا ہے، فوٹو شکاری ذرا جبر و جہل

قسم ان کے چہرے کے حال و ہیبت نے مجھے شہینہ بنایا چہ جائے کہ انہیں قتل کرنے کی سوچنا، جو حیرت

پر تھوڑے دنوں کو نظر نہیں آیا، بالکل ایسے ہی جیسے ماہ میں غلے بھرانے کا تھا ہم ایسے

سے دعا کو تو پہاڑ بھی اپنی جگہ سے ہٹ جائیں، منقر یہ کہ جس طرح اداک کے اقتدار سے

اس اس کے خاطر سے بھی کہاں نہیں ہیں،

اب آپ بڑے شہید اور اپنے زمانہ کے زاہد تھے، ایک جگہ جمل میں اور دوسری

حضرت علی علیہ السلام کی طرف سے جگمگاتے ہوئے کھو بیٹھے تھے اور سجدہ کو فو

دونوں کو عادت میں گزارتے تھے، سفینۃ البحار ج ۲ ص ۱۳۵۔

کہا: اے بنی علاق کے غلام، اے حیرانہ کے بیٹے تجھے عثمان سے کیا مطلب؟ انہوں نے برا بھلا کہا اور اس کی یافتہ انگیزی، خدا لوگوں کا سر پرست ہے وہ ان کے درمیان عدل کے ساتھ فیصلہ دے گا۔

ابو بکر نے اپنے اور اپنے باپ، بزرگ اور اس کے باپ کے بارے میں پوچھا، انہوں نے کہا: خدا کی قسم میں تم سے کچھ نہ پوچھوں گا یہاں تک کہ موت کے گھاٹ اتر جاؤں گے۔ عبداللہ بن عقیف نے کہا: الحمد للہ رب العالمین، میں خدا سے اس وقت سے شہادت کی دعا کرتا ہوں جب میں نابینا ہو گیا تو شہادت کے فیض سے ناامید ہو گیا، خدا کا شکر کہ اس نے مجھے شہادت سے سرفراز کیا اور میری پہلی دعا کی مقبولیت کی سند عطا کی،

ابو بکر نے حکم دیا کہ ان کا سر تن سے جدا کر دیا جائے، اس کے سپاہیوں نے ان کا سر قلم کر کے ان کے در پر چڑھا دیا۔

عبداللہ نے نقل کیا ہے کہ جب سپاہیوں نے انہیں پکڑ لیا اور انہیں غورہ سے قید ازد کو لے لیا تو قید ازد کے سات سو آدمی آپ کے چاروں طرف جمع ہو گئے اور انہیں عبداللہ سے پوچھا کہ ان کے گھر گئے کیسے کہیں جب سورج غروب ہو گیا، رات ہو گئی تو عبداللہ نے ان کے حکم صادر کیا اور ان کی گردن مار دی۔

ابن عبداللہ

عبداللہ حضرت علیؓ کے شیعوں میں سے ایک بوڑھے آدمی تھے، ابن زیاد نے انہیں اپنے پاس لے لیا اور انہیں شہید کر دیا۔ اسی طرح بھرہ میں بھی اس نام کی ایک جگہ تھی اور جرجس میں بھی اس نام کا ایک قریہ تھا۔

۱۔ تاریخ الخلفاء، ج ۲، ص ۲۸۸، بحوالہ تاریخ ۵۵۹ھ

۲۔ تاریخ الخلفاء، ج ۲، ص ۲۸۸، اس روایت کے بوڑھے کا جرات مند زاد دیر انداز قلم چند چیزوں کا موجب ہوا:

کہا: درو! نہیں میری تلوار مجھے دید وادہ تلوار سے اپنا دفاع کرتے جاتے اور جاتے تھے

آنا ابن ذی الفضل عقیف الطاہر عقیف شہیدی و ابن ام سلمہ
کنم دارع من جفیعکم وحاسیر و بسطل جذلکھ مشاعر
راوی کہتا ہے: عبداللہ بن عقیف کی بیٹی اپنے والد سے کتنی بھی لے لے کاش میں آپ کے ساتھ پھر رسولؐ کی شہادت پاک کے قاتلوں سے جنگ کرتی،

عبداللہ بن زیاد کے سپاہیوں نے معاشرہ میں بیکر عبداللہ بن عقیف پر حملہ کیا، بیٹی کی ہدایت کے مطابق ان سے جنگ کر رہے تھے جس طرف سے ان پر حملہ ہوتا بیٹی ہمارے طرف سے حکم کر رہے ہیں، آخر کار وہ عبداللہ بن عقیف کے نزدیک آ گئے، بیٹی چلائی بابا کو چاروں طرف سے پھیر رہا، کوئی نہیں ہے جو ان کی مدد کرے،

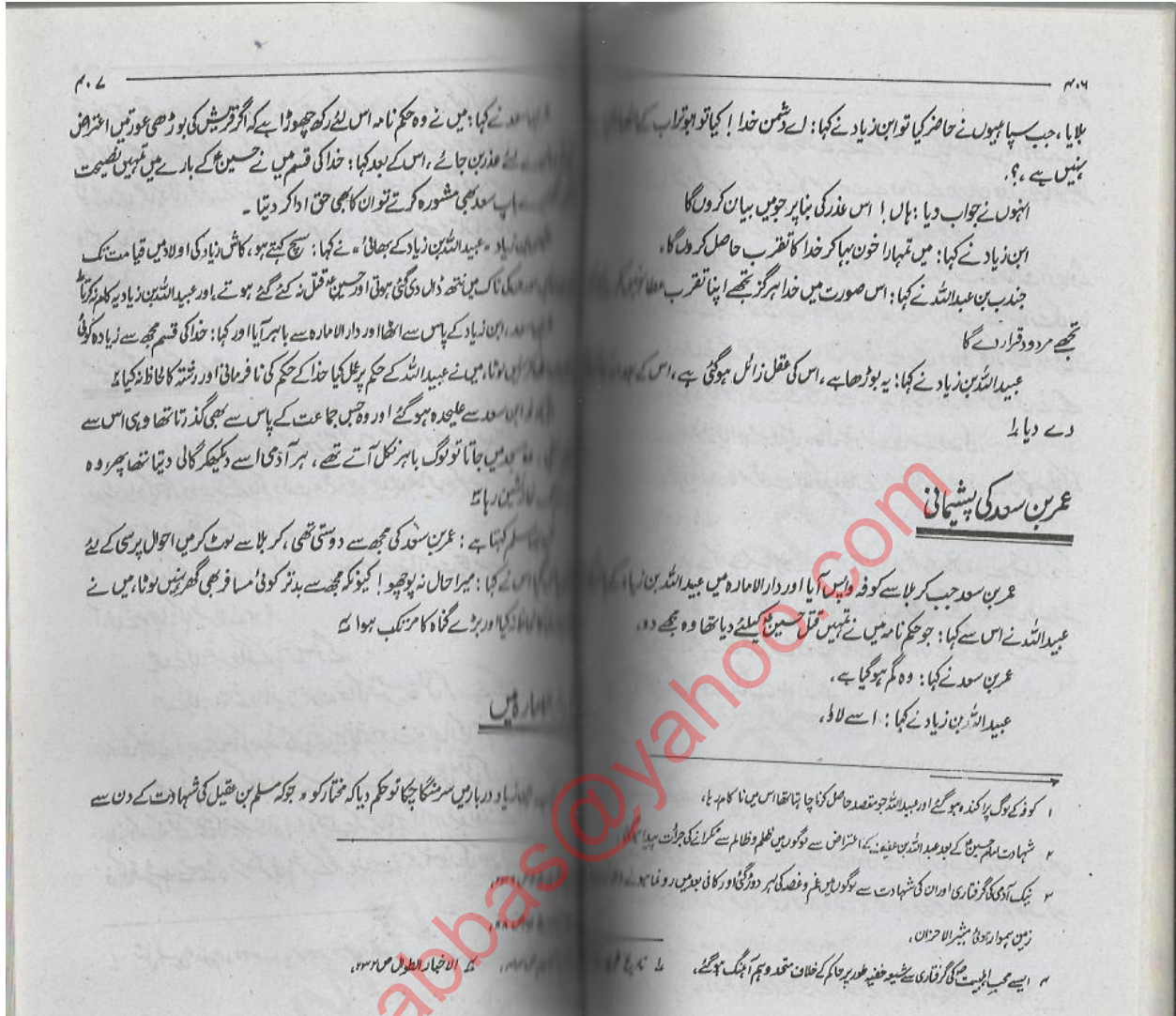
عبداللہ بن عقیف اپنی تلوار کھومار رہے تھے اور کہہ رہے تھے:

أقسم لو یفسخ لی عن بصری ضاق علیکم مؤردی وقعدت
مقتدریکم انی کفرا کر کے عبداللہ بن زیاد کے پاس لایا گیا، عبداللہ نے اسے شکر ہے خدا کا کہ اس نے تجھے سوا کیا۔

عبداللہ بن عقیف نے کہا: اے دشمن خدا مجھے خدا نے کس طرح سوا کیا ہے؟ خدا انہیں صبح ہوتے ہی تو میں تمہارا جینا دوسرے کر دیتا، ابن زیاد نے کہا: عثمان کے بارے میں تمہارا کیا خیال ہے؟

۱۔ میں بافضل اور پاک شہادت عقیف کا بیٹا ہوں، عقیف میرے والد ام حاکم کے بیٹے ہیں، میں تمہارا سر پرست اور تاراج کرنے والے سپہ سالاروں کو زمین پر نہ دوں گا،

۲۔ قسم کھاتا ہوں کہ میں اندھانہ ہوتا تو تمہارا جینا دوسرے کر دیتا،



قید خانہ میں تھے۔ دربار میں حاضر کیا جائے، جب قصر میں وارد ہوئے تو دیکھا کہ حالات یہ ہیں گویا انھیں امام حسینؑ کا سر دکھایا گیا تھا، مختار بہت روئے، ان کے اور ایندیا کے توائیں میں بھی ہوئی، مختار نے تندہ میں اسے جواب دیا، ان زیادہ کو قتل کیا، اس نے کہا واپس قید خانہ میں جاؤ، بعض نے لکھا ہے کہ ان زیادہ نے مختار کے منہ پر تازیانہ مارا اس سے متاثر ہوئی۔

مدینہ میں خیر شہادت

جب ابن زیاد امام حسینؑ کے سر کو زینہ کے پاس بھیج چکا تو اس نے عبدالملک مدینہ روانہ کیا تاکہ وہ مدینہ کے حاکم وقت "عمر بن سعید بن العاص" کو یہ خبر پہنچا سکے۔ چونکہ وہ اسے قتل حسینؑ کی شہادت دے، عبدالملک کہتا ہے: میں گھوڑے پر سوار ہو کر مدینہ کی سمت چلا مدینہ پہنچا تو آدمی نے پوچھا: کیا خبر لائے ہو؟ میں نے کہا: خبر حاکم کے پاس سنو گے، اس نے کہا: انا للہ وانا الیہ راجعون، خدا کی قسم میں قتل کر دیے گئے ہیں، عمارت کہتا ہے: جب میں حاکم مدینہ کے پاس پہنچا تو اس نے پوچھا: کیا خبر ہے؟ میں نے کہا: امیر کیلئے باعث مسرت خبر ہے، حسینؑ کی قتل کر دیے گئے ہیں، جاؤ لوگوں کو قتل حسینؑ کی خبر سننا دو! وہ کہتا ہے کہ میں باہر آیا اور بلند آواز سے مل جل کر شہادت میں کی خبر سن کر نبیؐ کا شہم کے گھر وں سے تو مار ڈھکیوں کی آواز بلند ہوئی۔

مدینہ میں امام حسینؑ اور عبداللہ بن جعفر کے بیٹوں کی شہادت کی خبر پہنچی تو کچھ لوگ تعزیت لکھنے لگے، یہی روایتیں جیسے ہمارے ہاں ہیں، جگہ مذہب میں قید خانہ میں نے قید خانہ میں لکھا ہے، ترجمہ نمبر ۱۲۱، ۱۲۲۔

خبر

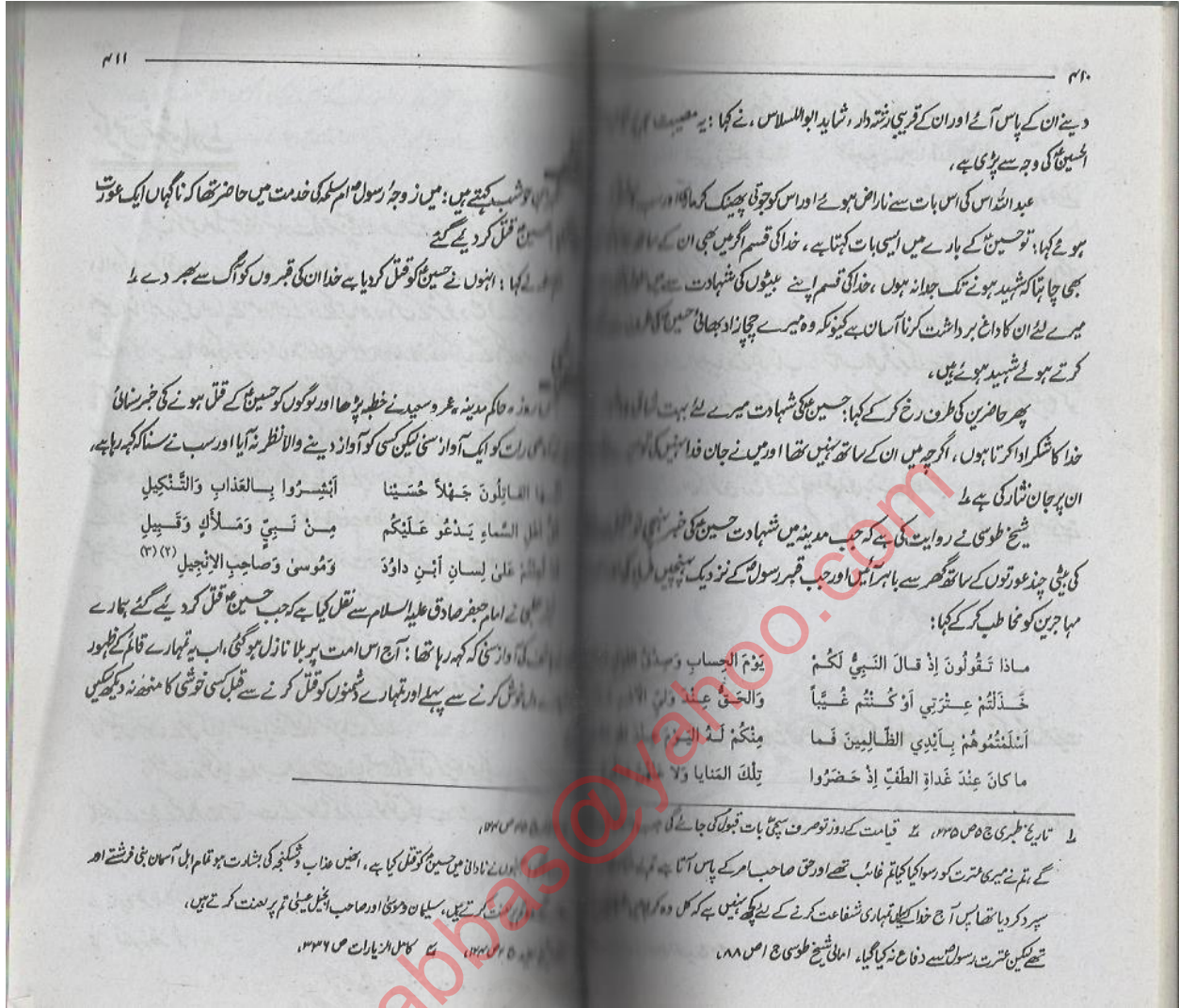
مدینہ میں امام حسینؑ اور عبداللہ بن جعفر کے بیٹوں کی شہادت کی خبر پہنچی تو کچھ لوگ تعزیت لکھنے لگے، یہی روایتیں جیسے ہمارے ہاں ہیں، جگہ مذہب میں قید خانہ میں نے قید خانہ میں لکھا ہے، ترجمہ نمبر ۱۲۱، ۱۲۲۔

قید خانہ میں تھے۔ دربار میں حاضر کیا جائے، جب قصر میں وارد ہوئے تو دیکھا کہ حالات یہ ہیں گویا انھیں امام حسینؑ کا سر دکھایا گیا تھا، مختار بہت روئے، ان کے اور ایندیا کے توائیں میں بھی ہوئی، مختار نے تندہ میں اسے جواب دیا، ان زیادہ کو قتل کیا، اس نے کہا واپس قید خانہ میں جاؤ، بعض نے لکھا ہے کہ ان زیادہ نے مختار کے منہ پر تازیانہ مارا اس سے متاثر ہوئی۔

مدینہ میں خیر شہادت

جب ابن زیاد امام حسینؑ کے سر کو زینہ کے پاس بھیج چکا تو اس نے عبدالملک مدینہ روانہ کیا تاکہ وہ مدینہ کے حاکم وقت "عمر بن سعید بن العاص" کو یہ خبر پہنچا سکے۔ چونکہ وہ اسے قتل حسینؑ کی شہادت دے، عبدالملک کہتا ہے: میں گھوڑے پر سوار ہو کر مدینہ کی سمت چلا مدینہ پہنچا تو آدمی نے پوچھا: کیا خبر لائے ہو؟ میں نے کہا: خبر حاکم کے پاس سنو گے، اس نے کہا: انا للہ وانا الیہ راجعون، خدا کی قسم میں قتل کر دیے گئے ہیں، عمارت کہتا ہے: جب میں حاکم مدینہ کے پاس پہنچا تو اس نے پوچھا: کیا خبر ہے؟ میں نے کہا: امیر کیلئے باعث مسرت خبر ہے، حسینؑ کی قتل کر دیے گئے ہیں، جاؤ لوگوں کو قتل حسینؑ کی خبر سننا دو! وہ کہتا ہے کہ میں باہر آیا اور بلند آواز سے مل جل کر شہادت میں کی خبر سن کر نبیؐ کا شہم کے گھر وں سے تو مار ڈھکیوں کی آواز بلند ہوئی۔

مدینہ میں امام حسینؑ اور عبداللہ بن جعفر کے بیٹوں کی شہادت کی خبر پہنچی تو کچھ لوگ تعزیت لکھنے لگے، یہی روایتیں جیسے ہمارے ہاں ہیں، جگہ مذہب میں قید خانہ میں نے قید خانہ میں لکھا ہے، ترجمہ نمبر ۱۲۱، ۱۲۲۔



اللہ نے عربین عبدالمعزیز سے روایت کیا ہے کہ اس نے کہا: اگر میں ان لوگوں میں سے ہوتا
تو میں ان کو قتل کیا ہوتا اور خدا مجھے بخش دیتا اور جنت میں جانے سبب کی اجازت دیدیتا تو میں
ان کی وجہ سے جنت میں داخل نہ ہوتا۔

مکہ میں خیر شہادت

جب مکہ میں امام حسینؑ کی شہادت کی خبر پہنچی اور عبداللہ بن زبیر اس سے آگاہ ہوا تو
دیا اور کہا: عراق والے بے وفاء اور کوفہ والے عراق کے لوگوں میں سب سے بدتر ہیں،
انہیں اپنا امیر بنائیں اور اپنے امور ان کے حوالے کریں اور وہ دشمن کے شر کو دفع کرنے میں
گے اور بنی امیہ نے اسلام کی خوشنیاں مٹا دی ہیں انہیں دوبارہ زندہ کریں گے، لیکن جب
پاس پہنچے تو ان کے خلاف جو گئے اور انہیں قتل کر دیا کوفہ والے یہ چاہتے تھے کہ وہ
میں ہاتھ دیدیں، لیکن جیٹا نے ذلت کی زندگی پر عزت کی موت کو ترجیح دی اس وقت
کے قاتلوں کو سزا اور ان کے قتل کا حکم دینے والے پر لعنت کر کیا اس مصیبت کے بعد
ہے کوئی بنی امیہ کے عہد و پیمان پر باقی رہے گا یا ان بے وفاء اور بھانکاروں کے عہد و پیمان پر
کی قسم سچ، لوگوں کو روزہ رکھتے اور راتوں کو عبادت خدا میں مشغول رہتے تھے اور ان کے
بر نسبت رسولؐ سے نزدیک تھے، قرآن سننے سے، مکیستی نہیں اور خوف خدا کا بے جا
مشغول نہیں رہتے تھے، روزہ کی بجائے میسر کی نہیں کرتے تھے، شب بیداری کے عوض
آواز نہیں سننے سے، ذکر خدا کی جگہ ہنسیوں سے کھیلنے اور شکار کرنے میں وقت نہیں گزارتے تھے
کہ انہیں انہوں نے قتل کر دیا، سو یہ اپنے کیے کی سزا پا لیں گے۔

زحشری نے قتل کیا ہے کہ جب عبید اللہ بن زیاد حسینؑ کو قتل کر چکا تو ایک بار
نابکار کے بیٹے کسی طرح اس امت کے رسولؐ کے فرزند کو قتل کیا ہے۔

۱۔ تاریخ طبری ج ۵ ص ۲۳۹

۲۔ فتوح زخار ص ۵۴۳

۱۔ اسامی اور زمین کو پیدا کرنے والی اللہ، اور مہیاں و پوشیدہ چیزوں کے جاننے والے تو ہی اپنے
ان چیزوں کے سلسلے میں فیصلہ کرے گا جس میں انہوں نے اختلاف کیا ہے۔

قیس نے کہا: کہ قیامت کے دن میں نے اپنے والد، اور والدہ،
خدا سے ان کا شفاعت کریں گے اور وہ اسے ماں باپ بھی کہیں گے اور تمہاری شفاعت میں
یہ بات سنکر عبداللہ کو غصہ آگیا اور اسیوں وہاں سے اٹھادیا۔
امام محمد باقر علیہ السلام سے منقول ہے کہ کوئی چار مجلسیں، مسجد اشعث، مسجد
محدث شیت بن ربیع، قریب حسین بن علی کی خوشی میں بنائی گئی تھیں۔

ادبی زندگی

جب حسن بصری کو اسامہ بن ابی شہادت کی خبر ملی تو بہت رونے لگا اور کہا: یہ

کوفہ سے شام تک

انہوں نے قرین قیاس کو بلایا تاکہ وہ کوہِ بلا کے تمام شہیدوں کے سروں کے ساتھ اٹھ جائیں
 اور انہیں سواہرِ پاکستان نام سے جلائے گا اور ابو بردین عوف از دی اور طارق بن ابی
 لیث کے ساتھ بھیجا جائے گا

میں نے جواب دیا کہ میں نہیں جانتی،

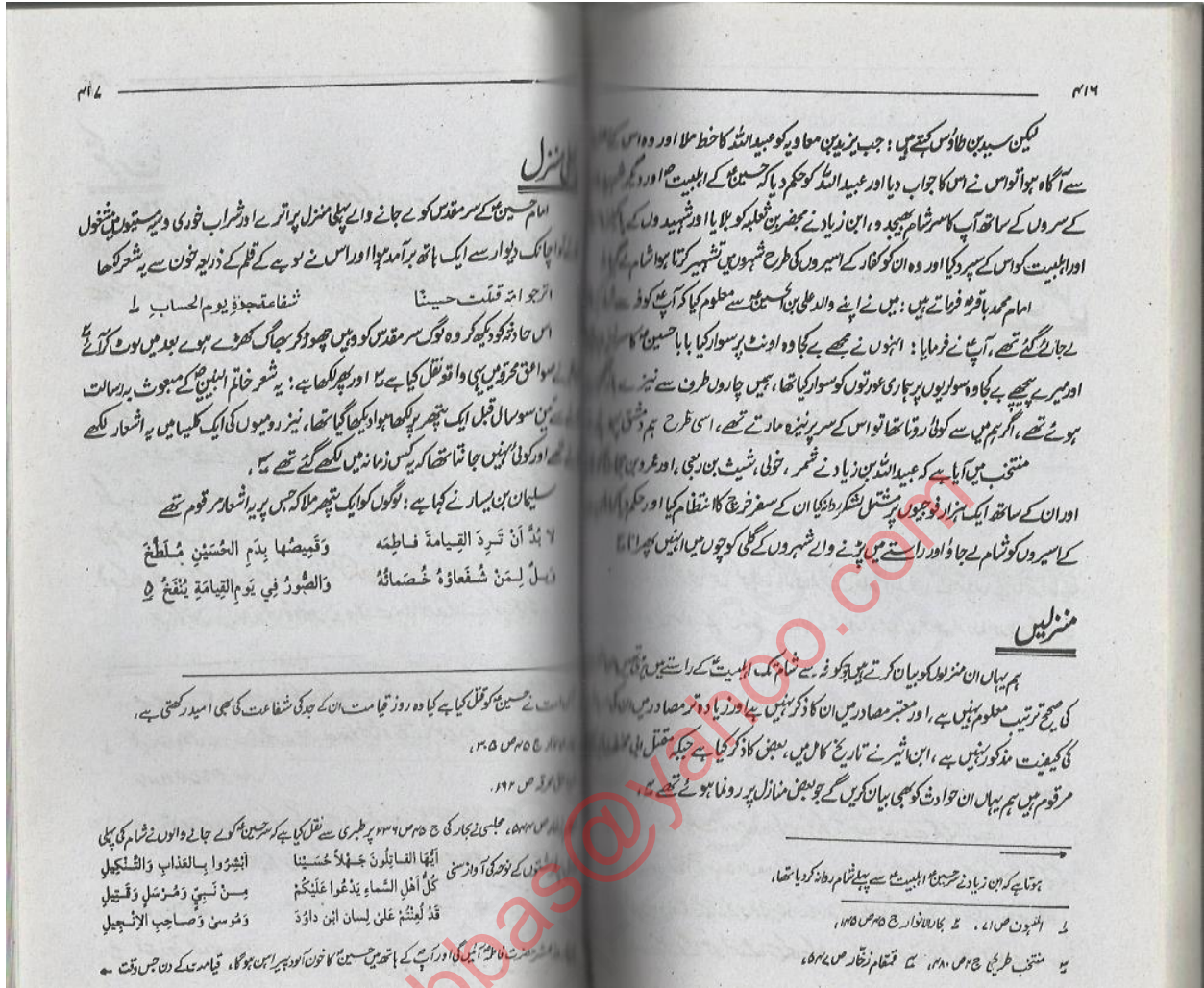
اور ابن سعد نے اہلبیت سے پہلے مرصعین کو فوج بھیج دیا تھا اسی طرح عیدائے شریف کو اہلبیت سے پہلے اور اہلبیت کو نبویوں کے بعد کیا جو، جیسا کہ شیخ مفید کی عبارت سے سمجھ میں آتا ہے،

۱۱۸: شائع شدہ قسطوں میں ۱۱۸: منقول ہے کہ میر تقی میر نے زیادہ تر سربازوں کے پاس بھیجے کہ بدو کو گمراہی کے لیے
 اور ان کی طرف سے ملے اس وقت ہندوؤں کے ساتھ بھارتیوں کی طرف سے ہندوؤں کو روکا جائے اور
 ان کی طرف سے ملے اس وقت ہندوؤں کے ساتھ بھارتیوں کی طرف سے ہندوؤں کو روکا جائے اور

ریاض الاحزان ص ۳۰

ۛ بحارالانوار ج ۛۛ ص ۛۛۛ،

۵۴ انساب الاشراف ج ۳ ص ۲۷۷



تکریب

کامل بہائی میں آیا ہے جب وہ امام مہینہ کا سر کوڑے سے باہر لائے تو اپنی زیادتی کی طرف لوگوں کو عرب کے قبائل کی طرف سے ڈھاکا ہو سکتا ہے ابھی ان میں کچھ دینی غیرت باقی ہو اور وہ سے سر حسین چھین لیں۔ اسلئے وہ اہلی راستے سے نہیں بلکہ غیر ممانوس راستے سے اپنا سفر کرنا چاہئے۔ ابو جعفر نے نقل کیا ہے کہ وہ حصا صلیب کے مشرق سے سر مقدس لے گئے اور کچھ دور اور وہاں کے حاکم کو اپنے آنے کی خبر دی تو اس نے بہت سے لوگوں کو جھنڈوں کے ساتھ اس کے لئے بھیجا اگر کوئی پوچھا تھا کہ کس کس سے تو وہ جواب دیتے خارجی کا ہے۔

ایک نصرانی نے سر دیکھا اور جب اسے مذکورہ جواب سنا تو خود سے کہا: حقیقت یہ ہے کہ لوگ بیان کر رہے ہیں یہ سر فاطمہ کے کتے جگر حسین بن علی کا ہے میں تو کوڑوں میں تھا، انہیں تمام نصرانیوں کو جب اس حادثہ کی خبر ملی تو انہوں نے اپنے ناقوس کو توڑ دیئے اور کہنے لگے: قوم کے عصیان سے کہ جس نے اپنے رسول کے فرزند کو قتل کر دیا ہے، تیری پناہ چاہتے ہیں، جب کوئیوں نے یہ حال دیکھا تو انہوں نے وہاں سے بیابانوں کے راستے کوچ کیا۔

مشہد النقطہ

سر مقدس کو لے جانے والے اثناء راہ میں اس منزل پر پہنچے اور یہاں ایک بہت بڑے پتھر پر سر مقدس سے ایک قطرہ خون اس پتھر پر چمک گیا اور اس کے بعد عاشور کے روز ہر سال اس پتھر پر لکھا گیا کہ اس پتھر کے چاروں طرف جمع ہو جاتے تھے اور امام مہینہ کی مجلس عزاء پر آکر تے

یہ وہی ملک بنی روان کے زمانہ تک اپنی جگہ تھا اس کے حکم سے اسے منتقل کر دیا گیا یہ معلوم نہیں کیا گیا کہ، یادگار کے طور پر اس پتھر کی جگہ ایک عمارت بنادی جسے نقطہ یا مشہد النقطہ کہتے ہیں۔

ادوی الخلیفہ

دورات کے وقت اس منزل پر اترے تو ان کے کان میں رات بھر جنوں کا نوحہ کی آواز آتی رہی

وَأَسْعَدْنَ بِسُوحِ لَيْسَاءِ الْهَامِيَاتِ
وَالْمُحَنِّاتِ حُسَيْنًا عَظُمَتْ تِلْكَ الرِّزَايَاتِ
وَيَلْبِسْنَ رِيَابَ السُّودِ بَعْدَ الْقَضِيَّاتِ

۱۲۶۲ھ

یہ وہی ملک بنی روان کے زمانہ تک اپنی جگہ تھا اس کے حکم سے اسے منتقل کر دیا گیا یہ معلوم نہیں کیا گیا کہ، یادگار کے طور پر اس پتھر کی جگہ ایک عمارت بنادی جسے نقطہ یا مشہد النقطہ کہتے ہیں۔

یہ وہی ملک بنی روان کے زمانہ تک اپنی جگہ تھا اس کے حکم سے اسے منتقل کر دیا گیا یہ معلوم نہیں کیا گیا کہ، یادگار کے طور پر اس پتھر کی جگہ ایک عمارت بنادی جسے نقطہ یا مشہد النقطہ کہتے ہیں۔

مراد اولیاء علی ۱۲۶۸ھ

۱۲۶۸ھ

۱۲۶۸ھ

⑤ موصول

المصیین

موصول پر پہونچنے تو منصور بن ابی اس نے شہر کو بجائے کا حکم دیا اور شہر کی سجاوٹ کے بعد اس
کا حکم کو اپنے پونچنے کی اطلاع دی اس نے شہر کو سنوارنے کا حکم صادر کیا اور کچھ لوگوں کو شہر کا
لوگ کہتے تھے بے شک یہ حسین بن علی کا سر ہے کہ جس کو یہ خارجی بتا رہے ہیں
کر کے زیارت گاہ بنائے اور حاکم شہر کو تہ تیغ کرنے کی غرض سے چار ہزار آدمی جنگ
ایک روایت میں آیا ہے کہ انہوں نے کہا:

« تَبَيَّنَ لِقَوْمٍ مَقَرُّوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ اَضْلَالَةٌ بَعْدَ هُدًى ؟ اَمْ شَكَّ بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ »
جب حکومت کے آدمی علوم کے ارادہ سے آگاہ ہوئے تو انہوں نے اپنا راستہ بدل دیا
و جیل سجاوٹ کی طرف چلے یہاں تک کہ مصیین پر منزل کی ۔

وَاللّٰهُ اَوْحٰى اِلَيْهِ جَلِيْلُ
كَانَ لَمْ يَجْعَلْكُمْ فِي الْاٰمَانِ وَشَوْكُ
لَكُمْ فِي لَقْنِ يَوْمِ الْمَعَادِ عَوِيْلُ

موصول شہر و قلعہ شہر ہے جو کہ حاکم کے کارے واقع ہے اس شہر کے پیچ میں جرجیس پہاڑ کی
اے وہ لوگ جو ایمان لائے کہ بعد کا فرعون کے کیا بدلتے کے بعد گلا اور تینوں کے بعد تک
موصول کو پہونچنے تک نہیں کہتے ہیں بخار و مصل کے درمیان ایک قلعہ ہے جس کے پیچ میں ندی بہتی ہے
سبھا جزیرہ کے نواح میں ایک شہر ہے وہاں سے مصل نصیبین تک تین دن کا راستہ ہے، قلعہ زخار ص ۱۱
نصیبین جزائر عرب میں سے ایک جزائر ہے، مصل سے شام جانے والے راستہ پر واقع ہے اور مصل سے پہاڑ تک

۱۔ کھیل دھار کے کنارے ایک بہت بڑا شہر تھا لیکن اب اس شہر کا کوئی نشان نہیں ہے، جو اہل علم
۲۔ جہنہ موصول کے نواح میں ایک علاقہ ہے جو دھار کے کنارے واقع ہے یہاں سے موصول تک ایک منزل کا
ج ۱ ص ۱۳۴

۱۲۸۸ ج ۵ ص ۵۵۸ ۱۲۸۸ ج ۵ ص ۵۵۸

۱۲۸۸ ج ۵ ص ۵۵۸ ۱۲۸۸ ج ۵ ص ۵۵۸

دعوات

یہ لڑکا مضمون دیکھ کر گھبراؤ وغیرہ کی بجائے کا حکم دیا، استقبال کے لئے خود بھی شہر سے باہر
 آئے۔ سید کا کوئینہ پرنسنگ کے باب المعین سے داخل ہوئے اور مسر مقدس کو شہر کے میدان
 کو اس کے ماشے کے لئے نصب کئے رکھا، اس شہر میں بھی بعض لوگ خوشیاں منا رہے تھے
 رسول سے میل انکس رواں تھا، خوشی منانے والے گہرے تھے کہ یہ خارجی کا مسر ہے جس
 کو آتا تھا،

ان کو اسی شہر میں ٹھہرے اور صبح کو حلب کی طرف چلے اس وقت علی بن الحسین نے روتے ہوئے

بَاتَ مِنْ فَجْئَةِ الزَّمَانِ يُسَاجِي
ضَائِعَ بَيْنَ غُصْبَةِ الْأَعْلَاجِ

نام دعا کا کوئی مقام نہیں ملا ہاں مقل کی کتابوں میں اس کا ذکر ہے،

میرا لہجہ لکھ کر کیا کوئی غلط فہمی نہ پھیلے اور زمانہ کے حوادث پر نرمہ سنجی کرتا ہے میں

4500000

② عین الوردہ

صبح کو قافلہ عین اوردہ پہنچا اور وہاں کے حاکم کو آگاہ کیا اس نے او شہر و اہل
پھر لے کر اجازت دیدی اور دیر ملے ہوئے کہ سب کو باب الوہین سے شہر میں لایا جائے سر مقدس کو
میں نیزہ بلند کیا اور دہر سے عرصہ تک گولوں کے دیکھنے کیلئے وہیں رکھا بعض لوگ خار
منار ہے تھے اور بعض رو رہے تھے ۔

①

اس صورت حال کو دیکھ کر ابن زیاد کے مامور امام حسینؑ اور دیگر شہیدوں کے سر کاٹ کر انہیں ہوائے کربلا پہنچا دیے۔

④ جو حق ہے

قا قلعہ رتو سے گذر کر بوسق نامی مقام پر پہنچا وہاں سے چل کر خواتن کا طرف چلا آیا یہاں تک
 کہ اس علاقہ کے بڑے کھوس ہر مل سے ایک شہر شہر ہے، حران و نصیبین کے درمیان واقع ہے، نصیبین سے حران
 ہے اسی جگہ کو بنی اور شامیوں کے درمیان میں انور کا واقعہ ہوا تھا، نفسا مہوم ص ۵۶۶، فتح البلدان ص ۱۸۱
 رتو ایک شہر کا نام ہے جو قوافل کے کارے واقع ہے، بلا جبر یہیں شکار ہوتا ہے یہاں سے حران تک
 ماحولہ ص ۵۸

۱۰ جیسی کا اطلاق بہت سی جگہوں پر ہوتا ہے۔ مثلاً کہ تواریخ میں سے ایک بڑا کاؤں ہے، جہاں میں کے قریب
۱۱ ہے مگر کے نواح میں ایک گاؤں ہے، ار کے قریب میں سے ایک گندہ کا چوبھی کا اطلاق ہوتا ہے، اور
۱۲ ہر شے میں اس گندہ کے خوش رنگ اور میں سے ہوتا ہے وہ ایک گندہ کا ہے، گندہ کے قریب ہے، اور اطلاق ہے

اللَّهُمَّ الزَّهْرَاءُ، أَنَا الْمُتَّقُونَ بِكَ زَيْلًا، أَنَا الْمُظْلَمُونَ، أَنَا الْغَطَّاشَانِ ۱» یہ جملہ کبہ کو خاشا

۱۱ حلب

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

راہب نے امام حسینؑ کے منہ پر منہ رکھ دیا اور کہا: آپ کے منہ سے اس وقت تک منہ نہیں

سردیس چرکے گا جو اوروں کا: میرے جد کا دین اختیار کر لو،

راہب نے کہا: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» اس کے

ہونے کو ان لوگوں نے راہب سے حسینؑ لیا اور اپنی راہ لی جب واہی کے بیچ میں پہنچے تو

راہب نے کہا: «جو راہب سے لئے تھے» پتھر بن گئے ہیں۔

۱۲ قنبرین

قنبرین نے قنبرین میں قنبرین کیا ہے کہ ابن زیاد کے حامی اور امام حسینؑ کا سر کیے قنبرین

آئے ایک راہب اپنے صومعہ سے باہر نکلا اور دیکھا کہ سر سے آسمان تک نور کا سلسلہ ہے۔

راہب ان لوگوں کے قریب آیا اور انہیں دس ہزار درہم دیکر سر کو اپنے صومعہ میں لے گیا

بعد ایک ہفتہ کی آواز سنئی، خوش نصیب ہونے اور خوش قسمت ہے وہ جو اس سر کی تمنا

ہے،

راہب نے سراختایا اور کہا: اے اللہ بحق یہی ہے اس سر کو اجازت مرحمت فرما کہ

ہو جائے اس وقت سر مقدس گویا ہوا فرمایا: اے راہب تم کیا چاہتے ہو؟

راہب نے کہا: آپ کون ہیں،

سر مقدس نے آواز آئی: «أَنَا ابْنُ مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفَى وَأَنَا ابْنُ عَلِيٍّ النَّوَصَرِ

ح۔ مقام زخار ص ۵۲۹ ج ۲،

قنبرین شام میں ایک شہر ہے جو کہ حلب و دمشق کے درمیان واقع ہے وہاں ایک پہاڑ ہے کہتے ہیں کہ

کا قبر ہے اس پر اونٹ کے پاؤں کے نشان نظر آتے ہیں، عجم البلدان ج ۳ ص ۴۰۳،

کہا: تم تہیں پانی نہیں دیں گے کہ تم نے حسینؑ اور ان کے اصحاب کو پراساں شہید کیا ہے،

۱۲

۱۲۔ کفر طالب سے کوچ کیا اور سپور پہنچے اس منزل پر بھی امام زین العابدینؑ کے کچھ اشعار لکھ کر ان کے چاہنے والوں میں سے ایک بوڑھے نے سپور کے لوگوں کو جمع کیا اور کہا: فتنہ برپا کرنے کے لیے شہر کی طرح یہاں سے گزر جانے دو، جو انوں نے اس کی بات نہ مانی اور اس علاقہ کے لوگوں کو لکھ لیا اور اس کو لکھ کر جنگ کے لئے تیار ہو گئے۔ بعض لوگ مارے گئے، بعض ام کلثومؑ نے دعا کی کہ خدا ان لوگوں کے رزق میں ترقی عطا کرے اور ان کے پانی کو گوارا کرے۔ انہیں غلاموں کے شر سے محفوظ رکھے،

۱۳۔ یہاں امام زین العابدینؑ نے کچھ اشعار پڑھے ان میں سے ایک یہ ہے:

وَالْأَشْوَالُ عَلَى الْأَقْتَابِ عَارِيَةٌ
وَالْمَرْوَانُ بِسَرَى تَحْتَهُمْ نُجْبَةٌ

۱۴

۱۴۔ سپور سے حجاز گئے وہاں بھی انہیں بستی میں داخل نہیں ہونے دیا گیا۔

۱۵۔ امام زین العابدینؑ نے یہ نام نہیں ملا کہ یہ کن ارباب حجاز نے شام کی لڑائی پڑنے والی منزلوں کے درمیان اس کا ذکر کیا ہے۔

۱۶۔ انہیں پر سوار ہونے پر ان کا روانہ شیب سوار پر سوار ہیں، اور اس کا کرج ۵ ص ۱۲۰

۱۷۔ ان لوگوں والا شہر تھا اس میں بہت سے بازار تھے چاروں طرف مضبوط دیوار بنی ہوئی تھیں، جس سے ایک دن کی پانچ روز کی سافٹ پروا تھی ہے، حج المجلد ج ۲ ص ۱۲۰

۱۸۔ ان کے سامنے بھی اسی کتاب کی نقل کتاب سے روایت کی ہے کہ میں حج کو گیا تھا جب حجاز پہنچا تو وہاں

۱۳ معرۃ النعمان

سر مقدس کو لے جانے والے جب معرۃ النعمان نامی مقام پر پہنچے تو وہاں کے باشندے خاطر، تواضع کی، یہ لوگ چند گھنٹہ وہاں رہے اور وہاں سے شہر کی طرف روانہ ہوئے،

۱۴ شہر

یہ افراد جب شہر پہنچے تو ایک ضعیف العمر آدمی نے کہا: یہ سر جو تمہارے ساتھ ہے اس پر، اس جگہ کے باشندوں نے آپہنچیں مہدی کا بیٹا کی طرح بھی اپنے علاقہ میں داخل ہونے دیں گے، لہذا یہ وہاں توقف نہ کریں جلتے ہی رہے یہاں تک کہ کفر طالب پہنچے،

۱۵ کفر طالب

کفر طالب والوں نے بھی انہیں شہر میں داخل نہیں ہونے دیا، سر مقدس لے جانے والے

۱۶۔ جب وہ دمشق پہنچے تو وہاں ایک شخص نے انہیں لکھ کر ان پر ایک طرفت لکھی: ﴿وَلَا تَقْلِبْ عَظْمَ الْفَالِقِ﴾ اور دوسری طرف ﴿وَسَيَعْلَمُ الْغَوَّيْنَ﴾ ﴿ظَلَمُوا أَيْ خَنَقُوا بَنِي قُلَيْبٍ﴾

۱۷۔ معرۃ النعمان حجاز کے درمیان ایک جگہ ہے اس کا یہ نام، نعمان بن بشیر رضی اللہ عنہ ہے، کیونکہ ان کا کرج یہاں واقع ہے، لیکن صحیح یہ کہ ان کا قبر انہیں ہے، حج المجلد ج ۲ ص ۱۲۰

۱۸۔ شہر عمرو سے نزدیک شام میں ایک علاقہ ہے اور وہاں سے حجاز کا ایک دن کا سفر ہے، راجعہ المجلد ج ۲ ص ۱۲۰

۱۹۔ کفر طالب عمرو و حجاز کے درمیان ایک شہر ہے یہاں پہنچنے کا پانی بدش کے پانی سے مخصوص ہے، حج المجلد ج ۲ ص ۱۲۰

انبیاء اور سرسپر

آپ کہیں تو زمین کو اسی طرح لرزادوں اور ان کے ساتھ وہی سلوک کروں جو قوم لوط

نے فرمایا: میں نہیں چاہتا کہ ان کو اس دنیا میں سزا دی جائے میں خدا کے سامنے ان کے ساتھ

کروں گا، اور قیامت کے دن ان سے دشمنی کروں گا،

کہا کہ میں قتل کرنے کے لئے فرشتوں نے ہم پر حکم کر دیا ہے میں چلا یا الامان الامان یا

فرمایا: «إِذْهَبْ لَا غَرْفَ لَكَ» جاؤ خدا تمہاری مغفرت نہ کرے!

مشق

حال وہ طاہریت رسول کو نورانی سروں کے ہمراہ دمشق کے نزدیک آئے دروازہ دمشق کے

مقام پر پہنچے اور اس وقت پر کچھ شراب پیتے تھے، ایک رات

نوشی اور بدستبوی میں ڈوبے ہوئے تھے، لیکن اس رات میں نے شراب نہیں پی تھی، رات کا

سختا آدھی رات ہوئی تو میں نے شدید نور دیکھا، گویا آسمان کے دروازے کھل گئے تھے،

نوح، ابراہیم، اسماعیل، اسحاق، اور حضرت محمد مصطفیٰ و جبریل فرشتوں کی جماعت

پر اترے ہیں، پہلے جبریل نے سر کو صندوق سے باہر نکالا آغوش میں لے کر اس کو بوسہ دیا

ایسا ہی کیا جب رسول کی باری آئی تو آپ بہت روئے دوسرے انبیائے آپ کو تسلیم

جبریل نے عرض کیا اے اللہ کے رسول! بازی تمہاری کا حکم یہ ہے کہ اس امت کے بارے میں

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

نقل کیا ہے، مقام زغار میں ۵۷

بہت زیادہ رش تھا۔ اہلبیت رسولؐ اور شہیدوں کے سروں کا اس دروازہ پر روک دیا گیا
دیکھیں پھر دشمن کی جامع مسجد کے نزدیک اس جگہ روک دیا گیا جہاں قیدیوں کو روکا گیا
بعض نے نقل کیا ہے کہ اس دروازے پر اہلبیتؑ رسولؐ کو تین دن تک روک رکھا گیا

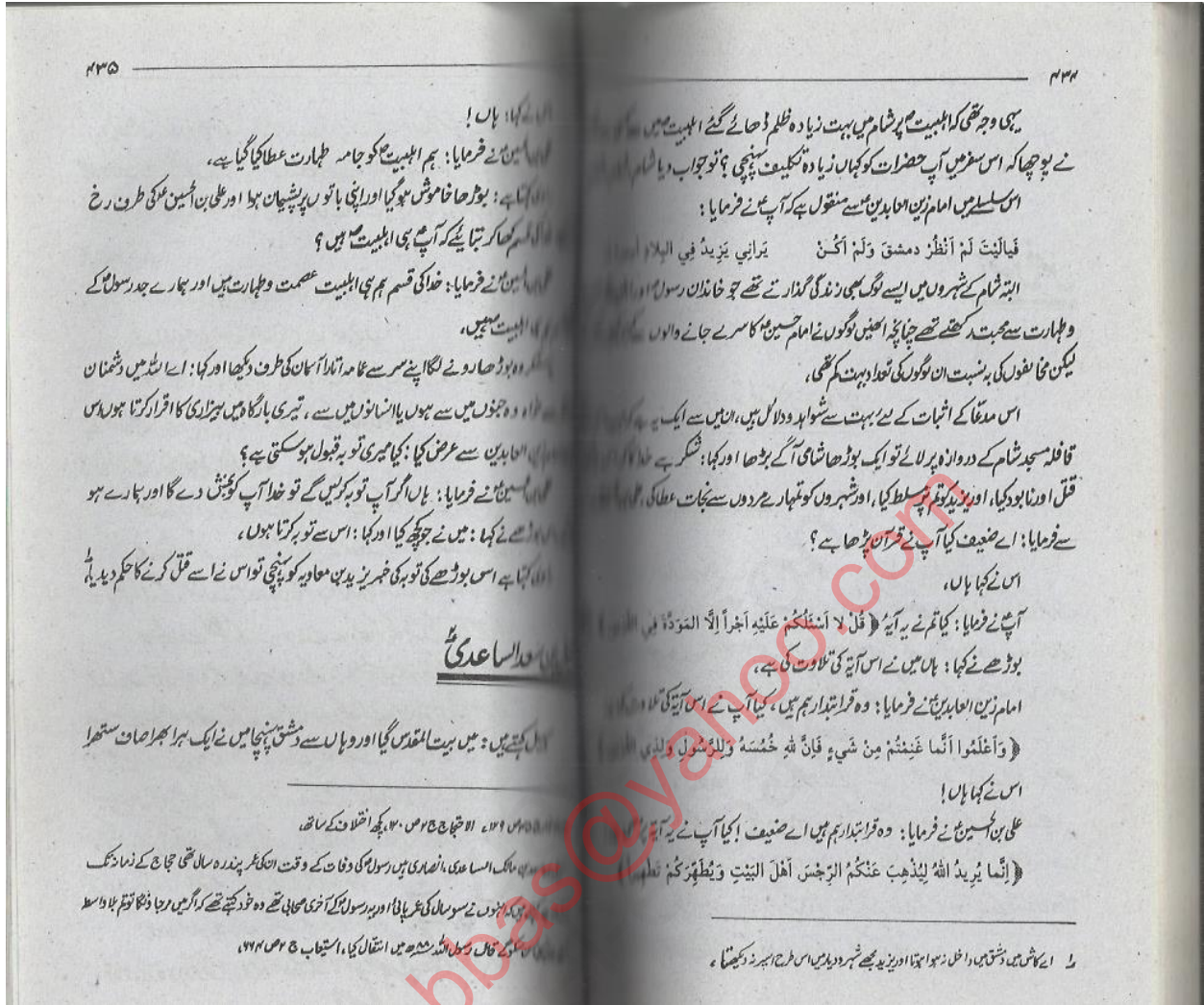
آٹھویں فصل

شام میں داخلہ

انہوں کا اعتقاد بر حجاب

ایسا اختصار کے ساتھ اہل شام کے اعتقادی اور روحی رجحان پیش کرتے ہیں،
انہوں اور اس کے مضامین پر تقریباً چالیس سال تک معاویہ کی حکومت رہی ہے اور وہاں کے اکثر لوگ
اور یہاں دن سے وہ مسیحیت چھوڑ کر دائرہ اسلام میں داخل ہوئے تھے انہوں نے خاندانِ ابو
ہاشم کو وہ حکم کے علاوہ کسی اور کو دیکھا ہی نہیں تھا وہی ان پر حکومت کرتے تھے لہذا شام والوں
انہوں پر اس میں بنی امید نہ رکھا دیا تھا۔

اہلِ اہلبیت اس علاقہ میں داخل ہوئے کہ جہاں کے باشندوں کو معاویہ نے اپنے خاندان سے اسلام
الاق اور اسلام کے علی احکام میں وہ معاویہ اور اس کے مقرر کردہ حکام کی پیروی کرتے تھے،
کہ یہ کہ جنگ کے لئے معاویہ نے شرائطِ اذچال سے ایک لاکھ شامیوں کو حضرت علیؑ کی مخالفت
اور حضرت علیؑ کے خلاف اتنا پروپیگنڈہ کیا تھا کہ شام والے آپؑ اور آپؑ کے خاندان کو جو بہ
ممبروں سے علیؑ اور آپؑ کے خاندان کو برا بھلا کہتے تھے۔



شہر دیکھا جس کے در و دیوار پر دیبا کے پردے آویزاں تھے، لوگ خوشیاں منا رہے تھے۔
طلحہ و دف بجاری تھیں میں نے اپنے آپ سے کہا: یا اہل شام کی عید کا زمانہ نہیں ہے! امام کا
میں کچھ لوگوں کو آپس میں گفتگو کرتے ہوئے دیکھا میں نے ان سے پوچھا: کیا اہل شام کی عید کا زمانہ
ہم بے خبر ہیں،

انہوں نے کہا: ہا ہا! لگتا ہے تو بادیشین اور حواریوں کے۔

میں نے کہا: میں رسول کا صحابی بن سہیوں،

انہوں نے کہا: اے سہیل تمہارے لئے باعث تعجب نہیں ہے کہ آسمان سے خون کیوں

پے اور زمین اپنے رہنے والوں سمیت دھنس کیوں نہیں جاتی؟

میں نے کہا: کچھ ہو گیا ہے؟

انہوں نے کہا: یہ محمد کے خراسے حسین کا سر ہے جس کو عراق سے بطور بدر لائے گئے۔

میں نے کہا: تعجب ہے حسین لایا گیا ہے اور لوگ خوشیاں منا رہے ہیں، اصرار کیا

سے داخل کریں گے، انہوں نے اس دردناک طریقہ کی طرف اشارہ کیا جس کو باب اسعات کہتے ہیں،

ان لوگوں سے گفتگو کے درمیان ہی میں نے دیکھا کہ بچے جلد دگر سے پرچم نمایاں ہو گئے۔

میں نے ایک نورانی اور جیہ چہرہ نیزہ پر دیکھا ایسا محسوس ہوتا تھا کہ کبھی سکڑے گا۔

اب اس بن علی کا سر تھا، پھر میں نے ایک سولہ دیکھا کہ نیزہ پر امام بن علی کا سر بندھنے کے لئے

رسول سے بہت زیادہ مشابہ تھا اس سے بے پناہ عظمت و جلالت مترشح تھی، نور ماحول تھا۔

ضعیفی عیاں تھی بڑی بڑی آنکھیں اور بر و باریک تھیں ان کی پیشانی مبارک شادہ اور بلند تھی۔

اور آنکھیں شرقی کی جانب لگی ہوئی تھیں، ہوا کے ذریعہ دار میں حرکت تھی لگتا تھا کہ امام

نیزہ عروبن منذر ہاتھ میں لئے آگے آگے چل رہا تھا۔

میں نے امام زین العابدین اور اہلبیت کو سلام کہا اور اپنا تعارف کرایا انہوں نے

تو اس نیزہ و دو کو کچھ دید و بوجہ امام حسین کا سر لے چارے تھے تاکہ وہ یہاں نہ کھڑا ہو سکے۔

امام زین العابدینؑ کے اشعار

اس موقع پر امام زین العابدینؑ نے یہ اشعار پڑھے۔

أَنَا ذَلِيلٌ فِي دَمَشَقٍ كَأَنِّي مِنْ الزَّيْعِ غَابَ عَنْهُ نَصِيرُهُ
وَعِزِّي رَسُولُ اللَّهِ فِي كُلِّ مَشْهَدٍ وَشَيْخِي أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ أَمِيرُهُ
لَمَّا لَمْ أَنْظُرْ دَمَشَقٌ وَلَمْ يَكُنْ بَرَابِرِي يَزِيدُ فِي الْبِلَادِ أَمِيرُهُ (۳)

۵۵۲ھ میں میرے اونٹ کو سونے و چاندی سے لادے کہیں نے عظیم الشان بادشاہ کو قتل کیا ہے اسے قتل کیا ہے
میں لوگوں کے میں باپ سے بلند و تر کیا اور ان کا خداوندان ہر ایک خاندان سے بلند ہے۔
میں نے دشن میں اس خلافت
میں نے کوئی جی غلام ہوں کہیں کا کوئی مددگار نہیں ہے جبکہ سب جانتے ہیں کہ میرے بعد رسول اللہؐ ہیں اور نیزہ
میں نے اس میں دشن میں داخل نہ ہوتا ہوں یہ مجھے شہر میں امیر نہ دیکھا، ریاض الارضین ص ۱۰۸،

سبیل رکھتے ہیں: شام میں: میں نے ایک کمرہ دکھا کر اس میں ایک بوڑھی عورت کے ساتھ ایک بچہ اور ایک بچہ بیٹا اس بوڑھی عورت کے سامنے آیا تو اس نے ایک پتھر اٹھا کر سرخشاں کی طرح اس کے سر پر مار دیا۔ جب میں نے یہ اٹھا کر دیکھا تو کہا: اے اللہ ان سب کو ہلاک کر دے، دوسری روایت میں اس بدعا کی حضرت ام کلثوم کی طرف نسبت دی گئی ہے۔

ابراہیم بن طلحہ

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا؟ آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

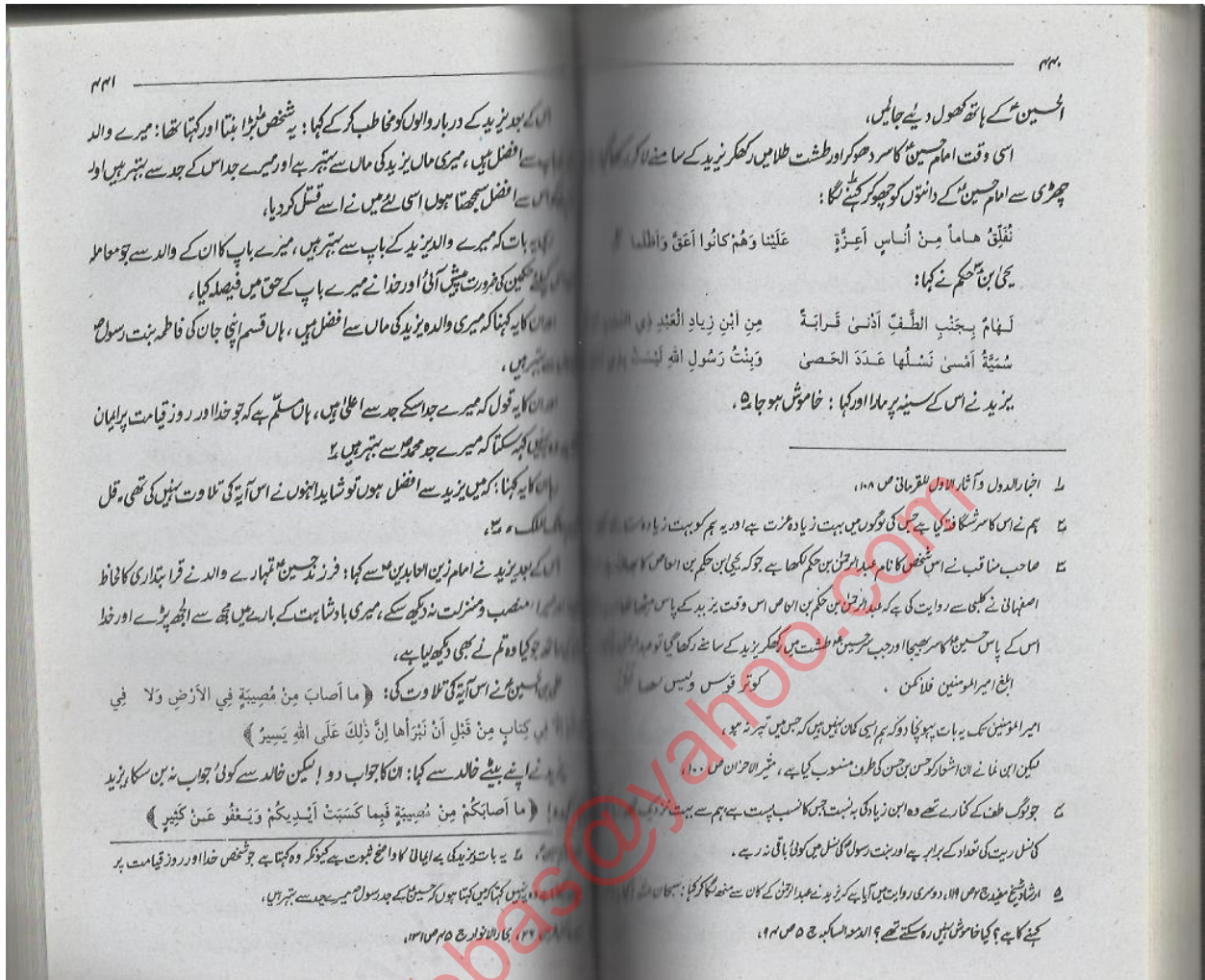
آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

آپ نے فرمایا: نماز کا وقت ہوئے تک صبر کرو اذان و اقامت کے بعد تو میں صابر ہوں گا۔

ابراہیم بن طلحہ بن عبد اللہ نے امام زین العابدین کو مخاطب کر کے کہا: اے علی بن ابی طالب! کون کا میاب ہوا ہے؟

دربار یزید



ابن شہر آشوب کہتے ہیں: اس کے بعد علی بن حسین نے فرمایا: اے عادیہ! وہاں بنو ہاشم و مامت اس وقت سے ہمارے بزرگوں میں چلی آ رہی ہے جب تیرا وجود کسی عادیہ جنگ بدر و احد اور تراب میں رسول کا پرچم میرے جد علی بن ابی طالب کے ہاتھ میں تھا۔

کا جھنڈا تیرے باپ دادا کے ہاتھ میں تھا، اس کے بعد علی بن حسین نے یہ اشعار پڑھے:

مَاذَا تَقُولُونَ إِذْ قَالَ النَّبِيُّ لَكُمْ
يَعْتَرِزِي وَيَسْأَلُنِي بَعْدَ مُفْتَقِدِي

مَاذَا قَعَلْتُمْ وَالسَّلَامُ
مِنْهُمْ أَسْأَلُ وَمِنْهُمْ حَالُ

اس وقت ایک شہابی نے سیدہ بنت الحسین کی طرف اشارہ کر کے یزید سے کہا: یہ کینز مجھے بخش دیجئے اور اگر تمہیں اپنی بھوپھی زینب سے پسند نہیں اور کہا: اے بھوپھی جان! یتیم ہوٹا اب کینزی کی نوبت

آئی ہے شہابی کو مخاطب کر کے فرمایا: تمہارے اویزید کے اندر یہ طاقت ہیں کہ اس بچی کو کینزی

یاد دے زینب سے کہا: خدا کی قسم میں اسے کینزی میں لے سکتا ہوں،

زینب نے فرمایا: خدا کی قسم خدا نے مجھے اپنی طاقت و تسلط سہرگز نہیں دیا ہے مگر یہ کہ تو اسلام دوسرا دن اختیار کرے،

یہ کہ کوٹھڑا کیا کہنے لگا مجھ سے یہ انداز کا طب؟ تمہارے باپ اور بھائی دین سے خارج ہو گئے

زینب نے فرمایا: تو نے تیرے باپ اور تیرے دادا نے خدا، میرے باپ اور بھائی کا دین

ہمارا اگر مسلمان ہو تو،

یہ کہنے کہا: اے دشمن خدا! جھوٹ کہتی ہو،

زینب نے فرمایا: بظاہر تو امیر و بادشاہ ہے اور کالیاں دیتا ہے اور اقتدار و تسلط کی وجہ سے

پھر آپ نے اپنی تقریر جاری رکھتے ہوئے فرمایا: اے یزید! وائے ہو تو تم

کہ تو نے کتنا برا کام کیا ہے، اور میرے بابا ابلیسیت اور میرے چچاؤں کے ساتھ کیا کیا

یقیناً پہاڑوں، بیابانوں میں بکھل جاتا، خاک نشینی اختیار کر لیتا اور وایلا کی آواز دیتا

والد علی بن وفا طبر کے تخت کے سر کو شہر کے دروازہ پر لٹکا رکھا ہے، ہم تمہارے دہان

ہیں، پس تجھے شہادت دینا ہوں لیکن تو پشیمان و سزا ہوگا اور یہ روز قیامت ہوگا جب

دوسری روایت میں آیا ہے کہ یزید نے حضرت زینب کی طرف رخ کر کے کہا: کہہ

حضرت زینب نے امام زین العابدین کی طرف اشارہ کر کے فرمایا: ہمارے مخالف

آپ نے یہ اشعار پڑھے:

لَا تَقْلَعُوا أَنْ تَهْبِئُونَا فَتُكْرِمَكُمُ
وَاللَّهِ يَسْأَلُ إِنَّا لَا نُحِبُّكُمُ

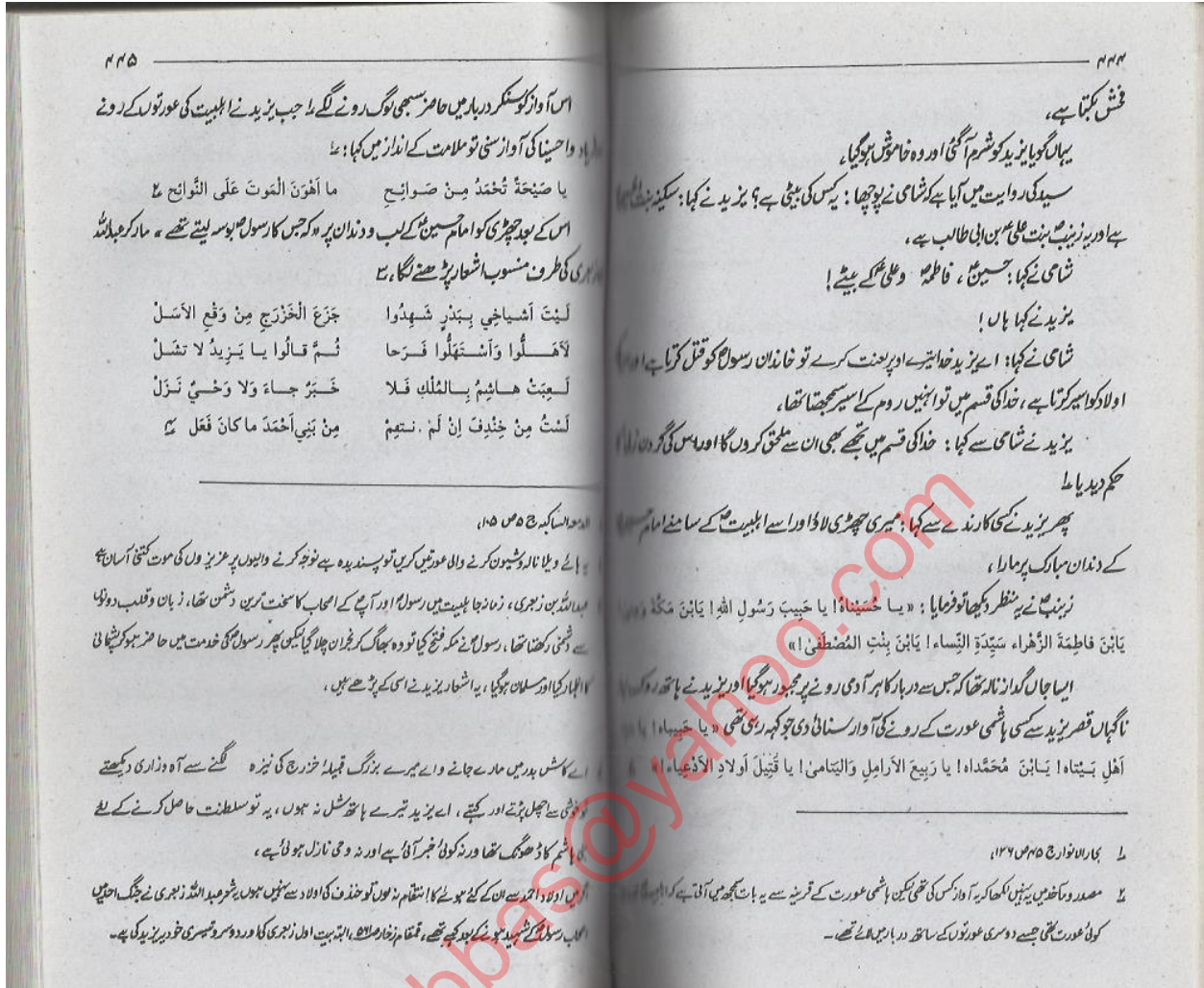
وَأَنْ تَكُفَّ الْأَذَى عَنْكُمْ
وَلَا تَلُومَكُمُ أَنْ لَا تُحِبُّوهُ

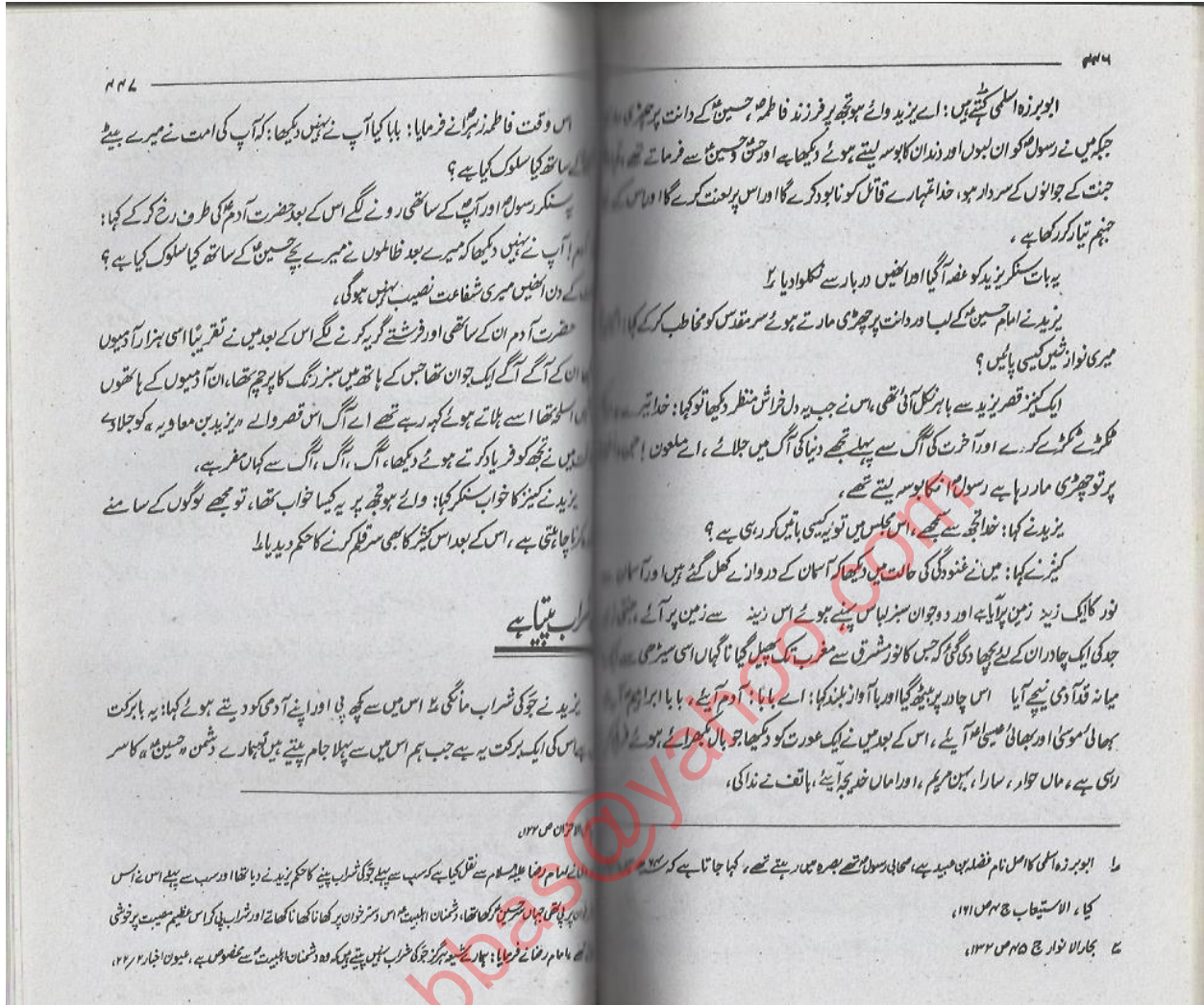
اس وقت کی جواب دو گے جب رسول تم سے پچھیں گے، تم فریست تھے میرے بھتیجے نبی کریم کے

میں سے سچ کو دل کر دیا اور باقی کو بھٹی بنا لیا، مگر انوار نوارج ۵۴۵ ص ۱۲۵، ۱۲۶ میں ہمارے

تو حق نہیں رکھتی چاہیے ہم تو تمہیں آدرش مانتے ہیں اور تم جان بوجھ کر ہمیں آزار پہونچاؤ خدا جانے

ہو اور تم ہمیں اس بات پر ملامت نہیں کرتے کہ تم ہمیں پسند نہیں کرتے۔





اس وقت فاطمہ زہراؑ نے فرمایا: بابا کیا آپ نے نہیں دیکھا: کہ آپ کی امت نے میرے بیٹے کے ساتھ کیا سلوک کیا ہے؟

پس سنا کہ رسول اللہؐ اور آپ کے ساتھی رونے لگے اس کے بعد حضرت آدمؑ کی طرف رخ کر کے کہا: اے آپ نے نہیں دیکھا کہ میرے بعد ظالموں نے میرے بچے حسینؑ کے ساتھ کیا سلوک کیا ہے؟

اس کے دن انھیں میری شفاعت نصیب نہیں ہوگی، حضرت آدمؑ ان کے ساتھی اور فرشتے گریہ کرنے لگے اس کے بعد میں نے تقریباً اسی ہزار آدمیوں کو ان کے آگے لے کر ایک جوان تھا جس کے ہاتھ میں ہنر رنگ کا پرچم تھا، ان آدمیوں کے ہاتھوں میں اسلحہ تھا اسے ہلاتے ہوئے کہہ رہے تھے اے آگ اس قہر والے یزید بن معاویہؑ کو جلا دے

اس میں نے تجھ کو فریاد کرتے ہوئے دیکھا، آگ، آگ، آگ سے کہاں مغرب ہے، یزید نے نیزہ کا خواب سن کر کہا: والے ہو تجھ پر یہ کیا خواب تھا، تو مجھے لوگوں کے سامنے لانا چاہتی ہے، اس کے بعد اس نیزہ کا بھی سرفکر کرنے کا حکم دیدیا۔

شراب پیئے

یزید نے جو کہ شراب مانگی اس میں سے کچھ پی اور اپنے آدمی کو دیتے ہوئے کہا: یہ بابرکت ہے اس کی ایک برکت یہ ہے جب ہم اس میں سے پہلا جام پیتے ہیں پھر اسے دشمن حسینؑ کا سر

ابوہریرہؓ اس کی کہتے ہیں: اسے یزید والے ہو تجھ پر فرزند فاطمہؑ حسینؑ کے دانت پر چھڑی کر کے رسولؐ کو ان بھوسوں اور زردان کا بوسہ لیتے ہوئے دیکھا ہے اور حسینؑ سے فرماتے تھے: جنت کے جوانوں کے سردار ہو، خدا تمہارے قاتل کو نابود کرے گا اور اس پر لعنت کرے گا اور اس کے جہنم تیار کر رکھا ہے۔

یہ بات سن کر یزید کو غصہ آگیا اور انھیں دوبارہ سے ٹھکوا دیا۔

یزید نے امام حسینؑ کے لب اور دانت پر چھڑی مارتے ہوئے سر مقدس کو مخاطب کر کے کہا: میری نوازشیں کسی پائیں؟

ایک کنیز قہر یزید سے باہر نکل آئی تھی، اس نے جب یہ دل تراش نظر دیکھا تو کہا: خدا تیرے گلشنے کو کھڑے کرے اور آخرت کی آگ سے پہلے تجھے دنیا کی آگ میں جلائے، اے ملعون! مجھ پر تو چھڑی مار رہا ہے رسولؐ اس کا بوسہ لیتے تھے،

یزید نے کہا: خدا تجھ سے مجھے، اس مجلس میں تو یہ کسی باتیں کر رہی ہے؟

کینٹنے کہا: میں نے غزوہ کی حالت میں دیکھا کہ آسمان کے دروازے کھل گئے ہیں اور آسمان

نور کا ایک زید زمین پر آیا ہے اور دو جوان سبز لباس پہنے ہوئے اس زینہ سے زمین پر آئے، ان کی جدی ایک چادران کے لئے بچھا دی گئی کہ جس کا نور شرق سے مغرب تک پہنچ گیا تا کہ اس میں سبزی میاں نہ قذا دی نیچے آئے اس چادر پر بیٹھ گیا اور با آواز بلند کہا: اے بابا! آدم آئے، بابا! براؤم آئے بھائی موسیٰ اور بھائی عیسیٰ آئے، اس کے بعد میں نے ایک عورت کو دیکھا جو بال بھرائے ہوئے لڑکی ہے، ماں حوار، سارا، یزید، اور اماں خدیجہؑ آئے، بالآخر نے ندا کی،

یہاں تک کہ وہی گئی ہے لوگ اس کی زیارت کرتے ہیں اور تم اپنے رسولؐ کے بیٹے کو قتل کرتے ہو جبکہ! اور حسینؑ کے درمیان ایک بیٹی کے علاوہ فاضلہؑ ہیں ہے یہ تمہارا کیسا دین ہے؟
روایت میں آیا ہے کہ: یزید نے یہ باتیں سنا کر کہا: اس نہرانی کو سپین قتل کرنا چاہیے ورنہ یہ
ہمارے ملک میں بدنام کرے گا۔

جب سفیر نے یہ حالت دیکھی تو کہا: اب تم مجھے قتل کرنا چاہتے ہو تو سنو کہ کل رات میں
خدا کو خواب میں دکھایا ہے انہوں نے مجھے جنت کی بشارت دی ہے، اس خواب سے میں حیرت میں
اب اس کی تعبیر ظاہر ہو گئی، وہ بشارت صحیح تھی، اس کے بعد اس نے کلمہ پڑھا، امام حسینؑ کے
ہاتھ کو پسینے سے ٹپکایا اور چونکہ قتل ہونے تک روز تیار ہوا،

دوسری روایت میں بیان ہوا ہے کہ دربار میں حاضر لوگوں نے سفیر روم کے قتل کے وقت امام
حسینؑ کے سر مقدس سے صدمے لے لائے اور قحۃ الابرار باللہ صاف طور پر سنی ہے،

یزید بن ابی سفیر

مقلید بنی ہاشم حضرت یزیدؑ نے جب یزید کی اتنی جسارت دیکھی اور دوسری
روایت کی حالت بھی مناسب دیکھی تو انہیں اور فرمایا:

أَلَيْسَ اللَّهُ رَبَّ الْعَالَمِينَ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَآلِهِ أَجْمَعِينَ، صَدَقَ اللَّهُ
كَذَلِكَ يَقُولُ ﴿فَمَنْ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَأُوا الشُّؤَىٰ أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا

۵۵ مارچ ۵۵ھ میں

۵۵ مارچ ۵۵ھ میں

۵۵ مارچ ۵۵ھ میں

ہمارے دسترخوان پر ہوتا ہے اسی لئے پکارا کھانے کا دسترخوان چھوٹا ہوا ہے اور اطمینان کے ساتھ کھا
ہیں، اور شراب پلا رہے ہیں،
سکینہ فرماتی ہیں: خدا کی قسم میں نے یزید سے بڑا کافر، ظالم، اور سنگدل نہیں دیکھا۔

روم کا سفیر یزید کے دربار میں

سفیر روم نے جو کہ یہ درخواست منظور دیکھ رہا تھا، یزید سے کہا: تمہارے سامنے یہ کہ
یزید نے تعجب کے ساتھ پوچھا یہ سوال تم نے کیوں کیا،
اس نے کہا: جب میں روم جاؤں گا تو مجھ سے یہاں کے دیکھے ہوئے حالات کے
مزدور پوچھا جائے گا مجھے اس خوشی و مسرت کا سبب معلوم ہونا چاہیے تاکہ قیصر روم سے تم
بھی اس سے خوش ہو،

یزید نے کہا: یہ سرفراہ نہت محمدؐ کے بیٹے حسینؑ کا ہے،

سفیر روم نے پوچھا: محمدؐ وہی جو تمہارے پیغمبر ہیں؟

یزید نے کہا: ہاں،

سفیر روم نے کہا: ان کے والد کا کیا نام ہے،

یزید نے کہا: علی بن ابی طالب، رسولؐ کے چچا زاد بھائی،

سفیر روم نے کہا: نابود ہو جائے تمہارا آئین، میرا دین تمہارے دین سے بہتر ہے،

والد، راؤ کے پوتے ہیں میرے اور راؤ کے درمیان سلوک کا فاضلہ ہے اور ہمارے

کرنے والے میرا احترام کرتے ہیں، اور تم گدھے پر حضرت علیؑ ایک بار سوار ہوئے تھے

۵۵ قتلہ زخار ص ۷۷

بِهَا يَسْتَهْزِؤْنَ ﴿١١﴾

أَلَمْ تَكُنْ يَا يَزِيدُ حَيْثُ أَخَذْتَ عَلَيْنَا أَقْطَارَ الْأَرْضِ وَأَفَاقَ السَّمَاءِ تُسَاقُ كَمَا تُسَاقُ الْأَسَارَى أَنْ يَبْنَى عَلَى اللَّهِ هَوَانًا وَبِكَ عَلَيْهِ كَرَامَةٌ وَأَنْ يَكُونَ لِعِظَمِ خَطْرِكَ عِنْدَهُ قَسَمٌ بِخُتْمِكَ بِأَنْفِكَ وَتَنْظُرْتَ فِي عَطْفِكَ جَذَلَانِ مُسْتَهْزِئِينَ رَأَيْتَ الدُّنْيَا لَكَ مُسْتَوْفَقَةً وَالْأُمُورَ مُتَسِفَّةً وَجِئْتَ صَفَا لَكَ مُلْكُنَا وَشَهِدْنَا قَمَهْلًا مَهْلًا أَنْسَيْتَ قَوْلَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ﴿وَلَا يَخْسِبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَلَهُمُ خَيْرٌ لِمَا أَنْفُسِهِمْ إِنَّمَا نُنْجِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ﴾ آمِنَ الْعَذْلُ بَابِنَ الطُّلُقَاءِ تَخْذِيرُكَ خَرَائِزَكَ وَإِمَائِكَ وَسَوْفُكَ بَنَاتِ زَهْرٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سَبَايَا قَدْ هَتَكَتْ شُرُوهُنَّ وَأَبْدَيْتِ الْهَوَا تَخْذُو بِهِنَ الْأَعْدَاءُ مِنْ بَلَدٍ إِلَى بَلَدٍ يَسْتَشْفِرُهُنَّ أَهْلُ الْمَسَاجِلِ وَالْمَوَاقِفِ وَيَتَصَفَّحْنَ وَجْوهَهُنَّ الْقَرِيبَ وَالْبَعِيدَ وَالْدِّينِيَّ وَالشَّرِيفَ، لَيْسَ مَهْلًا رِجَالَهُنَّ وَلَيْلٍ وَلَا مِنْ حُجَابِهِنَّ حَيْثُ، وَكَيْفَ يُرْتَجَى مُرَاقِبَةٌ مِنْ لَدُنْهُنَّ الْأَرْكَامِ وَتَبَّتْ لَحْمُهُ مِنْ دِمَاءِ الشُّهَدَاءِ، وَكَيْفَ لَا يَسْتَنْبِطُ فِي سُلْحُوهِ الْبَيْتِ مَنْ نَظَرَ إِلَيْنَا بِالسَّقَبِ وَالشَّتَانِ وَالْإِخْنِ وَالْأَضْغَانِ ثُمَّ يَقُولُ لَهَا وَلَا مُسْتَنْبِطٍ:

لَا عِلْوًا وَاسْتَهْلَوْا فَرَحًا ثُمَّ قَالُوا يَا يَزِيدُ لَا تُشَلِّ

مُنْتَجِبًا عَلَى ثَنَائِي أَبِي عَبْدِ اللَّهِ سَيِّدِ شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ تَنْكُتُهَا بِسُلْحُوفِ اللَّهِ لَا تَقُولُ ذَلِكَ وَقَدْ نَكَاتِ الْفُرْحَةُ وَاسْتَأْصَلَتْ الشَّاقَّةُ بِأَرْقَابِكَ وَمَا مَحْمُودُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَتُجُومُ الْأَرْضُ مِنْ آلِ سُلَيْمَانَ وَتَقْبَلُ بِأَشْيَاخِكَ وَعَمَتْ أَنْكَ ثَنَائِهِمْ، فَتَلْتَرِدُنَّ وَشَيْبَاكَ مَوْرِدَهُمْ وَالْأَرْضُ

ط سورة روم ١١

ط سورة آل عمران ١٤٨

الْمَلَكُ وَتَكْفَتُ، وَلَمْ تَكُنْ قُلْتَ مَا قُلْتَ وَفَعَلْتَ مَا فَعَلْتَ.

اللَّهُمَّ خُذْ بِحَقِّنَا وَأَنْتَقِمْنَا مِنْ ظَالِمِنَا وَأَحْلِلْ غَضَبَكَ بِمَنْ سَفَكَ دِمَاءَنَا وَقَتَلَ عُشَائِنَا، فَوَاللَّهِ مَا فَرَيْتَ إِلَّا جِلْدَكَ وَلَا خَزَزْتَ إِلَّا لَحْنَكَ وَتَلْتَرِدُنَّ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ بِمَا تَحْتَمِلُتُ مِنْ سَفْكَ دِمَاءِ دُرِّيَّةٍ وَأَنْتَهَكْتَ مِنْ خُرْمَتِهِ فِي عِزِّهِ وَلُحْمَتِهِ حَيْثُ يَجْمَعُ اللَّهُ شَمْلَهُمْ وَيَلْمُ شَعْنَهُمْ وَيَأْخُذُ بِحَقِّهِمْ ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزُقُونَ﴾ (١١) وَكَفَى بِاللَّهِ حَاسِمًا وَبِخَاتَمِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ حَصِيمًا وَبِجَنِّيهِ طَهِيرًا وَسَيِّغَلَمُ مَنْ سَوَّى لَكَ وَمَكَّنَكَ مِنْ رِقَابِ الْمُشْلِيِّينَ، بِشَسِّ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا وَأَيْكُمُ شَرَّ مَكَانًا وَاضْعَفُ جُنْدًا.

وَالَّذِينَ جَرَّتْ عَلَيْهِمُ الدَّوَاهِي مُخَاطَبَتَكَ إِلَيْنِ لَا تَسْتَضِغُرُ قُدْرَكَ وَأَسْتَغْطِمْ تَقَرُّعَكَ وَاسْتَحْزِرُ تَوْبِيخَكَ، لَكِنَّ الْغِيُونَ غَبْرَى وَالصُّدُورَ خَرَى، أَلَا فَالْعَجَبُ كُلُّ الْعَجَبِ لِقَتْلِ جَزْبِ اللَّهِ الشُّجْبَاءِ بِجَزْبِ الشَّيْطَانِ الطُّلُقَاءِ، فَهَذِهِ الْأَيْدِي تَنْظِفُ مِنْ دِمَائِنَا وَالْأَفْوَاهُ تَتَحَلَّى مِنْ لُحُونِنَا وَتِلْكَ الْجَبَّتِ الطَّوَاهِرُ الرُّوَاجِي تَنْشَأُهَا الدَّوَابِلُ وَتَقْفَرُهَا أَمْهَاتُ الْفَرَاجِلِ.

وَالَّذِينَ اتَّخَذْنَا مَغْنَمًا لَتَجِدَ بِنَا وَشَيْبَاكَ مَغْرَمًا حَيْثُ لَا تَجِدُ إِلَّا مَا قَدَّمْتَ يَدَاكَ وَمَا رَأَيْكَ بِظِلَامٍ لِلْعَبِيدِ وَالْإِلَى اللَّهِ الْمُشْتَكِي وَعَلَيْهِ الْمَعْوَلُ، فَكَيْدُكَ وَأَشْعُ سَفْكَكَ وَنَاصِبُ جَهْدِكَ فَوَاللَّهِ لَا تَمْنَحُو دُكْرَنَا وَلَا تُبَيِّتُ حَقِّنَا وَلَا تُذَرِّكُ أَمَدَنَا وَلَا تُرْخِصُ عُنْكَ عَارِهَا، وَعَلَى رَأْيِكَ إِلَّا قُنْدٌ وَأَبَاطُكَ إِلَّا عَدَدٌ، وَجَنْفُكَ إِلَّا دُكْرٌ يَزِمُ يُنَادِي الشَّادِي: أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ.

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الَّذِي خَسَمَ لِأَوْلِيَانَا بِالسَّعَادَةِ وَالْمَغْفِرَةِ وَالْآخِرِينَ بِالشَّهَادَةِ وَالرَّحْمَةِ، وَتَسَالَى اللَّهُ أَنْ يُكْجِلَ لَهُمُ الثَّوَابَ وَيُوجِبَ لَهُمُ السَّرِيَّةَ

وَيُخْسِنُ عَلَيْنَا الْخَلَائِفَةَ إِنَّهُ رَحِيمٌ وَدُودٌ، حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ^(۱)

حمد کاملین کے پروردگار کے لئے ہیں، صلوٰت و سلام پور رسول پر اور ان کی کل پر
پس فرمایا ہے: میرے کلمہ کرنے والوں کی عاقبت یہ تھی کہ وہ خدا کی آیات کو جھٹلاتے اور
کا مذاق اڑاتے تھے اے یزید تو یہ سمجھنا ہے کہ تو نے زمین و آسمان کو ہم پر تنگی کر دیا ہے اور
نیک شہر در شہر پھرایا اور یہ خیال کرتا ہے کہ خدا نے تجھے عزت دی اور میں رسوا کیا ہے
سمجھنا ہے کہ اس سے تو خدا کے نزدیک معزز ہو گیا ہے؟ اسی لئے غرور سے کہتا ہے
ساتھ چلتا پھرتا ہے، اور اپنی حکومت اور منظم امور کو دیکھ کر کہتا ہے میرا ہر جانا ہے
میں آ، کیا تو نے خدا کا یہ کلام فراموش کر دیا ہے، کافر یہ خیال نہ کریں کہ یہ بہت جلد ہوا
ہے یہ ان کے لئے بہترین موقع ہے، بلکہ یہ بہت بہتر ہے انھیں امتحان کے لئے دی ہے کہ
اپنی سرکشی میں اور افسوسناک کہ ان کے لئے عذاب و رسوائی ہے، طعنے کے لئے
انصاف ہے کہ تو اپنی مروتوں اور کمزوریوں کو باعزت طریقہ سے پردہ میں چھپا
زادوں کو اسیر کر کے شہر در شہر چرائے، ان کی ہلک کرے، انھیں برہنہ سر کر کے
تماشا دکھائے تاکہ قریب و دور اور شریف و ذلیل سب انھیں دیکھیں، مردوں
ان کے عہدہ نہیں ہے نہ کوئی مددگار ہے اور نہ گہماں۔

لیکن جگر خلوہ کے بیٹے اس سے کیسے ٹکساری اور ہمدردی کی توقع کی جاسکتی ہے کہ جس کا
پوست شہیدوں کے خون سے بنا ہے اور جس کے دل میں بیماری طرف سے نہیں
ہو اس سے اس کے علاوہ اور کیا توقع کی جاسکتی ہے، ماننے بڑے گناہ کو تو صبر کرنا
اس بدکرداری و ذلیل حرکت پر اپنے کافر باپ دادا پر فخر کرتا ہے اور یہ تمنا کرتا ہے
آج ہوتے اور تو نے جو بے رحمانہ قتل کیا ہے اسے دیکھ کر خوش ہوتا اور تیرا
ابو عبداللہ اور جنت کے جوائز کے سردار کے دانت پر چھڑی مارتا ہے یہ کہوں
کہ اس زخم کو ناسور کر دیا ہے اور ان کی بڑا گناہ دی ہے اور فرزند رسول کو

عبدالطلب اور زمین کے تاروں میں سے تھے۔ قتل کر کے اب اپنے بزرگوں کو ہلا رہا ہے،
ذرا ٹھہر! زیادہ دیر نہیں ہے کہ تو ان سے ملتی ہوگا اور اس وقت یہ آرزو کسے کا کترا
ہاتھ خشک ہو گیا ہوگا اور زبان گنگ ہو گئی ہوگی اور زبان پر وہ بات نہ لانا اور یہ برا کلمہ
نہ کہنا! اے اللہ اس سے ہمارا حق اور انتقام لے اور ان ظالموں پر کہ جنہوں نے ہمارا خون بہایا
ہے اپنا عذاب نازل فرما۔

اے یزید! خدا کی قسم تو نے اپنے ہی گوشت و پوست کو پارہ پارہ کیا ہے اور تو رسول سے اس بار
گناہ کے ساتھ ملاقات کرے گا جو تیرے دوش پر ہے تو نے آنحضرت کی آل کا خون بہایا،
ان کی کوئی عزت نہ بچھی اور ان کی ناموس کو اسیر کیا ہے جبکہ خداوند ان کی پراگندگی کو جمعیت
میں تبدیل کرے گا اور ان کا انتقام لے گا جو راہ خدا میں قتل ہوئے ہیں انہیں مردہ خیال نہ کرو
بلکہ وہ زندہ ہیں، اور خدا کی بارگاہ سے روزی پاتے ہیں، یزید تیرے لئے اتنا ہی کافی ہے
کہ اللہ حاکم ہے اور محمد تیرے دشمن اور جبریل ان کے حامی ہیں اور جس نے تیرے لئے راستہ ہموار
کیا ہے اور تجھے مسلمانوں پر مسلط کیا ہے اسے منقریب معلوم ہو جائے گا کہ ظالموں کی کیا سزا ہے اور
یہ بھی جان لے گا کہ تم میں سے کون زیادہ بدتر اور کس کی فوج ناتواں ہے،

اگرچہ زمانہ کے مصائب نے مجھے یہاں لاکر کھڑا کر دیا ہے کہ میں تجھ سے بات کروں، لیکن میری
نظر واپس تیری اتنی بھی وقت نہیں ہے کہ میں تجھے سرزنش کروں یا تیری تحقیر کروں لیکن کیا کروں
میرسی انھیں شک بار اور دل شمار ہے، جائے حیرت ہے کہ اللہ والے شیطان کا اتباع
کرنے والوں کے ہاتھوں مارے جائیں، ہمارے خون سے تمہارے ہاتھ رنگین ہیں، تمہارا
دکھ سے ہمارے گوشت کے ریشے نکل رہے ہیں اور ان پاکیزہ جسموں کے آس پاس درد سے

دور رہے ہیں،

جس چیز کو تو آج غنیمت سمجھ رہا ہے کل وہی تیرے لئے نقصان دہ ثابت ہوگی اور جو
کچھ تو نے کیا ہے اسے دیکھ لے گا، خدا بندوں پر ظلم نہیں کرتا ہے، میں اسے شکوہ کرتی ہوں

jabir.abbas@yahoo.com

انہیں اور ان کے صحابی کو ہمدست دو، شہر وں میں اپنے آدمی بھیجا اور جاؤ گروں کو جمع کرو پھر
ادھر آجائیں تو ان کا امتحان ہو، لیکن انہوں نے ہمارے قتل کا مشورہ دیا ہے اور یہ سبب نہیں ہے
یزید نے پوچھا: سبب کیا ہے؟

امام محمد باقر نے فرمایا: وہ غلطند و زمین تھے اور یہ فریب خوردہ و نادان ہیں، کیونکہ انبیاء
کی اوریت کو ناپاک ہی قتل کر سکتے ہیں،

یزید نے سر جھکا کیا، پھر اپنے ملازمین سے کہا: انہیں دربار سے باہر لے جاؤ۔
لیکن باہر کے سر کو دیکھ رہی تھیں اب قتل کی طاقت نہیں تھی کہا: اسے یزید تو رسول کی بیٹیوں کو مار
رہا، اس وقت حاضرین میں کہہ لیا ہوا اور دربار میں صلے کے اعتراض بلند ہونے لگیں،

جب یزید نے دربار کا رنگ بدلا ہوا دیکھا تو دسترجین سے کہا: چھٹیچی! جو ان لوگوں نے کیا ہے
اس سے راضی نہیں ہوں، نا

ایک قول یہ ہے کہ ابن مرجانہ کو کالی دی اور ساری چیزوں کی نسبت اس کی طرف دیدی تا
بہر حال حسرتیں کو قہر کے دروازہ پر ٹکائے تا اور اہلبیت کو قید خانہ میں لے جانے کا حکم دیا علی
اس کے بعد بھی اسی قید خانہ میں تھے، ۵،

اہلبیت کی بیٹیوں اور عورتوں کے ناموں سے شہر گونج رہا تھا، اہل شام بھی ان کے ساتھ نالہ
رہے، یزیدی عورتوں اور محاربہ والوں سفیان کی لڑکیوں نے زہور اتار دیا تھا اور ماتمی لباس
پہنا تھا اور اہلبیت کے ساتھ عزادار بن گئیں تھیں و

۱۰، ۱۱، ۱۲، ۱۳، ۱۴، ۱۵، ۱۶، ۱۷، ۱۸، ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵، ۲۶، ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵۴۰، ۵۴۱، ۵۴۲، ۵۴۳، ۵۴۴، ۵۴۵، ۵۴۶، ۵۴۷، ۵۴۸، ۵۴۹، ۵۵۰، ۵۵۱، ۵۵۲، ۵۵۳، ۵۵۴، ۵۵۵، ۵۵۶، ۵۵۷، ۵۵۸، ۵۵۹، ۵۶۰، ۵۶۱، ۵۶۲، ۵۶۳، ۵۶۴، ۵۶۵، ۵۶۶، ۵۶۷، ۵۶۸، ۵۶۹، ۵۷۰، ۵۷۱، ۵۷۲، ۵۷۳، ۵۷۴، ۵۷۵، ۵۷۶، ۵۷۷، ۵۷۸، ۵۷۹، ۵۸۰، ۵۸۱، ۵۸۲، ۵۸۳، ۵۸۴، ۵۸۵، ۵۸۶، ۵۸۷، ۵۸۸، ۵۸۹، ۵۹۰، ۵۹۱، ۵۹۲، ۵۹۳، ۵۹۴، ۵۹۵، ۵۹۶، ۵۹۷، ۵۹۸، ۵۹۹، ۶۰۰، ۶۰۱، ۶۰۲، ۶۰۳، ۶۰۴، ۶۰۵، ۶۰۶، ۶۰۷، ۶۰۸، ۶۰۹، ۶۱۰، ۶۱۱، ۶۱۲، ۶۱۳، ۶۱۴، ۶۱۵، ۶۱۶، ۶۱۷، ۶۱۸، ۶۱۹، ۶۲۰، ۶۲۱، ۶۲۲، ۶۲۳، ۶۲۴، ۶۲۵، ۶۲۶، ۶۲۷، ۶۲۸، ۶۲۹، ۶۳۰، ۶۳۱، ۶۳۲، ۶۳۳، ۶۳۴، ۶۳۵، ۶۳۶، ۶۳۷، ۶۳۸، ۶۳۹، ۶۴۰، ۶۴۱، ۶۴۲، ۶۴۳، ۶۴۴، ۶۴۵، ۶۴۶، ۶۴۷، ۶۴۸، ۶۴۹، ۶۵۰، ۶۵۱، ۶۵۲، ۶۵۳، ۶۵۴، ۶۵۵، ۶۵۶، ۶۵۷، ۶۵۸، ۶۵۹، ۶۶۰، ۶۶۱، ۶۶۲، ۶۶۳، ۶۶۴، ۶۶۵، ۶۶۶، ۶۶۷، ۶۶۸، ۶۶۹، ۶۷۰، ۶۷۱، ۶۷۲، ۶۷۳، ۶۷۴، ۶۷۵، ۶۷۶، ۶۷۷، ۶۷۸، ۶۷۹، ۶۸۰، ۶۸۱، ۶۸۲، ۶۸۳، ۶۸۴، ۶۸۵، ۶۸۶، ۶۸۷، ۶۸۸، ۶۸۹، ۶۹۰، ۶۹۱، ۶۹۲، ۶۹۳، ۶۹۴، ۶۹۵، ۶۹۶، ۶۹۷، ۶۹۸، ۶۹۹، ۷۰۰، ۷۰۱، ۷۰۲، ۷۰۳، ۷۰۴، ۷۰۵، ۷۰۶، ۷۰۷، ۷۰۸، ۷۰۹، ۷۱۰، ۷۱۱، ۷۱۲، ۷۱۳، ۷۱۴، ۷۱۵، ۷۱۶، ۷۱۷، ۷۱۸، ۷۱۹، ۷۲۰، ۷۲۱، ۷۲۲، ۷۲۳، ۷۲۴، ۷۲۵، ۷۲۶، ۷۲۷، ۷۲۸، ۷۲۹، ۷۳۰، ۷۳۱، ۷۳۲، ۷۳۳، ۷۳۴، ۷۳۵، ۷۳۶، ۷۳۷، ۷۳۸، ۷۳۹، ۷۴۰، ۷۴۱، ۷۴۲، ۷۴۳، ۷۴۴، ۷۴۵، ۷۴۶، ۷۴۷، ۷۴۸، ۷۴۹، ۷۵۰، ۷۵۱، ۷۵۲، ۷۵۳، ۷۵۴، ۷۵۵، ۷۵۶، ۷۵۷، ۷۵۸، ۷۵۹، ۷۶۰، ۷۶۱، ۷۶۲، ۷۶۳، ۷۶۴، ۷۶۵، ۷۶۶، ۷۶۷، ۷۶۸، ۷۶۹، ۷۷۰، ۷۷۱، ۷۷۲، ۷۷۳، ۷۷۴، ۷۷۵، ۷۷۶، ۷۷۷، ۷۷۸، ۷۷۹، ۷۸۰، ۷۸۱، ۷۸۲، ۷۸۳، ۷۸۴، ۷۸۵، ۷۸۶، ۷۸۷، ۷۸۸، ۷۸۹، ۷۹۰، ۷۹۱، ۷۹۲، ۷۹۳، ۷۹۴، ۷۹۵، ۷۹۶، ۷۹۷، ۷۹۸، ۷۹۹، ۸۰۰، ۸۰۱، ۸۰۲، ۸۰۳، ۸۰۴، ۸۰۵، ۸۰۶، ۸۰۷، ۸۰۸، ۸۰۹، ۸۱۰، ۸۱۱، ۸۱۲، ۸۱۳، ۸۱۴، ۸۱۵، ۸۱۶، ۸۱۷، ۸۱۸، ۸۱۹، ۸۲۰، ۸۲۱، ۸۲۲، ۸۲۳، ۸۲۴، ۸۲۵، ۸۲۶، ۸۲۷، ۸۲۸، ۸۲۹، ۸۳۰، ۸۳۱، ۸۳۲، ۸۳۳، ۸۳۴، ۸۳۵، ۸۳۶، ۸۳۷، ۸۳۸، ۸۳۹، ۸۴۰، ۸۴۱، ۸۴۲، ۸۴۳، ۸۴۴، ۸۴۵، ۸۴۶، ۸۴۷، ۸۴۸، ۸۴۹، ۸۵۰، ۸۵۱، ۸۵۲، ۸۵۳، ۸۵۴، ۸۵۵، ۸۵۶، ۸۵۷، ۸۵۸، ۸۵۹، ۸۶۰، ۸۶۱، ۸۶۲، ۸۶۳، ۸۶۴، ۸۶۵، ۸۶۶، ۸۶۷، ۸۶۸، ۸۶۹، ۸۷۰، ۸۷۱، ۸۷۲، ۸۷۳، ۸۷۴، ۸۷۵، ۸۷۶، ۸۷۷، ۸۷۸، ۸۷۹، ۸۸۰، ۸۸۱، ۸۸۲، ۸۸۳، ۸۸۴، ۸۸۵، ۸۸۶، ۸۸۷، ۸۸۸، ۸۸۹، ۸۹۰، ۸۹۱، ۸۹۲، ۸۹۳، ۸۹۴، ۸۹۵، ۸۹۶، ۸۹۷، ۸۹۸، ۸۹۹، ۹۰۰، ۹۰۱، ۹۰۲، ۹۰۳، ۹۰۴، ۹۰۵، ۹۰۶، ۹۰۷، ۹۰۸، ۹۰۹، ۹۱۰، ۹۱۱، ۹۱۲، ۹۱۳، ۹۱۴، ۹۱۵، ۹۱۶، ۹۱۷، ۹۱۸، ۹۱۹، ۹۲۰، ۹۲۱، ۹۲۲، ۹۲۳، ۹۲۴، ۹۲۵، ۹۲۶، ۹۲۷، ۹۲۸، ۹۲۹، ۹۳۰، ۹۳۱، ۹۳۲، ۹۳۳، ۹۳۴، ۹۳۵، ۹۳۶، ۹۳۷، ۹۳۸، ۹۳۹، ۹۴۰، ۹۴۱، ۹۴۲، ۹۴۳، ۹۴۴، ۹۴۵، ۹۴۶، ۹۴۷، ۹۴۸، ۹۴۹، ۹۵۰، ۹۵۱، ۹۵۲، ۹۵۳، ۹۵۴، ۹۵۵، ۹۵۶، ۹۵۷، ۹۵۸، ۹۵۹، ۹۶۰، ۹۶۱، ۹۶۲، ۹۶۳، ۹۶۴، ۹۶۵، ۹۶۶، ۹۶۷، ۹۶۸، ۹۶۹، ۹۷۰، ۹۷۱، ۹۷۲، ۹۷۳، ۹۷۴، ۹۷۵، ۹۷۶، ۹۷۷، ۹۷۸، ۹۷۹، ۹۸۰، ۹۸۱، ۹۸۲، ۹۸۳، ۹۸۴، ۹۸۵، ۹۸۶، ۹۸۷، ۹۸۸، ۹۸۹، ۹۹۰، ۹۹۱، ۹۹۲، ۹۹۳، ۹۹۴، ۹۹۵، ۹۹۶، ۹۹۷، ۹۹۸، ۹۹۹، ۱۰۰۰، ۱۰۰۱، ۱۰۰۲، ۱۰۰۳، ۱۰۰۴، ۱۰۰۵، ۱۰۰۶، ۱۰۰۷، ۱۰۰۸، ۱۰۰۹، ۱۰۱۰، ۱۰۱۱، ۱۰۱۲، ۱۰۱۳، ۱۰۱۴، ۱۰۱۵، ۱۰۱۶، ۱۰۱۷، ۱۰۱۸، ۱۰۱۹، ۱۰۲۰، ۱۰۲۱، ۱۰۲۲، ۱۰۲۳، ۱۰۲۴، ۱۰۲۵، ۱۰۲۶، ۱۰۲۷، ۱۰۲۸، ۱۰۲۹، ۱۰۳۰، ۱۰۳۱، ۱۰۳۲، ۱۰۳۳، ۱۰۳۴، ۱۰۳۵، ۱۰۳۶، ۱۰۳۷، ۱۰۳۸، ۱۰۳۹، ۱۰۴۰، ۱۰۴۱، ۱۰۴۲، ۱۰۴۳، ۱۰۴۴، ۱۰۴۵، ۱۰۴۶، ۱۰۴۷، ۱۰۴۸، ۱۰۴۹، ۱۰۵۰، ۱۰۵۱، ۱۰۵۲، ۱۰۵۳، ۱۰۵۴، ۱۰۵۵، ۱۰۵۶، ۱۰۵۷، ۱۰۵۸، ۱۰۵۹، ۱۰۶۰، ۱۰۶۱، ۱۰۶۲، ۱۰۶۳، ۱۰۶۴، ۱۰۶۵، ۱۰۶۶، ۱۰۶۷، ۱۰۶۸، ۱۰۶۹، ۱۰۷۰، ۱۰۷۱، ۱۰۷۲، ۱۰۷۳، ۱۰۷۴، ۱۰۷۵، ۱۰۷۶، ۱۰۷۷، ۱۰۷۸، ۱۰۷۹، ۱۰۸۰، ۱۰۸۱، ۱۰۸۲، ۱۰۸۳، ۱۰۸۴، ۱۰۸۵، ۱۰۸۶، ۱۰۸۷، ۱۰۸۸، ۱۰۸۹، ۱۰۹۰، ۱۰۹۱، ۱۰۹۲، ۱۰۹۳، ۱۰۹۴، ۱۰۹۵، ۱۰۹۶، ۱۰۹۷، ۱۰۹۸، ۱۰۹۹، ۱۱۰۰، ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ۱۱۰۳، ۱۱۰۴، ۱۱۰۵، ۱۱۰۶، ۱۱۰۷، ۱۱۰۸، ۱۱۰۹، ۱۱۱۰، ۱۱۱۱، ۱۱۱۲، ۱۱۱۳، ۱۱۱۴، ۱۱۱۵، ۱۱۱۶، ۱۱۱۷، ۱۱۱۸، ۱۱۱۹، ۱۱۲۰، ۱۱۲۱، ۱۱۲۲، ۱۱۲۳، ۱۱۲۴، ۱۱۲۵، ۱۱۲۶، ۱۱۲۷، ۱۱۲۸، ۱۱۲۹، ۱۱۳۰، ۱۱۳۱، ۱۱۳۲، ۱۱۳۳، ۱۱۳۴، ۱۱۳۵، ۱۱۳۶، ۱۱۳۷، ۱۱۳۸، ۱۱۳۹، ۱۱۴۰، ۱۱۴۱، ۱۱۴۲، ۱۱۴۳، ۱۱۴۴، ۱۱۴۵، ۱۱۴۶، ۱۱۴۷، ۱۱۴۸، ۱۱۴۹، ۱۱۵۰، ۱۱۵۱، ۱۱۵۲، ۱۱۵۳، ۱۱۵۴، ۱۱۵۵، ۱۱۵۶، ۱۱۵۷، ۱۱۵۸، ۱۱۵۹، ۱۱۶۰، ۱۱۶۱، ۱۱۶۲، ۱۱۶۳، ۱۱۶۴، ۱۱۶۵، ۱۱۶۶، ۱۱۶۷، ۱۱۶۸، ۱۱۶۹، ۱۱۷۰، ۱۱۷۱، ۱۱۷۲، ۱۱۷۳، ۱۱۷۴، ۱۱۷۵، ۱۱۷۶، ۱۱۷۷، ۱۱۷۸، ۱۱۷۹، ۱۱۸۰، ۱۱۸۱، ۱۱۸۲، ۱۱۸۳، ۱۱۸۴، ۱۱۸۵، ۱۱۸۶، ۱۱۸۷، ۱۱۸۸، ۱۱۸۹، ۱۱۹۰، ۱۱۹۱، ۱۱۹۲، ۱۱۹۳، ۱۱۹۴، ۱۱۹۵، ۱۱۹۶، ۱۱۹۷، ۱۱۹۸، ۱۱۹۹، ۱۲۰۰، ۱۲۰۱، ۱۲۰۲، ۱۲۰۳، ۱۲۰۴، ۱۲۰۵، ۱۲۰۶، ۱۲۰۷، ۱۲۰۸، ۱۲۰۹، ۱۲۱۰، ۱۲۱۱، ۱۲۱۲، ۱۲۱۳، ۱۲۱۴، ۱۲۱۵، ۱۲۱۶، ۱۲۱۷، ۱۲۱۸، ۱۲۱۹، ۱۲۲۰، ۱۲۲۱، ۱۲۲۲، ۱۲۲۳، ۱۲۲۴، ۱۲۲۵، ۱۲۲۶، ۱۲۲۷، ۱۲۲۸، ۱۲۲۹، ۱۲۳۰، ۱۲۳۱، ۱۲۳۲، ۱۲۳۳، ۱۲۳۴، ۱۲۳۵، ۱۲۳۶، ۱۲۳۷، ۱۲۳۸، ۱۲۳۹، ۱۲۴۰، ۱۲۴۱، ۱۲۴۲، ۱۲۴۳، ۱۲۴۴، ۱۲۴۵، ۱۲۴۶، ۱۲۴۷، ۱۲۴۸، ۱۲۴۹، ۱۲۵۰، ۱۲۵۱، ۱۲۵۲، ۱۲۵۳، ۱۲۵۴، ۱۲۵۵، ۱۲۵۶، ۱۲۵۷، ۱۲۵۸، ۱۲۵۹، ۱۲۶۰، ۱۲۶۱، ۱۲۶۲، ۱۲۶۳، ۱۲۶۴، ۱۲۶۵، ۱۲۶۶، ۱۲۶۷، ۱۲۶۸، ۱۲۶۹، ۱۲۷۰، ۱۲۷۱، ۱۲۷۲، ۱۲۷۳، ۱۲۷۴، ۱۲۷۵، ۱۲۷۶، ۱۲۷۷، ۱۲۷۸، ۱۲۷۹، ۱۲۸۰، ۱۲۸۱، ۱۲۸۲، ۱۲۸۳، ۱۲۸۴، ۱۲۸۵، ۱۲۸۶، ۱۲۸۷، ۱۲۸۸، ۱۲۸۹، ۱۲۹۰، ۱۲۹۱، ۱۲۹۲، ۱۲۹۳، ۱۲۹۴، ۱۲۹۵، ۱۲۹۶، ۱۲۹۷، ۱۲۹۸، ۱۲۹۹، ۱۳۰۰، ۱۳۰۱، ۱۳۰۲، ۱۳۰۳، ۱۳۰۴، ۱۳۰۵، ۱۳۰۶، ۱۳۰۷، ۱۳۰۸، ۱۳۰۹، ۱۳۱۰، ۱۳۱۱، ۱۳۱۲، ۱۳۱۳، ۱۳۱۴، ۱۳۱۵، ۱۳۱۶، ۱۳۱۷، ۱۳۱۸، ۱۳۱۹، ۱۳۲۰، ۱۳۲۱، ۱۳۲۲، ۱۳۲۳، ۱۳۲۴، ۱۳۲۵، ۱۳۲۶، ۱۳۲۷، ۱۳۲۸، ۱۳۲۹، ۱۳۳۰، ۱۳۳۱، ۱۳۳۲، ۱۳۳۳، ۱۳۳۴، ۱۳۳۵، ۱۳۳۶، ۱۳۳۷، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱۳۴۰، ۱۳۴۱، ۱۳۴۲، ۱۳۴۳، ۱۳۴۴، ۱۳۴۵، ۱۳۴۶، ۱۳۴۷، ۱۳۴۸، ۱۳۴۹، ۱۳۵۰، ۱۳۵۱، ۱۳۵۲، ۱۳۵۳، ۱۳۵۴، ۱۳۵۵، ۱۳۵۶، ۱۳۵۷، ۱۳۵۸، ۱۳۵۹، ۱۳۶۰، ۱۳۶۱، ۱۳۶۲، ۱۳۶۳، ۱۳۶۴، ۱۳۶۵، ۱۳۶۶، ۱۳۶۷، ۱۳۶۸، ۱۳۶۹، ۱۳۷۰، ۱۳۷۱، ۱۳۷۲، ۱۳۷۳، ۱۳۷۴، ۱۳۷۵، ۱۳۷۶، ۱۳۷۷، ۱۳۷۸

امام زین العابدین کا خطبہ

۴۵۷

وَالْعَصَاةَ وَالشَّجَاعَةَ وَالْمَحَبَّةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ، وَفَضَّلْنَا بِأَنْ مِثْلَ الشَّيْءِ
الْمُخْتَارَ مُحَمَّدًا وَمِثْلَ الصِّدِّيقِ وَمِثْلَ الطَّيَّارِ وَمِثْلَ أَسَدِ اللَّهِ وَأَسَدِ رَسُولِهِ وَمِثْلَ
سَيِّدِ هَذِهِ الْأُمَّةِ.

مَنْ عَرَفَنِي فَقَدْ عَرَفَنِي وَمَنْ لَمْ يَعْرِفَنِي أَنْبَأْتُهُ بِخَسْبِي وَنَسْبِي.
يَا أَيُّهَا النَّاسُ! أَنَا أَبُو مَكَّةَ وَمِنَى، أَنَا أَبُو ذِمَّةٍ وَالطُّفَا، أَنَا أَبُو مَرْثٍ حَمَلِ
الرُّكْنِ بِأَطْرَافِ الرِّدَا، أَنَا أَبُو خَيْرٍ مَنِ انْتَرَزَ وَأَرْتَدَى، أَنَا أَبُو خَيْرٍ مَنِ انْتَقَلَ
وَأَخْتَقَى، أَنَا أَبُو خَيْرٍ مَنِ طَافَ وَسَعَى، أَنَا أَبُو خَيْرٍ مَنِ حَجَّ وَلَبَّى، أَنَا أَبُو
خَيْرٍ مَنِ حُجِّلَ عَلَى الْبَرَاقِ فِي الْعَوَاءِ، أَنَا أَبُو مَنْ أُسْرِيَ بِهِ مِنَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى، أَنَا أَبُو مَنْ بَلَغَ بِهِ جَبْرِئِيلُ إِلَى سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى،
أَنَا أَبُو مَنْ دَنَا فَتَذَلَّ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى، أَنَا أَبُو مَنْ صَلَّى بِمَلَائِكَةِ
السَّمَاءِ، أَنَا أَبُو مَنْ أَوْحَى إِلَيْهِ الْجَلِيلُ مَا أَوْحَى، أَنَا أَبُو مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفَى،
أَنَا أَبُو عَلِيِّ الْمُتَضَعَّى، أَنَا أَبُو مَنْ ضَرَبَ خِرَاطِيمَ الْخَلْقِ حَتَّى قَالُوا: لَا إِلَهَ
إِلَّا اللَّهُ.

أَنَا أَبُو مَنْ ضَرَبَ بَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ بِسَيْفَيْنِ وَطَعَنَ بِسُوءَيْنِ وَهَاجَرَ
الْهَوَازِنَ وَبَايَعَ الْبَيْتَيْنِ وَقَاتَلَ بِبَدْرٍ وَخُنَيْنٍ وَلَمْ يَكُفْ بِاللَّهِ طَرْفَةً عَيْنٍ، أَنَا
أَبُو صَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ وَوَارِثِ النَّبِيِّينَ وَقَامِعِ الْمُتَعِدِّينَ وَيَغْشُوبِ الْمُسْلِمِينَ
وَنُورِ الْمُجَاهِدِينَ وَزَيْنِ الْعَابِدِينَ وَتَاجِ الْبَكَائِينَ وَأَصْبَرِ الضَّالِّينَ وَالْأَفْضَلِ
الْعَالَمِينَ مِنْ آلِ يَاسِينَ رَسُولِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، أَنَا أَبُو الْمُؤَيَّدِ بِجَبْرِئِيلِ،
الْمَنْصُورِ بِمِيكَائِيلِ.

أَنَا أَبُو الْمُحَابِي عَنْ حَزَمِ الْمُسْلِمِينَ وَقَاتِلِ الْمَارِيَةِ وَالنَّازِكِينَ وَالْقَابِطِينَ
وَالْمُجَاهِدِ أَعْدَاءَهُ النَّاصِبِينَ، وَأَفْخَرُ مَنْ مَشَى مِنْ قُرَيْشٍ أَجْمَعِينَ، وَأَوَّلُ مَنْ
أَجَابَ وَأَسْتَجَابَ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ، وَأَوَّلُ السَّابِقِينَ، وَقَاصِمِ
الْمُعْتَدِينَ وَمُيَبِّدِ الْمُشْرِكِينَ، وَسَبَّحُ مَنْ مَرَامِي اللَّهُ عَلَى الشَّنَاقِينَ، وَلِسَانُ

امام زین العابدینؑ نے یزید سے کہا: میں محمد کے دن مسجد میں خطبہ دینا چاہتا ہوں اور یہ خطبہ
ہے: جبکہ کا دن ہوا تو یزید نے اپنے مزدور غلبوں میں سے ایک کو منبر پر بٹھایا اور اس سے کہا: یہاں
علیؑ و حسینؑ کی کابست کرنا اور شیعوں و یزیدی کا مدح کرنا اور اس خطیب نے ایسا ہی کیا،

امام زین العابدینؑ نے یزید سے کہا: مجھے خطبہ پڑھنے کی اجازت دی جائے اپنا خطبہ
یزید اپنے وعدہ پر پشیمان تھا، وہ نہیں چاہتا تھا کہ امام خطبہ دیں، معاویہ بن یزید نے اس سے کہا
کہ خطبہ کا کیا اثر ہوگا؟ اجازت دیدیجئے تاکہ وہ جو کہنا چاہیں کہیں،
یزید نے کہا: اس خاندان کی کیا فتوے کو تم نہیں جانتے ہو، یہ ایک دوسرے سے
میراث میں پاتے ہیں یہ تو انہوں کو ان کے خطبہ سے شہر میں فتنہ نہ اٹھ گھڑا ہوا اور اس سے
سرکاپڑے،

یزید نے پیشکش قبول نہ کی تو لوگوں نے امر کیا امام زین العابدینؑ کو منبر پر جانے کے لئے کہ
جائے۔

یزید نے کہا: اگر یہ منبر پر چلے گئے تو خاندان ابوسفیان کو ذلیل کرے بغیر نہیں آئیں گے
یزید سے کہا کہ یہ جوان کیا کر سکتا ہے،

یزید نے کہا: ان کا تعلق اس خاندان سے ہے کہ جس کے بچے بھی عالم ہوتے ہیں،
کہ امرار یزید نے امام زین العابدینؑ کے منبر پر جانے کی موافقت کر دی،
امام زین العابدینؑ منبر پر تشریف لے گئے اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد خطبہ شروع کیا،
تھا آپ نے فرمایا:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ! أُعْطِينَا سِتًّا وَفَضَّلْنَا بِسَنِيحٍ: أُعْطِينَا الْعِلْمَ وَالْحِلْمَ وَالْ

جَنَّۃِ الْعَابِدِیْنَ وَنَاصِرِ دِیْنِ اللّٰهِ وَوَلِیِّ اَمْرِ اللّٰهِ وَبُسْتَانِ جَنَّۃِ اللّٰهِ وَعِشۃِ
عَلِیِّہٖ سَلَامٌ، سَخِیٍّ، بَہِیٍّ، بَہْلُوْلٍ، زَکِیٍّ، اَبْلَہِیٍّ، زَہِیٍّ، مِسْقَامٍ، مُسَامٍ،
ضَاہِرٍ، صَوَامٍ، مُہَذَّبٍ، قَوَامٍ، قَاطِعِ الْاَصْلَابِ وَمُقَرَّبِ الْاَخْرَابِ، اُرْدُنَظْہُمْ عِندَ
وَالْتَبَتْہُمْ جَنَانًا، وَاَفْضَاہُمْ عَزِیْمَةً وَاَشَدَّہُمْ شَکِیْمَةً، اَسَدَ بَابِلَ، یَطْحَنُہُمْ فِی
الْحُرُوْبِ اِذَا اُرْدَقَتِ الْاَسِیَّةُ وَفُزَّتِ الْاَعِیْنَةُ طَحْنُ الرُّحْنِ، وَیَذَرُوْہُمْ فِیْہَا لَذَّةَ
الرِّیْحِ الْهَنِیْمِ، لَیْثُ الْجَازِ وَکَنْبُشُ الْعِرَاقِ، مَکِیٌّ مَدَنِیٌّ خِیْفِیٌّ عَقِیْبِیٌّ ہَذَرِیٌّ
اُخْدِیٌّ شَجَرِیٌّ مُہَاجِرِیٌّ.

مِنْ الْقَرَبِ سَبَدَا، وَمِنْ الْوَعْنِ لَیْثُہَا، وَاَرِثُ الْمَشْعَرِیْنِ وَاَبُو التَّیْسِطِیْنِ
الْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ، ذَاکَ جَدِّی عَلِیُّ بْنُ اَبِی طَالِبٍ.

لوگو! خدا نے ہیں چھ خصائص عطا کی ہیں اور ہمیں سات خصوصیات کے ذریعہ دوسروں
پر فضیلت بخشی ہے، ہمیں علم، بردباری، سخاوت، فصاحت، شجاعت، اور مومنین
کے دلوں میں محبت عطا کی ہے اور دوسروں پر اس طرح فضیلت دی کہ رسول، صدیق،
امیر المومنین علیؑ، جعفر طیار، شیر خدا و شیر رسول، حمزہؑ، رسولؐ کے دونوں فرزند امام حسنؑ
و امام حسینؑ ہم میں قرار دیئے ہیں۔

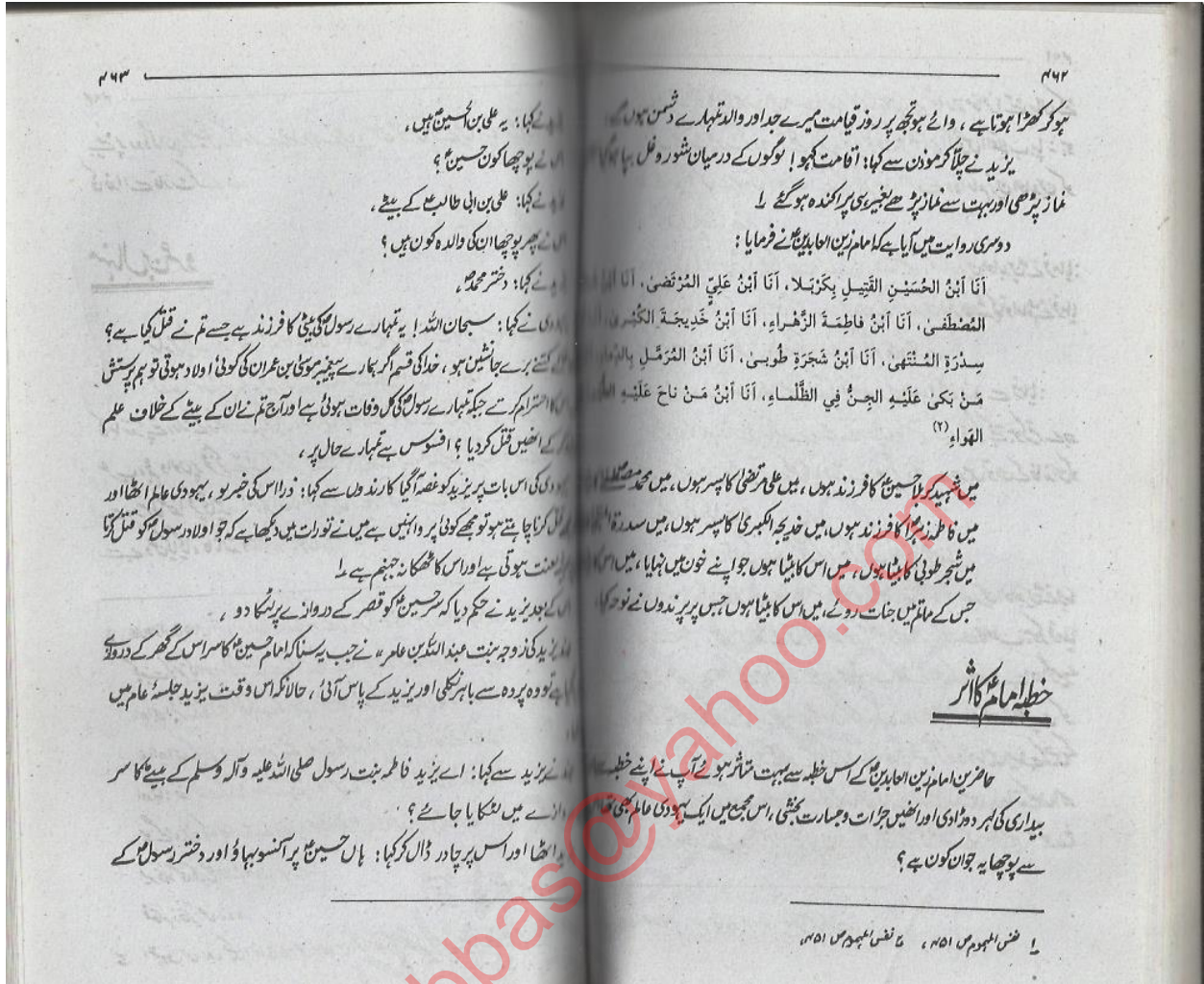
اس مختصر تعارف سے، جو مجھے جانتا ہے، جانتا ہے جو نہیں جانتے تو ان کیلئے میں آواز اٹھاؤں
اور خاندان کا تعارف کرتا ہوں اور ان کے ذریعہ خود کو پہچانواتا ہوں،
اے لوگو! میں کہہ سکتا ہوں کہ میں زہم و صفا کا فرزند ہوں میں اس کا بیٹا ہوں
کہ جس نے اپنی چادر پر کھڑے ہو کر اس کی جگہ پر نصب کیا میں بہترین طواف و کعبہ

خطیب میری نری کے سات عوام کا کہہ سکتے ہیں کہ میں بہترین طواف و کعبہ کا فرزند ہوں اور ان کے ذریعہ خود کو پہچانواتا ہوں،
یہ ہے دعا کا کوئل کرنے والے بہترین ہیں، نفس بہرام ص ۲۵۰،

والوں کی یادگار ہوں، میں بہترین حج کرنے والے کیلئے والدین کا چشم و چراغ ہوں میں براق
پر سوار ہونے والے کا فرزند ہوں میں اسی پیغمبر کا نور نظر ہوں کہ جس نے ایک رات میں سجد
اخلاص سے سجد اٹھائی تک کی سیر کی، میں اس کا بیٹا ہوں جس کو جبریلؑ سدرۃ المنتقی تک
لے گئے اور مقام قرب ربوبی سے خدائے متعال سے نزدیک لے گئے، میں اس کا بیٹا ہوں
جس نے آسمان کے ملائکہ کے ساتھ نماز پڑھی، میں اس کا فرزند ہوں کہ جس پر خدائے وحی
نازل کی، میں محمد مصطفیٰؐ اور علیؑ کا بیٹا ہوں، میں اس کا بیٹا ہوں کہ جس نے مغرور لوگوں
کی ناک پر کرکڑ کرکڑ تو جھڑھوا لیا، میں اس کا فرزند ہوں کہ جو رسولؐ کی طرف سے دو کولروں
اور دونوں سے جگمگ کرتا تھا، جس نے دو بار ہجرت اور دو بار بیعت کی جس نے بدر و
حنین میں کافروں سے جگمگ کی جس نے چشم زدن کے لئے کھرا اختیار کیا، میں صالح مومنین
اور وارث انبیاء کا فرزند ہوں، میں مشرکوں کو قتل کرنے والے مسلمانوں کے امیر، مجاہدوں
کے مشیوا، عابدوں کی زینت اور خوف خدا میں گمراہ کرنے والوں کے افتخار کا بیٹا ہوں
میں بردبار لوگوں میں بردبار ترین اور اہلبیت رسولؐ میں سے بہترین نماز پڑھنے والا کا بیٹا
ہوں، میں اس کا فرزند ہوں، جبریلؑ نے جس کی تائید اور سیکائیل نے جس کی مدد کی، میں
اس کا بیٹا ہوں جس نے مسلمانوں کے جہم سے دفاع کیا اور مارقین و انکشین اور طاغیوں سے
جگمگ کی، میں اس کا فرزند ہوں جو قریش میں سب سے بہترین ہے میں اس کا بیٹا ہوں کہ جس
نے مومنین میں سے سب سے پہلے خدا و رسولؐ کی دعوت قبول کی، میں ایمان کی طرف سب
سے پہلے ہجرت کرنے والے کا بیٹا ہوں، اور سرکشوں کی کمر توڑنے والے کا بیٹا ہوں میں مشرکوں
کو تہ تیغ کرنے والے کا بیٹا ہوں، میں اس کا فرزند ہوں جو منافقوں کیلئے خدا کی شمشیر خدا
کے بندوں کیلئے زبان حکمت و ذہن خدا کے محافظ اور اس کے ولی امر ہیں، حکمت خدا کے
بہرستان اور علم الہی کے حامل ہیں،

وہ جوان مرد، سخی، شریف، نیکو لوگ جمع کرنے والے، سید، عظیم، اطہر،

Jabir.abbas@yahoo.com



«السلام علیک یا ابا عبد اللہ! السلام علیک یا بنی رسول اللہ!»

اسی وقت میں بادل کا ایک ٹکڑا دیکھا کہ جو آسمان سے نیچے آ رہا ہے اور اس پر سیدنا
سوار ہیں، ان کے درمیان میں نے ایک مرد کو دیکھا جس کا چہرہ چاندنی مانند درخشاں تھا، وہ
پر رخصت کر کے ان کے لبوں کو چوم رہے تھا اور کہہ رہے ہیں: بیٹا! انہوں نے تمہیں قتل کیا، تمہیں
تمہیں پانی نہ پلایا، بیٹا! میں تمہارا جدِ اللہ کا رسول ہوں، یہ تمہارے بابا علی مرتضیٰ ہیں یہ تمہارے
حسن ہیں یہ تمہارے چچا جعفر، یہ عقیل اور ہشترہ و عباس ہیں، پھر کیے بعد دیگرے تمام اہل بیت
ہندکتی ہے: میں وحشت زدہ بیدار ہوئی اور حسین کی طرف متوجہ ہوئی دیکھا کہ
چاروں طرف نور کا آواز ہے، میں نے یہ کہہ کر اس کا مکروہ تاریکی میں ڈوبا ہوا ہے اور
رخ کر کے کہہ رہا ہے: مائی ولولین! حسین نے میرا کیا بگاڑا تھا، جب میں نے اس کے چہرہ
واضح طور پر اندوہ و غم کے آثار دیکھے میں نے اس کے سامنے اپنا خواب بیان کیا اور وہ سر ہٹا کر
سنسٹا رہا تھا

حسین کی ایک کسکی سستی نہ ایک رات کو خیمہ سے بیدار ہوئی اور سخت مضطرب و متوجہ
باب کو دھونڈنے لگی، اور کہا: بابا کہاں گئے ہیں نے ابھی انہیں دیکھا ہے یا یہ حریم کی فورتیں

۱۔ بحار ۱۰، ج ۵ ص ۱۶۶

اس عبارت سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ واقعہ بڑے بڑے محل میں رونما ہوا تھا اور اشد شیعہ شیعہ کی جہالت سے
کو جس گھس قید کیا گیا تھا وہ بڑے بڑے محل سے متعلق تھا چند روز اہلیت وہیں رہے پھر باب اصغر
یہ ہیں منتقل کئے گئے، مفسر المہمدم، مفسر اکبر اور دیگر کتابوں میں اس کی کامیابیوں میں ملتا ہے، ہمارے
پر مصلحتیوں سے ہی کام لیا گیا اور یہاں تک کہ ۳۰ ص ۱۶۶ پر قید کیا گیا ہے، برصغیر میں
ہے، مشرق، کا روزنامہ کہ حادثہ میان ہونچا ہے کہ بلوچستان کی آخری رخصت کے لیے آئے تو درندہ
مقتل اور آپ نے یہ فرمایا تھا کہ مجھے پھر تمہارے پاس آؤں گا ہو سکتا ہے کہ پھر آئے سے ملو آپ کا سر مقدس

رونگے پس چوں میں بھی کھرم سپا ہو گیا،

ان کے رونے کی آواز بلند ہوئی تو بڑے کی بھی آنکھیں کھل گئیں پوچھا: مگر یہ وزاری کی آواز کہا
ہے؟ اسے واقف نہ کیا گیا اس نے کہا بچی کے پاس اس کے باپ کا سر پہنچا دو، حسین پر چڑا
اس کے سامنے رکھ دیا گیا،

گنا نے پوچھا یہ کیا ہے؟ انہوں نے کہا: یہ تیرے بابا حسین کا سر ہے،

دھڑکتے ہوئے سر سے پڑا پٹایا، باپ کا سر دیکھ کر دل سے آہ کی اور بے تاب ہو کر کہا: اے بابا!
آہ! آپ کے خون میں نہلایا ہے؟ کس نے آپ کا گھلا کاٹا ہے؟ اے بابا: کس نے مجھے تیغ کیا
آپ کے بعد میں کس سے بدل بھلاؤں؟ آپ کے تہیم کی کون پرورش کرے گا؟ بابا: ان قیدیوں
میں سے، کاش میں آپ پر فدا ہو جی ہوتی، کاش میں نابینا ہو جی ہوتی، کاش میں خاک کی
لہر ہو جی ہوتی اور آپ کا طوطی خون سے رنگین نہ دیکھتی،

اس کے بعد انہوں نے ننھے ننھے بوٹ بابا کے لبوں پر رکھ دیئے اور اتنی روئی کہ بے ہوش ہو جی ہوش
بہت کوشش کی لیکن کبھی کبھار ہوش نہ آیا اور حسین کی پیاری نے شام ہی دم توڑ دیا

عزاداری

کابل بہائی میں آیا ہے کہ جناب زبیب نے بڑے بڑے کہلوا یا کہ ہیں حسین کی عزاداری کرنے کی اجازت
دے دیئے، انہوں نے اجازت دیدی اور اپنے آدمیوں کو حکم دیا کہ اہلیت کو دارالنجارہ سے جانا کہ وہاں
آئیں، اس مکان میں اہلیت نے سات دن عزاداری کی اور ہر روز شام کی عورتوں میں سے
کے پاس جمع ہوئی اور عزاداری کرتی تھیں،

۱۔ المہمدم ص ۱۵۶، دوسرا سکر ج ۵ ص ۱۶۱

فرید نے کہا: اہلبیت کے اسیروں کو واپس مدینہ لوٹا دیا جائے۔

۱۰۔ ائمہ کثوم سے کہا: یہ ان مصائب کا بدل ہے جو تم پر پڑے ہیں،

44A

چوتھے امام کی تین خواہش

بیزید نے کہا: میں نے جن تین خواہشوں کے پورا کرنے کا وعدہ کیا ہے بیان کیجئے تاکہ

دوسری یہ ہے کہ ہمارے موٹے ہوئے مالک کو واپس کیا جائے،

انہیں ان کے جد کے حرم تک پہنچا دے،

اور تیسری خواہش کے لئے یہ ہے کہ آپ کے علاوہ اور کوئی عورتوں کے ساتھ نہیں

آہ وہ فغان کی آواز بلند ہونے لگی تو اس وقت مروان مدینہ کا حاکم تھا، یمن معظمہ کے حاکم

۱۵۹

۸۲۱، مقام زخارص ۵۹، ۵، کہ اختلاف کے ساتھ،

1945/10/31

۵۷۹ قفسه خزانه

نویں فصل

شام سے مدینہ تک

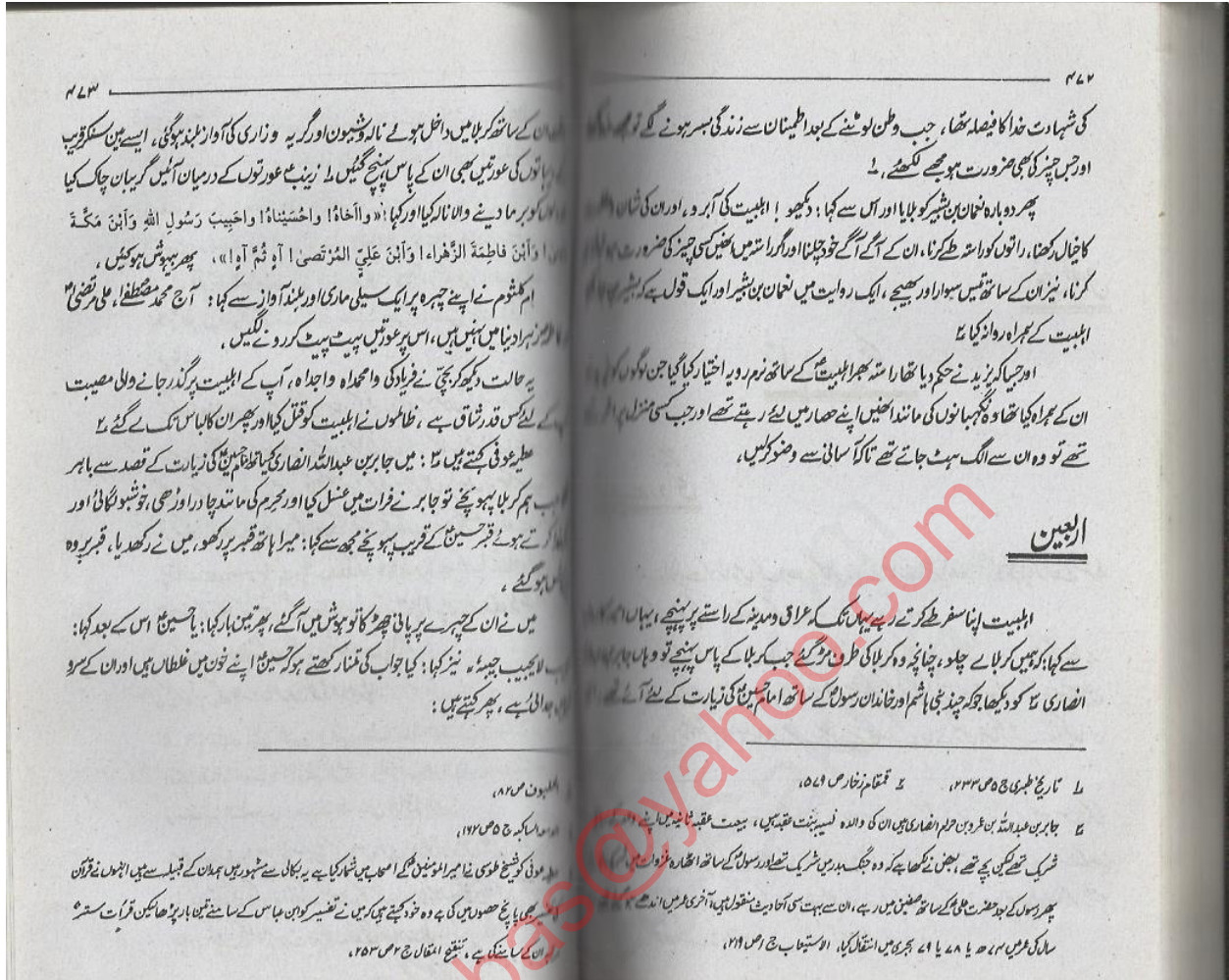
شام سے روانگی

جب اہلبیت کو شام میں ایک زمانہ ہو گیا تو یزید نے نعمان بن بشیر رضی اللہ عنہما کو حکم دیا کہ ان کے سفر کے
راہ پر کر واد ایک مہینہ آدمی کے ساتھ مدینہ منورہ واد کر دو و
راہی کے وقت یزید نے امام زین العابدین کو بلایا اور کہا: خدا لعنت کرے مر جانے کے پیٹے پر
اپنے والد سے میری ملاقات ہو جانی تو ان کی ہر پیشانی کو قبول کر لیتا اور جیسے بھی ممکن ہوتا انہیں
ان کے لئے سے چا لیتا اگرچہ اس سلسلے میں میرے بعض پیٹے ہی مارے جاتے لیکن جیسا کہ آپ نے دیکھا ان

میں کو فوج پنے وقت یزید کی طرف سے نعمان بن بشیر واپس لے گئے اور یزید نے انہیں موزوں کر کے
ان کے لئے مدینہ منورہ لے کر آکر کوفہ کا امیر مقرر کیا نعمان شام کو آئے یزید کے طرفداروں میں سے تھا، یزید کے مرنے کے بعد
ان کے لئے مدینہ منورہ لے کر آکر کوفہ کے امیر مقرر کیا نعمان شام کو آئے یزید کے طرفداروں میں سے تھا، یزید کے مرنے کے بعد
ان کے لئے مدینہ منورہ لے کر آکر کوفہ کے امیر مقرر کیا نعمان شام کو آئے یزید کے طرفداروں میں سے تھا، یزید کے مرنے کے بعد

۵۷۹ھ

۵۷۹ھ



ہم کہا: قسم اس خدا کی جس نے رسول کو حق کے ساتھ مبعوث کیا جس میں آپ شہید حضرات
 کے لئے ہیں، اس میں ہم بھی آپ کے شریک ہیں،
 عطا کیے ہیں: میں نے جابر سے کہا: یہ شہید ہو گئے ہیں ہم نے تو کچھ بھی نہیں کیا ہے
 جابر نے کہا: اے عطیہ! میں نے اپنے حبیب رسول سے سنا ہے کہ آپ نے فرمایا:
 «مَنْ أَحَبَّ قَوْمًا حَتَّى مَقَعَهُمْ وَمَنْ أَحَبَّ عَمَلًا قَوْمٍ اشْرَكَ فِي عَقْلِهِمْ»
 ہر شخص اس قوم کے ساتھ مشور ہوگا جسے دوست رکھتا ہوگا اور جو شخص کسی قوم کے کام کو پسند
 کرے وہ اس کے کام میں شریک ہے،

ابن

حبیب میر میں آیا ہے کہ زید بن معاویہ نے شہیدوں کے سر علی بن حسین کے سپرد کر دیئے تھے
 اور ان کو آپ نے ان سروں کو ان کے بدن سے ملحق کر کے مدینہ کا رخ کیا
 اور یہاں پہنچنے پر رونے لگے، آثار الباقیہ میں لکھا ہے: جس روز حسین کے اہلبیت شام سے واپسی
 کے دن زیارت کے لئے گزرا آئے تھے اسی دن حسین کا سر مقدس واپس کیا گیا اور دفن کیا گیا تھا
 سید بن طاووس، اقبال میں لکھتے ہیں: میں صفر کی نوکراہ میں ہو سکتا ہے جبکہ کس محرم کو امام حسین
 کی ہاتھ پائی بنا برین انیس صفر کو زمین ہے مٹا،
 اس کے بعد لکھتے ہیں: یہ بھی احتمال ہے کہ اس میں محرم کا مہینہ ۱۶ کا ہوا ہو تو اس طرح اربعین میں

فَأَشْهَدُ أَنَّ أَبْنُ خَيْرِ النَّبِيِّينَ وَأَبْنُ سَيِّدِ الْمُؤْمِنِينَ وَأَبْنُ خَلِيفَةِ النَّبِيِّ
 الْهَدْيِ وَخَامِسَ أَصْحَابِ الْكِسَاءِ وَأَبْنُ سَيِّدِ النَّبِيَّاءِ وَأَبْنُ فَاطِمَةَ عَلِيٍّ
 وَمَالِكٍ لَا تَكُونُ هَكَذَا وَقَدْ غَدَّكَ كَفُّ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَرُؤَسَاءِ
 الْمُتَّقِينَ وَرَضَعْتَ مِنْ نَدْيِ الْإِيمَانِ وَقُطِبْتَ بِالْإِسْلَامِ قَطْبُتُ خَلْقًا
 غَيْرَ أَنْ قُلُوبَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ طَبِيبَةٍ لِفِرَاقِكَ وَلَا شَاكَّةٍ فِي الْغَيْبَةِ لِقَائِكَ
 سَلَامٌ اللَّهُ وَرِضْوَانُهُ وَأَشْهَدُ أَنَّكَ مَضَيْتَ عَلَى مَا مَضَى عَلَيْهِ الْمُرَادُ
 زَكَرِيَّا.

میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ افضل انبیاء کے فرزند اور مومنوں کے سرور کے
 ہدایت و تقویٰ کے خاندان کے چشم و چراغ ہیں اور اصحاب کسا میں سے
 ہیں، نقباء کے دل بند ہیں، فاطمہؑ میرا کے تحت جگر ہیں، کیوں نہ ہو کہ
 آپ کو غذا دی ہے، پر ہر گاروں کی آغوش میں آپ نے پرورش پائی ہے،
 پستان سے دودھ پیا ہے، پاک زندگی گذاری اور دنیا سے پاک لاشہ اور
 مومنوں کو دلوں کو غمگین کر گئے خدا کا سلام ہو آپ پر آپ نے وہی راستہ
 پر آپ کے بھائی یحییٰ بن زکریا نے شہادت پائی،
 اس کے بعد قبر کے چاروں طرف نظر ڈالی اور کہا:

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْأَرْوَاحُ الَّتِي خَلَّتْ بِفَنَاءِ الْحَسَنَيْنِ وَأَنَا
 أَنْتُمْ أَقْنَتُمْ الصَّلَاةَ وَأَتَيْتُمْ الزَّكَاةَ وَأَمَزْتُمْ بِالْمَقْرُوفِ وَتَهَنَّنْتُمْ
 وَجَاهَدْتُمْ الْمُتَجِدِينَ وَعَبَدْتُمْ اللَّهَ حَتَّى آتَاكُمْ النَّبِيُّ.

سلام ہو ان ارواح پر جو حسین کے پاس آئیں اور جو آرام ہیں، میں دعا کرتا ہوں کہ
 نے نماز قائم کی، زکوٰۃ ادا کی، نیکیوں کا حکم دیا، برائیوں سے روکا،
 جہاد جنگ کا اور مرے دم تک خدا کی عبادت کی،

ابن ابی عمیر، اس میں مذکور ہے کہ زید بن معاویہ نے انیس صفر کو امام حسین

اہمیت حادثہ کرنا کے ایک سال بعد ۱۳۲۷ء میں میں صغر گوگر بلا پہنچے ہیں، مقام خزار کے مولف مسافت کے لحاظ سے حرم سید الشہداء کو اربعین کے دن ۱۳۷۰ میل کر بلائے معلیٰ پہنچنا مشکل ہی ممکن نظر ہے، کیونکہ امام حسینؑ نے روز عاشورا شہادت پائی اور اس سدا پائے نشوں کو کے لئے مزید ایک دوڑ وہاں شہر لگیا رہ محرم کو وہاں سے فوج کی جانب چلا اور کر بلائے معلیٰ سے وہاں اس تقریباً آخر فرسخ ہے، چند روز بعد ابن زبائنؑ نے اہمیت کو اس لئے کو ذمہ روکا اس صورت حال کو دیکھ کر خواہش بیٹھ جائیں، اس کے بعد زبائنؑ نے ابن زیا کو کھٹکا اسیر کو کر دیا، ابن زبائنؑ نے بھی حران و جزیرہ اور حلب کے راستے سے شام بھیجا اور کو فسخ سے شام کا راستہ ایک سو پچاس فرسخ ہے اور پھر شام پہنچے۔ یہ بعد چار ماہ تک اہمیت کو قید میں رکھا گیا۔ یہاں تک کہ زبائنؑ نے حنفی غصہ کو آگ کھنڈی ہوئی اور جب اسے یہ اطمینان ہو گیا کہ لوگ اب فراموش گئے تو اس نے شام میں ابن عبد بنی کو اہل حرم کے ساتھ مدینہ واپس لوٹنے کی تاکید کی، پھر یہ اس روز میں صغر گوگر و جو دین آسکتے ہیں، یعنی اہمیت دوسرے سال ۱۳۷۱ء میں کر بلائے پہنچے ہیں۔ اس سلسلہ میں غور کر گاہ کہ ضرور مولفؒ کی تاکید کر گاہ، جابر بن عبد اللہؓ بھی ۱۳۷۱ء میں کر بلائی زیارت کے ہیں، جابر کا شرف یہ ہے کہ صحابہ کبار و انجمن سگوکاروں میں سے وہ اولین شخص ہیں جس نے سفر اہل بیت کے لئے کئی بے فربہ، مولف کا یہ قول منفرد ہے، کہتا ہوں اور اس سے عہدہ برکتا ہوں۔

[illegible]

صفر کو ہے، یہ بھی ہو سکتا ہے کہ ماہ محرم میں دن کا ہوا ہو لیکن امام حسینؑ نے عاشورہ
میں شہادت پائی ہے لہذا عاشورہ کو شمار نہ کیا گیا ہو،
مصباح میں رقوم ہے: حسینؑ کے اہل حم میں صفر کو علی بن حسینؑ کے ہجرہ
شیخ مفید نے اسی قول کا اختیار کیا ہے، دوسری کتابوں میں لکھا ہے کہ اہل حم
کے بعد میں صفر کو ہجرت میں تھے۔
جیسا کہ مذکورہ عبارات میں بیان ہوا ہے، اہمیت شام سے ہونے کے بعد اسی
کے دن کو اہل میں پہنچے جس سال حادثہ کو ملا روفا تھا، یا پھر شہادت کے ایک سال بعد
ہوئے، اس سلسلے میں جو گھٹایا گیا کہ ہے ہم اسے یہاں اختصار کے ساتھ بیان کرتے ہیں،
یہاں قول:

اہلیت اللہ ہی میں شام سے سوئے وقت میں صوف کو کر بلا پیچے یہ تاریک
موقع کا ناول ہے جسے پہلے بھی بیان کر چکے ہیں، اب وہاں بیرونی کی آئینہ باقیہ میں کی لکھا
میں سید بن طاووس کی عبارت سے بھی بات سمجھیں آتی ہے مابین خانے بھی شہر الاسلام
نقل کیا ہے مابین
دوسرا قول:

اہمیت کو لایہ بھی شام سے جانے سے قبل میں صفر کو کولہ سے گذرا انہوں نے
کہ یہ ناسخ و سترائے کج و مناف بہ کافظیہ ہے، اگرچہ یہ قول میں نظر آتا ہے کیوں اس کا ثناء
ہوا ہے لیکن ایک احتمال ہے کہ

ما مقام زخارص ۱۵۸۵

في الملحق ص ٨٢

۱۰۷ مشیرالاحزان ص ۱۰۷، مے ناسخ التواریخ الحوالات امام حسینؑ ج ۲ ص ۱۷۶،

PLA

ایک احتمال اور بھی ہے وہ یہ کہ اہلیت شام سے روافی کے بعد پہلے مدینہ کے ہوں اور پھر مدینہ سے نکلتے ہوئے کربلا گئے ہوں، مگر میں نے محض اپنے غمراہ لائے ہوں اور پھر بدن کے ساتھ دفن کیا ہو، لیکن لاجوہ کے انہیں میں نہیں بلکہ مدینہ والہی کے لوگوں کو لگائے، ابن جوزی نے شہنام نقل کیا ہے کہ حسین مدینہ سے روانہ کے ساتھ مدینہ لایا گیا پھر کربلا سے جا کر بدن کے ساتھ دفن کیا گیا مگر میں نے نقل ہوا ہے کہ حادثہ کی صورت حال کا تقاضا یہ ہے کہ اہلیت شام سے چلیس دن کی مدت سے زیادہ عرصہ میں عراق یا مدینہ واپس ہوئے ہیں، ممکن ہے کہ کربلا میں صفحہ کو نہ پہنچی ہو کیونکہ جابر بن عبد اللہ انھار بھی حجاز سے آئے تھے اور جابر کتبہ چنبنیہ اور ان کی روایت کیسے چالیس دن سے زیادہ کی مدت درکار ہے، یا یہ کہیں کہ جابر مدینہ سے کربلا شہر سے کربلا آئے تھے۔

رسول کے غرض و اہلیت کے مطابق پہنچنے کے بعد اپنے شہیدوں کی عزاداری میں مشغول ہوا
اس وقت عزاداری کی جائز نہیں تھی کیونکہ کسی جب تک اسے کوئی روزانہ ہو رہا ہے تبھی
نئے طبقوں میں کیا کہے و خدشہ مائل ہو اور اس طرح عین روز کی عزاداری ہوتی رہی تھی
مذکورہ اٹھویں ص ۵۰، لیکن اس میں یہ مضمون ہے کہ امام علیہ السلام کو ان کے لیے کیا اہلیت پہنچنے سے

۱۰۰
۱۰۱
۱۰۲
۱۰۳
۱۰۴
۱۰۵
۱۰۶
۱۰۷
۱۰۸
۱۰۹
۱۱۰
۱۱۱
۱۱۲
۱۱۳
۱۱۴
۱۱۵
۱۱۶
۱۱۷
۱۱۸
۱۱۹
۱۲۰
۱۲۱
۱۲۲
۱۲۳
۱۲۴
۱۲۵
۱۲۶
۱۲۷
۱۲۸
۱۲۹
۱۳۰
۱۳۱
۱۳۲
۱۳۳
۱۳۴
۱۳۵
۱۳۶
۱۳۷
۱۳۸
۱۳۹
۱۴۰
۱۴۱
۱۴۲
۱۴۳
۱۴۴
۱۴۵
۱۴۶
۱۴۷
۱۴۸
۱۴۹
۱۵۰
۱۵۱
۱۵۲
۱۵۳
۱۵۴
۱۵۵
۱۵۶
۱۵۷
۱۵۸
۱۵۹
۱۶۰
۱۶۱
۱۶۲
۱۶۳
۱۶۴
۱۶۵
۱۶۶
۱۶۷
۱۶۸
۱۶۹
۱۷۰
۱۷۱
۱۷۲
۱۷۳
۱۷۴
۱۷۵
۱۷۶
۱۷۷
۱۷۸
۱۷۹
۱۸۰
۱۸۱
۱۸۲
۱۸۳
۱۸۴
۱۸۵
۱۸۶
۱۸۷
۱۸۸
۱۸۹
۱۹۰
۱۹۱
۱۹۲
۱۹۳
۱۹۴
۱۹۵
۱۹۶
۱۹۷
۱۹۸
۱۹۹
۲۰۰

اگر عورتیں اور بچے ان مزاروں کے پاس رہتے تو گو یہ فزاری اور نوکر کرمی میں جان دیدیتے
 لیکن حسینؑ نے فرمایا: اسبابِ خوفِ فرما کہے جائل اور کربلا سے مدینہ کی سمت چلیں ،
 جب تا فاکہ کربلا سے مدینہ کی طرف روانہ ہونے لگا تو جناب اس مہکشم سے روتے ہوئے انتہا

سِدِينَةٍ جَدَّتَا لَا تَسْتَقِينَا
طَرَجْنَا مِنْكَ بِالْأَلْمِينَ جَمْعًا
وَكُنَّا فِي الْخُرُوجِ يَجْمَعُ شُكْلُ
وَكُنَّا فِي أَمَانِ اللَّهِ جَهْرًا
وَقَوْلَانَا الْحُسَيْنُ لَنَا أَنْيْسُ
وَتَخُنُ الضَّيَاعَاتُ بِلَا كَفِيلِ
لَتُخُنَ السَّائِرَاتُ عَلَى الْمَطَايَا
وَتَخُنُ بَنَاتُ نِسْ وَطَه
وَتَخُنُ الظَّاهِرَاتُ بِلَا خِفَاءِ
لَتُخُنَ الصَّابِرَاتُ عَلَى الْبَلَايَا
يَا جَدُّ بَلَقْتُ عِدَانَا

موتیر جا رہے آگے جو بیلان کو کہہ کر اندر وہ دفتر کے ساتھ واپس لوٹ گیا تھا مگر عزیزہ کے ساتھ بیٹا سے باہر
 آئے اور اب واپس آج کے روز جا رہے تھے اور بیٹے میں کھٹے دانت تھے اور جانتا تھا کہ ابھی اور نوے پر سر رہے
 تھے جو کہ ہیں، نگاہ پریشان کیا وہ ابھی تھے اور نوے، تو بھی کھانوں اور ان کی چٹان کی گول سے خوف نہ رہا تھا کہ
 وہ کہیں مضمون آئے جسے تو سنا کہ کوکر میں سو نہ کر رہے ہیں، چہرہ کھینچ کر گلوں میں ہے اپنے بھائی پر

فوج کیا، ہیں اونٹوں پر سوار کیا گیا، اور شیر اور اونٹوں پر بیٹھا گیا، ہم مکہ وین کی بیٹیاں ہیں، ہم ان کے غم میں روچکی ہیں، ہم لاریہ پک ہیں، ہم مخلصین و برگزیدہ ہیں، ہم بلاؤں پر صبر کرنے والے ہیں، ہم سچے نصیحت کرنے والے ہیں، نانا! ہمارے دشمن کی آرزو پوری ہوگی، ان کے دل میں شکر ہوگئے، عورتوں کی بے رحمی کا، اور فہری طور پر انہیں اونٹوں پر سوار کیا، ظالم مجوسی نے مجار لاندہ میں اس سے کہیں زیادہ اشعار نقل کئے ہیں جو ہم نے یہاں بیان کئے ہیں،

بحار الانوار ج ۵ ص ۱۶۷

دسویں فصل

مدینہ میں

مدینہ میں

الہیت کا قافلہ مدینہ کی طرف روانہ ہوا
بشیر بن جندب کہتا ہے: ہم آہستہ آہستہ چلتے رہے یہاں تک کہ مدینہ کے نزدیک پہنچ گئے،
اسام بن زید اصحابین علیہ السلام نے فرمایا: بیٹے اونٹوں سے بار تار جائے اور نیمہ نکائے جائیں،
میں نے عرض کی: فرزند رسول! ہاں،
فرمایا: تم ابھی مدینہ چلے جاؤ اور لوگوں کو ابو عبد اللہ کی شہادت اور ہمارے آنے کی اطلاع
دینا کہتا ہے: میں اپنے گھوڑے پر سوار ہوا، تیزی کے ساتھ مدینہ پہنچا اور مسجد نبوی کے
دراں پہنچ کر بلند آواز میں ارٹانا یہ اشعار پڑھے:

jabir.abbas@yahoo.com

ماہ کر دیا اور جو نرم ابھی نہیں بھرے تھے انھیں از سر نو تازہ کر دیا اب ان کے بھرنے کی امید ہے، خاتمہ ہماری منفرت کرے تم کون ہو؟

میں نے کہا: میں بشیر بن جذلم ہوں، مجھے میرے مولا علی بن حسینؑ نے بھیجا ہے تاکہ اہل مدینہ کے لئے کی اطلاع دے دوں وہ ابو عبد اللہؑ کے اہمیت کے ساتھ فلاں جگہ خیمہ زن ہیں۔

ان کر بلا کا استقبال

بشیرؑ کہتا ہے: سبھی اہل مدینہ کارواں کی طرف دوڑ پڑے، میں نے بھی اپنے گھوڑے کو تیز کیا اور راستے لوگوں سے پڑتے گھوڑے سے ان کو بے شکل اڑھام سے نکلا اور اہل بیت کے پاس پہنچا،

علی بن حسینؑ خیمہ میں تھے، باہر تشریف لائے، آپ کے ہاتھ میں ایک رومال تھا جس سے سارے لوگ مسح کرتے تھے، ایک آدمی ایک منبر لایا، آپ اس پر تشریف فرما ہوئے، آپ کی آنکھوں سے ہار کی تھیں، لوگوں کے رونے کی آواز بلند ہو گئی، عورتیں بھی گریہ و زاری کر رہی تھیں، مرد بہر طرف اپنے کو تعزیت و تسلیت دے رہے تھے، ساری نصاب و شہزادوں کی آواز سے گونج رہی تھی، امام زین العابدینؑ نے ہاتھ کے اشارہ سے انھیں خاموش کیا اور پھر یہ خطبہ پڑھا:

الحمد لله رب العالمین، مالک یوم الدین، یاریء الخلائق أجمعین، الذی یغذی
فازتفع فی السموات العلوی وقرب قشعر النجوى، نحمدہ علی عظیم الامور
وقبایع الذهور وألم الفجائع ومضاضة اللواذع وجلیل الرزء وعظیم
التصابی الفاطمة الکاظفة الفادحة الجائحة.

الحمد لله رب العالمین

یا اهل یقرب لا مقام لکم بها قتل الخسین وأذمعی بذر
الجسم منه بکربلا مضجج والرأس منه علی القناہ یبارک

اس کے بعد میں نے لوگوں کو مخاطب کر کے کہا: علی بن حسینؑ اپنی چوکیوں اور بہنوں کے مدینہ سے باہر خیمہ زن ہیں، مجھے انہوں نے ہی بھیجا ہے تاکہ میں تمہیں اس حادثہ کی خبر دوں گے گزرا ہے۔

جب میں نے اہل مدینہ کو یہ خبر سنائی تو مدینہ میں ایسی کوئی عورت نہیں تھی جو روٹی پکائی سے باہر نہ نکل آئی ہو، مسلمانوں کیلئے میں نے اس دن سے زیادہ المناک دن نہیں دیکھا اور اس ایک زبان و یک دل ہو کر رول کو روتے ہوئے دکھایا ہے

اسی وقت میں نے سنا کہ: ایک عورت مسیحی پر اس طرح نو حکمرانی ہے:

نعم سیدی ناع ناع فأوجعا وأفرضنی ناع ناع
فیعنی جودا بالذموع وأشکبا وجودا بذمغ یغذ ذمعا
علی من وهی عرش الجلیل فزعزعا فأصبح هذا العجذ والذین
علی أنس نسی الله وأنس وحیته وإن کان عتاً شاحط الدار

یہ اشعار پڑھنے کے بعد اس عورت نے مجھے مخاطب کیا اور کہا: اے عیسیٰ مسیحؑ کے مسکراؤ

مدینہ والو! اب مدینہ پتے کی جگہ پر رہی، اگر عیسیٰ نقل ہو گئے ہیں، انھیں کی سوگ میں میری آنکھوں سے آنسو بہاؤں گا تاکہ ان کے دل میں حاکم و ظالمین غلام چاؤں اس میں پلید کے شر شر بھی لایا گیا ہے۔

نفس المہموم ۴۷۷

تاکہ خبر دینے والے نے خبر دی ہے کہ میرا سید و ماہ و ماہ گیارہ سے میرا دل بڑھ گیا، یہ خبر سن کر مجھے مر رہی لگا لگا آئندہ بہاؤ، بہت زیادہ روڈ اور زیادہ آشک و شکار کو کہ میں نے تمہیں خدا کا پناہ اور دین کی عظمت و جاتی رہی رسول اور ان کے وحی کے پیش پر گریو، اگرچہ ان کی منزل ہم سے بہت دور ہے۔

عالمات کا پیدا کرنے والا ہے وہ اتنا دور ہے کہ گویا آسمانوں میں بلند ترین مرتبہ پر ہے، "مشرقی عقل و فکر کی بلند پروازیوں کی دسترس سے باہر ہے" اور اتنا قریب ہے کہ سرگوشیوں کو سنا ہے بڑی بڑی تختیوں، حوادث زمانہ، فحاش مصائب، دلگداز بلاؤں رنج و الم ہیں خدا کی حمد کرتا ہوں۔

اے لوگو! خدائے تعالیٰ نے کہ ساری تخلیقیں اسی سے مخصوص ہیں، ہمیں بڑی مصیبتوں میں مبتلا کیا، اسلام میں عظیم رخصت پیدا ہو گیا ابو عبد اللہ حسینؑ اور ان کی عزت جہان شہادت سے شرارت بچی، ان کے اہل حرم و بچوں کو سیر کیا گیا، ان کے سرگوشیہ پر بلند کر کے شہر بھر دیا گیا، یہ ایسی مصیبت ہے جس کی نظیر نہیں ہے،

اے لوگو! تم میں سے ایسا کون ہے؟ جو ان کی شہادت کے بعد خوشی منائے؟ یا کونسا دل ایسا ہے جو ان کے لئے نہ تڑپے؟ یا کونسی آنکھ ایسی ہے کہ جو آنسو روک سکے؟ اور سات آسمان جو کہ مضبوط بنائے گئے ہیں ان کی شہادت پر روئے ہیں، دریا اپنی موجوں سے، آسمان اپنے رکنوں سے اور زمین ہر طرف سے، درخت اور ان کی شاخیں پھیلیں اور دکانی پھری ہوئی موجیں، مقرب فرشتے اور آسمان پر رہنے والے سبھی ان پر روئے ہیں، اے لوگو! ہم آوارہ وطن ہوئے، پرگندہ ہوئے گویا ہم ترک و کابل کی اولاد تھے یہ سلوک انہوں نے ہمارے ساتھ اس صورت میں کیا ہے کہ ہم نے کوئی جرم کیا اور نہ کسی ناپسند کام کے تکب ہوئے، یہاں تک ہم نے اپنے بزرگوں کے بارے میں بھی ایسی باتیں نہیں سنیں ہیں یہ لوگوں میں کڑھت ہے،

خدا کی قسم اگر رسول خدا انھیں ہم سے جگہ کرنے کا حکم دیتے تو بھی وہ اس سے زیادہ عظم نہیں کر سکتے تھے، انا لہ وانا الیہ راجعون،

عظیم درد و غم اور فحاش مصیبت ہے اور کتنے تلخ و دہلادینے والے رنج و غم تھے، میں خدا سے اس مصیبت کا اجر چاہتا ہوں جو کہ ہمارے اوپر پڑی ہے، کہ وہی غالب

أَيُّهَا الْقَوْمُ! إِنَّ اللَّهَ وَلَهُ الْخَدُّ أَتْلَانَا بِمَصَانِبٍ جَلِيلَةٍ وَشَلَمَةٍ فِي الْأَرْضِ عَظِيمَةٍ، قِيلَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَعِزَّتُهُ وَشَيْبِ نِسَاؤُهُ وَوَدَارُوا بِرَأْسِهِ فِي الْبُلْدَانِ مِنْ فَوْقِ عَالِي السَّنَانِ وَهَذِهِ الرَّزِيَّةُ الَّتِي لَا رَزِيَّةَ.

أَيُّهَا النَّاسُ! فَأَيُّ رَجَالٍ مِنْكُمْ تَسْرُونَ بَعْدَ قَتْلِهِ؟ أَمْ أَيُّ قَوَادٍ لَا يَحُلُّونَ أَجْلَهُ؟ أَمْ أَيُّ عَيْنٍ مِنْكُمْ تَغْمِسُ دَمْعَهَا وَتَقْضِي عَنْ أَنْهَالِهَا؟ أَمْ لَقَدْ سَمِعَ الشِّدَادُ لِقَتْلِهِ وَبَكَتِ الْبِحَارُ بِأَفْوَاجِهَا وَالسَّمَوَاتُ بِأَرْكَانِهَا وَبَارِزَانِهَا وَالْأَشْجَارُ بِأَغْصَانِهَا وَالْجِبَتَانُ وَلَجَجَ الْبَحَارُ وَالْمَلَائِكَةُ الْكَلَامَ وَأَهْلُ السَّمَوَاتِ أَجْفَعُونَ.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ! أَيُّ قَلْبٍ لَا يَتَصَدَّعُ لِقَتْلِهِ؟ أَمْ أَيُّ قَوَادٍ لَا يَجُودُ إِلَيْهِ؟ أَمْ سَمِعَ يَسْمَعُ هَذِهِ الثَّلَاةُ الَّتِي ثَلَمَتْ فِي الْإِسْلَامِ وَلَا يُضْمُ. أَيُّهَا النَّاسُ! أَصْبَحْنَا مَطْرُودِينَ مُشْرُودِينَ مَذْذُودِينَ وَشَايِعِينَ عَنِ الْأَفْصَادِ أَوْلَادُ تُرْكٍ وَكَاثِلٍ مِنْ غَيْرِ جُزْمٍ اجْتَرَمْنَا وَلَا مَكْرُوهٍ اِزْتَكَيْنَا وَلَا لَنَا فِي الْإِسْلَامِ تَلَفْنَا، مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ (إِنْ هَذَا إِلَّا أَخِيَارُ) وَاللَّهِ لَوْ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ تَقَدَّمَ إِلَيْهِمْ فِي قِتَالِنَا كَمَا تَقَدَّمَ إِلَيْنَا الْوَصِيَّةَ بِنَا لَمَّا أَزْدَادُوا عَلَيْنَا مَا فَعَلُوا بِنَا، فَإِنَّا اللَّهُ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاغِبُونَ مَا أَغْطَعْنَا وَأَوْجَعْنَا وَأَفْجَعْنَا وَأَكْظَعْنَا وَأَفْطَعْنَا وَأَمْرَهَا وَأَلْدَحَهَا نَحْتَسِبُ فِيمَا أَصَابَنَا وَمَا بَلَغَ بِنَا قِيَامُهُ غَزِيْرُ ذُو النِّقَامِ (۲)

تمام تخلیقیں اس خدا سے مخصوص ہیں جو کہ عالمین کا پروردگار ہے، روز جزا کا

اور انتقام لینے والا ہے۔

صو حان ابن صمصم

کے بغیر صورت کمال کا سبب معلوم کرنے پر مصرح ہے، چنانچہ ان کے ایک علامہ نے کہا: اے فرزندِ آدم! آپ کے جہانی ہمراہ کو فوض شرین گئے تھے وہاں کے لوگوں نے ان کے ساتھ غذا رکھی تھی ان کے چاچا زاد جہانی مسلمان ہو گئے اور آپ کو شہید کیا اور آپ وہ اور ان کے اہلبیت و آپس آپ سے ہیں، انہوں نے غلام سے دریافت کیا: پھر وہ میرے پاس کیوں نہیں آتے،

اس نے کہا: آپ کے منتظر ہیں،
 اب جس سے انکھے بھی گروہ سرور بھی انکھنے سے بہوتے تھے کہتے تھے لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی
 و العزیز اس عصیت کا احساس ہو گیا تھا، پھر کہا: خدائی قسم مجھے اس ناسخ میں آل فریقین
 کا ہر گروہ تیرے ہی واسطے کہاں ہے؟ میرا میوہ دل کہاں ہے؟ حسین کہاں ہے؟

محمد بن حنفیہ

لوگوں نے کہا: آپ کے بھائی حسین مدینہ سے باہر فلاں جگہ پر نمودار ہوئے ہیں، محمد سفید کو گھوڑے سے اتر کر خادِم اُترے اُترے آگے چلے، انھیں مدینہ سے باہر لے گئے جیسے باہر پہنچے وہ کئے علاؤ الدین کو پوچھا: یہ کارے پرچم کیسے ہیں؟ خدا کی قسم بنیامیہ نے حسین کو قتل کر دیا ہے، چیخ مار کر گھوڑے سے اترے اور بے ہوش ہو گئے۔

ان کا خادم امام زین العابدینؑ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کیا: مولا اپنے چچا کی خبر لیجئے کہیں وہ زندہ ہو کر چلے۔

اپنے چلے، سگنکھوں سے آنسو جاری تھے، ہاتھ میں لاکا پڑا تھا، جس سے آنسو صاف کر رہے تھے۔

اعلم ان العابدین سے کہا : « یٰ اَہْلَ اِیْمَانٍ ! اَیْنَ اَخِی ؟ اَیْنَ قُرْءُ عَیْنِی ؟ اَیْنَ نُوْرُ

خبري؟! أين أبوك؟! أين خليفته أبي؟! أين أخي الحسين عليه السلام؟! «

مجھے میرا بھائی کہاں ہے؟ میری آنکھوں کا نور کہاں ہے؟ آپ کے والد کہاں ہیں؟ میرے بابا

ہاں ہے؟ میرا بھائی حسین کہاں ہے؟

المسلمین العابدین نے فرمایا : یا غلامہ! ایک یٹیا۔ پچاسیم یٹیم آیا ہوں، میرے ساتھ چے

اس موقع پر صوفیان بن مصعب بن صوفان عبدی نے قد علم کیا کہ تہہ جوئے امام
سے خدو خیز کیا کہ میرے پاؤں علیل و ناتواں ہیں، آپ نے ان کا غر جو بول کیا اور ان کے ہاتھ
کاٹا ہوا کیا اور ان کے والد مصعب کو کینے دعا سے مغفرت کی ہے،

بیشک کہتا ہے: محمد بن حنفیہ کو اہلبیت کے آئے اور حسینؑ کی شہادت کی اطلاع پہنچا
ایک پیچ ماری اور کہا: خلائی قہر میں یہ صورت حال رسولؐ کی وفات کے روز کو بھی تھی
ہے۔ ۹

چونکہ شدید بیمار تھے اسلئے کوئی بھی ان سے عاجز و درماندہ نہ رہا تھا، دُرُتھا تھا کہ

ط الدواعی السابکہ ج ۵ ص ۴۲۷

۵۔ ان کے والد مصعب بن صوحان عظیم المرتبت اور حلیل القدر آدمی تھے۔ امیر المومنینؑ کے محال تھے۔ امام

منقول ہے کہ امیر اہل سنت علیؑ کا کسی نے حق نہیں پہچانا مگر صعبہ اور ان کے اصحاب و احباب نے

فضائل میں، ابن عبد البر نے اہل اصحاب رسول میں شمار کیا ہے، مصنفان کو کلام میں بھی متنبہ رہنا چاہیے۔

عبدالامد ملاک اشتر سے نقل کیا ہے، تنقیح افعال ۲ ص ۸، ۹، ۱۰، ۱۱، ۱۲، ۱۳، ۱۴، ۱۵، ۱۶، ۱۷، ۱۸، ۱۹، ۲۰، ۲۱، ۲۲، ۲۳، ۲۴، ۲۵، ۲۶، ۲۷، ۲۸، ۲۹، ۳۰، ۳۱، ۳۲، ۳۳، ۳۴، ۳۵، ۳۶، ۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰، ۴۱، ۴۲، ۴۳، ۴۴، ۴۵، ۴۶، ۴۷، ۴۸، ۴۹، ۵۰، ۵۱، ۵۲، ۵۳، ۵۴، ۵۵، ۵۶، ۵۷، ۵۸، ۵۹، ۶۰، ۶۱، ۶۲، ۶۳، ۶۴، ۶۵، ۶۶، ۶۷، ۶۸، ۶۹، ۷۰، ۷۱، ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰، ۱۰۱، ۱۰۲، ۱۰۳، ۱۰۴، ۱۰۵، ۱۰۶، ۱۰۷، ۱۰۸، ۱۰۹، ۱۱۰، ۱۱۱، ۱۱۲، ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵، ۱۱۶، ۱۱۷، ۱۱۸، ۱۱۹، ۱۲۰، ۱۲۱، ۱۲۲، ۱۲۳، ۱۲۴، ۱۲۵، ۱۲۶، ۱۲۷، ۱۲۸، ۱۲۹، ۱۳۰، ۱۳۱، ۱۳۲، ۱۳۳، ۱۳۴، ۱۳۵، ۱۳۶، ۱۳۷، ۱۳۸، ۱۳۹، ۱۴۰، ۱۴۱، ۱۴۲، ۱۴۳، ۱۴۴، ۱۴۵، ۱۴۶، ۱۴۷، ۱۴۸، ۱۴۹، ۱۵۰، ۱۵۱، ۱۵۲، ۱۵۳، ۱۵۴، ۱۵۵، ۱۵۶، ۱۵۷، ۱۵۸، ۱۵۹، ۱۶۰، ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴، ۱۶۵، ۱۶۶، ۱۶۷، ۱۶۸، ۱۶۹، ۱۷۰، ۱۷۱، ۱۷۲، ۱۷۳، ۱۷۴، ۱۷۵، ۱۷۶، ۱۷۷، ۱۷۸، ۱۷۹، ۱۸۰، ۱۸۱، ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۴، ۱۸۵، ۱۸۶، ۱۸۷، ۱۸۸، ۱۸۹، ۱۹۰، ۱۹۱، ۱۹۲، ۱۹۳، ۱۹۴، ۱۹۵، ۱۹۶، ۱۹۷، ۱۹۸، ۱۹۹، ۲۰۰، ۲۰۱، ۲۰۲، ۲۰۳، ۲۰۴، ۲۰۵، ۲۰۶، ۲۰۷، ۲۰۸، ۲۰۹، ۲۱۰، ۲۱۱، ۲۱۲، ۲۱۳، ۲۱۴، ۲۱۵، ۲۱۶، ۲۱۷، ۲۱۸، ۲۱۹، ۲۲۰، ۲۲۱، ۲۲۲، ۲۲۳، ۲۲۴، ۲۲۵، ۲۲۶، ۲۲۷، ۲۲۸، ۲۲۹، ۲۳۰، ۲۳۱، ۲۳۲، ۲۳۳، ۲۳۴، ۲۳۵، ۲۳۶، ۲۳۷، ۲۳۸، ۲۳۹، ۲۴۰، ۲۴۱، ۲۴۲، ۲۴۳، ۲۴۴، ۲۴۵، ۲۴۶، ۲۴۷، ۲۴۸، ۲۴۹، ۲۵۰، ۲۵۱، ۲۵۲، ۲۵۳، ۲۵۴، ۲۵۵، ۲۵۶، ۲۵۷، ۲۵۸، ۲۵۹، ۲۶۰، ۲۶۱، ۲۶۲، ۲۶۳، ۲۶۴، ۲۶۵، ۲۶۶، ۲۶۷، ۲۶۸، ۲۶۹، ۲۷۰، ۲۷۱، ۲۷۲، ۲۷۳، ۲۷۴، ۲۷۵، ۲۷۶، ۲۷۷، ۲۷۸، ۲۷۹، ۲۸۰، ۲۸۱، ۲۸۲، ۲۸۳، ۲۸۴، ۲۸۵، ۲۸۶، ۲۸۷، ۲۸۸، ۲۸۹، ۲۹۰، ۲۹۱، ۲۹۲، ۲۹۳، ۲۹۴، ۲۹۵، ۲۹۶، ۲۹۷، ۲۹۸، ۲۹۹، ۳۰۰، ۳۰۱، ۳۰۲، ۳۰۳، ۳۰۴، ۳۰۵، ۳۰۶، ۳۰۷، ۳۰۸، ۳۰۹، ۳۱۰، ۳۱۱، ۳۱۲، ۳۱۳، ۳۱۴، ۳۱۵، ۳۱۶، ۳۱۷، ۳۱۸، ۳۱۹، ۳۲۰، ۳۲۱، ۳۲۲، ۳۲۳، ۳۲۴، ۳۲۵، ۳۲۶، ۳۲۷، ۳۲۸، ۳۲۹، ۳۳۰، ۳۳۱، ۳۳۲، ۳۳۳، ۳۳۴، ۳۳۵، ۳۳۶، ۳۳۷، ۳۳۸، ۳۳۹، ۳۴۰، ۳۴۱، ۳۴۲، ۳۴۳، ۳۴۴، ۳۴۵، ۳۴۶، ۳۴۷، ۳۴۸، ۳۴۹، ۳۵۰، ۳۵۱، ۳۵۲، ۳۵۳، ۳۵۴، ۳۵۵، ۳۵۶، ۳۵۷، ۳۵۸، ۳۵۹، ۳۶۰، ۳۶۱، ۳۶۲، ۳۶۳، ۳۶۴، ۳۶۵، ۳۶۶، ۳۶۷، ۳۶۸، ۳۶۹، ۳۷۰، ۳۷۱، ۳۷۲، ۳۷۳، ۳۷۴، ۳۷۵، ۳۷۶، ۳۷۷، ۳۷۸، ۳۷۹، ۳۸۰، ۳۸۱، ۳۸۲، ۳۸۳، ۳۸۴، ۳۸۵، ۳۸۶، ۳۸۷، ۳۸۸، ۳۸۹، ۳۹۰، ۳۹۱، ۳۹۲، ۳۹۳، ۳۹۴، ۳۹۵، ۳۹۶، ۳۹۷، ۳۹۸، ۳۹۹، ۴۰۰، ۴۰۱، ۴۰۲، ۴۰۳، ۴۰۴، ۴۰۵، ۴۰۶، ۴۰۷، ۴۰۸، ۴۰۹، ۴۱۰، ۴۱۱، ۴۱۲، ۴۱۳، ۴۱۴، ۴۱۵، ۴۱۶، ۴۱۷، ۴۱۸، ۴۱۹، ۴۲۰، ۴۲۱، ۴۲۲، ۴۲۳، ۴۲۴، ۴۲۵، ۴۲۶، ۴۲۷، ۴۲۸، ۴۲۹، ۴۳۰، ۴۳۱، ۴۳۲، ۴۳۳، ۴۳۴، ۴۳۵، ۴۳۶، ۴۳۷، ۴۳۸، ۴۳۹، ۴۴۰، ۴۴۱، ۴۴۲، ۴۴۳، ۴۴۴، ۴۴۵، ۴۴۶، ۴۴۷، ۴۴۸، ۴۴۹، ۴۵۰، ۴۵۱، ۴۵۲، ۴۵۳، ۴۵۴، ۴۵۵، ۴۵۶، ۴۵۷، ۴۵۸، ۴۵۹، ۴۶۰، ۴۶۱، ۴۶۲، ۴۶۳، ۴۶۴، ۴۶۵، ۴۶۶، ۴۶۷، ۴۶۸، ۴۶۹، ۴۷۰، ۴۷۱، ۴۷۲، ۴۷۳، ۴۷۴، ۴۷۵، ۴۷۶، ۴۷۷، ۴۷۸، ۴۷۹، ۴۸۰، ۴۸۱، ۴۸۲، ۴۸۳، ۴۸۴، ۴۸۵، ۴۸۶، ۴۸۷، ۴۸۸، ۴۸۹، ۴۹۰، ۴۹۱، ۴۹۲، ۴۹۳، ۴۹۴، ۴۹۵، ۴۹۶، ۴۹۷، ۴۹۸، ۴۹۹، ۵۰۰، ۵۰۱، ۵۰۲، ۵۰۳، ۵۰۴، ۵۰۵، ۵۰۶، ۵۰۷، ۵۰۸، ۵۰۹، ۵۱۰، ۵۱۱، ۵۱۲، ۵۱۳، ۵۱۴، ۵۱۵، ۵۱۶، ۵۱۷، ۵۱۸، ۵۱۹، ۵۲۰، ۵۲۱، ۵۲۲، ۵۲۳، ۵۲۴، ۵۲۵، ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۵۲۹، ۵۳۰، ۵۳۱، ۵۳۲، ۵۳۳، ۵۳۴، ۵۳۵، ۵۳۶، ۵۳۷، ۵۳۸، ۵۳۹، ۵

اور مصیبت زدہ اور ناکشاں عورتوں کے علاوہ اور کوئی نہیں ہے، اے چچا! اگر آپ اپنے ہاتھوں کو دیکھتے تو کیا کہتے، انہوں نے گولہ سے مدد مانگی مگر کسی نے مدد نہیں کی اور تشنگان ہونے لگے! محمد بن حنفیہ پھر چیخ مار کر بے پوش ہو گئے۔

مدینہ میں داخلہ

الہدیت روز جمعہ اس وقت مدینہ میں داخل ہوئے جب خطیب نماز تہجد کا خطبہ پڑھا اور امام منان کے مصائب پڑھ رہا تھا،

جس سے الہدیت کے خرم تازہ ہو گئے اور ان کے دلوں پر ایک مرتبہ اندوہ و غم چھا کر بلا کے سوگ میں نوحہ کر کے رونے لگے یہ دن ایسا ہی تھا جیسا رسول کی وفات کا روز تھا، ہر گھر عزا داری کر رہے تھے،

ام کلثوم روتی ہوئی مسجد نبوی میں داخل ہوئیں اور قبر رسول کی طرف رخ کر کے کہا اے میرے جد! آپ پر سلام میں آپ کیلئے آپ کے فرزند حسین کی شہادت کی خبر لائی، قبر رسول سے ایک ناز بلند ہوا اس ناز کو سسکوں میں کہا رام بیٹا ہو گیا اس کے ہاتھوں پر قبر رسول کی زیارت کے لئے آئے اور قبر مطہر پر رخصت کر کے کہتے ہوئے گئے۔

راوی کہتا ہے: زینب سائیں اور سچکود و زینب ہاتھوں سے کچھ فریاد کیا، ابھی حسین کی شہادت کی خبر لائی ہوئی، زینب کے آنسو نہیں ٹھمتتے تھے اور ان کے منہ سے تھی اور جب بھی بنی ہاشم کو دیکھ لیتی تھیں ان کا غم تازہ ہو جاتا تھا۔

ط۔ المدونہ الساجد ج ۵ ص ۵۱۲

ع۔ المدونہ الساجد ج ۵ ص ۵۱۲، بیروت نوار ج ۵ ص ۱۲۸

الہدیت

زید رسول اکرم اپنے جھوٹے باہر نکلیں ان کے ایک ہاتھ میں وہ شیشی تھی جس میں تربت حسین کا لہلہا ہوئی تھی اور دوسرے ہاتھ میں فاطمہ بنت حسین کا ہاتھ پکڑے ہوئے تھیں جب الہدیت نے کہا کہ کو دیکھا اور اس خاک کو دیکھا تو خون گئی تھی تو ان کے گریں شدت پیدا ہو گئی، اور ام کلثوم سے کہنے لگی کہ بہت گری کر چکی،

الہدیت

ام المومنین حضرت عباسؓ اور آپ کے دیگر مومنین بھائیوں کی والدہ جو کہ سب کریمین شہید ہوئے،

امام ہند نے ابواسد کی بیٹی ہیں پہلے حبشہ پھر مدینہ ہجرت کی دوسری ہجرت میں رسول کے عقد میں آئیں، امیر المومنین، فاطمہ زہراؓ کے ہم عصرتھیں جو محبت تھی وہ تھوڑے عرصے میں آپ کے ہاتھوں میں آگیا، نتیجہ انتقال ج ۳ ص ۷۲۔

امام فاطمہؓ ہے عزائم بن خالد بن رسیون عالم کی بیٹی ہیں روایت ہے کہ امیر المومنین نے اپنے بھائی عقیل سے کہا کہ اس سب کے علاوہ سے کہا: میرے لئے اسی شریک حیات کا انتخاب کیجئے کہ جس سے شجاعت و دیرینگی ملے، بنی ہاشم کی اس لڑکی سے نکاح کر لیجئے کہ عرب میں مجھے اس کا بار و جلد سے زیادہ شجاعت ہوئے ہو،

امام نے ان سے نکاح کر لیا حضرت عباسؓ فرمایا، ہمد و مدد، حضرت اور عثمان دان کے بیٹے ہیں، ان کے بچان کے مستحکم کام ہیں، ان کا بچا بچا کتا ہے کہ جب شہر مدینہ آیا اور کیے ہوئے دگرے ان کے بیٹوں کی شہادت کی خبری تو ام المومنین نے کہا: میرے بچے کی شہادت کا بھلاؤ، میرے بیٹے اور جو کچھ اس لئے آسمان کے نیچے ہے سب میں ہر فرمان مجھے حسینؓ کی اطلاع دو

المدونہ الساجد ج ۳ ص ۷۲۔

تہ کی عزاداری

عرب بن علی بن ابی طالب کہتے ہیں: شہادت امام حسینؑ کے بعد بنی ہاشم کی عورتیں مدتوں کالا لباس پہنے، سری و گری کی پروا نہیں کرتی تھیں اور پیشہ امام حسینؑ اور دیگر شہداء کربلا کی عزاداری میں لالہ رہتی تھیں، اور علی بن حسینؑ ان کے کھانے کا انتظام کرتے تھے۔

ابو جبر امام حسین

ابو الفرج نے عوف بن خالد سے نقل کیا ہے کہ میں عرب بن خطاب کے پاس بیٹھا تھا کہ ایک لکھی اس کا پاس آیا سلام کیا، عمر نے اس کا نام پوچھا:

اس نے کہا: میں ایک نعلانی ہوں میرا نام امرا عقیس ہے، میں مسلمان ہونا چاہتا ہوں اور اس کو آپ سکھانا چاہتا ہوں،

اس کے سامنے اسلام پیش کیا گیا اور وہ مسلمان ہو گیا اور قبیلہ قضاہہ جو کہ شام میں تھا، کی اس کے سپرد کر دی گئی،

جب وہ مکہ کے پاس سے باہر نکلا تو امیر المومنینؑ سے ملاقات ہو گئی، حمیہ بن ابی اسحاقؑ کے ہمراہ تھے، امیر نے فرمایا: میں رسول کا چچا زاد بھائی اور داماد علی بن ابی طالب ہوں اور میرے بیٹے میں ان کا فاطمہ بنت رسولؐ میں بہتم سے رشتہ داری کرنا چاہتے ہیں،

امرا عقیس نے کہا: اے علیؑ میں اپنی بیٹی ۱۰۰ مہر کا آپ سے دوسری بیٹی، سہلی ۱۰۰ آپ کے بیٹے

بیٹوں کی خبر شہادت سننے کے بعد سر روز جنت البقیع میں جاتی تھیں اور اپنے عزیزوں کی عزاداری میں مدینہ کی دیگر عورتیں بھی آپ کے ساتھ تار و فریاد کرتی تھیں

امام حسینؑ کی عزاداری اور نوکری اتنی غم انگیز اور جاں گداز تھی کہ مروان جیسے امیر جنت البقیع کے پاس سے گذرتا تھا تو امام حسینؑ کا ناکہ سکھر، متاثر ہوتا تھا۔

بیٹوں کے غم میں امام حسینؑ یہ اشعار پڑھتی تھیں:

يَا مَنْ رَأَى الْعَبَّاسَ كَوَّ
وَوَرَاهُ مِنْ أَتْنَاءِ حَيْدَرٍ
أُنَيْتُ أَنْ أَتِيَّ أَصِيبَ
وَيَلِيَّ عَلَى شَيْئَلِي أَمَالٍ
لَوْ كَانَ نَفْيُكَ فِي يَدَيْكَ
لَمَا دَنَى مِنْكَ أَحَدٌ
عَلَى جَمَاهِيرِ الشُّعَدِ
كُلُّ لَيْثٍ ذُو لَيْدٍ
بِرَأْيِهِ مَقْطُوعٌ يَدٍ
بِرَأْيِهِ ضَرْبُ الْعَمَدِ
لَمَّا دَنَى مِنْكَ أَحَدٌ

لَا تَدْعُونِي وَيْلَكَ أُمُّ النَّبِيِّينَ
كَانَتْ بَلُونُ لِي أَدْعَى بِهِمْ
أَرْبَعَةٌ مِنْ نُسُورِ الرُّبُوبِ
ثُمَّ وَاصِلُوا الْعَوْتَ يَقْطَعُ الْوَيْلُ

۱۔ حیات الامام حسینؑ ج ۳ ص ۴۳۰

۲۔ وہ شخص جس نے عباسؑ کو تر بیٹوں کے نوے پر حملہ آور دیکھا ہے اور ان کے ساتھ حیدر کے بیٹوں کو ملے اور دیکھا ہے اس نے مجھے بتایا ہے کہ میرے بیٹے کا سر زخمی اور بازو قلم ہو گئے اور میرے ہاتھ میں تلوار تھی اور پھر سر زخمی ہوا تو فلسوس کی جا بے کو کو کھن وقت کوئی ان کے خریب نہیں آسکا۔ اب مجھے ام المومنینؑ نے کہا: کہ اس سے مجھے میرے شہر سے بیٹھا دیکھا میں نے ان بیٹوں کی وجہ سے مجھے امیر کوئی بیٹا نہیں ہے میرے وہ چاروں بیٹے شہید ہو گئے جو نیزہ واز قہاؤں کی مانند تھے۔

نفس المصنوع ص ۲۱۳۔

حسن سے اور میری بی بی ربابہ کا حسین سے شکرتا ہوں،

کتاب اغانی کے مولف کہتے ہیں: اسی دن رات ہونے سے پہلے علیؑ نے اپنے پیچھے
امیر القیس کی دختر رباب سے کردیا، رباب کے بطن سے بچے، عبداللہ، اصغر، و سکینہ پیدا ہوئے۔
ہشام بن سائبؓ لکھتے ہیں: رباب بزرگہ عورت تھی، اور ان کے والد امیر القیس
شریف خاندان میں شمار ہوتے تھے، امام حسینؑ بھی رباب کو بہت عزیز رکھتے تھے، ہشام
کہتے تھے، چنانچہ امام حسینؑ کے یہ اشعار، رباب اور ان کی دختر سکینہ کے بارے میں ہیں:

لَعَنَوكَ اِنْ نَبِيٍّ لَّا حِبَّ دَارًا تَكُونُ بِهَا مُكَيَّفَةً وَالْوَسَاةَ
أَحِبُّهُمَا وَأَبْذُلُ جُلٍّ مَالِي وَلَيْسَ لِعَاتِبٍ عُنْدِي عِتَابٌ^(۱)

روایت ہے کہ شہادت امام حسینؑ کے بعد رباب تاحیات روتی رہیں،

ابن اثیر کہتے ہیں: رباب امیروں کے قافلہ کے ساتھ شام گئیں اور جب مدینہ واپس آئیں
قریش نے ان سے نکاح کا چیلنج کیا مگر رباب نے ہر ایک کا پیغام یہ کہہ کر ٹھکرا دیا، فرزند رسولؐ کی
حیات بننے کے بعد میں کسی دوسرے کے گھر چلے نہیں جلاؤں گی، زندگی بھر روتی رہی اور زیرِ آسمان کسی
کے نیچے پناہ نہیں لی یہاں تک کہ فرط غم سے جلاں بنی ہو گئی،

بعض مؤرخین کا قول ہے کہ رباب ایک سال تک قبرستان کے پاس رہی پھر مدینہ لوٹ آئیں
غم میں وہیں انتقال کیا انہوں نے امام حسینؑ کا مرنے کا طریقہ اس طرح لکھا ہے،

إِنَّ الَّذِي كَانَ نُورًا يَنْتَضَاءُ بِهِ بِكَزْبَلَا قَتِيلٌ غَشِيَتْهُ
بَسْبَطُ النَّبِيِّ جَزَاكَ اللَّهُ صَالِحَةً عَنَّا وَجَنَّتْ خُشْرَانُ الْعَوَالِمِ

۱۔ مقدمہ زخار ص ۵۴۳،

۲۔ آپ کی قسم میں اس گھر کو دوست رکھتا ہوں کہ میں رباب اور سکینہ ہوں، دونوں کو چاہتا ہوں اور ان کے
اور قباب کرنے والے کو میرے نزدیک قباب کا حق نہیں ہے، نفس المہجوم ص ۵۲،

لَا كُنْتُ لِي جَبَلًا صَغِيرًا أَلُوذُ بِهِ مِنْ لَيْتَامِي وَمَنْ لِلنَّاسِ لَيْتَامٍ وَمَنْ
يَنْفِي وَيَأْوِي إِلَيْهِ كُلُّ مُسْكِينٍ وَاللَّهُ لَا يَنْفِي صَغِيرًا بِصَغِيرَتِهِمْ حَتَّى أَغْتَابَ بَيْنَ الزُّمَلِ وَالطَّيْنِ ۱

عقیل کا مرنے کا طریقہ

عقیل بن ابی طالبؓ کی دختر نے بھی امام حسینؑ اور ان کے با و خاں صاحب کے شیر میں یہ اشعار کہیں

عَقْنِي ابْنِي بِغَيْرَةِ وَعَوِيلٍ وَأَنْذِبِي إِنْ نَذَبْتَ آلَ الزُّمَلِ
بِسَفْتِ كُلِّهِمْ لَصْلِبِ عَلِيٍّ قَدْ أَصْبَحُوا وَخَسَفَتْ لِعَقِيلِ ۲

۱۔ مقدمہ زخار ص ۵۴۳ میں ہے کہ رباب میں قتل کر دیئے گئے، اور دفن نہیں کئے گئے، اے فرزند رسولؐ بھاری
موت سے خدا آپ کو جزائے خیر عطا کرے اور میرا ان کے خسار سے سے محفوظ رکھے آپ میرے لئے حکم چاہیں تھے میں جبراً
پاؤں دلتی تھی آپ ہمارے دین اور مہربان صاحب تھے اب تمہیں اور بیٹوں کا خون ہے؟ اور سائیں کہ گھر جائیں اور کہاں پناہ
میں حد تک قسم ہے کہ میری کسی سرکوبی نہیں کروں گی، مقدمہ زخار ص ۵۴۳، نفس المہجوم ص ۵۲،

۲۔ مقدمہ زخار کے مولف نے اس قانون کا نام نہیں لکھا ہے جو کہتا ہے کہ نام اسرار ہو جس کا مطلبی نے جلاؤں کی ج ۵۴
ص ۸۸ پر نقل کیا ہے، جب امام حسینؑ کی شہادت کی خبر مدینہ پہنچی تو اسرار بنت عقیل بن ابی طالبؓ کچھ عورتوں کے ساتھ اپنے گھر
اور رسولؐ کے پاس جا کر فریاد کی پھر سہا جریں والدہ کو مخاطب کر کے کہا: ما زلتون ان ذل الیٰ لکم، یومہا
وہو قاتلہ رسولؐ، تاریخ کامل ص ۸۸، پر ہے کہ جب مدینہ میں امام حسینؑ کی شہادت کی خبر پہنچی تو
ابا تمہی عورتیں روتی بیٹھی ہوئی نکلیں ان میں دختر عقیل بھی تھیں، شیخ مفید نے ارشاد دیا ص ۸۸، پر اس قانون کا نام لکھا
ہے، ما میری گھٹو! الٰہک و فریاد کے ساتھ کہہ کر وہ رسولؐ کے غم میں جوں جوں ان چھ انخاص پر جو علیؑ کے صاب
تھے اور شہید ہوئے اور عقیل کے پاؤں بیٹوں پر، مقدمہ زخار ص ۵۴،

حضرت سجادؑ کی اشک فشان

امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں: امام زین العابدینؑ اپنے والد کے مصائب اور چالیس سال تک دوتے رہے جبکہ دنوں کو روزہ رکھتے اور راتوں کو سیدار ہجر خدا کی عبادت میں گزارتے تھے اور جب خادم ان کے سامنے افطار لاتا تو روتے ہوئے اس سے فرماتے: میں کس طرح (اللہ) کروں جبکہ میرے والد شہید شہید کئے گئے ہیں،

خادم امام زین العابدینؑ نقل کرتا ہے: ایک روز میں آپؑ کی تلاش میں محراب میں چلا گیا کہ ایک پتھر پر عبادت کر رہے ہیں اور نجدہ میں سر کھٹک کر رہے ہیں:

« لا إله إلا الله حقاً حقاً لا إله إلا الله تعبدوا و رقاً لا إله إلا الله إيماناً و صدقاً »
میں نے گنا کر آپؑ نے یہ کلمات ہزار بار دہرائے جب نجدہ سے سلاطین با توہم نے عرض کیا: مولانا! کیا اچھی وہ وقت نہیں آیا ہے کہ آپؑ کم کر لیں؟

فرمایا: افسوس ہے تمہارے حال پر حضرت یعقوبؑ کے بارہ بیٹے تھے اور ان میں سے ایک کی آنکھوں سے سلا جھل ہو گیا تھا تو اس کے فراق میں وہ اتنا روتے کہ بال سفید ہو گئے، کوجھک کر آنکھوں کا نور جاتا رہا، میں نے تو اپنے والد، بھائی، چچا اور دوسرے عزیزوں کی تلاش میں زمین پر گھڑے کھڑے کیا ہے۔

ایک قول یہ ہے کہ آپؑ نے فرمایا: میں جب بھی اولادِ طاغوت کو عاشورہ کے آئینہ میں دیکھتا ہوں، اپنی چھوٹی چھوٹی آنکھوں کو دیکھتا ہوں تو میرا غم تازہ ہو جاتا ہے اور آنکھوں سے سلا بہا ہو جاتا ہے۔

۱۔ المہجوت ص ۸۷، ۲۔ بحار النوار ج ۳ ص ۳۵۹

امام حسینؑ پر اصحاب رسولؐ کی اشک فشان

الہدیت کی مدینہ واپسی کے بعد سید الشہداءؑ کے سوگ میں بی ہشتم بھی بہت محزون و غمگین ہوئے۔ ایک ایک ان کا غم مناتے اور زاداری کرتے رہے اور رسولؐ کے من رسیدہ اصحاب جیسے مسور بن مخرمہ وغیرہ غمگین طور پر بین بستے اور ان کے ساتھ امام حسینؑ کے غم میں آنسو بہاتے تھے۔

حکایت

زمین کے بری پیشانی اپنے بھائی اور الہدیت کے سوگ میں نہر کرتی اور روتی تھیں ان کے آنسو بھی گرتے تھے، ان کی گریہ و زاری میں کی نہیں ہوتی تھی، جس وقت وہ اپنے بھتیجے امام زین العابدینؑ کی دستِ تکیہ پر چھٹ جاتا تھا اور گندے ہوئے دلخاش مصائب قلب بر مادیے اور آنکھوں سے آنسو گزرتی تھی وجہ یہ کہ امام حسینؑ کی شہادت کے بعد وہاں سے زیادہ زندہ نہ رہ سکیں۔

اور ابن مرجانہ کا شکریہ

دوسری طرف زید نے ابن مرجانہ کا اس لئے شکریہ ادا کیا کہ اس نے فرزندِ رسولؐ کو شہید کیا ہے۔ امام و احترام سے نوازا اور اسے اس مضمون کا خط لکھا۔

۱۔ الامام حسینؑ ج ۳ ص ۳۷۷

۲۔ الامام حسینؑ ج ۳ ص ۳۷۸

امام بعد : حقیقت میں ہندی تم نے پانی ہے اور اس منصب پر فائز ہوئے جس پر
ہوتم شاعر کے اس شعر کے مصداق ہو

رُفِغَتْ فِجَاوَزَتْ السَّحَابَ وَفُوقَهُ فَمَا لَكَ إِلَّا مُرْتَقَى السَّنَنِ مَلْعَا

میرا خط ملتے ہی شام کی طرف روانہ ہو جاؤ، میرے پاس آؤ تاکہ تمہیں انعام سے نوازاں
ابن زیاد اپنی حکومت کے راکمیں کے ساتھ شام کی طرف روانہ ہو گیا وہاں پہنچا تو بنی اسلم
اس کے استقبالیہ شہر سے باہر گیا اور جب ابن زیاد دین کے قصر میں داخل ہوا تو بنی یزیدی کے
کو گھلے سے گایا اس کی پیشانی کو چوہا اپنے تخت پر بٹھایا اور زخمی سر سے کہا ہلا خنجر سرتی کرے، اور سائی

إِسْقِيَنِ شَرْبَةَ تَرْوِي فُؤَادِي ثُمَّ جَلَّ وَأَسْقَى وَيُظَلِّهَا أَنْبَسُ
مَوْضِعَ السَّيْرِ وَالْأَمَانَةِ عِنْدِي وَعَلَى نَفَرٍ مَغْنَمِي وَجِهَادِي

عبداللہ بن زیاد ایک ماہ شام میں رہا، یزید نے اسے دس دلاکھ درہم انعام میں دیئے اور
سود کو بخشے اور ایک سال کا علاقہ کا خراج بھی عبداللہ بن زیاد کو دیدیا، ابن زیاد سے محبت و عقیدت
انہما میں جانتے کہ اسے اپنے خاندان میں شام کیا، یہاں تک کہ جب عبداللہ بن زیاد کا بھائی یزید بن زیاد
پاس شام گیا تو یزید نے اس کے بھائی کی وجہ سے اس کا اکرام کیا نیز اس سے کہا: آگاہ ہو ستمانی
محبت و فرض ہے دن بھر اس کے ساتھ تہمتیں کرتا رہا اور خراسان کے مضامین کی فرمانروائی اس
کردی،

یزید نے ابن زیاد کا سلسلے و نسکریہ ادا کیا تھا کہ اس نے کال رسول کا خون بہایا تھا
تھا کہ زیاد نے اس کی حکومت کے پائے حکم کر دیئے ہیں سلا

تم نے بہت ہندی پانی یادوں سے نہ کرنا سے چرچہ گئے اب تو تہاری نگہ سورج سے چہ نہیں ہے،
م مجھے ایسا مشروب دے کہ جس سے مراد میرا لب ہو جائے اور پھر ایسے ہی جام سے ہمیں یاد کو میرا لب

دل رہے اور وہ میری نینت و چہا کی سرحدوں پر ہے، حیات الامام حسین ج ۳ ص ۳۹۲
استغفر اللہ تروی شائیں، ممل فاسق شعا این زیاد
تہا یہ شراس طرح مرقوم ہے صاحب اسروالامانہ فکا، وتمدین منمنی و جہادی، ج ۱ ص ۱۱۲

گیارہویں فصل

فضیلت زیارت امام حسین

آپ کی زیارت کی فضیلت میں بلکہ اس کے واجب ہونے کے سلسلے میں بہت زیادہ روایات
آئی ہیں،

امام جعفر صادق سے روایت گئی ہے کہ آپ نے فرمایا:

« زِيَارَةُ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَاجِبَةٌ عَلَى كُلِّ مَنْ يَقُولُ لِلْحُسَيْنِ بِالإِمَامَةِ مِنْ
امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً
امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً
امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

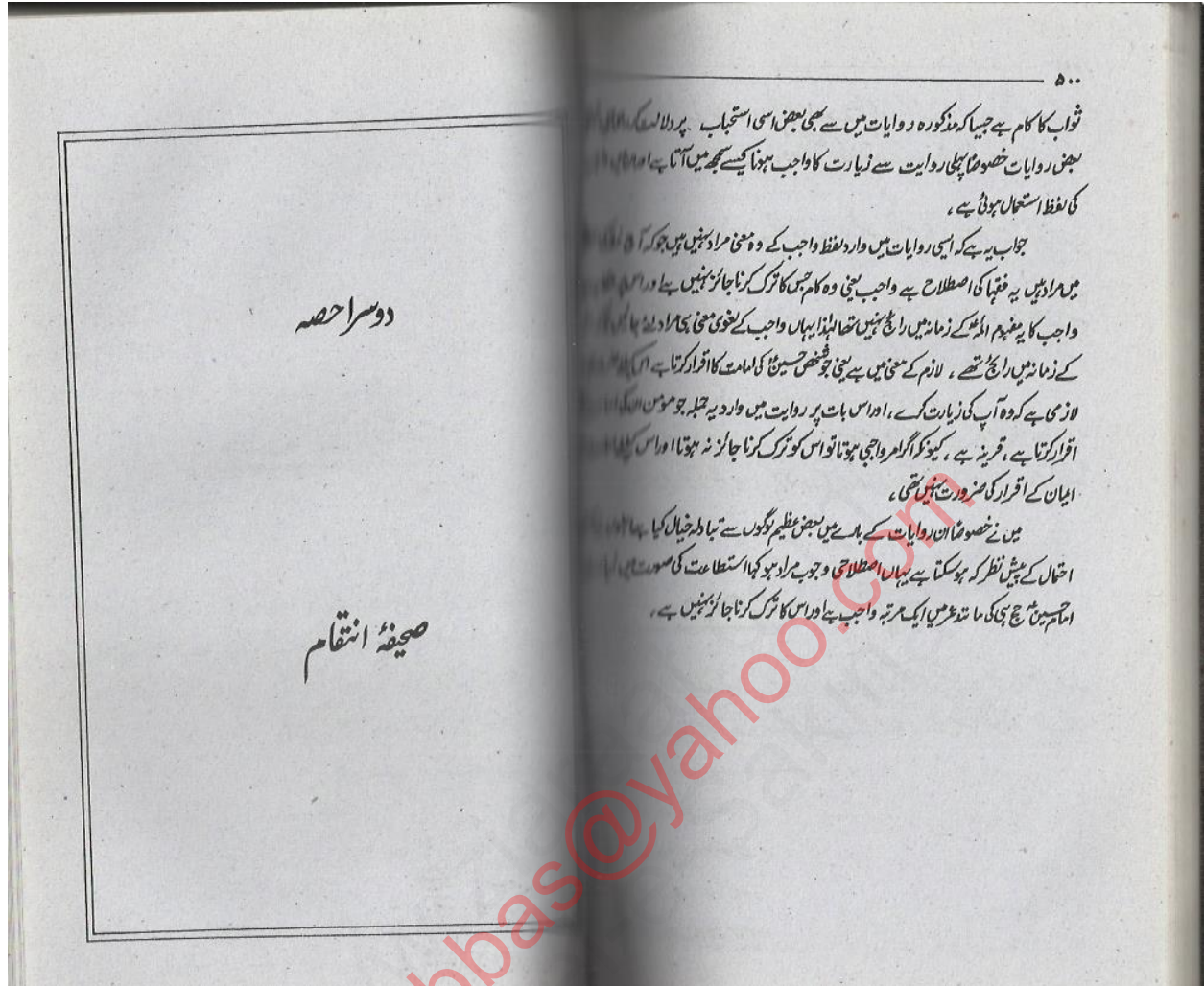
امام حسین کی زیارت ہر اس شخص پر واجب ہے جو یہ اقرار کرنا ہے وہ خصوصاً

مستحب ہے یا واجب

زیارت امام حسینؑ کے بارے میں جو روایات اور نقل و نقل کا یہیں ممکن ہے انہیں پڑھ کر قاری
 یہاں سوال پیدا ہو کہ زیارت امام حسینؑ کے بارے میں ہم نے تو یہ سننا تھا کہ یہ مستحب اور

(۸) زید شحام نے امام جعفر صادق علیہ السلام سے نقل کیا ہے کہ قبر حسینؑ کی زیارت
نزدیک میں حج کے برابر بلکہ اس سے بھی زیادہ افضل ہے۔

ثواب الاعمال وعقاب الاعمال ص ۱۱۷



پہلی فصل

شیعہ شہادتِ حسین کے بعد

امامی

شہادتِ امام حسینؑ کے بعد اہل عراق کو بہت افسوس ہوا اور اپنے کئے پر کہ جس کی بنا پر امام حسینؑ
موتے تھے بہت پشیمان ہوئے، عہدِ اندھن حر و مکہ کو ذکے شرفاء میں سے تھے اور امام حسینؑ نے
اپنی انہیں اپنے ساتھ آنے کی دعوت دی تھی لیکن وہ نہیں آئے تھے، اپنے اس فعل پر اتنے پشیمان ہوئے
کہ آپؑ کی روح قفسِ عمری سے پروا کر جائے کہنے لگے،

فَإِلَّاكَ خَسِرَةٌ مَا دُمْتُ حَيًّا

تَرَدُّدُ بَيْنِ رُوحِي وَالتَّرَاقِي

مُسْتَعِينُ جِنِّ يَطْلُبُ بِذَلِّ نَضْرِي

عَلَى أَهْلِ الصَّلَاةِ وَالنِّفَاقِ

عِدَاةُ يَقُولُ لِي بِالنَّصْرِ قَوْلًا

أَكْزَمُنَا وَتَزْمَعُ بِالْفِرَاقِ

jabir.abbas@yahoo.com

وَلَا أُنْصِي أَوَاسِيَةَ بَنِي سُلَيْمٍ

لَبِثْتُ كَرَامَةً يَوْمَ الثَّلَاقِ

مَعَ ابْنِ الْمُصْطَفَى نَفْسِي بَدَا

تَوَلَّى ثُمَّ وَدَّعَ بِانْطِلَاقِ

فَلَوْ فَلَقَ الثَّلُثُ قَلْبَ حَيٍّ

لَهُمُ الْيَوْمَ قَلْبِي بِانْطِلَاقِ

فَقَدْ فَازَ الْأَمَلُ نَصْرُوا حُسْنًا

وَحَابَ الْأَخْرُونَ أُولُو الْبَقَا (۱) (۲)

ایک خط لکھا اور انہیں اپنے حالات سے آگاہ کیا،

صفیہ نے اپنے شوہر سے کہا: کہ بڑی کو خط لکھ کر مختار کو قید خانہ سے آزاد کرا لے عبداللہ بن عمر
اس لیے میں بڑی کو خط لکھا، اسی طرح ابوسفیان کی بیٹی حند نے مختار کے قید کے ساتھ عبداللہ بن
عمر کے ساتھ شام کی۔

کاظم

بڑی نے عبداللہ بن زیاد کو خط لکھا اور دو آدمیوں کی رہائی کا حکم دیا، عبداللہ نے مختار کو آزاد
کرا لیا اس سے یہ عہد کیا کہ تین روز سے زیادہ کو وہیں نہیں ٹھہریں گے اور اگر کوئی سے نکلے تو تاخیر
کر کر کے ماری جائے گی، مختار کو ف سے جہاز کی طرف روانہ ہوئے، واقعہ پہونچے تو مصعب
انہی سے ملاقات ہوئی، مصعب نے کہا: ابواسحاق تمہاری آنکھیں کیا بھا؟

مختار نے کہا: عبداللہ بن زیاد کی مہربانی ہے! اگر میں اسے قتل کر کے ٹکڑے ٹکڑے نہ کروں تو
موت دے اور قاتلان امام حسین میں سے میں بھی بن کر کیا کے قاتلوں کے کہ کستر ہزار تھے، برابر قتل

ہوا: قسم اس خدا کی جس نے قرآن نازل کیا، فرقتاں یہاں کیا اور ادیان کی تشریع کی اور عصیان
یہاں کیا، میں قبیلہ ازد، عجم، مدح، ہمدان، ہند، خولان، کبر و ہزان، شعل و بنہان، عس و فہان
یہاں کیا، میں ان کو خدائے رحمان کے رسول کے فرزند کے انتقام میں قتل کروں گا پھر ہر کسی کی طرف روانہ

میں نے مختار سے ملاقات کی تو دیکھا کہ ان کی آنکھ زخمی ہے میں نے پوچھا: یہ
کے قتل کے لیے؟ یہ عید اللہ ابن زیاد کی مہربانی ہے، فتنہ کے رعد و برق ظاہر ہو گئے
اور اوقات ان پہونچا اس کے وقت کی مہار چھوٹ گئی اور دم اٹھا کر دھڑکے اطراف میں پھار پھا

شعبوں کی تحریک کی تدارک یعنی اسی سال سے ہوئی جس سال امام حسین شہید
تھے وہ اٹھ جرح کرنے اور جنگ کی فکر میں پڑ گئے اور خفیہ طور پر ایک دوسرے کو فوجوں
انتقام لینے کی دعوت دینے لگے یہاں تک کہ بڑی بن معاویہ اپنے کھنجر کار کو پہونچا تا

قید خانہ سے خط

شہادت امام حسین کے بعد مختار نے اپنی بہن صفیہ بنت ابی عبیدہ کو جو کہ عہد
میں زندہ بھراوا خفیہ دم تک افسوس گزار رہا تھا نے مجھ سے ملایا اور اس افسوس کے خلاف مدد کرنے کے لیے کہا
تو کہ مجھ سے تمہاری مثال کا تھا، جس چھوڑ کر گئے ہو؟ انہیں نے ان کی مدد کی ہوئی تو کئی قیامت میں کا رہا
رسول انہیں ان کے قربان ہیں چھوڑ کر گئے اگر چہ بیعت کے ٹکڑے کے تواج یہ بیعت میرے دل کے ٹکڑے کے لیے
جینوں نے حسین کی مدد کی، اور منافق کھائے میرے، تا بحال ۱۵ مارچ ۶۵۵ء کا ان ابی اثیر
صفیہ کو لکھا کہ اب اس کو قید کر کے رکھو کہ وہ فتنہ کو بہت چاہتی تھیں اور شب و روز مختار کو قید سے
مستحق، جبکہ قید سے چھوڑ کر ان کے پاس لے آؤ یہ ان کی آنکھ کا کدہ چھوڑا تھا تو بیچہ مگر یہ پیش ہو کہ

توابین

جب امام حسینؑ شہید ہو گئے تو ابن زیادؓ کو فخر کے نزدیک کیا چھوڑی ۔۔۔ سے کیا کوڑوں میں شہید ایک دوسرے سے ملاقات کے ملاقات کرتے اور مذمت و پشیمانی کا اظہار کرتے وہ اچھی طرح سمجھ گئے تھے کہ بہت بڑی خطائے ترکیب ہوئے ہیں، کیونکہ امام حسینؑ کو دولت و شہر و دیار میں بلایا اور پھر ان کی آواز پر لپک نہ کہا: اور ان کی مدد سے پہلو بچی کی یہاں تک کہ امام حسینؑ ہو گئے وہ اس حقیقت کو بخوبی سمجھتے تھے کہ یہ گناہ قابل معافی نہیں ہے اور ان کے دامن سے عار کا دھبہ نہیں جھوٹ سکے گا مگر یہ امام حسینؑ کے قاتلوں سے انتقام میں یا اس راہ میں خود مارا اس وقت کوڑوں میں پانچ آدمی ایسے تھے جو شیعوں کے سردار سمجھے جاتے تھے اور وہ تھے:

- ① سلیمان بن مردخائی، رسول کے صحابی تھے،
- ② مسیب بن نجہ، قراری،
- ③ عبداللہ بن سعد بن نضیل ازدی،
- ④ عبداللہ بن وال، عینی،
- ⑤ رفاعہ بن شہد، دجلی،

یہ پانچ حضرت علیؑ کے گزندہ اصحاب میں سے تھے، چنانچہ شہید سلیمان بن مردخائیؓ کے

توڑیں وہ لوگ ہیں جو کہ امام حسینؑ کے شہید ہونے کے فوراً بعد نام و پشیمان ہوئے جب امام حسینؑ شہید ہو گئے تو ان میں ایک آدمی نے کھڑے ہو کر کہا: اگرچہ اسے خاموش کرنا چاہا، میں نے نہ کرنا چلاؤں جب کہ میں دیکھ رہا ہوں کہ زمین کھل کر دیکھ رہی ہے کہ کبھی نہیں اور نہ ہی جگہ کو دیکھ رہی ہے، زمین کھل کر دہم پر غریبوں کی ہر گز میں سے نہیں نے کہا: یہ دروازہ کھل گیا، تو انہوں نے کہا: خدا کی قسم ہر ایک کے بیٹے کو جنت کی جگہ دے گا کہ کھانا پڑھنے کے بعد انہوں نے ہندیا کے خلاف خروج کیا، ہمارا دنوں ۱۵۹، یا اس میں

سب بن نجہ کی تقریر

پہلے سب بن نجہ نے تقریر کا آغاز کیا، انہوں نے خدا کی حمد و ثناء کے بعد کہا: ہم غرہ کر زما نے ہیں اور مختلف قسم کے فتنوں میں گھومتے چلے آ رہے ہیں، خدا سے دعا ہے کہ ہمیں ان لوگوں میں قرار دے جو اس قیامت میں ہیں گئے ﴿أُولَٰئِكَ نَعْتَدُكُمْ مَا يَنْذِرُكُم مِّنْ تَذَكُّرٍ﴾

امیر المؤمنین علیؑ نے فرمایا: خدا نے ابن آدم کو جس طرح مہذب و رکھا ہے وہ ساتھ ساتھ ہے اور اس سے ایک بھی ایسا نہیں ہے، جو ساتھ ساتھ سال کا نہ ہوا اور ہم نے نہ صرف یہ کہ اپنا نزدیک نہیں کیا ہے بلکہ اور ہم میں مبتلا ہو گئے ہیں اور دسترسوں کے بیٹے کے سلسلے میں خدا کے نزدیک جھوٹے قرار پائے، ان کے اور قاصد ہمارے پاس آئے انہوں نے ہم پر رحمت تمام کیا، ہم سے مدد طلب کی اور ہم نے ابتداء و ہم اس کی مدد سے روگردانی کی اور جان و مال اور زبان سے ان کی مدد نہ کیا یہاں تک کہ وہ ہمارے کام مار گئے تھے پھر خدا کے سامنے بہتر سے ملاقات کے وقت کیا غلطی پیش کریں گے جبکہ رسول خداؐ نے انہیں اور ان کی دیت ہمارے علاقہ میں قتل کی گئی ہے،

خدا کی قسم ہمارے پاس اس کے سوا کوئی مدد نہیں ہے کہ ہم ان کے قاتلوں نیز ان لوگوں کو قتل کریں جنہوں نے ان کے خلاف جنگ میں شرکت کی ہے یا ہم ہم خود اس راہ میں اس امید کے ساتھ ہمارے ہیں کہ خدا ہم سے راضی ہوگا اور اس سے ملاقات کے وقت خود کو اس کی منزل سے محفوظ رکھیں جتنا

اے لوگو! کسی آدمی کو اپنا امیر بناؤ تو تیار کوئی رہبر ہونا چاہیے جس کے دامن میں تم نہا لے سکواؤ

اس کو اپنا چاہیے کہ جس کے نیچے تم جمع ہو سکو۔

ابن ابی شیبہؒ ص ۱۵۹

رفاع بن شداد کی تقریر

پھر رفاع بن شداد کھڑے ہوئے اور مسیب بن خنیز کو مخاطب کر کے کہا: خدا نے آپ کو اپنی کئی باتیں بہترین تقریر کی، فاسقوں سے جنگ اور اس عظیم گناہ کی تلافی کا بہترین مشورہ دیا۔ ہم تکلیف ہو چکے ہیں ہم نے آپ کی بات سنی اور آپ کی دعوت قبول کر لی ہے، رہی آپ کی یہ بات کہ اگرچہ ہم نے آپ کو کئی باتیں کہنے پر مجبور کیا ہے تو ہمیں بھی اس سے متعلق بیویوں اگر آپ ہمارے امیر ہیں تو بہت اچھی بات ہے کہ آپ غلطیوں اور ہمارے درمیان محبوب ہیں اور اگر آپ اور دوسرے بہتر سمجھیں تو مسلمان مرد خزانہ کو ہمارا امیر مقرر کر دیں کہ وہ بہترین مشیر رسول اللہ کے معاملہ میں پسندیدہ اور بہتر آدمی ہیں۔

پھر عبداللہ بن سعد کھڑے ہوئے اور رفاع بن شداد کی تقریر کی اور مسیب و سیلان کی مدح کی اور وقت مسیب نے کہا: آپ نے خشک مشورہ دیا ہے، سیلان بن مرد کو اپنا امیر بنا لیا۔

سیلان بن مرد کی تقریر

انہوں نے خدا کی حمد کے بعد کہا، مجھے اس بات کا ڈر ہے کہ کہیں اس زمانہ میں کہ جس میں ان دشوار مصیبتوں کے پہاڑ اور ظلم کا عام رواج ہے ہم شیعوں کی کوئی حیثیت نہیں ہے اگر ہم نے نیکی و صلاح اختیار نہیں کیا ہے، ہم نے خود کو رسول کے اہلبیت کی آمد کیلئے تیار کیا، انہیں یہاں آنے کی ترغیب دی ان سے مدد کرنے کا وعدہ کیا اور جب وہ ہمارے پاس آئے تو ہم نے غزوہ کربلا کی خبر سن کر انہیں

رہے یہاں تک کہ ہمارے رسول کے فرزند اور پارہ تن کو قتل کر دیا جبکہ وہ فریاد کر رہے تھے اور انصاف کا مطالبہ کر رہے تھے، لیکن ہم نے ان کی آواز پر لبیک نہ دی اس کے عکس فاسقوں نے انہیں تیروں اور بیڑوں کا نشانہ بنایا اور انہیں ظلم کے ساتھ قتل کر کے پاس تک اتار لیا۔

کیا اب بھی انہیں اٹھو گے؟ خدا تم سے ناراض ہو گیا ہے اب اس وقت اپنے گھر اور بیوی بچوں کو پاس واپس نہ جاؤ جب تک خدا کو راضی نہ کر لو، خدا کی قسم میں نہیں سمجھتا کہ خدا راضی ہوگا اس کے کہ تم صلیبی کے قاتلوں سے جنگ کرو، موت سے نہ ڈرو، کیونکہ جو موت سے ڈرا وہ اپنا دنیاوی ملک کی مانند ہو جاؤ کہ جب ان کے پیسے ان سے کہا:

﴿إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ﴾ ﴿فَقُولُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاذْكُوا أَنْفُسَكُمْ﴾^(۱)

پھر وہ تیار ہو گئے اور جب انہیں یہ معلوم ہو گیا کہ انہیں اس عظیم گناہ سے قتل ہونے ہی کی بجائے پھر تیار ہی اس وقت کیا حالت ہوگی جب ہمیں پکارا جائے گا، اپنی تلواریں پیچھ کر سے تیار کر لو ﴿وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطٍ الْغَيْلِ﴾ پکارا کہ

اس کے بعد خالد بن سعد بن نفیل کھڑے ہوئے اور کہا: خدا کی قسم اگر مجھے یہ معلوم ہو جائے کہ میری لگائیہ معاون ہو جائے گا تو میں خودکشی کر لیتا میں آپ حضرات کو گواہ قرار دیتا ہوں کہ میں نے ملا وہ اپنا سارا مال موسیٰ پر تصدیق کیا تاکہ وہ فاسقین سے جنگ میں خرچ کریں،

ابو ستر کھڑے ہوئے اور خالد بن سعد بن نفیل کی بات کہی، پھر سیلان بن مرد نے کہا: کافی ہے جواب کا کرنا چاہتا ہے وہ عبداللہ بن ولید تہی کے پاس آئے ہیں تاکہ ان کے والدی اشباہ ان کے پاس رکھ دے اور جب ضروری اشیاء ان کے پاس فراہم ہو جائیں ان اسلوں سے خود کو مسلح کریں گے۔

مدائن والوں کے نام

مدائن میں بھی کچھ شیعوں تھے جن کے رئیس سعد بن حذیفہ بن یمان تھے، تحریک تو ابیہ کے بن مروانہ انھیں اس مضمون کا ایک خط لکھا: تمہارے بھائیوں نے اس بات پر اتفاق کر لیا کہ خون حسین کا انتقام ہمیں گے اسی خط میں انہوں نے حمر بن عدی اور خذلافی کی شہادت کا تذکرہ کیا اور توبہ کرنے کی ترغیب دلائی۔

مثبت جواب

جب سعد بن حذیفہ نے سلمان کا خط مدائن کے شیعوں کو سنایا تو انہوں نے جواب دیا کہ تعاون کریں گے اس کے بعد سعد بن حذیفہ نے سلمان کو خط لکھا کہ شیعوں آپ کے حکم کے منتظر ہیں۔

ابی بصرہ کے نام

سلمان بن مروان ابی بصرہ اور وہاں کے شیعوں کے نام اس مضمون کا ایک خط لکھا اور وہی جواب دیا جو مدائن والوں نے دیا تھا۔

۱۔ کامل ہیئ تاریخ ص ۱۶۱

۲۔ کامل ہیئ تاریخ ص ۱۶۱

کی ہلاکت

ابی بصرہ کو فہرستان بن مروان کی سرکردگی میں جنگ کے وسائل اوزار جمع کرنے اور فوج کو آمادہ کرنے میں مشغول تھے کہ یزید بن معاویہ ہلاک ہو گیا۔ اس وقت عبداللہ بن زبیر کو فہرستان موجود تھا۔ ابی بصرہ میں تھا۔ فہرستان اس کا جانشین عربین حریت تھا۔

یزید کی ہلاکت کے بعد فہرستان کے شیعہ مسلمان بن مروان کے پاس جمع ہو گئے اور کہنے لگے یہ سرکش و بخی ہلاک ہو گیا ہے، آج لوگ بے خبر و مضطرب ہیں لہذا ہمارے ساتھ قیام کیجئے تاکہ ہم عبداللہ بن مروان کے ساتھ رہیں۔ اس کے جواب میں مقصد "انتقام خون حسین" کا اظہار کیا۔ اس وقت کو قتل کرنے والوں کو کھڑکھڑا کر رکھنا چاہیے گے اور لوگوں کو رسول کے اہلبیت کی پیروی کی ہلاکت کے بارے میں بتائے۔

سلمان نے کہا: جلدی نہ کرو میں نے تمہارے مشورہ پر فوج کی تو معلوم ہوا کہ حسین کے قاتل کو فہرستان اور عرب کے سربراہ وردہ لوگ ہیں اور ہماری نظروں میں وہی ہیں جب انھیں یہ معلوم ہو گا کہ سربراہ جو تو ہمارے خلاف انھیں گے اور جو لوگ ہمارے ساتھ ہیں ان میں بعض ایسے ہیں جو شورش کر کے خون حسین کا انتقام نہیں لے سکتے اور نہ دشمن کو ہلاک کر سکتے ہیں اور نہ اپنی خواہش کو پورا کر سکتے ہیں، پہلے تم اطراف میں ایسے افراد ڈالو کہ وہ جو لوگوں کو تعاون کر کے کئی دعوے

۱۔ تاریخ الخلفاء ص ۱۶۹، اسی طرح یہ بھی منقول ہے کہ یزید بروز جمعرات ۱۲/۱
۲۔ تاریخ الخلفاء ص ۱۶۹، اسی طرح یہ بھی منقول ہے کہ یزید بروز جمعرات ۱۲/۱
۳۔ تاریخ الخلفاء ص ۱۶۹، اسی طرح یہ بھی منقول ہے کہ یزید بروز جمعرات ۱۲/۱

دیں مجھے امید ہے کہ طاقت یزید کے بعد لوگ اس دعوت کو قبول کر لیں گے۔
چنانچہ انہوں نے ایسا ہی کیا اور بہت سے لوگوں نے ان کی دعوت قبول کر لی۔

عبداللہ بن زبیر کی بیعت

۶۷ھ میں اہل حجاز نے عبداللہ بن زبیر کی بیعت کر لی اور شام والوں نے مروان بن حکم کو
والوں نے عبداللہ بن زبیر کی بیعت کر لی۔

مختار مکہ جاتے ہیں،

مختار مکہ میں ابن زبیر کے پاس پہنچے، لیکن اس نے مختار سے اپنی بات چھپائی، مختار
ہو گئے اور ایک سال تک غائب رہے، عبداللہ بن زبیر نے سراغ لگایا اسے بتایا گیا کہ مختار
میں اور انھیں یہ یقین ہے کہ وہ جابر وں اور غلاموں کا قلع قمع کریں گے،
ابن زبیر نے کہا: اگر خط جابر وں کو ہلاک کرے گا تو ان میں سرفہرست مختار ہیں،
پوری تھیں کہ مختار مسجد اطریم میں داخل ہوئے اور طواف کر کے نماز ادا کی اور پھر ایک
گئے ان کے دوست ان کے پاس آئے اور ان سے گفتگو کرنے لگے لیکن وہ عبداللہ بن زبیر کے
آئے، عبداللہ بن زبیر نے عباس بن ہریر کو ان کے پاس بھیجا وہ آیا اور مختار سے کہا:

۱۔ کتاب ۱۱ ص ۶۶

۲۔ کال بن زبیر ۵ ص ۴۳

۳۔ بحار الخوارج ۵ ص ۲۵۳

میں قریش و انصار اور ثقیف کے شرفاء شریک ہیں، کوئی قبیلہ ایسا نہیں ہے کہ جس کے بزرگ
اس شخص "یعنی عبداللہ بن زبیر" کی بیعت نہ کی ہو،

مختار نے کہا: میں سال گذشتہ آیا تھا لیکن اس شخص نے مجھ سے اپنا مقصد چھپایا اور پتہ نہ چھوڑا
میں اس کا اظہار کیا تو میں نے بھی یہ طے کیا کہ اس پر یہ ثابت کروں گا کہ مجھے بھی اس کی ضرورت نہیں ہے،
عباس بن ہریر نے کہا: آج رات کو ان سے ملاقات کیجئے میں بھی آپ کے ساتھ چلوں گا مختار

امان لی،

شب میں مختار ابن زبیر کے پاس گئے اور کہا: میں اس شرط پر آپ کی بیعت کرتا ہوں کہ آپ مجھے
کوئی کام انجام نہیں دیں گے اور میں ان شخص ہوں گا جو سری وراز دارانہ مسائل سے آگاہ ہوں گا
آپ کو تسلط حاصل ہو جائے گا اور کئی طور پر زمام آپ کے ہاتھ میں آجائے گی تو مجھے اعلیٰ منصب

ابن زبیر نے کہا: میں تم سے کتاب خدا اور سنت رسول پر بیعت کرتا ہوں،
مختار نے کہا: تم میرے بدترین غلاموں سے بھی اسی طرح بیعت کرتے ہو،
ابن زبیر نے کہا: خدا کی قسم میں بیعت نہیں کروں گا مگر اسی بیعت سے،
مختار نے اس سے بیعت کی، کچھ دن تک ابن زبیر کے پاس رہے اور حنین بن نضر سے ہونے
کے میں شریک ہوئے اور اپنی دلاوری و شجاعت کو ثابت کیا،

اہل عراق نے بھی ابن زبیر کی اطاعت قبول کر لی لیکن مختار نے پانچ ماہ ابن زبیر کے پاس رہنے
میں یہ دیکھا کہ وہ انھیں کسی عہدہ پر منصوب نہیں کرتا ہے اور جو بھی کو فتنے مکر آتا ہے اس سے
مکات معلوم کرتے ہیں یہاں تک کہ ہانی بن جبہ وادی نے ان سے کہا: اگرچہ اہل کو فتنہ و فتنہ
اطاعت پر مجبور کیا گیا ہے لیکن وہاں ابھی کچھ لوگ ایسے جو وہیں اگر کوئی انھیں ان کی راہوں پر چن

۱۔ وہ حکومت حاصل کر سکتا ہے۔

۲۔ ۱۱ ص ۶۶

ابن زیاد بن ابی سہل کی ہلاکت کے بعد

عبداللہؓ کی ہلاکت کے بعد اس کی بیعت کریں؟ ہرگز! اور عبداللہؓ کے بھیجے ہوئے ان دونوں آدمیوں پر
اس نے تو دوسرے لوگوں نے بھی پتھر مارے،

عبداللہؓ کے دونوں قاصد واپس لوٹ آئے اور اسے صحیح حال سے آگاہ کیا یہ سکرانہل بصرہ نے
وہ اپنے خلع کریں اور ہم اس کی بیعت کریں؟ ایسا ہرگز نہیں ہوگا، چنانچہ بصرہ میں بھی عبداللہؓ کا تسلط
موجود تھا وہ حکم دیتا تو اس عمل نہیں ہوتا تھا، اس کی بات کو کسی پر ٹوٹا دیا جاتا تھا اس کے انصار و اعدا
مستعد تھے،

مسلم بن نویرب نے ہاتھ میں ایک جھنڈا اٹھایا اور بصرہ کے بازار میں گھڑے ہو کر کہا، اے لوگو! میں
عبداللہؓ کی بیعت کی طرف بلاتا ہوں، ان کی بیعت کرو کہ حرم الہی میں پناہ لئے ہوئے ہیں لوگ اس کے
پہلوئے اور اس کے ہاتھ پیرا بن زمین کی بیعت کرنے گئے،

اس واقعہ کی زیادہ کو جزئی طور سے اس نے لوگوں سے کہا: مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم نے پہلے میرے
بیعت کی اور پھر دیوار سے ہاتھ کر ڈال دیے، میرے حکم کی تعمیل نہیں کی میرے اور میرے مددگاروں
کی جان کاں گئے، اور اب مسلم بن نویرب آیا ہے جو ہمیں اختلاف کی طرف بلاتا ہے تاکہ تمہارا اتفاق
میں بدل دے تو میں ایک دوسرے کے خلاف تلوار کھینچنے پر آمادہ کرے،

اس نے کہا: ہم سب کا آپ کے پاس لائیں گے،
جب سب کو کولانے تو ابن زیاد نے دیکھا کہ اس کے ساتھ ایک ہم غصہ ہے، عبداللہؓ کے انصار اس
کا ہر پاسہ پکڑ رہے تھے، عبداللہؓ نے پر سالاروں کو بلایا انہوں نے بھی اس کی اطاعت نہ کی بلکہ یہ کہا اگر
وہ اس سے جگہ کرے گا تو ہم پر غالب آگئے تو ہم آپس میں قتل کریں گے۔

جب بصرہ میں ابن زیاد کو اس کے غلام مہربن نے یزید کی ہلاکت کی خبر سنائی تو اس نے لوگوں
میں جمع ہونے کا حکم دیا، ہرگز چاکر یزید کی ہلاکت کا اعلان کیا اور کہا: اے لوگو! بصرہ میرا وطن اور مدینہ
میں تمہارا امیر مقرر ہوا تھا تو اس وقت تمہاری فوج کی تعداد ستر ہزار تھی اور آج ایک لاکھ ہے اور میں
بارے میں مجھے یہ گمان ہوا کہ وہ نہیں نقصان پہنچا سکتا بنا سے میں نے قیدیوں ڈال دیے، شام میں یہ لوگ
ہو گیا ہے اس کے بعد لوگوں کے درمیان اختلاف ہو گیا تمہاری تعداد آج بہت زیادہ ہے اور وہ
بے نیاز ہوا اور تمہارے اختیار میں وسیع و عریض شہر ہیں، ایسے آدمی کو مستقب کو جو تمہیں پسند ہوا
مستحب کرو گے میں بھی اس سے راضی ہو جاؤں گا اور شام والے کسی کو چن لیں تو تم بھی اسے قبول
اس پر کچھ لوگ اٹھے اور کہنے لگے: ہم نے آپ کی بات سنی اس کام کیلئے ہماری نظروں میں آپ
بہتر کوئی نہیں ہے ہاتھ بڑھائیے تاکہ بیعت کریں،

عبداللہؓ بن زیاد نے کہا: مجھے بیعت کی ضرورت نہیں ہے،
انہوں نے اصرار کیا، اس نے انکار کیا یہاں تک کہ اس نے ہاتھ پھیلا دیا اور لوگوں نے عبداللہؓ
کی بیعت کر لی اور بیعت کرنے والے جب سجد سے نکلے تو اپنے ہاتھ دیوار سے ٹکڑ کر کہنے لگے مہربان
گمان کرتا ہے کہ ہم اس کی اطاعت کریں گے،

عبداللہؓ بن زیاد نے اہل بصرہ سے بیعت لینے کے بعد بن مسیح اور سعد بن قرقہ کو کہہ دیا
وہ اہل کوفہ سے یہ تمنا لیں کہ بصرہ والوں نے ابن زیاد کی بیعت کر لی ہے لہذا تم بھی اس کی بیعت کرنا
یہ دونوں کوفہ پہنچے لوگوں کو جمع کیا اپنا بیخلم پہنچایا اور لوگوں کو عبداللہؓ بن زیاد
کی دعوت دی،

حارث بن یزید شیبانی گھڑے چڑھے اور کہا: شکریہ خدا کا کہ اس نے ہمیں مسیح کے

عامر بن مسعود

اہل کوفہ حب ابن زیاد کے قاصد کو بھگانے اور اس کے جانشین عمرو بن حریث کو مہل کے بعد صلاح و مشورہ کیلئے وہ جمع ہوئے اور یہ طریقہ خلیفہ کے معین ہونے تک نہیں کی گوا بنایا گیا۔ چاہیے بعض نے کہا: عمر بن سعد کو امیر بنایا جائے اس پر قیداً عہد ان کی عورتیں امام حسینؑ پر گریہ کر رہی ہیں اور ان کے مرد مولا حامل کئے ہوئے برسرِ کار طواف کرنے لگے، محمد بن اشعث نے کہا: یہ تو اس کے کس کس ہم چاہتے تھے لہذا عامر بن مسعود بن امیر پر اتفاق کیا اور کوفہ والوں نے اس کی بیعت کر لی اور وہ مہل لکھا کہ اے ابن کوفہ کا امیر مقرر کر دیں۔

بصرہ سے فرار

جب عہد اللہ نے یہ صورت حال دیکھی تو کسی کو عارض بنائیں اس از دی کے پاس بھیجا اور کہا کہ والد نے مجھ سے یہ کہا تھا کہ اگر میں کسی روز فرار کرنا چاہوں تو آپ سے تعاون حاصل کروں، عارض نے کہا: تمہاری اور تمہارے باپ کی میرے خاندان کی نظروں میں کوئی وقعت نہیں لیکن اگر تو نے میں اختیار کیا ہے تو ہم تمہاری بات رد نہیں کریں گے مگر یہ نہیں معلوم کہ امان کی کیا صورت ہے۔ بصرہ سے نکلنے وقت میں اور تم دونوں بچے عمار سے جائیں رات ہو جانے دو۔ پشنت پر سوار کروں گا تاکہ تمہیں کوئی نہ پہچان سکے، اس پر عہد اللہ راضی ہو گیا، رات ہوئی تو اسے پشنت پر سوار کیا اور مسعود بن عمرو کے پاس لے گیا کہ وہ باحیثیت آدمی تھا، چنانچہ عہد اللہ

۱۔ کمال بن ابی شیبہ، ص ۱۳۳

۱۔ جے جانے تک اس کے پاس رہا اور پھر شام چلا گیا۔

شام کی طرف

مسافر بن شریح کہتا ہے ہم عہد اللہ کے ساتھ شام گئے انتشاراہ میں ہم رات کے وقت جبکہ اپنے کھڑوں پر سوار تھے میں اس کے نزدیک ہوا اور کہا: کیا سوچ رہے ہو، اس نے کہا: نہیں! اپنے نفس سے گفتگو کر رہا تھا، میں نے کہا: جو تمہارے دل میں ہے اگر اجازت ہو تو، اسے میں بیان کر دوں، اس نے کہا: بٹاؤ، میں نے کہا: تم اپنے نفس سے کہہ رہے تھے کہ کاش میں حسینؑ کو قتل نہ کرتا، اس نے کہا: اس کے علاوہ اور کیا سوچ رہا تھا، میں نے کہا: تم خود سے کہہ رہے تھے کہ کاش جن لوگوں کوینہ قتل کیا ہے انہیں قتل نہ کیا ہوتا، اس نے کہا: اور کیا سوچ رہا تھا؟ میں نے کہا: تم سوچ رہے تھے کہ کاش سفید قصر نہ بنایا ہوتا، اس نے کہا: اس کے علاوہ اور کیا خیال باقی تھی، میں نے کہا: تم کہہ رہے تھے کہ کاش دہقانوں سے کلم نہ لیا ہوتا، اور اس کے علاوہ؟ تم سوچ رہے تھے کہ کاش میں بڑا سختی ہوتا،

۱۔ کمال بن ابی شیبہ، ص ۱۳۳، پر مسعود بن عمرو کے گھر میں عہد اللہ بن زیاد کے آگے داستان تفصیل سے مرقوم ہے

ہم نے بیانِ خلاصہ کے طور پر لکھا ہے،

اس نے کہا: قتل حسینؑ تو وہ بڑے اشارہ سے ہوا تھا اس نے مجھ سے کہا تھا کہ انہیں قتل کر دو، ورنہ میں انہیں قتل کر دوں گا میں نے انہیں قتل کرنے والی شق قبول کر لی، لیکن سینہ قصر، تو مجھ نے عبداللہ بن عثمان سے خریدا ہے اور بڑے میرے لئے بہت پیسہ بھیجا تھا، اسے میں نے اس میں کیا ہے، دہشتاؤں سے میرے اسلئے کام کیا کہ میری نظریں وہ زیادہ امانت دار تھے اور اچھی حالت میں جمع کرتے تھے، رہی میری سخاوت کی بات تو میرے پاس اتنا پیسہ نہیں تھا کہ میں تمہارے اوپر خرچ کر سکتا تھا،

سے لیتا اور تمہارے ہی اوپر خرچ کرتا تھا، رہا ان لوگوں کا مسئلہ کہ جن کو میں نے قتل کیا ہے تو میری نظریں کلہ اخلاص کے بعد خوارق کو قتل کرنے سے بہتر کوئی کام نہیں ہے لیکن میں تو اپنے دل میں سوچ رہا تھا وہ یہ تھا کہ اے کاش میں بھرہ والوں سے جنگ کرتا کیونکہ انہوں نے میری بیعت کی تھی، لیکن بنیاد نے مجھے اس کام سے باز رکھا اور کہنے لگے اگر اہل بھرہ تم پر غالب آ گئے تو وہ مجھ کو قتل کر دیں گے، اے کاش قیدیوں کو نکال کر ایک ایک کی گردن مار دیتا اب جبکہ یہ دو کام انجام نہیں دے سکا تو سوچا کہ اے کاش میں کس کے خلیفہ بننے سے پہلے شام پہنچ جاؤں گا،

عبداللہ بن زید اور ابراہیم بن محمد

عامر بن مسعود، عبداللہ بن زبیر کی طرف سے کوفہ کا امیر تھا یہ بڑی ہلاکت کے بعد تین ماہ کا امیر رہا پھر عبداللہ بن زبیر نے ان دونوں کو کوفہ بھیجا، عبداللہ بن زید کو غازی امامت اور ابراہیم بن محمد کو خراج و اموال کا امیر مقرر کیا گیا

عبداللہ بن زبیر ج ۱۳۱

عبداللہ بن زبیر ج ۱۳۲

جب یہ کوفہ پہنچے تو ان سے بتایا گیا کہ شیعہ شورش کرنے کے وسائل جمع کر رہے ہیں ان کی دو باتیں ہیں ایک جماعت سلیمان بن مرد کے ساتھ ہے اور دوسری مختار کے ساتھ ہے، عبداللہ بن زید سے کہا کہ فوج جمع کر کے جنگ کیلئے تیار رہو،

عبداللہ بن زید کی تقریر

اس نے خط پڑھا اور خدا کی حمد و ثناء کے بعد کہا: مجھے خبر ملی ہے کہ اس شہر کے باشندوں میں اس گروہ ہمارے خلاف شورش کرنا چاہتا ہے میں نے اس کا سبب معلوم کرنا چاہا تو کہا کہ وہ جیتی بیتی فوجوں کا انتقام لینا چاہتے ہیں، خدا اس گروہ پر رحم کرے، خدا کی قسم مجھے ان کا ٹھکانہ بتایا گیا ہے اس گروہ سے یہ کہا گیا ہے کہ انہیں گرفتار کرو ان سے جنگ کرو لیکن میں ان سے کیوں جنگ کروں؟ خدا کی قسم میں نے حسینؑ کو قتل نہیں کیا ہے بلکہ میں تو انہیں قتل کرنے والوں میں بھی شریک نہیں تھا اور قتل حسینؑ کا مجھے ہمت ہے میں اس گروہ کو امان دیتا ہوں وہ باہر آ جائیں، پرگندہ ہو جائیں اور وہ قاتل حسینؑ کے سراغ نہ لے سکیں تو میں بھی ان کی مدد کروں گا حسینؑ اور تمہارے بزرگوں کو عبداللہ بن زید نے قتل کیا ہے تو پھر اب دوسرے کو قتل کرنے سے بہتر یہ ہے کہ عبداللہ بن زید سے جنگ کریں اور خود کو اس سے قاتل کیلئے لے لیں، آپس میں ایک دوسرے کا خون بہانا تمہارے دشمن کی دل خواہش ہے، اور یہ خلق خدا کا بہت برا دشمن ہے جو تمہارے مقابلے میں ہے اس نے اور اس کے باپ نے اہل عفاف اور اس کے قتل میں درینچ لیا ہے کہ جس کا تم انتقام لینا چاہتے ہو پس تم اپنی طاقت و شوکت کے ساتھ اس کا تعاقب کرو، اس کے بعد سلیمان بن مرد کے ساتھی نکل آئے اور کچھ وسائل کی خریداری شروع کر دی لیکن مختار نے اہل دار فاعل شورش رہے کیونکہ مختار یہ کہینا چاہتے تھے کہ سلیمان بن مرد کیا کرتے ہیں۔

امام ج ۱۳۱

توابعین کی تحریک کا آغاز

۵۲۰ھ میں سلیمان بن مرد نے اپنے اصحاب کے پاس قاصد بھیجے وہ آئے اور ربیع الاول ۱۲۵ھ میں وہ اپنے اصحاب کے ساتھ نکلے اور خلیفہ میں آگئے، لیکن سلیمان کو خلیفہ میں جع ہونے والوں کی توطئہ کم محسوس ہوئی لہذا انہوں نے حکم بن متھان اور ولید بن عسیر کنانی کو کوفہ بھیجا، انہوں نے "یا نثار لست اسیئین" کا غرہ بلند کیا یہ غرہ سب سے پہلے انھیں دونوں نے بلند کیا تھا، اس کے دن ایک گروہ اور خلیفہ پہنچ گیا، سلیمان نے جب یہ دیکھا کہ ان کے رجسٹر میں بیعت کرنے والوں کی تعداد سولہ ہزار ہے تو کہا: سبحان اللہ! ان میں سے صرف چار ہزار جمع ہوئے ہیں، ان سے کہا گیا: تقریباً دو ہزار آدمی تم سے مل گئے ہیں تو انہوں نے کہا: تو باقی کہاں ہیں؟ کیا وہ مومن اور عہد پر قائم نہیں ہیں؟ تین روز تک وہ خلیفہ میں رہے ایک ہزار اور ان سے ملنے کے لیے پھر سب بن جہد کھڑے ہوئے اور کہا: جس شخص کو ہماری تحریک پسند نہیں ہے ان کے آنے سے آپ کو فائدہ نہیں ہوگا جو لوگ خود آئے ہیں وہی آپ کی رکاب میں رہ کر جنگ کریں گے آپ کسی کا انتظار نہ کیجئے، سلیمان نے کہا: تم سچ کہتے ہو۔

سلیمان بن مرد کا خطبہ

سلیمان کھڑے ہوئے اور خطبہ حمد و ثناء کے بعد کہا: ہمیں بارادہ آدمی چاہیئے زبردستی

۱۔ تجارب ۸ ص ۲۲-۱۔ ربیع الاول ۱۲۵ھ ہے، ۲۔ کمال بن اثیر ج ۱ ص ۱۲۵،

۵۲۱ھ کے ہمارے کام کے نہیں ہیں، خدا کی قسم اس تحریک میں خدا کی خوشنودی کے علاوہ مال غنیمت ہمارے پاس سیم وز نہیں ملے گا، تو کچھ ہے وہ یہ تلواریں جو ہم نے حاکم کر رکھی ہیں اور یہ نیزے (تھوڑے) تلواروں میں اسٹار کسے ہیں اور یہی زارواہ ہے جس سے دشمن کا مقابلہ کریں گے پہلے اگر کوئی اس کے علاوہ کھستا ہے تو وہ ہمارے ساتھ دکائے،

لوگوں نے کہا: ہم خدا کی خوشنودی کے حصول کیلئے نکلے ہیں اسلئے تاکہ اپنے گناہ پر خدا سے توبہ کریں اور رسول کے خون کا انتقام لیں ہم تم تلواروں اور نیزوں کا مقابلہ کرنے کے لئے تیار ہیں۔

السلیم بن سعد

جب سلیمان بن مرد چلنے کے لئے تیار ہوئے تو عبد اللہ بن سعد بن نفل ان کے پاس آئے اور کہا: ان میں سے کچھ خاص لینے کیلئے کوفہ سے باہر جا رہے ہیں جبکہ حبشہ کے قاتل کہ ان میں سے ایک ہے۔ دوسرے روسا کو قوس میں جوڑی ہو کر کھم جا رہے ہیں؟

سلیمان کے دوسرے ساتھیوں نے کہا: بات تو صحیح ہے، سلیمان نے کہا: میں یہ چاہتا ہوں کہ اس کی طرف لشکر روانہ کیا جائے جس نے حبشہ کو قتل کیا اور وہ فاسق بن فاسق عبد اللہ بن زیاد ہے، خدا کا نام بیکر طوطا اگر خدا نے ہمیں اس پر فتح یاب کیا تو اس کو بیکر کر دار تک پہنچا تا آسان ہے پھر جو شخص بھی قتل حبشہ میں شریک تھا اسے تمہارے والے مار ڈالیں گے اور اگر تم شہید ہو گئے تو نیکو کاروں کیلئے خدا کے پاس بہترین جزا ہے مجھے یہ یقین ہے کہ تم اس سلسلے میں جاں فشانی کرو اگر تم اپنا کوفہ سے جنگ کرو گے تو تم میں سے ہر ایک جلا کاہ لایا جاتا ہے اس کے بھائی یا باپ کا قاتل کون ہے اور وہ اسے قتل کرنا چاہتا ہے خدا سے طلب کر کے

۱۔ تجارب ۸ ص ۲۲-۱۔ ربیع الاول ۱۲۵ھ ہے، ۲۔ کمال بن اثیر ج ۱ ص ۱۲۵،

عبداللہ بن زید اور سلیمان صرد

عبداللہ و ابراہیم نے کہا: آپ کچھ دن ہمارے پاس ٹھہریے تاکہ آپ کو اچھی طرح مسلح کر دیں۔ آپ زیادہ دشمنوں سے متقا ہو کر سکیں،

سلیمان نے کہا: آپ حضرات کی اس پیشکش کے بارے میں ہم مذکور ہیں گے،

اسکے بعد سلیمان سے صبر سے کام لینے کیلئے کہا: نیز کہا: ہم جنگ کے اخراجات کے لئے جو فوجی کھانا لے رہے ہیں، سلیمان نے ان کی بات کو ٹھکراتے ہوئے کہا: ہم نے دنیا کی خاطر قیام نہیں کیا ہے،

عبداللہ بن زید اور ابراہیم بن محمد کو جب یہ یقین ہو گیا کہ عبداللہ طلاق کی طرف آرہا ہے تو ان کے ساتھ سلیمان سے پیشکش کی،

سلیمان کے جن احباب نے صبرہ اور مدائن سے آنے کا وعدہ کیا تھا ان کے آنے میں تاخیر ہوئی تو ان کے غم سے روانہ ہوئے اور قسائل پہنچے وہاں کچھ اور آدمیوں نے ان کا ساتھ چھوڑ دیا سلیمان باقی ساتھیوں سے کہا: اگر وہ تمہارے ساتھ آتے تو تمہارا کوئی فائدہ نہ ہوتا بلکہ وہ تمہارے دشمن بن جاتے۔ اس کو براہِ مذکر دیتے اسلئے خدا نے ان کے دلوں میں ستم ڈال دی اور وہ تم سے جدا ہو گئے یہ

ابن کریم

اسکے بعد سلیمان بن صرد اور ان کے ساتھیوں نے اپنے سفر کا آغاز کیا اور کربلا پہنچے یکبارگی سب کو ماری، اس روز جیسے رونے والے نہیں دیکھے گئے، پھر امام حسینؑ پر درود و سلام بھیجا اور ان کی کوفت

کو ایک ہار کا نام ہے جس کے کنارے وسیع علاقہ ہے یہ بغداد کے نزدیک ہے اور اس کی آمدنی اس زمانے

میں ہزار ہجری تھی، عجم البلدان ج ۱ ص ۱۷۱،

اس کو ف کے نزدیک ایک قریہ ہے، عجم البلدان ج ۱ ص ۱۳۶،

ابن کریم ج ۱ ص ۱۷۱،

جب عبداللہ بن زید اور ابراہیم بن محمد بن طلحہ کو یہ خبر ملی کہ سلیمان اپنے احباب کے ساتھ جنگ کرنے کیلئے روانہ ہونے ہی والے ہیں تو انہوں نے کئی کوان کے پاس بھیجا اور کہا یا: ہم آپ سے کونا چاہتے ہیں،

سلیمان نے قبول کر لیا عبداللہ بن زید کو ف کے شرفاد کے ساتھ اور ابراہیم بن محمد بن طلحہ کی ایک جماعت کے ساتھ ان کے پاس آئے،

عبداللہ بن زید سلیمان کے پاس آئے تو ان لوگوں نے کئی کوانے ساتھ نہیں لائے جو قتل و شریک تھے تاکہ بات نہ مڑ جائے۔ چنانچہ سلیمان کے پاس پہنچنے کے بعد خلی خمد و شکاری اور کوانہیں میں بھائی بھائی ہیں انہیں خیانت نہیں کرنی چاہیے آپ ہمارے ہی شہر کے ہیں اور ہماری طرف بہترین آدمی ہیں، خود کو شکلات میں مبتلا نہ کریں اور اپنی بات پر اگل رہنا بہتر نہیں ہے، اور کو ف کے آپ ہماری تعداد نہ گھٹائیں ہمارے پاس رہیں تاکہ جب دشمن ہمارے شہروں کے نزدیک ہوں تو ہم باہر کا دفاع کر سکیں،

ابراہیم بن محمد نے بھی ایسی ہی بات کہی،

سلیمان نے خلی خمد و شکاری کے بعد کہا: آپ حضرات نے خلی خمد و صلاح و مشورہ سے نوازا لیکن ہم لوگ چلنے کا حکم ارادہ کر چکے ہیں اپنے ارادہ سے منصرف نہیں ہوں گے اور خدا سے دعا ہے کہ عطا کرے،

۱۔ جس زمانہ میں سلیمان بن زید اپنی فوج جمع کر رہے تھے، عجم البلدان ج ۱ ص ۱۷۱ میں ہرات کو کو ف کے عبداللہ بن زید کے پاس جاتا تھا کیونکہ اسے یہ خوف تھا کہ کہیں یہ لوگ اسے قتل نہ کریں،

محل کی جنت ہے: میں نے سیمان سے ملاقات کی اور عبداللہ بن یزید کا سلام اور خطا
سیمان نے اپنے ساتھیوں سے کہا: ذرا ٹھہر جاؤ، خود خط پڑھنے لگے لکھا تھا،
یہ ایک خیر خواہ کا نوشتہ ہے مجھے خبر ملی ہے کہ شام سے ایک بڑا لشکر چل چکا ہے اور آپ
مختصر تعداد کے ساتھ اس سے ٹکراتا چاہتے ہیں، آپ اس بات کا سبب نہ بنیں کہ دشمن آپ کے
طرح کرے آپ سچی بزرگ ہیں، اور جب دشمن آپ کی مختصر تعداد دیکھے گا تو آپ کے شہر کی طرف
اگر وہ غالب آگئے تو بکواس پانچم مسلک بنائیں گے اور آپ ہرگز کامیاب نہیں ہو سکیں گے،
دوست ایک ہے اور دشمن بھی ایک ہی ہے مگر بات بھی ایک ہو جائے تو ہم دشمن پر غالب آجائیں گے
اگر اختلاف کریں گے تو بھرم نہیں رہے گا میرا خط پڑھ کر لوٹ آئیے مخالفت نہ کیجیے، والسلام

سیمان نے اپنے ساتھیوں سے کہا: آپ حضرات کیا کہتے ہیں؟

انہوں نے کہا: جب کوہ میں ان کی بات نہیں مافی تو اب جہاد کیلئے تیار ہونے کے

لیں، آپ کی کاروائی ہے؟

سیمان نے کہا: میں تو چاہتا ہوں کہ وہاں نہ جائیں کیونکہ ہمارے اور ان کے عقیدہ میں
ہے اور اگر یہ کامیاب ہو گئے تو ہمیں ان زہر کی مدد پر مجبور کریں گے اور ہم ابن زہر کی مدد کرنے کا
مگر ابی بختیہ ہیں اور اگر ہم کامیاب ہو گئے تو حق کو اس کے اہل کے سپرد کر دیں گے اور اگر مارے گئے تو
پراستوار رہیں گے اپنے گناہ کی ذمہ داری پر کچے ہیں کیونکہ ہمارا مسلک کھ اور ہے اور عبداللہ بن یزید کا مسلک

سے روانگی

اس کے بعد وہ کمرٹا سے روانہ ہوئے اور تھوڑی دیر جانے کے بعد پھر قبر حسین کے پاس لوٹ
آئے کی قبر کے پاس اس طرح اٹو دھام کیا جس طرح جبرائیل کے پاس ہوتا ہے آپ سے رخصت
کر کے ان کی طرف چلے، اے

عبداللہ بن یزید کا خط

سیمان کا خط

لوگوں کے امیر عبداللہ بن یزید نے محل بن قلیفہ کے ذریعہ سیمان کے پاس ایک خط بھیجا،

سیمان نے عبداللہ کے نام خط لکھا: آپ کا خط پڑھا مضمون سے آگاہ ہوا ہر حال میں

۱۴۰۲ھ

۱۴۰۲ھ

524

فرقیبا

۱۔ تاریخ طبری ج ۱، ص ۵۵۰، ۲۔ تجلید الامم ج ۲، ص ۱۰۵،

۱۴۹

سیلمان نے کہا: اہل کو فتنے بھی یہی بات کہی تھی جسے ہم نے ٹھکرا دیا تھا،
زفر نے کہا: ہماری اور ان کی دونوں کی بات مان لیجئے، ہمارے پاس قیام کی
خط و کتابت کیجئے تاکہ وہ بھی ملحق ہو جائیں، دشمن کے آنے سے پہلے وہ ہم سے آن
غالب آجائیں،

سیلمان نے یہ بات بھی تسلیم نہ کی،

زفر نے کہا: یہ مشورہ مان لیجئے میں شامیوں کا دشمن اور تمہارا دوست ہوں ہمارا
کو شکست ہو جائے، وہ تو سے چل چکے ہیں، تم لوگ جلدی کرو اور دشمن سے پہلے
اور وہاں اس طرح پرواؤ کو شکست تمہاری پشت کی جانب اور پانی و بارش سانس کی طرف
میدان میں جنگ نہ کرنا کہ جس سے وہ تم پر تیرا اور نیزوں سے حملہ کریں، پھر تمہاری تعداد
بہنیں ہے اور دشمن کے مقابلے میں صف نہ باندھنا کیونکہ تم سبھی سوار ہوا اور دشمن کے
دونوں قسم کی فوجیں ہیں جو ایک دوسرے کی حمایت کریں گے تم لوگ خفقت کرو ہوں
کہ اگر دشمن ایک گروہ پر حملہ کرے تو دوسرا متاومت کرے اگر ایک جگہ رہو گے تو شکست
پھر زفر نے کھڑے ہو کر انھیں وادع کیا، سیلمان نے بھی اس کی تعریف کی اور اسکا
اداکر کے روانہ ہوئے۔

عین الوردہ

سیلمان کے ساتھی جلدی سے عین الوردہ پہنچ گئے اور اس سے مغرب کی طرف

۱۔ تجارب الامم ۲/۵، ۱۰۶، عین الوردہ! جزیرہ کے شہر شہر دہلی سے ایک ہے یہیں ایک جنگ
سرور وائیں سے رفاہی شہزاد تھا، عین الوردہ ج ۱۸۰،

سیلمان نے کہا: اہل کو فتنے بھی یہی بات کہی تھی جسے ہم نے ٹھکرا دیا تھا،

ابن صرد کا خطبہ

سیلمان بن مردا نے ساتھیوں کے درمیان کھڑے ہوئے اور معاد و آخرت کے مومنوں پر روشنی ڈالی
کیا ترفیب کی اس کے بعد کہا: دشمن تمہارے پاس آگیا ہے جب ان سے مقابلہ ہو تو صدق دل سے
اور میر سے کام لےنا کہ خدا صبر کرنے والوں کے ساتھ ہے اور جگہ بدلنے کے علاوہ میدان سے فرار
دشمن کی فوج میں سے جو میدان چھوڑ کر بھاگے اسے قتل نہ کرنا زحمتی اور قیدی کو قتل نہ کرنا کہ دشمنوں
معتز علی بن ابی سلوک کرتے تھے،

پھر کہا: اگر میں مارا جاؤں تو مسیب بن بزمیر ہوں گے اور اگر وہ بھی ہمارے جائیں تو عبداللہ
بن بزمیر ہوں گے اور اگر وہ بھی قتل ہو جائیں تو عبداللہ بن ولید ہوں گے اور اگر وہ بھی کام آجائیں
ان بن شداد امیر ہوں گے، خدا رحم کرے اس شخص پر جو اپنے مہم پر قائم رہا ہے،
اس کے بعد مسیب بن بزمیر کو چار سو سواروں کے ساتھ وادع کیا اور ان سے کہا: دشمن کو دیکھتے ہی
لوٹ پڑنا مگر کامیاب ہو گئے تو فہما ورنہ واپس لوٹ آنا تم اور تمہارے سپاہی گھوڑوں سے نازیں
اور ات کے وقت آ کر سکتے ہیں،

ایک رات دن انہوں نے راستہ طے کیا اور صبح کے وقت دشمن کے ایک آدمی سے مذبحیڑ ہوئی
انہوں نے اس سے دشمن کی فوج کے بارے میں معلومات حاصل کرنا چاہیں، اس نے کہا: شریہل بن ذی کلا
اسے ایک میل کے فاصلہ پر ہے اور اس کے اور حصین بن نمیر کے درمیان سپہ سالاری کے منصب کے
ان کے درمیان ہے، عبداللہ کے فرمان کا انتظار ہے

مسیب اور ان کے ساتھیوں نے گھوڑے دوڑائے اور دشمن پر حملہ کر دیا اور ان میں سے بعض کو
اور بہت سوں کو زخمی کر کے شکست دی اور مال غنیمت کے ساتھ سیلمان کے پاس لوٹے۔

حسین و شرجیل کی آمد

جب ابن زیاد کو شام کی فوج کی شکست کی خبر ملی تو اس نے حسین بن نمیر کی سرکردگی میں ہزار پابی سلیمان سے مقابلہ کیلئے بھیجے،

سلیمان بن مرد نے بھی اپنے فوج کو منظم کر لیا اور نوذ قلوب لشکر میں مستقر ہوئے جب شام کی فوج قریب آئی تو اس نے سلیمان کے ساتھیوں سے کہا کہ عبدالملک بن مروان کی اطاعت قبول کرنا، سلیمان اور ان کے ساتھیوں نے کہا: عبید اللہ بن زیاد کو ہمارے حوالے کر دنا کہ ہم اس سے اپنے حصے میں قتل کریں جو اس کے ہاتھ سے قتل ہوئے ہیں اور عبدالملک بن مروان کو خلع و خلع ہم بھی ابن زبیر کے اصحاب کو حلق سے نکال دیں گے اور پھر خلافت رسول اللہ کے بلایت ہو جو کہ مسکن ہے کے ہر ذکر میں،

شامیوں نے یہ بات قبول نہ کی، سلیمان کے ساتھی بھی اپنی بات پر اٹل رہے، سلیمان کے اصحاب شام والوں پر حملہ کر کے انھیں پرانندہ کر دیا اسی طرح رات ہو گئی، سلیمان اور ان کے اصحاب کامیاب دوسرے دن میدان میں زیاد نے شرجیل بن ذی الکلاع کو اپنے ہزار فوجیوں کے ساتھ حسین کی مدد کیلئے بھیجا چنانچہ دس تین روز تک جنگ جاری رہی،

ادہم بن مخزومی کی آمد

تیسرے دن عبید اللہ کی طرف سے ادہم بن مخزومیوں کی مدد کیلئے آیا اور اس دن

ط حجاب الامم ۲ ص ۱۰۹

ایک سخت جنگ ہوئی، پھر شام والوں نے سلیمان اور ان کے ساتھیوں پر چاروں طرف سے حملہ کیا جب سلیمان نے یہ کیفیت دیکھی تو گھوڑے سے اتر گئے اور با آواز بلند کہا: خدا کے بند و! جو خدا اور ان سرکرنا چاہتا ہے اور اپنے گناہوں سے نوکرنا چاہتا ہے وہ میرے ساتھ آئے،

اس کے بعد اپنی تلوار کا غلاف نوذ قلوب دیا پھر ایک جماعت نے بھی ان کی تقلید میں اپنی تلوار کی بنام توڑ دی اور ان کے ساتھ فوج شام پر حملہ کر دیا، اور ان میں سے کافی فوجیوں کو موت کا طعناں اتار دیا اور بہت سوں کو زخمی کر دیا،

سلیمان کا مارا جانا

حسین بن نمیر نے جب سلیمان اور ان کے اصحاب کی استقامت و ثبات قوی دیکھی تو ایک گروہ کو مارا، سلیمان کے ساتھیوں پر تیرہ بارانی گری، اس کے بعد شام کی سوار و پیادہ فوج نے سلیمان اور ان کے اصحاب کو مارا، سلیمان بن زید بن حصین کے تیرے زمین پر گر پڑے، پھر اٹھے لیکن پھر گرے اور دم توڑ دیا۔

سب بن نجیہ

سلیمان کے مارے جانے کے بعد مسیب بن نجیہ نے پرچہ اٹھا لیا، دامیر لڑ جنگ کی اور اسی دن قادی کا منظر برہنہ کیا کہ جس کی نظیر نہیں دیکھی گئی تھی، اور ایسا قاتل کیا کہ جس کی مثال نہیں ملتی تھی، پھر بھی نہیں سکتا تھا کہ کسی نہ کسی فداکاری کا ثبوت دیا ہو گا آخر کار وہ بھی قتل ہو گئے،

الان تاریخ ۱۸ ص ۱۸۲، تذکرۃ الخواص میں لکھا ہے کہ انہوں نے وقت شہادت زبان پر کھنڈت درجہ جاد رکھا،

کتاب الامم ۲ ص ۱۱۰

عبداللہ بن سعد

عبداللہ بن سعد بن نفیل نے پرچہ اٹھایا اور سلیمان بن مرہ اور سیب بن جبک لے گیا؛ خدا کا حکم کرے اور پھر یہ آیت پڑھی: ﴿فَعِنْتُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا كَلِمًا﴾ قبیلہ ازد والے ان کے پاس جمع ہو گئے اور شامیوں سے الجھ گئے، اسی وقت مدائن کے سوار آئے اور ان سے کہا: سعد بن خذیفہ اہل مدائن کے ۱۰ آدمیوں کے ساتھ اور شعی بن خربہہ ہمیں ہمیں سوا آدمیوں کے ساتھ آپ کی مدد کیلئے روانہ ہو چکے ہیں، ان کے ساتھیوں میں خوشی کی لہر دوڑ گئی عبداللہ بن سعد نے کہا: اگر اس وقت تک ہجر زندہ رہے، ان تین آدمیوں نے حبشہ کی طرف ان کے قتل کے متوال اصحاب کو دیکھا تو بہت رنجیدہ ہوئے اور ان کو دہڑے، عبداللہ بن سعد بھی مارے گئے ان کے بھائی خالد نے ان کے قاتل پر حملہ کیا تو شعی نے ان کی مدد کو دوڑے، اسے پکایا اور خالد بھی مارے گئے، اب کوئی علم اٹھانے والا نہ رہا سلیمان کے طرفداروں نے عبداللہ بن مرہ کو آواز دی وہ ان شامیوں سے جنگ میں مشغول تھے،

رفاعہ بن شداد

رفاعہ نے علم اٹھا کر حملہ کیا اور اپنے ساتھیوں سے کہا: جو شخص زندہ و جاوید بننا چاہتا ہے رفاعہ بن شداد کا لشکر اور لوگوں سے بچے اور گوف میں بے جنگ میں شریک تھے اور جب انہوں نے یہ سنا کہ وہ ان کے لشکر سے بچے تو انہیں پکارتے ہوئے دیکھا اور کہا: میں علم اٹھا کر جنگ کرتے ہوئے مارے گئے، ابو ذر غفاری نے یہ سنا تو ان کی وفات پائی تھی اور ان کے لشکر نے انہیں مارے گئے، البصار اللعین ص ۱۶۰

الام جا رہا ہے کہ جس کے بعد پریشانی نہیں ہے اور ایسی خوشی چاہتا ہے کہ جس کے بعد غم نہیں ہے تو اسے چاہیے اس امر کو وہ سے جنگ کر کے خدا کا تقرب حاصل کرے اس کے بعد ہیبت کی طرف روانگی ہے،

السبن وال

ادبہم بن محمد بن شام کے پسر لارول میں سے ایک تھا یہ سلیمان کی فوج سے مقابلہ کیلئے اپنی فوج کو لے کر وقت عبداللہ بن مرہ کو دیکھا کہ وہ اس آیت کی تلاوت کر رہے ہیں: ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتًا﴾ اس نے عبداللہ پر حملہ کیا اور ان کے ہاتھ پر ضرب لگا کر کہا: میں سمجھتا ہوں کہ تمہیں یہ پسند ہے کہ تمہارا ہاتھ اور تمہارا ہاتھ قطع نہ ہو، عبداللہ نے کہا: تم نے بہت برا سوچا، خدا کی قسم مجھے ہرگز یہ بات پسند نہیں ہے کہ میرے ہاتھ کاٹا جائے، اس نے جواب میں اور تمہارے گناہ میں اضافہ ہو گا اس سے ادبہم کو غصہ آ گیا اس نے حملہ کر کے انہیں قتل کر دیا۔

عبداللہ بن عوف بن احمہ

عبداللہ بن مرہ کے قتل ہو جانے کے بعد سلیمان کے اصحاب رفاعہ بن شداد کے پاس آئے اور کہا: عبداللہ بن مرہ کے قتل کے بعد سلیمان بن مرہ اور دیگر لوگوں کے ساتھ عین اور وہیں قتل ہوئے، البصار اللعین ص ۱۶۰، اس نے انہیں کوفہ کے عہد و فتور میں شام کیا ہے، کامل ج ۲ ص ۱۶۰، اس نے انہیں جرحہ میں شام کیا ہے،

سلیمان بن صردا واران کے دیگر ساتھیوں کی شہادت کی خبر ملی اور اہل بصرہ کے ساتھ شہنشاہی میں حاضر ہوئے۔
اگئے اور صند واد میں ملاقات کی تو توابین کے ماجرا سے آگاہ ہوئے یہ وہیں غمگین رہے۔
رفاع بن شداد اور باقی مانعہ لوگ بھی آگئے، عین العورہ کے شہیدوں کا غم منایا اور ایک ماہ تک
رکھ کر لوٹ آئے۔

شام میں توابین کی خبر

عبدالملک بن مروان کو جب سلیمان واران کے ساتھیوں کے قتل ہونے کی خبر ملی تو وہ بہت
عراق کے سرغزدا واران کے سردار سلیمان بن صردا ورمسیب بن جبہ قتل کر دیے گئے۔
دور بہر عبد اللہ بن سعد اور عبد اللہ بن وال بھی مارے گئے اب عراق کا کوئی مسلح نہیں ہے۔
کرنے والا نہیں ہے۔

دوسری فصل

قیام مختار

مختار ابو عیدہ بن مسعود ثقفی کے بیٹے ہیں سلیمہ میں پیدا ہوئے ان کے والد ابو عیدہ رسول کے
ابن القدر صحابی ہیں سے تھے سلیمہ میں عراق کے گورنر مقربوئے اور یوم الخسرت میں اپنے بیٹے جبر بن ابی عیدہ
الطائفہ کی خلافت کے زمانہ میں قتل ہوئے۔
ان کی والدہ روم بنت وہب بن عمر بن مستحب ہیں،
منقول ہے کہ جب مختار کے والد نے شادی کا ارادہ کیا تو ان کے سامنے ان کے خاندان کی لڑکیوں کا نام
دیا اور اس سے شادی کا مشورہ دیا لیکن انہوں نے قبول نہ کیا یہاں تک کہ خواب میں کسی نے کہا: وہب کی

۱۲۶۵ھ میں

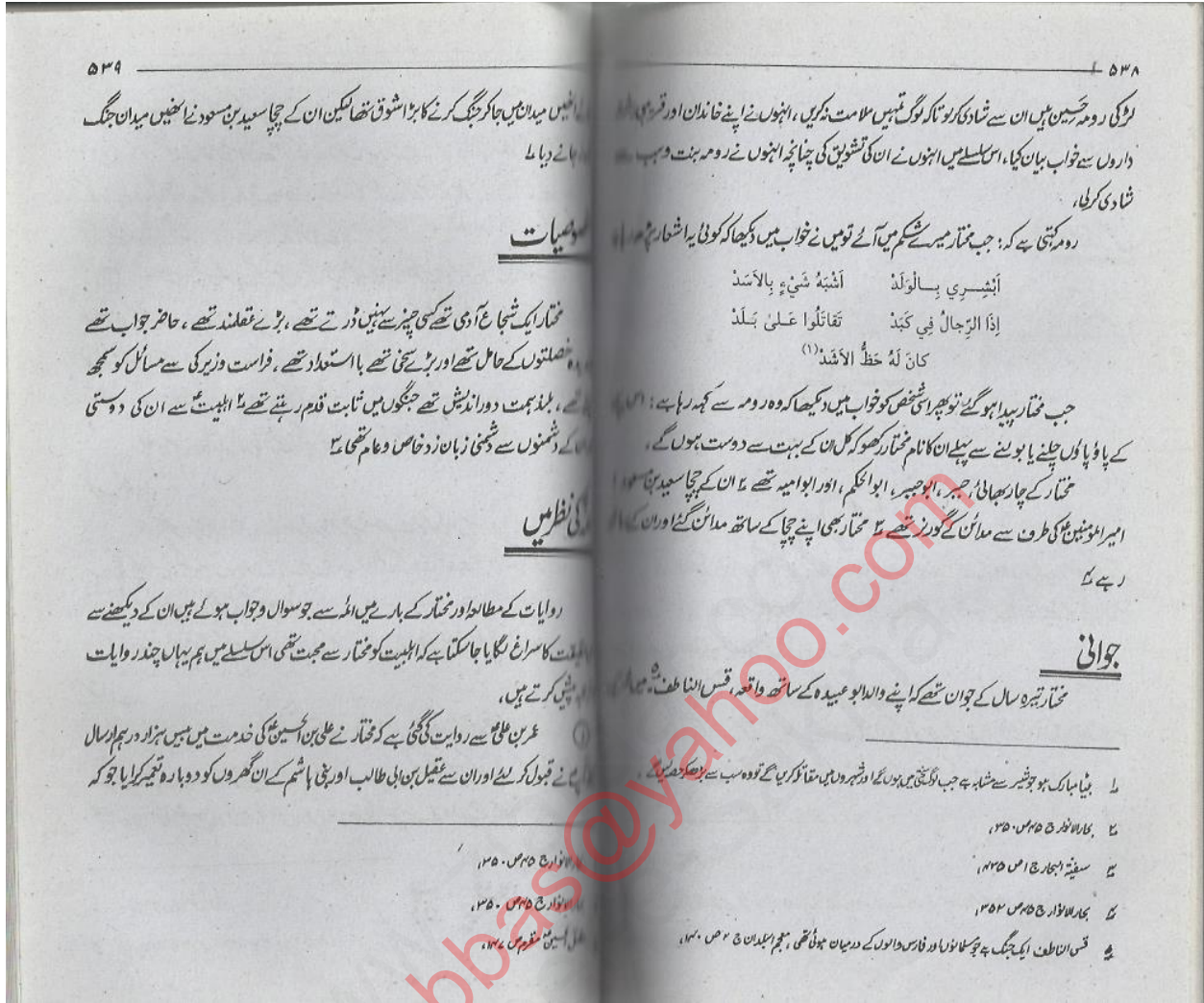
۱۲۶۵ھ میں

۱۲۶۵ھ میں

۱۲۶۵ھ میں

۱۲۶۵ھ میں

۱۲۶۵ھ میں



یزید کے کارندوں نے، تہہ نہس کر دیئے تھے۔

(۱) کشکی نے محمد بن مسعود سے نقل کیا ہے کہ جب عبداللہ بن زیاد اور عمر بن سعد کا سر کاٹنے لایا گیا تو آپ ہنسی مگر پڑے اور فرمایا: خدا کا شکر ہے کہ اس نے ہمارے دشمنوں کا سر کاٹنے کیلئے دعا کی اور فرمایا: خدا تمہارے گناہوں کو بخش دے گا۔

(۲) عبداللہ بن قسریک کہتے ہیں: میں عبداللہ بن جعفر باقر علیہ السلام کے پاس گیا اور اس نے آپ کے سامنے دو زانو بیٹھ گیا، اسی وقت اہل کوفہ سے ایک آدمی آیا اس نے امام محمد کا پوسر لیا چاہا آپ نے اجازت نہ دی، پھر اس سے پوچھا تم کون ہو؟ اس نے عرض کی: میں ابو محمد بن مختار ہوں،

مجلس میں وہ امام محمد باقر سے کچھ فاصلہ پر بیٹھا تھا، آپ نے اسے اشارہ سے قریب بٹھایا، اس شخص نے یعنی بن مختار نے امام محمد باقر علیہ السلام سے عرض کیا: میرے والد کے پاس بہت کچھ کہتے ہیں، لیکن میرے والد کے بارے میں جو آپ فرمائیں گے وہی حق ہے خواہ لوگ کچھ بھی کہیں، آپ نے فرمایا لوگ کیا کہتے ہیں؟ اس نے کہا: لوگ کہتے ہیں کہ میرے والد مختار کا کذاب ہے تو آپ فرمائیں گے میرے والد کا قبول ہے،

امام محمد باقر علیہ السلام نے فرمایا: سبحان اللہ! میرے والد نے مجھے خبر دی ہے کہ مختار صادق، مختار نے والد کے لئے بھیجے تھے، کیا مختار نے ہمارے گھر تیر سبیں کر کے، کیا مختار کشتوں کا انتقام نہیں لیا، اے اللہ ان پر رحم فرما: خدا کی قسم میرے والد نے مجھے خبر دی

۱۔ سفینہ البحار ج ۱ ص ۲۵۳

۲۔ بحار الوفا ج ۵ ص ۲۴۴، جامع الروا ج ص ۲۲۱

امیر المؤمنین کی خدمت میں حاضر ہوئے تھے اور وہ منظر ان کا استہرام کوئی شخص مختار نے

سید نے امام محمد باقر علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا: مختار کو برا نہ کہو کیونکہ انہوں نے قاتلوں کو قتل کیا اور ان سے انتقام لیا، نیز شادی شدہ کی شادی ہیں اور ضرورت کے وقت ہمارے

خدا دیں جاروئے امام جعفر صادق علیہ السلام سے روایت کی ہے کہ آپ نے فرمایا: بنی ہاشم کی عورت نے بالوں میں گنگھی نہیں کی یہاں تک قاتلان حسین کے سر مختار نے ہمارے پاس بھیجے ہیں، اس سلسلے میں بہت سی روایات بیان ہوئی ہیں لیکن ہم اتنی ہی پر اکتفا کرتے ہیں،

امیر المؤمنین علیہ السلام

امین بن نباتہ سے روایت کی گئی ہے کہ انہوں نے کہا: میں نے مختار کو امیر المؤمنین کے زانو پر بیٹھے

دیکھا، آپ ان کے سر پر ہاتھ پھیر رہے تھے اور فرما رہے تھے، یا حسین یا حسین، اے زبیرک اے

امیر المؤمنین کے بارے میں ہے جو کہ مدینہ علم رسول کے باب نہیں، جو مستقبل کے حالات سے

۱۔ تاریخ ج ۵ ص ۲۴۳

۲۔ تاریخ ج ۵ ص ۲۴۰

۳۔ تاریخ ج ۵ ص ۲۴۴

۴۔ تاریخ ج ۵ ص ۲۴۳

آگاہ ہیں اور شہادت سیدئین کے بعد جو کچھ مختار کے درمیان ہوا اور قاتلان حسین کو بیکر کاڑھک پہنچا یا اور اس کے دل پر اس کے لئے علامت ہے پھر خود مختار کے کاٹوں میں حضرت علیؑ کی یہ باتیں کوئی رقی نہیں نظر آتے۔
 طور پر وہ اسلام والہیت سے متعلق ایک پیغام کا احساس کرتے تھے یہ پیغام اہلبیت کے دھندلے اور سیدئین اور ان کے عزیزوں کے قاتلوں سے انتقام لینے کی صورت میں ان کے پیش نظر تھا۔

محبوب بن خالد

ایک روز مختار نے محبوب سے ملاقات کی اور اس سے کہا: صاحبان طہ نے اپنی تحریروں اور خطوں میں لکھا ہے کہ تیرا تعقیف سے ایک آدمی انقلاب برپا کرے گا اور ظالموں کو قتل کرے گا، شہداء کی مدد کرے گا اور ان لوگوں کے خون کا انتقام لے گا کہ جن کو کمزور بنا دیا گیا ہے، انہیں صاحبان طہ آدمی کے اوصاف بھی بیان کئے ہیں یہ تمام اوصاف میں اپنے اندر جمع پاتا ہوں صرف دو صفت ایسی ہیں میں نہیں وہ کہتے ہیں کہ یہ آدمی جوان ہوگا اور میں سا تھراں سے زیادہ کا ہو چکا ہوں دو صفت اس کی بنیادی کہ جوگی جگہ میری نگاہ میں قناب سے بھی زیادہ تیز ہیں،

محبوب نے کہا: تم بھی جوان ہو، کیونکہ اس زمانہ میں ساتھ، ستر سال کے آدمی کو بڑا صاحبان جاتا تھا، رہی تمہاری آنکھوں کی بات تو اس سلسلے میں نہیں کیا معلوم کہ آئندہ کیا ہوگا، ہو سکتا ہے کہ تم سے تمہاری بنیادی کمزور ہو جائے،
 ان باتوں سے مختار کی امید بندھی اور کہا: ممکن ہے یا،

امام مختار کے گھر

ہم بیان کر چکے ہیں کہ مختار بن ابی عبیدہ کے خصوصیات اور بہت فضائل و مکارم کے حامل تھے خصوصیات اس زمانہ میں اپنی میں منحصر نہیں تھے بلکہ کو فہم ان کی شخصیتیں تھیں جو انتہائی فضائل و عظمیٰ و عظمت اور اثر و رسوخ کے لحاظ سے ان مختار سے ملے بغیر نہیں تو ان سے کم بھی نہیں تھیں،
 جناب مسلم بن عقیل جب کو فہم پہنچے تو انہوں نے قیام کیلئے مختار کے گھر کو منتخب کیا اور وہیں ٹھہر گئے تاکہ ان کی کیا وجہ تھی، جیسا کہ مختار جیسے کو فہم دیگر اشخاص موجود تھے یہ موضوع بحث طلب ہے،
 لکھا ہے کہ مسلم پانچ شوال ۶۰ کو وارد کو فہم ہوئے اور مختار کے گھر پہنچے یہاں یہ کہنا چاہیے کہ مختار کو یہ خصوصیات کے حامل ہونے کے ساتھ ساتھ ایک دوسری خصوصیت بھی رکھتے تھے جو ان کی علت ہو سکتی ہے اور وہ مختار کا اہلبیت عصمت اور خاندان امیر المومنینؑ سے کم نظیر دفاع کرنا انہوں سے خلوص تھا،

امام مسلم کے وقت

جب تک مسلم کو تنہا چھوڑ کر متفرق ہو گئے تو عبید اللہ نے حکم دیا کہ اگر دشمن کی جائے مسجد میں

مسلم بن عقیل قتل ۹۸ھ

امام مختار ۳۵ھ

امام علیؑ ۳۵ھ

امام مسلم بن عقیل قتل ۹۸ھ

۱۔ الشہید مسلم بن عقیل ۹۸ھ

۲۔ بحار الانوار ج ۵ ص ۳۵۲

عبداللہ نے کہا: اس اچھی کے بارے میں کہہ رہے ہو؟
انہوں نے کہا ہاں،

پھر میثم سے جذبات کہنے اور ان سے جواب سننے کے بعد انھیں قید میں ڈالنے کا حکم دیدیا اسی
مختار بن ابی عبیدہ ثقفی بھی قید تھے، میثم نے مختار سے کہا: تم زندان سے رہا ہو جاؤ گے اور
ان کا انتقام لو گے اور جس ظالم کے قید خانہ میں اس وقت میں اور تم ہوا سے قتل کرو گے اور اس کے
پایا پاؤں سے کچل دو گے،

عبداللہ بن زیاد نے اپنے کارندوں کو حکم دیا تھا کہ مختار کو قید خانہ سے نکال کر قتل کر دو کہ یزید
سے عبداللہ کے پاس ایک خط پہنچا اس میں مرقوم تھا کہ مختار کا زاکر دو کیونکہ عبداللہ بن عمر بن
مختار کے بیٹوں تھے، ان کی بہن نے شوہر سے کہا کہ یزید سے ان کے بھائی کی سفارش کریں،
یہاں نے یزید سے سفارش کی اور مختار قید سے رہا ہو گئے۔

ابن کے بعد

جب سلمان بن مرد کو فہ سے باہر لگ گئے تو اس وقت مختار کو فہ میں داخل ہوئے وہ خود کو محمد بن حنفیہ
فہ میں قونین کا انتقام لینے پر مامور سمجھتے تھے،

کوئی شیخ سلمان بن مرد کی پیروی کرتے تھے مختار نے انھیں اپنی طرف بلایا، جب ان سے یہ کہا
ان مرد شیخوں کے بزرگ ہیں تو وہ کہنے لگے کہ تمہاری قیادت کیلئے بہتر و مناسب نہیں ہیں، وہ خود
اس کے کیونکہ وہ فنون جنگ سے واقف نہیں ہیں، لیکن شیخوں نے مختار کی بات نہ مانی۔

۱۔ عبداللہ بن ابی عبیدہ ثقفی ۲۹۳ھ، ۲۔ نجار ابی حمزہ ۶۷ھ، ۳۔

آیا منادی نے لوگوں کو ندی دی کہ سب مسیحی میں جمع ہو جائیں، ابن زیاد نے کہا: جو بھی مسلمان
دے گا ہم اس سے بڑی ہیں، نیز لوگوں کو اطاعت کی دعوت دی پھر اپنی پوس کے افسر کو حکم دیا
کہ گلی کوچوں اور گھروں کا تماشائی جائے ایسا نہ ہو کہ مسلم کو فہ سے نکل جائیں،

حصین بن تمیم نے راستوں پر پوس تعینات کر دی، مسلم کے ہاتھ پر سیت کرنے اور انھیں
حصہ لینے والوں کو گرفتار کیا جانے لگا، عبداللہ بن یزید کی وعارہ بن صلیب از دی بھی گرفتار
انھیں قید خانہ میں ڈال دیا گیا اور بعد میں قتل کر دیئے گئے اور خون و سر اس پھیلانے کے لئے بعض
کو بھی قید کیا گیا، انھیں میں مختار بن عبیدہ ثقفی اور عبداللہ بن نوفل بن حارث بن عبدالمطلب
نے مسلم بن عقیل کی مدد کیلئے خروج کیا تھا،

جب مسلم نے خروج کیا تھا اس وقت مختار "نقلاء" نامی گاؤں میں تھے وہاں سے
کیا تھا نیز چم اٹھائے ہوئے اور عبداللہ بن نوفل بن حارث بن عبدالمطلب سرخ رنگ کا
مسجد کو فہ کے دروازے "باب الفیل" تک پہنچ گئے جب انھیں یہ معلوم ہوا کہ مسلم وہاں شہید
ہیں اور ان سے یہ کہایا کہ عرو بن حرث کے پرچم کے نیچے آجائیں، عرو بن حرث نے یہ گواہی
مسلم بن عقیل سے ملیدہ ہو گئے تھے،

عبداللہ بن ان دونوں کو ضرب و شتم کے بعد قید کر دیا اور یہ لوگ شہادت امام حسین
میں رہے۔

مختار و میثم

میثم تمار کو عبداللہ بن زیاد کے پاس لایا گیا اور اسے بتایا گیا کہ امیر المؤمنین کا

۱۔ حبشید مسلم بن عقیل، ۲۔ شمر م ۱۱۵ھ،

ایسا ہے اور ملا کو مقربین اور انبیاء و رسلین کی قسم ان ظالموں کو اس وقت تک قتل کرتا رہوں گا،
 کہ کہ دوستانہ آواز نہ ہوگا اور اس کو وہ تو ملوار و نیزوں سے فدا کروں گا تاکہ اسلام
 ان ملک ہو جائے۔

کا خط

ختم کو قید خانہ میں یہ خبر ملے کہ سیلیان بن صرد کے باقی ماندہ اصحاب کو فوفوٹ آئے ہیں لہذا انہوں
 ان مضمون کا خط لکھا،

امام احمد! تم لوگ اس بات پر خوش ہو کہ اس تحریک کی بنا پر جو کہ خدا و رسول کے لئے رنجی جس میں
 انہوں سے جہاد کیا، تیس بہت زیادہ اجر ملے گا اور گناہ بخش دیئے گئے ہیں،

سیلیان نے اپنی مدداری کو پورا کیا اور خط نے ان کی روح کو قبض کر کے انبیاء و شہداء اور صالحین
 سے ملحق کر دیا لیکن ان کے ساتھ کہ تم کا سیلاب نہیں ہو سکتے تھے، میرے اوپر تیس اطمینان و
 میں شکر کا سپر سالار ہوں، میں ظالموں اور سنگروں کو قتل کرنے اور دشمنوں سے انتقام لینے
 میں گرفتار کرنے والا ہوں، تم لوگ تیار ہو جاؤ، خوش ہو جاؤ میں تمہیں بشارت دیتا ہوں میں تمہیں
 سنت رسول اور اہلبیت کے خون کے انتقام کی کمزوروں سے دفاع کی اور دشمنوں سے جنگ
 کی دعوت دیتا ہوں۔

رفاع بن شداد شخی بن محرز، سعد بن خلیفہ، یزید بن انس، احمد بن شعیبہ، عبداللہ بن شداد اور
 ان کا دل نے مختار کا خط پڑھا اور پھر سب نے عبداللہ بن کا کوان سے ملاقات کیلئے جبل بھیجا اور

ابن الامام بن عباس

ابن بن شریح بن عباس

بعض نے لکھا ہے کہ مختار نے عبداللہ بن زبیر سے کہا، میں ایک جماعت کو پھانسا ہوا
 ایسا رہا ہوں کہ جو علم و فہم رکھتا ہو تو ان کی طاقت سے اہل شام کا مقابلہ کر سکتا ہے،

عبداللہ بن زبیر نے کہا: وہ کون ہیں؟

مختار نے کہا: وہ فوفوٹ میں علی کے شیعی ہیں

عبداللہ بن زبیر نے کہا: تم ان کے حاکم قرار پاؤ گے،

پھر عبداللہ بن زبیر نے انہیں کو فوفوٹ بھیج دیا، مختار کو فوفوٹ کے ایک علاقہ میں داخل
 امام سمیعہ پر گریزا اور امام سمیعہ کے مصائب بیان کرنے لگے، یہاں تک کہ شیعوں کے
 پھر وہ انہیں کو فوفوٹ کے اندر لے گئے بہت سے لوگ ان کے پاس جمع ہو گئے۔

بنی امیہ کو اب اپنی جان کی فکر ہوئی مختار کے ارادہ سے وہ اچھی طرح باخبر ہو گیا
 کہ علی کے شیعوں کے ساتھ ہیں،

امام سمیعہ کے قاتل عمر بن سعد، شہید بن دعی اور یزید بن حارث بن امیہ کے چاہنے
 کی ایک جماعت کے ساتھ عبداللہ بن زبیر، جو کہ عبداللہ بن زبیر کی طرف سے کو فوفوٹ کو
 پاس آئے اور اس سے کہا، مختار کو فوفوٹ میں اور خفیہ طور پر لوگوں سے جیت لے رہے ہیں اور
 لے سیلیان بن صرد خراسانی سے زیادہ سخت ثابت ہوں گے، ہماری جان خطرہ میں ہے، معلوم نہیں
 اور قتل کر کے ہم سب کو تہ تیغ کر دیں، بہتر یہ ہے کہ انہیں گرفتار کر کے قید کر دیں،

عبداللہ بن زبیر نے مشورہ کو پسندیدہ قرار دیا، اس کے آدمیوں نے مختار کو غفلت سے
 کر لیا اور ان کی گردن میں زنجیر ڈال کر کہا کہ پارہ نہ چل کی طرف چلو عبداللہ بن زبیر کو یہ سلاخ
 سواری لائی گئی، مختار کو سوار کیا گیا اور انہیں قید کر دیا گیا،

مختار نے قید میں کہا: قسم اس پروردگار کی کہ جس نے دریاؤں، صحراؤں و درختوں

را کوان بن شریح بن عباس

یزید بن اسلم کھڑے ہوئے اور کہا: سائب کی بات صحیح ہے،

عبداللہ بن مطیع نے کہا: جس سیرت کو تم کہو گے میں اسی پر عمل کروں گا۔ ایسا سائب نے
عبداللہ بن مطیع سے کہا: سائب بن مالک مختار کے مددگاروں کے سرداروں میں سے ایک
مختار کے پاس بھیجے اور انھیں اپنے پاس بلا لیجئے جب آجائیں تو گرفتار کر کے قید خانہ میں ڈال دو
لوگوں پر حکومت کا سکہ بیٹھ جائے کیونکہ وہ لوگوں کو جمع کر کے خروج کرنا چاہتے ہیں،

مختار کی گرفتاری کی سازش

مختار کی دعوت میں ہزار سے زیادہ لوگ قبول کر چکے تھے اور نظم ہو چکے تھے۔ ان لوگوں میں
آلِ عدنان اور کوفہ میں ساکن اہل علم شامل تھے کہ جن کو سرخ رنگ ہونے کی وجہ سے "حرارہ" کہا جاتا تھا۔
عبداللہ بن مطیع کو اس کی خبر ملی تو اس نے مختار کو دربار میں حاضر کرنے کا حکم دیا
ان میں سے زائدہ بن قدام اور حسین بن عبداللہ برکی کو مختار کے پاس بھیجا انہوں نے کہا: "اگر
کو ملان لیجئے،

جب مختار چلنے کیلئے تیار ہوئے تو زائدہ بن قدام نے یہ آیت پڑھی، ﴿وَإِذْ يَسْخَرُونَ مِنْكُمْ﴾
﴿كَفَرُوا وَلِيجُنُوكَ أَوْ يَفْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ﴾ کہ ان میں یہ بات گھائی کہ ہمیں دھمکا دیا جائے گا
مختار کی گرفتاری کے سامان ہیں۔ مختار نے باس اتار دیا اور چادر لپیٹ کر کاپٹے لگے اور کہا: میری
سامان ہے تم لوگ میرے پاس جاؤ اور انھیں بتادو کہ وہ یہاں ہیں،
ان دونوں نے عبداللہ بن مطیع کو مختار کی کیفیت سے مطلع کیا، ان میں سے پہلے

۱۔ "کامیاب شریعہ" ص ۱۰۰

۲۔ "فرمانِ امیر" ج ۱ ص ۱۰۷

عبدالرحمن بن شریع

مختار نے اپنے گھر کے اطراف میں اپنے ہمناموں کو جمع کیا، اور ماہِ محرم میں خروج کرنا چاہتے تھے کہ شہر
سائب میں سے ایک شریف آدمی، عبدالرحمن بن شریع نے سید بن شداد، سعد بن ابی سعید، اسود بن جراح اور
ان کے مالک حشمتی سے ملاقات کی اور کہا: مختار پھرے ساتھ ملکر کوفہ میں خروج کرنا چاہتے ہیں اور تم نہیں سمجھتے
کہ ان کی غیبت کے فائدہ میں، ہمیں محمد بن حنفیہ کے پاس جا کر انھیں مختار کے ارادہ سے مطلع کرنا چاہیے اگر انہوں
کی ہمارے مدد کرنے کی اجازت دیدی تو ہم ان کی مدد کریں گے اور اگر منع کیا تو ہم انھیں چھوڑ دوں گا کہ وہ جانیں
کہ ان کو دین کو بچانا ہماری نظریں سب سے زیادہ اہم ہے،

انہوں نے ان کی بات قبول کر لی

محمد بن حنفیہ سے ملاقات

یہ لوگ عازمِ مدینہ ہوئے، محمد بن حنفیہ کی خدمت میں پہنچے، ان کے خاندان سے عبدالرحمن بن شریع تھے،
ان کو یاد دلا دیتے ہیں: ہم نے محمد بن حنفیہ سے کہا: ہمیں آپ سے ایک کلمہ ہے،
محمد بن حنفیہ نے کہا: کیا کوئی رازِ رازِ کام ہے؟
ہم نے کہا: ہاں رازِ رازِ کام ہے،

امیرِ مہمان ہمیں ایک کلمہ دے گا،

۱۔ "کامیاب شریعہ" ص ۱۰۰، اس وقت کوفہ میں اکثر شیعہ کیساتھ تھے، جو محمد بن حنفیہ کو امام مانتے تھے بہت سے مہاجرین کا یہاں
۲۔ "فرمانِ امیر" ج ۱ ص ۱۰۷، لیکن اس وقت اور خارجِ ان زہر دہی امیر کے ساتھ فرسان امیر ج ۱ ص ۱۰۷،

jabir.abbas@yahoo.com

انہوں نے کہا: ذرا ٹھہرو! پھر کچھ توقع کے بعد مجلس سے اٹھے اور تنہائی میں جا بیٹھے۔
طلب کیا، ہم ان کے پاس گئے عبدالرحمن بن شریح نے گنگو کا آغاز کیا اور خدائی حمد و ثناء کے بعد محمد بن حنفیہ کی تعریف کی اور کہا: آپ اہلبیت کو خدا نے فضیلت عطا کی ہے در بزرگی دی ہے، آپ ہی کو نبوت کے در پر سوار کیا اور اس امت پر آپ کا براحق ہے اور جس نے آپ کا حق نہ پہچانا وہ گھٹا ہے میں ہے، حسین کے مصائب و مصائب حضرت اور عوام تمام مسلمانوں کیلئے ناقابل برداشت ہیں مختار ہمارے پاس پہنچے ہیں وہ یہ دلوں کو کھینچ رہے ہیں انہیں اجازت دی ہے وہ ہیں کتاب خدا اور سنت رسول، اہلبیت کے خون کے انتقام اور کفر سے دفاع کی طرف دعوت دیتے ہیں اور ان باتوں کے پیش نظر ہم نے ان کی بیعت کرنی ہے، ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ کیوں نہ آپ ہی سے اس کی تصدیق کر لی جائے اب اگر آپ اجازت دیں تو ہم ان کی مدد کریں اگر مرنے کیس تو ان سے الگ ہو جائیں،

پھر ان میں سے ہر ایک نے اظہار خیال کیا اور محمد بن حنفیہ نے سنا اور ہنسی بکھا:

محمد بن حنفیہ کی باتیں

امام بعد اتم نے جو یہ کہا ہے، کہ خدا نے ہمیں فضیلت عطا کی ہے اور خدا جس کو چاہتا ہے عطا کرے کہ وہ بڑا کریم ہے تو اس پر میں خدائی حمد کرتا ہوں،
دعایہ بات کہ قتل حسین کی مصیبت ہم پر پڑی ہے تو حسین کے مصائب خدائی کتاب میں مذکور ہیں ان کی شہادت تقدیر کا نوشتہ تھی اور یہ ایک عزت و کرامت تھی جس سے خدا نے انہیں سرفراز کیا اور خدا انہیں اور آزمائشوں کے ذریعہ ایک جماعت کے درجات بلند کرتا ہے اور بعض کو زیر کرتا ہے اور خدا کا امر ملے تو میں رد و بدل نہیں ہو سکتی،

ہاں جس نے نہیں ہمارے خون کا انتقام لینے کی دعوت دی ہے تو خدا کی قسم مجھے یہ بات پسند ہے کہ خدا اپنی مخلوق میں سے جس کے ذریعہ چاہے ہمارے دشمنوں سے انتقام لے یہ ہے یہ لفظ یہ خدا کا

امام زین العابدین سے اجازت طلبی

ان زمانے روایت کی ہے کہ محمد بن حنفیہ نے کہا: میرے ساتھ آؤ میں تمہیں اپنے بھتیجے کے پاس لے چلتا ہوں اور میرے درتہا سہامہ میں، یہ لوگ آپ کی خدمت میں پہنچے اور اپنا مقصد بیان کیا تو امام زین العابدین نے فرمایا: چچا! اگر تمہارا انتقام لینے کے لئے کوئی کلام غلام بھی اٹھے تو مجھے لوگوں پر اس کی مدد کرنا واجب ہے میں آپ کے سپرد کرتا ہوں جیسے مناسب سمجھیں اس کے سپرد کریں۔

ان لوگوں نے آپ کی بات سنی اور جب باہر نکل آئے تو کہنے لگے: امام زین العابدین اور محمد بن حنفیہ اس مختار کی اطاعت و مدد کرنے کی اجازت دیدی ہے اب اس سے شہر پوشی نہیں کرنی چاہیئے۔

انوار الہی

جب مختار کو یہ معلوم ہوا کہ یہ لوگ مدینہ گئے ہیں تو انہیں افسوس ہوا کہ میں ایسا نہ ہو کہ محمد بن حنفیہ نے اجازت نہ دی ہو اور یہ واپس لوٹ کر کوفہ کے شیعوں، مجھ سے بدشگن کریں،
یہ لوگ جب کو نو دہاؤں نوٹے تو پہلے اپنے گھر جانے کی بجائے مختار کے پاس گئے، مختار نے پوچھا کیا خبر ہے

باب ۱۱ ص ۲۵

دارالافتاء دارالحدیث ۱۴۲۵ھ

jabir.abbas@yahoo.com

انہوں نے جواب دیا کہ میں آپ کی مدد کرنے کا حکم دیا گیا ہے۔

اس پر مختار نے تلخ نگاہی، اور کہا: کوفہ کے شیعہوں کو میرے پاس لاؤ، چنانچہ ایک ہزار شیعہ ان کے پاس آئی تو مختار نے ان سے کہا: بچہ لوگ مدینہ محمد بن حنفیہ کے پاس گئے تھے، انہوں نے ان سے کہا: میرے نام نہ دہا اور وزیر بن زید کو دیا جائے کہ جب چیز کی تمنا ہو تو اس میں ہری پیر وی اور اس کے بیوی بیوی دھوئیں سے جنگ اور اہلبیت کے خون کا انتقام لیتا ہے۔

عبدالرحمن بن شریک کی تائید

جب مختار یہ کہہ چکے تو مدینہ محمد بن حنفیہ کے پاس جانے والے وفد کے نام نہ عبدالرحمن بن شریک اور مختار کی باتوں کی تائید کی اور کہا:

ہم چاہتے تھے کہ ہم پر اور عام لوگوں پر حقیقت روشن ہو جائے، چنانچہ ہم مدینہ میں مدینہ کے بنی ہاشم کے پاس گئے اور ان سے اس امر اور ان چیزوں کے بارے میں سوال کیا جن کی طرف ہمیں تمنا تھی وہ تھی انہوں نے ہمیں ان کی مدد اور ان کے مقصد کی راہیں بتا کر دینے کا حکم دیا ہے اسی طرح ان کی چیزوں کی راہیں بتا کر دینے کا حکم دیا ہے اور ان کے ساتھ دوسرے کے ساتھ دیکھتے ہیں، شک و تردید اور تذبذب ختم ہو گیا ہے، اب ہم مدینہ کے رہنے والے کے ساتھ دشمنوں سے جدا کر دیں گے، حاضرین غائبانہ ایک خبر پہنچا دیں تاکہ وہ بھی مبارک ہو جائے۔ عبدالرحمن کے بعد ان لوگوں میں سے یکے بعد دیگرے اٹھا اور عبدالرحمن کی مانند مختار کے قتل کی تائید کی۔

۱۔ کلامی شریک میں ۱۲۱

۲۔ تاریخ طبری ج ۸ ص ۶۰۸

ابراہیم بن مالک اشتر

مختار کے چاہنے والوں میں سے بعض لوگوں نے ان سے کہا: کوفہ کے بعض سربراہ اور مدینہ کے بعض سربراہ آپ سے جنگ کرنے کی تحنان چکے ہیں، اگر مالک اشتر کے بیٹے ابراہیم ہمارے ساتھ آجائیں تو امیر کو خدا کے لطف سے ہم دشمن پر فتح پا جائیں گے کیونکہ وہ دلار، شجاع اور بڑے باپ کے بیٹے ہیں ان کا نانا نذران بھی بڑا ہے بکا دھاک ہے۔

مختار نے کہا: ابراہیم سے ملاقات کر کے انھیں دعوت دو۔

وہ ابراہیم کے پاس گئے اور انھیں حالات بتائے اور ان سے مدد چاہی نیز کہا: آپ کے والد مالک اشتر اور اہلبیت کے چاہنے والے تھے۔

ابراہیم نے کہا: میں تمہاری حسین اور اہلبیت کے خون کا انتقام لینے والی دعوت کو اس شرط پر اور تمناؤں میں کہ میں تمہارا امیر ہوں گا۔

انہوں نے کہا: آپ کے نذرانہ میرے لئے کیا صلہ جیت ہے کہ میں یہ ممکن ہوئے ہے کیونکہ مختار مہدی محمد بن زید اور ان سے مغرور ہوئے ہیں اور انھیں جنگ و قتال پر مہین کیا گیا ہے اور ہمیں ان کی اطاعت کا حکم دیا گیا ہے۔

ابراہیم خاموش رہتا اور کوئی جواب نہ دیا۔

وہ مختار کے پاس آئے اور صورت حال سے انھیں آگاہ کیا۔ اسی طرح تین روز گذر گئے پھر مختار اپنے دوستوں کے ساتھ اور شعی اپنے والد کے ہمراہ ابراہیم کے پاس گئے۔

ابراہیم نے مختار کو سر پہنے بٹھایا اور خود پائتیں بیٹھے۔

مختار نے کہا: یہ مہدی محمد بن علی امیر المؤمنین کا خط ہے جو کہ خدا کے انبیاء و رسل کے بعد بہترین آدمی

۱۔ کلامی شریک میں ۱۲۵

ابراہیم کی بیعت کرتے ہیں

شبی کہتے ہیں: ان لوگوں کی گواہی کے بعد کہ ان میں میں و میرے والد شریک نہیں تھے، ابراہیم کھڑے ہوئے اور ان کو بلائے مجلس بنھایا اور ان سے کہا: ہاتھ بڑھائیے تاکہ میں آپ کی بیعت کروں، پھر سیدہ جنت اور اشیرت منگایا، ہم لوگوں نے پیا اس کے بعد اٹھ کھڑے ہوئے ابراہیم بھی ہمارے ساتھ آئے مختار نے ابراہیم سے ان کی بیعت کی اور ان کے گھر تک پہنچا کر گئے، شبی کہتے ہیں: ابراہیم نے واپسی پر میرا ہاتھ پکڑا اور کہا کہ میرے ساتھ چلوں ان کے ساتھ پلٹ گئے گھر آیا انہوں نے مجھ سے کہا: کیا واقعہ ہے کہ تم نے اور تمہارے والد نے اس خطہ کے صحیح ہونے کی گواہی دی؟ کیا تمہیں یہ یقین ہے کہ انہوں نے ناحق گواہی دی ہے، میں نے کہا: انہوں نے گواہی دی ہے یہ کاریوں کے سردار کو فو کے بزرگ اور عرب کے سوار میں جتن

ابراہیم نے کہا: میں نے یہ بات کہی لیکن میں اس جماعت کی اس بات کو قبول نہیں کرتا ہوں ہاں میری گواہی رائے ہے جو اس جماعت کی ہے، ان کے ساتھ خروج کرنا چاہتا ہوں اور جب تک یہ قصہ ختم نہیں ہوتا، اس وقت تک میں اپنے دل کی بات بیان نہیں کروں گا، ابراہیم نے کہا: اس جماعت کا نام لکھ کر مجھے دو کیڑے کہ میں ان سب کو نہیں پہنچاتا، میں نے کہا: بسم اللہ الرحمن الرحیم، یہ وہ چیز ہے جس پر سائب بن مالک، یزید بن انس، اعر بن شیطا اور ہونیر بن ابی دینار نے ابراہیم بن اشتر کو خط لکھا ہے اور انہیں مختار کی مدد کرنے کے ساتھ خروج کرنے کا حکم دیا ہے کہ دشمنوں سے جنگ کریں اور اہلبیت کے خون کا انتقام لیں اور ان کے خلاف لو کہ جس نے گواہی دی ہے کہ محمد بن حنفیہ کا خط ہے، شرابیل بن عبداللہ ابو عامر بن محمد بن عبداللہ اور عمار بن شریح نے گواہی دی ہے،

یوں انہوں نے تم سے تعاضد کیا ہے کہ تم میری مدد کرو اگر میری مدد کرو گے تو فائدہ میں رہو گے اور اگر نہ کرو گے تو یہ خط تم پر جھٹ ہے اور خدا و رسول اور اہلبیت سے تم سے بے نیاز کریں گے، مختار نے خط شبی کے حوالے کر دیا تھا جب گفتگو ختم ہو گئی تو شبی نے وہ خط ابراہیم کے ہاتھ میں دے کر اسے کھولا، خط طویل تھا اس میں لکھا تھا:

بسم اللہ الرحمن الرحیم: یہ خط محمد امجدی کی طرف سے ابراہیم بن اشتر کے نام ہے، سلام علیکم: میں مختار کو تمہارے پاس بھیج رہا ہوں میں نے انہیں انتخاب کر کے تم کو دشمنوں سے جنگ کرو اور ان سے میرے اہلبیت کے خون کا انتقام لو لہذا تم اپنے مالکوں کی ان کی مدد کرو،

خط کے آخر میں ابراہیم کو مختار کی مدد اور تعاون کی ترغیب کی گئی تھی، ابراہیم نے خط پڑھا اور کہا: محمد بن حنفیہ خط لکھتے تھے اپنا اور اپنے والد کا نام لکھتے تھے اور اس خط میں لکھا ہے محمد امجدی، مختار نے کہا: وہ اس وقت کی بات تھی آج حالات بدل چکے ہیں حالات کا مختصراً ذکر کرتا ہوں،

ابراہیم نے کہا: کسے معلوم ہے کہ محمد بن حنفیہ کا خط میرے نام آیا ہے، یزید بن انس، اعر بن شیطا و عبد اللہ بن کمال اور دیگر لوگوں نے گواہی دی کہ یہ خط محمد بن حنفیہ کے نام پہنچا ہے، شبی نے کہا: لیکن مجھے اور بابا کو اس کی اطلاع نہیں ہے۔

میں نے کہا: یہ آپ کس لئے چاہتے ہیں؟

انہوں نے کہا: جھوڑ دیکھیں میرے پاس رہے گا۔

پھر ابراہیم نے اپنے خاندان والوں کو بلائے اور مختار کے پاس جاتے تھے۔ ہر رات مختار کے پاس جاتے اور رات گئے تک انہیں کے پاس رہتے تھے اور اس وقت تحریک و خروج و صلاح و مشورہ کرتے یہاں تک کہ دونوں میں یہ طے پایا کہ خروج کیا جائے۔

خروج مختار

مدائنی نے نقل کیا ہے کہ مختار بن ابی عبید نے شب چہرہ شنبہ کو نصف رجب ۱۱۱ خریفہ کو کھڑا کیا اور لوگوں نے چار چیزوں پر ان کی بیعت کی،

① کتاب خدا،

② سنت رسول اللہ،

③ خون حسین اور خون اہلبیت کا قصاص،

④ کمزوروں سے دفاع،

اس سلسلے میں شاعر کہتا ہے:

وَلَمَّا دَعَا الْمُخْتَارُ جُنَّتَا لِنَصْرِهِ

دَعَا يَا لِبَشَارَاتِ الْحُسَيْنِ فَنَاقَبَتْ

عَلَى الْخَيْلِ تَرْدِي مِنْ قُبَّتِ

ثُعَادِي بِغُزَّاسَانِ الصَّبَاحِ

۱۔ مختار ہمارے ہم سفر ہیں،

۲۔ مسکو راہی نے کھانچ کر خاندانِ نبویؐ کی ریح اور ان کے خون کو فروغ کیا، مختار ہمارے ہم سفر ہیں،

۳۔ مختار نے ہمیں مدد کیلئے بلایا تو ہم آگئے جبکہ ہم سیدہ کاے اور سرخ گھوڑوں پر سوار تھے اس نے بشارت دی

۴۔ لڑا تو وہ بڑھے تاکہ مسیح کے سواروں کے ساتھ قصاص کیلئے جنگ کریں، بخار الانوار ج ۵ ص ۳۳

ابن مضارب

یاس بن مضارب، عبداللہ بن مطیع کے پاس آیا اور کہا: مختار آج رات یا کل رات کو خروج کریں گے اپنے بیٹے کو کھانا سہہ مزیدہ کو فربہ بھجوا ہے، آپ کو فربہ ہر طرف اپنے آدمی پھیلا دیں تاکہ مختار کے دربار میں خوف پھیل جائے اور وہ خروج نہ کریں،

یاس اپنے دشمنوں کے ساتھ باہر نکلا اور عبداللہ بن مطیع نے عبدالرحمن بن سعید بن قیس کو بلا کر کہا: تم اپنے قبیلہ کا خیال رکھنا کہ وہ خروج نہ کریں کچھ دوسرے لوگوں سے کہا کہ تم اپنے قابل سے ہوشیار رہنا کہ مختار کے ساتھ خروج سے روکنا، شیش بن یحییٰ کو بھجوا اور اس سے کہا: ان کی آواز سننے ہی

بروز دوشنبہ ۱۱ رجب دستے اور فوجیں و جہازیں بلے میں جمع ہو گئیں، مغرب کے بعد ابراہیم بن اشتر کے محل کو مختار کے پاس جانا چاہتے تھے انہیں بتایا گیا کہ دشمن کے فوجی دستے پورے شہر میں کپڑے اور گھر کے اطراف میں پھیلے ہوئے ہیں،

سعید بن سلمہ جو کہ ابراہیم بن مالک اشتر کے دوست تھے اور ہر رات مختار کے پاس جاتے تھے کہتے ہیں: میں مشکل کی شب میں نماز مغرب کے بعد ابراہیم کے گھر سے ان کے ساتھ باہر نکلا، ابراہیم نے ہم پر تقریباً سو آدمی عوار تھام لئے ہوئے تھے اس کے علاوہ ہمارے پاس کوئی اور اسلحہ نہیں تھا، میں نے ابراہیم سے کہا: بازار سے نہ جاؤں کیونکہ بازار کو ابن مطیع کی فوج نے گھیر رکھا ہے بہتر ہے کہ میں اور عمار علیہ جہیلہ سے مختار کے گھر جائیں تاکہ ابن مطیع کی فوج سے ٹکراؤ نہ ہو،

ابراہیم، جو کہ دبیر و نڈر تو ان تھے اور ان سے ٹکرانے میں خون محسوس نہیں کرتے تھے۔ نے کہا:

ابن ہشام کی جمع ہے کہ اس کی فوجت ان کے ہمراہ مصطفیٰ کے مہتمم ہیں،

ایک حادثہ ایسا رونما ہو گیا کہ آج رات ہی میں خروج کر پڑے گا۔
مختار نے کہا کیا ہوا ؟

ابراہیم نے جواب دیا : ایسا بن مضارب نے ہمارا ساتھ بند کر دیا تھا اور وہ اپنے خیال میں ہمیں نجات
دے رہا تھا میں نے اسے قتل کر دیا اور اس کا سر دروازہ پر میرے ساتھیوں کے پاس ہے،
مختار نے کہا : خدا تمہیں نیک بشارت دے یہ پہلا قدم ہے انشاء اللہ کامیابی تمہاری ہے ۔

ایک کا حکم

مختار نے سعید بن مسقہ سے کہا : چھت پر جا کر آگ روشن کرادو اور عبداللہ بن شداد سے کہا کہ تم کو فہ
میں ضرورتاً موت کا خورہ ملے گا اور اس سے اصحاب و انصار جمع ہو جائیں گے اور سفیان بن یزید اور قدامہ
بن مکہ سے کہا : تم یا ثنات رات آئین کی آواز بلند کرو، پھر مختار نے ہتھیار لگائے، ابراہیم نے ان سے
عبداللہ بن مطیع کی فوجیں کو فہ میں تعینات ہو چکی ہیں، ممکن ہے ہماری بیعت کرنے والے ہم تک نہ
ہوں، میں اپنے ساتھیوں کے ساتھ کو فہ کے اطراف میں جاتا ہوں اور انہیں اپنے غور کے ذریعہ پکاروں
اور جمع کر کے تمہارے پاس ملاؤں گا اور جو یہاں آجائے وہ یہیں رہے تاکہ اگر ان مطیع کے سپاہی آپ پر حملہ
کرے تو وہ دفن کر دیں،

مختار نے کہا : جلدی کرو لیکن ان کے امیر کی طرف نہ جانا اور نہ ان سے جنگ کرنا بلکہ جہاں تک ہو سکے
میں بچوں، مگر یہ کہ وہ پیش قدمی کریں،

خدا کی قسم میں غروبِ حریش کے گھر کے سامنے اور بازار و قصر کی طرف سے تلواروں کے بیج سے
دشمن کے دلہن کو فہ بیٹھ جائے اور وہ پیچھے جائیں کہ ان کی ہماری نظروں میں کوئی حیثیت نہ رہے
پھر باب اشیلہ کے راستے سے پہلے اس کے بعد غروبِ حریش کے گھر کے پاس پہنچے
آگے بڑھے تو ایسا بن مضارب اور اس کی مسلح فوج سے مد بھیڑ ہوئی ایسا نے پوچھا کہ کیا
ابراہیم نے کہا : میں مالک اشتر کا بیٹا ہوں،

ایسا نے پوچھا : یہ تمہارے ساتھ کون لوگ ہیں اور تمہارا کیا ارادہ ہے میں تمہارے
مشکوک ہوں، مجھے یہ خطر ملی ہے کہ تم ہرات کو یہیں سے گذرتے ہو اس بنا پر تمہیں حاکم کے ساتھ
تاکو وہ تمہارے بارے میں اپنا فیصلہ سنائے،

ابراہیم نے کہا : راستہ چھوڑو ! تاکہ ہم جائیں،

ایسا نے کہا : خدا کی قسم راستہ نہیں چھوڑوں گا،

ایسا کے ساتھ قبیلہ سہلان کا ایک آدمی تھا جسے ابو قطن کہتے تھے، اس کی سپہ سالاری
دوستی تھی، وہ بھی اس کا احترام کرتے تھے، یہ شخص ابراہیم بن اشتر کا دوست تھا، ابراہیم نے
اس کے پاس ایک ہمانیزہ تھا، ایسا نے سوچا کہ ابراہیم اس کے ذریعہ سفارش کرائیں گے تاکہ
جائے، ابراہیم بن اشتر نے اس سے نذرہ لیکر کہا : تمہارا نذرہ بلند ہے، پھر اس سے ایسا بن مضارب
اور نذرہ اس کے گلے میں اتار کر اسے زمین پر گرا دیا اور اپنے ایک ساتھی سے کہا : اگر وہ اس کا
سنے اگر اس کا سر کاٹ لیا،

ایسا بن مضارب کے ساتھی پر گندہ ہو گئے اور ان مطیع کے پاس پہنچے، اس سے
کیا اس نے ایسا کے بیٹے کو سپاہیوں کا دار و فہ مقرر کر دیا،
ابراہیم مختار کے گھر پہنچے، مختار سے ملے اور کہا : طے یہ تھا کہ شبِ جمعرات میں آؤ

زحر بن قیس کی فوج پر حملہ

ابراہیم اور ان کے سپاہی باہر نکلے اور اپنے محکمہ تک پہنچ گئے، ان کے چاہنے والے ۲۰۰۰ آدمی وہ ان کے پاس جمع ہو گئے اور ان کے ساتھیوں کے گئے۔ ایک شہر کی گلیوں میں چلتے رہے اور وہیں ملاوٹ والے مٹیوں کے پانی تینیاں تھیں ان سے پتے رہے اسی طرح مسجد سکون، نیک پنچ گئے وہاں زحر بن قیس کے سپاہیوں کا ایک دستہ کہ جس کا کوئی گناہ نہ تھا، وہاں موجود تھا، ابراہیم نے ان پر حملہ کر دیا اور انہیں کڑھ کی طرف پیچھے دھکیل دیا اور ان کا قہقہہ کرتے ہوئے کہا: اے اللہ! تو جانتا ہے کہ ہم رسول کے اہلبیت کی خاطر خروج کیا ہے پس تو ہمیں ان پر فتح عطا فرما،

سوید بن عبدالرحمن

انہیں پسپا کرنے اور میدان، انہیں ہلکے پیچھے دھکیلنے کے بعد ابراہیم کھڑے ہو گئے اور انہوں نے انہوں سے انہیں بلایا جب سوید بن عبدالرحمن کو یہ سنا کہ ابن ابی مطیع کا سپہ سالار تھا، صورتحال کا علم ہوا ابراہیم اور ان کے سپاہیوں کی طرف آیا، اسے امید تھی کہ وہ ان کا قصد تمام کر دے گا اور اس سے ان کی زندگی اس کی حیثیت بن جائے گی، ابراہیم نے اپنے ساتھیوں سے کہا: اے خدا کے سر بار! اسے اتر پڑو! ان فاسقوں کے مقابلہ میں کہ جنہوں نے اہلبیت رسول کا خون بہایا ہے، کامیابی تمہارے پاس ہے،

ابراہیم کے ساتھی سواریوں سے اتر پڑے اور انہوں نے سوید بن عبدالرحمن کے سپاہیوں کو دیا اور پسپا کر کے کھانسی تک پیچھے دھکیل دیا، ابراہیم کے اصحاب نے کہا: بہتر ہے کہ ہم ان کا ہاتھ کریں ابراہیم نے کہا: ہمیں مختار کے پاس جا کر ان کی مدد کرنا چاہیے کیونکہ جب انہیں اور ان کے

ملازم ہو گا کہ ہم ان کی مدد کر رہے ہیں تو اس سے ان کے اندر زیادہ ہمت بڑھے گی اور ہو سکتا ہے کہ وہ مختار سے جنگ کر رہا ہو۔

ابراہیم اور ان کے ساتھی آ رہے تھے جیسے ہی مختار کے گھر کے قریب پہنچے تو اس گروہ کا غرہ سننا شروع ہو گیا تھا اور جنگ میں شمول تھا، شیش بن ربیع، سبزوہ کی طرف سے آگیا تھا، مختار نے یزید بن اس سے متاثر کرنے پر مبین کو دیا تھا، دوسری طرف جابر بن ابجر نے بھی مختار پر حملہ کر دیا، اس کے مقابلہ میں مختار نے احر بن شیط کو مقرر کیا تھا،

مختار کے کھانا زچہ میں مشغول تھے کہ قصر دارالامارہ کی طرف سے ابراہیم آ گئے، چار اور اس کے لوگوں کو اطلاع ملی کہ ان کے پیچھے سے ابراہیم آ رہے ہیں تو وہ ابراہیم کے آنے سے پہلے محاذ چھوڑ کر متفرق ہو گئے اور گلی کوچوں میں چلے گئے،

مختار کے جانیازوں نے شیش بن ربیع پر حملہ کر دیا جس سے انہیں پیچھے ہٹنا پڑا اور ابن ابی مطیع کے کہنا: ان کے مقابلہ میں ٹھہرنے والے سپہ سالار کو بھیجئے اور سارے لوگوں کو جمع کر کے ان کی طرف کیسے اور ایسے لوگوں کو بھیجئے جن پر آپ کا اعتماد ہے تاکہ وہ مقابلہ کر لیں کیونکہ وہ مضبوط ہو گئے ہیں، دار فروع کر چکے ہیں، جب مختار کو یہ پتہ چلا کہ شیش بن ربیع نے ابن ابی مطیع سے دوسرے سپہ سالاروں کو جمع کر کے جنگ پر بھیجئے، کا مطالبہ کیا ہے تو وہ اپنے ساتھیوں کے ہمراہ "دیر صند" کی پشت پر بستان زائدہ سے نزدیک ہے "سبز میں چلے گئے،

انسان ہندی اور قبیلہ شاکر

قبیلہ شاکر والے اپنے گھروں میں جمع تھے اور کعب بن ابی کعب نے ان کے راستے بند کر رکھے تھے

ابو عثمان ہندی اپنے مددگاروں کے ایک گروہ کے ساتھ گئے اور بائانات اسیقہ کا سرورہ مل گیا۔
ہدایت یافتہ ہو گئے! جان کوکرا امین آل محمد "مختار" نے خروج کیا پتا اور وہ اس وقت درہندہ
مجھے تمہارے پاس بھیجا ہے تاکہ میں تمہیں دعوت و بشارت دوں باہر نکلو اور ان کی مدد کرو۔
قبیلہ رشا کو غزوہ یاثرات اسیقہ کے ساتھ اپنے گھروں سے نکل پڑا اور کعب بن ابی اسفہان
بھگا کر راستہ کھول دیا اور مختار کی طرف چلے گئے،

قبیلہ خثعم

عبداللہ بن قراؤ قبیلہ خثعم کے تقریباً دو سو افراد کے ساتھ باہر نکلے اور مختار سے مل گئے۔
کعب بن ابی کعب نے ان کا راستہ روکا لیکن جب دیکھا کہ اسی کے قوم و قبیلے وڑے ہیں تو راستہ چھوڑ دیا۔
طرح قبیلہ شہام بھی مختار کے پاس آگیا،

طلوع فجر سے پہلے چن بارہ ہزار لوگوں نے مختار کی بیعت کی تھی ان میں سے یمن ہزار اور
مختار کے پاس جمع ہو چکے تھے اور طلوع صبح کے وقت مختار نے انہیں منظم کر دیا تھا۔

مسجد میں اجتماع

عبداللہ بن مطیع نے کسی کو شہر کے میدانوں میں بھیجا تاکہ یہ اعلان کر دے کہ سب مسجد میں جمع ہوں۔
جب لوگ مسجد میں جمع ہو گئے تو عبداللہ بن مطیع نے یمن ہزار کو شہریت بن ربیع کی سرکردگی میں مختار
کے لئے بھیجا اسی طرح ارشد بن ایاس کو چار ہزار پوسل کے ساتھ بھیجا،

۱۔ نجارب لامعہ ص ۱۶۱

امار اجانی

اسلم بن مہرہ نے شہریت بن ربیع کے ساتھ سخت جنگ لڑی، سمر بن ابی سحر کو سواروں کا سپہ سالار
کیا وہ فوجیوں کی کمان خود سنبھال لی، یہاں تک دن چڑھ گیا اور شہریت کی طرف وار شکست کھا کر
کاؤنڈا کر گئے،

شہریت نے اپنے ساتھیوں سے ثابت قدی اور استقامت کی درخواست کی اور انہیں جنگ کرنے
کا پناہ پر بعض لوگ واپس آ گئے اور نعیم کے دست پر حملہ آور ہوئے چونکہ وہ پر اکندہ ہو گئے تھے اسلئے
وہ دوچار ہوئے، خود نعیم نے مارے جانے تک ثابت قدی اور تعادومت کا ثبوت دیا، شہریت
نے سمر بن ابی سحر کو ان کے ساتھیوں کے ساتھ گرفتار کر لیا پھر اسیروں میں سے عربوں کو چھوڑ
دیا۔ غلاموں کو قتل کر دیا۔

۱۔ ابن کثیر ص ۱۶۰

مختار کا محاصرہ

پھر شیش بن رہی مختار کی طرف چلا اور مختار و یزید بن اس کا محاصرہ کر لیا جبکہ مختار نے اپنے دوستوں کو ساتھ لے کر دو ہزار سپاہی لے کر تمام کھلم کھلی طرف سے پھیل دیے تھے اور وہ اس کے دھمکے پر مختار خود پیادہ لوگوں کے ساتھ تھے چنانچہ یزید بن اس کو سواروں کا سپہ سالار مقرر کیا۔ ان پر دو ہفتے کے لیکن مختار کے انھاروں نے مخالفت کی۔

یزید بن اس کی تقریر

یزید بن اس نے ایک تقریر کی تاکہ اپنے ساتھیوں کو جنگ کی ترغیب دلائی انہوں نے اسے جوا ماضی میں یہ لوگ تمہیں قتل کرتے اور تمہارے ہاتھ پاؤں قطع کرتے تھے۔ پھر وہ دیتے اور اہلبیت رسول کی محبت کے ہم میں کچھ کی شرافتوں پر چھائی پر چڑھا دیتے تھے۔ میں تمہیں تھے اور تمہارے دشمن کی اطاعت سوری تھی اگر آج پر گروہ تم پر غالب آجائے تو تمہارا خدا کی قسم تم میں سے کسی کو زندہ نہ چھوڑیں گے، تمہیں بے بسی کی صورت میں قتل کریں گے اور تمہاری اولاد اور خاندان کے ساتھ ایسا سلوک کریں گے کہ جس سے بہر موت ہے، خدا کی قسم تمہیں صرف خدا قسم اور ان پر نیزہ و شیر چلانے ہی سے نجات مل سکتی ہے، پس اپنے لئے سختیوں کو آسان بناؤ اور ان کے تیار ہو جاؤ پھر جب میں دوبارہ اپنے سر کو حرکت دوں تو تم حاکم کر دینا، ان کے ساتھیوں نے خود کو تیار کر لیا۔

فرمان کیلئے منتظر رہے۔

۱۔ اسکا میں سیدھے راستے کو پہنچے لیکن یہاں گئی یا کوڑا کا کوئی ٹکڑا مراد ہے کہ اسطرح دوس کی مانند کہہ رہا ہے۔

منہج البلدان ج ۱ ص ۱۳۱، منہج العرب ج ۱ ص ۱۳۲،

یزید بن اس کا قتل

ابراہیم نے یزید بن اس کو سواروں کا سپہ سالار مقرر کیا اور خود پیادہ سپاہیوں کے ساتھ چلتے رہے۔ انھار آگے بڑھتے رہے یہاں تک کہ راشد بن یاس سے مقابلہ ہوا اس کے ساتھ چار ہزار سپاہی تھے۔ اپنے سپاہیوں سے کہا: تم لوگ دشمن کی پشت سے گھبرا کر خدا کی قسم کھانا ایسا ہوتا ہے کہ ایک آدمیوں سے بہتر ہوتا ہے پھر خدا بھر کرنے والوں کے ساتھ ہے۔

ابراہیم کا انھار اور راشد کی فوج کے درمیان شدید جنگ ہوئی، یزید نے راشد بن یاس پر حملہ کیا قتل کر کے باآواز بلند کہا: رب کی قسم راشد کو قتل کر دیا،

راشد کے قتل کے بعد اس کے سپاہی پر آگندہ ہو گئے پھر ابراہیم اور خزیمہ اس طرف روانہ ہوئے۔ اس وقت تھے اور کی کو پیچھے بھیج کر مختار کو راشد کے قتل کی خوشخبری دی،

مختار راشد کے قتل کی خبر سنکر بہت خوش ہوئے اور کہہ کر ان کے اصحاب نے بھی تکبر کی اور اس کے حوصلے بڑھ گئے اس کے برخلاف جب ابن مطیع کے سپاہیوں کو راشد کے قتل کی خبر ملی تو ان کے حوصلے بہت ہو گئے۔

یزید بن قائد

یزید بن قائد نے مختار کے سپاہیوں سے مقابلہ کرنے اور ابراہیم بن اس کے راستے بند کرنے کیلئے انہیں روک دیا۔ اس نے قائد بن قائد بن کثیر کو بہت بڑے لشکر کے ساتھ بھیجا ابراہیم نے اس کا حملہ روکنے کیلئے

منہج البلدان ج ۱ ص ۱۳۲،

ابن حجاج کا مشورہ

عروبن حجاج نے عبداللہ بن مطیع سے کہا: اے مرد! خود کو ہلاکت میں نہ ڈال لوگوں کے پاس جاؤ اور اپنے دشمن سے لڑنے کی دعوت دو! تمہارے طرفدار بہت زیادہ ہیں اور تمہارے اوپر خروج کرنے والوں کی بہت کم ہے۔ سب سے پہلے تمہاری آواز پر میں ایک کجوں کا اور میرے ساتھ ایک گروہ ہے، دوسرے تمہاری حمایت کریں گے۔

ابن مطیع کا خطبہ

ابن مطیع نے خطبہ پڑھا اور لوگوں کو جنگ کی ترغیب دلاتے ہوئے کہا: لوگو! اپنے حرم اور شہر کو الٹا کر دو کہ تمہارے اموال و منافع کو وہ لے جائیں، خولکی قسم تمہارے منافع میں وہ شریک ہو جائیں۔ ان کا اس میں حق نہیں ہے مجھے خبر مل چکی ہے کہ ان میں پانچ آدمی وہ ہیں جو تمہارے غلام تھے تو آزاد ہو گئے۔ ان کی تعداد بڑھ جائے گی تو تمہاری عزت و قدرت ختم ہو جائے گی۔ عین اسی وقت یزید بن عمارت کی پوری کوشش صرف ہو رہی تھی کہ مختار اور ان کے ساتھی کو فوجیں لے کر مدینہ کی طرف سے خلیفہ نے یزید کو ہار دیا۔

ابن مطیع کا محاصرہ

مختار اور ان کے سپاہی شہر سے باہر تھے اور عبداللہ بن مطیع کی فوجیں ان کے شہر میں داخل ہونے لگیں۔

ابن مطیع ۳۳ھ

شکست دی،

حسان بن خالد اپنی فوج کے پیچھے تھا جب فوج بھاگی تو خزیمہ نے اس پر حملہ کر کے قریب پہنچے تو پہچان گئے کہا: حسان میں نے تمہیں پہچان لیا ہے اب خود کو بچاؤ، حسان پھل کر زمین پر گر پڑا دوسرے طرف لڑنے کے چاروں طرف جمع ہو گئے وہ بھی اس کو گرفتار کر لیا۔ اسے آواز دی خود کو ہلاکت میں نہ ڈالو میں نے تمہیں امان دی ہے، خزیمہ اس کے پاس آئے سپاہیوں کو اس کے اطراف سے ہٹایا اسی وقت ابراہیم آگئے۔

میں نے حسان کو امان دی ہے۔

ابراہیم نے کہا بہت اچھا کام کیا ہے۔

خزیمہ نے اپنے ساتھیوں سے کہا: حسان کا گھوڑا لاؤ، اسے گھوڑے پر سوار کیا اور کہا: خدا نے ملتی ہو جاؤ۔

ابراہیم مختار اور ان کے انصار کی طرف روانہ ہو گئے اس وقت شب بن ربیع نے مختار کو اس کا محاصرہ کر رکھا تھا ابن مطیع نے سپہ سالار یزید بن عمارت سے جب ابراہیم کو دیکھا تو اسے رات روکنا چاہا، ابراہیم نے اپنے ساتھیوں میں سے ایک گروہ کو بھیجا کہ اس کے قتل کو اور خود شب بن ربیع کی طرف بڑھے، شب کے ساتھیوں نے ابراہیم کو دیکھا تو وہ آہستہ آہستہ لگے ابراہیم نے ہر حکمران پر حملہ کر دیا اور پیچھے ڈھکیل دیا دوسری طرف سے خزیمہ نے یزید کو ہار دیا۔

جب ابن مطیع کے سپاہی سب سے شکست کھا کر بھاگے اور کو فوجیں ابن مطیع کے اسے راشد بن ابیاس کے قتل کی خبر دی تو مارے خوف کے اس کے اوسان خطا ہو گئے۔

پنے نو مشرکین ذی الجوشن نے دو ہزار سواروں کے ساتھ ان کا راستہ روکا، مختار نے مسجد میں منہ زکوان سے
کرنے پر مامور کیا اور ابراہیم بن اشتر کو حکم دیا کہ اپنے مقصد یعنی دارالامارہ کے محاصرہ کی کوشش جاری رکھو

ابن مسراق

جب یہ محلہ پشت میں پہنچے تو نوفل بن مسراق نے پانچ ہزار فوج کے ساتھ ان کا راستہ روکا،
ابراہیم نے اطلاع کے منادی نے شہر میں اعلان کر دیا کہ سب لوگ نوفل کی فوج میں شریک ہو جائیں، ابراہیم
کا بڑا بیٹا شک سے ہوا تو انہوں نے اپنی سپاہ کو حکم دیا کہ سوار گھوڑوں سے اتریں اور گھوڑوں کو ایک
دوسرے کے برابر رکھ کر کھڑے کیوں اور دشمن سے پیدل لڑیں، نیز کہا: اگر دشمن کی طرف سے یہ اعلان ہو کہ
ابراہیم یا قبیلہ عتید یا قبیلہ اشعث وغیرہ کے لوگ آگئے ہیں تو تم اس سے خوف نہ کھانا کیونکہ جب
ان لوگوں کی حرارت کا مزہ چکھیں گے تو وہ ابن بطین کی طرف اسی طرح دوڑیں گے جس طرح بھیڑیوں سے
لو سفند بھاگتے ہیں،

اس کے بعد ابراہیم نے اپنی قبا کا دامن کمر سے باندھ لیا اور اپنی فوج کو حکم دیا کہ حملہ کر دو!
پہلے ہی حملوں کو فوج اور نوفل کے ساتھیوں نے راہ فرار اختیار کی اور ایسی شکست کھائی
کہ ایک دوسرے پر گر پڑے، ابراہیم فوج کے پہلے سالار نوفل کے قریب پہنچا اور اس کے گھوڑے کی ٹانگہ کھڑکی
اور اسے قتل کرنے کیلئے تلوار کھینچی، نوفل نے کہا: اے اشتر کے بیٹے! تمہیں خدا کی قسم کیا میرے اور تمہارے
درمیان کوئی دشمنی ہے جس کا انتقام لینا چاہتے ہو؟ ابراہیم نے اسے چھوڑ دیا اور کہا: اس وقت کو
ابراہیم دارالامارہ کی طرف بڑھے، ان کے پیچھے پیچھے مختار بھی روانہ ہوئے جب یہ لوگ

میں مانع تھیں مکانوں کی چھتوں سے ان پر تیر بارانی گرا دی تھیں، مختار نے شہر میں داخل ہو کر
چکر لگایا اور قبرستان کی طرف سے محلہ مزینہ جس "اور" باریق" میں داخل ہو گئے، اس محلہ
شہر کے دوسرے گھروں کی بہ نسبت طحہ طحہ تھے یہاں کے رہنے والوں کو جب یہ معلوم ہوا کہ مختار
ان کے مانتھی پلے سے ہیں تو انہوں نے پانی پیش کیا!

مختار نے کہا: یہ جگہ میدان جنگ کیلئے بہت مناسب ہے،
ابراہیم نے کہا: جبکہ خدا نے ہمارے دشمن کو مغلوب کر دیا ہے اور ان کے دلوں میں خوف و ہراس
دیا ہے تو اب میں یہاں نہیں ٹھہرنا چاہیے ورنہ وہ ہمارے نزدیک آجائیں گے ہمیں شہر میں داخل ہو کر
کے قہر اور دارالامارہ کا محاصرہ کرنا چاہیے،

مختار اس رائے سے بہت خوش ہوئے چنانچہ پورے صبح سے کہا: آپ حضرات میدان
اور سنگین اسلحہ بھی وہیں چھوڑ دیا اور ابو عثمان نجدی کو ان کا نگہبان مقرر کیا اور قریب سپاہ شہر میں داخل
کر دیا کہ اسے

کو فہم داخلہ

مختار اور ان کے سپاہی شہر میں داخل ہو گئے، پہلے وہ کوچہ "ثورین" کے مقابل پہنچے
جو ہزار فوج کے ساتھ ان کا راستہ روکا، ابراہیم نے چاکر اپنی فوج کے ساتھ ان سے جنگ کیونکہ
ان کو پیغام بھیجا کہ تمہارا مقصد ہے اسی کی طرف بڑھو، ان سے تو ہم غٹ لیں گے، پھر یہ لوگ
حکم دیا کہ اپنے سپاہیوں کے ساتھ غروب چائے پر حملہ کر دو،
ابراہیم دارالامارہ کی طرف بڑھے، ان کے پیچھے پیچھے مختار بھی روانہ ہوئے جب یہ لوگ

دارالامارہ کا محاصرہ

ابراہیم بن اشتر نے دارالامارہ کو جس میں عبداللہ بن مطیع قیام پذیر تھا، کو بازار اور گھر کی طرف سے محاصرہ میں لے لیا اور تین دن محاصرہ کا سلسلہ جاری رہا، اس مدت میں ابراہیم بن اشتر، یزید بن انس اور احمر بن شیطہ قصر کو محاصرہ میں رکھا، محاصرہ کا سلسلہ طویل ہو گیا تو عبداللہ بن مطیع نے کوٹھ کے ان بزرگوں سے کہا: جو اس کے ساتھ قصر میں تھے، کرنا چاہیے کہ چہر میں صلوات ہے، شہنشاہ بن رمی نے کہا: یہ جماعت تو قصر میں آپ کے ساتھ یہ تو آپ کیلئے کیا اپنے لاکھ لاکھ کر سکتی، خواہ خواہ خود کو ہلاکت میں ڈالو بلکہ اپنے اوپر ہمارے لئے اس شخص کو بھی مختارہ سے لے کر عبداللہ بن مطیع نے کہا: مجھے یہ پسند نہیں ہے کہ میں امان مانگوں جبکہ پورا بصرہ و حجاز ابراہیم بن عبداللہ بن زبیر کے زیر تسلط ہے، شہنشاہ نے کہا: تو آپ خفیہ طریقے سے قصر سے نکل جائیے اور کسی سے حجاز ابن زبیر کے پاس چلے جائیے، اس نے یہ بات مان لی اور رات کے سناٹے میں قصر دارالامارہ سے خفیہ طور پر باہر نکلا اور آشوری کے گھر گیا اور وہاں چھپ گیا۔

شرفا کیلئے امان

جب عبداللہ بن مطیع قصر سے نکل گیا تو قصر کے اندر اور جو شرفا اور بزرگ تھے انہوں نے

۱۔ تجارت المصنف، ص ۱۳۶

۲۔ اعیان دارالمنہاج، ج ۸ ص ۶۱۸

قصر سے امان طلب کی مختار نے انہیں امان دیدی تو وہ قصر سے باہر آئے اور مختار کی بیعت کر لی، مختار نے ان کی دجوتی کی اور ان کے ساتھ بہت نرمی سے پیش آئے اور ان سے پسندیدہ ملک کیا۔

مختار کا خطبہ

عبداللہ بن مطیع کے افراد جب دارالامارہ سے نکل گئے تو مختار اس میں داخل ہوئے رات قہری میں بسر کی، صبح ہوئی تو کوٹھ کے بزرگ کھدا اور قصر کے دروازہ پر جمع ہوئے، مختار عبد میں آئے اور ہنر پر گئے اور ایک مبلغ خطبہ پڑھا اور لوگوں کو بیعت کی دعوت دی۔

انہوں نے کہا:

تو ہم اس خدائی حمد و ثنا پیش کرتا ہوں جس نے اپنے دوست سے کامیابی اور اپنے دشمن سے شہرہ کا وعدہ کیا ہے، اس کا وعدہ پورا ہو گیا، جو شخص افترابا ندھے گا وہ گھانا اٹھانے والوں میں قرار پائے گا۔

اے لوگو! ہمارا ایک مقصد تھا، ایک ظلم بند ہو گیا اور اس ظلم کے بارے میں یہ کہا گیا تھا کہ ظلم بند کھیں، خائن نہ ہونے دیں اور مقصد کے بارے میں کہا گیا کہ اسے حاصل کرو اور اسے چھوڑ دو پس ہم نے پکارنے والے کی دعوت قبول کی اور اس گمراہی کے قول کو تسلیم کر لیا، براہیو اس شخص کا جو سرکشی، ظلم، انکار اور کذب کرتا ہے اور پشت پھیرتا ہے،

خدا کے بند و اہدایت کی بیعت کی طرف آؤ دشمنوں سے بھاؤ اور اللہ کے ان افراد سے دفاع کرو جنہیں مرکز درمنا دیا گیا ہے اور میں دشمنوں پر مسلط ہو کر فرزند رسول کے خون کا بدلہ لوں گا قسم

۱۔ بحار الفاریج، ص ۳۶۹

۲۔ البدایہ والنہایہ، ج ۸ ص ۶۱۸

اس خدائی کہ جس نے بادلوں کو پیدا کیا اور وہ سخت عذاب والا ہے، خدائی قسم میں افسوس
باندھنے والے اور جھوٹ بولنے اور نیک میں مبتلا مجرمین سے بے شہاب کے بیٹے ملکی قبضہ اور
کھودوں کا گروہوں کو تیار وطن کروں گا عائدین کے پروردگار کی قسم میں ظالموں کے بنواؤں
قاسطین کے باقی ماندہ لوگوں کو قتل کروں گا،

پھر ہرگز بے عیبیاں اور کہا: قسم اس خدائی کہ جس نے مجھے سکھیں عطا کیا اور میرے دل کو
نورانی کیا میں اس شہر کے گھروں کو آگ لگاؤں گا، قبروں کو اکھاڑوں گا اور اس سے تیار
دلوں کو ٹھنڈا کروں گا اور ظالموں نے ناسکری کی ہے اور دھوکہ دیا ہے انہیں تہ تیغ کروں گا اور
غریب کو فوسفے کے علم غم و غم کے شہروں کی طرف روانہ کروں گا اور زیادہ خدمت
میں بنی تہم کے قبیلہ سے لوں گا،

اسکے بعد ہرگز سے اتر آئے اور قصر دارالامارہ میں داخل ہو گئے۔

مختار کی بیعت

کوفہ کے سربراہ اور وہ افراد مختار کے پاس آئے اور انہوں نے کتاب خدا، سنت رسول، خون اہل بیت
کے انتقام، دشمنوں سے جہاد، مکروروں سے دفاع اور ان سے جنگ کرنے والوں سے ہمارے اور ہمارے
سے صلح کرنے پر مختار کی بیعت کی،

بیعت کرنے والوں میں منذر بن حسان اور اس کے بیٹے حسان بھی شامل تھے، جب یہ مختار
پاس گئے تو انہیں سعید بن منذر اور شیوخ کی ایک جماعت نے دیکھ لیا کہ یہ مختار کے پاس سے آئے

۱۔ اس کی سرگزشت پہلے بیان ہو چکی ہے،

۲۔ بخاری تاریخ ۵۸۵ھ میں ۳۶۹،

اس اس جماعت نے کہا: یہ ظالموں اور جاہلوں کے سرغنہ ہیں انہیں قتل کیا جانا چاہیے، سعید نے انہیں
روا اور کہا: مختار کے حکم کی اطاعت کرو لیکن انہوں نے کان نہ دھریے اور دونوں کو قتل کر دیا، ان دونوں کے
بال کی جب مختار کو خبر ہوئی تو بہت ناراض ہوئے، شرفار و سربراہ اور وہ لوگوں کا دل جیتنے کی بہت کوشش
کی اسلئے ان کے ساتھ نیک شہ سے کام لیا،

مختار کو جب یہ اطلاع ملی کہ عبداللہ بن مطیع ابو یوسفی اشعری کے گھر میں چھپا ہوا ہے تو سکوت
کریا کر آیا اور رات کے وقت اس کے پاس ہزار درہم بھیجے اور اس سے کہلایا،

مجھے یہ معلوم ہے کہ تم کہاں چھپے ہوئے ہو اور یہ بھی جانتا ہوں کہ تم ہرگز نہ ہونے کی وجہ سے کوفہ سے
ہیں جا سکے ہو، لہذا یہ مبلغ تمہارے لئے بھیج رہا ہوں پہلے سے مختار اور عبداللہ بن مطیع کے درمیان دوستی تھی

بیعت المال کی تقسیم

جب لوگ مختار کی بیعت کر چکے اور زمام ان کے ہاتھ میں آگئی تو انہوں نے کوفہ کے بیت المال
اور مال دنیا کی اس میں بہت زیادہ مال تھا، مختار نے حکم دیا کہ جن لوگوں نے قصر کے محاصرے کے وقت جہاد
کا بندھ دیا ہے، ان میں سے ہر ایک کو پانچ سو پانچ سو درہم دیئے جائیں اور ساتھ دینے والوں کی تعداد میں ہرگز
ان سو تھی اور چھ ہزار آدمی تھے ان سے ملحق ہوئے تھے چنانچہ ان کو دو دو سو درہم دیئے اور عام لوگوں کے
ساتھ ان سو ملک سے پیش آئے لوگوں کے بزرگوں کو اپنا ہمیش بنایا،

ایک دن مختار کے سامنے ابوہریرہ کھڑا تھا اور مختار کوفہ کے بزرگوں سے جو گفتگو تھی اور بعض ملائین

۱۔ ابن اثیر ج ۱ ص ۱۳۲، تاریخ یعقوبی ج ۲ ص ۲۵۹،

۲۔ ابیہوں سے مراد وہ ایرانی ہیں جو کہ اس زمانہ میں بڑی تعداد میں کوفہ میں زندگی بسر کرتے تھے اور اہل اہل بیت کا خیال رکھتے
تھے جو ان مختار نے بھی ان کا خیال رکھا،

jabir.abbas@yahoo.com

ان بن حکم کی ہلاکت

تہام کا آغاز

باب الاثم ج ٢ ص ٨١

شہروں کیلئے گورنروں کی روانگی

[illegible]

<http://fb.com/ranajabirabbas>

ق کے سپہ سالاری و فتا

قادیان عازب کا مشورہ

کمالی ابن اثیر ج ۲ ص ۲۲۹،

تجارب الاعمال من الامم

شام کے سپہ سالاروں کا مارا جانا

۳۷۷ میں بروز عرفہ صبح کے وقت عراق کی فوج نے یزید بن اسلم کی سپہ سالاری میں شام
فوج سے جو کہ ریبہ بن خارق کی سرکردگی میں تھی کے وقت تنگ شدید جنگ کی، شام کی فوج نے شکست
اور ان کے لشکر کا گہرا قبضہ ہو گیا۔ یزید بن خارق کی فوج ابھی حالاکہ اس کے دوستوں نے اسے تنہا چھوڑ
تھا وہ چلا چلا کر اہل شام کو بلارہا تھا اور کہہ رہا تھا: لوٹ آؤ، اور ان غلاموں سے جنگ کرو
دین سے خارج ہو گئے ہیں اس پر شامیوں کا ایک گروہ اس سے متصل ہو گیا اور اس کے ساتھ میدان
میں پلٹ آیا اور جنگ کے شعلے بھڑک اٹھے یہاں تک انھیں شکست ہوئی اور ریبہ بن خارق، ریبہ
بن ورقا، اور عبداللہ بن عمرو کہ دونوں ہی عراق کے ارسلوں سے تھے، کے ہاتھ سے مارا گیا
شامی سپاہیوں پر رہے تھے اور پیچھے ہٹ رہے تھے کہ عبداللہ بن جلتین ہزار سپاہیوں
ساتھ آگیا اور شکست کھا جانے والوں کو اپنے ساتھ میدان جنگ میں لے آیا،
عرفہ کا دن ختم ہوا اور یزید بن اسلم باقی میں مستقر ہوئے، دونوں لشکرات میں دیکھا

مراقب کی فوج واپس لوٹ رہی ہے تو تم اس کے امیر بن جانا اور انھیں اپنے ساتھ لے جا کر فوج شام
کی طرف جانا اور ان سے جنگ کرنا۔

ابراہیم بن اشتر روانہ ہوئے اور تمام امین میں اپنی فوج کی جمع بندی کی اور وہاں سے شام کی
طرف روانہ ہوئے۔

ابراہیم بن اشتر

ابراہیم بن اشتر جب کوفہ سے باہر چلے گئے تو کوفہ کے سربراہ اور وہ شہنشاہ بن ابی اسحاق
اور اس سے کہا: خدا کی قسم تم آج شام ہی مرے بغیر ہمارے امیر بن بیٹھے ہیں، ہمارے غلاموں کو
شہنشاہ بنایا ہے، انھیں سواروں پر بٹھا دیا اور ہمارے موال و غلام ان میں تقسیم کرتے ہیں،
شہنشاہ ان کا بڑا تھا اس نے کہا: مجھے مہلت دو! میں تمہارے ملاقات کر کے ان سے کہوں گا
وہ تمہارے پاس گیا اور ان کی ساری شکایتیں تمہارے سامنے بیان کی، تمہارا اس کی ہر بات کا جواب دیتے
میں راضی کروں گا، جس چیز کا مطالبہ کریں گے میں دوں گا یہاں تک کہ موالوں اور غلاموں
اپنے کی بات سمجھیں، تمہارے کہا: اگر میں تمہارے غلام تمہارے ہی درمیان تقسیم کروں تو تم قسم کھاتے
ہو کہ میرے چکر بنی امید اور بن زہیر سے جنگ میں میرا ساتھ دو گے؟

شہنشاہ نے کہا: میں ان سے ہر بات کہوں گا

اس کے بعد وہ تمہارے پاس سے لگا گیا اور پھر واپس نہ آیا اور انہوں نے یہ طے کیا کہ تمہارے جنگ
سے بچاؤ شہنشاہ بن ابی، محمد بن اشعث، عبدالرحمن بن سعید اور شمر ایک جگہ جمع ہو کر کعب بن ابی حبشی
آئے اور اس سلسلے میں اس سے گفتگو کی اس نے بھی ان لوگوں کی بات قبول کر لی اور ان کا تعاون کرنے

ابراہیم بن اشتر ج ۱ ص ۱۱۱

ابراہیم بن اشتر ج ۱ ص ۱۱۱

گئے اب جبکہ ہمارا سپہ سالار یزید بن اسد دنیا سے اٹھا چکا ہے اور ہمارے ساتھیوں میں سے بھی کچھ
سے جدا ہو گئے ہیں، آج واپس لوٹتے ہیں لوگ یہی کہیں گے تو کہہ ان کا امیر مگر کیا تمہارا اسلئے لوٹ گیا
کے دل میں خوف بھی رہے گا اور اگر فوج شام آج ہمیں شکست دیتی ہے تو انہوں نے شکست کھائی
اس سے ہر کوئی فائدہ نہ ہوگا ان کے ساتھیوں نے کہا: آپ کی بات صحیح ہے اچھا مشورہ ہے، واپس لوٹ گئی۔

ورقا بن عازب کی غلط فہمی

ورقا بن عازب مشورہ صحیح اور پسندیدہ تھا کیونکہ عراق کی فوج شامیوں کی اسی ہزار فوج کا مقابلہ
کر سکتی تھی، لیکن اسے چاہیے تھا کہ تمہارے خط لکھ کر انہیں یزید بن اسد کی موت اور شامی سپہ سالاروں
ہونے اور ان کی شکست کی خبر دیتا مگر اس نے ایسا نہ کیا اور پھر جو ہونا تھا وہ ہوا۔

یزید بن اسد کی وفات کی خبر

فوج عراق کی سپہ سالار کی وفات کی خبر کوفہ پہنچی، تمہارا واپس کو فوج اس سے آگاہ ہوئے،
تمہارے غلام بھڑک اٹھے اور عراق کے سپہ سالار کی موت والی خبر کی تصدیق نہ کی اور کہنے لگے انھیں
فوج نے قتل کیا ہے اور ان کی فوج پہاڑ ہوئی ہے،
تمہارے ابراہیم بن اشتر کو سات ہزار فوج کا امیر بنایا اور ان سے کہا: روانہ ہو جاؤ اور

ابراہیم بن اشتر ج ۱ ص ۱۱۱

ابراہیم بن اشتر ج ۱ ص ۱۱۱

کا وعدہ کیا یہ اس کے پاس سے باہر نکلے اور عبدالرحمن بن مغنف کے پاس گئے اور اسے مختار کے خلاف
کرنے پر ابھارا،

عبدالرحمن بن مغنف کا مشورہ

عبدالرحمن نے ان سے کہا: اگر تم لوگ شورش کرنا چاہتے ہو تو میں تمہیں تنہا نہیں چھوڑوں گا
اگر میری اطاعت کرتے ہو تو مختار کے خلاف شورش نہ کرو،

انہوں نے کہا: کیا وجہ ہے؟

عبدالرحمن نے کہا: مجھے خوف ہے کہ تم پر اگندہ ہو جاؤ گے تمہارے درمیان اختلاف
جائے گا اور تم ایک دوسرے کو تنہا چھوڑ دو گے جبکہ تمہارے دلاور اور شہسوار مختار کے ساتھ
شخص و فلاں آدمی مختار کے ساتھ نہیں ہیں؟ کیا تمہارے غلام اس کے ساتھ نہیں ہیں یہ آپس میں قتل
یہ لوگ تمہارے لئے تمہارے دشمن سے زیادہ خطرناک ہیں کیونکہ انہوں نے عرب کی شجاعت اور
کو جمع کر لیا ہے، اگر تم کچھ صبر سے کام تو نوشامی یا معری آجائیں گے وہ تمہارے لئے کافی ہے،
ان سے انھیں کی ضرورت نہیں تھی دوسرے انھیں فائدہ دیں گے،

انہوں نے کہا: آپ کو خدا کی قسم، ہماری مخالفت نہ کیجئے اور ہمارے منصوبہ کو برباد نہ کیجئے
عبدالرحمن نے کہا: میں بھی تمہیں سے ہوں، جب تپا ہے خروج کرو،

انہوں نے ایک دوسرے سے کہا: میں ابراہیم بن اشتر کے باہر جانے تک صبر کرنا چاہتا ہوں
انہوں نے ابراہیم کے جانے تک صبر کیا یہاں تک ابراہیم سا باطلہ ہو چکا گئے،

۱۔ کان بن اثیر ج ۱ ص ۱۲۱

۲۔ مجملہ الامم ج ۳ ص ۱۲۳

دشمن

ابراہیم کے باہر چلے جانے کے بعد مختار کے مخالفوں نے شورش پاکردی اور میدان میں جمع ہو گئے ہر سرفرو
پانے ماتحت لوگوں کے ساتھ ایک علاقہ میں اجتماع کیا،

جب مختار کو اس گروہ کی شورش کا علم ہوا تو انہوں نے کسی کو ابراہیم بن اشتر کے پاس بھیج کر کہلوا یا کہ تہی
ہاں ہو سکے واپس لوٹ آؤ پھر کسی کو شورش کرنے والوں کے پاس بھیج کر یہ معلوم کیا کہ تم لوگ کیا چاہتے ہو جو
ابراہیم کے پاس ہے اسے پورا کروں گا،

انہوں نے جواب دیا ہم یہ چاہتے ہیں کہ آپ کو فوجی امارت سے الگ ہو جائیں آپ کو اپنے
منزل میں کیا ہے یہ دعویٰ ہی دھوئی ہے،

مختار نے کہا: تم لوگ ایک وفد مدینہ محمد بن حنفیہ کے پاس بھیج دو اور میں بھی ایک وفد روانہ
کرا ہوں اور پھر دعویٰ کی حقیقت روشن ہونے تک صبر کرو،

اس طرح مختار انھیں قانع کرنا چاہتے تھے اور یہ مد نظر تھا کہ اس وقت تک ابراہیم بن اشتر
میں آجائیں گے، اور ان سے غصہ سب کے مختار نے اپنے مہنواؤں کو حکم دیا کہ حملہ نہ کرو، اہل کوفہ نے راستے میں
دائے مختار اور ان کے ساتھیوں تک پانی نہیں پہنچ دیتے تھے ہاں کی غفلت میں تھوڑا پانی پہنچ جاتا
شام

قبیلہ امیہ سے جدا ہوتا ہے

پھر بنو امیہ بن الحوشن قبیلہ امیہ کے پاس آیا اور ان سے کہا: اگر تم ایک جگہ جمع ہو جاؤ کہ ایک طرف

۱۔ کان بن اثیر ج ۱ ص ۱۲۲

سے جنگ کریں تو ہماری مدد کروں گا ورنہ میرا تم سے کوئی تعلق نہیں ہے کیونکہ میں تنگ بھی اور پرکاش بھی ہوں۔
طور پر جنگ نہیں کروں گا اس لئے وہ قبیلہ میں سے جدا ہو کر اپنی قوم کے پاس میدان بنی سلول میں پہنچا
ان سے ملتی ہو گیا۔

جب تھار کو دوبارہ یہ خبر ملی تو انہوں نے پھر ابراہیم کو خط لکھا، ابراہیم کو صورتحال کا علم ہوا تو
نے اسی دن اپنے سپاہیوں کے درمیان مذاکرات کی اور انہیں واپسی کا حکم دیا، ابراہیم اور ان کے سپاہی واپس
رات بھر راستہ طے کیا اور مسوینہ پہنچ کر تھار آرام کے بعد دوبارہ روانہ ہوئے اور صبح کی غار مسوینہ
پر صبحی اور پھر چل دیئے، غار صحر باب جس پر ادا کی، ٹوٹ آئے اور چوبیس رات سہری، شربت بن رہی تھی
پہلے اپنے بیٹے کے ذریعہ تھار کے پاس یہ پیغام بھیجا تھا کہ تم تھار سے ٹانڈان کے ہیں تھار سے اختیار میں رہا
کی قسم تم سے ہرگز جنگ نہ کریں گے ہمارے طرف سے مطمئن رہیں اس لئے شربت بن رہی تھار سے جنگ نہ
پر راجھا نہیں تھا،

غار کا وقت ہوا تو قبیلہ میں وائے جمع ہوئے ہرگز وہ کارئیں یہ نہیں جانتا تھا کہ غار کی ماسما
اس کار قبیلہ کرے، عبدالرحمن بن حنفیہ نے کہا: یہ اولین نزاع اور اختلاف ہے، ایسے آدمی کو امام بنا
جسے سب تسلیم کریں، کیونکہ تھار سے درمیان شریک سید قتل ہو چکا تھا، رفا عین مذکور تھار سے درمیان
ہیں انھیں امام بنا کر ان کی اقتدا میں غار ادا کرو چنا پھر رفا کو امام بنا کر ان کی اقتدا میں غار ادا کی گئی تھی

شوش کرنے والوں سے جنگ

غار نے اپنے سپاہیوں کو بازاریں جمع کیا اور ابراہیم بن اشتر سے کہا کہ تم قبیلہ مضر کے مقابلہ میں
۱۔ ماحج میں ہیں سو ہو کا نام نہیں ملے مگر یہ ہے یہ سو ہو ہو کہ اس کا اطلاق ایک جگہ ہوتا ہے، ماحول اطلاع ج میں
۲۔ سورا، حاکم کے نزدیک ایک شہر ہے، ماحول اطلاع ج میں ۳۵۵،
۳۔ تجارت الامم ج میں ۱۶۴،

اس قبیلہ کی زمام شہنشاہ بن ربیع اور محمد بن عیسیٰ بن عطار کے ہاتھ میں تھی اور یہ لوگ کناسہ "مزلہ"
اس میں جمع ہوئے تھے، ابراہیم کو اہل یمن کے مقابلہ میں نہیں بھیجا تھا، جس کی وجہ یہ تھی کہ ابراہیم بھی
اس میں سے تھا، مختار کو اس بات کا خوف تھا کہ کہیں ابراہیم جنگ میں ان کے ساتھ نہ جی سے پیش آئے
ان کے مقابلہ خود مختار گئے یہ لوگ میدان سین میں جمع تھے، مختار و بن سید کے گھر کے پاس
اور احمر بن شیط و عبداللہ بن کال کو گئے آگے بھیجا اور اس بات کی تاکید کی جس راستہ سے گذرنا
اس راستہ سے میدان میں جائیں نیز کہا،

مجھے قبیلہ شہام نے خبر دی ہے کہ شوش کرنے والے مسلسل جمع ہو رہے ہیں،
ان دونوں نے مختار کے کہنے کے مطابق عمل کیا، اہل یمن کو ان دونوں کے آنے کی خبر ملی تو وہ دو دو
انقسم ہو گئے اور ان دونوں سے سخت جنگ کی، احمر بن شیط اور عبداللہ بن کال کے سپاہی پر گزیدہ ہو
گئے اور مختار کے پاس آئے، مختار نے احمر بن شیط اور عبداللہ بن کال کے بارے میں معلوم کیا تو
ان نے کہا: ہمیں ان کی خبر نہیں ہے،

مختار خود ان کے طرف گئے، ابی عبداللہ جدلی کے گھرنیک پہنچے اور، وہیں ٹھہرے ہو گئے
عبداللہ بن قرا کو چار سو آدمیوں کے ساتھ عبداللہ بن کال کی مدد کیلئے بھیجا اور ان سے کہا: اگر اہل
اس گئے ہوں تو فوج کے اہم قہم ہوا اور گزیدہ ہوں تو میں سو سپاہی انھیں دے دینا اور تم خود سو
ان کے ساتھ میدان سپین کی طرف روانہ ہو جانا اور تمام قطن کی طرف سے ویل جانا،

عبداللہ بن قرا آئے دیکھا کہ عبداللہ بن کال ایک جماعت کے ساتھ ثابت قدم ہیں اور جنگ
میں ہیں، میں سو سپاہی ان کے توارے لے کر اور تو سو سپاہیوں کے ساتھ سجد عبداللہ بن کال کے پاس
انہوں سے کہا: میں مختار کی کامیابی چاہتا ہوں مگر سربراہ آوردہ افراد اور اپنے قبیلہ کے بزرگوں کی ہلاکت
میں نہیں ہے، خدا کی قسم میں موت کو اس سے بہتر سمجھتا ہوں کہ وہ میرے ہاتھ سے ہلاک ہوں لیکن
ہو سکتا ہے کہ مجھے یہ خبر ملے کہ قبیلہ شہام ان کے پیچھے آ رہا ہے شاید وہ جنگ میں کود پڑیں اور ہمیں
ان سے مدد نہیں اس کے ساتھیوں نے کہا: ششیک ہے، یہ لوگ سجد عبداللہ بن کال کے پاس ہیں،

مالک بن عمرو

مختار نے مالک بن عمرو کو جو کہ بڑے شجاع تھے اور عبدالرحمن بن شریک دونوں کو دوسرا
سوا سپاہیوں کے ساتھ اتریں شعیب کی مدد کیلئے بھیجا وہ ان کی مدد کیلئے چلے اس وقت وہ دشمن کے محاصرے
میں تھے اور شدید جنگ ہو رہی تھی،

ابراہیم بن اثتر، شہنشاہ رومی، جس کے ساتھ قیام فرمایا کے مقابلے کیلئے پہنچے اور ان سے کہا
واپس لوٹ جاؤ خدا کی قسم مجھے یہ بات پسند نہیں ہے کہ قبیلہ مصر کا کوئی آدمی میرے ہاتھ سے
ہو، تم خود کو بلا کشت میں نہ ڈالو، انہوں نے ان کی بات نہ مانی لہذا شدید جنگ کا آغاز ہو گیا ابراہیم
شکست دی اور مختار کو فتح و بشارت کی خبر پہنچی، مختار نے یہ خبر دوسرے پیر سالاروں تک پہنچا دی

ابوالقلاص

قیلہ ریشام نے کہ جس کا رئیس ابوالقلاص تھا، یہ طے کر لیا تھا کہ الہامین کے پیچھے سے تھک کر
گئے ان میں سے بعض غیور دیانتدار اگر ہم قیلمہ مضروب رہیں، اے پاس چلے جائیں تو بہتر ہے انہوں نے
سے کہا: آپ کی کیا رائے ہے؟ اس نے کہا: ﴿قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ﴾ قیلہ
کو حکم دیا کہ اگر ہم برصورتین مرتبہ حکم دیا، وہ مضبوطی دور ہی گئے تھے کہ انہیں بیخفیہ کا حکم دیا تو انہوں نے
اس کی وچ معلوم کی تو اس نے کہا: میں چاہتا ہوں کہ تمہارے دل سے ثبوت و رعب نکل جائے اور
کہ ساتھ دشمن پر حملہ نہ کرو اس کے بعد وہ میدان وسیع کی طرف چلے ایک گروہ نے انہیں روکا اور
انہیں پرانہ دھڑک دیا اور ان کے پیر سالار کو قتل کر دیا اور میدان وسیع میں داخل ہو گئے اور یا شارات
نعرہ بلند کیا،

رفاع بن شداد کا قتل

شکوتش کرنے والوں نے مختار کے سپاہیوں کا یہ نعرہ سنا تو یزید بن معاویہ نے کہا: یا شارات عثمان
رفاع بن شداد نے ان سے کہا: ہمیں عثمان سے کیا کام؟ میں اس جماعت کی کوئی حمایت نہیں کر سکتا
و عثمان کے خون کا مطالعہ کرتی ہے،

اس کے خاندان والوں نے اس سے کہا: تم کس یہاں ملے ہو ہم نے تمہاری اطاعت کی ہے اور
ہجرت کا وقت آگیا تو کہتے ہیں کہ واپس لوٹ چلو اور انہیں چھوڑ دو،
رفاع نے ان پر حملہ کر کے کہا:

أَنَا أَتَيْتُ شَدَادَ عَلِيٍّ دِينَ عَلِيٍّ
لَشَيْءٍ لِعُثْمَانَ بْنِ أَزْوَى بُولِي
لَا ضَلِيلَيْنِ الْيَوْمَ فَيَعْنُ يَضْطَلِي
يَحْزَنُ نَارَ الْحَرْبِ غَيْرَ مُؤْتَلٍ^(۱)

مبارزہ کرتے ہوئے مارا گیا،

شکوتش کرنے والوں کی سرکوبی

کوفہ کے بہت سے بزرگ مارے گئے اور پانچ سو اسیر ہو کر آئے جبکہ ان کے ہاتھ باندھ دیے گئے تھے
عبداللہ بن شریک اسیروں کو آنا دکنے میں مشغول تھے، جب مختار کو یہ خبر ملی تو انہوں نے کہا کہ
میں میرے سامنے پیش کیا جائے اور ان میں سے جو قتل حسین میں شریک تھا اس کی نشان دہی کی جائے،

میں شہزاد کا بیٹا ہوں علی کہیں پر ہیں اور ان کی کہیے عثمان کو بند نہیں کرتا آج میں جنگجوؤں کے ساتھ جنگ کروں گا اور
اس جنگ کی قطعی برائیوں کروں گا، کال ابن اثیر ج ۴ ص ۴۴۲

اسیروں کو مختار کے سامنے پیش کیا گیا اور ان میں پو بھی امام حسینؑ سے جنگ کیلئے گیا تھا اس کی اطلاع دی گئی اور تبریح کیا گیا یہاں تک کہ قتل ہونے والوں کی تعداد دو سو چالیس تک پہنچ گئی بعض لوگوں کو مختار کے اصحاب نے انہیں بتائے بغیر قتل کر دیا تھا اس کے بعد دوسرے اسیروں کو آزاد کر دیا اور ان سے یہ مطالبہ کیا کہ ان کے دشمنوں کی مدد نہیں کریں گے، پھر یہ اعلان کر دیا گیا جو شخص اپنے گھر چلا جائے گا اس کے لئے اسلحہ اور اسلحہ جس نے قتل جیٹ میں شرکت کی ہوگی اس کے لئے امان نہیں ہے۔

کوفہ سے فرار

مختار نے تسلط پایا اور حکومت اپنے ہاتھ لے لی تو جن لوگوں نے واقعہ کربلا میں شرکت کی تھی فرزند رسولؐ اور ان کے اصحاب کا خلیا بایا تھا وہ اپنی جان کے خوف سے کوفہ سے بھاگنے لگے اور وہ یہ کہ مختار نے حسینؑ کا انتقام لینے کے لئے خروج کیا ہے لہذا بہت سے بیا بانوں میں نکل گئے اور ان میں سے کچھ کوفہ سے شام کی طرف فرار کر گئے اور عبد الملک بن مروان کے پاس پہنچے تاکہ مختار کی بہت دفعہ بچہ کیلئے اس کی حمایت حاصل کریں، عبد الملک بن حجاج نے بھی شام پہنچا اور عبد الملک بن مروان کی ہدایت اور اس سے کہا: میں عراق سے فرار ہو کر تمہارے پاس آیا ہوں، عبد الملک نے چلا کر کہا: تم جھوٹ بولتے ہو تم نے ہمارے فرار نہیں کیا ہے بلکہ خون حسینؑ فرار کیا ہے تمہیں اپنی جان کی پڑی تو ہمارے پناہ دھونڈنی، بعض کوئی فرار کر کے مکہ میں عبد اللہ بن زبیر کے پاس پہنچے اور اس کے لشکر میں شامل ہو کر لشکر میں شامل ہونا عقیدہ و ایمان کی بنا پر نہیں تھا بلکہ انہیں مختار کے خوف نے کوفہ سے روپوش مجبور کیا تھا چنانچہ وہ مکہ آئے اور زبیر سے ملحق ہو گئے۔

ما تجارب الامم ۲ ص ۱۵۸، حیات الامام حسینؑ ص ۱۵۵،

ابن حجاج زبیدی

یہ شخص واقعہ کربلا میں موجود تھا اور عبد اللہ بن زیاد کی فوج کے سپہ سالاروں میں سے ایک تھا، جب کہ انہوں نے امام حسینؑ کے قاتلوں سے انتقام لینے کا عزم کیا تو یہ اپنی سواری پر سوار ہو کر واقعہ کی طرف بھاگ

اور اس کے بعد لا پتہ ہو گیا، کہا جاتا ہے کہ مختار کے عہدو لوگوں نے اسے راستے میں دیکھا کہ پیاس کی شدت سے گھر پڑے انہوں نے اس کا سر قلم کر دیا۔

مختار سے شورش کرنے والوں کی جنگ میں جو لوگ قتل ہوئے ہیں ان میں فرات بن زحر بن قیس بھی نظر آتے ہیں۔

عبد اللہ بن مطیع

یہ عبد اللہ بن زبیر کی طرف سے کوفہ کا حاکم تھا، مختار کے تسلط کے بعد ابو موسیٰ اشعری کے گھر میں چھپ

بزرگ نے وہاں گھسے سہ ماہی روایت کی ہے کہ زحر بن قیس نے محمد رسولؐ کو روک کیا ہے دلاوروں میں ان کا شمار ہوتا تھا وہ حضرت علیؑ کے ہاتھ رہتے تھے جب ہی آپ ان کی طرف کیسے تو فرماتے تھے: جو شخص زندہ شہید کو دیکھنا چاہے وہ انہیں دیکھ کر کپڑا نہیں ملوان کا حکم فرما تھا، ان کے چار بیٹے تھے کبھی ایمان کو فوس سے تھے ایک کا نام فرات تھا جسے مختار نے قتل کر دیا ان اشعث کے ساتھ مرا گیا یہ اشعث کی فوج میں خارج تاروں کا امیر تھا، حجاج نے کہا: کوئی بھی اٹھنے والا فترہ خاخش لوں ہو گا نہ کسی کو فترہ گروں کے سر دے لوں سے ایک کو مار دیا جائے اور یہ غلطی نہیں ہے، تیسرے کا نام جهم تھا یہ قتبہ بن سلم کے ساتھ خوسان میں تھا اور ان کا گورنر تھا جو تھے کا نام تال تھا یہ گاؤں میں زندہ لڑتا تھا، ترجمہ نفس المجمع ص ۱۵۸۔

jabir.abbas@yahoo.com

گیا تھا مختار نے اس کے لئے کچھ پیسہ اس بیہنام کے ساتھ بھیجا تھا کہ یہ پیسہ تمہارے زادر لاکے لئے ہے، اس پیسہ یا اور بھر چلا گیا، کیونکہ عبداللہ بن زبیر کے پاس جانے اور اس کے سامنے یہ کہیں شرم محسوس ہوا کہ مختار نے شکست دے دی ہے۔

گھروں کی بربادی

ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ اہل کوفہ میں سے جن لوگوں کا ہاتھ قتل حسین میں تھا ان میں سے محمد بن یزید وہ بھاگ نکلے، بعض مکہ میں عبداللہ بن زبیر سے ملے ہو گئے کچھ بھروسہ میں مصعب زبیر سے ملے ہو گئے ایک گروہ یا باغیوں پر گزرا وہ بھی مختار نے ان کا تعاقب کیا اور جو ہاتھ نہ آ سکے ان کے گھر وں کو کراوا، وہ ج ذیل لوگوں کے گھر وں کو منہدم کرایا تھا،

① محمد بن اشعث بن قیس کنڈی، اس کا گھر اس گاؤں میں تھا جو کہ تادیبہ کے نزدیک تھا مختار سے گرفتار کرنے کیلئے کچھ سپاہی وہاں بھیجے انہوں نے اس کے محل کا محاصرہ کر لیا، محل میں داخل ہونے کے لئے فرار کر چکا تھا، اس کی بڑا بیوی نے مختار کو دی، مختار نے حکم دیا کہ اس کے محل کو تیس تیس کردہ اور اس کے گھر سے جو برتن عوی کے گھر کو جسے زیاد نے منہدم کیا تھا، تمیز کیا،

② عبداللہ بن مروہ شمی: یہ بھی بھاگنے میں کامیاب ہو گیا تھا، یہ وہی شخص ہے جس کا گھر مختار نے اہل بیت کی طرف بارہ تیر چلائے ہیں، مختار کے حکم سے اس کا بھی گھر وں کو کرا گیا تھا،

③ اسامہ بن خارجہ: یہ ان لوگوں میں سے ہے جو مسلم بن عقیل کے قتل میں شریک تھے، مختار نے اسکان کے پروردگار اور نور و عظمت کے رب کی قسم آسمان سے آگ آگے کی اور اس کا گھر کو خاکستر کر دیا۔

۱۔ کمال ابن اثیر ج ۴ ص ۳۶۶

۲۔ بحارہ خارج ج ۲ ص ۱۲۵

۱۔ یہ بات جب اس کے کان تک پہنچی تو اس نے کہا: ابو اسحاق و مختار۔ مسیح بات کہتے ہیں اب کوفہ میں کون نہیں ہے گھر سے نکلا اور یا باغیوں میں چلا گیا،

مختار نے حکم دیا کہ اس کا اور اس کے چچا زاد بھائیوں کا گھر منہدم کر دو۔

② عبداللہ بن عقبہ غنوی: جن لوگوں کو مختار نے اس کی طرف بھیجا تھا یہ ان کے ہاتھ نہ لگا سکا، وہاں کہ جزیرہ فرار کر گیا ہے، اس نے اہلیت کے ایک بچہ کو قتل کیا تھا لہذا اس کا گھر بھی منہدم کر دیا۔

③ شریک بن ریحی: یہ بھی کوفہ کی ایک جماعت کے ساتھ بھرہ فرار کر گیا تھا۔ مختار نے اس کا گھر وں کو کرا دیا جانے لگا،

④ سنان بن انس: ابن اثیر کی نقل کے مطابق سنان بھی ان لوگوں میں سے ایک ہے جو بھرہ فرار کر گئے تھے، مختار نے اسے گرفتار کرنے کا حکم دیا تھا لیکن جب وہ ان کے ہاتھ نہ لگا تو انہوں نے اس کا گھر وں کو کرا دیا۔

سین کا قاتل

جب کوفہ کے سربراہ آوردہ افراد نے مختار سے شکست کھائی تو وہ کوفہ سے بھاگ نکلے اور بھرہ پہنچے۔

۱۔ بحارہ خارج ج ۲ ص ۱۲۵

۲۔ ابن اثیر نے ابو مخنف سے اور انہوں نے سلیمان بن ابی راشد سے نقل کیا ہے کہ وہ بچہ ابوبکر بن حسن بن علی ہیں، بحارہ خارج ج ۲ ص ۱۲۵

۳۔ ابن اثیر ج ۴ ص ۳۶۳

۴۔ بحارہ خارج ج ۲ ص ۱۲۵

۵۔ ابن اثیر ج ۴ ص ۳۶۳

گھوڑے دوڑانے والے

موسیٰ بن عامر کہتے ہیں: مختار نے سب سے پہلے جن لوگوں کو ان کے ظلم کی سزا دی ہے وہ لاشوں کو پامال کرنے والے تھے، مختار نے حکم دیا کہ انہیں گرفتار کر کے لایا جائے، وہ لائے گئے حکم دیا کہ انہیں کے بل زمین پر ٹنڈا دیا جائے پھر ان کے ہاتھ، پاؤں کی کلیں کھنکھائی گئیں اس کے بعد ان پر گھوڑے لانے کا حکم دیا اور پھر انہیں آگ میں جلا دیا گیا ان دنوں کے نام یہ ہیں:

- ۱) اسحاق بن حویہ حضری، اس شخص نے امام حسین کا پیرا پہن اتارا تھا،
- ۲) انس بن مرشد، بعض لوگ کہتے ہیں کہ یہ کرالیوں ہی سینہ پر تیر کھا کر ہلاک ہو گیا تھا۔
- ۳) حکیم بن طفیل بن سنی،
- ۴) عرب بن صبح صیداوی،
- ۵) رجا بن منقر عبدی،
- ۶) سالم بن خشمہ حنفی،
- ۷) واصل بن ناظم،
- ۸) صالح بن وریب حنفی،
- ۹) باقی بن شیبہ حضری،
- ۱۰) اسید بن مالک،

۱۱) انوار ج ۵ ص ۳۷،

۱۲) انوار ج ۵ ص ۳۷،

۱۳) انوار ج ۵ ص ۳۷،

مصبوب بن زہیر سے ملتی ہو گئے، مختار نے قاتلان حسین سے انتقام لینے کیلئے خود کو آمادہ کیا کہ وہ ہمارا دین نہیں ہے کہ ہم اس گروہ کو زندہ چھوڑ دیں کہ جس نے حسین بن علی کو قتل کیا ہے میں دنیا میں مدد کرنے والا ہوں میں وہی کو اب ہوں "جس نام سے دشمن مجھے پکارتے ہیں میں خدا کا شکر ادا کرتا ہوں کہ اس نے مجھے ایسی شہر قرار دیا ہے کہ جو ان پر لگائی جا چکی ہے اور ایسا نیزہ بنایا ہے کہ جو ان کے سینوں میں چکا ہے، اس نے مجھے خون آلود کا منتقم اور ان کے حق میں شہر کرنے والا قرار دیا ہے ان قاتلوں کا نام بتاؤ تاکہ ان کا تعلق کیا جائے اور صفحہ ہستی سے ان کا نام و نشان مٹا دیا جائے میرے لئے اس کا حکم کھانا پانی مباح نہیں ہے جب تک کہ میں ان کو جو دستے پاک نہیں کروں گا اور شہر وں کو ان سے محفوظ کروں گا،

- ۱) عبداللہ بن عباس نے قاتلان میں سے ایک گروہ کا نام بتایا ہے سفیدان کے نام عبداللہ بن مالک بن نسر، اور کل بن مالک بن مالک بن نسر،
- ۲) مختار نے ان کی تلاش میں سبھی جگہ، رات کے وقت انہیں گرفتار کر کے مختار کے پاس لا کر سے مختار نے کہا: اے خدا اور کتاب خدا کے دشمنوں اے رسول خدا اور آل رسول کے دشمنوں! تم نے ان کو قتل کیا ہے جن پر نہیں صلوات بھیجے کا حکم دیا گیا تھا،
- ۳) انہوں نے کہا: خدا آپ پر رحم کرے، ہمیں روبرو کیا گیا تھا ہم اس سے راضی نہیں تھے اور احسان کیجئے جان بخش دیجئے،
- ۴) مختار نے کہا: تم نے حسین پر کیوں رحم نہیں کھایا تھا انہیں سیراب نہیں کیا تھا اور انہیں نہیں چھوڑا تھا؟

مختار نے مالک بن نسر سے کہا: تو نے حسین کی ٹوپی لی تھی،

عبداللہ بن مالک نے کہا: ہاں ہی وہ شخص ہے،

مختار نے کہا: اس کے ہاتھ پیر قطع کر کے چھوڑ دو تاکہ اس حال میں مرجائے، اس کو قتل

مطابق سزا دی گئی اور اس کے دونوں ماتھے کیوں کو بھی قتل کیا گیا،

مختار کے ساتھ ایک جماعت تھی جسے دبابة کہتے ہیں، انہیں مختار نے حمرہ میں واقع ایک گھر پر بوجھا کہ وہاں بعض قاتلان جیسٹ تھے، ان میں عبدالرحمن بن ابی شکارہ، عبدالرحمن بن قیس خولانی اور دوسرے افراد بھی تھے انہیں پکڑ کر لایا گیا مختار کے سامنے پیش کیا گیا مختار نے ان سے کہا: اے نیک لوگو! قاتلو! اے جوانان جنت کے سردار! کیا تم نہیں دیکھ رہے ہو کہ خدا تم سے آج انتقام لے رہا ہے! امام حسینؑ کے مالوں میں سے کئی بنا پر آج تم نے یہ دن دیکھا ہے،

یہ ایک امام حسینؑ کا مال اور بعض چیزیں لوٹ کر گئے تھے، سر بازار ان کی گردن مار دی گئی، سائب بن مالک اشعری مختار کے سپاہیوں میں سے تھا یہ ان تین آدمیوں کو گرفتار کر کے لایا تھا جو میدان کربلا میں عبید اللہ بن زیاد کی فوج میں شامل تھے، مختار نے حکم دیا کہ ان کو کوئی گھر میں لے جا کر قتل کر دو،

عبید اللہ، عبدالرحمن بن صلوت، اور عبید اللہ بن وہب مہدائی کو مختار کے سامنے حاضر کر کے مختار نے انہیں قتل کرنے کا حکم دیا اور قتل کر دیے گئے،

مختار نے عبید اللہ بن کمال کو بھیجا کہ عثمان بن خالد اور سہیل بن ابی سمطہ کو گرفتار کر کے لاؤ، ان کو کربلا میں موجود تھے، اور امام حسینؑ کا لباس اٹھانے والوں میں شامل تھے، عبید اللہ بن کمال نے عصبہ بن مسیب بنی دھمان کا سامرہ لیا اور کہا: اگر عثمان بن خالد کو میری قہقہ میں دو گے تو قبیلہ دھمان کے قبائل کے گناہ میری گردن پر ہیں اور اگر تو یہ نہیں دے گے تو تم سب کو قتل کر دوں گا، بنی دھمان دھما

۱۔ تجارب الامم ج ۳ ص ۱۵۹

۲۔ کمال بن اشعث ج ۳ ص ۲۴۰

الغزوئی مہلت دیجئے تاکہ پھر اسے جا فرمیں، وہ لوگ گھوڑے پر سوار ہو کر اس کی تلاش میں نکلے چنانچہ چاند میں جا پڑا وہ اس وقت وہاں سے اتر کر کی طرف فرار کرنا چاہتے تھے، دھمان والے انہیں عبداللہ بن کمال کے پاس لائے اس نے دونوں کی گردن مار دی اور واپس آ کر مختار کو قصہ سنایا، مختار نے کہا: واپس جا کر ان کی لاشوں کو نذر آتش کر دو، دفن کرنے پائیں!

قتل کا قتل

مختار نے چند سپاہیوں کو خولانی بن یزید مسیحی کی تلاش میں روانہ کیا، حسیہؑ کو پکڑ لایا تھا، ان کا بظاہر اپنے گھرمیں چھپا ہوا تھا مختار کے سپاہی اس کے گھرمیں داخل ہوئے اور گھر کی تلاشی لینے لگے خولانی کی زوجہ یوسف بنت مالک اس وقت سے اس کی دھن ہو گئی تھی جب وہ سرسبز لایا تھا، نے پوچھا کیا چاہتے

انہوں نے کہا: تمہارا شوہر کہاں ہے؟

اس نے کہا مجھے نہیں معلوم کہاں ہے لیکن ماٹھے سے اس جگہ کی طرف اشارہ کیا جہاں چھپا ہوا تھا، مختار کے سپاہیوں نے اسے گرفتار کر لیا اسے باہر لائے تو اس وقت وہ سر پر کچھ ڈالے ہوئے تھا انہوں نے اسے اسی جگہ قتل کر کے نذر آتش کر دیا!

اس سجد کا قتل

جو لوگ مختار کی نظر میں منہرہ تھے اور مختار کی عزت کرتے تھے ان میں عبید اللہ بن جعدہ بن شہیرہ

۱۔ تجارب الامم ج ۳ ص ۱۵۱، ۲۔ کمال بن اشعث ج ۳ ص ۲۴۰

تھے، اور اس کی وجہ یہ تھی کہ عبداللہ کو امیر المؤمنین سے قربت تھی،

عمر بن سعد، عبداللہ بن جعدہ کے پاس آیا اور ان سے کہا: میرے لئے مختار سے امان لے لو، عبداللہ نے سخاوت کی تو مختار نے اس طرح امان نامہ لکھا: یہ امان ہے مختار بن ابی عبیدہ کی طرف سے، عمر بن سعد بن ابی وقاص کیلئے، تم امان میں ہو، تم خود، تمہارا مال اور اہل و عیال خدا کی امان میں ہو لیکن تم کو اس سے اس کی بنا پر اس وقت تک امان ملے گی جو جب تک اطاعت کرو گے، گھر میں شہر میں اپنے بچوں کے اس پر جو کسی حادثہ میں شریک نہ ہو گے،

اس کے بعد مختار کے سپاہی اور آل محمد کے پیرو اسے دیکھتے تو کچھ نہ کہتے تھے، بعض لوگوں نے امان نامہ کو اپنی دکان اور مختار بھی لے لیا تھا کہ اس امان نامہ کے مطابق عمل کرے گا مگر یہ کثیر بن سعد کا حادثہ میں شریک پایا جائے اس امر پر اس نے خدا کو گواہ قرار دیا تھا، ایک روز مختار نے اپنے احباب سے کہا: کل میں اس شخص کو قتل کروں گا جس کی پہچان یہ ہے اس کے پیرو، آگے میں وہی ہوئے، اور بروٹی ہوئی ہیں، اس کے قتل ہونے سے وہیں اور ملا کر مرقین خوش ہوں گے،

بشیر بن اسود دغنی مختار کے پاس بیٹھا تھا ان ملا متوں سے وہ بچ گیا کہ مختار کی راہ میں سعد وہ اپنے گھر آیا اور اپنے بیٹے عثمان کو عمر بن سعد کے پاس بھیجا کہ اسے مختار کے قصد سے آگاہ کرے اور اس سے یہ کہے کہ خود کو بچاؤ،

عمر بن سعد نے کہا: خدا تمہیں جزائے خیر دے تم نے اخوت کا حق ادا کر دیا لیکن مختار مجھے امان نامہ دینے کے بعد ایسا نہیں کر سکتا ہے،

رات ہوئی تو وہ اپنے گھر سے باہر نکلا اور غلام کو مختار کے قصد اور ان کے امان سے آگاہ کیا غلام نے کہا: مختار نے آپ سے یہ عہد کیا تھا کہ آپ کسی حادثہ میں شریک نہیں ہوں گے اس پر اور کیا حادثہ ہو گا کہ آپ نے اپنا گھر اور اہل و عیال کو چھوڑ دیا ہے اور یہاں آگئے ہیں ابھی پلٹ رہے ہیں اور اس امان کے بطلان کے لئے مختار کے ہاتھ کوئی بہانہ نہ دئے دیکھئے،

عمر بن سعد واپس پلٹ گیا،

اس کے پلٹنے کی خبر مختار تک پہنچی، مختار نے کہا: اس کی گردن میں میری زنجیر ہے جو کہ اسے یہاں لٹکائے گا،

دوسرے دن صبح کے وقت مختار نے ابوہریرہ کو بھیجا اور انہیں حکم دیا کہ عمر بن سعد کو حاضر کرو، ابوہریرہ عمر بن سعد کے پاس گئے اور اس سے کہا: تمہیں میرے طلب کیا ہے،

عمر کھڑا ہوا لیکن رعب و دہشت سے اس کا پاؤں ہلکا ہوا اس نے التجا کیا اور وہ پھسل گیا، ابوہریرہ نے اس کو اس سے حکم کر کے قتل کر دیا اور اس کا سر مختار کے سامنے پیش کیا،

مختار نے اپنے پاس بیٹھے ہوئے عمر بن سعد کے بیٹے حفص سے کہا: اس سر کو پہچانتے ہو؟ حفص نے اسے سر جٹ زباں پر جاری کیا اور کہا: ہاں! ان کے بعد زندگی میں کوئی بھلائی نہیں ہے،

مختار نے کہا: تم سچ کہتے ہو اس کے بعد تم بھی زندہ نہیں رہو گے پھر حکم دیا کہ حفص کو بھی جو حفص کی گردن چنایا عمر بن سعد کے بیٹے حفص کو قتل کر دیا گیا اور باپ بیٹے کے سروں کو ایک جگہ رکھ دیا،

اس وقت مختار نے کہا: عمر بن سعد کو میں نے حسین کے بدلے اور اس کے بیٹے حفص کو علی کے بدلے میں قتل کیا ہے، لیکن ان دونوں کا ان دونوں سے کوئی تقابل نہیں ہے خدا کی قسم اگر میں قریش کے ہاتھوں میں سے تین حصے قتل کر دوں تو بھی حسین کی ایک انگشت کے برابر نہ ہوں گے،

مختار نے عمر بن سعد کو اس لئے قتل کیا تھا کہ یزید بن شراحیل انصاری محمد بن حنفیہ کی خدمت میں تھا اور انھیں سلام کیا کہ گھنگو ہوئی اسی اثنا میں مختار کا ذکر لکھا گیا، محمد بن حنفیہ نے کہا: مختار خود کو اللہ سے بھگتا ہے جبکہ قاتلان حسین کری پر مینہ کراس سے گھنگو کرتے ہیں،

جب یزید بن شراحیل کو فوف واپس لوٹے اور مختار کے پاس گئے تو محمد بن حنفیہ کا جملہ ان سے نقل کیا

تو غمخوار نے اسے قتل کرنے کا منصوبہ بنایا

مدینہ میں سرائے ہیں

مختار نے عربین سے اور اس کے بیٹے جعفر کا سر محمد بن حنفیہ کے پاس بھیج دیا اور ایک خط لکھا کہ
بسم اللہ الرحمن الرحیم: یہ خط مختار بن ابی عبیدہ کی طرف سے محمد بن علی کے پاس
سلام سچا آپ پر اسے محمد بن علی کا شکر ادا کرتا ہوں جو حدہ لاشریک ہے،
اما بعد! خدا نے مجھے آپ کے دشمنوں کیلئے عذاب قرار دیا ہے آپ کے دشمنوں میں
بعض کو اسیر کر لیا گیا ہے، ایک گروہ روپوش ہو گیا اور کچھ قتل کر دیے گئے ہیں،
جلاوطن کر دیا گیا ہے، میں خدا کا شکر ادا کرتا ہوں کہ اس نے آپ کے دشمنوں کو قتل کیا
آپ کے انصار کی مدد کی ہے، مختار بن سعد اور اس کے بیٹے کا سر آپ کی خدمت میں بھیجا
امام حسن اور ان کے اہلبیت کے قاتلوں میں سے جو بھی ہاتھ لگ جائے گا اسے تہمت
اور ان میں سے جو باقی رہ گئے ہیں خدا ان سے انتقام لینے سے عاجز نہیں ہے اور
ان میں سے روئے زمین پر ایک بھی باقی ہے اس وقت میں ان سے دست بردار نہیں
اب آپ اپنا نظیر لکھنے تاکہ میں اس کی پیروی کروں اور اس پر قائم رہوں،
والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ

اس کے بعد جس کے بارے میں بھی مختار سے یہ کہا جاتا تھا کہ فلاں امام سیدنا اور ان کے
کے قاتلوں میں سے ہے اس کو قتل کر کے نذر آتش کر دیتے تھے اور جو بھاگ جاتا تھا اس کا نام

تھے

ماہ کا بن اشرف ۲۸۱ھ

کے تجارب الامم ۲ ص ۱۵۳

مختار بن ذی الجوشن

جب مختار اہل ان کے بنو اہل نے کوفہ میں ہونے والی شورش کو کچل دیا تو کوفہ کے سربراہ اور وہ افراد جان
کوفہ سے کوفہ چھوڑ کر فرار کرنے لگے مفرد روگوں میں سے ایک مختار بن ذی الجوشن بھی تھا، مختار نے اپنے
اہل زہد کو اس کی تلاش میں بھیجا جب مختار کا غلام مختار اور اس کے ساتھیوں کے قریب پہنچا تو مختار نے
ساتھیوں سے کہا: گویا شخص مجھے قتل کرنے کیلئے آیا ہے تو لوگ اس کے ہاتھ جاؤ مجھے پیچھے چھوڑ دو گویا مجھے
دار ہے ہونا کہ وہ مجھے قتل کرنے کی کوشش نہ کرے،

مختار نے اسے سختی آگے بڑھ گئے اور اسے پیچھے چھوڑ دیا، مختار کے غلام آئے اور مختار سے اچھے لگے مختار نے
اس کی خبر وار کے قتل کر دیا اور انہیں وہیں چھوڑ کر چلا گیا اور مصعب بن زبیر کو بصرہ ایک خط لکھا اور اسے
کہانے کی اطلاع دی، واقعہ شورش میں جو شخص بھی کوفہ سے بھاگا وہ ہر جہاں مصعب بن زبیر کے پاس چلا
آتا تھا،

مختار نے کلبانیہ کے ایک آدمی کے ذریعہ مصعب کے پاس خط بھیجا اور نو دس گالوں میں بھرا جس
کا اسے ہر پہلو سے شخص خط لکھ کر بصرہ کی طرف چلا راستہ میں ایک شخص سے ملاقات ہوئی اس نے پوچھا کجاں
دار ہے ہو؟

اس نے کہا: بصرہ میں مصعب کے پاس جا رہا ہوں،

پوچھا تمہیں کس نے بھیجا ہے؟

اس نے کہا: مجھے ایک آدمی نے بھیجا ہے اور تاریخ کاں میں شریک ہے کہ میں ۳۹ ہجری اور انی اعظم کی فوج کی جگہ ۱۵

اہل ان کے سرکاری تہذیب کے ۱۵ کے ۳۹ ہجری بصرہ لکھا ہے،

تاریخ کاں میں مصعب بن زبیر لکھا ہے،

کہا: شمر نے،

اس شخص نے کہا: میرے ساتھ آؤ تو میں اپنے سردار کے پاس لے چلتا ہوں اسے مختار کی خدمت میں لے جاؤں گا۔

سالار ابو عہ کے پاس لایا ابو عہ کو شمر کی تلاش تھی،

اس نامہ ہونے ابو عہ کو شمر کا ٹھکانہ بتادیا، ابو عہ اس کی طرف روانہ ہوئے، شمر کے ساتھ ہوئے تھے وہ کہتے تھے بہتر ہے کہ ہم یہاں نہ ٹھہریں، شمر نے کہا: ہرگز! خدا کی قسم میں تین روز تک یہاں رہوں گا تاکہ مختار کے طرفداروں کے دل میں خوف و رعب پھیل جائے،

رات ہوئی تو ابو عہ نے سواروں کی ایک جماعت کے ساتھ اس پر حملہ کیا اس وقت شمر نے اپنے گھوڑے پر سنبھال کر اٹھا اور ان پر تل کر دیا پھر غیم میں جا کر تلوار اٹھا لایا، مختار کے سپاہیوں نے اسے قتل کیا اور اس کے ساتھیوں کو شکست دی وہ فرار ہو گئے، رات کی تاریکی میں مختار کے سپاہیوں نے شمر کی لاش ملنے کی لوگوں نے سنا کہ وہ کہہ رہے تھے خبیثت مارا گیا، ملے

سنان بن انس

جیساکہ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ سنان بن انس بصرہ فرار کر گیا تھا اور مصعب بن زبیر کے پاس پہنچا تھا اس کا مختار کو بہت افسوس تھا، انہوں نے بصرہ کے مضافات میں جاسوسوں کا جال بچھایا اور انہیں اس بات کی تاکید کر دی کہ اس پر نظر رکھیں، جاسوسوں نے مختار کو خبر دی کہ سنان قادیسیہ کے کنارے جا رہا ہے، مختار مسرور ہوئے کچھ سپاہیوں کو اس کے تعاقب میں روانہ کیا چنانچہ انہوں نے غازیہ کے درمیان اسے پایا اور مختار کے قتل کے پاس لائے، انہوں نے حکم دیا پہلے ایک ایک کے قتل کر کے پھر باقی کاٹ دو، پھر ہاتھ پاؤں قطع کرو اور بعد میں زینوں کے کھولتے ہوئے میل میں ڈال دو

۱۔ البدایہ والنہایہ ج ۸ ص ۲۹۷، ۲۔ بحار الانوار ج ۵ ص ۳۷۵

اور ایسا ہی کیا گیا کیونکہ اس نے کربلا میں بہت ظلم ڈھائے تھے، جب امام حسینؑ زمین پر گئے تھے تو سنان نے آپؑ کے ترچہ کو زخمی کیا تھا اور سینہ میں نیزہ اور گھوڑے مبارک پر تیر مارا تھا،

حمید بن مسلم

حمید بن مسلم بن سعد کے لشکر میں تھا اور کربلا کے معین و انصاف اس نے نقل کیے ہیں اہلبیت کے خیر خواہ اور شمس کے وقت جب عطاء بن اوسینؑ زمین اعادین کے پاس آئے اور شمر نے آپؑ کو قتل کرنا چاہا تو حمید نے اسے روک دیا: سبحان اللہ! کیونکہ جو ان کو بھی قتل کیا جاتا ہے، اس وقت آپؑ بیمار تھے، بن سعد اور کہا: کوئی عورتوں کے خیمہ میں نہ جائے اور اس بیمار جوان کو کچھ نہ کہے، مگر حمید نے کہا: میں کہتا ہوں کہ امام حسینؑ نے مسلم بن حنفیہ کیلئے دعا کی تھی کہ میرے دے، تمہارے کہنے سے ملے گا مجھ سے بلا دور کی ہے مگر، ممکن ہے اسی وجہ سے قتل سے بچ گئے ہوں، جیسا کہ خود کہتے ہیں: مختار نے مالک بن مالک کو جاری طرف بھیجا میں اپنے حملہ سے علاحدہ نہیں ہوا چلا گیا میرے پیچھے دو آدمی آ رہے تھے ان کے سپاہی انہیں گرفتار کرنے میں لگ گئے اور انہیں بھاگ کر بچ گئے

زکریا بن کاہل

منہال بن عمرو نے روایت کی ہے کہ میں مکہ سے واپسی پر حضرت علی بن حسینؑ کی خدمت میں شرفیاب

فرمان پہنچا ج ۸ ص ۳۳۸

کابل بن اثیر ج ۸ ص ۷۱

تاریخ طبری ج ۷ ص ۳۶۷، ۲۔ تاریخ طبری ج ۷ ص ۳۶۸

ہوا آپ نے فرمایا: حرم میں کابل کی کیا خبر ہے؟

میں نے عرض کیا: جب میں کو ف سے چلا تھا اس وقت وہ زندہ تھا۔

منہاں کہتے ہیں: میں نے دیکھا کہ امام زین العابدینؑ نے اپنے ہاتھ آسمان کی طرف بلند کئے اور فرمایا: «اللَّهُمَّ اَذْفُ خَوْ التَّارِ اللَّهُمَّ اَذْفُ خَوْ الخَدِيدِ» اے اللہ! اسے آگ کا مزہ چکھا دے، اے اللہ! اسے آگ کا مزہ چکھا دے،

پھر میں کو ف لوٹ آیا، یہاں مختار بن ابی عبیدہ خروج کر چکے تھے وہ پہلے سے میرے دوست تھے، لوگوں کی دید و بازدید کے بعد میں سوار ہو کر مختار کی منزل کی طرف روانہ ہوا، منزل سے باہر ملائی ہوئی،

مختار نے کہا: جس وقت سے کو ف کی حکومت ہمارے ہاتھ میں آئی ہے تم ہم سے ملاقات کیا نہیں آئے نہیں ہمارے بادشاہ کی اور نہ ہماری مدد کی،

میں نے کہا: اس زمانہ میں میں مکہ میں تھا، اب تمہارے پاس آیا ہوں تاکہ کچھ گفتگو کریں، ہمارے ملے کرتے رہے یہاں تک کہ کو ف کے کناسہ مزید تک پہنچ گئے، مختار وہاں ٹھہر گئے جیسے کسی کا کردار ہے یوں، کچھ دیر نہ گزری تھی کچھ گونہیزی سے ان کے پاس آئے اور کہنے لگے: اے میرے ہمارے کو شہادت دیتے ہیں کہ حرم میں کابل گرفتار ہو گیا ہے،

جب حرم کو لایا گیا تو مختار نے کہا: لشکر ہے خدا کا کہ اس نے مجھے تیرے اور تسلط مصلحتی جلا کو بلایا اور حکم دیا کہ حرم کے ہاتھ قطع کر دو، ہاتھ قطع کر دیے گئے، پھر حکم دیا کہ اس کے سر کو دو، پیر کاٹ دیے گئے، اس کے بعد کہا: آگ لانی جائے، مکر یوں میں آگ لگائی تھی اور اسے آگ لانی دیا گیا،

منہاں کہتے ہیں: مجھے امام زین العابدینؑ کی دعا یاد آگئی اور بے ساختہ میں نے کہا: بس اللہ! مختار نے کہا: ہر وقت، سبحان اللہ کہنا بہت اچھی بات ہے لیکن تم نے تعجب کیا کہ سبحان اللہ کہنا،

میں نے کہا: مکہ سے واپسی پر میں علی بن الحسینؑ کی خدمت میں حاضر ہوا تھا، آپ نے مجھ سے حرم کے بارے میں استفسار کیا میں نے عرض کیا: وہ زندہ ہے، آپ نے دعا کیلئے ہاتھ بلند کئے اور فرمایا: اے اللہ! اسے نوپے اور آگ کا مزہ چکھا دے جب میں نے تمہارے درویش امام کی دعا کو مستجاب ہوتے دیکھا تو ہیرت زدہ رہ گیا اور بے ساختہ زبان سے سبحان اللہ نکلا،

مختار نے کہا: واقعتاً تم نے یہ بات علی بن الحسینؑ سے سنی ہے؟

میں نے کہا: ہاں! خدا کی قسم میں نے سنا کہ آپ نے یہ فرمایا،

منہاں کہتے ہیں: میں نے دیکھا کہ مختار سواری سے اترے، دو رکعت نماز پڑھی اور ایک طویل عید کیا، پھر کھڑے ہوئے، سوار ہوئے، میں بھی سوار ہوا اور واپس چل دیئے جب میرے گھر کے سامنے پہنچے تو میں نے کہا: اگر امیر قبول فرمائیں تو مجھے مختار اور میرے گھر کو زین فرمائیں اور میرے گھر کھانا تناول فرمائیں، مختار نے کہا: اے منہاں! تم نے خود مجھے خبر دی ہے کہ علی بن الحسینؑ کی دعا میں میرے درویش تاجاب ہوئی ہے اس کے باوجود مجھے کھانے کی دعوت دے رہے ہو، آج میں نے اس بات کے ٹکڑاؤں میں کہ خدائے مجھے یہ توفیق عطا کی ہے میرے درویش آپ کی دعا مستجاب ہوئی ہے روزہ رکھا ہے ط

حرم کے مظالم

- ① حرم نے امام حسینؑ کے شیر خوار علی اصغرؑ کو تیرے شہید کیا،
- ② سید بن طاووس لکھتے ہیں کہ عبداللہ بن الحسن اپنے چچا حسینؑ کی سفارش میں تھے کہ حرم نے تیرے مارا یعنی دیکھ کر دیا ط

۱۔ بحار الخوارج ۵ ص ۲۲۲ و ۵ ص ۲۲۵،

۲۔ طبوت ص ۵۱،

۲۰ محمد بن کامل بن امام حسین کے سر مقدس کو لے گیا تھا۔

حکیم بن طفیل

محمد بن حکیم بن طفیل طائی کی گرفتاری کیلئے سپاہی بھیجے وہ اسے گرفتار کر کے مختار کے پاس لائے۔ اس کے عزیز عدی بن حاتم کے پاس گئے اور ان سے درخواست کی وہ سفارش کریں، عدی اصحاب مختار کے پاس آئے اور درخواست کی حکیم بن طفیل کو چھوڑ دو، انہوں نے کہا: اس کا اختیار مختار کے ہاتھ میں ہے۔ عدی بن حاتم حکیم بن طفیل کی سفارش کیلئے مختار کے پاس گئے، مختار کے محاب نے خیال کیا کہ یہ مختار کی سفارش قبول کریں، اسلئے انہوں نے حکیم کو باندھ دیا اور اس پر تیروں کی بوچھاڑ کر دی۔ وہ ہلاک ہو گیا۔

عدی مختار کے پاس گئے اور اس کی سفارش کی مختار نے ان سے کہا: آپ اچھی طرح جانتے ہیں اور پھر فاطمہ بنتی کی سفارش کرتے ہیں۔

عدی نے کہا: اس پر تھوٹ باندھا گیا،

مختار نے کہا: اگر ایسا ہے تو میں اسے رہا کر دوں گا،

اسی وقت عبداللہ بن کامل آئے اور مختار کو حکیم کے قتل کی خبر دی، مختار نے ان سے کہا: قتل میں تم نے کیوں غفلت کی؟ اسے میرے پاس لاتے؟ یہ بات کہہ رہے تھے اور حکیم بن طفیل کے مارے جانے سے خوش ہو رہے تھے۔

عبداللہ بن کامل نے کہا: بیشک مجھ پر غالب آگئے اور اسے قتل کر ڈالا،

عدی بن حاتم نے ناراض ہو کر ابن کامل سے کہا: تم تھوٹ بولتے ہو جب تم نے یہ محسوس کیا کہ

۱۔ یار اللہ تاریخ ۵۶ ص ۱۳۲

ماش قبول کریں گے تو تم نے اسے قتل کر دیا،
ابن کامل نے بھی عدی کو برا کہا قریب تھا کہ دونوں میں نگر ہو جائے لیکن مختار نے عبداللہ بن کامل کو روک لیا۔

حکیم بن طفیل کے ظالم

- ① اس نے امام حسین کو تیر مارا۔
- ② حضرت عباس کا لباس واسطہ اتارا۔
- ③ حضرت عباس کو تیر مارا۔
- ④ حضرت عباس کا بایاں بازو قلم کیا۔

ابن منذر

یہ حضرت علی اکبر کا قاتل ہے جب مختار کے سپاہیوں نے اس کے گھر کا محاصرہ کیا تو اس نے گھوڑے پر چڑھ کر مختار کے سپاہی پر نیزہ سے حملہ کیا انہوں نے بھی اس کے ہاتھ کو زخمی کر دیا لیکن ان کے ہاتھ سے لڑا اور مصعب بن زبیر کے پاس بھر چلا گیا۔

۱۔ ابن اثیر ج ۲ ص ۴۴

۲۔ ابن اثیر ج ۲ ص ۵۱۹

۳۔ یار اللہ تاریخ ۵۶ ص ۱۳۵

۴۔ ابن اثیر ج ۲ ص ۱۰۸ ۵۔ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۱۳۲

4. A

ابن کعب

نفس المهدوم ص ۱۳۵۹

ابو الحسنوف حنفی

۱۔ کامل بن اثیرج ۱۷ ص ۲۴۳،

۲ فرانسہ، ۲۲۲ ص ۲۲۲، ج ۱ باریک نوار ۵ ص ۵۲،

کوندرا آتش کردوان کے حق میں امام حسینؑ کی وہ دعا قبول ہو گئی ہے جو آپ نے روز عاشورہ آسمان کی طرف رخ کر کے کی تھی اور فرمایا تھا:

اللَّهُمَّ أَشْهَدُ عَلَى هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ فَإِنَّهُمْ دَعَوْنَا لِيَتَضَرَّوْنَا ثُمَّ عَدَّوْا عَلَيْنَا كَمَا أَلَمْنَا
اللَّهُمَّ أَمْنَعْنَهُمْ بِزَكَاةِ الْأَرْضِ وَفَرِّقْهُمْ تَفْرِيقاً وَمَزِفْهُمْ مَزْجاً وَاجْلَعْهُمْ جِلْداً
قَدْداً وَلَا تُضِلَّ الْوَلَاةَ عَنْهُمْ أَبَداً وَأَقْتُلْهُمْ بَدَداً وَلَا تُعَادِرْ مِنْهُمْ أَحَداً

اے اللہ! اس قوم پر گواہ رہنا کہ انہوں نے ہمیں دعوت دی کہ یہ ہماری مدد کریں گے اور ہم
ہم پر ہتھ دوزے ہیں، ہمیں قتل کرتے ہیں ہمارا خون بہاتے ہیں، پروردگار! انہیں زمین کو لگا
سے محروم کر دے ان میں نفرت ڈال دے اور ان کے اتفاق کے پردے کو چاک کر دے اور ان کے
معدراستوں اور مختلف گروہوں میں پراکندہ کر دے اور ان کے دایوں کو ان سے علیحدہ
کر دے اور انہیں ذلت کا موت دے اور ان میں سے کسی زندہ نہ رکھ۔

بجل بن سلیم

مختار نے حکم دیا کہ اسے گرفتار کر کے لاؤ، لایا گیا، مختار سے کہا گیا کہ یہ وہی شخص ہے جس نے
کی انکشت مبارک قطع کر کے آپ کی انگوٹھی اتار دی تھی،
مختار نے حکم دیا کہ اس کے ہاتھ پاؤں قطع کر کے ایسے ہی پھوڑو ڈالنا کہ ہلک ہو جائے۔

عربین صبح

اسے رات میں گرفتار کر کے مختار کے پاس لایا گیا وہ کہہ رہا تھا: میں نے کربلا میں

ط. بحار و ذخیرہ ۲۵ ص ۲۷۶

سے جھڑک کر کہیں زخمی کیا لیکن ان میں سے کسی کو قتل نہیں کیا، مختار نے کہا: نیزے لاؤ، چنانچہ
نیزوں کی ضرب سے ہلک کیا گیا۔

ابو بن رواحہ

یہ کوڑے ٹوٹ کر گرنے والوں میں سے تھا، مختار کے سپاہیوں نے اسے گرفتار کیا جب مختار کے پاس
لے آیا تو اس نے اپنی جان بچانے کی خاطر مختار کی مدد میں کچھ اشعار پڑھے ان اشعار میں عفو و درگزر کا تقاضہ
کھا اور مختار کے خروج و کامیابی کو ایسے ہی غیبی امداد کہا تھا جیسے بدر جنگ میں ملائکہ رسولؐ کی مدد کی تھی
کہا: اے امیر المؤمنین میں نے دیکھا کہ ملائکہ آپ کی مدد کر رہے تھے، مختار نے کہا: منبر پر جاؤ اور یہ بات
ان کے سامنے بیان کرو،

وہ منبر پر گیا اور جو کچھ مختار کے بارے میں کہا وہ لوگوں کے سامنے بیان کیا، جب نیچے اتر کر مختار کے پاس
گیا تو مختار نے اس سے کہا: میں یہ جانتا ہوں کہ تم نے جھوٹ بولا ہے تم نے ملائکہ کو نہیں دیکھا ہے بلکہ تم نے جان
کمانے کے لیے جھوٹ کہا ہے یہاں سے جہاں چاہو باہر چلے جاؤ کہ میرے اصحاب و انصار کو بخل کر دو گے،
کوڑے سے ٹھک گیا اور چہرہ پر مصعب بن زبیر سے متصل ہو گیا،

ابو السدین زیاد سے جنگ

۳۶ھ کے ماہ ذی الحجہ کے آٹھ روز باقی رہ گئے تھے کہ ابراہیم بن اشتر عبید اللہ بن زیاد سے جنگ

۱۰۱ تاریخ ۲۵ ص ۲۷۶

۱۰۱ تاریخ ۲۵ ص ۲۷۶

jabir.abbas@yahoo.com

کے لئے روانہ ہوئے یعنی یہ مختار کے واقعہ سب سے پہلے فارغ ہونے کے دور و زبیر روانہ ہوئے۔
مختار نے اپنے طرفداروں میں سے سوار اپنے اصحاب میں سے برگزیدہ اور جیسرت و تہم کو
کو ابراہیم کے ساتھ کیا اور خود ابراہیم کے ساتھ بدر میں گئے۔
مختار نے ان سپاہیوں کے لئے خاصے دھانے جو فوج شام اور عید اللہ بن زیاد سے
تھے۔

مختار کی وصیت

اس کے بعد مختار نے ابراہیم کو وراثت کیا اور ان سے کہا: میں تمہیں تین وصیت کرتا ہوں۔
یاد رکھنا،
① ظاہر و باطن میں اور عیان و نہان حالت میں خدا سے ڈرنا،
② دشمن سے جنگ کے لئے جانے میں ہلکی کرنا،
③ دشمن کے مقابلے میں جا کر اسے ہلکتا کر دینا اور ان پر پھرتی سے حمل کرنا،

فوج کو فکری روانگی

ابراہیم کو فوسے سکے، تیزی سے روانہ ہو گیا۔
جائیں،
عبد اللہ بن زیاد شام سے بہت بڑے لشکر کے ساتھ آیا اور حوصلہ پر قابض ہو گیا۔
ابراہیم کو فوسے آئے عراق کو چھپے چھوڑ کر حوصلہ کی سرزمین پر پہنچ گئے۔
واقعہ سب سے پہلے وہ شوش پہنچے اور وہاں نے مختار کے دشمن کی تھی،

اور اپنے لشکر کے قراول دستہ کی سپہ سالاری طفیل بن قیس غنوی کے سپرد کی۔ فوج شام کے نزدیک
تو اپنی فوج کو چوکیا اور تیار کیا، جب بھی چلتے تو سب ایک کام چلتے تھے، پھر طفیل کو ایک جماعت کے
ساتھ روانہ کیا وہ حوصلہ کے شہروں میں سے ہنزہ خاڑ پر پہنچے اور ہارشیہ کا گڑھ میں اترے،
عبد اللہ بن زیاد بھی آگیا اور وہ بھی ہنزہ خاڑ کے کنارے سپاہ کو فکری نزدیک اترے،

ابراہیم بن حباب

یہ فوج کے سپہ سالاروں میں سے ایک تھے انہوں نے ابراہیم بن حباب کے پاس کی کو بھج کر پینا
یا کہ میں آپ کے ساتھ ہوں اور آج رات قتل سے ملاقات کروں گا،
ابراہیم بن حباب نے بھی کسی کے درویش پیغام بھیجا کہ میں ملاقات کیلئے تیار ہوں، رات کو غیر ابراہیم
کے پاس آئے اور ان کی بیعت کی اور کہا: میں فوج شام کے سپہ سالار ہوں میں اپنے ماتحت فوج کو
بھیجے اپنے کام حکم دیدوں گا،
ابراہیم نے کہا: میں آپ سے ایک ام کے سلسلے میں شہرہ کرنا چاہتا ہوں اور وہ یہ کیا اس
لام میں مصلحت ہے کہ میں اپنے چاروں طرف خدق کھدوا دوں اور تو زمین دن وقف کروں،
غیر بن حباب نے کہا: خدق کی قسم یہ تمہارے دشمن کی تمنا ہے اس سے انہیں فائدہ پہنچے گا
ان کی تعداد آپ لوگوں سے بہت زیادہ ہے ان پر حملہ کرنے میں تیار کرو گان لوگوں میں آپ کا رعب
و خوف بیٹھا ہوا ہے اور اگر آپ کی فوج شام والوں سے اٹھ جائے تو پھر مسلسل حملہ کریں تاکہ شام

دوسرے نسخہ میں: ہارشیہ آیا ہے، اور حاکم المدین میں ہارشیہ و ہارشیہ ہاری نظر سے نہیں گزرا ہے ہارشیہ
نسخہ المدین ج ۱ ص ۱۶۲ پر ہارشیہ نمک ہو گا لکھنا ہے،
کامل بن قیس ہریر ۲۶۱،

دلوں کی ہمت بہت ہو جائے،

ابراہیم نے کہا: اب مجھے اس بات کا یقین ہو گیا ہے کہ آپ نے صحیح بات کہی ہے اور صدیق کہہ دیا۔
نصیحت کی ہے کہ کو میرے امیر نے بھی مشورہ دیا ہے جو آپ نے دیا ہے،

میرے کہا: انہیں کے مشورہ پر عمل کیجئے ان کی رائے سے اختلاف کیجئے کیونکہ جنگ کے معاملے میں وہ
تجربہ کار آدمی ہیں اور صبح ہوتے ہی جنگ کا آغاز کر دیں، اس کے بعد میرے فوج شام میں چلا گیا،

اس رات میں ابراہیم صبح تک بیدار رہے اور پوچھتے ہی اپنی فوج کو منظم کیا اور اس میں چوکیاں
کا حکم دیا، عینہ و مسیرہ کے سپہ سالاروں کو ان کی جگہ و ان کی سوار فوج کی

کان اپنے مادری بھائی عبدالرحمن بن عبداللہ کے سپرد کی اور پھر نیچے اتر کر اپنے پیادوں سے کہا: ہمارا
وہ بخور آگے اور اس بڑے شے تک پہنچ گئے جہاں سے فوج شام نظر آ رہی تھی ابراہیم نے وہاں
کر دیکھا کہ ابھی عبداللہ کی فوج میں کھنک نہیں ہے گھوڑا طلب کیا اور سوار ہوئے،

ابراہیم بن اشتر کی تقریر

ابراہیم اپنے پیچہ داروں کے پاس سے گزرے اور ان سے کہا:

اے دین کے مددگارو! اے حق کا اتباع کرنے والو! اے شکر خدا! یہ مرحلہ کا ہمارا

حسین بن علیؑ، فرزند فاطمہ بنت رسول اللہ کا قاتل ہے، عبداللہ بنی اہلبیت پر پانی منڈکنا تھا

اتنی مہلت نہیں دی تھی کہ صبح ہو جاتی یا حسین واپس مدینہ نوٹ جاتے یا کہیں اور چلے جاتے اس نے

کو اور آپ کے اہلبیت کو قتل کر دیا اور اب عبداللہ تمہاری طرف بڑھ رہا ہے، میری یہ تمنا تھی کہ

ایک روز ہم اس کا سرہ کر لیں تاکہ وہ تمہارے ہاتھ سے قتل ہوا اور تمہارے دلوں کو سکون ہو سکے

۱۔ تجارب الامم ج ۲ ص ۱۶۱، کانین شہر شرح ص ۳۶۱

اس کے بعد لشکر کے عینہ و مسیرہ پر پہنچے انہیں جہاد کی ترغیب کی اور پھر واپس اپنی جگہ لوٹ
آئے اور گھوڑے سے اتر پڑے۔

فوج شام

عبداللہ بن زیاد نے بھی اپنی فوج کی صف آرائی کی، اس کے عینہ و حصین بن نیر سکونی کو اور

مسیرہ پر غیر بن جاب کو مقرر کیا اور سواروں کی کان شرجیل بن ذی السکلع کے سپرد کی، دونوں لشکر جنگ

کے لئے تیار اور ایک دوسرے سے نزدیک ہو گئے،

لشکر کا آغاز

فوج شام کے عینہ کے سپہ سالار حصین بن نیر نے اپنی فوج کے ساتھ ابراہیم بن اشتر کی فوج کے

سپرہ پر حملہ کر دیا اس کے سپہ سالار علی بن مالک نے کافی مقاومت کی یہاں تک کہ مارے گئے،

پھر ان کا علم قرہ بن علی نے اٹھا لیا اور وہ بھی اپنے ساتھیوں کے ساتھ قتل ہو گئے اس کے بعد

عبداللہ بن و قمار نے علم لیا، یہ جشی بن قتادہ کے بھتیجے اور رسول کے بھائی ہیں انہوں نے چلا کر کہا: اے

فوج خدا! میرے پاس جمع ہو جاؤ! اس آواز سے بہت سے سپاہی ان کے پاس جمع ہو گئے قرہ نے ان

سے کہا: تمہارے امیر ابراہیم بن اشتر بن زیاد سے جنگ کرنے میں مشغول ہیں ان کے پاس چلتے ہیں،

جب یہ لوگ ابراہیم کے پاس پہنچے تو دیکھا کہ ابراہیم سر پر ہند ہو کر آواز دے رہے ہیں: اے

لشکر کے سپاہیو! اس اشتر کا بیٹا ہوں، بہترین کام تمہارے سسل چلے ہیں، اس پر ان کے ساتھی میدان جنگ

۱۔ تجارب الامم ج ۲ ص ۱۶۱

اس کا سر قلم کر کے لاش کو آگ میں جلا دیا۔

عبد اللہ بن زید کا قتل

شریک بن حویرث نے حصین بن نمیر پر جو کہ شام کی بڑی فوج کا سپہ سالار تھا، حملہ کیا وہ یہ سمجھنے کہ یہ عبد اللہ بن زید ہے، دونوں دست و گریبان ہو گئے، شریک نے چاکا کر کہا: اس نافرمان کو قتل کرو، مختار کے سپاہیوں نے حکم کر کے حصین بن زید کو قتل کر دیا۔

شریک کا قتل

اس جنگ میں فوج شام کا ایک اور سپہ سالار شریک بن زید کی انکلاخ قتل ہوا، سفیان بن زید نے (دوئی) کیا کہیں نے اسے قتل کیا ہے، فوج شام شکست کھانے کو فرار ہو گئی تو ابراہیم کی فوج نے اس کا تعاقب کیا فوج شام میں سے بہت سے فوجی جان بچا کر فرار کی خاطر زیدی کو پڑے، ان میں سے اکثر ڈوب گئے، بچی ڈوبنے والوں کی تعداد ڈھائی سو سے زیادہ تھی اور مختار کی فوج کو بہت زیادہ مال غنیمت ملا۔

۱۔ کمال ابن اثیر ج ۱ ص ۱۶۲

۲۔ شریک جنگ میں حصین بن زید کے ساتھ تھے، ایک اکھڑتا رہ گیا تھا، جنگ کے بعد بیت المقدس چلے گئے تھے، امام حسینؑ کی فرزند ہات دست سکڑا: خدا سے عذر کرتا ہوں جو خون حسینؑ کا انتقام نہ لایا میں اس کا ساتھ دوں گا اور ابن مرجانہ کو قتل کروں گا، پھر مختار سے ملنے ہو گئے تھے۔

۳۔ مختار لا معرج ص ۱۶۳، کمال ابن اثیر ج ۱ ص ۱۶۲، کمال ابن اثیر ج ۱ ص ۱۶۲

میں لوٹ آئے، اس کے بعد ابراہیم کے بیٹے نے ابن زیاد کے سپرہ پر حملہ کیا، عراقیوں کو امید تھی کہ عیہ بن جباب اپنے وعدہ کے مطابق پیچھے ہٹ کر پسپا ہو جائے گا، لیکن عیہ نے وعدہ وفائے کیا اور شہید جنگ کا،

یہ صورت دیکھ کر ابراہیم نے اپنی فوج سے کہا: اب تم دشمن کے قلب لشکر پر حملہ کرو، حملہ قسم اگر ہم قلب لشکر کو پسپا کر دیں گے تو عیہ و سپرہ پسپا ہو کر پراگندہ ہو جائیں گے، پھر ابراہیم نے قلب لشکر پر حملہ کیا پہلے بیڑوں سے اور پھر تلواروں سے جنگ کی ابراہیم کا عہدہ سے کہا: آگے جاؤ اور دشمن کے لشکر کے وسط میں علم نصب کرو اس نے کہا یہ ممکن نہیں، ابراہیم نے کہا: آگے بڑھو! وہ آگے بڑھتا جاتا تھا اور جو شاہی اس کی طرف بڑھتا ابراہیم اسی کو تہ تیغ کر دیتے تھے۔

اسی وقت ان کی فوج نے متفقہ طور پر حملہ کیا، گھسان کارن پڑا، ابن زیاد کی فوج ہوا دونوں طرف سے بہت زیادہ پہاڑی مار گئے،

یعنی نے کہا ہے کہ سب سے پہلے عیہ بن جباب نے شکست کھائی اور عقب نشینی کی۔

عیہ بن زیاد کا قتل

جب فوج شام شکست کھانے لگی، ابراہیم کی فوج نے کہا: میں نے ایک ایسے کو قتل کیا ہے جو کہ ایک علم کے نیچے تھا اسے ہر خازر کے کنارے تلاش کرو، اس سے شک کی بات تھی میں نے اس کے دو ٹکڑے کر دیے، اس کے ہاتھ مشرق کی طرف اور پیہر مغرب کی طرف گرے، تلاش کر کے جب اسے نکالا تو معلوم ہوا کہ عیہ بن زیاد ہے جو ابراہیم کی تلوار سے دو ٹکڑے ہو گیا۔

۱۔ کمال ابن اثیر ج ۱ ص ۱۶۲، مختار لا معرج ص ۱۶۳

فتح موصل

ابراہیم بن اشتر موصل کی طرف بڑھے اس پر قبضہ کیا، شہر کے اطراف میں اپنے غاصدہ جیسے چاروں
بھائی عبدالرحمن بن عبداللہ کو نصیبیں بھیجا پھر سنجار، دارا اور ان کے اطراف پر قابض ہوئے۔

مختار کا مدائن آنا

مختار پہلے اپنے بھنوؤں کو ابراہیم کی کامیابی کی خبر دیتے اور کہتے تھے: عقیب ابراہیم
ابراہیم بن اشتر کی فتح اور فوج عبداللہ کی شکست کی خبر ملے گی، اس کے بعد کو فوسے نکلے، سائبان
کو کو فوسے اپنا جانشین مقرر کیا اور ایک جماعت کے ساتھ سباط آئے اور لوگوں سے کہا: میں تمہیں خوشخبری
ہوں کہ خدا کے لشکر نے نصیبین میں شامیوں کے لشکر سے جنگ کی اور انہیں شکست دی ہے، اس کے بعد
پہنچے، مگر پرگئے خطر پر چھا، اور لوگوں کو اطمینان کی اطاعت اور ان کے خون کا انتقام لینے کے
میں ثابت قدم رہنے کی ہدایت دی،

اسی وقت مختار کو عبداللہ بن زیاد کے قتل ہونے اور شامیوں کی پے در پے شکست کی خبر مل
نے کہا: اے خدا کے سپاہیو! کیا میں نے تمہیں اس سے پہلے ہی بشارت نہیں دی تھی؟ لوگوں نے
خدا کی قسم یہ بشارت ہم آپ کی زبان سے پہلے سن چکے تھے۔

ط. تجارب الامم ج ۲ ص ۱۲۸

ط. تجارب الامم ج ۲ ص ۱۲۸

عبداللہ کا سر مختار کے پاس

ابراہیم نے عبداللہ بن زیاد کا اور شامی فوج کے دوسرے سپہ سالاروں کے سر مختار کے پاس بھیج
دئے اور خود موصل ہی میں قیام پذیر رہے جب عبداللہ بن زیاد کا سر کو فوسے دار الامارہ میں لاکر رکھ دیا گیا
لوگوں نے دیکھا کہ ایک سانپ آیا اور ان سروں میں چلا گیا اور پھر عبداللہ بن زیاد کے منہ میں داخل ہو کر
اس کی ناک سے نکل آیا اور بار بار ایسا ہی کیا۔

ان زیاد کا ایک نگہبان کہتا ہے کہ میں شہادت امام حسین کے بعد قصر میں اس کے پاس پہنچا ناگہاں
دیکھا کہ ایک لگ عبداللہ بن زیاد کی صورت کی طرف پکی اس نے اپنی آستین سے چہرہ بچایا اور مجھ سے کہا
یہ واقعہ کسی کے سامنے بیان نہ کرنا،

امام حسین کی شہادت کے بعد عبداللہ بن زیاد کی ماں مرجانہ نے اس سے کہا: اے خبیث! تو
نے فرزند رسول کو قتل کیا ہے؟ تجھے بہشت کی خوشبو بھی نصیب نہیں ہوگی۔

عبداللہ بن زیاد کا سر محمد بن حنفیہ کے پاس

ابراہیم بن اشتر نے عبداللہ بن زیاد کا سر محمد کے پاس بھیج دیا تھا اور مختار نے عبداللہ بن زیاد
کے سر میں نیر، شرجیل اور فوج شام کے دوسرے سپہ سالاروں کے سر میں ہزار ہوں کے ساتھ محمد بن حنفیہ

ثواب الاعمال و عقاب الاعمال ص ۲۶۰، کامل بن اثیر ج ۲ ص ۲۶۵ پر یہ خبر ترمذی سے نقل کی گئی ہے،

ط. کامل بن اثیر ج ۲ ص ۲۶۵

ط. کامل بن اثیر ج ۲ ص ۲۶۵

کے پاس بھیج دیئے اور ان کے نام اس مضمون کا خط لکھا،

آپ کے شیعوں اور انصار میں سے ایک جماعت کو میں نے آپ کے دشمن عبید اللہ بن زیاد کی طرف بھیجا تاکہ وہ آپ کے بھائی حسینؑ کے خون کا انتقام لیں، یہ لوگ دشمن پر غلبہ کر کے اور میں کی مظلومیت پر افسوس کناں اپنے شہر وطن سے نکلے اور یمن کے دشمن سے مقابلہ کیا پروردگار نے شامیوں کو مغلوب کیا اور اس دشمن خدا کو قتل میں خدا کا شکر ادا کرتا ہوں کہ اس نے آپ کے خون کا انتقام لیا اور ظالموں کو دشت واصل اور دریا میں ہلاک کیا اور اس طرح مومنوں کے دل کو شفاء بخشی اور ان کے غضب کو مٹا دیا۔

کیا ملے

پھر عبدالرحمن بن ابی عوفؓ، عبید اللہ بن زیاد کو جی اور سابق بن مالک اشجری ان سروں اور اموال و خط کو محمد بن حنفیہ کے پاس مکے گئے، علی بن حسینؓ بھی اس زمانہ میں مکہ میں تھے جب محمد بن عبید اللہ بن زیاد کے سر کو دیکھا تو سجدہ بجالائے، خدا کا شکر ادا کیا اور مختار کے لئے دعا کی اور کہا: خدا جزائے خیر عطا کرے کہ اس نے ہمارے خون کا انتقام لے لیا اس لحاظ سے عبدالطلب کی ساری اولاد پر اس کا حق ہے، اے اللہ ابراہیم بن اشتر کو شہنشاہ بنو ہاشم کا بیاب فرما اور اسے ان تمام چیزوں کی توفیق مرحمت فرما، جس میں تیری رضا ہے اور دنیا میں و آخرت میں اپنی رحمت اس کے شامل حال فرما۔ اس کے بعد محمد بن حنفیہ نے عبید اللہ بن زیاد کا سر حضرت علی بن حسینؓ کی خدمت میں بھیجا۔ عبید اللہ کا سر جب آپ کی خدمت میں لایا گیا اس وقت آپ کھانا تناول فرما رہے تھے، امام کا سجدہ و شکر بجالائے اور فرمایا: شکر ہے خدا کا کہ اس نے ہمارے خون کا انتقام لے لیا ہے خدا مختار کو جزائے عطا کرے، مجھے عبید اللہ کے پاس اس وقت لے جایا گیا تھا کہ جب وہ کھانا کھا رہا تھا اور والد کا سر اس کے سامنے تھا، میں نے خدا سے یہ دعا کی تھی کہ مجھے اس وقت تک دنیا سے نہ اٹھائے۔

ملے بکار لا نوار ج ۵ ص ۳۶

مک دنیا سے نہ اٹھانا جب تک کہ میں نے اپنے دشمن مختار کے کنارے ابن زیاد کا سر نہ دیکھ لوں، اس کے بعد محمد بن حنفیہ نے وہ پیسہ، جو مختار نے ان کے پاس بھیجا تھا اپنے عزیز ریشیوں اور مکہ امینہ میں مقیم ہاجرین و انصار کے درمیان تقسیم کر دیا۔

یعقوبی نے اپنی تاریخ میں لکھا ہے کہ: مختار نے اپنے کسی قریبی آدمی کے بدست عبید اللہ بن زیاد کا سر مدینہ میں علی بن حسینؓ کے پاس بھیجا اور اس سے کہا: حضرت علی بن حسینؓ کے دروازہ پر توقف کرنا اور جب یہ دیکھنا کہ دروازہ کھل گیا اور لوگ داخل ہو رہے ہیں اس وقت آپ کے لئے کھانا لایا جاتا ہے تم بھی داخل ہو جانا،

وہ آیا اور دروازہ پر کھڑا ہو گیا جب دروازہ کھلا اور لوگ کھانے کیلئے آنے لگے تو وہ قریب آیا اور بلند آواز سے کہا: اے رسالت کی اہلیت، اے رسالت کی کان، میں قاصد مختار ابن ابی عبید ہوں عبید اللہ بن زیاد کا سر لایا ہوں۔

بنی ہاشم کے گھرمیں ایسی کوئی عورت باقی نہ بچی جس نے بلند آواز سے یہ نہ کہا ہو، وہ قاصد داخل ہو گیا اور سر ہار نکال دیا، جب علی بن ابی طالبؓ نے عبید اللہ بن زیاد کا سر دیکھا تو کہا: خدا اسے جہنم داخل کرے اور اسے اپنی رحمت سے دور رکھے،

بعض لوگوں نے روایت کی ہے کہ جس دن سے امام سید شہید ہوئے تھے اس دن سے کسی کو مسکراتے ہوئے نہیں دیکھا گیا تھا لیکن عبید اللہ بن زیاد کے سر کو دیکھنے کے بعد یوں پر مسکراہٹ آگئی تھی،

آپ کے لئے شام سے کچھ پیوہ جات بھیجے گئے تھے، آپ نے فرمایا: یہ پیوے اہل مدینہ میں تقسیم کر دو، امام حسینؓ کی شہادت کے بعد ناذان رسول میں کسی نے سر میں لنگھی اور خضاب نہیں کیا تھا۔

تاریخ یعقوبی ج ۵ ص ۲۵۱

بکار لا نوار ج ۵ ص ۳۶

Jabir.abbas@yahoo.com

ایک آدمی نے امام جعفر صادق علیہ السلام سے نقل کیا ہے کہ بنی ہاشم میں سے کسی عورت نے عموں میں سرسرا اور بانوں میں خضاب نہیں لگایا تھا، اور بنی ہاشم میں سے کسی کے گھر سے دھواں اٹھتا تھا تو دیکھا گیا تھا یہاں تک کہ عبداللہ بن زیاد کے قتل کی خبر گئی، روایت کی گئی ہے کہ تمھارے اپنی اٹھارہ ماہ کی حکومت کے درمیان ان اٹھارہ ہزار آدمی کو قتل کیا تو قتل امام حسین میں شریک تھے۔ لیکن دوسری روایت میں وارد ہوا ہے کہ خون کی قطرہ ختم نہ ہوئی یہاں تک کہ تمھاری اپنی عید نے خروج کیا اور ستر ہزار آدمیوں کو تہ تیغ کیا وہ خود کھیتے تھے میرے خون میں کتنا کتنا انتقام میں ستر ہزار آدمیوں کو قتل کیا ہے خدا کی قسم اگر میں ان کے انتقام میں روئے تو ان کے سارے انسانوں کو بھی قتل کرتا تو ان کے ناخن کا بھی عوص نہیں ہو سکتا تھا۔

شعب عام

عبداللہ بن زبیر نے بنی ہاشم میں اٹھارہ افراد محمد بن حنفیہ، عبداللہ بن عباس، ان کے حسن بن حسن بن علی کو، شعب عام، میں بند کر دیا اور ان سے کہا: میں تمہیں اپنی بیعت کے ساتھ چھوڑ دیتا ہوں کہ تمہاری گزیر بیعت سے روگردانی کرو گے تو میں تمہاری گردن مار دوں گا یا آگ میں جلا دوں گا اس کے بعد اس نے جوہ سے پہلے ہی انہیں آگ میں جلائے کا فیصلہ کر لیا، مسودہ بن عزنہ نے سفارش کی اور عبداللہ بن زبیر کو قسم دی کہ دوسرے جوہ تک تمہیں دھمکا دیا تو محمد بن حنفیہ نے پانی طلب کیا، غسل کیا، سفید لباس پہنا، خود کو صاف کیا انہیں اپنے قتل کے جانے یقین تھا،

۱۔ بحار انوار ج ۲ ص ۳۸۶

۲۔ اثبات الوصیہ ص ۱۶۸

تمھارے کو ف سے چار ہزار آدمی ابو عبداللہ جلیل کی سرکھائی میں محمد بن حنفیہ کو نبات دلائے کے لئے لے گئے۔ وہ آئے اور ذات عرق پہنچے، ان میں سے ستر افراد نے جلدی کی گھوڑے پر سوار ہوئے اور جو کئی بیج لائیں داخل ہوئے اور ہاتھ میں انگوٹھ لٹکاؤاڑ سے کہنے لگے یا محمد یا محمد، شعب عام تک پہنچ گئے اور بن حنفیہ اور دوسرے مجوس لوگوں کو نبات دلائی،

محمد بن حنفیہ نے حسن بن الحسن کو ان لوگوں کے پاس بھیجا جنہیں تمھارے روانہ کیا تھا، وہ ان کے پاس گئے اور بلند آواز سے کہا: تم لوگوں کو خلاف میں رکھ لو۔ لیکن ابن اشیر نے اپنی تاریخ میں نقل کیا ہے کہ ان کے ہاتھوں میں لاشیں تھیں ڈیڑھ سو آدمی تھے ان میں داخل ہو کر انہوں نے ان لاشیوں پر پھیرا باندھا لیا اور یا ثرات کیسٹ کا نعرہ بلند کرتے ہوئے گرم تک پہنچے عبداللہ بن زبیر نے مجوس لوگوں کو جلائے کیلئے گرمیاں تیار کر لی تھیں، اور ہلست دور دور اور باقی رہ گئے تھے کہ تمھارے بھیجے ہوئے افراد اس جگہ کا دروازہ ٹوٹ کر جہاں محمد بن حنفیہ دیکھ کر کھٹکھٹا اُڑا گئے اور ان سے کہا: تمہیں اجازت دینے کہ تم دشمن خدا عبداللہ بن زبیر کے ساتھ آ جاؤ،

۱۔ ابن ابی شیبہ جلد ۳ ص ۲۱۱ پر لکھا ہے کہ عبداللہ بن زبیر نے انہیں زمر میں قید کر رکھا تھا اور جلائے قتل کر چکی تھیں اس کے لئے ایک مدت بھی تھی کہ انہیں جلائے، چونکہ محمد بن حنفیہ کے ساتھ مجوس تھے انہوں نے بنی حنفیہ سے کہا: اس واقعہ سے تم کو مطلع کیجئے لہذا محمد بن حنفیہ نے تم کو خط لکھا اور مد طلب کی تمھارے محمد بن حنفیہ کا خط اہل کو ف کے سامنے پڑھا اور کہا: عبداللہ بن زبیر انہیں جلائے اور قتل کرنا چاہتا ہے، میں اسحاق بن یونس بن ابی اسحاق کی مدد کروں اور سیلاب کی مانند مسلسل سواروں کو مجبوس، اہل کو فوروں کے گئے اور نہ لگے جگہ کیے اور مجس بھیج دیئے تمھارے ابو عبداللہ کی سرکھائی میں ستر ہزار آدمی لائے اور ان کے بعد لایا بن عاز کے ساتھ چار سو بھیجے اور محمد بن حنفیہ کیلئے چار لاکھ درہم بھی بھیجے نیز ان لوگوں کے بعد پندرہ لاکھ سوار لائے، اپنی بیعت کے عہد مسو مجس بن طارق کے ساتھ چاکس اور یونس بن یونس کے ساتھ چاکس، آدمی اور راکھ، شرح صحیح البخاری ج ۱ ص ۳۳

محمد بن حنفیہ نے کہا: میں حرم کی سرزمین پر قتال پسند نہیں کرتا ہوں،
عبداللہ بن زبیر نے کہا: مجھے ان لوگوں پر تعجب ہے جو ہاتھ میں گڑیاں لکڑیاں لے کر قتال سے
لگا رہے ہیں، گویا میں نے حسین کو قتل کیا ہے، خدا کی قسم اگر قتالان حسین پر میرا تسلط ہو گیا تو میں
انہیں قتل کروں گا۔

اس جماعت کو خشیت کہتے تھے کہ جب یہ لوگ مکہ میں داخل ہوئے تو ان کے ہاتھوں
لکڑیاں بقیں، انہیں یہ بات پسند نہیں تھی کہ حرم میں سوار لکڑیاں داخل ہوں،
بعض لوگوں نے یہ بھی کہا ہے کہ انہیں حنفیہ کہنے کی وجہ یہ ہے کہ انہوں نے وہ لکڑیاں استعمال
جو عبداللہ بن زبیر نے بنی ہاشم کو جلانے کیلئے جمع کی تھیں،
عبداللہ بن زبیر نے مختار کے سپاہیوں سے کہا: تم یہ سمجھتے ہو کہ میں انہیں بیعت لے کر
دول کا پرزایا نہیں ہوگا،

مختار کے سپاہیوں کے سپہ سالار ابو عبداللہ بن عبد اللہ بن ابی اسد نے اس سے کہا: یا تو انہیں چھوڑ دو ورنہ
مقام کے پروردگار کی قسم میں تجھ سے جنگ کروں گا،
محمد بن حنفیہ نے انہیں جنگ و فتنہ سے روکا،

بعد میں مختار کے باقی ماندہ سپاہی بھی پہنچ گئے ان کے ساتھ اموال بھی تھے، وہ تکبر
اور یا ثنات حسین کا غرہ لگاتے ہوئے مسجد کرم میں داخل ہوئے، عبداللہ بن زبیر کو ان
محسوس ہوا، محمد بن حنفیہ اور ان کے ساتھی باہر نکل آئے، اور ان کے ساتھی عبداللہ بن زبیر کو
کہتے ہوئے لشکر طلائع چلے گئے اور ان سے کہا: میں عبداللہ بن زبیر سے جنگ کرنے کی اجازت
لیکن محمد بن حنفیہ نے انہیں اجازت نہیں دی،

اس شعبہ میں محمد بن حنفیہ کے پاس چار ہزار افراد جمع ہو گئے اور آپ نے وہ اموال

درمیان تقسیم کر دیا۔

۱۔ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۱۵۱

ملکہ سے بنی ہاشم کا انزال

جب عبداللہ بن زبیر نے یہ محسوس کیا کہ وہ بنی ہاشم کا مقابلہ نہیں کر سکتا اور انہوں نے اس کی
بیعت بھی نہیں کی ہے اور ان کے خلاف جو منصوبہ بنایا تھا اس کو بھی عملی جامہ نہیں پہنا سکا ہے تو اس نے
انہیں مکہ سے نکال دیا اور محمد بن حنفیہ کو رضوی کے علاقہ میں جلا وطن کر دیا اور عبداللہ بن عباس کو گھنٹہ سخت
میں طائف میں جلا وطن کیا،

بعض نے روایت کی ہے کہ محمد بن حنفیہ بھی طائف چلے گئے اور وہاں مقیم رہے یہاں تک کہ عرصہ
میں عبداللہ بن عباس نے اے سال کی عمر میں انتقال کیا، محمد بن حنفیہ نے ان کے جنازہ کی غار پر بھی اور
انہیں طائف کی جامع مسجد میں سپرد خاک کیا گیا۔

مصعب بن زبیر

واقعہ سینے کے بعد کو فکے ایک گروہ نے مختار کے خلاف شور و شرس کی تھی جو کچل دی گئی تھی، ایک گروہ
فرار کر کے مصعب بن زبیر کے پاس چلا گیا تھا، مغلمان کے شبث بن ربیع بھی ایک اونٹ پر سوار ہوا اور
اس کی دم و کان کاٹ دیئے، خود اپنی قبا کو چاک کر دیا اور چلا گیا تھا، مصعب بن زبیر کو خبر پہنچی کہ شبث
آیا ہے اسے مصعب کے پاس لایا گیا کو فکے دوسرے سربراہ و ردہ افراد بھی آئے اور مصعب کے سامنے کو فکے
حالات بیان کیے اس سے مدد طلب کی اور مختار سے جنگ کرنے کی دعوت دی،

محمد بن اشعث آیا تو اس نے مختار سے جنگ کرنے کی ترغیب کی اور مصعب نے اس کی دجھبائی کیا اور

۱۔ تاریخ بقیہ ج ۱ ص ۲۶۲

کوفہ والوں سے کہا: مجھے مہلب بن ابی صغزہ کے آنے تک مہلت دو! مصعب نے مہلب کو جو کہ اس کی طرف سے فارس کا گورنر تھا، خط لکھا اور اسے مختار سے جنگ کرنے کی دعوت دی، مہلب نے اسے میں تاخیر کی کہ وہ مختار سے جنگ نہیں کرنا چاہتا تھا، مصعب نے اسے بلانے کی خاطر محمد بن اشعث کو ایک خط دیکر اس کے پاس بھیجا، مہلب نے مصعب کا خط پڑھ کر محمد بن اشعث سے کہا: مصعب کو تمہارے علاؤ کوئی فائدہ نہیں ملتا تھا، محمد بن اشعث نے کہا: میں کیا کہے بغیر خط نہیں لایا ہوں مگر یہ ہمارے غلام ہمارے بل و مجال اور جہلم پر قابض و غالب ہو گئے ہیں،

مہلب بن ابی صغزہ کی روانگی

یہ بہت زیادہ مال اور لوگوں کی جم غفیر فوج کے ساتھ چلا اور پھر آیا مصعب نے کہا: "میں نے اس کے نزدیک فوج کی کمپ لگا دی،

عبدالرحمن بن مختف

مصعب نے اسے کوفہ بھیجا تاکہ لوگوں کو اس کی مدد اور پھر جانے کی دعوت دے اور مختار کے اطراف سے پرگندہ کرے اور خفیہ طور پر عبداللہ بن زبیر کی بیعت دے وہ وہاں سے آیا اور خفیہ طور پر اپنے گھر میں بیٹھ گیا اور اپنی ذمہ داری کو انجام دینے کی کوشش کرتا رہا۔ مختار کو جب مصعب کی روانگی کی خبر ملی وہ مسجد میں آئے تقریر کی اور کہا: کوفہ والو!

لا کال ابی اثیر ج ۳ ص ۲۶۷

تم دین کے پشت پناہ، حتیٰ کے مددگار، مستعد ہو گؤں سے دفاع کرنے والے اور رسول کے اہل بیت کے پیرو ہو، جان کو حرم لوگوں نے تم پر ظلم کیا ہے اور اب جہاں گئے ہیں وہ اپنے ہی جیسے کے پاس اکٹھا کر لے ہیں اور حق کو کھینچنے اور باطل کو فروغ دینے کیلئے اپنے جیسے فاسق افراد کو ابھار رہے ہیں جان کو کہ اہل قتل کر دیئے گئے تو پھر روئے زمین کو بی عبادت کرنے والا نہیں رہے گا، مگر جھوٹ کے ساتھ اور وہ رسول کے اہل بیت کو برا بھلا کہیں گے لہذا تم خدا کیلئے اٹھو! اور آخرین شیطان کے پرچم کے سایہ میں نہ آ کر دو، واضح رہے کہ جب ان سے تمہارا مقابلہ ہوگا تو تم انہیں قوم عاد و ثمود کی مانند قتل کر دو گے!

بصرہ سے مصعب کی روانگی

مصعب مختار سے جنگ کرنے کی غرض سے بصرہ سے نکلا اور عباد بن حصین کو اپنے آگے قرار دیا اور عبداللہ کو لشکر کے میز پر اور مصعب بن ابی صغزہ کو میسرہ پر مقرر کیا، مالک بن مسعم کو قبیلہ بکر کا اور مالک بن منذر کو قبیلہ عبدالقیس کا اور احنف بن قیس کو قبیلہ تمیم کا زیاد بن ثمر کو قبیلہ ازد کا اور قیس بن ثعلبہ کو عقیلہ والوں کا امیر مقرر کیا،

مختار بھی کوفہ سے باہر نکلے اور حماد امین، پرانی فوج کو جمع کیا اور جو افراد براہیم بن اشتر کے ساتھ تھے انہیں آخرین شیطان کے ساتھ روانہ کیا اور عبداللہ بن کمال کو قزول دشت کا امیر بنایا اور دونوں لشکروں کے تمام مذاکرے پر صفت آرائی کی،

اربع طبری ج ۸ ص ۴۱۸

مذاکرہ واسطہ اور پھر وہ دوسرا ایک جگہ کو پہنچے، معطلان ج ۵ ص ۸۸

غلطی یا بیعت

عبداللہ بن وہب: جو کہ غلطی فوج کے مسرور کے سپر سالار تھے۔ فوج کے سردار احمر بن شیط کے پاس آئے اور کہا: موایوں میں سے اکثر سوار اور ان کا چھوٹا سا گروہ پیدل ہے، آپ بھی پیدل ہیں ممکن ہے شہر دیکھ کے وقت وہ بھاگ کھڑے ہوں اور پیل فوج شکست کھا جائے بہتر یہ ہے کہ آپ یہ حکم صادر کریں کہ پیدل جنگ کریں اگر گزار کی کثرت آج تو وہ مجبوراً ثابت قدمی سے جنگ اور ایک دوسرے سے دفاع کریں یہ عبداللہ بن وہب نے حکم دیا کہ یہ فوج میں موایوں کی کثرت تھی انہیں صدمہ پہونچا، عبداللہ نے چاہتا تھا کہ اگر شکست کا منہ دیکھنا پڑے تو موایوں میں سے کوئی زندہ نہ رہے، احمر بن شیط نے اس کے مشورہ کو خیر خواہ خیال کیا اور سواروں کو پیدل ہوجانے کا حکم دیا۔

حکم کا آغاز

مصعب کی فوج کا سپر سالار عبداللہ بن حصین احمر بن شیط اور اصحاب مختار کے نزدیک آگیا احمر اس سے کہا: میں نہیں تجاہل خدا، رحمت رسول پر اور مختار کی بیعت کی دعوت دیتا ہوں اور سب متفق خلافت کو شورشی کے ذریعہ آل رسول کے حوالے کرتے ہیں، عباد واپس گیا اور مصعب کو پورٹ دی، مصعب نے اسے حکم دیا کہ واپس جاؤ اور حکم دیا چنانچہ اس نے احمر بن شیط اور ان کے سپاہیوں پر حکم دیا کہ وہ اپنی جگہ ثابت قدم رہے بھاگے نہ بھاگے۔

۱۔ تاریخ طبری ج ۸ ص ۷۲۰۔

اس کے بعد مصعب بن ابی صفرو نے مختار کی فوج کے سینہ کے سپر سالار عبداللہ بن کامل پر حملہ کیا کچھ دیر جنگ ہوئی اور مصعب بھی اپنی جگہ واپس چلا گیا، اپنی فوج کو دوبارہ ملکر کرنے کا حکم دیا، اس دفعہ ابن کامل کے سبازوں نے میدان چھوڑ دیا، خود ابن کامل قبیلہ ہمدان کے ایک گروہ کے ساتھ تھا و موت کرتے رہے لیکن تصویر میں یہ دیکھتی تھی کہ انہوں نے شکست کھائی اور سپاہ ہو گئے، اسی وقت مصعب کی فوج کے سینہ کے سپر سالار عبداللہ بن اس نے فوج کو فوکے مسرور پر حملہ کر دیا اور کھنڈ بھر جنگ کرنے کے بعد اپنی جگہ لوٹ گیا،

احمر بن شیط پر مصعب کی فوج کا چوتھا حملہ تمام کشتوں کا شیعہ تھ تھا، انہوں نے مقاومت کی یہاں تک کہ قتل ہو گئے، ان کے بچا ہی ایک دوسرے کو ثابت قدم رہنے کی دعوت دیتے تھے، مصعب چلا یا خود کو ہلاکت میں کیوں ڈال رہے ہو، بھاگ جاؤ تمہارا رے حق میں قرار بہتر ہے خدا کی قسم آج میرا اپنے قبیلہ کا زیادہ نقصان دیکھ رہا ہوں،

پھر احمر بن شیط کے سپاہیوں پر مصعب کی سوار فوج نے حملہ کیا، مصعب بن زبیر نے اپنے سپر سالار عباد کو بچا اور کہا: جسے بھی گرفتار کرو اس کی گردن مار دو اسیر لانے کی ضرورت نہیں ہے،

اس کے بعد ابن کو فوکے ایک بڑے گروہ کے ساتھ محمد بن اشعث کو بھیجا محمد نے اپنی فوج سے کہا: اب اپنے خون کا انتقام لےو چنانچہ جسے بھی انہوں نے قرار کرتے ہوئے دیکھا قتل کر دیا، مصعب کے فوجیوں نے توسکلی کی انتہا کر دی، مختار کے طرفداروں میں سے صرف سوار ہی جان بچا سکے پیادہ سپاہیوں میں سے شاید ہی کوئی زندہ بچا ہو،

معاویہ بن قرہ: بھرہ کا قاضی: کہتا ہے میں نے اپنے اپنے نیزہ کی نوک مختار کے ایک سپاہی کی آنکھ میں اتار کر گھوسا دی اور کہا: تو نے ایسا ہی کیا تھی،

اس نے کہا: ہاں! ان کا خون ترک و دہیم سے بھی زیادہ مباح ہے۔ ۱۔

۱۔ کامل ابن اشعث ج ۱ ص ۲۶۰۔

فوج کی شکست

فوج کی شکست کی خبر جب متاثر کو ملی اور انہیں یہ بتایا گیا کہ آپ کی فوج کے بڑے بڑے سب مارے گئے تو انہوں نے عید الرحمن بن ابی مرثدہ کے کان میں کہا: خدا کی قسم غلام اور زوالی بے سائقہ مارے گئے۔ میں پھر کہا: آخری شیطا اور عید اللہ بن کاہل قتل ہو گئے، فلاں فلاں بھی زندہ نہیں ہیں کچھ لوگوں کے نام لئے لو کہا: یہ وہ لوگ تھے جو میدان جنگ میں شکر سے بہہ رہے تھے۔ عید الرحمن نے کہا: واقفایہ بہت بڑا امیر ہے، مختار نے جواب دیا، موت سے مفر نہیں ہے، امیر دل بھی بہت چاہتا ہے کہ ان شیطا کی مانند لا جاؤں، عید الرحمن کہتے ہیں: اس وقت میں یہ کچھ کیا کہ اگر جنگ میں مختا کا مصعب سے زخمی تو وہ اپنی آخری سانس تک جنگ کریں۔

کوئی طرف

مصعب چلا واسطے سے گزرا، اس کی فوج خشکی کے راستے سے اور کچھ کشتیوں کے ذریعہ جاری تھی مختار نے جبکہ مصعب کی فوج سے مقابلہ کیلئے روانہ ہو چکے تھے، جب یہ دیکھا تو شیطا کا پانی چھوٹی چھوٹی نہروں میں بانٹ دیا شیطا کا پانی گت گیا اور ان کی کشتیاں کپڑوں میں گھس گئیں، وہ کشتیوں سے اترے اور کھڑے پراسوار ہو کر کوئی سمت چلے،

۱۔ نجاب لامح ۱۶۹ ص

حروراء

مختار اپنی فوج کے ساتھ روانہ ہوئے اور حروراء میں مقرب ہوئے تاکہ مصعب اور کوئی لشکر کے درمیان حائل ہو جائیں، مصعب اپنی فوج کے ساتھ پہنچ گیا اور مختار کی سپاہ کے مقابل میں صف آرا ہوا، مصعب نے پہلے ہی ابی صفرہ کو اپنی فوج کے حیدر کا امیر بنایا اور مسمرہ پر عمر بن عید اللہ کو اور سوار فوج پر عباد بن حصین کو مقرر کیا مختار نے بھی مسمرہ پر سلیم بن یزید کی کو مسمرہ پر سعید بن منذر کو اور سوار فوج پر عمر بن عید اللہ کو امیر مقرر کیا اور سیدیل فوج کی کان مالک بن عید اللہ کے سپرد کی، اس کے بعد مختار نے اپنے اصحاب میں سے ایک شخص کو بھرہ کے پانچوں قبائل کے پاس بھیجا، سعید بن قیس نے قبائل کو روک دیا اور عید اللہ کو مصعب کی فوج کے سینہ میں تھے، حملہ کر دیا اور شدید جھڑپیں ہوئیں، مصعب نے کسی کے در پر پہلے کو بلایا اور اس سے کہا: تمہارے مصعب نے کہا: میں موقع کی تلاش میں ہوں، مختار نے عید اللہ بن حیدر کو حکم دیا کہ جو لوگ تمہارے سامنے صف آرا رہیں ان پر حملہ کر دو، عید اللہ بن حیدر نے قبیلہ عالیہ پر زبردست حملہ کیا اور انہیں مصعب کی جگہ تک پہنچے دھکیل دیا مصعب اور اس کے سپاہیوں نے زمین پر گھسے ایک کے گھنٹہ دھیر مقابلہ کیا، عید اللہ بن حیدر اپنی جگہ واپس لوٹ آئے، پھر مصعب نے اپنی فوج کے ساتھ مختار کی فوج پر شدید حملہ کیا اور انہیں پراکندہ کر دیا۔ اور اس

۲۔ حروراء کوئی نزدیک ایکریہ ہے، بحر السیاح ۱۶۵ ص، ۱۶۶ ص، ۱۶۷ ص، ۱۶۸ ص، ۱۶۹ ص، ۱۷۰ ص، ۱۷۱ ص، ۱۷۲ ص، ۱۷۳ ص، ۱۷۴ ص، ۱۷۵ ص، ۱۷۶ ص، ۱۷۷ ص، ۱۷۸ ص، ۱۷۹ ص، ۱۸۰ ص، ۱۸۱ ص، ۱۸۲ ص، ۱۸۳ ص، ۱۸۴ ص، ۱۸۵ ص، ۱۸۶ ص، ۱۸۷ ص، ۱۸۸ ص، ۱۸۹ ص، ۱۹۰ ص، ۱۹۱ ص، ۱۹۲ ص، ۱۹۳ ص، ۱۹۴ ص، ۱۹۵ ص، ۱۹۶ ص، ۱۹۷ ص، ۱۹۸ ص، ۱۹۹ ص، ۲۰۰ ص، ۲۰۱ ص، ۲۰۲ ص، ۲۰۳ ص، ۲۰۴ ص، ۲۰۵ ص، ۲۰۶ ص، ۲۰۷ ص، ۲۰۸ ص، ۲۰۹ ص، ۲۱۰ ص، ۲۱۱ ص، ۲۱۲ ص، ۲۱۳ ص، ۲۱۴ ص، ۲۱۵ ص، ۲۱۶ ص، ۲۱۷ ص، ۲۱۸ ص، ۲۱۹ ص، ۲۲۰ ص، ۲۲۱ ص، ۲۲۲ ص، ۲۲۳ ص، ۲۲۴ ص، ۲۲۵ ص، ۲۲۶ ص، ۲۲۷ ص، ۲۲۸ ص، ۲۲۹ ص، ۲۳۰ ص، ۲۳۱ ص، ۲۳۲ ص، ۲۳۳ ص، ۲۳۴ ص، ۲۳۵ ص، ۲۳۶ ص، ۲۳۷ ص، ۲۳۸ ص، ۲۳۹ ص، ۲۴۰ ص، ۲۴۱ ص، ۲۴۲ ص، ۲۴۳ ص، ۲۴۴ ص، ۲۴۵ ص، ۲۴۶ ص، ۲۴۷ ص، ۲۴۸ ص، ۲۴۹ ص، ۲۵۰ ص، ۲۵۱ ص، ۲۵۲ ص، ۲۵۳ ص، ۲۵۴ ص، ۲۵۵ ص، ۲۵۶ ص، ۲۵۷ ص، ۲۵۸ ص، ۲۵۹ ص، ۲۶۰ ص، ۲۶۱ ص، ۲۶۲ ص، ۲۶۳ ص، ۲۶۴ ص، ۲۶۵ ص، ۲۶۶ ص، ۲۶۷ ص، ۲۶۸ ص، ۲۶۹ ص، ۲۷۰ ص، ۲۷۱ ص، ۲۷۲ ص، ۲۷۳ ص، ۲۷۴ ص، ۲۷۵ ص، ۲۷۶ ص، ۲۷۷ ص، ۲۷۸ ص، ۲۷۹ ص، ۲۸۰ ص، ۲۸۱ ص، ۲۸۲ ص، ۲۸۳ ص، ۲۸۴ ص، ۲۸۵ ص، ۲۸۶ ص، ۲۸۷ ص، ۲۸۸ ص، ۲۸۹ ص، ۲۹۰ ص، ۲۹۱ ص، ۲۹۲ ص، ۲۹۳ ص، ۲۹۴ ص، ۲۹۵ ص، ۲۹۶ ص، ۲۹۷ ص، ۲۹۸ ص، ۲۹۹ ص، ۳۰۰ ص، ۳۰۱ ص، ۳۰۲ ص، ۳۰۳ ص، ۳۰۴ ص، ۳۰۵ ص، ۳۰۶ ص، ۳۰۷ ص، ۳۰۸ ص، ۳۰۹ ص، ۳۱۰ ص، ۳۱۱ ص، ۳۱۲ ص، ۳۱۳ ص، ۳۱۴ ص، ۳۱۵ ص، ۳۱۶ ص، ۳۱۷ ص، ۳۱۸ ص، ۳۱۹ ص، ۳۲۰ ص، ۳۲۱ ص، ۳۲۲ ص، ۳۲۳ ص، ۳۲۴ ص، ۳۲۵ ص، ۳۲۶ ص، ۳۲۷ ص، ۳۲۸ ص، ۳۲۹ ص، ۳۳۰ ص، ۳۳۱ ص، ۳۳۲ ص، ۳۳۳ ص، ۳۳۴ ص، ۳۳۵ ص، ۳۳۶ ص، ۳۳۷ ص، ۳۳۸ ص، ۳۳۹ ص، ۳۴۰ ص، ۳۴۱ ص، ۳۴۲ ص، ۳۴۳ ص، ۳۴۴ ص، ۳۴۵ ص، ۳۴۶ ص، ۳۴۷ ص، ۳۴۸ ص، ۳۴۹ ص، ۳۵۰ ص، ۳۵۱ ص، ۳۵۲ ص، ۳۵۳ ص، ۳۵۴ ص، ۳۵۵ ص، ۳۵۶ ص، ۳۵۷ ص، ۳۵۸ ص، ۳۵۹ ص، ۳۶۰ ص، ۳۶۱ ص، ۳۶۲ ص، ۳۶۳ ص، ۳۶۴ ص، ۳۶۵ ص، ۳۶۶ ص، ۳۶۷ ص، ۳۶۸ ص، ۳۶۹ ص، ۳۷۰ ص، ۳۷۱ ص، ۳۷۲ ص، ۳۷۳ ص، ۳۷۴ ص، ۳۷۵ ص، ۳۷۶ ص، ۳۷۷ ص، ۳۷۸ ص، ۳۷۹ ص، ۳۸۰ ص، ۳۸۱ ص، ۳۸۲ ص، ۳۸۳ ص، ۳۸۴ ص، ۳۸۵ ص، ۳۸۶ ص، ۳۸۷ ص، ۳۸۸ ص، ۳۸۹ ص، ۳۹۰ ص، ۳۹۱ ص، ۳۹۲ ص، ۳۹۳ ص، ۳۹۴ ص، ۳۹۵ ص، ۳۹۶ ص، ۳۹۷ ص، ۳۹۸ ص، ۳۹۹ ص، ۴۰۰ ص، ۴۰۱ ص، ۴۰۲ ص، ۴۰۳ ص، ۴۰۴ ص، ۴۰۵ ص، ۴۰۶ ص، ۴۰۷ ص، ۴۰۸ ص، ۴۰۹ ص، ۴۱۰ ص، ۴۱۱ ص، ۴۱۲ ص، ۴۱۳ ص، ۴۱۴ ص، ۴۱۵ ص، ۴۱۶ ص، ۴۱۷ ص، ۴۱۸ ص، ۴۱۹ ص، ۴۲۰ ص، ۴۲۱ ص، ۴۲۲ ص، ۴۲۳ ص، ۴۲۴ ص، ۴۲۵ ص، ۴۲۶ ص، ۴۲۷ ص، ۴۲۸ ص، ۴۲۹ ص، ۴۳۰ ص، ۴۳۱ ص، ۴۳۲ ص، ۴۳۳ ص، ۴۳۴ ص، ۴۳۵ ص، ۴۳۶ ص، ۴۳۷ ص، ۴۳۸ ص، ۴۳۹ ص، ۴۴۰ ص، ۴۴۱ ص، ۴۴۲ ص، ۴۴۳ ص، ۴۴۴ ص، ۴۴۵ ص، ۴۴۶ ص، ۴۴۷ ص، ۴۴۸ ص، ۴۴۹ ص، ۴۵۰ ص، ۴۵۱ ص، ۴۵۲ ص، ۴۵۳ ص، ۴۵۴ ص، ۴۵۵ ص، ۴۵۶ ص، ۴۵۷ ص، ۴۵۸ ص، ۴۵۹ ص، ۴۶۰ ص، ۴۶۱ ص، ۴۶۲ ص، ۴۶۳ ص، ۴۶۴ ص، ۴۶۵ ص، ۴۶۶ ص، ۴۶۷ ص، ۴۶۸ ص، ۴۶۹ ص، ۴۷۰ ص، ۴۷۱ ص، ۴۷۲ ص، ۴۷۳ ص، ۴۷۴ ص، ۴۷۵ ص، ۴۷۶ ص، ۴۷۷ ص، ۴۷۸ ص، ۴۷۹ ص، ۴۸۰ ص، ۴۸۱ ص، ۴۸۲ ص، ۴۸۳ ص، ۴۸۴ ص، ۴۸۵ ص، ۴۸۶ ص، ۴۸۷ ص، ۴۸۸ ص، ۴۸۹ ص، ۴۹۰ ص، ۴۹۱ ص، ۴۹۲ ص، ۴۹۳ ص، ۴۹۴ ص، ۴۹۵ ص، ۴۹۶ ص، ۴۹۷ ص، ۴۹۸ ص، ۴۹۹ ص، ۵۰۰ ص، ۵۰۱ ص، ۵۰۲ ص، ۵۰۳ ص، ۵۰۴ ص، ۵۰۵ ص، ۵۰۶ ص، ۵۰۷ ص، ۵۰۸ ص، ۵۰۹ ص، ۵۱۰ ص، ۵۱۱ ص، ۵۱۲ ص، ۵۱۳ ص، ۵۱۴ ص، ۵۱۵ ص، ۵۱۶ ص، ۵۱۷ ص، ۵۱۸ ص، ۵۱۹ ص، ۵۲۰ ص، ۵۲۱ ص، ۵۲۲ ص، ۵۲۳ ص، ۵۲۴ ص، ۵۲۵ ص، ۵۲۶ ص، ۵۲۷ ص، ۵۲۸ ص، ۵۲۹ ص، ۵۳۰ ص، ۵۳۱ ص، ۵۳۲ ص، ۵۳۳ ص، ۵۳۴ ص، ۵۳۵ ص، ۵۳۶ ص، ۵۳۷ ص، ۵۳۸ ص، ۵۳۹ ص، ۵۴۰ ص، ۵۴۱ ص، ۵۴۲ ص، ۵۴۳ ص، ۵۴۴ ص، ۵۴۵ ص، ۵۴۶ ص، ۵۴۷ ص، ۵۴۸ ص، ۵۴۹ ص، ۵۵۰ ص، ۵۵۱ ص، ۵۵۲ ص، ۵۵۳ ص، ۵۵۴ ص، ۵۵۵ ص، ۵۵۶ ص، ۵۵۷ ص، ۵۵۸ ص، ۵۵۹ ص، ۵۶۰ ص، ۵۶۱ ص، ۵۶۲ ص، ۵۶۳ ص، ۵۶۴ ص، ۵۶۵ ص، ۵۶۶ ص، ۵۶۷ ص، ۵۶۸ ص، ۵۶۹ ص، ۵۷۰ ص، ۵۷۱ ص، ۵۷۲ ص، ۵۷۳ ص، ۵۷۴ ص، ۵۷۵ ص، ۵۷۶ ص، ۵۷۷ ص، ۵۷۸ ص، ۵۷۹ ص، ۵۸۰ ص، ۵۸۱ ص، ۵۸۲ ص، ۵۸۳ ص، ۵۸۴ ص، ۵۸۵ ص، ۵۸۶ ص، ۵۸۷ ص، ۵۸۸ ص، ۵۸۹ ص، ۵۹۰ ص، ۵۹۱ ص، ۵۹۲ ص، ۵۹۳ ص، ۵۹۴ ص، ۵۹۵ ص، ۵۹۶ ص، ۵۹۷ ص، ۵۹۸ ص، ۵۹۹ ص، ۶۰۰ ص، ۶۰۱ ص، ۶۰۲ ص، ۶۰۳ ص، ۶۰۴ ص، ۶۰۵ ص، ۶۰۶ ص، ۶۰۷ ص، ۶۰۸ ص، ۶۰۹ ص، ۶۱۰ ص، ۶۱۱ ص، ۶۱۲ ص، ۶۱۳ ص، ۶۱۴ ص، ۶۱۵ ص، ۶۱۶ ص، ۶۱۷ ص، ۶۱۸ ص، ۶۱۹ ص، ۶۲۰ ص، ۶۲۱ ص، ۶۲۲ ص، ۶۲۳ ص، ۶۲۴ ص، ۶۲۵ ص، ۶۲۶ ص، ۶۲۷ ص، ۶۲۸ ص، ۶۲۹ ص، ۶۳۰ ص، ۶۳۱ ص، ۶۳۲ ص، ۶۳۳ ص، ۶۳۴ ص، ۶۳۵ ص، ۶۳۶ ص، ۶۳۷ ص، ۶۳۸ ص، ۶۳۹ ص، ۶۴۰ ص، ۶۴۱ ص، ۶۴۲ ص، ۶۴۳ ص، ۶۴۴ ص، ۶۴۵ ص، ۶۴۶ ص، ۶۴۷ ص، ۶۴۸ ص، ۶۴۹ ص، ۶۵۰ ص، ۶۵۱ ص، ۶۵۲ ص، ۶۵۳ ص، ۶۵۴ ص، ۶۵۵ ص، ۶۵۶ ص، ۶۵۷ ص، ۶۵۸ ص، ۶۵۹ ص، ۶۶۰ ص، ۶۶۱ ص، ۶۶۲ ص، ۶۶۳ ص، ۶۶۴ ص، ۶۶۵ ص، ۶۶۶ ص، ۶۶۷ ص، ۶۶۸ ص، ۶۶۹ ص، ۶۷۰ ص، ۶۷۱ ص، ۶۷۲ ص، ۶۷۳ ص، ۶۷۴ ص، ۶۷۵ ص، ۶۷۶ ص، ۶۷۷ ص، ۶۷۸ ص، ۶۷۹ ص، ۶۸۰ ص، ۶۸۱ ص، ۶۸۲ ص، ۶۸۳ ص، ۶۸۴ ص، ۶۸۵ ص، ۶۸۶ ص، ۶۸۷ ص، ۶۸۸ ص، ۶۸۹ ص، ۶۹۰ ص، ۶۹۱ ص، ۶۹۲ ص، ۶۹۳ ص، ۶۹۴ ص، ۶۹۵ ص، ۶۹۶ ص، ۶۹۷ ص، ۶۹۸ ص، ۶۹۹ ص، ۷۰۰ ص، ۷۰۱ ص، ۷۰۲ ص، ۷۰۳ ص، ۷۰۴ ص، ۷۰۵ ص، ۷۰۶ ص، ۷۰۷ ص، ۷۰۸ ص، ۷۰۹ ص، ۷۱۰ ص، ۷۱۱ ص، ۷۱۲ ص، ۷۱۳ ص، ۷۱۴ ص، ۷۱۵ ص، ۷۱۶ ص، ۷۱۷ ص، ۷۱۸ ص، ۷۱۹ ص، ۷۲۰ ص، ۷۲۱ ص، ۷۲۲ ص، ۷۲۳ ص، ۷۲۴ ص، ۷۲۵ ص، ۷۲۶ ص، ۷۲۷ ص، ۷۲۸ ص، ۷۲۹ ص، ۷۳۰ ص، ۷۳۱ ص، ۷۳۲ ص، ۷۳۳ ص، ۷۳۴ ص، ۷۳۵ ص، ۷۳۶ ص، ۷۳۷ ص، ۷۳۸ ص، ۷۳۹ ص، ۷۴۰ ص، ۷۴۱ ص، ۷۴۲ ص، ۷۴۳ ص، ۷۴۴ ص، ۷۴۵ ص، ۷۴۶ ص، ۷۴۷ ص، ۷۴۸ ص، ۷۴۹ ص، ۷۵۰ ص، ۷۵۱ ص، ۷۵۲ ص، ۷۵۳ ص، ۷۵۴ ص، ۷۵۵ ص، ۷۵۶ ص، ۷۵۷ ص، ۷۵۸ ص، ۷۵۹ ص، ۷۶۰ ص، ۷۶۱ ص، ۷۶۲ ص، ۷۶۳ ص، ۷۶۴ ص، ۷۶۵ ص، ۷۶۶ ص، ۷۶۷ ص، ۷۶۸ ص، ۷۶۹ ص، ۷۷۰ ص، ۷۷۱ ص، ۷۷۲ ص، ۷۷۳ ص، ۷۷۴ ص، ۷۷۵ ص، ۷۷۶ ص، ۷۷۷ ص، ۷۷۸ ص، ۷۷۹ ص، ۷۸۰ ص، ۷۸۱ ص، ۷۸۲ ص، ۷۸۳ ص، ۷۸۴ ص، ۷۸۵ ص، ۷۸۶ ص، ۷۸۷ ص، ۷۸۸ ص، ۷۸۹ ص، ۷۹۰ ص، ۷۹۱ ص، ۷۹۲ ص، ۷۹۳ ص، ۷۹۴ ص، ۷۹۵ ص، ۷۹۶ ص، ۷۹۷ ص، ۷۹۸ ص، ۷۹۹ ص، ۸۰۰ ص، ۸۰۱ ص، ۸۰۲ ص، ۸۰۳ ص، ۸۰۴ ص، ۸۰۵ ص، ۸۰۶ ص، ۸۰۷ ص، ۸۰۸ ص، ۸۰۹ ص، ۸۱۰ ص، ۸۱۱ ص، ۸۱۲ ص، ۸۱۳ ص، ۸۱۴ ص، ۸۱۵ ص، ۸۱۶ ص، ۸۱۷ ص، ۸۱۸ ص، ۸۱۹ ص، ۸۲۰ ص، ۸۲۱ ص، ۸۲۲ ص، ۸۲۳ ص، ۸۲۴ ص، ۸۲۵ ص، ۸۲۶ ص، ۸۲۷ ص، ۸۲۸ ص، ۸۲۹ ص، ۸۳۰ ص، ۸۳۱ ص، ۸۳۲ ص، ۸۳۳ ص، ۸۳۴ ص، ۸۳۵ ص، ۸۳۶ ص، ۸۳۷ ص، ۸۳۸ ص، ۸۳۹ ص، ۸۴۰ ص، ۸۴۱ ص، ۸۴۲ ص، ۸۴۳ ص، ۸۴۴ ص، ۸۴۵ ص، ۸۴۶ ص، ۸۴۷ ص، ۸۴۸ ص، ۸۴۹ ص، ۸۵۰ ص، ۸۵۱ ص، ۸۵۲ ص، ۸۵۳ ص، ۸۵۴ ص، ۸۵۵ ص، ۸۵۶ ص، ۸۵۷ ص، ۸۵۸ ص، ۸۵۹ ص، ۸۶۰ ص، ۸۶۱ ص، ۸۶۲ ص، ۸۶۳ ص، ۸۶۴ ص، ۸۶۵ ص، ۸۶۶ ص، ۸۶۷ ص، ۸۶۸ ص، ۸۶۹ ص، ۸۷۰ ص، ۸۷۱ ص، ۸۷۲ ص، ۸۷۳ ص، ۸۷۴ ص، ۸۷۵ ص، ۸۷۶ ص، ۸۷۷ ص، ۸۷۸ ص، ۸۷۹ ص، ۸۸۰ ص، ۸۸۱ ص، ۸۸۲ ص، ۸۸۳ ص، ۸۸۴ ص، ۸۸۵ ص، ۸۸۶ ص، ۸۸۷ ص، ۸۸۸ ص، ۸۸۹ ص، ۸۹۰ ص، ۸۹۱ ص، ۸۹۲ ص، ۸۹۳ ص، ۸۹۴ ص، ۸۹۵ ص، ۸۹۶ ص، ۸۹۷ ص، ۸۹۸ ص، ۸۹۹ ص، ۹۰۰ ص، ۹۰۱ ص، ۹۰۲ ص، ۹۰۳ ص، ۹۰۴ ص، ۹۰۵ ص، ۹۰۶ ص، ۹۰۷ ص، ۹۰۸ ص، ۹۰۹ ص، ۹۱۰ ص، ۹۱۱ ص، ۹۱۲ ص، ۹۱۳ ص، ۹۱۴ ص، ۹۱۵ ص، ۹۱۶ ص، ۹۱۷ ص، ۹۱۸ ص، ۹۱۹ ص، ۹۲۰ ص، ۹۲۱ ص، ۹۲۲ ص، ۹۲۳ ص، ۹۲۴ ص، ۹۲۵ ص، ۹۲۶ ص، ۹۲۷ ص، ۹۲۸ ص، ۹۲۹ ص، ۹۳۰ ص، ۹۳۱ ص، ۹۳۲ ص، ۹۳۳ ص، ۹۳۴ ص، ۹۳۵ ص، ۹۳۶ ص، ۹۳۷ ص، ۹۳۸ ص، ۹۳۹ ص، ۹۴۰ ص، ۹۴۱ ص، ۹۴۲ ص، ۹۴۳ ص، ۹۴۴ ص، ۹۴۵ ص، ۹۴۶ ص، ۹۴۷ ص، ۹۴۸ ص، ۹۴۹ ص، ۹۵۰ ص، ۹۵۱ ص، ۹۵۲ ص، ۹۵۳ ص، ۹۵۴ ص، ۹۵۵ ص، ۹۵۶ ص، ۹۵۷ ص، ۹۵۸ ص، ۹۵۹ ص، ۹۶۰ ص، ۹۶۱ ص، ۹۶۲ ص، ۹۶۳ ص، ۹۶۴ ص، ۹۶۵ ص، ۹۶۶ ص، ۹۶۷ ص، ۹۶۸ ص، ۹۶۹ ص، ۹۷۰ ص، ۹۷۱ ص، ۹۷۲ ص، ۹۷۳ ص، ۹۷۴ ص، ۹۷۵ ص، ۹۷۶ ص، ۹۷۷ ص، ۹۷۸ ص، ۹۷۹ ص، ۹۸۰ ص، ۹۸۱ ص، ۹۸۲ ص، ۹۸۳ ص، ۹۸۴ ص، ۹۸۵ ص، ۹۸۶ ص، ۹۸۷ ص، ۹۸۸ ص، ۹۸۹ ص، ۹۹۰ ص، ۹۹۱ ص، ۹۹۲ ص، ۹۹۳ ص، ۹۹۴ ص، ۹۹۵ ص، ۹۹۶ ص، ۹۹۷ ص، ۹۹۸ ص، ۹۹۹ ص، ۱۰۰۰ ص

وقت مختار کی فوج کے ایک سردار عبداللہ بن عمروؓ نے جو صفین میں حضرت عائشہؓ کے ساتھ تھے۔ نے کہا: اے اللہ میں آج بھی اسی عقیدہ پر قائم ہوں جس پر معرکے کے دن میں میں تھا، اے اللہ میں اس گروہ سے متبرک ہوں جو میدانِ مبارکہ سے ہٹا کر گیا ہے اس کے بعد تلوار بھینچ کر جنگ شروع کی اور آخری دو تک لڑتے رہے اس کے بعد پیدل فوج کے سردار مالک بن عمروؓ نے، جو جنگ میں مشغول تھے، ان کا گھوڑا لائے اس پر سوار ہوئے اور مختار کی فوج کے پراکندہ ہو جانے کے بعد کہا: خدا کی قسم میری نظریں گھر میں قتل ہونے سے بہرہ یہ ہے کہ اسی گھرجان اس کے پیدا کرنے والے کے سپرد کر دوں اس وقت بلند آواز سے کہا: اے بھیرت والو! کہاں ہو تم؟ اس پر تقریباً چاس آدمی اس کے پاس جمع ہو گئے ان لوگوں نے غروب کے وقت مختار بن اشعث کے ساتھیوں پر حملہ کیا، یہی ان سے نزدیک تھے اس میں مختار بن اشعث اور اس کے ساتھی مارے گئے اس وقت مختار نے بلند آواز سے از سر نو حکم کرنے کا حکم دیا،

غلط مشورہ

جوازا مختار کے ساتھ تھے ان میں سے عین نے یہ مشورہ دیا: اے امیر! انتظار کس چیز کا ہے آپ کے انصار پراکندہ ہو گئے ہیں کوئی بھی ایسی جگہ باقی نہ رہا دارالامارہ میں لوٹ چلے، مختار نے کہا: خدا کی قسم میں پیدل نہیں ہوا جو سوار ہو جاؤں جب میرے اصحاب چلے گئے میرا گھوڑا ڈاؤں رہا ہونے کی صورت میں دارالامارہ کی طرف چل دینے، صبح ہوئی تو اصحاب نے دیکھا کہ وہ لاپتہ ہیں، عین نے کہا: وہ قتل کر دیئے گئے ہیں اس پر وہ لوگ بھاگ کر اپنے گھر واپس چلے گئے جو جنگ سے تھک چکے تھے دوسرا گروہ دارالامارہ کی طرف گیا یہ ہزار آدمی تھے جبکہ ابتدا میں وہ دس ہزار تھے دارالامارہ پہنچے تو وہاں مختار کو پایا پھر دارالامارہ میں داخل ہو گئے

۱۔ تجارب الامم ج ۲ ص ۱۷۱

مصعب کچھ عرصہ کے اور بھی کوفیوں کے ساتھ سبز کی طرف روانہ ہوا وہاں مہلب کو دیکھا تو اس سے کہا: یہ کامیابی کتنی اچھی تھی اگر مختار بن اشعث قتل نہ ہوتے، اس نے کہا آپ سچ کہتے ہیں

مختار کا سہرا

مصعب نے کوثر کے دارالامارہ کا مہربان مختار اور ان کے ہمراہیوں کو دیکھا کہ عین نے کہا: اے امیر! یہاں پر کھانا پانی بند کر دیا، مختار اور ان کے ساتھی دارالامارہ سے باہر نکلتے اور متحرج کھج کرتے اور پھر اندر چلے جاتے تھے لیکن کھڑو ہو گئے تھے بعض لوگوں کی بیویاں بھی دارالامارہ میں تھیں وہ بھی تھوڑا بہت کھانا پانی لاتی تھیں، مصعب کو ان کی خبر مل گئی لہذا اس نے وہ سلسلہ بھی منقطع کر دیا اب ان کے لئے مزید پریشانی بڑھ گئی بیاس سے مختار اور ان کے ساتھی بہت پریشان تھے مختار نے کہا: دارالامارہ کے اندر جو کمنوں میں ان میں تھوڑا شہد دیا جائے تاکہ ان کا پانی پینے کے قابل ہو جائے، بڑے

مختار کا مشورہ

مختار نے اپنے ساتھیوں سے کہا: اس محاصرہ کی وجہ سے ہر روز بڑے کمزور و ناتواں ہو رہے ہیں چلو باہر نکل کر جنگ کرتے ہیں اگر مارے گئے تو ذلت کے ساتھ نہ مارے جائیں، خدا کی قسم میں مایوس نہیں ہوں تم نے میری تصدیق کی تو خدا تمہاری نصرت کرے گا،

۱۔ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۱۷۲

۲۔ کامل ابن اثیر ج ۲ ص ۱۷۳

انہوں نے غزوری و عاجزی کا اظہار کیا، مختار نے ان سے کہا: خدائی قسم میں ہرگز خود کو ان کے
تولے نہیں کروں گا اور سنجھا رہیں ڈالوں گا،

عبداللہ بن جعدہ بن بصرہ نے جب یہ صورت دیکھی تو دلرلا مارہ سے نیچے آیا اور اپنے ہمراہ
دوستوں کے پاس جا کھچپ گیا۔

مختار اور ساب بن مالک

مختار نے ساب بن مالک - جب مختار کو فوسے باہر گئے تھے تو ساب بن مالک کے جانشین تھے، مختار
تہاری کیا رائے ہے؟

ساب نے کہا: آپ کا کیا خیال ہے؟

مختار نے کہا: افسوس ہے تمہارے حال پر! میں عرب ہوں میں نے دیکھا کہ عبداللہ بن جعدہ
نے جاز پر قبضہ کر لیا ہے اور ابن جعدہ نے یمامہ پر تسلط جما لیا ہے اور ابن وائل نے شام پر تصرف کر لیا ہے میں
بھی انہیں جیسا ایک ہوں اس فرق کے ساتھ کہ میں نے آل رسول کے خون کا انتقام لینا چاہتا ہوں چنانچہ ایک
گروہ کو جو ان کے قتل میں شریک تھا تہ تیغ کر دیا جبکہ دوسرے سے فراموش کئے ہوئے تھے، مگر تمہارا
نیت پاک و صاف اور خاص نہیں ہے تو کم سے کم اپنی حیثیت و شرف سے تو دفاع کرو اور اسی نیت
سے جنگ کرو،

ساب نے کہا: انا للہ وانا الیہ راجعون، تو پھر ہم اس مفصلہ کے تحت کیونکر جنگ کریں اور
اگر میں نے اپنی حیثیت و حسب کیلئے جنگ لڑی تو گویا کوئی کام انجام نہ دیا۔

۱۔ تجارب الامم ج ۲ ص ۱۷۳،

۲۔ کمال میں اشیر ج ۲ ص ۲۷۳،

مختار کی صحیح پیشین گوئی

مختار نے دارلار مارہ سے نکلنے وقت اپنے ساتھیوں سے کہا: میں مارا جاؤں گا تو تم ذلت
و ناتوانی میں گھر جاؤ گے اور اگر تم نے مصعب اور اس کے معنواؤں کی بات پر کان دھرتے تو تمہارے
دشمن تمہیں اپنے کشتوں کا انتقام میں قتل کریں گے اور تم اپنے دوستوں کو قتل ہوتے ہوئے دیکھو گے
اور کہو گے کہ کاش ہم مختار کی اطاعت کرتے اور ان کے مشورہ پر عمل کر لیتے، اگر میرے ساتھ باہر نکلے
اور کامیاب بھی نہ ہوئے تو بھی تم ذلت کے ساتھ نہیں مرو گے اور دوسری صورت میں تم روئے زمین
پر ذلیل ترین انسان قرار پاؤ گے،

مختار کا قتل

جب مختار نے اپنے ساتھیوں کی غزوری و ناجائز ملاؤں کی تو انہوں نے قصر سے نکل کر مصعب
کی فوج سے جنگ کرنے کا ارادہ کیا، کسی کو اپنی زوجہ ام ثناب بنت عمر بن جعدہ کے پاس بھیجا، اس نے
ان کے لئے کچھ عطر بھیجا، مختار نے غسل و حنوط کیا سر و صورت پر عطر ملا اپنے انیس ساتھیوں کے ساتھ
کہ جس میں ساب بن مالک اشجری بھی باہر نکلے اور مصعب کی فوج کو مخاطب کر کے کہا: اگر میں باہر
نکلے تو کیا مجھے امان دو گے،

انہوں نے کہا: جو تمہارے ہاں سے حکم ہوگا اسے قبول کرنا ہوگا،

مختار نے کہا: میں ہرگز خود کو تمہارے تولے نہیں کروں گا،

اس کے بعد مصعب کے سپاہیوں نے مختار کو قتل کرنے کے لئے جنگ شروع کی۔

۱۔ تجارب الامم ج ۲ ص ۱۷۳،

jabir.abbas@yahoo.com

مختار کو قبیلہ بنی حنیفہ کے دو آدمیوں، طوف و طواف بن عبداللہ بن دجاہ نے قتل کیا۔
یعقوبی نے قتل کیا ہے کہ اس زمانہ میں مختار شہید نہیں تھے، مختار اور مصعب میں سخت مار
پیٹ ہوئی یہ چھ پرہیزگار ماہنگ جاری رہیں یہاں تک کہ مختار کے ساتھی رفتہ رفتہ انھیں چھوڑ کر چلے گئے
ان کے پاس مختار فراورہ گئے مختار قہصی اگے مصعب اور اس کی فوج قہصرا کا مرکز کر لیا۔

مختار اور ان کے انصار روز قہص سے نکلتے اور جنگ کرتے اور پھر قہص میں چلے جاتے تھے ایک
روز مختار قہص سے نکلے مصعب کی فوج سے شدید جنگ کی اور جنگ کرتے ہوئے مارے گئے ان کے ساتھی وہاں
قہص میں چلے گئے اس میں پناہ لی، ان کی تعداد سات ہزار تھی، مصعب نے انھیں امان دیدی ایک عہد نامہ
بھی لکھا اور یہ عہد کیا کہ قہص میں پناہ لینے والوں کو ہر طرح امان دی جائے گی۔

اور پھر ان میں سے ایک ایک کی گردن ماری اور مصعب بن زبیر کی شہادت اور خبیاتہ ان
خیانتوں میں سے ایک ہے جو اسلام میں مشہور ہیں۔

اور اس طرح مختار کی پیشین گوئی پوری ہوئی مختار کے ساتھی بحیر بن عبداللہ نے مختار کے مارے
جانے کے بعد قہص میں محاصرہ شدہ لوگوں سے کہا: کل مختار نے تمہیں مشورہ دیا اور تم نے قبول کیا تھا
اگر تم نے اس گروہ کے سامنے ہتھیار ڈال دیئے اور خود کو ان کے حوالے کر دیا تو وہ تمہیں بھیڑ کر یوں
طرح ذبح کریں گے، اپنی تلواریں بھیجے تو اگر مارے جاؤ تو ذلت کی کہ ساتھ نہ مارے جاؤ انہوں نے کہا
مختار نے ہمیں حکم دیا تھا ہم نے ان کی اطاعت نہیں کی تمہاری اطاعت کریں گے خود کو حوالے کر دیا اور ان کا
حکم قبول کر لیا،

مصعب نے عہد میں حصین کو بھیجا کہ انہیں دست بستہ باہر لاؤ اور ان سب کو قتل کر دیا
حالانکہ وہ پیشان تھے کہ ہم نے مختار کے حکم کی تعمیل کیوں نہیں کی تھی،

۱۔ کالی بن ثمرہ ص ۱۲۷، لیکن عمر التیمی میں لکھا ہے کہ مختار کا قاتل عبدالرحمن بن اسد رضی ہے۔

۲۔ تاریخ یعقوبی ج ۱ ص ۱۱۳،

منقول ہے کہ جو لوگ قہص میں پناہ گزین تھے، انہیں باہر لایا گیا، مصعب کے سامنے پیش کیا گیا
ابتداء میں مصعب ان لوگوں کو آزاد کرنا چاہتا تھا کہ عرب خداداد سے ورد و سروں کو قتل کرنا چاہتا تھا،
لیکن اس کے اصحاب نے یہ بات قبول نہ کی اور سب کو قتل کرنے کی خواہش کی۔

بحیر بن عبداللہ

یہ مویابیوں سے تھے، بہت سے لوگوں کے ساتھ انہیں بھی مصعب کے پاس لایا گیا انہوں
نے کہا: خدا میں امیری کا ورثہ نہیں عفو و گذشت کے ذریعہ آزاد رہا ہے کہ ایک میں پروردگار کی خوشی اور
دوسرے میں اس کی ناراضی ہے جو شخص کسی دوسرے کو معاف کرتا ہے خدا بھی اس سے درگزر کرتا ہے
اور اسے عزت عطا کرتا ہے اور جو سزا دیتا ہے وہ تقاص سے معفو نہیں رہ سکتا،

پھر کہا: اے زبیر کے بیٹے ہم تمہارے دین پر ہیں، ہمارا اور تمہارا قبلہ ایک ہی ہے ترک و دین
میں سے نہیں ہیں ہم اپنے شہر والوں کی مخالفت کی، یا ہم سے غلطی ہوئی یا ان سے، ہم ان مسلمانوں کی مانند
ہیں کہ جنہوں نے آپس میں جنگ کی اور پھر صلح کی اور متحد ہو گئے پس ہمیں صاف کر کے جو افرادی کا ثبوت

ان باتوں سے مصعب اور بعض دوسرے لوگوں کا دل نرم ہو گیا اور انہیں آزاد کرنے کا فیصلہ کر لیا
عبدالرحمن بن محمد بن اشعث

عبدالرحمن کھڑا ہوا اور مصعب کو مخاطب کر کے کہنے لگا اگر آپ انہیں آزاد کریں گے تو ہم سے

۱۔ کالی بن ثمرہ ص ۱۲۷،

۲۔ قتادہ ص ۱۷۵،

۱۔ یہ احتجاج کی طرف سے محبت کا اظہار تھا، جب احتجاج نے غلظت شروع کیا تو عبدالرحمن اور علامہ مسلمانوں سے ایک جماعت نے
اس کے ساتھ جنگ کی تب بحیر بن عبدالرحمن کے لشکر نے شکست کھائی اس نے تزیل میں پناہ لی کہا جاتا ہے کہ وہ سل کے مرض
میں ملا، بعض نے کہا ہے کہ اس نے خود کو قہص سے لاکر ہاک کیا یہ سیدہ کا واقعہ ہے، میرا علامہ ابن الاثیر ص ۱۸۳،

اس کے بعد مصعب سے کہا: آپ سے میری درخواست ہے کہ مجھے ان لوگوں سے ایک قتل ایجنے تاکہ ان کے خون میں راخون مخلوط نہ ہو چنانچہ انھیں ایک کنڈے لے جا کر قتل کر دیا گیا، ان لوگوں کی تعداد علاوہ ان کے جو مختار کے ساتھی جنگ میں مارے گئے، چھ ہزار تھی۔

عبداللہ بن عمر

مصعب بن زبیر ایک روز عبداللہ بن عمر سے ملاقات کیلئے گیا انھیں سلام کیا انہوں نے ان کی طرف سے منہ پھیر لیا،

مصعب نے کہا: میں آپ کا بھتیجا مصعب ہوں،

عبداللہ نے کہا: ہاں تم وہی ہو جس نے ایک دن میں سات ہزار مسلمانوں کو قتل کیا جتنی چاہو کرو۔

مصعب نے کہا: میں نے جن لوگوں کو قتل کیا ہے وہ مسلمانوں ہیں تھے بلکہ وہ کافرا و فاجر تھے عبداللہ نے اس سے کہا: خدا کی قسم اگر تم ان مقتولوں کے برابر ان جیٹ بکریوں کو مار ڈالتے تو میں تمہارے والدین سے میراث میں ملتا تو بھی اسلاف ہوتا۔

امیہ بن ابی سفیان

جب مصعب امیروں کو قتل کر چکا تو اس نے مختار کی مستورات کو طلب کیا اور مختار کی زوجہ ابست بنت عمرہ بن جندب سے کہا: مختار کے بارے میں تمہارا کیا خیال ہے؟

امیہ نے کہا: ان کے بارے میں وہی جی ہوں جو تم کہتے، مصعب نے اسے آزاد کر دیا اور بنت عثمان بن بشیر انصاری سے کہا: تم کیا کہتی ہو؟

عرو نے کہا: خدا ان پر رحم کرے وہ خدا کے صانع بندے تھے۔

باب الامم ص ۱۷۶،

باب الامم ص ۱۷۷،

یہ ساری باتیں تاریخ میں لکھی گئی ہیں کہ مصعب کے جواب میں کہا: تمہارا انتقال کا ہزار اور روزہ دل تھلاؤ دشمن خداؤں پہنچ کرے گا؟

مصعب نے کہا: اس کا ذکر نہ کرو اور وہاں میں یہ کلمہ اورت ہے جسے اس طرح قتل کیا گیا، تاریخ یعقوبی ص ۱۷۷

باتھ دھوئیں گے پھر ہم سے کوئی توقع نہ رکھئے، یا میں اپنے ساتھ رکھئے یا ان کو کہہ چلائے اور ان درمیان کبھی صلہ نہ ہو سکتی،

پھر عبدالرحمن بن سعید انھیں اس نے بھی ایسی باتیں کہیں کہ وہ کے سر پر آوردہ افراد ان کی تائید و تصدیق کی اس پر مصعب نے سب کے قتل کا حکم صادر کر دیا، وہ سب پیچ پڑے: اس وقت بیٹے میں قتل نہ کیجئے، میں شیعوں سے جنگ کے لئے اپنے آگے رکھئے ہم سے تم مستحق نہیں ہو سکتے لیکن مصعب نے ان کی فریاد پر کان نہ دھری،

بجیہ نے کہا: مجھے ان سے علاوہ قتل کرنا تاکہ میرا خون ان کے خون میں نہ ملے کیونکہ انہوں نے تسلیم ہونے میں میری بات نہیں مانی تھی۔

مسافر بن حید

اس نے مصعب بن زبیر کو مخاطب کر کے کہا: زبیر کے بیٹے خدا کی بارگاہ میں تم کیا جواب دے گے تم اس ہڈی جانی کو تہ تیغ کرتے ہو جس نے خود کو تمہارے سپرد کر دیا تھا جبکہ حق کا تقاضا یہ تھا کہ اس کے علاوہ کسی کو قتل نہ کیا جائے اگر ہم سے بعض نے تمہارے افراد کو قتل کیا ہے تو ہم میں سے تمہارے قتل کو قتل کر دو اور باقی کو آزاد کر دو کیونکہ ہمارے درمیان ایسے افراد بھی ہیں کہ تمہارے کسی بھی میں شرکت نہیں کی ہے بلکہ وہ پہاڑوں اور دیہاتوں میں رہ کر شہس جت کرتے تھے۔

لیکن مصعب اور اس کے ساتھیوں نے مسافر کی بھی بات نہ سنی، مسافر نے کہا: خدا برا کرے ان لوگوں کا کہ جن سے میں نے یہ کہا تھا کہ ایک گلی سے جنگ جیت کر پراگندہ کر کے اپنی قوم و قبیلہ سے ملحق ہو جائیں لیکن انہوں نے میری بات نہ سنی۔

غلاموں کی طرح ہمارے جاسے ہیں،

تبار الامم ص ۱۷۵،

مصعب نے انھیں قید کر دیا اور اپنے بھائی عبداللہ بن زبیر کو خط لکھا کہ اس عورت کا عقیدہ یہ ہے کہ مختار زبیر تھے، عبداللہ نے جواب لکھا کہ اسے قتل کر دو، چنانچہ مصعب کے سپاہیوں میں سے ایک نے انہیں تین ضربوں سے قتل کر دیا جبکہ وہ گری کر رہی تھیں یا اتناہ! اس وقت ان کے بھائی ابان بن عثمان بن زبیر نے قاتل کو ایک طمانچہ مارا اور کہا: تاجنجانے نہیں ضرب لگا کر تون میں غلط کر دیا، وہ سپاہی ابان کو مصعب کے پاس لایا اور اس سے واقعہ قتل کیا، مصعب نے کہا: اے دو! اسے کچھ نہ کہو کیونکہ اس نے دغراش منظر دیکھا ہے۔

پیکر مختار

مصعب کے حکم سے مختار کے ہاتھ قطع کر کے سجد کی دیوار پر رکھ کر کیلیں مٹھو تک دیں اور کہا: آنے تک اسی طرح رہا، اس نے ہاتھ دیکھے تو اس کا قصہ معلوم کیا لوگوں نے اسے بتایا کہ یہ مختار کے ہیں اس نے حکم دیا کہ انہیں دیوار سے اتار کر نیچے رکھ دو۔

کو فیہل مارت مختار کی مٹا

کو فیہل مختار کی زمام داری کی مدت ڈیڑھ سال ہے۔

۱۔ کمالین اشیرج ۴۵ ص ۲۷۵

۲۔ کال ابن اشیرج ۴۵ ص ۲۷۵

۳۔ تنقیح المقال ج ۳ ص ۲۶۰

قتل کے وقت ان کی عمر ۷۷ سال تھی ۱۱ رمضان ۷۷ھ کو قتل کئے گئے۔

عروہ بن زبیر

جب مصعب مختار کو قتل کر چکا تو مکہ میں عبداللہ بن زبیر کو اس ماجرے کی اطلاع دی اور مختار کا سراپا کے پاس بھیجا عروہ بن زبیر نے ابن عباس سے کہا: کذاب مختار مارا گیا یہ اس کا سر ہے، عبداللہ بن عباس نے کہا: ابھی تمہارے سامنے عظیم چٹان ہے اگر تم اس سے گزر گئے تو کامیاب ہو جاؤ گے، ابن عباس کی مراد اس سے عبد الملک بن مروان تھا جس کے ہاتھ میں اس وقت شام کا تخت تھی۔

عبداللہ بن زبیر

عبداللہ بن زبیر کو جب مکہ میں مختار کے قتل کی خبر ملی تو اس نے ابن عباس سے کہا: کیا آپ نے کذاب کے قتل کی خبر نہیں سنی ہے؟

ابن عباس نے کہا: کون کذاب؟

عبداللہ بن زبیر نے کہا: ابو عبیدہ کا بیٹا،

ابن عباس نے کہا: مجھے مختار کے قتل کی خبر ملی تھی،

عبداللہ بن زبیر نے کہا: گویا اسے کذاب کہتے کو آپ صحیح نہیں سمجھتے اور اس کے قتل کا آپ کا فحسوس ہے؟

ابن عباس نے کہا: وہ مرد تھا کہ اس نے ہمارے قاتلوں کو قتل کیا اور ہمارے خون کا

۱۔ کال ابن اشیرج ۴۵ ص ۲۷۵

۲۔ کال ابن اشیرج ۴۵ ص ۲۷۵

jabir.abbas@yahoo.com

